श्री गोगा

महापुराण

(सौ भाग)



गोगा जी की समाधि

महान जाहर वीर श्री गोगा जी का महाग्रन्थ

श्री गोगा महापुराण

(सम्पूर्ण सचित्र १०० भाग)

विश्व में प्रकाशित प्रथम बार गोगा जी का महान ऐतिहासिक ग्रन्थ जिसमें जाहर वीर के पूर्वजों दादा परदादा व पिता राजा जेवर सिंह, मां वाछल, गुरु गोरखनाथ सहित नव नाथों का वर्णन, जाहर जन्म, सिरियल से विवाह, अनेकों युद्ध व अन्त में, पृथ्वी में समाने के उपरांत जाहर वीर के वंशजों जो कि महान वीर हुए हैं जिन्होंने भगवान सोमनाथ की प्रतिष्ठा बचाने के लिये मुहम्मद गजनी से भयंकर युद्ध करके जाहर वीर की गरिमा को जीवित रखा सम्पूर्ण वृतान्त पढ़ें।

लेखक

श्री पृथ्वीराज जी

फोन: 2917707

प्रकाशक

मेरठ पुस्तक भंडार

4235 नई सड़क, दिल्ली-6

मूल्य पचास रुपये

पुस्तक मिलने का पता:
लक्ष्मी प्रकाशन
4734, बल्ली मारान, दिल्ली-6

लेखक
श्री पृथ्वीराज जी

वैधानिक चेतावनी

मूल्य:
पचास रुपये

मुद्रक:
यादव प्रिंटर्स
बाजार सीताराम
दिल्ली-6

भूमिका

प्यारे बन्धुओ, ये पुस्तक प्रथम बार छपवाकर आपके कर कमलों में अर्पित कर खुशी से फूला नहीं समाता हूं। मैंने जाहरवीर (यानी गोगा जी) व सन्त गुरु गोरख नाथ का रात दिन सुमरन कर इन्हीं की कृपा से अपनी कलम चलाने की इच्छानुसार इन्हीं का चमत्कार दर्शाया हैं। प्यारे भाइयों, हमारे गोगाजी (उर्फ जाहरवीर) कितने चमत्कारों से भरपूर थे उनका गिनना असम्भव ही है परन्तु उनकी विश्व-विख्यातता से जाना जाता है कि वह बेशुमार गुणों से भरपूर थे और विश्व भर में अपने अच्छे गुणों के कारण ही पूजे जाते हैं आप ध्यान देकर देखें श्रीराम कृष्ण को केवल हिन्दू जाती पूजती है। मोहम्मद साहब को सिर्फ मुसलमान और ईसामसीह को ईसाई और गुरु नानक देव को सिक्ख लोग ही पूजते हैं। यानी हर पन्थ अपने अपने इष्टदेव का उपासक है परन्तु हमारे नायक श्री गोगाजी (उर्फ जाहरवीर) को देशी विदेशी जहां तक भी इनकी कीर्ती पहुंची है सभी हिन्दू, मुसलमान, जैनी, पारसी, सिक्ख, इसाई,

चीनी, जापानी बौद्ध मजहब तक के मानने वाले पूजते हैं और मनमाना वरदान प्राप्त करके जै जैकारा बोलकर ऋद्धि सिद्धि से अपने भन्डार भरते हैं। ये हमारे नायक गोगाजी (उर्फ जाहरवीर) धर्मात्मा दयालु, गोभक्त, गुरु माता पिता भक्त, प्रजापालक, अछूत उद्धारक, भक्तों के रक्षक और दुष्टों के लिए महाकाल थे। इनकी सब खूबियों का पता चलना तो असम्भव ही है। परन्तु इन की कृपा से जो जान कारी प्राप्त हुई है उसके लिए इन्हीं से प्रार्थना है कि आप मेरे हृदय कमल व कलम में बिराज कर गोगा पुराण को लिखने में मेरी पूर्ण सहायता करें।

लेखक

जाहर चालीसा

दोहा---सुवन केहरी जेवर सुत महाबली रनधीर,
बन्दौं सुत रानी बाछला-विपत निवारण वीर।
जय जय जय चौहान वंस गूगा वीर अनूप,
अनंगपाल को जीतकर आप बने सुर भूप।

जय जय जय जाहर रणधीरा पर दुख भंजन बागड़ वीरा, गुरु गोरख का है वरदानी जाहरवीर जोधा लासानी। गौरवरण मुख महा विसाला माथे मुकट घुंघराले बाला। कांधे धनुष गले तुलसी माला कमर कृपान रक्षा को डाला। जन्में गूगावीर जग जाना ईसवी सन हजार दरमियाना। बल सागर गुण निधि कुमारा, दुखी जनों का बना सहारा। बागड़ पति बाछला नन्दन, जेवर सुत हरि भक्त निकन्दन। जेवर राव के पुत्र कहाये, माता पिता के नाम बढ़ाये। पूरन हुई कामना सारी, जिसने विनती करी तुम्हारी। सन्त उबारे असुर संहारे, भक्त जनों के काज संवारे। गूगावीर की अजब कहानी, जिसको ब्याही श्रीयल रानी। बाछल रानी जेवर राना, महादुखी थे बिन सन्ताना। भंगिन ने जब बोली मारी, जीवन हो गया उनको भारी। सूखा बाग पड़ा नौलक्खा देख-देख जग का मन दुक्खा। कुछ दिन पीछे साधू आये, चेला चेली संग में लाये। जेवर राव ने कुंआ बनवाया,

उदघाटन जब करना चाहा। खारी नीर कुए से निकला, राजा रानी का मन पिघला। रानी तब ज्योतिषी बुलवाया, कौन पाप मैं पुत्र न पाया। कोई उपाय हमको बतलाओ, उन कहा गोरखगुरु मनाओ। गुरु गोरख जो खुश हो जाई, सन्तति पाना मुश्किल नाई। बाछल रानी गोरख गुन गावे, नेम धर्म को न बिसरावे। करे तपस्या दिन और राती, एक वक्त खाय रूखी चपाती। कार्तिक माघ में करे स्नाना, व्रत इकादसी नहीं भुलाना। पूरनमासी व्रत नहीं छोड़े दान पुण्य से मुख नहीं मोड़े। चेलों के संग गोरख आये, नौलखे में तम्बू तनवाये मीठा नीर कुए का कीना, सूखा बाग हरा कर दीना। मेवा फल सब साधू खाए, अपने गुरु के गुन को गाये। औघड़ भिक्षा मांगने आए, बाछल रानी ने दुख सुनाये। औघड़ जान लियो मन माही, तप बल से कुछ मुश्किल नाई। रानी होवे मनसा पूरी, गुरु शरण है बहुत जरूरी। बारह बरस जपा गुरु नामा, तब गोरख ने मन में जाना। पुत्र देन की हामी भरली, पूरनमासी निश्चय करली। काछल कपटिन गजब गुजारा, धोखा गुरु संग किया करारा। बाछल बनकर पुत्र पाया, बहन का दरद जरा नहीं आया। औघड़ गुरु को भेद बताया,

तब बाछल ने गूगल पाया। कर परसादी दिया गूगल दाना, अबतुम पुत्र जनो मरदाना। लीली घोड़ी और पण्डतानी लूना दासी ने भी जानी। रानी गूगल बाट के खाई, सब बांझों को मिली दवाई। नरसिंह पंडित लीला घोड़ा, भज्जू कोतवाल जना रणधोरा। रूप विकट धर सब ही डरावे, जाहरवीर के मन को भावे, भादों कृष्ण जब नौमी आई, जेवरराव के बजी बधाई। विवाह हुआ गूगा भये राना, संगलदीप में बने मेहमाना। रानी श्रीयल संग परे फेरे, जाहर राज बागड़ का करे। अरजन सरजन काछल जने, गूगा वीर से रहे वे तने। दिल्ली गए लड़न के काजा, अनंग पाल चढ़े महाराजा। उसने घेरी बागड़ सारी, जाहरवीर न हिम्मत हारी। अरजन सरजन जान से मारे, अनंगपाल ने शस्त्र डारे। चरण पकड़कर पिण्ड छुड़ाया, सिंह भवन माड़ी बनवाया। उसीमें गूगावीर समाये, गोरख टीला धूनी रमाये। पुण्य वान सेवक वहां जाये, तन मन धन से सेवा लाए। मन्सा पूरी उनकी होई, गूगावीर को सुमरे जोई। चालीस दिन पढ़े जाहर चालीसा, सारे कष्ट हरे जगदीसा। दूध पूत उन्हें दे विधाता, कृपा करे गुरु गोरखनाथा।

॥ इति जाहर चालीसा समाप्त ॥

जाहरवीर को आरती

जय जय जाहरवीर हरे जय जय गूगा वीर हरे
धरती पर आकर के भक्तों के दुख दूर करे -जय२
जो कोई भक्ति करे प्रेम से हां जी करे प्रेम से
भागे दुख परे बिघन हरे
मंगल के दाता तन का कष्ट हरे
जेवर राव के पुत्र कहाये रानी बाछल माता
बागड़ जन्म लिया वीर ने जय जयकार करे- जय२
धर्म की बेल बढ़ाई निश दिन तपस्या रोज करे
दुष्ट जनों को दण्ड दिया जग में रहे आप खरे- जय२
सत्य अहिंसा का व्रत धारा झूंठ से आप डरे
बचन भंग को बुरा समझकर घर से आप निकरे-जय२
माड़ी में तुम करी तपस्या अचरज सभी करे
चारों दिशा से भक्त आ रहे आशा लिए उतरे-जय२
भवन पधारो अटल क्षत्र कह भक्तों की सेवा करे
प्रेम से सेवा करे जो कोई धन के भण्डार भरे-जय२
तन मन धन अर्पण करके भक्ति प्राप्त करे
भादों कृष्ण नौमी के दिन पूजन भक्ति करे -जय२

॥ इति जाहर आरती समाप्त ॥



लेखक से स्वप्न में श्री गोगाजी का वार्तालाप

मैं सावन सुदी चौदस को रात्रि नौ बजे के लगभग भगवान भोलेनाथ का सुमरन कर, गोरख गुरु को शीश नवा कर, अपनी सैया पर जाकर लेट गया निद्रा देवी ने जोर मारा और मैं नींद में बेहोश हो गया। मुझे कतई भी होश न रहा कि मेरा हंस स्वप्न में कहां-कहां विचारता फिरा। इसी निद्रा देवी की गोद में लेटा मैं क्या स्वप्न देखता हूं कि एक बहुत ही खूबसूरत नौजवान अपने दहने हाथ में बर्छा लिये नीले घोड़े पर सवार मेरे सामने (जब मैं स्वप्न में बेहोश था आनकर) हंसता हुआ खड़ा हो गया।

मुझे पहचानने में देर न लगी किये हमारे नायक गोगाजी ही हैं। परन्तु मैंने इतना खूबसूरत इन्सान अब तक न देखा था। बड़े बड़े देवी देवताओं के चित्र देखे थे, भगवान शंकर, भगवान राम, भगवान श्री कृष्ण और गोगा जी के भी। परन्तु इस वीर भेष में गोगाजी को देखता का देखता ही रह गया और दोनों हाथ जोड़े, उनके दर्शनों से अपने नैन पवित्र करता

रहा। अपने मन में सोचता रहा कि असलियत असलियत है और नकल नकल ही। चाहे हमारे उपरोक्त देव इनसे भी अधिक सुन्दर रहे हों। मगर उनकी तसवीरों में असलियत की बराबर मालूम नहीं पड़ती, जैसे जाहरवीर आज मैंने प्रत्यक्ष देखे हैं। इनकी तसवीरें असल की तुलना में एकदम हेच व फीकी हैं। मैं कभी गोगा जी की तरफ देखता हूं और कभी नीले घोड़े की तरफ। मैं हैरान होकर यह सोचता था कि यह तो मय घोड़े के धरती में समा गए थे। अब यह कहां से आ गए, जो मुझे साक्षात दर्शन दे रहे हैं।

जब मुझे दर्शन करते काफी देर हो गई और मेरे दोनों हाथ जोड़ने के सिवाय मुह से बोल नहीं निकला। तब उन्होंने ही अपना श्रीमुख खोलकर पहल की। भक्तवर, मैं तुससे बहुत प्रसन्न हूं और बहुत कम समय के लिए तुससे मिलने ठीक चार बजे ब्राह्म मुहूरत में तुम्हारे पास आ गया हूं। मेरे पास अधिक समय नहीं है मैं ठीक पांच बजे तुम्हारे पास से अपनी धूनी पर पाताल लोक पहुंच जाना बहुत जरूरी समझता हूं। समय को कभी मेरी, कभी घोड़े की सूरत निहारने में वृथा न गंवाओ। मेरा

कहना है कि तुमने दूसरे प्रकाशकों की तरह ही मेरी पुस्तकों व मेरे नाम की शोहरत की है। जैसे दूसरों ने सही गलत लिखा है वैसे ही तुमने भी लिखा है। फिर भी मैं प्रसन्न हूं कि तुमने कुछ न कुछ किया तो है न करने वालों से करने वाले अच्छे होते हैं। मैं तुमसे प्रसन्न हूं मन इच्छित बरदान मांगों।

मैंने दोनो हाथ जोड़े। गुरु गोरखनाथ, महादेव बाबा का ध्यान धर उनके चरणों में शीश नवा निवेदन किया कि हे देव आपकी दया से आपका दिया सब कुछ मेरे पास है। और आप ही मेरे सब बिगडे काम संभारते हो। मुझे पूर्ण आशा है आयु पर्यन्त कभी मुझे अपने चरणों से जुदा न होने दोगे। रही मांगने वाली बात सो आपसे दोनों हाथ जोड़कर ये ही प्रार्थना है कि श्री गोगा पुराण आपके श्री मुखसे ही मुझे लिखवाया जाये। मेरे दोनों कर जोड़कर प्रार्थना करने पर श्री गोगाजी महाराज बोले।

भक्तवर यह बात एकदम असम्भव है। हम लोग के पास इतना वक्त कहां हम लोगों का एक एक मिनट अनमोल है। हमें परमपिता परमात्मा की साधना में हर समय हाथ बांधे चौबीस घंटे खड़ा रहना पड़ता है। तभी आजकल के कलियुग वासियों के

बेहिसाब पापों को क्षमा दिलाकर उनके भोजन वस्त्र व धन सन्तान और सुखी जीवन की व्यवस्था करानी पड़ती है। इस समय में पाप बेहद बढ़ गया है, भले आदमियों का जीना दूभर है। अधर्म से कोई भी नर नारी नहीं डरते। मदिरा मांस का चलन दिनोंदिन बढ़ रहा है। हरे राम हरे कृष्ण की जगह नाच गाने व खेल तमाशों ने कब्जा कर रखा है। अगर हमारे सिद्ध लोग प्रभु स्मरण और गुरु भक्ति न करें तो आप लोग अपने कुकर्मों से मक्खी मच्छर की तरह अकाल मृत्यु के मुख में समा जाओ। हम लोग भी कहां तक अधर्मियों की रक्षा करेंगे तुम लोगों के पापों से भले लोग त्राहि-त्राहि कर उठे हैं, प्रलय का समय बहुत नजदीक है। चन्द साधू सन्त लोग ही बच पायेंगे। बाकी सब काल के कराल गालमें समा जायेंगे। कोई नाम का लेवा और पानी का देवा भी न बच पायेगा, अच्छा भक्त अब मैं चलता हूं मुझे काफी समय हो गया है। तुम गोगा पुराण लिखो मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

मैंने कहा देव थोड़ी देर और रुकें मुझे तो ये भी नहीं पता कि आप किस जमाने में हुए। कोई तो ग्यारहवीं शताब्दी और कोई दसवीं शताब्दी, कोई

अकबर बादशाह का समय, कोई पृथ्वीराज चौहान का समय लिखता है। कोई आपको मुसलमान होगए लिखता है तो कोई हाजीरत का चेला। जितने मुंह उतनी ही बातें हैं। कृपा कर मुझे कुछ तो आधार मिलना ही चाहिए। मेरी इस प्रकार की विनती सुन कर श्री गोगाजी महाराज मुस्कराकर बोले अच्छा तो भक्तवर अति शीघ्र ध्यान से सुनों।

मेरा जन्म तो उससे पहले ही सातवीं शताब्दी में हो चुका था। जब गौड़ बंगाले में हेलापट्टन का राजा गोपीचन्द राज्य करता था और जालन्धर नाथ जी महाराज (महारानी श्रीयल के माता पिता के गुरु) महाराजा गोपाचन्द के यहां कैद थे। उसी समय महारानी श्रीयल का जन्म हुआ था। और जब हूणों ने हमला किया था तब श्री विक्रमादित्य उज्जैन के राजा ने अपने संकट की घड़ी में मुझे बुलाया था। उसके बाद किस तरकीब से मैंने उन्हें जिताया था। ये सब और इसके अलावा जो भी घटना घटी है। मैं गोगा पुराण लिखते समय अपने किसी वीर को तुम्हारे कलम व हस्त में विराजमान कर दूंगा। उससे ये होगा कि तुम जो भी लिखोगे वह मेरा मनचाहा ही ठीक-ठीक लिख पाओगे। चिन्ता मत करो मेरा आशी-

र्वाद तुम्हारे साथ है। अच्छा जै गुरु गोरखनाथ जी महाराज की।

इतना कहकर जाहर जोधा ने अपना घोड़ा हवा की माफिक आसमान को उड़ा दिया। जब मैं उन्हें रोकने को उठा तो वह मेरी आंखों से ओझल हो चुके थे। मेरी आंखें खुल गई थीं और मेरे मुंह के सामने वाली घड़ी पांच बजा रही थी। जितना मुझे उनके जाने का दुख हुआ उससे ज्यादा उनके दर्शन कर खुशी हुई थी। चाहे दर्शन स्वप्न में ही हुए मगर न होने से तो देवता के दर्शन और प्रत्यक्ष बातचीत ईश्वर कृपा ही है। जैसे स्वप्न में मुझे दर्शन दिये मेरी प्रार्थना है वैसे ही अपने भक्तों को जो गोगा मेढ़ी जाते हैं उन्हें भी प्रत्यक्ष नही तो स्वप्न में अवश्य दर्शन देने की कृपा करें। बोलो जाहरवीर की जय। गुरु गोरखनाथ का जय।

हमारे जाहरवीर में कौन कौन खूबियां थीं

ये महान वीर थे। दुष्टों के लिए महाकाल थे। दयालु भी बड़े भारी थे। किसी को भी दुखी नहीं देख सकते थे। अछूत उद्धारक, देश सुधारक, परम गोभक्त, सन्तों के सेवक, नारी जाति के रक्षक, दान वीर, परोपकारी सर्व गुण सम्पन्न थे। इनके अपूर्व

गुणों के कारण जो लोग उन्हें वीर नहीं कह सकते, पीर कहते हैं। पीर मुसलमानों में बहुत ऊंची पदवा है। जो संत सर्व गुण सम्पन्न हो वही पीर की पदवी को पहुंचता है। इनके युग में तो मुसलमानों का भारत में नामोंनिशान भी नहीं था। जब मुसलमान भारत में आनकर बसे और इस्लामी राज्य कायम हो गया। तब इनकी तारीफ अपने हिन्दू भाइयों से सुन सुनकर बड़े प्रसन्न होते थे और जाहरपीर कहकर मिया मदार का नारा बुलन्द करते और हिन्दू भाइयों की तरह ही फूल बतासे जाहरवीर की समाधि पर चढ़ाकर धन सन्तान होने की मुरादें मांगते।

उन्हीं मुसलमानों की देखा देखी भोली भाली देहात में रहने वाली हिन्दू जनता भी जाहरवीर की जगह जाहरपीर का ही जय का नारा लगाने लगी तथा मिया मदार कहने से न चूकी। किसी ने ठीक ही कहा है न करने वालों से करने वाले लाख दरजे अच्छे होते हैं। फिर देवता लोग तो भाव के भूके होते हैं क्या बढ़िया बात है।

जाकी रही भावना जैसी,
प्रभू मूरत देखी उन तैसी।

श्री गोगा पुराण

पहला अध्याय

कहते हैं कि सातवीं शताब्दी के आसपास भारत वर्ष में मरुभूमि की राजधानी राजस्थान प्रान्त में सांभर के राजा गंगाराव चौहान राज्य करते थे। राजा बहुत ही सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट शरीर, अस्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण अचूक निशानेबाज थे। साथ ही परम दयालु, न्यायी और शिकार खेलने के शौकीन थे। सेना (फौज) भी काफी बड़ी थी और ईश्वर कृपा से खजाना भी भरपूर था। परन्तु औलाद न होने के कारण राजा रानी बड़े दुखी रहते थे। ये राजपाट धन-दौलत माल खजाना बिना औलाद किस काम आवेगा।

एक दिन राजा शिकार खेलता वन में दूर चला आया। और राजा के साथी मन्त्री अहेलकार आदि पीछे छूट गए। राजा गंगाराव अपने साथियों के पीछे छूट जाने और प्यास लगने के कारण बेचैन हो गया। पानी कहां से मिले, राजा ने चारों तरफ नजर

घुमाई तो सिवा वन और पेड़ पौधों के कुछ दिखाई न दिया तो राजा गंगाराव ने निराश होकर ऊपर की निगाह उठाकर कहा हे प्रभू तेरा ही आसरा है। इतना कहते ही राजा क्या देखता है कि बहुत सारे पक्षी एक जगह ही इकट्ठे आकाश में मन्डला रहे हैं। पक्षियों को उड़ता देखकर राजा गंगाराव को ढाढस बन्धी कि जहां ये पक्षी मन्डला रहे हैं वहां पानी अवश्य होना चाहिए।

ऐसा विचार मन में उठते ही राजा गंगाराव ने उसी तरफ अपना घोड़ा बढ़ा दिया और चन्द घड़ियों में अपने लक्ष्य के पास जा पहुंचा। तो राजा गंगाराव क्या देखता है कि एक सुन्दर सरोवर बना है। उसी के ऊपर पक्षी मन्डला रहे हैं और इन्द्र लोक की चार अप्सरायें एक से एक बढ़कर सुन्दरी जिनके चेहरों की चमक चन्द्रमा से बढ़ चढ़कर थी। जवानी में दिवानी एक दूसरे के मुंह पर छींटे मार रही हैं। और हंसनी के समान हंस हंसकर दुहरी हो रही हैं। जिनके कपड़े पास ही सरोवर के निकट धरे थे।

राजा गंगाराव अपसराओं को मदहोशी की हालत में देखकर उनमेंजो सबसे छोटी अपसरा थी उस पर मोहित हो गया। मदहोश अपसराओं को अपने

जाल में फांसने के लिए विचारा कि ये सब की सब सब नंगी सरोवर में स्नान कर रही हैं। अगर मैं इन के वस्त्रों का हरण कर लूं तो मेरी मनोकामना पूर्ण हो सकती है। राजा गंगाराव इस प्रकार अपनी मनो-इच्छा पूर्ती का उपाय विचार बड़ा खुश हुआ और परमपिता परमेश्वर का ध्यानकर घोड़े को एक पेड़ से बांधकर उसे घास खाने में लगा दिया और आप पेड़ों की आड़ लेकर धीरे धीरे सरकता हुआ सरोवर के निकट जा पहुंचा जहां पर अपसराओं वस्त्र धरे हुए थे।

राजा गंगाराव ने अपना हाथ बढ़ाकर चारों अपसराओं के वस्त्र उठा लिए। जैसे ही राजा गंगा राव ने अपनी पीठ मोड़ी अपसराओं को राजा की बगल में अपने वस्त्र नजर पड़ गए। और अपने को नंगा समझ नीचे का दम नीचे और ऊपर का ऊपर रह गया। हंसी दिल्लगी सब भूल गई। अपना सारा जिस्म सरोवर के पानी में एक दम छिपा सिर्फ गरदन जल से बाहर रख गिड़ गिड़ाती हुई प्रार्थना के सुर में राजा गंगाराव से बड़ी अप्सरा जिसका नाम तिलोत्मा था दोनों हाथ जोड़कर बोलीं।

हे राजन ! हम चारों इन्द्रलोक की अपसरायें

यहां सरोवर के ठन्डे स्वच्छ जल में स्नान करने आई थीं और आप हम सब के वस्त्र ले जा रहे हो। आप विचारें कि हम बिना वस्त्रों के नंगी जल से बाहर किस प्रकार निकलेंगी और बिना वस्त्रों के किस प्रकार इन्द्रलोक जावेंगी। हे राजन ! हम अबलाओं को लाज आपके हाथ है। आप हमारे वस्त्र हमें तुरन्त देने की दया करें।

राजा गंगाराव बोले, बात तो तुम्हारी ठीक है। किसी ने क्या ठीक कहा है। बिना विचारे जो करे, सो पीछे पछताय। काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हंसाय। सो हे अपसराओं की सरदार, गिड़गिड़ाने से काम नहीं चलता। अगर गिड़ गिड़ाने से ही काम बन जाता तो मैं भी अपनी मनोकामना पूरी कर लेता। वस्त्र हरण करने की जरूरत ही मुझे क्यों पड़ती। अच्छा आप अपना नाम तो बतावें।

बड़ी अपसरा लजाती हुई बोली, हे राजन ! मेरा नाम तिलोत्मा है। बाकी तीनों अपसरायें भी राजा गंगाराव के खूबसूरत चेहरे को टकटकी बांध कर निहार रही थीं। छोटी अपसरा का सबसे बुरा हाल था। उसके तो पलक झपकते ही नहीं थे।

ये सब बातें राजा गंगाराव से छिपी नहीं रहीं

और अपसरा के मुंह से तिलोतमा नाम सुनकर राजा गंगाराव बोले । तुम्हारी बोली बड़ी प्यारी है और तुम ही इन सबकी सरदार मालूम होतीं हो। मैंने सुना है कि इन्द्रलोक की अपसरायें नाचने गाने में बड़ी निपुण होती हैं । क्या ये बात ठीक है । बड़ी अपसरा तिलोतमा बोली पहले आप हमें हमारे वस्त्र देने की कृपा करें । हमें ठन्ड लग रही है । वस्त्र पहनने के बाद आपको गाना भी सुनवा दिया जायेगा ।

बड़ी अपसरा तिलोतमा की बात सुनकर राजा गंगाराव बोले । हमारी इतनी जानिसारी के बदले सिर्फ एक गाना । नहीं हमें तुम चारों के कपड़े देकर एक गाना नहीं सुनना है । आपको हमारी बात नहीं माननी है तो हम ही आपकी बात क्यों मानने लगे अगर तुम्हें अपने वस्त्र लेकर अपनी लाज बचानी होती और ठन्ड से बचना होता तो हमारी बात मान कर फैसला कर लेतीं । गाना क्या हम पर नहीं आता, आप जैसा भी राग सुनना चाहे और जितन तरह का मैं तुम्हें सुना सकता हूं । अच्छा अब हमारा तुम्हारा कोई फैसला होता नहीं नजर आता इसलिए मैं चलता हूं ।

राजा गंगाराव की बातें सुनकर चारों अप्सराओं को कंपकंपी आ गई । आंखों के आगे अंधेरा छा गया और चारों ही गिड़गिड़ा कर एक साथ बोलीं, कृपा कर हमें बतावें हमारे वस्त्र देने में आपकी क्या शर्त है । और आप हम अबलाओं से क्या चाहते हैं । हमारे बस की जो भी बात होगी हम सब वायदा करती हैं उसे जरूर मान लेंगी ।

अपसराओं की घबराहट देख कर राजा गगाराव बोले आपने वायदा किया है कि आप मेरी शर्त मान लेंगी तो मैं आपको बताने में हर्ज नहीं समझता । मैं आप से सिर्फ ये चाहता हूं कि आपके साथ जो ये सबसे छोटी अप्सरा है इनकी कजरारी आंखों ने मेरे हृदय को छलनी कर दिया है । मैं चाहता हूं कि एक तो इनका नाम मुझे बताया जाये । दूसरे मैं इन से साथ शादी करके इन्हें अपनी महारानी बनाना चाहता हूं । मेरी सिर्फ ये ही इच्छा है । अगर आप मेरी मनोकामना की पूर्ती करदें तो मुझे आप लोगों के वस्त्र देने में कतई इन्कार नहीं है ।

राजा गंगाराव की बात सुनकर बड़ी अपसरा तिलोतमा बोली । हे राजन ! ये जो सबसे छोटी अपसरा है इसका नाम उर्वशी है और ये नाचने में

कमाल करती है। सारे इन्द्रलोक की शान है। इसे हम आपके पास छोड़ जायें तो राजा इन्द्र हमें जिन्दा जमींदोज करवा देंगे। हां, हम तीनों में से आप जिसे कहें आपके पास रुक जाये। इसे तो आप हमारे साथ चलकर और अपना गाना सुनाकर राजा इन्द्र को खुश करके ही उससे मांगकर ला सकते हैं।

अपसरा तिलोतमा की बात सुनकर राजा गंगा राव ने चारों अपसराओं को कसम धर्म उठाने के बाद स्वर्गलोक में उनके साथ जाने की उनकी उपरोक्त शर्त मान ली। चारों अपसराओं के वस्त्र उनके सुपुर्द कर दिये। जिन्हें उन्होंने राजा के मुंह फेर लेने पर एक दूसरी की ओट करके होशियारी से अपने अपने वस्त्र पहन लिए। चारों ने अपने उड़न खटोले पर बैठकर अपने वचन के अनुसार राजा को भी अपने साथ में बिठला लिया।

राजा गंगाराव की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह अपनी तकदीर को देख परमपिता परमात्मा का धन्यवाद करके प्रार्थना करने लगा कि हे दीन बन्धु जहां इतनी दया की है कि जीतेजी स्वर्गलोक जा रहा हूं। वहां इतनी दया और करना कि स्वर्गलोक का राजा इन्द्र मेरा गाना सुनकर प्रसन्न हो जावे

और इस अपसरा उर्वशी को मेरी रानी बनने को मेरे सुपुर्द कर दे। इसी तरह राजा गंगाराव विचारमग्न उड़न खटोले में बैठा जा रहा था कि स्वर्ग लोक के सुन्दर दरवाजे पर जाकर उड़न खटोला रुका। चारों अपसरायें और राजा गंगाराव को उतार कर उड़न खटोला अपने स्थान पर खूंटी पर जाकर टंग गया।

राजा गंगाराव को गवैये का भेष बनवाकर और आप चारों नाचने वाली का भेष बना शृंगार कर राजा इन्द्र के सभाभवन के भीतर जा मुजरा बजाया। राजा इन्द्र इन चारों को देखते ही बहुत प्रसन्न हुआ और नृत्य करने का आदेश दे दिया। चारों अपसराओं ने भी राजा इन्द्र की आज्ञा सुनते ही अपने जिस्म को लचका लचका कर नाचना शुरू कर दिया। चारों अपसरायें ऐसी नाचीं कि सारी इन्द्र सभा मोहित हो गई। कोई नाच देखने वाला ये ही अन्दाज नहीं लगा पाया ये चारों अपसरायें स्वर्गलोक की धरती में नाच रहीं हैं या धरती से ऊपर अधर में।

राजा गंगाराव ने भी गाने में कमाल ही कर दिया। उन्होंने अपसराओं के नाच के माफिक ही तराना गाया। राजा गंगाराव के सुरीले कन्ठ से तराने को सुनकर सारी इन्द्रसभा मोहित हो गई।

स्वर्गलोक में चारों तरफ से वाह-वाह की आवाजें गूंजने लगी। जब नाच गाना बन्द हो गया तब राजा इन्द्र ने नाचने वालियों को इनाम इकराम देने के बाद गवैये को बुलाकर (राजा गंगाराव से) कहा हम तुम्हारा गाना सुनकर बेहद खुश हुए बोलो तुम्हें क्या इनाम दिया जावे। स्वर्ग के राजा इन्द्र के मुख से इनाम की बात सुनकर राजा गंगाराव बड़े प्रसन्न हुए और अपने दोनों हाथ जोड़कर बोले। आपको देवता की पदवी लोगों ने इसीलिए दे रखी है कि आप सारे संसार को खुशी ही बांटते रहते हैं। हवा पानी धूप छाया आदि आप ही की दी हुई जीवन क्रियायें हैं और आप देवताओं का दिया हुआ सब कुछ मुझ पर है फिर भी आपके भरे भन्डार से जब खाली हाथ कोई जाता ही नहीं तो मैं ही क्यों निराश जाऊंगा। आपने भरी सभा में मन इच्छा वस्तु मांगने की मुझे आज्ञा दी है। सो मेरी इच्छा है कि ये जो सबसे छोटी अपसरा उर्वशी है इसने मेरा मन मोह लिया है सो आप उर्वशी को मुझे इनायत करने की दया करें। मैं इन्हें महारानी के पद पर आसीन करूंगा। मैं बागड़ देश के सांभर प्रांत का राजा गंगाराव के नाम से राज काज करता हूं।

राजा गंगाराव की बात सुनकर राजा इन्द्र के पैर तले की धरती हिल गई। उन्हें बेहद अफसोस हुआ कि इस राजस्थानी नरेश ने स्वर्ग की जो अपार शोभा है उसी उर्वशी को मांगा है। इस सुन्दर राजा के साथ उर्वशी चली जावेगी तो रहेगी काफी सुखी परन्तु स्वर्गलोक की अनुपम शोभा सुषमा और कला सभी यहां से चली जावेंगीं। उर्वशी स्वर्गलोक का मधुमय शृंगार है। उर्वशी के गाने को क्या भुलाया जा सकता है।

राजा इन्द्र सोच विचार में डूबा था कि उर्वशी व राजा गंगाराव की चारों आंखें आपस में टकरा गई। एक दूसरे की मनोभावना एक दूसरे ने समझी। एक के हृदय को दूसरे ने पहचाना। मानव के वास्ते अपसरा और अपसरा के वास्ते मानव बेचैन बन गया। उर्वशी सोचने लगी देवलोक को छोड़कर मानव लोक में रहना ही ठीक है। यहां सदा से भोग विलास की एक परम्परा है। यहां हर समय वासना का ही उन्माद छाया रहता है। इससे सच्चे आनन्द का भान नहीं होता, बिना विरह वेदना को जाने संयोग की रस माधुरी एकदम फीकी है। उर्वशी स्वर्ग की एकरसता से ऊब गई थी। यह मृत्युलोक

की विचित्रता का स्वाद चखना चाहती थी।

राजा इन्द्र ने सोच विचार करने के बाद जब अपनी नजर उर्वशी पर डाली तो उसके दिल की खुशी व दुख को बिल्कुल न समझ सका। फिर गंगा राव की तरफ आंख उठा कर देखा और स्वर्ग लोक का राजा इन्द्र बोला। राजा गंगाराव जी चौहान हम अपने वचनबद्ध होने के कारण उर्वशी तो आपको भेंट में दे देंगे। तो हमारी भी शर्त उर्वशी को देने में आपको माननी पड़ेगी वह सिर्फ यह है कि एक तो उर्वशी केवल घृत का ही आहार किया करेगी। दूसरे दोनों प्यारे मेष उसकी चारपाई के पास ही बन्धे रहेंगे जिससे उनकी चोरी न होने पाये और सबसे भारी शर्त यह है कि अगर वह तुम्हें जब भी नग्न अवस्था में देख लेगी उसी क्षण वह रूहपोश हो जावेगी।

राजा गंगाराव ने बिना आगा पीछा सोच राजा इन्द्र की शर्तें मान लीं। मानव तथा अपसरा का स्वर्ग लोक से गमन हुआ। राजा गंगाराव ने उसी सरोवर के निकट विमान से उतर कर अपने घोड़े को खोला जहां उसे बांध गये थे और गोदी में भरकर अपसरा को भी उसकी पीठ पर बिठा दिया। उसके बाद आप

उछल कर घोड़े पर सवार हो राजधानी की ओर चल दिये।

इधर उर्वशी के गमन करते ही स्वर्ग लोक अन्धकार में डूब गया। बसन्त आया परन्तु लताओं ने उस का स्वागत नहीं किया। रसाल वृक्षों में मन्जरी लगी परन्तु कोई सरसता नहीं थी, कोयल बोलती थी पर उसके कन्ठ में कामिनियों को मोहने की योग्यता नहीं थी। गन्धर्वों से यह सब वीरानगी न देखी गई। वह मृत्यु लोक से उर्वशी के लौटाने का उपाय सोचने लगे।

गन्धर्वों को विचार में छोड़ अब हम राजा गंगा राव व उर्वशी की तरफ आते हैं। दोनों हंसी खुशी में मग्न घोड़े की पीठ पर चढ़ बातें करते अपनी राजधानी में इतनी जल्दी किस प्रकार आन पहुंचे पता ही नहीं चला। जब अपने राजमहल के दरवाजे पर घोड़े से उतरे तो उर्वशी ने देखा कि सोने के बने कंगूरों वाला राजमहल सूर्य की प्रभा से चमक रहा था। जिससे उर्वशी की आंखें चौंध गई। प्रत्येक स्थान सजावट से भरपूर था। प्रजाजन अपनी साम्राज्ञी अपसरा उर्वशी को देखने उमड़ पड़े और राज परिवार उर्वशी के सत्कार के लिए अपनी आंखें

बिछाने में पीछे न था।

आज इस सुहाने समय पर उर्वशी का भूतल पर आना स्वर्ण अवसर था। सारी नगरी में घर-घर अपसरा उर्वशी की ही चर्चा थी। राजा गंगाराव ने तुरन्त ही कुल पुरोहित को बुलाकर अपसरा उर्वशी से विधिपूर्वक विवाह किया और गाजे बाजे के साथ सारी नगरी की ज्यौनार की। सैकड़ों गऊओं का ब्राह्मणों को दान किया और फकीरों के लिए खजाना खोलकर मोहर अशरफी बांट कर सबसे आशीष ली।

अब राजा गंगाराव के दिन भी उर्वशी के साथ ऐशो आराम करते गुजरने लगे और उर्वशी अपसरा से क्रमवार राजा को तीन राजकुमारों की प्राप्ति हूई जिनके कारनामे अगले पृष्ठ में आवेंगे। काफी दिनों से स्वर्गलोक के गन्धर्व उर्वशी को स्वर्गलोक में लाना चाहते थे। एक दिन मध्य रात्रि को मौका देखकर गन्धर्व लोग एक मेष को चुराकर आकाश में लेगए। उसकी करुण पुकार जब उर्वशी के कान में पड़ी तब वह रोने लगी। दूसरे मेष की आवाज सुनते ही वह अपने को अनाथ कहकर फूट फूट कर रोने लगी। उर्वशी का रोना सुनकर राजा उन्मत्त हो गया और

अपनी नग्नता पर बिना ध्यान दिए वह गन्धर्वों के पीछे दौड़ा। वे सब तो इसी प्रतीक्षा में थे ही। राजा के दुर्भाग्य से अन्धेरे में बिजली भी चमक उठी। राजा का नग्न शरीर उर्वशी के सामने प्रकट हो गया। उर्वशी उसी समय अन्तरध्यान हो गई। राजा पागल हो उसे खोजने में ही मर गया और उसका कोई पता नहीं चला।

उर्वशी ने जिन तीन राजकुमारों को जन्म दिया उनके नाम इन्द्र, चन्द्र, कलेन्द्र थे। जब वे तीनों राजकुमार बड़े हो गए तब इन्होंने अपनी बहादुरी से अपनी वीरता को चार चांद लगाए और अपने लिये बड़े-बड़े नगर बसाये। राजकुमार इन्द ने इन्दौर नगर को बसाकर अपनी राजधानी कायम की और चन्द्र ने भी अपने नाम से चन्दावर उर्फ चन्देरी और कलेन्द्र अपने पिता की यानी गंगाराव के ही राज्य के अधिकारी बने रहे। इनके पुत्र हूए कुंवर पाल सिंह। कुवरपालसिंह के उमरपालसिंह यानीराजा उम्मर। उम्मर के पिता कुवरपालसिंह ने बागड़ देश पर चढ़ाई करके सांभर व ददरेड़ा जीतकर अपनी राजधानी बसाई। इसी लड़ाई में कुवरपाल सिंह मारे गये थे जिससे राजा उमरपालसिंह यानी उम्मरसिंह

राजा बने । इनकी रानी ने तीन सन्तानों को जन्म दिया जिनमें दो लड़के जिनका लाड़ का नाम जेवर व नेवर रखा गया । उनके असली नाम बड़े बेटे का जेवर सिह (जोरावर सिह) और छोटे बेटे का नेवर सिह तथा बेटी का नाम छबीलदे था । यूं तो राजस्थान प्रान्त सदा से ही वीर भूमि रहा है । इसकी वीरता की दोस्तों की तो बात ही क्या दुश्मनों ने भी प्रशंसा की है ।

* श्री गोगा पुराण प्रथम अध्याय समाप्त *

दूसरा अध्याय

भारतवर्ष के प्यारे मरु देश दुनिया के लोग चाहे तुम्हें धूल मिट्टी का ढेर कहें चाहे बरसते हुए अंगारे । जी चाहे तो ऊबड़-खाबड़, उजाड़ प्रदेश भी कह डालते हैं । परन्तु उन सब की अनुभव हीनता से तेरा सौन्दर्य घट नहीं सकता बढ़ता ही है । किसी की झूठी आलोचना से तुम्हारी शक्ति घट थोड़े ही जायगी ।

तेरी कदर तो वही जानते हैं, जो तेरी गोदी में खेले हैं । जो तेरे विशाल शरीर पर लेटे हैं । जिन्होंने तेरे ऊंचे धोरों पर चढ़कर, दूर दूर तक

विहार किया है वही तेरे महत्व को समझ सकते हैं । एक बार नहीं, हम हजारों बार तेरे शरीर पर कूदे हैं और सैकड़ों बार खेल खेलकर तेरे मर्मस्थलों पर आघात किया हैं परन्तु तुमने हमें कभी आघात नहीं पहुंचाया ।

बताओ तो सही किसी और देश की भूमि में भी इतनी सहन शीलता है । तेरा मिजाज जरूर बदलता है पर उससे हमारी कोई हानि नहीं होती है । जब कभी तुझे क्रोध भी आता है तो शीघ्र ही सन्त महंत की तरह शान्त भी शीघ्र ही हो जाता है । गर्मी के मौसम में तू दिन में अग्निकुन्ड के समान जलने लगता है । परन्तु दिन छिपते ही तू अपनी शीतल गोद में शयन कराने को तैयार रहता है ।

इस तरह तू नहीं चाहता कि गर्मी के दिनों में कोई बाहर घूमे, इस तरह शीतकाल में भी रातों को किसी का बाहर घूमना तू पसंन्द नहीं करता, एकदम हिमालय पर्वत के समान, बर्फ जैसा ठण्डा हो जाता है । प्रातःकाल जब वायु के साथ तू खेलता है तब मैं भी तेरा मधुर मिलन देखने पहुंच जाता हूं । मैंने तो तुम्हारे उस मधुर मिलन में ये ही देखा है, जो आनन्द तुम्हारे मिलन में है वह स्वर्ग समान भूतल

प्रदेश काशमीर में भी नहीं है ।

मैंने ये भी देखा है तुझे कला से भी बेहद प्रेम हैं । शायद ही कोई ऐसा दिन बीता होगा, जिस दिन मैंने तेरे प्रत्येक अवयव पर विलक्षण चित्रकारी को न देखा हो । प्रथम तो तेरा मित्र वायु ही तेरे हृदय में इतनी लहर उठा जाता है कि उसके सामने बड़े बड़े नदी नालों की तरंगें भी तुच्छ दिखाई पड़ती हैं । समुद्र से तो तेरा मिलान करके व्यर्थ ही समय बरबाद करना है । क्योंकि समुद्र की लहरें भयंकर होती हैं शान्त नहीं । हां कभी कभी तुझे पुराने साथी वायु की याद आ जाती है तो तू भी उसके साथ मिलकर बड़ी ऊंची बड़ी तेज उछाल मारता है । तब समुद्र की बड़ी बड़ी तूफानी लहरें तेरे बालू से भयभीत होकर पराभूत हो जाती हैं ।

* श्री गोगा पुराण दूसरा अध्याय समाप्त *

तीसरा अध्याय

(मतीरा)

प्राण प्यारे मरू देश, शुष्क होकर भी तू कितना सरस है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण तेरे सजल मतीरे में है । ऐसा प्रतीत होता है कि अमृत की रक्षा के लिए

इन्द्र ने ही तुझे ब्रह्मा से कहकर निर्जल बनवाया था । यह अमृत मतीरा, पृथ्वी में छिपकर जितना बढ़ता है उतना खुले प्रदेश में नहीं बढ़ता । चन्द्रमा इसको कितना चाहता है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि वह शरद पूर्णिमा के दिन इसको पाये बिना सन्तुष्ट नहीं होता । उसको अमृत इसी से मिलता है । इसके मधुर रस को पीकर सब ये ही कहते हैं हम में जीवन आ गया । और अपने को संसार के सब रोगों से, मुक्त समझता है ।

विदेश में जाकर जब तिल्ली आदि के कारण, पेट बढ़ाकर लोग यहां रोते पीटते दुखी होकर आते हैं तो उनको मतीरा देकर, यही कहा जाता है कि-मती-रो-अच्छे हो जाओगे । और साथ ही रोग को भी, ये कहकर फटकार बताई जाती है कि-मती रहो-जल्दी भागो । इसीलिये इस फल का नाम मतीरा प्रसिद्ध है । ये किसानों का भी दोस्त और परम हितैषी है । गर्मी के मौसम में जब किसान धान की फसल में काम करते हैं तब ये उन की तृषा को भगाकर तृप्त करता है । कुछ पुराने जमाने के सज्जन इसके अन्दर के रूप को देखकर घृणा करते हैं । उनके लिए सफेद और स्वच्छ रूप

में भी ये पैदा होता है। आप इसके प्रत्येक अंग का कितने ही मुक्कों से निरादर करें। परन्तु ये अपने सारे अंग को कुचलवा कर भी अन्त तक रस ही देता रहता है।

जब आप लोग इसकी खोपड़ी खपड़ी, उठाकर फेंक देते हैं। तब भी ये आपकी खोपड़ी, गरमी में तर करने के लिए, अपने बीज छोड़ जाता है। जब गरमी में आप इसके बीजों को घोट घोट कर पीते हैं तभी इसकी स्तुती करके जीते हैं। हे मरु भूमि के अमर फल, तैंने अपनी सहनशीलता पराकाष्ठा को पहुंचा दी है। इसी लिये बड़े बड़े सन्त गुरू गोरखनाथ जैसे, तेरे अमृत फल के आचमन को यहां आते हैं, तो प्रसन्न होकर ही यहां से जाते हैं। यह तो ठीक है कि श्री गंगा की पवित्र धारा, यहां नहीं बहती है। परन्तु क्या वह अपने दूसरे रूप में यहां नहीं प्रवाहित हो रही है। अबोध दुनिया के लोग तुझे मरु भूमि के नाम से पुकारते हैं। परन्तु सब सुबोध जानते हैं कि एक जमाने से आज तक अमरों की अमरावलि तू ही है। तेरे वीरों की अमर गाथायें सुन सुनकर और तेरी धार्मिक संस्कृति से चकित होकर ऐसा कौन है जो अपने मस्तक को

तेरे सामने नत नहीं करता।

* श्री गोगा पुराण तीसरा अध्याय समाप्त *

चौथा अध्याय

जब राजा उम्मरसिंह के दोनों लड़के सयाने हो गए तो उन्होंने राजकुमार जेवर का बिवाह सिरसा पाटन के राजा कुमरपाल की बड़ी लड़की बाछल से और नेवरसिंह का छोटी लड़की काछल से (दोनों भाइयों की शादी दोनों बहनों से) करदी। जो तीसरी बहन आछल थी उसकी शादी बाद में हरियाणा प्रान्त में हुई थी। जब दस बारह वर्ष ब्याह को बीत गए और संतान का मुख देखना दोनों रानियों में से एक को भी नसीब न हुआ। तो राजा उम्मरसिंह और उनके दोनों बेटों को बड़ी चिन्ता हुई कहीं ये दोनों रानियां बांझ तो नहीं हैं। अगर ही ऐसी ही बात है तो क्या हम दोनों भाई निसन्तान मरेंगे। क्या हमारे कुल में कोई नमा लेवा और पानी देवा पैदा ही नहीं होगा। क्या हमारा बन्स हमारे बाद ही मिट जायेगा। राजा उम्मरसिंह के दोनों बेटे रात दिन इसी फिकर में घुलने लगे। ना दिन को चैन पड़ता न रात को निद्रा आती।

अपने पतियों को चिन्ता में डूबा देख रानी वाछल व रानी काछल का भी बहुत बुरा हाल था। दोनों बहनें दोनों दासियों से छिप छिपकर आंसू ढलका ढलका कर अपने नैना दुखाया करती थीं। इन दोनों की ऐसी गमगीन दशा देखकर इनकी नन्द छबीलदे भी अपनी दोनों भाभियों को बोल कुबोल बोला करती। कभी मनहूस शकल वाली कहती कभी कलमुही, कभी ओछे कुल की, कभी कुलक्षणी बांझ। ये रानियां नन्द छबीली के तानों से भी महान दुखी हो गई थीं वह भगवान से यही प्रार्थना रात दिन करती थीं कि हे भगवान इस निसन्तान जीवन से तो मौत ही भली।

दोनों राजकुमारों को राज्य भार सोंपकर राजा उम्मरसिंह राम नाम तो जरूर जपते थे। मगर अपने घर को बिना बालक के, सूना देखकर और अपनी दोनों बहुओं की सूनी गोदी देखकर, भगवान से भी प्रार्थना करते थे। कि प्रभू क्या मैं बिना पोते पोती का मुंह देखे ही काल के कराल गाल में चला जाऊंगा। क्या मेरे दोनों राजकुमार जेवर नेवर के भाग्य में, अपनी सन्तान का सुख नहीं लिखा है। प्रभू तेरी माया अपरम्पार है, मुझे एक पोता न दे

तो एक पोती ही देकर अपनी दयालुता दिखादे।

जिस प्रकार राजा उम्मरसिंह दुखी थे, उसी प्रकार रानी बाछल व रानी काछल का भी जीना हराम था। वह भी महा दुखी थीं और रात दिन रोने व ईश्वर से प्रार्थना करने के दूसरा कोई चारा नहीं था। यही राजा जेवरसिंह व नेवरसिंह का भी हाल था।

एक दिन सुबह के समय ब्राह्म मुहूरत में राजा जेवरसिंह हवाखोरी के वास्ते अपने महल से निकले सामने ही मेहतरानी, झाड़ू से सड़क साफ कर रही थी। उसकी नजर राजा जेवरसिंह पर पड़ी। राजा को देखते ही मेहतरानी, नाक सिकोड़ कर मुंह फेर कर कहने लगी। भगवान दया करना, आज सुबह-सुबह निरबन्सी का मुंह देखा है। दिन भर रोटी मिलेगी या नहीं। राजा जेवरसिंह ने भी मेहतरानी की आधी परदी बात सुनी, परन्तु समझ सब गये कि ये नीच जाति की कमीनी औरत क्या कुछ कह रही है। राजा जेवरसिंह बड़े समझदार और दयालु प्रकृति के थे, उन्होंने मेहतरानी की बात सुन कर, अपने पूर्व जन्म के कर्मों तथा अपनी भाग्य हीनता को दोषी ठहराया। मेहतरानी को कुछ न

कहा। अगर कोई दूसरा राजा होता तो, महतरानी को जिन्दी ही जमीन में गढ़वा देता। या कोड़ों से पिटाई करवाता, सारे नगर में तहलका मच जाता। और किसी को भी इस प्रकार की शरारत भरी बात कहने की हिम्मत न पड़ती। परन्तु मेहतरानी से कुछ न कह कर राजा जेवरसिंह अपने महल में आन कर पड़ रहे।

महान दुखी हो कहने लगे, प्रभू अब और नहीं सहा जाता। नीच लोग तक बेइज्जती करते हैं, इससे बड़ा दूसरा दुख और कौन सा होगा। भगवान मेरे पापों को क्षमा करो, मुझे एक बेटा या बेटी देकर मुझ कर्महीन के कलेश काटो। तुम्हारे दरबार में कौन कमी है, जिसका सारा परिवार दुखी उसके जीवन को लाख बार धिक्कार है। जेवरसिंह को दुखी देखकर राजा उम्मरसिंह ने, राजा जेवर सिंह का राजतिलक करके शीशमेड़ी ददरेड़ा का राजा बना दिया और अपने छोटे बेटे नेवरसिंह को सांभर का इलाका देकर राज का बटवारा कर दिया। दोनों को राज का भार सौंप आप प्रभू भजन करने में मन लगाने लगे। दोनों भाइयों में से किसी ने भी अपने पूज्य पिता जी आज्ञा का उल्लंघन नहीं

किया। इन दोनों को भी राज काज से मोह ममता नहीं रही थी, जब उसके भोगने वाला राजकुमार ही नहीं जन्मा था तब राजकाज का मोह किस लिये होता।

जब सारा ही राज भवन जिन्दगी से उकता गया तो राजा जेवरसिंह ने अपने राजपुरोहित को महल में बुलाकर उनसे सलाह की कि पुरोहित जी हम बिना सन्तान के बहुत दुखी हैं। हमारी जीने को इच्छा नहीं करती। आप कोई उपाय बतावें जिससे जीवन सुखमय हो, जिन्दगी भारी न मालूम पड़े और हमारे महलों में एक कुंवर पैदा हो जावे। इतना कहकर राजा जेवर सिंह ने पुरोहित जी के पैर पकड़ लिए। कुल पुरोहित ने राजा जेवर सिंह को उठा कर गले लगाया और आशीर्वाद देकर कहने लगे, राजन चिन्ता फिकर छोड़ दो, दुखी होने की कोई जरूरत नहीं। दुनिया में कोई भी दुख ऐसा नहीं जिसका उपाय न हो। अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए ही धर्म कर्म ईश्वर ने बनाए हैं। दान पुन्य करने से कैसा ही अपराध हो प्रभू कृपा से क्षमा हो जाता है।

मेरी राय में आप सब राजपरिवार धर्म-कर्म,

दान-पुन्य में जी जान से लग जाओ। धर्म की जड़ हमेशा हरी रहती है। सबसे पहले बाग बगीचा लगवाओ, धर्मशाला बनवाओ, कुए खुदवाओ। पानी की प्याऊ लगवाओ। सन्त महात्माओं की सेवा करो, दान के लिए दरवाजे खोल दो। कोई भी भिकारी निराश न जावे। इससे ये होगा कोई सन्त महात्मा आवेगा और उसके आशीर्वाद से रानियों की गोदें भर जावेंगी। राजा जेवर सिंह को अपने कुल पुरोहित की बात जंच गई और उन्होंने उसी वक्त डोंडी पीटने वाले को बुलाकर डोडी पिटवाकर ठेकेदार लोग बुलवा लिए और नौलखा बाग बनवाने का ठेका दे दिया और बाग में ही धर्मशाला व कुए का निर्माण करवाया। कुए पर ही प्याऊ का भी इन्तजाम किया गया। उसी के पास पूजा के लिये मंदिर भी बनवाया जिसमें शिव-पार्वती, भैरव, हनुमान, दुर्गा व अन्नपूर्णा मां की मूर्तियां स्थापित की गईं।

बाग के पेड़ों को पानी देने की पूरी व्यवस्था हो जाने पर अनुकूल समय पर फल फूल आम अमरूद लीची जामुन वगैरह के पेड़ पौधों से बाग हरा भरा हो गया। पेड़ों को डालियों को फलों से लदी देखकर माली मालिन बड़ा हर्ष मनाते।

इधर तो ये हर्ष मनाते थे और उधर राजा जेवरसिंह राज्य के बड़े बड़े विद्वानों को बुलाकर हवन कुंड बनवाकर महायज्ञ करवाने लगे। जब यज्ञ कराते और दान पुन्य करते, भन्डारे करवाते साधुसन्तों की सेवा करते काफी समय व्यतीत हो गया तो स्वर्ग लोक में बड़ी खलबली मच गई। राजा इन्द्र ने एक दिन नारद मुनि व शनीदेव को बुलाकर विनती की कि मृत्युलोक में जो राजस्थान प्रान्त में बागड़ शहर के ददरेड़ा नगर शीशमेड़ी का राजा जेवर सिंह बड़े बड़े यज्ञ कर रहा है उसे किसी भी उपाय से रोकना चाहिये। अगर वह इसी तरह यज्ञ हवन करता रहा और उसके सौ यज्ञ पूरे हो गये तो वह इन्द्रासन को छीनकर इन्द्रलोक पर कब्जा कर लेगा और इन्द्रासन पर अपना अधिकार जमा लेगा। स्वर्ग के राजा इन्द्र की विनती सुनकर नारद मुनि व शनी देव दोनों वीणा बजाते हरि गुण गाते मृत्यु लोक में राजा जेवर सिंह के दरबार में आन पहुंचे।

इन्द्रदेव की विनती सुनकर, शनी नारद बेचैन।
अपना रूप छिपाय के, दोऊ चले दिन रैन॥
दोऊ चले दिन रैन, भेष पंडित का कर लीना।
पोथी पत्रा दबा बगल में चले दोनों परवीना॥

पहुंच गये ददरेड़ा नगरी,
जहां का जेवर सिंह राजा ।
जय जयकार होय बंगले में,
यज्ञ का बजता था बाजा ॥
पंडित वेद बांचते यज्ञ की धूम मची भारी।
दोऊ देव हैरान न मुख से बोल होय जारी ॥
बांध के हिम्मत शनी देव फिर बढ़े अगाड़ी हैं ।
मौका देख राजा की पगड़ी में घुसे तपधारी हैं ॥
तब कही नारद मुनि बेना
राजा हो तुम घृत फूंक रहे,
गरीबों को मिले न चबेना ॥
होश कर राजा प्यारे ।
जो दुख तुझको हैं हमें बतारे ॥
हम काशी के पंडित ज्ञानी
तीन जन्मका हाल बतादें पूछ ले नकुछ तेरी हानी।
मन का भेद बता महाराजा ।
क्यों चेहरा तेरा उदास कौन गम में तू साजा ॥

नारद मुनि की वाणी सुनकर राजा जेवरसिंह बड़े प्रसन्न हुए वे तुरन्त ही सिंहासन त्याग खड़े हो, दोनों महात्माओं के चरणस्पर्श और नमस्कार कर अपने दोनों हाथ जोड़ कर कहने लगे हे ब्रह्मज्ञानी

ॠषियों ! मैं भाग्यहीन निसन्तान होने के कारण ही हवन यज्ञ तथा दान पुन्य करके किसी महात्मा के दर्शन लाभ व सन्तान प्राप्ति के वरदान मिलने के कारण ही अपने राजपुरोहित की आज्ञानुसार ये पूजन वृत कर रहा हूं । सो आज अनायास ही आप लोगों के दर्शन हो गए । अब मुझे आप महानुभावों से पुत्र प्राप्ति का वरदान मिलने की पूरी सम्भावना है । सो हे ब्रह्मज्ञानी देव, मेरी मनोइच्छा पूरी होने का वर-दान देने की कृपा करें। और मेरे लायक जो सेवा हो वह बताने की दया करें । हे देवों के देव, मेरी हाथ जोड़कर पैर छूकर आपसे प्रार्थना है कि दुख को अति शीघ्र हरो ।

इस प्रकार राजा जेवरसिंह को अधीर देख देवर्षि नारद बोले । हे राजन ! अधीर मत हो, धीरज धरो, तुम अगर मेरे बताये मार्ग पर चलोगे तो मेरा आशीर्वाद जरूर फलीभूत होगा । पुत्र प्राप्ति की तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूरी होगी । हवन यज्ञ में तो घी सामिग्री फूंकना, मेरी समझ में वृथा है । से भांति-भांति के पकवान, सामग्री बनवाकर, इसी घी गरीब दुखी लोगों को खिलाओ । साधु सन्तों को जिमाओ, इसके अलावा बात ये है कि सूर्य पुत्र गोरख

नाथ ने इस पृथ्वी पर अवतार लिया है। जो भक्तों का उद्धार करने की खातिर अपने चौदह सौ चेलों की जमात के साथ नगर नगर का भ्रमण करते हैं। और अपने भक्तों का कष्ट हरते हैं व मनोकामना पूरी करते हैं।

सबसे सरल उपाय उनके अति शीघ्र दर्शनों का एक ही है कि गोरख गुरु के नाम की जोत, तुम या तुम्हारी रानी नित्य नियम से सुबह शाम दोनों वक्त बाले। गोरख गुरु के नाम की ज्योत बालने से वह तुम्हारे यहां पधार कर शीघ्र दर्शन देंगे और तुम्हें वरदान देकर तुम्हारी मनोकामना पूरी कर देंगे। उनके लिए अनहोनी को होनी में बदल देना कोई मुश्किल बात नहीं है। बड़े बड़े राजा महाराजा, गोपीचन्द, हेला पट्टन का राजा, उज्जैन का राजा भरथरी, स्यालकोट का राजकुमार पूरन मल जति के समान उनके चौदह सौ चेले हैं।

नारद मुनि के श्रीमुख से जो वचन निकले वह सब राजा जेवरसिंह के मन में बैठ गये। उन्हों ने नारद मुनि के चरणों में शीश झुका दिया। और पन्डितों से यज्ञ हवन बन्द करवा दिये। उन्हें दिल खोलकर दक्षिणा दी। किसी को हीरा, किसी को

मोती, किसी को मोहर अशरफी, किसी को कन्चन कड़े और किसी को शाल दुशाले दिये तथा दुधारू गाय सोने के सींग मंडवाकर सब यज्ञ करताओं को दीं। अपने पुरोहित जी को जागीर देकर उनका मान बढ़ाया और शनीदेव व नारद मुनि को भी केवड़े गुलाब में बनी खीर खांड के भोजन करवाये शनीदेव की माया अपरम्पार है उन्होंने राजा जेवर सिंह की मति हरकर राजा इन्द्र का सदमा दूर कर दिया और पुत्र प्राप्ति का उपाय बता कर, राजा जेवरसिंह का कलेश भी हल्का कर दिया तथा आशीर्वाद देकर चल पड़े। वे ऐसा कहकर हे राजन ! जगतपिता आपकी मनोकामना पूरी करें।

इतना कह शनीदेव व देवर्षि नारद इन्द्रलोक को गमन कर गये और इन्द्र लोक पहुंचकर राजा इन्द्र को यज्ञ हवन बन्द करवाने की खुशखबरी सुनाई।

* श्री गोगा पुराण चौथा अध्याय समाप्त *

पांचवा अध्याय

अब इन्द्रलोक की वार्ता छोड़कर ददरेड़ा नगरी पहुंचते हैं। राजा जेवरसिंह दोनों देवताओं को विदा करके अपने महल में पधारे। ये देख रानी बाछल दुखी हृदय से अपने दोनों हाथ जोड़कर राजा के

सामने आन खड़ी हुई। रानी बाछल का उदास मुख देख, राजा जेवर सिंह ने शनीदेव व देवर्षि नारद के आशीर्वाद और गुरु गोरखनाथ की जोत बालने की सब वार्ता रानी बाछल को सुना दी। रानी बाछल ने एक मुद्दत के बाद राजा जेवरसिंह के चेहरे पर खुशी देखी थी। अपने पति के चेहरे पर खुशी देखकर रानी बाछल का भी रोम रोम खुशी से भर गया। जिसके कारण बाछल रानी के चेहरे पर भी रौनक की झलक आ गई। वह चटपट अपने पति के दोनों चरण पकड़कर बोली।

हे पिया प्यारे! मैं तुम पर वारी जाऊ। आपने जो खुशी मुझे सुनाई हे उससे हमें अपनी मनोकामना पूरी होने में कतई भी सन्देह नहीं करना चाहिए। संन्यासियों, योगियों के वचन मिथ्या नहीं जाते। मुझे अफसोस इसी बात का है कि मैं अभागिन उनके दर्शन भी न कर पाई, आपको मुझे दर्शन जरूर कराने चाहिए थे। देव दर्शन से कष्ट उसी तरह भाग जाते हैं, जिस तरह उजाले को देख कर अन्धेरा भाग जाता है।

रानी बाछल की वार्ता सुनकर राजा जेवरसिंह बोले रानी बात तो आपकी ठीक ही है। मगर उन

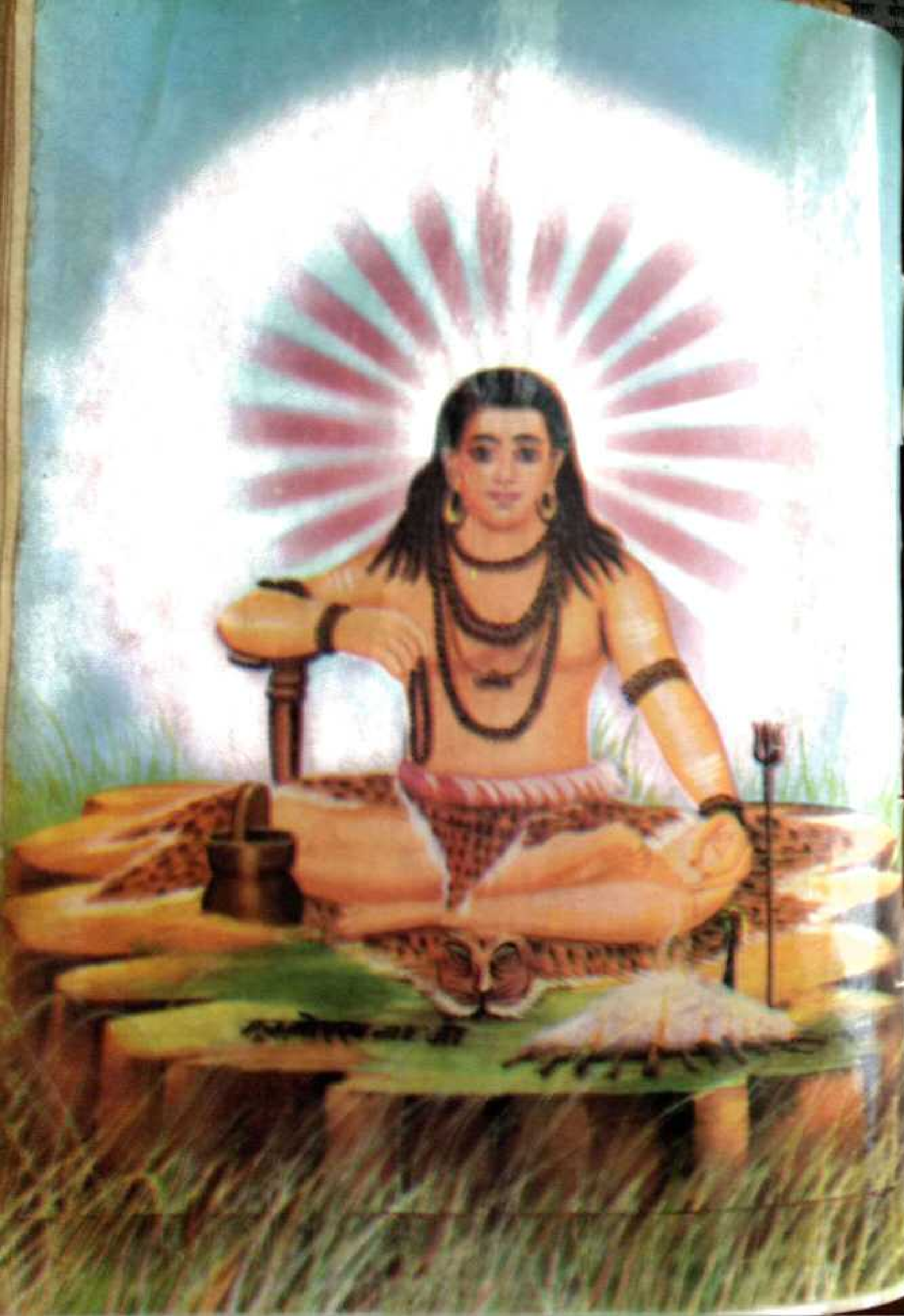
दोनों देवों के चेहरे पर इतना भारी तेज था कि मेरी आंखें उनसे ठीक प्रकार नजर भी न मिला सकीं। मेरी विधाता ने ऐसी मत हर ली, कि तुम्हारे दर्शन कराने की तो बात बाद की है, मैं उनका परिचय भी न पूछ पाया। उनकी मौजूदगी में मेरी तर्क बुद्धि एकदम क्षीण हो गई थी। ऐसे महात्माओं के दर्शन से तुम वंचित रह गई। इसका मुझे भी काफी दुख है परन्तु ईश्वर इच्छा समझकर सन्तोष कर लो, और गुरु गोरखनाथ जी महाराज की जोत नित नियम से दोनों समय बालने का जुम्मा तुम्हें ही लेना पड़ेगा। ये काम मर्दों के वश का नहीं हैं। औरतें ही ऐसे कामों को समझदारी के साथ निभा लेती हैं। हम लोग राज काज के झन्झटों के कारण चूक भी सकते हैं। और रानी महात्मा लोग ये भी कहते थे कि गोरखनाथ भगवान हरी नारायण का अवतार है। उनकी जोत दोनों समय बालने से वह अपने चौदह सौ चेलों के साथ हमारे नगर में पधार कर सबको दर्शन देकर हमारी मनोकामना पूरी करेंगे। पुत्र होने का वरदान भी तुम्हें ही मिलेगा और राजकुमार की मातेश्वरी का दरजा पाकर फूली फूली फिरोगी।

अपने राजा जेवरसिंह की मुस्कानभरी वार्ता सुन

कर रानी बाछल फूली नहीं समाई। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसके गुलाब समान चेहरे पर लाली छा गई। वह राजा जेवरसिंह से प्यार भरे लहजे में मधुर मुस्कान भर कर बोली, हटो भी तुम्हें मसखरी की बातें करते लाज नहीं लगती। बन्धुओं, रानी बाछल ने नित्य नियम से सुबह शाम दोनों वक्त गुरु गोरखनाथ की जोत बालनी शुरू कर दी और अपने दोनों हाथ जोड़कर गुरु गोरखनाथ के चरणों में प्रार्थना करती।

सिद्ध श्री सर्वोपरि जग के, गुरुगोरख हैं पालन हारे।
शीश झुका प्रणाम करूं, दया करो गुरुदेव हमारे॥
जोत बालकर करूं विनती कष्ट हरो जग के रखवारे।
पूरनमल पर कृपा कीनी, वैसेही सारो काज हमारे॥
दोहा—हाथ जोड़ विनती करूं, धर चरणों में माथ।
मोय अनाथ को दर्श दे, करना नाथ सनाथ॥

इस प्रकार दोनों समय जोत बाल, रानी बाछल दन्डवत कर गुरु गोरखनाथ से हाथ जोड़कर प्रार्थना करती थी और जगत पिता परमात्मा को शीश झुका कहती थी कि हे प्रभु! सिर्फ इतनी दया मुझ दुखियारी पर करना कि मैं अपने गुरु गोरख नाथ की जोत बालने से किसी समय भी चूक न



जाऊं । प्रभु सदा ही से अपने भक्तों की टेक निभाते आये हैं । फ़िर रानी बाछल की प्रार्थना क्यों नहीं सुनते ।

प्यारे बन्धुओं ! रानी बाछल को, गुरु गोरख नाथ की नित्य नियम से जोत बालते व प्रार्थना करते, मुद्दत गुजर गई । तब एक दिन गौड़ बंगाले प्रान्त के जंगल में गुरु गोरखनाथ की समाधि टूटती है । वह परमपिता परमात्मा का स्मरण कर सृष्टी पर नजर घुमाते हैं कि कोई प्रभु का प्यारा नारी नर दुखी तो नहीं है ।

सो हे सज्जनों ! चौतरफा दृष्टि घुमाने से योग माया द्वारा पता पड़ा कि राजस्थान प्रान्त के बागड़ देश ददरेड़ा नगर के धर्मात्मा राजा जेवरसिंह की महारानी बाछल बिना सन्तान बड़ी दुखी है वह एक मुद्दत से मेरी जोत बाल कर मुझे अपने यहां बुला रही है । मुझे जल्द से जल्द बागड़ देश पहुंचकर उसे धीर बंधानी चाहिए और उसे पुत्र का वरदान देकर उसका दुख हरना चाहिए ।

✽ श्री गोगा पुराण पांचवां अध्याय समाप्त ✽

छठा अध्याय

मछेन्द्रनाथ के जन्म की कथा

श्री गुरु गोरखनाथ का नव नाथों की सम्प्रदाओं में प्रमुख स्थान कहा जाता है। इनके गुरुदेव मछेन्द्र नाथ का सबसे ऊपर स्थान है। कहते हैं कि सृष्टि रचते समय ब्रह्मा जी सरस्वती नाम की कन्या के मोहनी स्वरूप को देख कामातुर हो गए। होनहार बस कामातुर अवस्था में ब्रह्मा जी का वीर्य निकल गया। वह वीर्य छिटकता हुआ अनेकानेक तीर्थ स्थलों पर जा गिरा। जिससे अठासी हजार ऋषि मुनियों का जन्म हुआ। उसी वीर्य का कुछ अंश समुद्र में भी जा गिरा जिसे एक बड़ी मछली निगल गई। जिसके प्रभाव से मछली गर्भवती हो गई। उसी मछली के गर्भ में भगवान कवि नारायण के जीव का का प्रवेश हुआ।

उसी समय समुद्र के किनारे गौरा पार्वती के साथ बैठे देवों के देव महादेव ज्ञान चर्चा कर रहे थे। जिसे भगवान कविनारायण ने गर्भवती मछली के उदर में ही सुनकर हुंकारा भरा। हुंकारा सुनकर भगवान शंकर को शक हुआ और निद्रामग्न पार्वती से पूछा,

मेरा उपदेश तुम्हारी समझ में बैठा। गौरा पार्वती के स्थान पर मछली के गर्भ से ही हुंकारे की जगह उत्तर मिला कि आपने जो अनेक शास्त्रों का खोल कर रहस्य समझाया है। जिसका सारांश ये है।

ये सारा ब्रह्मांड शिव ही शिव है, शिव के अलावा और कुछ नहीं है। समुद्र के जल के भीतर से मनुष्य वाणी सुन और पार्वती जी को सोता देख भगवान महादेव भी हैरान हुए कि इस घनघोर वीरान स्थान में, किसी मनुष्य के आने की हिम्मत पड़ ही नहीं सकती। नाही किसी मनुष्य के यहां चरण चिन्ह हैं, फिर मेरी गूढ ज्ञान चरचा सुनकर कौन मुझे उत्तर दे रहा है। ऐसा विचार भगवान शंकर ने योगमाया द्वारा जान लिया कि हमारे करीब ही जल में एक मछली पड़ी हुई है जो गर्भवती है। उसके गर्भ में कवि नारायण हैं, उन्होंने ही मछली के गर्भ से मेरे उपदेशों को सुनकर उपरोक्त बातें कही हैं। भगवान शंकर ये जानकर कि मछली के गर्भ में कवि नारायण हैं। शिवजी बोले।

कवि हरिनारायण आपने मछली के गर्भ में मेरी ज्ञान चर्चा के रहस्य को भली प्रकार समझ लिया है यह जानकर मुझे अति हर्ष हुआ है। कारण अधि-

कारी पात्र मन्त्र तत्व का सदुपयोग ही करता है। राक्षस की तरह दुरुपयोग नहीं करता। आप तत्व ज्ञान के अधिकारी हैं। इसे मैं भली भांति समझता हूं, इस वक्त आप माता के गर्भ में हैं। इसलिए इतने ही तत्व का सुमरन करिये। जब आपका जन्म हो जाएगा तब आप विद्या अध्ययन के बाद, घूमते घामते बद्रिकाश्रम मेरे पास आना। वहां मैं परम सिद्ध भगवान् दत्तात्रेय से दीक्षा दिलवाकर उनका शिष्य बनाऊंगा। उनके अमर उपदेश सुनकर आप भी अमर हो जाओगे। इतने वचन कहकर शिवजी महाराज, गौरा पारवती को जगा अर्न्तध्यान हो गए।

प्यारे बन्धुओ ! भगवान शंकर व गौरा पार्वती के अर्न्तध्यान होने के बाद मछली ने अपने गर्भ के अन्डे को समुद्र किनारे पर जन्म दिया। और समुद्र किनारे ही अन्डे को छोड़ आप जल में घुस गई। अन्डे को देखकर कुछ बंगुले समुद्र किनारे आन पहुंचे। उनमें से एक वगुले ने अन्डे पर अपनी चोंच मारी। चोंच का लगना था कि अन्डा फूट गया। और उसके भीतर से कवि नारायण जोर जोर से रोने लगे। तेजस्वी बालक का रोना सुनकर बगुले

डर के मारे उड़ते हुए भाग लिए। परन्तु बालक के हुआ" हुआ" का शब्द दूर दूर तक पहुंचता रहा।

संयोग से कामिक नामक मछेरा, मछली पकड़ने के वास्ते उस तरफ आन पहुंचा। मछेरा निसन्तान था, उसके घर कोई सन्तान नहीं हुई थी। बिना सन्तान उसे कुछ अच्छा नहीं लगता था। जब उसके कान में बालक के रोने की आवाज पड़ी तो तुरन्त बालक के नजदीक जा पहुंचा। मछेरे ने देखा सूर्य के समान तेजस्वी बालक समुद्र के किनारे पर पड़ा है। उसके पास दूर तक कोई नहीं दिखाई देता है। यह अकेला पड़ा, विलख विलख कर रो रहा है। उसने उसे प्रभू कृपा समझ, तुरन्त ही अपनी गोदी में उठा प्यार पुचकार कर उसका रोना बन्द कराया। उसके बाद भी वो बहुत देर तक प्यार भरे शब्द कह कहकर उसे दुलारता रहा। जब मछेरा बालक को शान्त कर चुका तब आकाशवाणी हुई। हे कामिक ! इस तेजस्वी बालक का जन्म मछली के पेट से हुआ है। तेरे धन्य भाग हैं जो बालक रूप में, तेरी गोदी में कवी नारायण हैं। अब तू बालक को अपने घर लेजाकर अपनी निजी सन्तान के समान लालन पालन कर। आगे चलकर यह बहुत बड़ा योगी सन्त

होगा । इसके साथ ही तेरा नाम भी अमर हो जाएगा ।

आकाश वाणी सुनकर मछेरे कामिक को बड़ा हर्ष हुआ । उसकी खुशी बयान से बाहर समझनी चाहिये । वह तुरन्त ही उस देवता स्वरूप बालक को गोदी में उठा, प्यारता पुचकारता ईश्वर को धन्यवाद देता हुआ अपने घर आन पहुंचा । उसने अपनी स्त्री जिसका नाम शारदत्ता था, उसकी गोदी में उस परम प्रतापी तेजस्वी बालक को सौंप दिया । उसने समुद्र किनारे मिलने व जो आकाशवाणी हुई थी सब खुशी खुशी बता दिया । अपने पति से आकाशवाणी की बात सुनकर अपने पति से गदगद स्वर में बोली ।

मैं इस सुकुमार बालक को अपने कलेजे का टुकड़ा समझकर लालन पालन करूंगी । इतना कह कर शारदत्ता ने उस बालक को अपनी छाती से चिपका स्तनपान कराया । प्रभू प्रताप से उसके सूखे हुए बिना दूध के स्तनों में से दूध की धारा निकलने लगी । इन दोनों पती पत्नी ने मछली के पेट से जन्म लेने के कारण बालक का नाम मछेन्द्र रखा । जो धीरे धीरे पलकर पांच साल की आयु का हो गया ।

कामिक और उसकी पत्नी शारदत्ता नित्य ही समुद्र तट पर मछलियां पकड़ने जाते थे । मछलियों का व्यौपार ही उनकी जीविका का एक मात्र साधन था । बालक मछेन्द्र भी अपने माता पिता के साथ साथ समुद्र तट पर जाया करता था । मछेन्द्र मछली के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और भगवान शिव द्वारा गर्भ में ही ज्ञान चर्चा सुनी थी । इसलिए अपने माता पिता के मछलियों के व्यौपार से बालक को घृणा पैदा हो गई थी । जब उसके माता पिता मछलियां पकड़कर समुद्र तट पर रखे जाल में डालते थे । तो मछलियों का तड़फना देख उसका जी अत्यन्त दुख मानता था । जब उससे मछलियों का तड़फना देखा नहीं जाता था । तब कुछ दूर हटकर मुंह फेर रेत में खेल अपना समय बिताया करता था ।

बालक मछेन्द्र दिन-दिन चन्द्रमा की नाई बढ़ने लगा । उसकी उम्र जैसे जैसे बढ़ती थी वैसे वैसे ही उसके चेहरे का तेज बढ़ता था । एक दिन का जिकर है कि उसकी माता के शरीर में पीड़ा हो गई थी । इसलिए अकेला ही पिता के साथ समुद्र तट पर चला गया । कामिक ने उसे समुद्र के तट पर टोकरे के पास ही बिठाकर आप पानी में बढ़ मछलियों को

जाल में फंसाने लगा। उसने काफी मछलियां पकड़ीं। पकड़ी हुई मछलियों को वह मछेन्द्रनाथ के पास टोकरी में पलट गया। और दूसरी बार जाल लेकर फिर जल के भीतर घुस गया। जब बालक मछेन्द्र ने मछली को तड़फता देखा तो उसे समझते देर न लगी कि पानी से अलग होने के कारण ही बेचैन है। उसने टोकरी से तुरन्त ही मछली उठा उठा कर समुद्र में डालनी शुरू कर दीं। और टोकरा खाली कर दिया।

जब कामिक दुबारा मछलियों के जाल को लेकर आया तो उस ने टोकरे को खाली पाया। उसने भारी चिन्ता के साथ मछेन्द्रनाथ से पूछा, टोकरे की मछली कहां गईं। मछेन्द्र ने बिना झिझक उत्तर दिया, मुझसे जब उनका तड़फना नहीं देखा गया तो मैंने मछलियों को समुद्र के पानी में ही छोड़ दिया, यह सुन कामिक बोला, तैंने मेरी दिन भर की मेहनत बेकार कर दी। तैंने यह भी नहीं विचारा कि अगर हम व्यौपार न करेंगे तो खायेंगे कहां से। मछलियां पकड़कर उन्हें बेचना ही हमारी जीवका का साधन है। आगे से ऐसी गलती मत करना। मैं और मछलियां पकड़ने जाता हूं। तू तब तक इनकी देखभाल

पहुंचा तो अपने बेटे को अब भी वहां न पाया। उसने बालक मछेन्द्रनाथ की चारों तरफ काफी ढूंढा ढांढी की परन्तु कोई पता न चला। जब रात ज्यादा हो गई तो निराश हो मछलियों का जाल व टोकरा लेकर अपने घर आन पहुंचा और अपने बेटे के खो जाने की कथा अपनी नारी को विस्तारपूर्वक बताई। अपने पति के मुख से मछेन्द्र के खो जाने की वार्ता सुनकर शारदत्ता उससे काफी कुपित हुई। काफी रोई चिल्लाई। जब कुछ बस न चला तो छटपटा कर रह गई। दोनों प्राणियों को अत्यन्त दुःख था परन्तु होनहार के आगे कुछ न चली।

* श्री गोगा पुराण छठा अध्याय समाप्त *

सातवाँ अध्याय

मछेन्द्रनाथ का बद्रीनाथ पहुंचने का बयान

बालक मछेन्द्र समुद तट से चलकर शिव शिव रटता अपने परम ज्ञान के कारण बद्रीनाथ धाम जा पहुंचा और एकान्त स्थान खोज गंगा तट पर आसन जमा, तपस्या करनी शुरू कर दी। प्रारम्भ में तो कुछ दिन कन्दमूल फल का सेवन किया, उसके बाद सब कुछ छोड़कर सिर्फ वायु सेवन (यानि हवा) को

करना।

अपने बेटे मछेन्द्रनाथ को समझा कर कामिक फिर से जाल लेकर समुद्र में घुस गया। इधर मछेन्द्र नाथ ने विचारा यह मेरा लालची पिता, मछलियां पकड़ना नहीं छोड़ेगा। क्योंकि यह मछलियां ही इस की जीविका का साधन हैं और मुझ से यह करूणा जनक दृश्य देखा नहीं जाएगा। इसलिए मुझे इसी समय इसका साथ छोड़कर चल देना ही उचित है। ऐसा विचार कर बालक मछेन्द्रनाथ मछलियों को टोकरी में ही पड़ा छोड़ आहिस्ता आहिस्ता चल पड़ा। कामिक को कोई पता नहीं पड़ा क्योंकि उस का ध्यान मछलियां पकड़ने में ही लगा हुआ था। जब वह मछलियां पकड़कर बाहर आया तो मछलियों को टोकरी में पड़ा देख प्रसन्न हुआ। परन्तु मछेन्द्र को वहां न देखकर सोचा बालक है यहीं कहीं खेल रहा होगा। और शीघ्रता के कारण वह फिर से जल में घुस गया और आज उसे दिन मुन्दे तक मछलियां पकड़नी पड़ी थीं।

मछेन्द्र नाथ का घर त्याग

जब कामिक दिन मुन्दने से पहले मछलियां पकड़ कर फारिग हुआ और जल से निकलकर तट पर

ही जीविका का आधार माना। यह भक्त ध्रुव जी के समान ही बारह वर्ष कठिन तपस्या से विचलित नहीं हुए। सारा शरीर सूखकर एक ढांचा मात्र रह गया। बालक का घोर तप देखकर, देवों के देव महादेव अति प्रसन्न हुए और वह भगवान दत्तात्रेय को अपने साथ लेकर बद्रिकाश्रम के वन में भागीरथी के तट पर जहां मछेन्द्रनाथ तपस्या करते थे दोनों देवता जा पहुंचे।

भगवान शंकर तो एक पत्थर की शिला पर अलग विराज गये और भगवान दत्तात्रेय जी अकेले मछेन्द्र के सामने जा पहुंचे। जहां वो ध्यानपूर्वक तप कर रहे थे। मछेन्द्रनाथ की तपस्या देखकर, भगवान दत्तात्रेय जी अवाक रह गये। थोड़ी देर पश्चात दत्तात्रेय जी ने मछेन्द्रनाथ से प्रश्न किया, कि सावधान होकर सुनो। क्या तो तुम्हारा नाम है और इस घोर तप का क्या उद्देश्य है। दत्तात्रेय के प्रश्न का उत्तर देने के पूर्व, मछेन्द्रनाथ ने पूछा। भगवान पहले तो ये बताइये कि आप कहां से यहां पधारे हैं और आप कौन हैं, और किस अधिकार से, किसलिये मेरे पास पधारे हैं। भगवान दत्तात्रेय ने कहा—मेरा नाम दत्तात्रेय है। तुम्हारी कठिन तपस्या देख तुम्हें

वरदान देने के लिए ही तुम्हारे पास आना पड़ा है। अब जो भी तुम्हारी मनोकामना हो मुझे बताओ। मछेन्द्रनाथ ने ये जानकर कि ये खुद भगवान दत्तात्रेय हैं। अपने दोनों हाथ जोड़, प्रणामकर चरण पकड़ लिये और बोले, अगर प्रभु मेरे पर दयालु हैं तो मेरे दोषों को भुलाकर मुझे सर्व गुण सम्पन्न होने का वरदान दें। मछेन्द्रनाथ के मुख से वचन निकलते ही भगवान दत्तात्रेय ने उनके सिर पर अपना दाहिना हाथ रखकर तथास्तु कहा। भगवान दत्तात्रेय का मछेन्द्रनाथ के मस्तक पर हाथ पहुंचते ही पहले के समान उनका सारा शरीर हृष्ट पुष्ट हो गया। उन्हें सारा जगत शिव ही शिव दिखाई पड़ने लगा। फिर भगवान दत्तात्रेय ने मछेन्द्र के कान में मन्त्र फूंका और नाथ पन्थ की दीक्षा देकर प्रथम बार ही अपना शिष्य बनाया और आप गुरू बने।

नाथ पन्थ की दीक्षा देकर भगवान दत्तात्रेय मछेन्द्रनाथ को अपने साथ लेकर वहां पहुंचे जहां देवों के देव महादेव शिला खन्ड पर विराजमान थे मछेन्द्रनाथ भगवान शंकर को देख उनके चरणों में गिर पड़े। देवादि देव महादेव उन्हें उठाकर छाती से लगाकर बोले हे दत्तात्रेय जी–इस दिव्य देवधारी

तपस्वी बालक को मैंने समुद के तट के पास मछली के गर्भ में देखा था और इसने गर्भ में, मेरे द्वारा दिया हुआ ब्रह्मज्ञान का दिव्य उपदेश सुन लिया था और उसके रहस्य की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ली। ये अनोखा बालक कवीनारायण का अवतार है। आपने इसे अपने नाथ पन्थ की दीक्षा देकर उचित ही कार्य किया। अब आप इसे सम्पूर्ण गुप्त विद्याओं की जानकारी प्राप्त कराओ। मेरा आशीर्वाद इसके साथ है कि ये आपका चेला सम्पूर्ण संसार में आपका मस्तक ऊंचा करके, अक्षय कीर्ति का अधिकारी बनेगा।

इतना कहकर भगवान शंकर अन्तरध्यान हो कैलाश पर्वत पर जा विराजे। और भगवान दत्तात्रेय ने वेद वेदांग यन्त्र मन्त्र तन्त्र शास्त्रों की सब विद्याओं में मछेन्द्रनाथ को प्रवीण कर दिया। उन्हें देश देशांतरों में घूमकर प्राणियों के दुःख दूर करने की आज्ञा प्रदान की। अपने गुरू दत्तात्रेय की आज्ञा अनुसार देशाटन के वास्ते विभिन्न तीर्थों पर घूमते हुए जब उन्हें बारह वर्ष व्यतीत हो गये, उन्होंने सांवर तन्त्र विद्या की रचना की। उन्हें भगवान भुवन भास्कर ने प्रसन्न होकर वरदान दिया था। हे मछेन्द्रनाथ जो

तेरे रचे हुए सांवर तन्त्र का शुद्ध जाप करेगा मैं उसकी मनोकामना की पूर्ती करूंगा।

* श्री गोगा पुराण सातवां अध्याय समाप्त *

आठवाँ अध्याय

गुरू गोरखनाथ के जन्म की कथा

सूर्य भगवान से वर प्राप्त कर कुछ समय बाद बंगाल प्राप्त की चन्द्रगिरी नामक नगरी में जा पहुंचे वहां जहां सूर्य दयाल नामक पंडित रहता था। वह ईश्वर भक्त पंडित साधू सन्तों की सेवा तन मन धन से किया करता था। उसकी भार्या का नाम सरस्वती था जो सती सुशील सुन्दरी पतिव्रता व बड़ी समझदार तो थी पर थी निसन्तान। इस दुख से दोनों पति-पत्नी अति दुखी थे फिर भी अपनी सामर्थ अनुसार साधु सेवा, दान वृत्ती और भगवत भजन नित्यप्रति करते थे। एक दिन उनकी भक्ती प्रभाव के कारण भगवत कृपा हुई और उनके गृह पर योगी राज मछेन्द्रनाथ बगल में मृगछाला, बांयें कर में चिमटा दबाये दहिने हाथ में भिक्षा पात्र लिये अलख अलख करते आन पहुंचे।

जब पतिव्रता नारी सत्यवती ने घर के भीतर से सन्त का अलख अलख उच्चारण सुना तो एक पात्र में अन्न भरकर अपने द्वार पर आन पहुंची। वहां उसने मछेन्द्रनाथ योगी को द्वार पर खड़े देखा जिनके मुखपर चन्द्रमा के समान तेज झलक रहा था। पतिव्रता सत्यवती भिक्षा मछेन्द्रनाथ के पात्रमें डाल योगी का चन्द्र मुख निहार दर्शन करने लगी। योगी मछेन्द्र नाथ को उसकी भावना समझते देर न लगी कि नारी सन्तान न होने के कारण अत्यन्त दुखी है। फिर भी योगीराज मछेन्द्र नाथ पूछने लगे, हे माता, तुम किस दुख से दुखी हो मुझे बताने की कृपा करो। सत्यवती बोली, महात्मा जी, वैसे तो आप सन्तों की कृपा से मुझे किसी प्रकार का दुख नहीं है परन्तु मेरे निसन्तान होने के कारण सब लोग मुझे बांझ कहते हैं। इसी दुख से मैं बेजार रहती हूं। अगर आप सन्तों की कृपा से मुझे एक पुत्र की प्राप्ति हो जाय तो मैं पूर्ण रूप से सुखी हो जाऊंगी।

योगी मछेन्द्र नाथ पतिव्रता सत्यवती की निश्छल वाणी सुनकर प्रसन्न हो गए और सरस्वती से हाथ आगे करने को कहा। सरस्वती के हाथ आगे करने पर उन्होंने अपनी झोली से भस्म निकालकर कहा,

इस भस्म को ऋतु का नहान नहाने के बाद खीर के साथ खा लेना। तुम्हारे यहां हरि नारायण भगवान का अन्सी अवतार आवेगा जो ऋद्धि सिद्धि का स्वामी होगा। मैं बारह वर्ष पीछे नगर भ्रमण करता हुआ फिर तुम्हारे यहां आऊंगा। पतिव्रता सत्यवती ने मछेन्द्र नाथ योगी से भस्मी लेकर आले में रखदी और मन में धारणा करली कि ऋतुवती होने के पश्चात इस भस्मी को खाऊंगी। उसने अपने पास पड़ोस की स्त्रियों से भी महात्मा की भस्मी की चर्चा की। तभी एक चतुर सहेली बोली बहन भूलकर भी भस्मी न खाना। ये सन्त महात्मा बहरूपिये बने फिरते हैं। ये किसी दुश्मन के कहने से भस्मी के रूप में विष दे जाते हैं जिसके प्रभाव से मृत्यु हो जाती है या मन्त्र के प्रभाव से बेहोश करके जेवर बर्तन लेकर चलते बनते हैं। अगर बांझों के इसी प्रकार सन्तानें होजावें तो संसार से बांझों का नाम ही मिट जावे। एक भी बांझ चिराग लेकर ढूंढने से भी न पावे। न जानें कितनी हमारी भोली भाली बहनों की इज्जत इन लोगों ने बरबाद करी है। इस जमाने में ढोंगियों का ही बोलबाला है। सच्चे साधू सन्त क्या घर घर भिक्षापात्र लिए डोलते हैं। वह तो पागल बने वन में

योगी की बात सुनकर सरस्वती एकदम पीली पड़ गई। धर्म संकट के कारण उसके मुख से बोल न निकला। उसने चुप्पी साध ली। सरस्वती को चुप देखकर मछेन्द्रनाथ बोले, हे माता क्या सन्तान पैदा ही नहीं हुई या पैदा होकर नष्ट होगई आप कुछ तो उत्तर दो। योगी मछेन्द्र नाथ के मुख का तेज देख कर सरस्वती को सारा विवरण ठीक ठीक बताना पड़ा। मैंने आपकी दी हुई भस्मी पड़ोसिनों के बह-कावे में आन कर कूड़े के गड्ढे में फेंक दी। मछेन्द्र नाथ ने जब पूछा माता वह गड्ढा कहां पर है मुझे दिखा तो दो।

सरस्वती मछेन्द्र नाथ को साथ लेकर गांव के नजदीक उसी गड्ढे पर जा पहुंची जहां बारह वर्ष पहले उसने मछेन्द्र नाथ की दी हुई भस्मी फेंकी थी और योगीराज को बता दिया मैंने इसी गड्ढे में भस्मी फेंकी थी। इतनी बात सरस्वती के मुख से सुनकर मछेन्द्र नाथ ने गड्ढे के ऊपर मुंह करके कहा-हे सूर्य पुत्र हरिनारायण अगर तुम्हारा जन्म हो गया हो तो बाहर निकल आओ। उसी वक्त गड्ढे के भीतर से उत्तर आया, हे गुरू जी मैं यहां गड्ढे के भीतर बैठा हूं मेरे ऊपर कूड़े का इतना ढेर है कि मेरे लिये

बाहर निकलना असम्भव है इसलिये आप उसे हटवा कर मुझे बाहर निकलवा लो।

गड्ढे के भीतर से आवाज सुनकर सरस्वती व नगरी की तमाशबीन जनता नर नारियों को बड़ा ही कौतूहल हुआ। सबने मिलकर जब गोबर के ढेर को गड्ढे से निकाला तो गोबर के भीतर से ही एक अत्यन्त तेजधारी बालक निकला। बच्चे को देखकर योगी मछेन्द्र नाथ बोले बेटा तुम्हारी उत्पत्ति गाय के गोबर से हुई है इसलिये मैं आज ही तुम्हारा नाम गोरखनाथ रखता हूं। बालक गोरखनाथ रो रोकर मछेन्द नाथ को देखने लगा। योगीराज बोले बेटा तुम सूर्य पुत्र हो, तुम्हारा यश सूर्य के समान ही पृथ्वी पर फैल जायेगा। ऐसे तेजस्वी बालक को देख कर सरस्वती के नैनों से मोती के समान नीर बरसने लगा। उसने योगी मछेन्द्र नाथ कीं तरफ याचना की दृष्टि से देखा।

मछेन्द्र नाथ बोले, माता अब कुछ नहीं हो सकता। जब विधाता ने तुम्हारे भाग्य में पुत्र सुख लिखा ही नहीं, तब किसी के किये उपाय से कुछ नहीं बन सकता। सबको कर्मानुसार भोग भोगना पड़ता है। अब तुम सन्तोष करो और प्रभु गुण गावों

ही तपस्या करते हैं। उन्हें दुनियादारी से क्या लेना क्या देना। सब सहेलियों ने जितने मुंह उतनी राय दी। किसी ने क्या ही ठीक कहा है-

जैसी हो होतव्यता तैसी बुद्धि होय।

पतिव्रता सरस्वती ने भी सहेलियों की बातों पर चकित हो विचार किया तो उसे भी ये ही जंचा कि बात इन लोगों की ठीक ही है। इसी प्रकार की घटनायें आये दिन घटती ही रहती हैं। परन्तु उस सन्त का तेज तो योगियों के ही समान था। परन्तु ये भी ठीक है कि इस प्रकार भस्मी द्वारा पुत्र प्राप्ति होने लगे तो संसार से बांझोंका नाम ही सदा के लिए मिट जावे। इस प्रकार की धारणा बना सरस्वती ने मछेन्द्र नाथ की दी हुई भस्मी को गांव के एक गढ़ में डाल दिया। ग्राम के नर नारी गड्ढा बड़ा होने के कारण, गाय का गोबर वगैरह और कूड़ा करकट भी ऊपर से डालते रहते थे। परन्तु मछेन्द्रनाथ की सिद्ध की हुई भस्म ने अपना प्रभाव दिखाया।

खेतमें जिस प्रकार अंकुर फूटते हैं उसी प्रकार कूड़े गोबर में भी अंकुर फूट निकले परन्तु पानी की सुविधा न होने के कारण अंकुर भी धीरे धीरे ही फूट रहे थे जिसकी तरफ किसी का ध्यान क्यों होने

लगा था । इसी तरह दिन पर दिन बीतते चले गए और बारह मास पूरे हो जाने पर भी अभागिन सरस्वती बांझ ही बनी रही । गोबर के गढ़े में ही बालक का जन्म हो गया था । इसी प्रकार १२ वर्ष पूरे हो गये ।

योगीराज अपने वायदे के अनुसार भ्रमण करते हुये सरस्वती के दरवाजे पर अलख अलख कहते आन पहुंचे । दरवाजे में प्रवेश करते ही उन्होंने सौचा इस घर की पतिव्रता नारी का बालक ग्यारह वर्ष कुछ महीने का हो गया होगा । उधर सरस्वती निय-मानुसार सन्त के लिए भिक्षा लाई तो बारह वर्ष पहले वाले योगी को दरवाजे पर खड़े देखा । सर-स्वती को योगीराज के पहचानते देर न लगी । वह भिक्षा पात्र में डालकर एकदम मुड़ने लगी । इस भय से कि कहीं योगी भस्मी बाली बात न छेड़ बैठे । भस्मी के फैंकने की बात सुनकर श्राप देकर भस्म ही न कर डाले । परन्तु गुरु मछेन्द्र नाथ ने भिक्षा की ओर ध्यान न देकर पुत्र के बारे में ही सरस्वती से प्रश्न किया । हे माता अब तो तुम्हारा बेटा काफी बड़ा हो गया होगा । क्या मुझे उसके दर्शन न कराओगी ।

हुए ।

गुरु भक्ति में गोरख नाथ का नेत्र दान

योगी राज भोजन करते जाते थे और एक एक पदार्थ की तारीफ के पुल बांधते जाते थे । उन्हें उन सब पदार्थों में उड़द की दाल के बने दई बड़े बहुत ही अधिक भाए । भोजन समाप्ति के पश्चात बोले बेटा गोरखनाथ तुम्हारी लाई भोजन सामग्री सभी अति उत्तम थी परन्तु दई बड़ों का स्वाद अनोखा ही था। मेरा मन अभी और दई बड़े खाने को कर रहा है । तुम उसी द्वार पर जाकर एक दो दई बड़ा और मांग कर लाओ । गोरख नाथ ने अपने गुरू की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया ओर दुबारा दई बड़े मांगने उसी द्वार पर चल दिये परन्तु रास्ते में सोचते जाते थे अगर गृहस्वामिनी ने मुझे पहचानकर कि ये दुबारा भिक्षा मांगने आया है, इन्कार कर दिया तो क्या होगा । वह इसी प्रकार सोच विचार करते हुये उसी द्वार पर जा पहुंचे और पहले की तरह अलख नाम का उच्चारण किया ।

गृह स्वामिनी गोरख नाथ को अपने दरवाजे पर खड़ा देखकर क्रोधभरे स्वर में बोली-मैंने तुम्हें काफी मात्रा में भोजन सामग्री दी थी, क्या उससे तुम्हारे

पेट की ज्वाला शान्त नहीं हुई। गोरख नाथ अपने स्वर को बहुत ही नम्र बनाकर नम्र भाषा में बोले मातेश्वरी मेरे साथ मेरे गुरू देव भी हैं मैंने आपसे मिली सकल सामग्री अपने गुरू देव के निकट जा धरी जो उन्होंने बड़े प्रेम पूर्वक खाई। अभी उनकी इच्छा एक दो दई बड़े खानें की और रह गई है इसी लिए मुझे आपके दरवाजे पर दुबारा आना पड़ा है। गोरखनाथ की नम्र वार्ता सुनकर गृह स्वामिनी बोली मुझे तो तू ही पेटू नजर आ रहा है। तेरी ही जीभ दई बड़ा खाने को लपलपा रही नजर आती है। गुरू के नाम को व्यर्थ ही झूंठा बदनाम कर रहा है। गोरखनाथ और नम्र पड़कर बोले-नहीं माता जी मैं कभी झूंठ नहीं बोलता, आप विश्वास करें।

इतनी बात सुनकर गृह स्वामिनी बोली तुम जैसे ठगों से मैं अच्छी तरह वाकिफ हूं। तुम रुट-खउए किसी की भलाई तो कर सकते नहीं गृहस्थियों को परेशान करना ही तुम लोगों ने अपना धर्म समझ रखा है। गृह स्वामिनी के कठोर वचन सुनकर गोरख नाथ नम्र शब्दों में ही बोले, हे माता जी अगर आप को कोई परेशानी हो तो मैं दूर करने को तैयार हूं। आप मेरे गुरू की इच्छा पूर्ति कर दें। मैं आपकी

जिससे पूर्व के किये पापों से छुटकारा मिले। पुत्र ही कोई सदगति का जरिया नहीं है, पुत्र के कुपात्र निकल जाने पर जीवन पर्यन्त कुढ़ना पड़ता है। इसी प्रकार योगी मछेन्द्रनाथ सरस्वती को धीर बंधा उपदेश दे, गोरखनाथ को साथ ले जाकर नाथ सम्प्रदाय में दाखिल कर दिया।

कुछ दिन बाद मछेन्द्र नाथ गोरख नाथ को अपने साथ ले तीर्थ यात्रा को चल पड़े। यह दोनों गुरू चेले दिन में तो सफर करते और रात्रि में किसी मठ मन्दिर में ठहर जाते थे। ये लोग एक रात्रि से अधिक कहीं नहीं ठहरते थे। इसी प्रकार दोनों गुरू चेले उत्कल राज्य में जा निकले। गुरू मछेन्द्र नाथ जी की अभिलाषा जगन्नाथ जी महाराज के दर्शनों की थी। वह राज्य के बाहर ही एक जीर्ण शीर्ण मन्दिर में जा बिराजे। वह स्थान कनकगिरी के नाम से मशहूर था। गुरू मछेन्द्र नाथ अपने चेले की गुरू-भक्ति देखना चाहते थे। रास्ते में उन्हें कोई उचित अवसर नहीं मिला। यहां उचित अवसर समझ बोले बेटा, मुझे बड़ी भूख लगी है परन्तु इसका कारण क्या है समझ में नहीं आता। परन्तु भूख को बुझाना बहुत आवश्यक है।

अपने गुरू मछेन्द नाथ की वार्ता सुन गोरखनाथ बोले। आप आज्ञा करें मुझे क्या करना चाहिये। अपने चेले की बात सुनकर गुरू मछेन्द्र नाथ बोले, बेटा नगर में जाकर भिक्षा मांग कर लाना ही भूख बुझाने का सरल उपाय है। गोरखनाथ अपने गुरू की आज्ञा को सुन भिक्षा पात्र हाथ में लेकर भिक्षा मांगने चल दिए। परन्तु घर घर अलख जगाने पर भी बस्ती भर में उन्हे कहीं भिक्षा नहीं मिली। आगे जाकर उन्होंने देखा कि एक ब्राह्मण के घर धूम धाम से पित श्राद्ध मनाया जा रहा था जिसे देख गोरखनाथ ने जोर शोर से अलख नाम का उच्चारण किया। अपने द्वार पर भिक्षापात्र लिये गृह स्वामिनी ने जब सन्त को देखा तो वह एक पात्र में अपने यहां बने सभी पदार्थ पूरी पकवान दही पकौड़ी हलुआ वगैरह एक पत्तल पर रख अपने द्वार पर आन पहुंची जिससे गोरखनाथ का भिक्षा पात्र पूरा का पूरा भर गया। गोरखनाथ विविध प्रकार के व्यंजन देखकर मन ही मन प्रसन्न हुये और अपने गुरू मछेन्द्र नाथ के सामने पहुंच भरा भराया भिक्षा पात्र अपने गुरू के निकट धर दिया। अपने चेले को स्वादिष्ट पदार्थ काफी मात्रा में लाया देख, गुरू मछेन्द्र नाथ काफी प्रसन्न

नहीं ली। अपने शिष्य से अभूतपूर्व घटना सुनकर योगी मछेन्द्र नाथ काफी रुष्ट हुए। अपने गुरू को रुष्ट देख गोरखनाथ बोले गुरूदेव ये अपूर्व घटना भ्रान्ति वश ही हुई है इसलिए गृह स्वामिनी अधिक दोषी नहीं है। आप उस निरपराध अबला को क्षमा कर दें।

गुरू मछेन्द्र नाथ बोले बेटा जब तुमने ही उसे क्षमा कर दिया तो मैं ही उससे क्यों रुष्ट होने लगा अपने गुरू के कहने पर गोरखनाथ बोले गुरू देव ये सब गुण आपकी ही कृपा से मुझमें आए हैं।

योगी मछेन्द्र नाथ बोले, बेटा गोरख-अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि मुझे गुरूभक्त चेला मिला है जो मेरी इच्छापूर्ति के लिए अपने प्राण भी दे सकता है। ऐसे गुरू भक्त अधिकारी चेले को कौन गुरू समस्त विद्यायें सिखाकर परिपूर्ण न बनावेगा। गोरखनाथ ने अपना सिर गुरू चरणों में रख दिया। मछेन्द्र नाथ ने शिष्य को चरणों में से उठाकर अपने गले से लगा लिया फिर गोरखनाथ की आंख से पट्टी खोलकर पुतली स्वच्छ जल से पवित्र की और पुतली को ठीक प्रकार आंख पर जमाकर विधि पूर्वक मन्त्र का जाप किया जिससे आंख पहले जैसी ज्यों की त्यों

हो गई और दर्द का नाम भी नहीं रहा, आंख की रोशनी में भी कोई अन्तर नहीं आया।

गोरखनाथ को मछेन्द्र नाथ योगी जैसा गुरू मिला, वैसे ही गुरू को गोरख नाथ जैसा चेला। उन्होंने अपने गुरू मछेन्द्रनाथ से समस्त विद्यायें सीखीं उन्होंने गोरखनाथ को सर्व विद्या सम्पन्न बना दिया। गोरखनाथ को आशीर्वाद देते हुए कहा तुम नाथ पंथ में सिद्धों के सिद्ध माने जावोगे। मैंने तुम्हारी गुरू भक्ति की परीक्षा लेने के कारण ही तुम्हें दुबारा दई बड़ा लेने भेजा था। तुम अपनी गुरूभक्ति की परीक्षा में सफल हुए। बन्धुवो अब गोरखनाथ महान सिद्ध परम उपयोगी गुरू बन गए।

* श्री गोगा पुराण आठवां अध्याय समाप्त *

नौवा अध्याय

गहिनी नाथ के जन्म की कथा

कनकगिरी गांव से चल कर दोनों गुरु चेले चन्द्रगिरी नामक ग्राम में ठहरे जहां पर गुरु मछेन्द्र नाथ ने गोरखनाथ को चारों वेद और छहों शास्त्रों तथा अठारह पुराणों का अध्ययन कराया। संजीवनी विद्या और सावर तन्त्रों की विद्यायें भी बताईं तथा

मनोइच्छा पूर्ति करने को तैयार हूं। अब गृह स्वामिनी बोली हे साधू तेरे पास धरा ही क्या है जो तू मेरी इच्छा की पूर्ती करेगा। गोरखनाथ बोले, माता जी, आप कहें तो सही। जब तक आप कहेंगी नहीं, मैं किस प्रकार आपकी इच्छा की पूर्ती कर सकता हूं। मुझे तो अपने गुरुदेव की इच्छा पूर्ति के लिए केवल दई बड़ा ही चाहिए। दई बड़े का नाम सुनकर गृह स्वामिनी कड़ककर बोली, मुझे एक दई बड़े के बदले तेरी एक आंख चाहिये बोल देगा। गोरखनाथ बोले माता जी आंख देना कौन बड़ी बात है मैं अपनी जान भी दे सकता हूं। गृह स्वामिनी बोली, मैं भीतर से दई बड़ा लेकर आती हूं तु अपनी एक आंख निकाल कर रख।

इतनी बात कह गृहस्वामिनी ने घर के भीतर दई बड़ा लाने के लिये मुंह मोड़ा। गोरखनाथ नें अपनी आंख में उंगली घुसेड़, पुतली चीरकर झटका मार आंख बाहर निकाल ली जिसकी वजह से आंख से खून बहकर पृथ्वी पर टपकने लगा। गृह स्वामिनी जब दई बड़ा लेकर दरवाजे के निकट आई तो गोरख नाथ का कौतुक देखकर उसके होश उड़ गये। वह मन ही मन बड़ी दुखी हो दई बड़ा देकर जाने लगी

तो गोरखनाथ बोले माता जी आंख भी तो लेती जाओ ये कहकर अपनी आंख हाथ बढ़ाकर गृह स्वामिनी के निकट करदी। गृह स्वामिनी पश्चाताप करती हुई बोली मुझे क्या करनी है तुम्हारी आंख, मैं तो कहकर ही अत्यन्त दुखी हूं। इतना सुनकर गोरखनाथ ने अपनी आंख में पुतली को रख लिया और ऊपर से जल में भीगा कपड़ा बांध लिया।

वह नहीं चाहते थे इस घटना की जानकारी गुरू देव को मिले। इस लिये वह अपना एक हाथ आंख पर धर और दूसरे में दई बड़ा लेकर गुरू मछेन्द्रनाथ के सम्मुख जा धरा और हाथ जोड़कर बोले, गुरू जी केवल एक ही दई बड़ा मिला। गुरू मछेन्द्रनाथ बोले कोई बात नहीं बेटा एक ही, सही परन्तु तेरी आंख पर ये पट्टी कैसी बंधी है, आंख को क्या हुआ। गोरखनाथ बोले गुरू देव कोई खास बात नहीं आंख की पुतली में दर्द हो रहा है। गुरू मछेन्द्र नाथ बोले जरा इधर दिखाओ बेटा। मैं भी तो देखू पुतली में दर्द का क्या कारण है। जब बात छिपती न दिखी तो गोरखनाथ बोले, गृह स्वामिनी ने एक दई बड़ा देने में एक आंख देने की शर्त रखी थी। परन्तु उसने दई बड़ा तो दे दिया पर आंख

फिर भी उधर से ध्यान हटाकर अपनी साधना मैं दृढ़ता से लौलीन थे। उसी समय बच्चों ने आपस में मिलकर निश्चय किया कि मिट्टी की एक गाड़ी बनाई जाय जिस पर हांकने के लिये एक गाड़ीवान भी बैठा होना चाहिए परन्तु सबसे मुश्किल प्रश्न ये था गाड़ी बने किस प्रकार। उन्होंने तालाब से स्वच्छ मिट्टी लेकर पानी के साथ सानकर मिट्टी को लेई के समान बना लिया और गोरख के पास आन कर बोले- साधू बाबा इस मिट्टी से हमारे वास्ते एक गाड़ी बना दीजिए। गोरखनाथ ने ये कहकर मैं गाड़ी बनाना नहीं जानता बालकों को टाल दिया परन्तु धुन के पक्के बालकों ने कई दफा बनाकर बिगाड़ने के बाद गाड़ी को बना ही लिया। परन्तु गाड़ी पर गाड़ीवान के बैठे होने की कमी सबही बालकों को खटकी। परन्तु गाड़ीबान बनाने की सामर्थ किसी में भी नहीं थी। वह सब मिलकर फिर गोरखनाथ के निकट आन पहुंचे और निराशा भरे स्वर में बोले बाबाजी गाड़ी तो हमने बनाली मगर गाड़ीवान हम लोग नहीं बना सकते। गोरखनाथ ने उन्हें बहुत टालने की कोशिश की। बच्चो मैं ऐसे काम नहीं जानता।

मगर बच्चे क्यों हार मानने लगे। उनमें से

एक लड़का बोला अजीब बात है आप पढ़े लिखे होकर एक गाड़ीवान नहीं बना सकते । हमने तो सुना है पढ़े लिखे लोग मूढ़ा तिपाई खाट वगैरह सब चीजें बना लेते हैं सब बच्चों ने ताली पीट कर अपने साथी की बात का समर्थन किया । बाबा जी झूठ बोलते हैं गाड़ीवान बनाना ये जरूर जानते होंगे गोरखनाथ ने बालकों के ऊधम से तंग आकर माथा पच्ची करने में भलाई नहीं समझी । उनके संजीवनी विद्या के पाठ में विध्न पड़ता था इसलिए उन्होंने बच्चों से हार मानकर कहा गाड़ीवान बन जाने पर यहां से चले जाओगे । सब बच्चों ने एक स्वर में कहा गाड़ीवान बन जाने पर हम यहां से बहुत दूर जाकर खेलेंगे ।

गोरखनाथ को बच्चों की बात सुनकर दया आ गई और वह गीली मिट्टी हाथ में लेकर छोटा सा गाड़ीवान बनाने लगे । गोरखनाथ गाड़ीवान बनाते जाते थे और संजीवनी विद्या के मन्त्रों का जाप करते जाते थे । अभी गाड़ीवान पूरा बन भी न पाया था कि मन्त्रों के प्रभाव से उसके अंग हिलने लगे थे परन्तु गोरखनाथ के हाथ भी हिल रहे थे इसलिये इस बात पर कोई गौर नहीं किया गया । जब गाड़ी-

भूत प्रेत बैताल आदि को वश में करने के मन्त्र सिखाये । अनेकानेक देवी देवताओं के दर्शन कराकर उनसे आशीर्वाद दिलाये । इस प्रकार गुरू मछेन्द्रनाथ ने अपने शिष्य को समस्त ऋद्धि सिद्धि से परिपूर्ण कर दिया । इसी तरह गोरखनाथ को देवी देवताओं से सम्बन्धित सिद्धियां सहज में ही प्राप्त हो गईं । इसके अलावा वह अपने गुरु के आदेश अनुसार कभी कभी पृथक रूप से भी यात्रा करते थे और ठहरने के स्थान पर ठहर कर अकेले ही साधना कर सिद्धि प्राप्त करते रहते थे ।

मिट्टी से बने गहिनीनाथ के जन्म की कथा

सच्चे सन्त महन्त योगी सन्यासियों की माया अपरम्पार होती है, इनकी माया का पार किसी ने नहीं पाया । ये लोग जो भी चमत्वार दिखा देते हैं उन्हें देखकर देवतागण भी हाथ मलते रह जाते हैं । इसी वजह से इन्सान इन्हें भगवान की तरह पूजता है । ये लोग माता पिता के ही समान दयावान भी होते हैं । इनके चमत्कारों को देखकर ही जनता की अपार भीड़ इनके पीछे लग जाती है जिससे इनकी तपस्याओं में बाधा पड़ती है इसीलिए ये लोग अपने पास भीड़ पसन्द नहीं करते हैं । गोरखनाद [illegible] इन

प्रदर्शनों से दूर ही दूर रहते थे। एक दिन का जिकर है कि इनके गुरुदेव मछेन्द्रनाथ हाथ में भिक्षा पात्र लेकर नगरी में भीख मांगने गये और अपने शिष्य गोरखनाथ को संजीवनी विद्या का पाठ करने का आदेश कर गये। वह अपने गुरु के आदेशानुसार संजीवनी विद्या के पाठ में लगे। जब गोरखनाथ साधना में लगे होते थे तब उनके गुरु मछेन्द्रनाथ ही भिक्षा के लिए जाया करते थे।

इसी तरह ये दोनों गुरु चेले सगे भाई की तरह मिल जुल कर रहते थे। अपने अपने कर्तव्यों का पालन नियमानुसार करते थे। जब गुरु मछेन्द्र नाथ भिक्षा को ग्राम में गए हुए थे, तब गोरखनाथ संजीवनी विद्या का पाठ कर रहे थे। उसी समय वहां ग्राम निवासी कुछ बच्चे तालाब के किनारे गीली मिट्टी से खेल रहे थे। उनके हाथों में गीली मिट्टी थी जो एक दूसरे के ऊपर फेंकतेथे और भांति-भांति के खेल खेलकर ऊधम मचाते थे। कभी गाली-गलौज कभी मार पीट करते थे और कभी कभी हंसते हुए खेल-खेल में गीली मिट्टी फेंकते थे।

गोरख नाथ उनके ऊधम से परेशान थे। बच्चों के ऊधम मचाने से उनके पाठ में विघ्न पड़ रहा था

वान पूरा बन चुका जिसके बनाते समय संजीवनी विद्या के मन्त्रो का ही जाप होता रहा था इसलिये उसमें जीवआत्मा का प्रवेश हो गया था। जो गाड़ीवान छोटे से खिलौने के रूप में गढ़ा गया था वह खिलौना सिर्फ खिलौना ही न रह कर जीता जागता बालक बन गया था। जिसके शरीर में हड्डी मांस रुधिर प्राण सभी कुछ थे। उस में कर्म इन्द्रियों ज्ञान इन्द्रियो का प्रभु कृपा से समावेश होने के कारण मनुष्य के बालक जैसा ही छोटा सा बालक बन गया था। वह रोता रोता बोला-गूरुदेव की जय हो। गाड़ीवान के पुतले को देखकर गोरखनाथ को भी बड़ा कौतूहल हुआ कि ये सब किस प्रकार हो गया।

गांव के बालक अपने मिट्टी के बने गाड़ीवान को रोता तथा बोलता देखकर भूत भूत चिल्लाते गांव के भीतर भाग गये। वह बहुत भयभीत हो गये थे, उन्होंने अपने अपने घरों में जाकर सब घटना व्यौरे-बार अपने अपने माता पिताओं को सुनाई। जिसे सुनकर सब को बड़ा आश्चर्य हुआ। सारे गांव में एक हंगामा सा मच गया। इसी गांव में मछेन्द्रनाथ अपना भिक्षा पात्र लिये भिक्षा माग रहे थे। उन्होंने

इस अपूर्व घटना को अपने कान से सुना । तो तुरन्त ही जान गये, संजीवनी विद्या के मन्त्रों के प्रभाव से ही ये सब कुछ हुआ है । इधर गांव में अपने बालकों के मुख से इस अपूर्व घटना को सुनकर ग्राम के नर नारी मिट्टी से बने व जिन्दा बोलते चालते गाड़ीवान को देखने अपने घरों से चल पड़े ।

गोरखनाथ के आस पास मेले जैसी भीड़ लग गई । गोरखनाथ से तरह तरह के प्रश्न पूछे जाने लगे । उनकी उत्तर देते देते जवान थक गई । वह बहुत ही परेशान हो गए थे । इधर गांव की नारियां मिट्टी के बने सजीव छोटे से गाड़ीवान को देख देख कर बड़ा ही ताज्जुब मान रही थी । कोई प्यार से उसके सर पर हाथ फेर रहीं थीं । कोई नाक पकड़ कर कह रही थी इसकी नाक तो बड़ी छोटी सी है । कोई कह रही थी इसका मुंह तो खोलकर देखो इस के दांत भी हैं या नहीं ।

इन ग्राम स्त्रियों के झुण्ड में वह सजीव गाड़ीवाद का पुतला घबरा कर रोने लगा तो एक नारी ने उसे अपनी गोदी में उठाकर पुचकारना व चूमना शुरू कर दिया । एक दूसरी से छीनकर गाड़ीवान की दुर्दशा बनाने लगीं । उसी समय गुरू मछेन्द्रनाथ

भिक्षा पात्र लिए आन पहुंचे और भीड़भाड़ देख गोरखनाथ से कहा, पुत्र गोरख अब तुम पूर्ण सिद्ध योगी बन गए । गोरखनाथ बोले गुरूदेव ये सब कैसे हो गया । मछेन्द्रनाथ बोले ये सब संजीवनी विद्या के मन्त्रों के प्रभाव से हुआ है । जिसका तुम मन लगा कर पाठ कर रहे थे । इसी की वजह से मिट्टी के पुतले में प्राणों का संचार हो गया । इसी से इसमें करभंजननाथ की आत्मा का प्रवेश हुआ है । अब यहां से चलो नहीं तो इन नर नारियों के मेले के कारण हमारी साधना में विघ्न पड़ना बन्द न होगा ।

गोरखनाथ ने भी अपने गुरु को शीश झुकाकर कहा, गुरुदेव यहां से चल देना ही उचित है । अन्यथा तपस्या बगैरह हमारी सभी साधनाओं में विघ्न पड़ेगा । दोनों गुरु चेलों ने अपना अपना चिमटा झोली खप्पर संगवा लिये । तब गुरु मछेन्द्र नाथ ने उस अपूर्व बालक के सिर पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया और उस का नाम गहनीनाथ रख दिया । गोरखनाथ ने गहनीनाथ को उठाकर अपनी गोदी में लिया और चलने को तैयार हुए तो ग्राम वासियों को उनकी मनसा समझते देर न लगी ।

सभी नर नारियों को ज्ञात हो गया, ये दोनों संन्यासी अब यहां से जा रहें हैं तो उन्हें बड़ा विस्मय हुआ वो ऐसें चमत्कारी योगी को जाने देना नहीं चाहते थे। जिनकी कृपा से गांव के भीतर आनन्द की वर्षा बरसती रहती थी। क्योकि जिस दिन से ये सिद्ध लोग यहां आनकर ठहरे थे। गांव के दुख दरिद्र एक दम भाग गए थे। उनके भागतें ही स्वास्थ्य व सम्पत्ती घर घर में सवाई हो गई थी। काफी प्रार्थना करने व हाथ जोड़ने, पैर छूने पर भी दोनों सन्त राजी नहीं हुए तो उन्होंनें कहा दोनों नहीं रहना चाहते तो एक महात्मा को तो जरूर ही यहां रहना चाहिए। हम लोंगों के उद्धार का दूसरा उपाय इसके अलावा और नहीं मालूम पड़ता।

जब ग्रामवासी उनका पीछा छोड़ने को किसी भांति राजी नहीं हुए तो गुरु मछेन्द्रनाथ बोले—हे प्यारे भक्तो, साधु के एक स्थान पर ठहरनें से उस में गंदलापन आ जाता है। साधू सन्त तो रमता रहे वही उसके उद्धार का हेतू है। नहीं तो उसकी की हुई समस्त तपस्याएं नष्ट हो जाती हैं। इसलिए अब हमें जाने दो फिर कभी अवसर मिला तो तुम्हारे पास आनकर सत्संग करेंगे। किसी ने ठीक ही कहा

है, "रमता जोगी बहता पानी" ही स्वच्छ रहता है। जब ये दोनों तपधारी ग्रामवासियों के कहने से ठहरने को राजी नहीं हुए तो ग्रामवासियों ने प्रार्थना की। कृपाकर हमारे बच्चों के इस सजीव गाड़ीवान को तो यहां छोड़ जाओ। हम लोग इस को देखकर ही आप लोगों को याद कर लिया करेंगे।

दोनों गुरु चेलों ने ग्राम वासियों की इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। उसी ग्राम में एक प्रसिद्ध पंडित, विद्यावान व सदाचारी रहता था जिसका नाम मधुनामा था। इनकी पत्नी भी सर्व गुण सम्पन्न, सदाचारणी साधवी पतिव्रता थी। नाम था गंगादेवी। ग्राम निवासी सब लोग इन दोनों पति पत्नी का विशेष सम्मान करते थे। और आस पास के नजदीक ग्रामों में भी वे ही अकेले विद्यावान पंडित थे। सभी शुभ अशुभ कार्यों में, उन्हीं को अधिकतर बुलाया जाता था और अकेले पंडित होने के कारण पूजीमिन्सी जिन्स के अलावा कपड़े लत्ते गुड़ चीनी व दक्षिणा में काफी धन धान्य की प्राप्ती हो जाती थी। उनकी अपने इलाके में सम्पन्न व्यक्तियों में गणना थी। आर्थिक रूप से सम्पन्न होने पर भी उन्हें सन्तान सुख भगवान ने नहीं दे

रखा था। झाड़ फूंक ताबीज गन्डों की काफी चिकित्सा कराने से भी कोई लाभ नहीं हुआ था। और अधिक आयु हो जाने के कारण बची खुची आशा भी निराशा में बदल चुकी थी। उन्हें अपना भविष्य बिना सन्तान के अन्धकार पूर्ण दिखाई पड़ता था। गांव के लोगों ने पंचायत करके आपस में यही निर्णय किया कि पंडित जी को योगियों से उस बालक को दिला दिया जाए जो मिट्टी से बनाया गया है। दोनों दुखी पती पत्नी का कलेश कट जायेगा और बुढ़ापा हंसी खुशी से बीत जाएगा।

ऐसा विचार कर गांव के मुखिया को लेकर कई ग्राम निवासी सज्जन पंडित जी के घर गए और उन्हें दोनों करामाती योगियों की मिट्टी से बनाये सजीव बालक की कथा सुनाई। अपने साथ पंडित मधुनामा व उनकी पत्नी गंगा को साथ ले जाकर मछेन्द्रनाथ व गोरखनाथ से हाथ जोड़कर बोले। योगीराज हम दोनों पति पत्नी ब्राह्मण जाति के हैं और बिना सन्तान के बुढ़ापा, अन्धकार पूर्ण है। अगर आप इस मिट्टी से बने सजीव बालक को हमें पालने के वास्ते देने की कृपा करें तो हमारा घर शोभायमान हो जाएगा। गांव के मुखिया ने भी

सिफारिश की कि योगीराज ये हमारे पुरोहितजी अपने सदगुणों के कारण हम सब ग्राम वासियों के दिलों के राजा हैं। इनके घर किसी बात की कमी नहीं है। सिर्फ सन्तान दुख से दुखी हैं। इन्हें इस सुन्दर खिलौने जैसे बालक को देकर सन्तान दुख से छुटकारा दिलवादें।

ग्राम निवासियों के मुखिया की वार्ता सुन मछेन्द्र नाथ बोले, पंडित पंडितानी के दुख में मेरी सहानुभूति है। परन्तु इस बालक का ये लालन पालन ठीक प्रकार से कर भी सकेंगे या नहीं। मधुनामा पंडित और उनकी पत्नी गंगा एक साथ बोली। कर क्यों नहीं सकेंगे हमें जब बालक की इच्छा है तो इस सुन्दर बालक का पालन पोषण जी जान के साथ करेंगे। योगी मछेन्द्रनाथ बोले सो तो ठीक है परन्तु ये कोई मामूली मिट्टी से बना बालक ही मत जानो ये बालक कर भंजननाथ का अवतार है। जो देवताओं का अन्सी है। और अब इसका नाम हमने गहिनी नाथ रखा है। इसे भगवान शंकर का अवतार ही समझना इनसे तुम्हारा घर व कुल पवित्र हो जाएगा, ये बालक बड़ा होने पर जगत विख्यात प्रसिद्ध योगेश्वर होगा। इसके गुरु का नाम निवृत्तिनाथ

होगा जो इसे विद्यावान बनायेंगे । जाओ इसे ले जाओ और सावधानी पूर्वक इसका लालन पालन करो ।

इतना कहकर गुरु मछेन्द नाथ ने गंगा बाई के ऊपर अभिमन्त्रित भस्मीं छिड़की जिसके द्वारा गंगा बाई का ममत्व जाग उठा और उसके स्तनों में दूध उत्पन्न हो गया, उसने तुरन्त ही बालक गहिनीनाथ को स्तनपान कराया और गूरु मछेन्द्रनाथ से बोली- योगीराज,-आप निश्चिन्त रहें इस बालक का लालन पालन मैं अपने उदर से पैदा हुए शिशू के समान लाड़ प्यार से करूंगी आप चिन्ता न करें । पंडतानी गंगा देई की बात सुनकर मछेन्द्रनाथ बोले चिन्ता तो हमें रत्ती भर भी नहीं है । लो अब इस बालक को संभालो । सम्भव हुआ तो बारह वर्ष उपरान्त पुन: लौटने पर इसे उपदेश देंगे । इतनी बात कहकर दोनों योगी वहां से चल पड़े । ग्राम वासियों ने सम्मान पूर्वक उन्हें विदा किया और उनके चले जाने पर सबके चेहरे गमगींन नजर आने लगे ।

* श्री गोगा पुराण नवां अध्याय समाप्त *

दसवाँ अध्याय

गोरखनाथ का बद्रीनाथ धाम में तपस्या करना

गोरखनाथ जब ये नहीं समझ पाये कि मिट्टी के बने गाड़ीवान में जान कैसे पड़ गई तो गोरख नाथ को अनुभवहीन समझकर गुरू मछेन्द्रनाथ बोले । तुम अब यहां से जाकर बद्रीनाथ आश्रम में पहुंच कर शंकर भगवान का ध्यान कर तपस्या करो और शिव जी से वरदान प्राप्त करो । तभी तुम्हारी समस्त विद्यायें परिपक्व होवेंगी । गोरखनाथ अपने गुरू के आदेशानुसार बद्रीनाथ धाम की ओर चल पड़े और गुरु मछेन्द्र नाथ तीर्थयात्रा करने के वास्ते । गोरख-नाथ दिन में यात्रा करते और रात्रि को किसी स्वच्छ स्थान में ठहर कर विश्राम करते और तड़के ही नित्य कर्म से फारिग हो यात्रा करनी शुरू कर देते । इसी प्रकार सफर करते हुए बद्रीनाथ धाम में पहुंच वृक्ष के नीचे लोहे के कांटों पर खड़े होकर बारह वर्ष तक बड़ा कठिन तप किया और भोजन की जगह केवल वायु का ही सेवन किया । गोरख नाथ की कठिन तपस्या देख शंकर भगवान प्रत्यक्ष प्रगट हो गए और गोरखनाथ के सिर पर हाथ रख, आशीर्वाद

दे प्रसन्नता पूर्वक बोले, भक्तराज अपनी इच्छानुसार वर मांगो क्या चाहते हो। गोरखनाथ ने अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया और निवेदन किया भगवान मैं सिर्फ ये ही वरदान मांगता हूं कि मेरी समस्त विद्यायें ज्ञान से परिपूर्ण हो जावें और आपके चरणों का सदा दास बना रहूं। भगवान शंकर ने कहा भक्त ऐसा ही होगा तुमने जो भी विद्यायें सीखी हैं वह तो परिपक्व हो ही जावेंगी इसके अलावा और जो भी अनेक विद्यायें बाकी रह गई हैं उनकी भी सिद्धि प्राप्त हो जायेगी। भगवान शंकर से वरदान मिलने के बाद गोरखनाथ ने अपनी तपस्या को परिपूर्ण हुई समझा और बद्रीनाथ धाम से कूच कर, तीर्थयात्रा को चल पड़े। उनकी मनोकामना ये ही थी कि किसी प्रकार गुरुदेव के दर्शन हो जावें। उन्हें ये ज्ञात नहीं था कि गुरुदेव किस तरफ निकल गये हैं। पहले यह जगन्नाथ धाम पहुंचे फिर राजा गोपी चन्द की राजधानी हैला पट्टन नगरी में घूम फिर कर लौट रहे थे।

कनिफा नाथ योगी से मुलाकात

तभी उन्हें मालुम हुआ मेरे गुरु जी के गुरुभाई जालन्धर नाथ योगी को यहां के राजा गोपीचन्द ने

एक गहरे गड्ढे में कैद करा ऊपर से मनों घोड़ों की बदबूदार लीद डलवाकर गड्ढा भरवा दिया है जिसके कारण योगी की बुरी गति हो रही है। गोरख नाथ को पहले अपने गुरु की तलाश करनी थीं इसलिए वह हैला पट्टन नगर से चल पड़े। तभी मार्ग में एक नाथ पन्थी योगी से भेंट हुई जो बड़े ठाट बाट से रहते थे और जालन्धरनाथ योगी के प्रमुख शिष्य थे। जिस समय गोरखनाथ ने उनके नजदीक पहुंच आदेश शब्द का उच्चारण किया, उस समय कनीफा नाथ एक रेशमी गलीचे पर ठाट के साथ तकिये के सहारे बैठे थे। नमस्कार की जगह आदेश शब्द का उच्चारण सुन उत्तर में आदेश शब्द का उच्चारण करते हुए वे उठ खड़े हुए। कानीफा नाथ ने उठ कर गोरख नाथ से गले मिल उनका स्वागत किया फिर अपने पास बिठलाकर पूछा, मैं आपका परिचय जानने का इच्छुक हूं। कनीफा नाथ योगी त्रिया राज्य से घूमते हुए और गुरु मछेन्द्र नाथ से भेंट करते हुए आए थे वहां उनका काफी स्वागत हुआ था। यहां आन कर बाग में ठहरे हुए थे। कनिफा नाथ ने भी गोरखनाथ का नाम अच्छी तरह सुन रखा था पर परिचय प्रथम बार ही हुआ था। कनीफा नाथ बोले

भाई यहां के आम बहुत मीठे हैं यदि इच्छा हो तो तुड़वाकर मंगवाऊं। गोरख नाथ बोले भाई व्यर्थ खटराग करना समझ में नहीं आया परेशान होने से क्या लाभ। कनिफा नाथ बोलें भाई इसमें खटराग की क्या बात है मेहमानदारी करना तो इन्सानी फर्ज है। अभी शिष्यों को आदेश करता हूं, मीठे मीठे फल तोड़ लायेंगे। गोरखनाथ बोले शिष्य भी तो इन्सान ही है जरा से जबान के जायके के लिए धूप में उन्हें भी क्यों कष्ट दिया जाय। इस पर कनीफानाथ बोले शिष्यों को भी छोड़ो मैं अपनी विद्या के प्रभाव से यहीं आमों को मंगवाए देता हूं फिर किसी को भी कष्ट उठाने की क्या आवश्यकता रहेगी।

इतना कहकर कनीफा नाथ ने अपनी योग विद्या का चमत्कार दिखाया और उसी समय विभा-जास्त्र के मन्त्रों से अभिमन्त्रित भस्म को आम के वृक्षों की तरफ फेंका जिसके प्रभाव से पके हुए आम वृक्ष से टूट टूट कर कनीफा नाथ के सामने आन कर इकट्ठे हो गए। दोनों सन्त तब हाथ मुंह धो कर प्रेम पूर्वक आमों का सेवन करने लगे। पेट भर कर आम खा लेने के बाद जब दोनों सन्तों का मन

भर गया तब भी बहुत से आम बच रहे। तब कनीफा नाथ से गोरखनाथ बोले, भाई अब इन फलों को इनके स्थान पर वापिस भेज दो इससे ये होगा कि फल ताजे बने रहेंगे बासी करने से क्या लाभ। और वृक्ष भी जो बिना फलों के शोभाहीन हो गए हैं उनकी भी शोभा बढ़ जावेगी।

गोरखनाथ की वार्ता सुनकर कनीफा नाथ बोले कभी एक बार टूट जाने पर फल दुबारा वृक्षों पर लग सके हैं। बिलकुल अनहोनी और एकदम असंभव बात है। गोरखनाथ बोले उसी प्रकार लग सकते हैं जिस प्रकार टूटने से पहले लगे हुए थे। असम्भव को सम्भव बना देना ही तो सन्त की करामात है। जो परिपूर्ण गुरु का चेला है उसके लिए असम्भव शब्द बना ही नहीं। पूरे गुरु के चेले से तो ब्रह्मा जी भी थर थर कांपते हैं। गोरखनाथ की बात सुनकर कनीफा नाथ ताव में भरकर बोले। पूर्ण गुरु के शिष्य ही परिपूर्ण होते हैं। अगर आपके गुरु को कुछ जानकारी होती तो ये विद्या सिखा देते, थोथे गाल न बजाने पड़ते। गोरखनाथ परिहास कर कनीफा नाथ से बोलें। फल तोड़ना जो जाने और लगाना न जाने उसे कोई पूर्ण गुरु का शिष्य कह ही

नहीं सकता।

अपने गुरु की शान के खिलाफ बात सुनकर कनीफा नाथ आपे से बाहर हो गए। वह क्रोध में भर कर बोले। मैं त्रिया राज्य से आपके परिपूर्ण गुरु को देखकर ही आ रहा हूं जो भोग विलास की दलदल में फंसे पड़े हैं जिन्होंने सब नाथ योगियों का मस्तक नीचा किया है।

गोरखनाथ भी अपने गुरू की निन्दा सुनकर बोले, आपको अपने गुरु का भी कुछ ज्ञान है, जो गौड़ बंगाले के राजा गोपीचन्द के यहां गहरे गढे में दस वर्षों से दबे पड़े हैं और मनों घोड़ों की लीद और पेशाब से गढ़ा परिपूर्ण भरा पड़ा है अगर वह विद्यावान गुरु होते तो क्या वहां से छुटकारा नहीं पा सकते थे। अगर तुम्हें मेरी बात गलत मालूम पड़े तो राजा गोपीचन्द की राजधानी हैला पट्टन में जाकर अपनी आंखों से उनकी दुर्दशा देखो।

गोरखनाथ की बात सुनकर कनीफा नाथ से उत्तर न दिया जा सका, वह बुरी तरह अपने मन में खीज उठे। उनका चेहरा भयानक बन गया। तब गोरखनाथ बोले अब मैं तुमको अपने गुरु से सीखी विद्या का चमत्कार दिखाता हूं और आप के तोड़े

आमों को उनके स्थान पर ही लटकाए देता हूं। कनिफा नाथ बोले कुछ करतब करके दिखाओ तो जानें व्यर्थ गाल बजाने से क्या लाभ। कनीफा नाथ की बात गोरखनाथ को अच्छी न लगी परन्तु उन्होंने गम्भीर तथा शान्त रहकर प्रेषणास्त्र और संजीवन मन्त्रों से अभिमन्त्रित भस्म उन फलों पर डाली। फिर क्या था देखते ही देखते सब आम पक्षियों के समान उड़ उड़ कर, अपने अपने पौधों पर चिपककर लटक गये।

कनीफा नाथ को गोरखनाथ का चमत्कार देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और गोरखनाथ से बोले भाई मुझे आपके विद्या बल की जानकारी मिल गई, अभी मुझे बहुत कुछ सीखना बाकी है और आपके मिलने से ये भी फायदा हुआ कि मुझे अपने गुरु का पता आप द्वारा चल गया, जिनकी खोज में मैं बरसों से परेशान था। कनीफा नाथ की बात सुनकर गोरख नाथ विनम्र हो बोले, भाई आपके मिलने से मुझे भी कम लाभ नहीं हुआ। मीठे मीठे आम तो पेट भरकर खाने को मिले ही आपके द्वारा मुझे भी गुरु जी का पता मिल गया, उनकी खोज में मैं जगह-जगह भटकता फिर रहा था। इस प्रकार कह दोनों प्रेम पूर्वक गले

मिले और आपस में प्यार पूर्वक वार्तालाप करते हुए एक दूसरे से जुदा हुए और दोनों अपने अपने गुरु की खोज में चल दिए। गोरखनाथ सोचते जाते थे कि किस प्रकार त्रिया राज्य में जाकर अपने गुरु को लाया जावेगा और कनीफानाथ अपने गुरू जालन्धर नाथ को छुड़ाने को राजा गोपी चन्द की राजधानी हैला पट्टन जा पहुंचे।

* श्री गोगा पुराण दसवां अध्याय समाप्त *

ग्यारहवां अध्याय

जालन्धर नाथ योगी हैलापट्टन में

योगी जालन्धर नाथ अनेकानेक तीर्थस्थानों में घूमते घामते अपनी सावर तन्त्र विद्या का चमत्कार लोगों को दिखाते और नाथ पन्थ का उपदेश करते थे जिसे सुनकर अधिकतर भक्त जनता नाथ पन्थ की अनुयायी बन जाती थी। इसी प्रकार नाथ पन्थ का प्रचार करते और योग विद्या का प्रदर्शन करके हजारों शिष्य बनाये और अपने रचे सावर तन्त्र और मन्त्रों का भी चमत्कार जनता को दिखाया करते। फिर घूमते घामते राजा गोपी चन्द के गौड़ बंगाला प्रदेश हैला पट्टन नगरी में पहुंच कांचन पुरी के बाहर

एकान्त स्थान में अपना डेरा जमाया। राजा गोपी चन्द युवक राजा था और उनके पिता का नाम राजा त्रिलोचन चन्द तथा माता का नाम रानी मैनावती था। जिस समय राजा त्रिलोचन चन्द स्वर्ग लोक सिधारे उस समय गोपी चन्द की अवस्था कुल सोलह वर्ष की थी। इसी वजह से राजा गोपी चन्द की माता अपने पति के साथ सती नहीं हुई।

अपने पती के साथ सती न होने का रानी मैना-वन्ती को काफी दुख था। इसलिए उनका अधिकतर समय भगवान के भजन पूजन तथा वृत उपवासों में ही व्यतीत होता था। और वे राज काज में भी अपने मन्त्रियों को सहयोग देती थीं। राजा गोपीचन्द जब समझदार हुए तो राज्य का भार उन्होंने योग्यता पूर्वक संभाल लिया। उनके बारह विवाह हुए थे और बारह रानियों ने सोलह कन्याओं का जन्म दिया था। पुत्र उनके किसी भी रानी से नहीं हुआ था। उनकी पटरानी का नाम लोमावन्ती था। जो महान सुन्दरी और बुद्धि की अति तेज थी। वह अपनी सब सौतों के साथ सगी बहनों के समान ही वरताव करती थी। और प्यार पूर्वक सब से मेल जोल से रहती थी। गोपीचन्द राजा को किसी की कमी नहीं थी। प्रजा

पालन कर न्याय पूर्वक शासन करता और भोग विलास में अपनी रानियों के साथ प्रसन्न रहता था। बाहर भीतर राजा गोपी चन्द की ही जय जय कार होती थी।

जालन्धरनाथ का चमत्कार

राजा गोपी चन्द की राजधानी में गुरु जालन्धर नाथ योगी ने अपना कार्यक्रम इस प्रकार बनाया कि प्रतिदिन अपने नित्य कर्मों से निबटकर नित्य प्रति घास का बड़ा सा गट्ठर अपने सिर के ऊपर लाद नगर भ्रमण करते और जहां गऊ माता खड़ी मिलती उन्हें घास खिलाते थे। सबसे अधिक चमत्कार की बात ये थी कि घास का वह बड़ा गट्ठर उनके सिर से एक बालिश्त ऊंचा उठा धधर ही में चलता था। उनके सिर पर घास के गट्ठर का बोझ का कोई मतलब ही नहीं था। योगी की योग विद्या के चमत्कार की धूम हैला पट्टन नगरी में घर बाहर सब जगह थी। योगी जालन्धरनाथ के चमत्कार की चर्चा राजमहल तक भी जा पहुंची कि हमारी नगरी में पहुंचा हुआ एक सिद्ध सन्त आया है। जिसके सिर से एक बालिश्त ऊपर गायों को खिलाने वाली घास का गट्ठर अधर चलता है। जिसके दर्शन दूर दूर

से आनकर जनता कर रही है।

एक दिन योगी जालन्धरनाथ राज महल की तरफ से जा रहे थे। राजा गोपीचन्द की माता मैना-वन्ती ने भी जैसे चमत्कार की प्रशंसा सुनी थी वैसा ही महल के झरोकों में से अपनी आंखों में से देखकर योगी को मस्तक नवाया और घास के गट्ठर को एक बालिश्त सिर से ऊंचा अधर में चलता देख बड़ी हैरत मानी। और अपने मन में जाना वाकई ये योगी कोई पहुंचा हुआ सन्त है। मैनावन्ती ने अपनी खास दासी को बुलाकर कहा तुम इस योगी के पीछे पीछे जाकर जहां ये ठहरे हुए हैं, उस स्थान का पता लगाकर आओ और मुझे बताओ। दासी ने तुरन्त ही राज माता की आज्ञा का पालन किया और योगी का पीछा करती हुई पीछे पीछे वहां जा पहुंची जहां वह ठहरे हुए थे सब पता ठिकाना मैनावन्ती को आनकर बता दिया।

* श्री गोगा पुराण ग्यारह अध्याय समाप्त *

बारहवां अध्याय

मैनावन्ती का जालन्धरनाथ के स्थान पर पहुंचकर वार्तालाप करना

उसी दिन रात्रि के समय राजा गोपीचन्द की माता मैनावन्ती अपनी उपरोक्त दासी को साथ ले कर जालन्धरनाथ योगी के स्थान पर जा पहुंची। जालन्धरनाथ उस समय अपनी दोनों आंखें मूंदे, समाधी में मग्न बैठे थे। राज माता मैनावन्ती भी अपने दोनों हाथ जोड़कर उनके सामने ही बिछे आसन पर बैठ गई। काफी देर बाद जब योगी की समाधी टूटी, तब अपने सामने दो नारियों को बैठे देखा। तो पूछने लगे।

माताओ, तुम लोग कौन हो? और आधी रात के समय मेरी धूनी पर किस उद्देश्य से आई हो। मैनावन्ती अपने दोनों हाथ जोड़कर बोली, हे योगीश्वर मैं यहां के राजा गोपीचन्द की माता हूं और मेरा नाम मैनावन्ती है। तथा जो दूसरी मेरे साथ है, ये मेरी दासी है। इस समय मैं आपके दर्शनार्थ आई हूं विधवा होने के कारण मैं सबके सामने नहीं निकलती हूं। इसलिए मुझे रात्रि पर्यन्त

यहां आना पड़ा है।

मैनावन्ती की बात सुनकर, योगीश्वर बोले। हे मातेश्वरी, किसी भी नेक स्त्री को रात्रि के समय, एकान्त में गैर आदमी के साथ भेंट करने में कलंक लगने की सम्भावना बन सकती है। इस दुनिया के लोग कपट की खान हैं। इसलिए इस स्वार्थी दुनिया से डरकर रहना ही ठीक है। इस संसार में मिथ्या दोष भी लग जाते हैं। मैनावन्ती बोली— महाराज जी आप तो ब्रह्मज्ञानी सन्त हैं। आपकी नजर में नर नारी का भेद कैसा? आप इस नाशवान संसार से इतना भय मानते हैं। मैं तो इस दुनिया से कतई नहीं डरती, जो बुरा करे वही इससे भय माने। मैं जिस गूढ़ ज्ञान के उद्देश्य से यहां आई हूं, मैं बिना उद्देश्यपूर्ण किये नहीं जाऊंगी।

जालन्धर नाथ योगी ने उत्तर दिया। आप लोग नहीं जाओगी तो मैं ईंट पत्थर मारकर तुम्हारे सिर फोड़ दूंगा या श्राप देकर भस्म कर दूंगा। तुम्हारा भला इसी में है कि इस स्थान से उठकर तुरन्त चली जाओ। जालन्धरनाथ की वार्ता सुनकर मैनावन्ती बोली। योगीराज अगर आपके कर कमलों द्वारा हमारी मृत्यु हो जाये तो मुझसे अधिक भाग्य-

शाली कौन होगा ? साधू सन्तों के कर कमलों द्वारा मरने से अनायास मुक्ति प्राप्त हो जाएगी । परन्तु मेरा ऐसा सौभाग्यशाली भाग्य कहां है ।

रानी मैनावन्ती को अपनी धुन की पक्की समझ जालन्धरनाथ योगी ने पूछा । आखिर तुम्हारा उद्देश्य क्या है ? बताओ तो सही यहां किस उद्देश्य से आई हो । इतना सुन मैनावन्ती बोली--भक्त को ज्ञान अमृत की प्यास होती है, सो मुझे ज्ञान अमृत का पान करा मेरी अज्ञानता को दूर करने की दया करें । मैनावन्ती की ज्ञान पिपासा को बात सुनकर योगीराज बोले । समय आने पर तुम्हारी ज्ञान पियासा दूर करके तुम्हें ज्ञान अमृत का पान करा दीक्षा देकर अपनी चेली बनाऊंगा । इस समय अपने घर जाओ मुझे भगवान का भजन करने दो । जालन्धर नाथ की वार्ता सुनकर उनके चरणों में अपना शीश झुका दिया और प्रणाम कर अपनो दासी को साथ ले, अपने घर जा पहुंची ।

मैनावन्ती को दीक्षा प्राप्ती

राज माता मैनावन्ती हर तीसरे चौथे दिन, योगी जालन्धर नाथ की धूनी पर अर्ध रात्रि के समय अपनी दासी को साथ ले पहुंच जाती थी और धर्म

चर्चा सुन लौट आती थी । एक दिन योगीराज अपनी दोनों आंखें बन्द किये तपस्या कर रहे थे । मैनावन्ती अपने दोनों हाथ जोड़े, योगी के सामने बिछे आसन पर बैठी थी कि एक महाभयंकर काला सांप तेज चाल से रानी की तरफ आन पहुंचा । रानी कतई भयभीत नहीं हुई । जब सर्प रानी के शरीर पर चढ़ गया तो बांदी घबराकर शोर करने लगी ।

मगर रानी पर बांदी के शोर मचाने का कोई असर नहीं हुआ । वह निडर हो, पहले की तरह ही अपने आसन पर विराजमान रही । हिली डुली तक नहीं, सर्प उसके शरीर पर होता हुआ बिना काटे ही लुप्त हो गया । इसी प्रकार रानी की कई परी-क्षायें लीं, परन्तु रानी मैनावन्ती विचलित नहीं हुई । सब परीक्षाओं में परिपूर्ण साबित हुई । तब जालन्धर ने रानी को धर्म उपदेश दे अपनी चेली बना लिया । आप राजमाता मैनावन्ती के गुरूदेव बन गये । अपने गुरूदेव की कृपा से रानी मैनावन्ती को सारा जगत ब्रह्ममय दीखने लगा । उनके अज्ञान का नाश हो गया । उनका जन्म धन्य हो गया, उन्होंने अपने गुरू के चरणों में शीश झुका दन्डवत की । योगीराज ने विद्या के मन्त्रों का उच्चारण कर रानी को अमरता

का वरदान दिया। मैनावन्ती प्रसन्नता से परिपूर्ण हो गई।

रानी मैनावन्ती की आंख के आंसू

अति उल्लास के साथ राजमाता मैनावन्ती अपने घर लौटी। माघ फागुन का महीना था, राजा गोपी चन्द तेल की मालिश करवा धूप में बैठे स्नान की तैयारी में थे। अन्य रानियों के साथ पटरानी लोमावन्ती भी दही, चन्दन, केशर वगैरह स्नानोपयोगी दूध मिश्रित जल में सुगन्धित सामग्री खुशबू बखेर रहीं थीं। राजा गोपी चन्द अपने महल की छत पर चंदन चौकी पर स्नान के वास्ते तैयार बैठे थे। रानियां स्वर्ण झारियों में जल भरे उनके ऊपर छोड़ने को तैयार खड़ी थीं। ठीक उसी के ऊपर रानी मैनावन्ती की अटारी थी, जहां वह विचार मग्न बैठी थीं।

जब रानी बांदियों के रोले की आवाज राजमाता मैनावन्ती के कान में पड़ी तो वह खिड़की के झरोखे से नीचे की तरफ झुककर देखने लगी। राजा गोपी चन्द का स्वर्ण तुल्य गठीला बदन देखकर अपने पति राजा त्रिलोचन चन्द की याद आ गई। वह भी अपनी युवा अवस्था में गोपी चन्द के समान ही सुन्दर व स्वस्थ देही के थे। जिस प्रकार गोपी चन्द के पिता

का शरीर चन्दन चिता की भेंट हो गया उसी तरह मेरे इस बेटे गोपी चन्द की यह सुन्दर देही भी अग्नि की भेंट हो जायेगी। ऐसा विचार आते ही राजमाता मैनावन्ती के आंख से टप टप गरम आंसू झरने लगे और राजा गोपी चन्द के शरीर पर बरसात की माफिक गिरने लगे। उन गर्म बूंदों की बारिश से राजा गोपी चन्द ने अपनी निगाह को ऊपर उठा कर देखा तो माता मैनावन्ती को रोते पाया और जाना कि माता के ही आंसुओं की बूंदें मेरे शरीर पर गिरी हैं।

* इति श्री गोगा पुराण बारहवां अध्याय समाप्त *

तेरहवां अध्याय

माता मैनावन्ता और राजा गोपी चन्द सम्वाद तथा लोमावन्ती का प्रपंच

राजा गोपी चन्द ने जब अपनी माता को रोते देखा तो नहाना धोना भूल अपनी माता के पास जा पहुंचे। आगे आगे गोपी चन्द और उनके पीछे पटरानी लोमावन्ती भी पहुंच गई। गोपी चन्द ने अपने दोनों हाथ जोड़ प्रणाम कर अपनी जननी से रोने का कारण पूछा कि हे मातेश्वरी! तुम किस दुख से दुखी

हो रोई हो। क्या किसी ने कुछ अपशब्द कह कर तुम्हारा अपमान किया है। अपने रोने का कारण अपने बेटे से कहो। अपने बेटे राजा गोपी चन्द की वार्ता सुनकर राजमाता बोली-बेटा मुझसे किसी ने कुछ नहीं कहा है। मुझे तुम्हारे पिताजी का ख्याल आ गया था इसी से मेरी आंख से आंसू निकल पड़े थे कि तुम्हारे समान उनका सुन्दर स्वस्थ शरीर चंदन चिता की भेंट हो गया। क्या मेरे बेटे गोपी चन्द की भी वही दशा होगी। मैं चाहती हूं कि तुम्हारी मृत्यु न हो।

अपनी माता मैनावन्ती की बात सुनकर राजा गोपी चन्द बोले माता तुम्हारा रोना वृथा है, जो इस नाशवान संसार में जन्मा है उसकी मृत्यु अवश्य होगी राजा गोपी चन्द की बात सुनकर मैनावन्ती बोली बेटा इस संसार में असम्भव कुछ नही। अमर तत्व प्रदान करने वाले योगेश्वर अपनी नगरी में विराज-मान हैं और उनका नाम है जालन्धर नाथ योगी। इतनी बात अपनी माता की सुन राजा गोपी चन्द बोले वही योगी जालन्धर नाथ, जो घास का गट्ठर सिर पर अधर धरे गऊओं को खिलाते रहते हैं। मैनावन्ती बोली हां बेटा ठीक वही। तुम उनसे दीक्षा

लेकर अमर बन जाओ। वे योगेश्वर नाथ चमत्कारों से परिपूर्ण हैं।

अपनी माता की बात सुनकर राजा गोपी चन्द बोले, हे मातेश्वरी अभी मेरी उम्र ही क्या है। कुछ दिन राज सुख भोगने दो, बारह वर्ष पर्यन्त मैं दीक्षा ले लूंगा। अपने बेटे की बात सुनकर राजमाता बोलीं बेटा बारह वर्ष किसने देखे हैं पल का भी भरोसा नहीं किया जा सकता। कोई जरूरी नहीं बारह वर्ष तक तुम जीवित रहो भी या नहीं। तुम्हारे पिता की उमर क्या मरने लायक थी। काल का क्या भरोसा। किस दिन आन कर गरदन दबाले। इतनी बात अपनी माता की सुनकर राजा गोपी चन्द बोले ठीक है मातेश्वरी काल का कोई भरोसा नहीं, मैं जालन्धर नाथ योगी से मिलूंगा। अगर उन्होंने मुझे अमरतत्व प्रदान करने का वचन दे दिया तो मैं जरूर दीक्षा ले लूंगा।

इतना कहकर राजा गोपी चन्द स्नान ध्यान के वास्ते महल में लौट आए। राजमाता व अपने पति राजा गोपीचन्द की सम्पूर्ण वार्ता को महारानी लोमा-वन्ती ने भी ध्यान पूर्वक सुना और समझा तथा विचार किया कि अगर राजा ने सन्त से दीक्षा ले ली

तो हम सबका तो भाग्य ही फूट जायेगा। हमें तुरत ही ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे कन्त योगी न बने। इधर पटरानी लोमावन्ती विचार मग्न थी उधर राजा गोपीचन्द स्नान ध्यान से फारिग हुए। उनके चेहरे पर पहले जैसा उल्लास नहीं था। वे इसी सोच विचार में डूबे हुए थे कि राजा रहना ही ठीक है या दीक्षा लेकर योगी बनना। उनकी मुख मुद्रा देख-कर अन्य रानियां भी समझ गईं दाल में काला अवश्य है, राजा आज इतने गंभीर क्यों है।

राजा गोपी चन्द जब स्नान ध्यान से फारिग हो राज दरबार को चले गए तब सब रानियां पट-रानी लोमावन्ती को घेर कर खड़ी हो गई और कहने लगीं राजा इतने उदास क्यों हैं। राज माता और राजा जी में ऐसी क्या बात हुई जो राजा जी इतने गमगीन थे। आज की घटना पटरानी लोमा-वन्ती ने सबको सुना दी। जिसे सुनकर सारा रनि-वास मन्डल भयभीत हो गया। और लोमावन्ती से सब कहने लगीं अब हम लोगों का क्या बनेगा। पटरानी लोमावन्ती बोली, बिना त्रिया चरित्र रचे हम लोगों का कष्ट दूर न होगा। मैं अविलम्ब ही कोई न कोई उपाय करूंगी।

त्रिया चरित्र की रचना

अगले दिन जब राजा गोपीचन्द सोकर उठे, तो अपनी पटरानी लोमावन्ती के अन्तःपुर में पधारे। पटरानी राजा को आया देख रोने लगी। राजा गोपी चन्द ने अपनी पटरानी के नकली आंसुओं को असली आंसू समझा। वह लोमावन्ती से पूछने लगे। महारानी तुम्हारे रोने का कारण समझ में नहीं आया राजा गोपीचन्द की बात सुनकर पटरानी ने उत्तर दिया, मैं अपने भाग्य पर रो रही हूं। राजा बोले, मैं कुछ भी समझ नही पाया। रानी त्रिया चरित्र दिखाती हुई राजा से बोली, जान बक्सी जाय तो सत्य बात प्रकट कर दूं।

राजा बोला तुम्हें सत्य बोलने में जान बक्सी की क्या जरूरत है, वह भी पटरानी को, जो मेरी हृदये-श्वरी है, मैं जिसका मुख देखकर जीता हूं। जो भी तुम कहना चाहती हो, बेधड़क होकर कहो। रानी लोमावन्ती बोली बात कुछ ऐसी ही है जिसे सुन कर आप क्रोध करोगे। पता नहीं आपको विश्वास आवेगा या नहीं। राजा गोपी चन्द बोले सच बात सुनकर मैं क्रोध करूंगा ये तुमने कैसे जाना। तुम निश्चित हो सब कुछ कह डालो। इस प्रकार वन्दिश कर लोमा-

वन्ती कहने लगी।

हे मेरे दैवतास्वरूप प्राणवल्लभ कई महीनेसे जासूसी करने पर मैं इस निश्चय पर पहुंची हूं कि ये जो योगी जालन्धर नाथ हमारी नगरी में आया है उससे राज-माता का नाजायज सम्बन्ध है। राज माता सबके सो जाने के बाद अर्द्ध रात्रि पर्यन्त नित्य ही योगी की कुटिया पर पहुंच जाती हैं। इन दोनों ने मिल-कर षड़यन्त्र रचा है कि राजा गोपी चन्द को दीक्षा के बहाने राज पाट छोड़ने को मजबूर करें और फिर हम दोनों राज्य पाट का सुख भोगें। यही मेरे रोने धोने का कारण है। अब आप मेरी बात की सच झूंठ को जिस प्रकार उचित समझें जांच करालें। अपनी पटरानी की बात सुनकर राजा गोपी चन्द को पूर्ण विश्वास हो गया कि राजमाता जालन्धर नाथ के जाल में फंस गई हैं। मैं ऐसे धूर्त को गहरे गड्ढे में दबवा दूंगा। पटरानी की बात में सार है तभी तो मुझे दीक्षा दिलवाने को माता जी बेजार हैं। अमरतत्व तो एक बहाना मात्र है। ऐसा विचार मन में कर राजा गोपी चन्द बोले महारानी तुम चिन्ता न करो मैं आज ही उस धर्त योगी को जमीदोज करा दूंगा ऐसा कह नित्य कर्म से फारिग हो वह राज दरबार में

आ पहुंचे।

योगी जालन्धरनाथ को जमीदोज (गड्ढे में कैद) करना

राजा गोपीचन्द अपनी पटरानी के त्रिया जाल में फंस गए। वह अपनी सुध बुध खो बैठे और गुस्से में भरकर राज दरबार जा पहुंचे। उन्होंने अपने मन्त्रीगृह में पहुंच प्रधान मन्त्री को बुलवाकर एकांत में सलाह की। हमारे नगर में जो योगी जालन्धर नाथ आया हुआ है और घास का गट्ठर उठाये नगरी में घूमता रहता है। वह महा धूर्त है मैंने उसे सजा देने का निश्चय किया है। तुम गुप्त रूप से एक गहरा गड्डा खुदवाकर, उसमें उस धूर्त को पटककर ऊपर से घोड़ी घोड़ों की लीद भरवाकर गड्डा पाट दो। ये सारा काम गुप्त रूप से करना है। किसी को कानों कान खबर न हो। खबर पड़ने से नगरी में बबेला मच जाएगा।

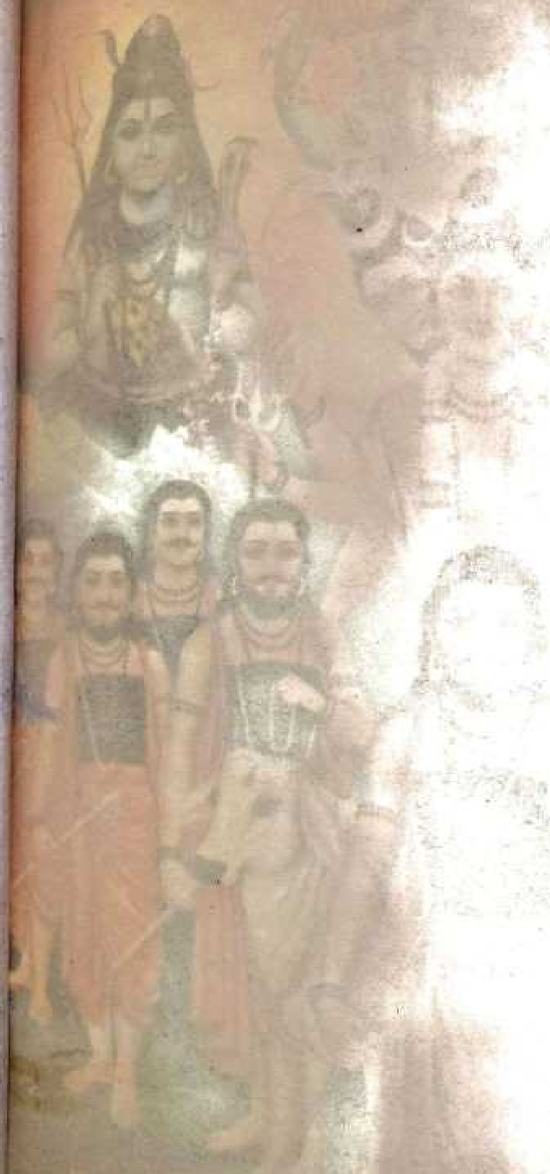
प्रधान मन्त्री ने राजा गोपी चन्द की आज्ञानुसार अपने कर्मचारियों को साथ ले जाकर जालन्धर नाथ के स्थान के नजदीक कुयें के मानिन्द खूब गहरा गड्डा खुदवाया। योगी जालन्धरनाथ उस समय समाधी लगाये भगवत उपासना कर रहे थे। मन्त्री

मे उन्हें उसी हालत में सेवकों से उठवाकर गड्डे में धरवा दिया। उसके बाद घोड़ों के मल मूत्र (घोड़ों की लीद) से भरवाकर ऊपर से कूड़ा कचरा, मिट्टी वगैरह डलवा गड्डा पटवा दिया। उन्हें अपने सिर के ऊपर के अधर वाले घास के गट्ठर के कारण कोई पता नहीं पड़ा। सारा भार उस गट्ठर ने अपने ऊपर ओट लिया। यानी घोड़ों की लीद बगैरह सभी अधर में ही रुक गए। वह निश्चिन्ततापूर्वक आकाशास्त्र, बज्रास्त्र को सांवर मन्त्रों द्वारा सिद्ध करते रहे।

कनिफानाथ का हैला पट्टन में जाना

गोरखनाथ से अपने गुरु की दुर्दशा सुनकर, कनिफानाथ को महान दुख हुआ। और आश्चर्य भी कम नहीं हुआ कि मेरे गुरु को कैद करने की सामर्थ्य राजा गोपीचन्द को किस प्रकार हुई। गुरुदेव ने उसे व उसकी नगरी को भस्म न कर कैद हो गए। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। गोरखनाथ का कहना भी झूठ नहीं हो सकता है बात कुछ न कुछ जरूर है। असली भेद हैला पट्टन पहुंचने पर ही खुलेगा।

उन्होंने अपने सभी शिष्यों को हुक्म दिया कि मेरे डेरे तम्बू उखाड़कर बैल गाड़ियों में लदवाओ





और सब हाथियों पर झूलें डलवादो, घोड़े, रथ, पालकी वगैरह सब अविलम्ब सजवाकर हैला पट्टन नगरी राजा गोपीचन्द की राजधानी को अति शीघ्र कूच करो ।

कनिफानाथ योगी की आज्ञा सुनकर उनके सभी शिष्यों ने डेरे तम्बू उखाड़कर सब सामान छकड़ों में लदवा दिया और हाथी घोड़े, रथ, पालकी सब सजवाकर बाजे गाजे के साथ, राजसी ठाट बाट बना अपनी अपनी सवारी पर चढ़ कूच बोल दिया । और रात दिन की मंजिल दर मंजिल करते हुए, गौड़ बंगाले प्रान्त को हैलापट्टन नगरी में जा पहुंचे ।

उनका बायु वेग के समान आगमन हाथी घोड़ों पर चढ़ योगियों का आडम्बर देख, हैलापट्टन के सकल नर नारी भारी संख्या में उनके पीछे लग लिए । राजा गोपीचन्द भी अपने उच्च दरबारियों को साथ लेकर कनिफानाथ की अगवानी करने जा पहुंचे ।

राजा गोपीचन्द को आया देख प्रजा वर्ग ने जय कारे बोल बोल कर आकाश पाताल एक कर दिया । राजा गोपीचन्द ने कनिफानाथ को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उनको अपने साथ लेकर राज-

भवन आम पहुंचे और एक बड़े सिंहासन पर बिठला कर उनका स्वागत सत्कार किया। और अपने प्रधान मन्त्री को आज्ञा दी कि आप सब सन्तों के ठहरने की व्यवस्था करवा कर उनकी सेवा सत्कार करें। राजा गोपीचन्द की आज्ञा अनुसार सब प्रबन्ध प्रधान मन्त्री ने करवा दिया।

* इसी श्री गोगा पुराण तेहरवां अध्याय समाप्त *

चौदहवां अध्याय

राजा गोपीचन्द और माता मैनावन्ती

योगी जालन्धरनाथ के कैद होने की किसी को कानों कान खबर नहीं हुई थी। सारी नगरी में ये ही चरचा फैली कि योगी जालन्धर नाथ यहां से कहीं अन्य चले गए। अपने गुरु के एकाएक चले जाने की चरचा जब राजमाता मैनावन्ती ने सुनी तो उन्हें अपने बेटे गोपीचन्द के अमर तत्व प्राप्त न करने का काफी दुख हुआ। और वह अपने इसी दुख के कारण, अधिक चिन्ता कर करके बीमार पड़ गई। और जब उनकी हालत बिगड़ गई तो राजा गोपीचन्द को चिन्ता हुई कि क्या माताजी मेरा साथ छोड़ जायेंगी। वह घबराकर अपनी माता के महल

में जा पहुंचे और मैनावन्ती के चरण पकड़कर बोले हे मातेश्वरी बीमारी का कारण क्या है। मुझे बताने की कृपा करें।

अपने बेटे की वाणी सुनकर मैनावन्ती बोली-हे मेरे लाड़ले बेटे गोपी चन्द मैं तुझे अमरतत्व दिलाकर चिरन्जीवी कराना चाहती थी परन्तु तुमने घर आये संतका आशीर्वाद भी प्राप्त नहीं किया, मुझें इसी बात का बड़ा भारी दुख है और यही दुख मेरी बीमारीं का खास कारण है। गोपी चन्द बोले-मातेश्वरी मेरी समझ में आपकी बात बैठी नहीं, जो लोग नगर-नगर गली कूंचों में फिर कर भिक्षा मांग कर अपनी उदर पूर्ति करते हैं वह किसी को अमरतत्व किस प्रकार प्रदान कर सकते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि तुम्हें योगी ने अपने मायाजाल में जकड़कर फांस लिया है। इसी लिये आप उस के गुण गान कर रही हैं।

मैनावन्ती बोली बेटा ऐसी बात नहीं है वह मुझे अमरतत्व का वरदान दे गए हैं मैं मरूंगी नहीं। अमर हुए लोग मरा नहीं करते। अगर तुमने उनसे दीक्षा ले ली होती तो वह तुम्हें भी अमर होने का वरदान जरूर दे जाते। वह ऐसे वैसे सिद्ध नहीं थे। उन्हें तो

भगवान का ही अवतार समझना चाहिये। उनकी कृपा से मुझे सब जगत ब्रह्म मय ही दीखता है।

अपनी माता मैनावन्ती की बात सुनकर गोपी चंद के कुछ भी समझ में नहीं आया। वह सोचने लगे क्या पटरानी लोमावन्ती का कहा ही सच लगता है। अगर योगी कुछ भी करामाती होता तो क्या वह मन्त्री द्वारा गड्ढे में कैद हो इस प्रकार अपने प्राण गंवाता। माता की बातों में सार नजर नहीं आता। लोमावन्ती की ही बात में सार है परन्तु माता जी के चेहरे का तेज इस बीमारी की अवस्था में भी चन्द्रमा के समान चमचमा रहा है। सत्यता की चमक दमदमा रही है।

अपने बेटे गोपी चन्द को सोच विचार करते देख मैनावन्ती बोली बेटा, अब सोच करने से क्या होना जाना है। आगे से सचेत रहना चाहिए। अपनी माता की बात सुन राजा गोपी चन्द से उत्तर देते न बना। वह सोचने लगे अगर लोमावन्ती की बात गलत है और माता की बात ठीक है तो बड़ा भारी अपराध हो गया। मुझे ये भी पता नहीं इस पाप का प्रायश्चित क्या है। ऐसा विचार कर वह अपनी माता से बोले, अब कोई नाथ पन्थी सन्त महात्मा इधर आवेगा तो

मैं जरुर दीक्षा ले लूंगा।

ये वचन अपनी माता को देकर अपने दरबार में जा पहुंचे। तभी उन्हें कनीफा नाथ सन्त के अपनी नगरी में आने की सूचना मिली और वह अपने दरबारियों को साथ लेकर कनीफा नाथ के स्वागत को पहुंचे थे जिसका विवरण पीछे आ चुका है। प्रधान मन्त्री ने उनके शिष्यों के ठहरने की व्यवस्था राजाज्ञा अनुसार करदी थी। कनीफा नाथ को रत्न जड़ित सिंहासन पर विराजमान कर राजा गोपीचन्द ने सेवा पूजा अर्चना की थी। जब राज माता मैनावन्ती को पता पड़ा कि योगी कनीफा नाथ हैला पट्टन में आन कर हमारे भवन में पधारे हैं तो वह अपनी सैया से उठकर महल में पधारी जहां सब भक्तों के समूह के सामने कनीफा नाथ सिंहासन पर विराजमान थे।

जब कनीफा नाथ का राज भवन में खूब आदर सत्कार हो लिया तब राज माता मैनावन्ती ने कनीफा नाथ के नजदीक पहुंच अपने दोनों हाथ जोड़ उनकी चरण रज लेकर अपने माथे पर लगाई। इसके उपरान्त कनीफा नाथ से प्रार्थना के स्वर में बोली-हे योगी राज मेरे अहो भाग्य जो आप इस नगरी में पधारे हैं। अब से लगभग बारह वर्ष पूर्व एक योगी

जालन्धर नाथ जी पधारे थे जिनके सर के ऊपर घास का गट्ठर अधर रहा करता था। वह नित्य नियम से गऊओं को घास खिलाया करते थे। उन्होंने मेंरी कितनी ही परीक्षायें लेने के बाद मुझे दीक्षा देकर अपनी शिष्या बनाया और मेरे सिर पर हाथ रख कर अमरतत्व प्रदान किया था। जब से वह गये हैं उनके फिर कभी दर्शन नहीं हुए। कनीफा नाथ बोले, और आपने भी अपने गुरु की कोई खोज खबर नहीं ली और न उन्हें तलाश ही किया।

इतना सुनकर राज माता बोलीं, वह तो मुझे बिना बताए ही रूपोश हो गए। मेरी तो सब इच्छायें हो जो की जी में रह गई। मैं तो अपने इस बेटे को भी उनकी शरण में भेजकर अमर तत्व दिलवाती। राज माता मैनावन्ती की बात सुनकर कनीफा नाथ बोले, ऐ बहन मैनावन्ती मेरे और आपके दोनों के गुरु जालन्धर नाथ योगी हैं। वह अब भी तुम्हारे राज्य की सीमा में हैं। तब भी तुमने उनकी कोई खोज खबर नहीं लीनी और मैं गुरुजी को खोजता हुआ उन्हीं की तलाश में तुम्हारो नगरी में आया हूं। राजा गोपी चन्द वहीं पास में बैठे हुए थे। कनीफा नाथ की बात सुनकर उनका चेहरा उतर गया व मुंह

पीला पड़ गया। मैनावन्ती बोलीं समझ में नहीं आता वह इस नगरी में हैं और किसी को कोई पता नहीं।

कनीफा नाथ बोले, हे राजमाता तुम्हारे बेटे ने ही उन्हें छिपा रखा है। अगर मेरी बात पर विश्वास न आया हो तो अपने पुत्र से ही पूछ देखो। मैं पूरी जानकारी हासिल करके ही उन्हें हैला पट्टन नगरी में ढूंढने आया हूं। फिर गोपीचन्द की ओर देखकर बोले क्यों राजन, अब तो बतादो तुमने हमारे गुरुदेव को कहां छिपा रक्खा है। राजा गोपी चन्द को चोरी पकड़े जाने का काफी दुख हुआ। परन्तु उत्तर कोई न दिया गया। तब राज माता मैनावन्ती ने ही पूछा बेटा तुमसे ही भूल हुई है तो बता क्यों नहीं देता।

गोपी चन्द का अपनी गलती मान लेना

राजा गोपी चन्द की बुद्धि खो गई थी, उनके मुंह से बात नहीं निकल पाती थी। उन्होंने शर्म से मस्तक नीचे कर लिया। अपने बेटे की करतूत से राजमाता मैनावन्ती को अपार दुख हुआ। पुत्र होकर जननी को धोखा दिया। न मालुम मेरे गुरु देव का क्या अनिष्ट कर डाला है। फिर आंखों में आंसू भर बोलीं गोपी चन्द शीघ्र बता मेरे गुरु कहां छिपे हैं।

बेबस हो, राजा गोपी चन्द ने सारा हाल बता दिया और गिड़गिड़ा कर कनीफा नाथ के कदमों में अपना शीश झुकाया और प्रार्थना पूर्वक बोले मुझसे जो बड़ा भारी अपराध हो गया है मुझे उससे मुक्त कर क्षमा प्रदान करने की दया करें।

अपने बेटे के मुख से सारा हाल सुन कर रानी मैनावन्ती सन्नाटे में आ गईं। उन्होंने अपना माथा पीट पीट कर दहाड़ें मारकर रोना शुरू कर दिया। तब कनीफा नाथ ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा-हे राजमाता मैनावन्ती, इतना घबराना वृथा है। मेरे गुरुदेव ने सैकड़ों मनुष्यों को अमरतत्व प्रदान किया है उन्हें हानि पहुंचाने की शक्ति तो ब्रह्मा में भी नहीं है। वह जहां भी छिपे होंगे वहां आराम में रह कर अपना कार्य कर रहे होंगे। मैं उन्हें शीघ्र ही आप लोगों के सामने प्रगट कर दूंगा। मैनावन्ती बोलीं परन्तु मेरे इस पापी बेटे गोपी चन्द के पाप किस तरह क्षमा कराओगे।

रानी मैनावन्ती की बात सुनकर कनीफा नाथ बोले, कुकर्म तो तुम्हारे बेटे ने ऐसा किया है कि मुझे ही इसको तथा इसके राज पाट को भस्म कर देना चाहिए परन्तु हम सन्तों का काम अनिष्ट करना नहीं

है। क्षमा प्रदान करना ही सन्त की शान है। परन्तु गुरु जी क्या कर बैठें, मैं उनके मन की क्या कह सकता हूं। कनिफानाथ की वार्ता सुनकर राजमाता मैनावन्ती फिर फूट फूटकर रोने लगी और दोनों हाथ जोड़कर बोली, हे मेरे दयालु गुरु भाई, गुरुजी के क्रोध से इसे बचाने की कोई न कोई व्यवस्था जरूर करो। वरना इसकी बारह रानियां और सोलह कन्याओं का जीवन नष्ट हो जायेगा।

रानी मैनावन्ती के नम्र स्वभाव के कारण और अत्यन्त विनय करने पर कनिफानाथ ने वचन दिया, मैं तुम्हारे बेटे की जान बचाने की भरपूर कोशिश करूंगा। कनिफानाथ ने राजा गोपीचन्द के पांच पुतले उनकी ही आकृति के तैयार करवाये। तांबा, पीतल, सोना, चांदी और सिलवर के ऐसे बुत बन-बाये कि दूर से देखने पर कोई भी हो उन्हें राजा गोपीचंद ही समझेगा। पांचों पुतले उसी स्थान पर धरवा दिये, जहां जालन्धर नाथ योगी गड्ढे में कैद थे। शुभ मुहूरत देख कनिफा नाथ गोपी चन्द को अपने साथ ले जा पहुंचे। और सोने के बने बुत को गड्ढे के पास खड़ा करा दिया जहां गुरु जालन्धर नाथ दबे पड़े थे। और चिरन्जीवी

बेबस हो, राजा गोपी चन्द ने सारा हाल बता दिया और गिड़गिड़ा कर कनीफा नाथ के कदमों में अपना शीश झुकाया और प्रार्थना पूर्वक बोले मुझसे जो बड़ा भारी अपराध हो गया है मुझे उससे मुक्त कर क्षमा प्रदान करने की दया करें।

अपने बेटे के मुख से सारा हाल सुन कर रानी मैनावन्ती सन्नाटे में आ गईं। उन्होंने अपना माथा पीट पीट कर दहाड़ें मारकर रोना शुरू कर दिया। तब कनीफा नाथ ने उन्हें तसल्ली देते हुए कहा-हे राजमाता मैनावन्ती, इतना घबराना वृथा है। मेरे गुरुदेव ने सैकड़ों मनुष्यों को अमरतत्व प्रदान किया है उन्हें हानि पहुंचाने की शक्ति तो ब्रह्मा में भी नहीं है। वह जहां भी छिपे होंगे वहां आराम में रह कर अपना कार्य कर रहे होंगे। मैं उन्हें शीघ्र ही आप लोगों के सामने प्रगट कर दूंगा। मैनावन्ती बोलीं परन्तु मेरे इस पापी बेटे गोपी चन्द के पाप किस तरह क्षमा कराओगे।

रानी मैनावन्ती की बात सुनकर कनीफा नाथ बोले, कुकर्म तो तुम्हारे बेटे ने ऐसा किया है कि मुझे ही इसको तथा इसके राज पाट को भस्म कर देना चाहिए परन्तु हम सन्तों का काम अनिष्ट करना नहीं

है। क्षमा प्रदान करना ही सन्त की शान है। परन्तु गुरु जी क्या कर बैठें, मैं उनके मन की क्या कह सकता हूं। कनिफानाथ की वार्ता सुनकर राजमाता मैनावन्ती फिर फूट फूटकर रोने लगी और दोनों हाथ जोड़कर बोली, हे मेरे दयालु गुरु भाई, गुरुजी के क्रोध से इसे बचाने की कोई न कोई व्यवस्था जरूर करो। वरना इसकी बारह रानियां और सोलह कन्याओं का जीवन नष्ट हो जायेगा।

रानी मैनावन्ती के नम्र स्वभाव के कारण और अत्यन्त विनय करने पर कनिफानाथ ने वचन दिया, मैं तुम्हारे बेटे की जान बचाने की भरपूर कोशिश करूंगा। कनिफानाथ ने राजा गोपीचन्द के पांच पुतले उनकी ही आकृति के तैयार करवाये। तांबा, पीतल, सोना, चांदी और सिलवर के ऐसे बुत बनबाये कि दूर से देखने पर कोई भी हो उन्हें राजा गोपीचंद ही समझेगा। पांचों पुतले उसी स्थान पर धरवा दिये, जहां जालन्धर नाथ योगी गड्ढे में कैद थे। शुभ मुहूरत देख कनिफा नाथ गोपी चन्द को अपने साथ ले जा पहुंचे। और सोने के बने बुत को गड्ढे के पास खड़ा करा दिया जहां गुरु जालन्धर नाथ दबे पड़े थे। और चिरन्जीवी

भस्म को राजा गोपी चंद के मस्तक पर मन्त्र पढ़कर मल दिया। और कुदाल हाथ में देकर कहा, गड्ढा खोदना शुरू करो।

जब भीतर से आवाज आवे कौन है! तब यह कह दस गज पीछे हट जाना कि राजा गोपीचंद हूं। कनिफानाथ के कहे अनुसार राजा गोपीचंद ने कुदाल हाथ में लेकर गड्ढा खोदना शुरू कर दिया। और कनिफानाथ खुद भी गड्ढे से दूर हट कर बैठ गये। राजा गोपीचन्द ने थोड़ाही गड्ढा खोद पाया था तभी गड्ढे के भीतर से आवाज आई कौन है? सोई राजा गोपीचन्द ने उत्तर दिया, मैं हूं राजा गोपीचन्द। और ये कहकर एक दम दस गज की दूरी पर पीछे हट गए। सन्त कनिफानाथ के कहे अनुसार गोपीचन्द के हटते ही गड्ढे के भीतर से फिर आवाज आई। राजा गोपीचन्द भस्म हो जावे। इतना कहते ही राजा गोपीचन्द का सोने का पुतला जलकर तुरन्त भस्म बन गया।

सोने के पुतले के भस्म हो जाने के बाद क्रमवार चांदी, पीतल, ताम्बा, सिलवर वगैरह के पुतले रखे गए। जब कनिफानाथ की आज्ञानुसार गड्डा खोदते तभी भीतर से आवाज आती कौन है, तभी राजा

गोपीचन्द हूं कहकर पीछे हट जाते। और पुतले वाला नकली गोपोचन्द भस्म हो जाता। जब चार पुतले जलकर भस्म हो चुके और पांचवीं बार भी गड्डा खोदते समय राजा गोपीचन्द कहा गया, तो योगी जालन्धर नाथ सोचने लगे मेरे बार बार भस्म हो जा कहने पर भी राजा गोपीचन्द किस प्रकार बच जाता है। उन्होंने पांचवें पुतले को भी पांचवीं बार गड्ढा खोदने पर भस्मी बना दी।

छटी बार में गड्ढा खाली हो गया और जालन्धर नाथ जी ऊपर निगाह उठाकर गोपीएन्द को ठीक प्रकार देख भी न पाए थे कि कनिफ़ानाथ ने आगे बढ़कर कहा, गुरुदेव की जय हो। आपका शिष्य कनिफानाथ आ गया है। और गुरुदेव के चरणों में मेरा प्रणाम है। कनिफानाथ को आशीर्वाद देकर जालन्धरनाथ बोले, तुम यहां आ गए। ये ठीक हुआ। पर राजा गोपीचन्द भस्म होने से अब तक बचा हुआ है। कनिफानाथ बोले मैंने इनकी माता मैंनावन्ती जो आपकी शिष्या है, वचन दिया था कि गुरु जी के कोप से तेरे बेटे को बचाकर उसके अपराध को क्षमा करा दूंगा। मैंने गोपीचन्द के माथे पर चिरन्जीवी भस्म मल दी थी और आपके श्राप से सोने

चांदी पीतल वगैरह धातुओं के पुतले, जो राजा गोपी चन्द नामधारी थे। भस्म करा दिये। अब आप भी बहन मैनावन्ती के इस पुत्र को क्षमा करदो।

योगी जालन्धरनाथ ने अपने शिष्य कनिफानाथ को आशीर्वाद दे उसकी बात मान ली। और राजा गोपीचन्द का अपराध क्षमा कर दिया। सब जनता ने योगीश्वर जालन्धरनाथ की जय के नारे लगाये और राजा गोपीचन्द व उनकी माता ने जालन्धरनाथ योगी के चरणों में अपना मस्तक डाल आशीर्वाद प्राप्त किया। तुरन्त ही राजा गोपीचन्द ने अपने प्रधानमन्त्री को आज्ञा दी कि आप इन दोनों योगियों को अलग अलग बग्गियों में सवार कराकर बाजे गाजे के साथ जलूस बना राजमहल में ले चलो। इतना सुनते ही जनता में हर्ष उल्लास की लहर दौड़ गई। और दोनों योगियों की खूब खातिर तवाजय कर राजमाता मैनावन्ती ने अपने गुरु के चरणों में माथा रखकर अपने बेटे राजा गोपीचन्द को दीक्षा दिलाई और योगी जालन्धर का शिष्य बना दिया। राजा गोपीचन्द ने जब गुरु चरणों में अपना मस्तक टेका तब गुरु जालन्धरनाथ जी ने गोपीचन्द के मस्तक पर हाथ रख उसे अमर तत्व का वरदान दिया।

और दोनों योगियों ने हैलापट्टन नगरी से प्रस्थान कर राजा सिंधासिंह की राजधानी संगलदीप की तरफ कूंच किया।

* इति गोगा पुराण तेहरवां अध्याय समाप्त *

नोट--राजा गोपीचन्द का पूरा हाल जानने के लिए बालकराम कृत संगीत गोपीचन्द पढ़ें।

चौदहवाँ अध्याय

सज्जनों ! अब हमें रानी बाछल का हाल जानना चाहिए, जो नित्य नियम से गुरु गोरखनाथ जी की सुबह शाम दोनों वक्त जोत बाला करती है। जिस से प्रसन्न हो गुरु गोरखनाथ समाधी टूटने पर अपने प्रमुख चेले औघड़नाथ को आज्ञा देते हैं कि बेटा औघड़ जल्दी से डेरे तम्बू उखाड़कर सब जमात को तैयार करो। हमें बहुत जल्द बागड़ देश पहुंचना है। इतनी बात अपने गुरु के श्रीमुख से सुनकर औघड़नाथ बोले। हे गुरुदेव, आप मुझे ये बताने की कृपा करें कि हमारे कौन जन्म के पाप उदय हो रहे हैं। जो आप इस सड़ी गर्मी में, भूड़ के जंगल में भेजकर हम लोगों को बिना मौत मरने को कह रहे

हैं। जहां मीलों तक न पानी है, न पेड़ों का नाम निशान।

अपने प्रमुख चेले औघड़नाथ की वाणी सुनकर गोरखनाथ बोले। बेटा औघड़, चिन्ता न कर वहां रत्ती भर तकलीफ न होगी। वहां के राजा रानी बड़े भक्त लोग हैं। नौलखा बाग लगवाया है, वहां हम लोगों को मीठे मीठे फल फरूट खाने को मिलेंगे इस के अलावा देशी घी के पूड़ी पकवान। अपने गुरु की आज्ञा मान औघड़नाथ ने चौदह सौ सन्तों को गुरु आज्ञा सुनाई। और डेरे तम्बू उखड़वा, तथा बैलगाड़ियों में भरवा दिया। और हाथी बगैरह सजवा कर बागड़ देश रवाना होने का पूरा इन्तजाम किया। प्यारे मित्रों अब हम यहां का हाल यहीं छोड़कर नौलखे बाग का हाल लिखते हैं।

प्यारे मित्रों! राजा जेवर सिंह द्वारा, नौलखे बाग बन जाने का पूरा विवरण पीछे लिखा जा चुका है। जिसमें शिव मन्दिर कुंआ प्याऊ सब खूब सुन्दर बनकर तैयार हो गये थे। राजा जेवरसिंह ने जो नौ लाख सोने की मोहरें पेड़ पौधों पर ही खर्च की थी। देश विदेश में जहां भी बढ़िया से बढ़िया फल फलूट के पौधे जिस मूल्य पर मिलें वहीं से मुंहमांगी कीमत

देकर मंगवाये। ऐसे ऐसे फल फूल मेवे बाग में लगे थे जिनकी महक कोसों तक जाती की। धर्मशाला मन्दिर की शान ही निराली थी। देखने वाले लोगों का कहना है कि धर्मशाला के सामने राजमहल की शान फीकी दिखाई देती थी। कुंए का जल गंगा के जल के समान एक दम मीठा था। पेड़ों की डालियों पर फल फलूट पक कर गुच्छों में लटक रहे थे।

माली मालिन की खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्हें अपने दिन फिरते नजर आते थे माली मालिन ने आपस में सलाह की, कि फल फलूट मेवों की पहली डाली राज दरबार में पहुंचानी चाहिए। ऐसा करने से भारी इनाम मिलेगा और हमारी गरीबी दूर हो जावेगी। इस प्रकार माली मालिन ने विचार पूर्वक खूब बढ़िया डाली सजाकर फल फूल मेवों से भरपूरकर खुब बड़ी डलिया सजाई और हंसी खुशी अपने शीश पर धर, राज दरबार में पहुंचा राजा जेवरसिंह को शीश झुका प्रणाम कर अपने दोनों हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। राजा जेवरसिंह ने जब निगाह उठाकर माली के शीश पर भारी डल्ला देखा जिसकी खूशबू से भरे दरबार में महक फैल गई थी, कहने लगे इसमें क्या लाया है।

राजा जेवरसिंह की बात सुनकर माली अपने दोनों हाथ जोड़, मधुर मुस्कान बखेरता हुआ बोला। श्री महाराज ये आपके नौलखे बाग के फल फलूट मेवा की डाली लाया हूं। जो सर्व प्रथम राजा को भेंट की जाती है। अपने माली के मुख से वचन सुन, राजा जेवर सिंह फूलकर कुप्पा हो गये। मारे खुशी के मुख से बोल न निकला, चटपट अपने गले से माणिक मोतियों की कीमती माला माली को पकड़ा दी। और खजांची को हुकम दिया कि एक सौ एक सोने की मोहरें माली को और इनाम दे दो तथा माली को आज्ञा दी अब तुम इस डाली को राजमहल में पहुंचा दो, वहां तुम्हें और इनाम मिलेगा राजा जेवरसिंह की बात सुन और अपना इनाम ले डाली उठा सब दरबारियों को प्रणाम कर खुशी खुशी राज महल को चल दिया।

दोहा-डाली ले माली चला, पहुंचा महल मंझार।
हाथ जोड़ कहने लगा, सुनो मेरी सरकार॥
सुनो मेरी सरकार, मैं हूं नौलखे बाग का माली
फल फूल संभालकर, लाया आपको डाली
पहले गया राज दरबार बीच,
राजा जी ने हुक्म सुनाया

महलों में पहुंचाओ डाली,
जहां मिले इनाम मन भाया
कर जोड़ करु प्रणाम, बाछल महारानी
महक रही फल फूल की डलिया
दिया रात दिन पाली
बड़ी मेहनत से बाग लगाया सब प्रभू की माया
बचन मानो मेरे सच्चे, प्रभू अब दिन लावेंगे अच्छे
देर उनके हो भले ही अन्धेर नहीं महारानी
कहे सब ज्ञानी ध्यानी
प्रभु माया अपरम्पार न जाय जानी।

अपने माली की ज्ञान भरी वार्ता सुनकर बाछल रानी बड़ी खुश हुई और बांदी को आज्ञा दे बोली– इसके सिर से फल फलूट की डलिया उतरवा दो। डलिया उतर जाने पर फिर माली से कहने लगी।

ऐ मालिन के लाड़ले, बचन तेरे अनमोल।
कौन बाग से डाली लाया, महक उठी बेतोल।
महक उठी बेतोल महल में खुशबू फैली भारी।
किसका बेटा क्यानाम पिता का मां पे मैं बलिहारी

जवाब माली का

बाग नौलखा नया जो दिया आप लगवाय।
उसी बाग का मैं माली हूं मात पिता मेरे नाय।

नौलक्खे की डाली लाया, आरही अजब बहार।
फल फूलों के गुच्छे लटकें भौंर रहे गुन्जार।
चाहे सारी नगरी खाय रातदिन होय न खाली।
माता पिता याने के मर गए,
मेरी करी प्रभू ने रखवाली।
मैंने उन्हींका गुन गाया, है जिनकी अदभुत माया।

रानी बाछल सोचने लगी ठीक है। कोई एक लाल को तरसे, कोई लाल छोड़ मरे डोर लगाकर हर से। रानी बाछल के इस प्रकार सोचने से नैनों से नीर झरने लगा। वह चटपट मुंह फेर अपने आंसू पौंछ माली से कहने लगी, अच्छा तो,ये हमारे नौलखे बाग की डाली है। अब मुझे बताओ, धर्मशाला कैसी बनी है, शिवजी महाराज का मंदिर कैसा बना है, कुंए का जल मीठा है या खारा, प्याऊ पर कहार तैनात किया है या पंडित, मुझे सारा हाल ब्यौरेवार सुनाओ।

इतनी बात रानी बाछल की सुन, माली हाथ जोड़कर कहने लगा, महारानी जी मैं अपने इस छोटे मुंह से किस प्रकार बड़ाई करूं, शिव मन्दिर व धर्मशाला आपके महल से भी सुन्दर बने हैं। शिव मंदिर के खम्बों में जड़ी जवाहरात से एक दीवा जलाने से

ही सूरज के समान रोशनी हो जाती है। जिस पर नजर जमाये से भी नहीं जमती है। धर्मशाला की शान भी निराली ही है। साधू सन्त महन्त जो आ कर ठहरते हैं तारीफ करते नहीं अघाते। मैं अपनी जबान से तारीफ करने की लियाकत नहीं रखता। जब आप अपनी नजर से देखेंगी तभी आप खुश होंगी।

बाछल रानी खुश हो बोली ठीक है भैया, जब भगवान दिखायेगा तब ही देखूंगी। मेरा मन तो अभी देखने को अधीर हो रहा है। मगर हम राजपरिवार की नारियों को ये अधिकार कहां। जब राजा जी पंडित जी को बुलवा मुहुर्त निकलवावेंगे, तभी उनके साथ शंकर भगवान के दर्शन नसीब होंगे। भगवान चाहेंगे तो जग ज्यौनार भी होगी और जोर शोर से भन्डारा भी। अब तुम इनाम लेकर बाग को जाओ, मालिन तुम्हारा इन्तजार कर रही होगी।

दोहा- भरथाली मोती दिए चलनी भर पुखराज।
चढ़ने को घोड़ा दिया सजा सुनहरी साज।
हाथों को कंगन दिए कपड़े दिए छविदार।
मालिन को लहंगा दिया जड़े सुनहरे तार।

इनाम देकर रानी बाछल कहती है जब हम

नौलखे बाग का मुहुर्त करेंगे तब भी इसी प्रकार इनाम इकराम देंगे।

दे आशीष माली रहा, जिसको खुशी अपार।
दूधों नहाओ पूतों फलो होय रोज जयकार।
रोज होय जयकार रानी जी बात कहूं मैं सच्ची
राजकुमार जब महलों जन्में लेंगे इनामी अच्छी।
प्रभु वह दिन जल्दी आवे हम मनचाहा फलपावें
क्या मैं करूं ब्यान प्रभु, से ध्यान ही लगाया जावे

इतनी कह माली ने हाथ जोड़ शीश नवा हंसता मुस्कराता इनाम ले बाग में अपनी मालिन को सब इनाम खुश हो हो दिखाया। सिर्फ लंहगा दुपट्टा उसे पकड़ा दिया बाकी सारी दौलत अपने कब्जे में रखी। अपने मालिक की ये हरकत देखकर मालिन लड़ने झगड़ने लगी। कहने लगी जब मेरी तुम्हारी शादी हो गई तब तुम्हारे कमाये माल में मैं आधे की अधिकारी बन गई। या तो सीधी तरह आधा माल लौटा दो वरना मैं अभी राज दरबार में जाकर तुम्हारा फजीता करूंगी और राजा जेवरसिंह व रानी बाछल से कहकर सारे माल पर अधिकार जमा लूंगी। अभी तो आधे पर ही राजी हो रही हूं।

माली ने सोचा बात तो इसकी ठीक ही है,

आजकल राजदरबारों में भी औरतों की ही सुनाई होती है। इससे भलाई इसी में है। जब सारा जाता दिखता हो, तब आधा दीजे बांट। जब मालिन ने माली को सोच विचार करते देखा और अपनी बात का उत्तर न पाया तो त्यौरी में बल गेर कर बोली। अब मैं आधा नहीं लेने की अब सारा ही लेकर दिखाऊंगी। जब राजा जी के यहां महारानी बाछल की चलती है तो मेरी अपने घर में कैसे न चलेगी। तुम देख लेना रानी बाछल मेरे ही हक में फैसला देंगी। वह भली-भांति जानती हैं कि मर्द तो उड़ाऊ खाऊ होते हैं। और घरवाली ही घर बनाना जानती हैं। अब हम बालक नहीं रह गई है, जो बहला फुसला कर सारा माल दबा जाओगे।

अपनी मालिन की बात सुनकर माली बोला, भाग्यवान मैंने तुमसे कब बेईमानी की थी, जो झूठी तोहमत लगाकर अपने को ईमानदार साबित करना चाहती हो। इतनी बात सुन मालिन तड़ककर बोली हमारे ब्याह में जो मेरे मां बाप ने रुपया पैसा और जेवर दिया था, वह तुमने सब जुए और शराब में उड़ा दिया। जब हमें समझ होती तो तुम्हारी मीठी चुपड़ी बातों में आनकर नंगी न हो बैठती। मैं अब

अच्छी तरह जान गई हूं, तुम इस इनाम की रकम की भी वही गत करोगे। इतनी बात मालिन की सुन माली बोला, क्या रानी बाछल और राजा जेवर से क्या ये अगली पिछली बातें भी कहोगी। इस पर मालिन फिर तड़क कर बोली, कहूंगी नहीं तो क्या यूं ही छोड़ दूंगी। तुम्हारी पिछली बातें सुनकर ही तो, सारा माल तुमसे निकलवाकर मुझे दिलाया जायेगा।

अपनी मालिन की वार्ता सुनकर माली घबड़ा गया और सारा माल इनाम का मिला मालिन के सामने उलट कर कहने लगा। मैं तो तुमसे हंसी मजाक कर रहा था। तुम्हारा कहा ही ठीक है। घर की मालकिन तुम ही हो। मैंने बचपने क नादानी में गलत काम किये थे उनका मुझे खुद पश्चाताप है। इस पर मालिन मुस्करा कर बोली अगर मैं ही कुछ समझदार होती तो तुम्हारी मीठी चुपड़ी बातों में आनकर ये बरवाद न कर बैठती। चलो अब भगवान ने हमारी सुन ली। काफी माल आ गया है अब प्यार पूर्वक रहकर आनन्द से जिन्दगी काटेंगे। अपनी मालिन की प्यार भरी वार्ता सुनकर माली बोला बड़ी चलाक हो इनाम का सारा माल

कब्जे में करके अब मीठी चुपड़ी बातें करती हो। फिर अपने मन में विचारने लगा। सारी गलती मेरी है जो सारा इनाम का मिला माल इसके कब्जे में कर दिया। अब आगे जो इनाम मिलेगा उसकी हवा भी न लगने दूंगा।

अपने मन में निराश हो कहने लगा। अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत। चलो ये भी अच्छा ही हुआ अगर रानी बाछल व राजा जेवरसिंह के सामने ये फजीता करती तो मुझे डूब मरने के सिवा कोई चारा नहीं था। चलो बात तो न बिगड़ी। दुनिया में मुंह दिखाने को जगह तो रह गई। इस प्रकार अपने मन को तसल्ली दे, अपनी मालिन के साथ हंसी खुशी रहने लगा। अब थोड़ा हाल रानी बाछल का लिखते हैं, सो ध्यान पूर्वक सुनें।

माली को करके विदा, बाछल खुशी अपार
ननद छबीली को बुला सतिया काढ़े चार
सतिये काढ़े चार महलों में बजी है बधाई
सात सहेली मिल मंगल गावें सोभा न बरनी जाई
ढोलक बजे मंजीरे बाजें नाच होय पचरंगी।
मानो राजकुमार जन्मा

महलों में बजे सितार सारंगी ॥
पान मिठाई बटे खूब ही होय रही मनचाही
भर सिसकारी बजा हथेली छवीलदे हरसाई ॥
नेग दिये जब रानी बाछल फूली नहीं समाई ।
क्या छवि वरनू मैं महलन की
कविता जाए न गाई ॥

प्यारे मित्रो, रानी बाछल आज अति प्रसन्न है, और दुखी दरिद्र लोगों को खूब धन दौलत लुटा, मिठाई पकवान व पूड़ी कचौड़ी बटवा रही है । और मन ही मन प्रसन्न हो कह रही है । मैं अपने राजा जी के संग बाग नौलखा देखने जाऊंगी । और बाग का ब्याह कराकर भारी भन्डारा कराऊंगी । दिन छिपे शाम के वक्त दरबार बरखास्त कर राजा जेवरसिंह महल में पधारते हैं और रानी बाछल से कहते हैं, रानीजी, हमारे नौलखे बाग का माली, जो लाया फल फलूट मेवा की डाली । क्या वह हमें न चखाओगी । जैसे हमारे बाग में फल फूल आये हैं । भगवान वैसे ही तुम्हारी गोद हरी भरी करने की दया करेंगे । और महलों में किलकारियों की गूंज करने के लिए वीर बहादुर राजकुमार को भी भेजेंगे ।

दोहा–सुन सुत बातें रसभरी-गई नार शरमाय ।
लख लख सूरत बलम की रहे नैन सुखपाय ॥
रहे नैन सुख पाय न पलभर देरी है कीनी ।
डलिया उठा लाय पति आगे ही धर दीनी ॥
हाल जो कहूं सुनो हमारे सर के साईं ।
हमको भारी खुशी कहूं क्या बरनी न जाई ।
आडू आम अलूचे खिरनी धरे अगाड़ी ।
जब खाने को हाथ बढ़ाया बोली सतवन्ती नारी

दोहा-प्रीतम फल लिया हाथ में चाकू लिया निकार ।
हाथ पकड़ रानी कहे सुनो बलम भरतार ।
सुनो बलम भरतार न ये क्षत्री को भाए ।
कुवारे पेड़की कुवारी मेवा कुवारे फल ना खाए ।
कुवारे फल मत खाओ सुनो तुम छत्तर धारी ।
पहले करो बाग का ब्याह मानो सीख हमारी ॥
तभी फल लागे अच्छा जब खाए बच्चा बच्चा,
है बन्स चौहान हमारा
पहले बागका ब्याह रचे तब फल लगेगा अच्छा ।

प्यारे मित्रो, अपनी महारानी बाछल के कहने से राजा जेवर सिंह ने फल को टोकरी में ज्यों का त्यों रख दिया परन्तु फल खाने की इच्छा बनी ही रही । राजा जेवर सिंह अपनी रानी बाछल से कहने

लगे, फिर हमें जल्दी ही पंडित जी को बुलवा, बाग का ब्याह सुधवाना चाहिए। हमें धन दौलत की कोई चिन्ता नहीं है, चाहे कितना ही खर्च हो जाय। सात पुश्त की दौलत खजाने में भरी पड़ी है। तुम्हारे सुख के लिए धन दौलत का सदुपयोग करने में मैं पीछे नहीं रहूंगा। इतना सुनते ही रानी बाछल फूली न समायी। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। चटपट अपनी बांदी मूंगादे को बुला, राज पुरोहित व राज्य ज्योतिषी को लिवा लाने को कहा। बांदी रानी बाछल का हुक्म सुन तुरन्त ही चल पड़ी।

दोहा-छम छम कर बांदी चली तलवे लगी न धूल।
कोई घड़ी लगी हो रस्तेमें पहुंची पंडितके स्कूल।
पंडित के स्कूल पहुंच शीश चरणों में धर दीना।
कर पालागन प्रणाम, झुकाए दोनों नैना।
हाथ जोड़ मूंगा कहे, सुनो पंडित दीन दयाल।
मैं दासी रानी बाछल की कहूं खुलासा हाल ॥
कहूं खुलासा हाल काम अटका है कोई जरूरी।
पोथी पत्रा लो दबा बगल में मिले भारी मजदूरी
सुनो तुम पंडित ज्ञानी जी, कहो वेदोंकी बानीजी
होंय दिलद्दर दूर,
जो खुश हो जाय बाछल महरानी जी।

पंडित ने बांदी मूंगादे की बात सुन पल भर भी देर करना उचित नहीं समझा। झट पट पूजा अर्चना कर अपने माथे पर चंदन का तिलक लगाया और राम नामी दुपट्टा कंधे पर धर, पोथी पत्रा बगल में दबाया फिर गौरी सुत का ध्यान कर खड़ाऊं पहन बांदी के पीछे पीछे हो लिए।

छम छम कर बांदी चली धरती धरे न पांव।
राम राम पंडित जपे प्रभु करना खैर ॥

राजा रानी ने जब डियौढ़ी में मूंगादे बांदी व पंडित जी का बोल सुना तो झटपट राजा जेवर सिंह व रानी बाछल ने पंडित जी को अपने दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। बदले में पंडित जी ने आशीर्वाद दे कहा, खुशी रहो फूलो फलो। बांदी ने रानी बाछल का इशारा मिलते ही पंडित जी को मूंढ़े पर बिठलाया। तब पंडित जी बोले—हे राजन! सेवक को कैसे याद किया, बताने की कृपा करें।

पंडित जी के मुख की वाणी सुनकर राजा जेवर सिंह कहने लगे, पुरोहित जी महाराज, हमारी रानी जी का विचार है कि पहले नौलखे बाग का ब्याह करो तब उसका फल फलूट मेवा खाना। हमारे

बाग का माली जो लाया था फल फलूट की डाली। रानी जी ने उसके खाने में अड़चन पैदा कर डाली। कहने लगी बिना बाग का ब्याह किये कुंवारे बाग के फल खाना क्षत्री धर्म के लिए निषेध माना गया है। कृपा कर आप बतावें रानी जी की ये बुढ़िया पुराण की बातें कहां तक ठीक हैं। मेरी शंका निवारण कीजिए।

राजा जेवरसिंह की वार्ता सुनकर पंडित जी बोले, राजन और तो सब पुराणों के नाम मुझे याद हैं पर ये बुढ़िया पुराण आज ही आपके मुख से सुन रहा हूं। इस पर राजा जेवर सिंह बोले पुरोहित जी ये बहुत पुराने पुराण हैं जिन्हें आप लोग भूल बैठें हैं बुढ़िया पुराण, गड़बड़ पुराण आदि ये बहुत पुराने जमाने के पुराण हैं। पंडित जी बोले ठीक है ये सब पुराण कथा के योग न होने के कारण हमारे बुजुर्गों ने इन्हें निषेध मान लिया होगा। अब रही बाग के मुहूरत की बात सो पंचांग देख ज्योतिष द्वारा सब ठीक ठीक बतलाये देता हूं।

दोहा-गौरी सुत का ध्यान कर, पंडित चतुर सुजान।
बारह पोरवे गिन उंगली के,
स्वर नथुनों का करके ज्ञान।

स्वर नथुनों का कर ज्ञान पोथी पत्रे को खोला।
राहू चन्द्रमा का कर विचार वृहस्पति को तोला
दोहा-राजा जो सुनो बात हमारी ग्रह नहीं अनुकूल।
जो तुम जाओ बाग में सूख जांय फल फूल।
सूखे मेवा फल फूल राव,
तुम मानो बात हमारी जी।
जो न मानो तो पछताना होगा,
नाराज़ हैं कृष्ण मुरारीजी।
बात वेदों की पक्की सूखे बगिया नौ लक्खी।
खारा नीर हो जाय कुंये का
समझो बात ये पक्की।

अपने पुरोहित जी की बात सुनकर जेवर सिंह व रानी बाछल को बड़ा दुख हुआ और वे भारी बेचैन हो पंडित जी से बोले, गुरुदेव इसके पलट का उपाय भी क्या तुम्हारे चारों वेदों में से किसी में नहीं लिखा है। इतनी बात राजा जेवर सिंह की सुनकर पंडित जी भयभीत हो गये और अपने मन में कहने लगे, यह राजा का राजमहल है जिनकी सदा से उल्टी रीति होती है। किसी ने ठीक ही कहा है कि, राजा योगी अग्नि जल इनकी उल्टी रीति, इनसे बचकर चलिए थोड़ी पाले प्रीति। ऐसा मन में

विचार पंडित जी बोले, राजन, उपाय क्यों नहीं है। महारानी बाछल और आप दोनों प्राणी आंखों पर पट्टी बांध बाग में जावें। बाकी ब्याह, भोजन भन्डारे ज्यौनार व गाने बजाने नाच कूद, खेल तमाशों का इन्तजाम दूसरे लोग करें। आपको मेरी प्रार्थना स्वीकार हो तो आप बेशक ब्याह का इन्तजाम करवा सकते हैं। आपको ब्याह देखना निषेध है।

* श्री गोगा पुराण पन्द्रहवां अध्याय समाप्त *

सोलहवाँ अध्याय

सज्जनों, राजा जेवर सिंह व रानी बाछल को अपने पुरोहित की बात भा गई। पंडित जी ने भादों बदी नौमी का शुभ दिन बाग के ब्याह के लिए निश्चित किया। बाग के ब्याह की तैयारी बड़ी धूम धाम के साथ होने लगी। नाते रिश्तेदारों को नौते भेजे गये। गोती भाइयों पर सवार दौड़ाये। बाग में साले साढू की देख रेख में तम्बू तनवाये। दावत व भण्डारे का इन्तजाम करवाया। गाने बजाने व झूला झूलने का भी प्रबन्ध हुआ। नेवर सिंह व हरियाणे वाले साढू खजान्ची का काम कर रहे थे। जो नजर भेंट आती थी, ये दोनों लिख पढ़ कर संभाल कर

संगवा लेते थे। बाग में बड़ा भारी मेला सा लगा था। जग ज्यौनार हुई। ढोल मृदंग बजने से और दूसरे खेल तमाशे लगने से सारे नगर में धूम मच गई। राजा ने घोड़े पर सवार हो आंखों पर पट्टी बांध ली। रानी बाछलको भी आंखों पर पट्टी बंधवा सच्चे मोतियों के झालरदार डोले में बिठा नौलक्खे बाग को रवाना हुए और चन्द मिन्टों में बाग के दरवाजे पर पहुंच गये।

दोहा-राजा देखा आवता, लीली घोड़ी पर असवार।
दौड़ा माली बाग का करी न घड़ी भर अबार।
करी न घड़ी भर अबार बागमें पहुंचे राजा-रानी।
प्यारे जी डेरे तम्बू तन गए हुई प्रजा को हैरानी।

राजा को अपनी आंख पर रुमाल बांधने का क्या कारण है। रानी जी की आंख पर भी पट्टी बंधी है तो क्या दोनों की आंखें एक साथ ही दुखने को आई हैं। इससे जनता को बड़ा मलाल था। सब अपना अपना अन्दाज लगा रहे थे। सच्ची बात का किसी को कोई पता न था और न किसी को पूछने की जुर्रत थी न मजाल थी।

दोहा-ब्याह बाग का हो रहा नृप जेवर दे रहे दान।
मूंगा मोती हीरा पन्ना लूट रहे महमान॥

लूट रहे महमान राव के भरे खजाने थे भारी।
दोनों हाथ से दौलत लूटें भारी खुशी भिखारी।
प्यारे जी भारी खुशी भिखारी
लूट रहे हीरा पन्ना मोती।
आंखों पे पट्टी बंधी रावके क्या देखें बिन ज्योती ॥
राजा जेवर सिंह को गुस्सा आया,
रानी को बचन सुनाया।
कहूं क्या तुमसे महारानी,
फेंकूं पट्टी खोल मेरे जी में यही समानी ॥
दुनिया लूटे बाग बहार, मेरा कौन पाप बिलखाय।
घोड़े पर सैर करूंगा मेरे मनको और न भाय।
ना मानूं बात किसी की करूंगा अपने जी की।
कहूं क्या तुमसे रानी,
फल मेवे तो दूर न हमने पिया बाग का पानी।
ऐसे क्या कीने खोटे कर्म, न छोड़ा धर्म,
रात दिन पुन्न ही पुन्न किए हैं।
पूर्व जन्म में क्या हमी लोगों ने भारी कुकर्म किए हैं।
जो लिख दिया विधाता ने उसे कोई न मेटनहार।
ऐसे ब्याह करने को रानी मुझे लाखों बार धिक्कार।
मेरे बंधी पट्टी आंखों पर सुख लूट रहा संसार।
रानी जी जबसे बाग लगाया, एक दफा देखने न पाया

एक न मानूं बात किसी की करूंगा मन का चाहा।
करूंगा मन का चाहा झटपट घोड़ा मंगवाओ।
तुम डोले में बैठ हमारे पीछे पीछे आओ।
पाखन्डी बड़ा जमाना,
एक न मानूबात किसीकी चाहे कितनाही हो पछताना

अपने राजा जेवर सिंह की वार्ता सुनकर रानी बाछल के पैर तले की धरती निकल गई। बिचारी पतिव्रता नारी का धर्म है कि अपने पति की, आज्ञा का उल्लंघन न करे। वह तन-मन-धन से आज्ञा का पालन करे। वह हाथ जोड़कर राजा जेवर सिंह से कहने लगी। हे स्वामी आपकी बात बिल्कुल ठीक है मेरा मन भी अपने नौलखे बाग की सैर करने को बेचैन है। मैं भी आपके घोड़े के पीछे पीछे बाग की सैर करूंगी।

सज्जनों! राजा जेवरसिंह अपनी नीली घोड़ी पर सवार हो जाते हैं और रानी बाछल, डोले में सवार हो जाती है। आगे आगे राजा रानी, दायें-बायें बजीर उमराओ और सबसे आगे बाजे वाले। राजा रानी ने अपनी आंखों की पट्टी खोल दी और पेड़ पौधों पर अपनी नजर घुमाई है। बाग के पेड़ों पर राजा की नजर पड़ते ही पौधे मुरझा कर

सूख जाते है। और कुंए का जल भी मीठे के स्थान पर खारी हो जाता है। जब राजा रानी ने पेड़ पौधों को मुरझाते देखा तो बड़ा दुख माना सोचने लगे कर्म गति से कुछ बस नहीं चलता। हमारे कोई बेटा बेटी तो है नहीं, चलो बाग का व्याह करके ही मन की निकाल लें। सो हमारे अभाग्य से, पेड़ पौधे भी सूख कर मुर्झा गये। कुंए का मीठा पानी भी खारा हो गया। अब इस बाग में कौन आवेगा, कौन धर्मशाला में आकर ठहरेगा। ऐसे खारी पानी को कौन पियेगा, बिना पानी तो भजन पूजन भी दुर्लभ है। कोई दूर से भगवान को हाथ जोड़ माथा भले ही नवा जावे। मुसाफिर प्याऊ का पानी पीकर हमें कोसेगा। और पन्डित से भी लड़ेगा। राजा जेवरसिंह सोचते हैं, इस जिन्दगी से तो मौत ही भली। अब हमारा मरना हो भला है राजा जेवरसिंह म्यान में से कटार निकालकर अपनी गरदन में मारना चाहते हैं। रानी बाछल हैरान हो जाती है। वह एकदम डोले से निकलकर और आगे बढ़ चटपट अपने राजा के हाथ से कटार छीन लेती लेती है और हाथ जोड़कर कहती है। राजा जी पहले मुझे मारो पीछे आप मरना।

दोहा-क्यों प्रीतम नाहक मरो,

रहे न दिन एकसार।
नल राजा पर विपता पड़ी,
तजी दमयन्ती नार।
प्यारे जी तजी दयमन्ती नार
विपत थी भारी आई।
तेली घर हांका पाट,
खूटी गई थी हार चबाई।

विपता सदा नहीं रहा करती, अच्छे बुरे दिन धूप छाया के समान हैं। आज हमारे बुरे दिन हैं, तो कल को अच्छे भी आयेंगे। किसी कवि ने क्या अच्छा दोहा लिखा है।

दोहा-प्यारे खुश हो बैठिये देख दिनन के फेर।
जब नीके दिन आयेंगे, बनत न लागे देर॥
बनत न लागे देर पिया,
मैं कैसे तुम्हें समझाऊं।
गुरु गोरख आने वाल हैं,
मैं रात-दिन जिन्हें मनाऊं॥

राजा जी अब मेरा कहा मान कर महल को चलो। मेरा भी गुरु गोरख की जोत बालने का वक्त हो आया है। इसलिए अब यहां देर करना ठीक नहीं। इस प्रकार चतुर रानी बाछल राजा

जेवरसिंह को समझा बुझा कर महलों को लौटा लाई और अपने प्रीतम को पंचरंग पलंग बिछा कर आराम करने को कह गई और आप गुरु गोरख नाथ की जोत बालने व आरती करने में लग गई।

* श्री गोगा पुराण सोलहवां भाग समाप्त *

सत्रहवाँ अध्याय

प्यारे मित्रों, अब हम यहां दो किस्से पतिब्रता नारियों के देते हैं। जिनके कारण हमारे देश का संगठन कायम था। जब से एक संगठन बिगड़ा और फूट ने डेरा डाला तभी से हमारा पतन हुआ। हमारे देश में एक भक्त रविदास जी हुए हैं जो जाति के चमार थे। और भगवान की भक्ति पूजा कर, जूतों की मरम्मत करने का काम अपने ग्राम में ही करते थे। जो आना दो आना रोज कमाते थे उसी में से कुछ धर्म पुन्य के लिए बचाकर बाकी में अपनी गुजर करते थे। वह दोनों पति-पत्नी प्रेम पूर्वक ईमानदारी के साथ अपने दिन व्यतीत करते थे। द्वेष भावना करना जानते ही नहीं थे।

सस्ता जमाना था। उन्हीं के ग्राम में होकर एक ब्राह्मण देवता नित्य प्रति गंगा स्नान को जाया

करते थे। और अपना भजन पूजन करके वापिस भी उधर से होकर आया करते थे। एक दिन जब पंडित जी गंगा स्नान करने जा रहे थे। तब भक्त रविदास जी ने पंडित जी को हाथ जोड़कर प्रणाम करी और पुड़िया परशादी की देकर, पंडित जी से प्रार्थनापूर्वक बोले। गुरुदेव आप मेरी ये परशादी गंगा जी को भेंट कर देना। पंडित जी ने बेमन से मुंह बिगाड़ कर रविदास भक्त की परशादी की पुड़िया लेकर अपने पल्ले में बांध ली। और नीच जाति की बेगार समझ कर, उन्होंने अपने मन को दुखा कर व्यर्थही कुढ़मुढ़ाते, गंगा घाटपर पहुंचकर स्नान ध्यान किया। और भजन पूजन कर नित्य की भांति फूल बताशे चढ़ा, रोली चावल के छींटे मार चल पड़े।

जब वह लगभग एक फर्लांग पहुंचे होंगे, तब उन्हें ध्यान आया कि रविदास भक्त की परशादी तो मैं गंगा जी में चढ़ाना भूल ही गया। एक दफा तो उनके जी में आया कि इस परशादी पुड़िया को यहीं फेंक दूं। परन्तु पाप का ख्याल और गोगा जी के नाराज होने के डर से, बिचारे झींकते झांकते फिर दुबारा गंगा जी जा पहुंचे। और बोले हे गंगे माई रास्ते में एक चमार रविदास भक्त जूतों की मरम्मत

करता है। ये परशादी उसकी है, जो मैं चढ़ाने से भूल गया था सो आप ग्रहण करें।

इतना सुनते ही गंगा माई ने, जल के भीतर से अपना हाथ निकालकर परशादी ग्रहण की। गंगा माई का जल के भीतर से सुनहरे जेवरों से लदा हाथ देखकर, बड़े ताज्जुब के साथ पंडितजी गंगा माई से प्रार्थना के स्वर में बोले। हे गंगा माई मैं जाति का ब्राह्मण, बारह वर्ष मुझे गंगा नहाते हो गये। तुमने मेरी परशादी कभी हाथ पसार कर नहीं ली। उस चमार में क्या खूबी है जो उसकी परशादी आपने हाथ पसार कर ली। गंगा माई ने जल के भीतर से उत्तर दिया तुम अपनी बात का उत्तर उस भक्त से ही पूछ लेना। वह तुम्हारी शंका का समाधान कर देगा। इतना कह गंगा माता ने जल के भीतर ही अपना परशादी वाला हाथ कर लिया और अन्तरध्यान हो गई। ब्राह्मण देवता बड़े हैरान हुए ताज्जुब करते हुए राम नाम जपते भक्त जी के पास कुछ देर के बाद जा पहुंचे। और रविदास भक्त को आज की सम्पूर्ण घटना और जो गंगा माता के साथ जो वार्तालाप हुआ ब्यौरेवार सुनाया तथा हाथ पसार कर परशादी लेने का कारण जानना चाहा। तो वे

कहकर अन्तर्ध्यान हो गई कि तुम अपनी शंका का समाधान रविदास भक्त से ही कर लेना सो भक्त जी आप, मेरी शंका का समाधान करें। कि मैं जाति का ब्राह्मण, बारह वर्ष मुझे नित्य नियम से गंगा नहाते बीत गये। मेरी परशादी गंगा जी ने, कभी हाथ पसार कर नहीं ली। तुम में ऐसी क्या खूबी है, जो तुम्हारी परशादी गंगा माई ने हाथ पसार कर ग्रहण की। इस पर रविदास भक्त मुस्कराकर बोले! अगर आप शंका समाधान करना चाहते हैं तो मेरे घर चलने की कृपा करो। तभी आपकी शंका का समाधान हो सकता है।

ये कहकर आगे आगे भक्त रविदास और पीछे पीछे ब्राह्मण देवता। थोड़ी दूर चलने पर रविदास भक्त के घर के दरवाजे पर जा पहुंचे। वहीं से भक्त जी ने आवाज लगाई, ओ भक्तानी वह जो कल हमारे यहां घी आया है उसका मलसा (हंडिया) उठा लाओ। भक्तानी ने अपने पति की आवाज सुनकर घी का मलसा तुरन्त लेकर दरवाजे पर आन पहुंची। जब भक्त जी ने देखा कि भक्तानी घी लेकर आन पहुंची तो उससे बोले इसे सड़क पर पटककर फोड़ दो। उस पतिव्रता ने अपने

पति की आज्ञानुसार बिना आगा पीछा सोचे, घी का मलसा सड़क पर पटक दिया। उसने अपने पति की आज्ञा में ही अपनी भलाई समझी। जो नारियां पति आज्ञा का उलंघन करना नहीं जानतीं। वही पति-व्रता कहलाती हैं। परन्तु पंडित जी घी का सत्यानाश होते देख हैरान तो काफी हुए मगर इस तमाशे का मतलब वह नहीं जान पाये।

पंडित जी को हैरान देखकर रविदास भक्त बोले गुरुदेव अब मैं आपके साथ आपके घर चलता हूं, वहीं आपकी शंका का समाधान होगा। पंडित जी बोले कोई हर्ज नहीं वहीं सही। मैं तो घर चल ही रहा हूं। आज वैसे भी कुछ अधिक देर हो गई है। सज्जनो! आगे आगे पंडित जी, और पीछे पीछे रविदास भक्त। चन्द घड़ी पीछे पंडितजी का भी मकान आ गया। तब वह रविदास भक्त से बोले, भक्तजी यह मेरा घर है तब रविदास भक्त वोले अब आप अपनी पंडितानी जी से कहो, मेरे वास्ते एक पतीली पानी गर्म कर दो। भक्त रविदास के कहे अनुसार पंडित जी ने विनय पूर्वक अपनी पंडतानी को आवाज देकर कहा। मेरे वास्ते एक पतीली पानी गर्म कर दो। इतनी बात पंडितजी को सुनकर

पंडितानी गरजकर बोली, क्या तुम्हारे हाथ पैर टूट गए हैं। खुद क्यों नहीं पानी गरम कर लेते। ऐसा हुक्म चला रहे हैं जैसे मेरे लिए बड़ी सारी दौलत कमाकर लाए हो।

पंडितानी की बात सुनकर भक्त रविदास जी बोले, गुरुदेव! अब आप कारण समझ लो जिसके घर वाले बस में होते हैं उन्हीं के देवता भी बस में होते हैं। पहले अपने घर वालों को बस में करो, फिर देवता तो खुद व खुद ही बस में हो जायेंगे। मेरी भक्तानी ने मेरे कहने से घी का मलसा फोड़ दिया कि मेरे पति की आज्ञा है, इसलिए मुझे माननी चाहिए। आपकी पंडितानी ने एक पतीली पानी भी गरम करके न दिया। ऊपर से दस खरी खोटी सुनाई। इसी फूट के कारण देवता लोग भारत से दूर चले गए। किसी ने ठीक ही कहा है, जहां सुमत वहां सम्पति भारी, जहां कुमति वहां लोग भिकारी।

लक्ष्मी जी कहां वास करती हैं।

एक सेठ करोड़ी मल थे। उनके दो लड़के, एक लड़की और लड़कों की दोनों बहुएं और एक सेठानी जी व खुद कुल सात प्राणी थे। जब तक लड़कों के

ब्याह नहीं हुए थे । सेठानी अपने परिवार को देख, फूली नहीं समाती थी । अपने पति सेठ करोड़ी मल की सेवा खूब जी जान से करती थी । लड़के लड़की भी मात पिता की आज्ञा के आधीन चलते थे । दौलत रात दिन सवाई होती चली जाती थी । खूब व्यौपार उन्नती पर था, परन्तु दोनों लड़कों के ब्याह हो जाने पर, सेठानी जी का स्वभाव बदल गया । वह अपनी दोनों बहुओं को बिना कसूर भला बुरा कहती और लड़ती झगड़ती रहती । साथ में लाड़ली बेटी भी अपनी माता का ही पाठ लेती, और भावजों को कहनी अनकहनी सुनाती । दोनों भाइयों से झूठी सच्ची चुगली भावजों की करके, उनके आपस में मनमुटाव करवा देती ।

जो घर स्वर्ग के समान था । आपस की कलह के कारण नरक के समान बन गया था । एक दिन अर्धरात्रि के बाद सेठ करोड़ी मल को स्वप्न में लक्ष्मी जी ने कहा, सेठ करोड़ी मल बहुत दिन मुझे तुम्हारे घर रहते हो गए । अब कहीं अन्त वास करने का इरादा है । इसलिए जो तुम मुझसे मांगना चाहो वरदान मांग लो । सेठ करोड़ीमल बोले माता जी आज तो मैं कुछ मांगता नहीं, कल घरवालों से

परामर्श कर जरूर मांग लूंगा । लक्ष्मी जी तथास्तु कहकर अन्तर्ध्यान हो गईं ।

करोड़ी मल का स्वप्न टूट गया, उनकी आंखें खुल गईं । वह हरे राम हरे कृष्ण कहकर उठ बैठे । पौ फटते ही ब्रह्ममहूर्त में उठ नित्य कर्म से फारिग हो, प्रभू का ध्यान कर सब घर वालों को बुला, अपने स्वप्न का हाल व्यौरे वार सुनाया । जो वार्तालाप लक्ष्मी जी के साथ स्वप्न में हुआ था । कहने लगे अब आप सब लोग परामर्श दो मुझे क्या मांगना चाहिए । अपने पति के मुख से स्वप्न का हाल सुनकर सेठानी बोली, मेरे लिए नौलखा हार मांगलो । बिना हार के मेरा गला सूना सूना लगता है । बेटी ने कहा पिताजी तुम एक नौलखा बाग मांगलो जिससे हम सब लोग खूब फल फलूट खाया करेंगे । बेटे बोले पिताजी एक हाथी मांग लो । हाथी हो जाने से हमारी इज्जत काफी बढ़ जाएगी । अन्त में सेठजी ने अपनी बहुओं से पूछा, तुम लोग भी बताओ क्या मांगना चाहिए । बड़ी बहू तो गुस्से के कारण कुछ बोली नहीं, पर छोटी बहू अपने ससुर को प्रणाम कर बोली । पिताजी जब लक्ष्मी जी जा ही रही हैं तो ये सब चीजें भी चली जायेंगी, ये

टिकने वाली चीजें नहीं हैं। नाशवान वस्तुयें टिका नहीं करतीं, मेरी राय मानो तो आप इनसे ये मांगिए कि हमारे कुटुम्ब में अगर प्रेम बना रहेगा तो बाकी के दिन सरलता से कट जायेंगे। और रूखा सूखा खाने को मिलेगा, मिल बाटकर खावेंगे और प्रभू के गुन गावेंगे।

सेठ को छोटी बहू की बात पसन्द आगई। अगले दिन रात्रि के समय सेठ जी के स्वप्न में फिर लक्ष्मी जी ने दर्शन दिए। सेठ ने प्रार्थना की माता जी आप जाना ही चाहती हैं तो प्रसन्नता पूर्वक जायें। परन्तु मुझे ये वरदान देने की कृपा करें कि हमारे कुटुम्ब में परस्पर प्रेम बना रहे और सब आपस में प्यार पूर्वक रहकर प्रभू गुन गायें। लक्ष्मी जी बोलीं सेठ तुमने ऐसा वरदान मांगा है जिसमें मैं जकड़ कर बंध गयी। जिस परिवार में परस्पर प्रीति रहती है, मैं वहां से जा ही कैसे सकती हूं। मेरा वास वहीं होता है, जहां बड़ों का सत्कार होता है छोटों के साथ सभ्यता पूर्वक बात की जाती है, जहां कड़वी वार्ता द्वारा कलेश नहीं होता और कोई नुकसान हो जाने पर भी लोग चुप रहते हैं और शुभकर्मों में ही लग कर जीवन व्यतीत करते हैं तथा क्रोध (गुस्सा) नहीं

करते हैं। मेरा उन्हीं के घर वास होता है। मैं भी वहीं खुश हो रहती हूं।

* श्री गोगा पुराण सत्रहवां अध्याय समाप्त *

अठारहवाँ अध्याय

प्यारे सज्जनो, रानी बाछल अपने पति राजा जेवर सिंह को समझा बुझा धीरज बंधा, महलों में ले तो आई परन्तु राजा जेवर सिंह का जी खट्टा हो चुका था। उन्हें ये दुनियां अच्छी नहीं लग रही थी। सोचते थे क्या इसी का नाम जोवन है जो हवन करते हाथ जलते हैं, क्या ये ही राज सुख है। मुझ राजा से तो वन के सन्त महन्त योगी सन्यासी लाखों गुना अच्छे हैं। न आए का गम न गए की खुशी, अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना। जब जी चाहा भगवंत भजन किया जब जी चाहा कुंडी सोटा ले भंग घोटनी शुरू कर दी। तभी तो उनकी देही सांड़ों जैसी होती है। एक मैं हूं राजा होते हुए भी चिन्ता फिकर के कारण आंखें मगज में धंस गई हैं। मुंह पीला पड़ गया है, गाल पिचक गए हैं। खाना पीना जहर सा लगता है। रात को नींद नहीं आती है। सोना हराम हो गया है। इससे तो साधू बन कर

वन में रहना ही ठीक है।

फिर सोचने लगे रानी बाछल पर क्या बीतेगी, अपने भाई नेवर सिंह को राज का भार सौंपता हूं तो रानी बाछल तो रो रोकर ही अपनी जान दे देगी इसका रानीपना मिट्टी में मिल जाएगा। कोई धीरज बंधाने वाला भी नहीं दीखता, बांदी से भी बुरी इसकी दशा हो जायेगी क्योंकि रानी बाछल की बहन काछल बड़ी धूर्त व कपटी स्वभाव की औरत है। वह बाछल रानी के साथ बड़ी बहन की तरह बरताव नहीं करती मुझे रानी बाछल के साथ अच्छा बरताव होगा इसकी जरा भी आशा नहीं है। एक साली भगवान रामकी भी थीं देवी उरमिला जिन्होंने अपने जीजा के वन-वास के कारण दुखित हो अपने पति को अपनी बड़ी बहन व अपने बड़े जीजा की सेवा के लिए चौदह वर्ष को वन में पठा दिया था। अपने स्वामी लक्षमण का विरह दुख हंसी खुशी से झेला था और एक ये मेरी साली काछल है जो हम लोगों को फूटी आंख से भी खाता पीता नहीं देखना चाहती। हिन्दू जाति का कितना पतन हो गया।

इससे तो यही मुनासिब है कि रानी बाछल के सिर पर ताज रखा जाय और सारा अख्तियार राज

काज व फौज पलटन का रानी बाछल को ही सौंप देना चाहिए। रानी बाछल पतिव्रता नारी, दयालु स्वभाव तथा मुन्शिफ मिजाज है और राज चलाने के काबिल पढ़ी लिखी भी है। तीर तमन्चा तलवार चलाने में भी काफी चतुर है। चेहरे पर भी वीरता झलकती दिखाई देती है और वह दुश्मन का मुकाबला करने में भी काफी तेज व चतुर है। दुष्टों के संग रियायत ठीक नहीं है। कवि का कहा सच ही है-

दोहा-नीच न छोड़े नीचता कोटिन करो उपाय।
नाग जहर ही उगलता कितना ही दूध पिलाय।

सज्जनो, राजा जेवर सिंह को जरा भी नींद नहीं आई। वह पलके पर लेटे लेटे रात भर ये ही विचार करते रहे। दिन निकल आया, रात बीत गई। प्रभु का स्मरण कर सैया का त्याग किया और नित्य कर्म से फारिग हो भगवान का भजन करने लगे। इधर रानी बाछल ने स्नान ध्यान से फारिग हो अपने पति को शीश झुका, गोरखनाथ की जोत जला फारिग हो गई और राजा जेवर सिंह के चरणों की धूल अपने माथे पर लगाकर अपने पति से बोली, अब आप की तबियत का क्या हाल चाल है। आप का चेहरा तो अब भी उदास है, रात को नींद आई था

नहीं। अब चिन्ता छोड़ो, राम राम कहो और नाश्ता खा पी कर दरबार जाइये। गुरु गोरखनाथ जरूर कृपा करेंगे और जो भी दुख हमें है उसे जरूर दूर करेंगे। राजा रानी के बचन सुन कर बोले रानी मैं तुमसे अपने मन की बात कहना चाहता हूं मुझे पूर्ण आशा है तुम मेरे इरादे में विघ्न न डालोगी। पति-ब्रता नारी कष्ट सहकर भी अपने पति के वचनों का मन वचन कर्म से पालन करती है।

दोहा-रानी जी मैं क्या कहूं, तुमसी त्रिया बांझ।
नीच ऊंच सब बोली मारे सुबह चैन न सांझ।
सुबह चैन न सांझ रानी जी बिना पुत्र जग सूना।
बोली गोली सी लगती है और होय गम दूना।
राज पाट को छोड़ बनूं साधू सन्यासी।
जपूं प्रभु का नाम छूट जाये चौरासी॥
लाख कहो रानी जी हम एक न माने।
वृथा जिद नहीं ठीक हमें दुख दिया विधना ने।

जवाब रानी बाछल का

राजा जी मत हो दुखी ये ही जगकी रीति।
बुरे वक्त में गैरहो, अपने करें न प्रीति॥
करे न अपने प्रीत ये जगत बड़ा खुद गरजी।
अपना दूजा ब्याह करो अब यही हमारी मरजी।

सौत जने सन्तान मैं हंस हंस गोद खिलाऊं।
बच्चे को कलेजे से चिपटा मैं सबकी टहल बजाऊं॥

राजा जेवर का

दूजी शादी न करूं, रानी मति मारी करतार।
शादी दूजी नृप उत्तन पाद की,
बालक ध्रुव दिए निकार।
ध्रुव दिए निकार नार दूजी रानी ने।
खाय विधाता के धक्के ध्रुव बन को चल दीने।
सीख माता की मान
भेष जोगी का कर लीना।
नारद मुनि मिले बन बीच
ध्रुव को चेला हैं कीना।
आत्म ज्ञान कर जब मिला, शरण प्रभू की लीनी
रात दिन फेरी माला है,
हिला सिंहासन क्षीर सिन्धु में
तब भगा द्वारका वाला है,
ध्रुव को दर्शन दीना हैं अमर तत्व का।
ऊंचा दरजा खास नमूना है,
बड़ा न कोई सितारा है।

सो हे महारानी जी ध्रुव बन में नहीं जाते। तो भगवान के दर्शन कैसे करते। सौत तो चून की

भी बुरी होती है। दूसरे ब्याह से आज तक कोई सुखी नहीं हुआ है। मुझे ऐसा संतान सुख नहीं चाहिये। मेरा तो अब पक्का विचार साधु बनकर वन में भजन करने का है, और तुम्हारे शीश पर राज मुकट धरने का है। मुझे तुमसे पूरी आशा है छोटा हो या बड़ा सबसे न्याय पूर्वक बरताव करोगी। तुम्हारी पीठ हल्की नहीं है। तुम्हारी मदद के वास्ते मेरे बूढे पिताजी और भाई नेवर सिंह व मेरी बहन छबीलदे और तुम्हारी बहन काछल है। परन्तु अपनी बहन काछल से होशियार रहना वह तन की उजली और मन की काली है। ये लो खजाने की चाबियां और ये राज्य अंगूठी। और ये रहा आपके राजरानी के खुद मुखतारी का इकरारनामा। जिस घर पंचों के मन्त्री व खजान्चो के दस्तखत हैं सो अभी तुम्हारे सामने बुलाकर इकरार कराये देता हूं।

अपने पति की वार्ता सुनकर रानी बाछल बुरी तरह घबराई। और हाथ जोड़ शीश नवा कर बोली हे प्राणनाथ क्या इस तरह किसी ने भरा भराया घर छोड़ा है। जो आप मुझ दुखिया नार के कन्धे पर राजभार छोड़ कर वन को जाना चाहते हो। क्या

घर पर रहकर रामभजन करने को कोई आपसे मना करता है। क्या आपके पिताजी घर में बैठकर राम भजन नहीं करते है। हम उन्हें क्या असुविधा पहुंचाते हैं। अगर मेरी गोदी सूनी न होती, तो भी सबर कर लेती। ऐसी हालत में तो नगरी के सब लोग लुगाई कर्महीन, कमबख्त ही कहेंगे। मुझे इस तरह कौन जीने देगा। नन्द छबीली व सासृ रामकौर जी दोनों ही बहुत भली हैं, परन्तु उनकी सीधी बात भी मेरा जिगर छील कर धर देगी इसलिए मेरा कहा मानकर महल के एक हिस्से में अपने सन्यासीपन का सब ामान धरा लो। और खूब जी लगाकर तन-मन से रात-दिन पूजा करो। जैसे आपके पिताजी करते हैं, भोजन दोनों समय आपकी मन मरज़ी का आपके पास पहुंच जाया करेगा।

रानी बाछल ने अपने पति राजा जेवर सिंह के, पैर पकड़कर रो रोकर काफी प्रार्थना अर्चना की। परन्तु राजा जेवर सिंह को वैराग हो जाने के कारण उनका मन नहीं पसीजा। वह रानी बाछल से कहने लगे, महारानी जी, तुम कैसी बातें करती हो। अपने मन को पक्का करके वीर धीर बनो, मोह ममता का त्यागन करो एक मैं ही क्या जाने कितनों ने अधीर

होकर घरों को त्यागा है। महाराजा भरथरी, राजा गोपीचन्द, भक्त पूरन मल और महात्मा बुद्ध देव वगैरह अनगिनत भूपों ने, दुखी हो राज्य का त्यागन किया है। अगर घर में ही शांती का वास होता तो, इतने लोग साधू सन्यासी बन वन में क्यों रहते। इन्हीं सन्तों की तरह मुझे भी घर काटने को दौड़ता है। यहां मैं अति शीघ्र मृत्यु के मुख में समा जाऊंगा। तब भी तो तुम्हें राजकाज संभालना पड़ेगा। मुझे मेरे जी की करके कुछ दिन जीने दो। मेरी शांती में रुकावट पैदा न मत करो।

अपने पति राजा जंवर सिंह की वार्ता सुनकर रानी बाछल ने अच्छी तरह समझ लिया, अब ये नही मानने वाले हैं। इन्हें वैराग हो गया है, इन्हें जब तक शान्ती से रहना न मिलेगा तब तक इनका मन अशांत रहेगा। शांत होने पर खुद घर लौट आवेंगे। परन्तु मन शांत हो जाने का वचन भरवा लेना चाहिये। इस प्रकार रानी बाछल अपने मन में, सोच विचार कर आंखों में आंसू भरकर हाथ जोड कर बोली। हे प्राणनाथ, अब नहीं मानते तो, जब आपका मन शांत हो जावे, तब सीधे आनकर मुझ अभागिन को शांती प्रदान करने की कृपा करना।

मुझे गुरु गोरखनाथ की जोत बालते, काफी अरसा हो गया है। वह मय जमात अपने चौदह सौ चेलों के साथ शीघ्र ही अपने नगर में पधारने वाले हैं ऐसे में, आपका होना बहुत जरूरी है वरना गुरु गोरखनाथ के वरदान का कोई फायदा नहीं होगा। आशा है आप मेरा मतलब अच्छी तरह समझ गये होंगे। न समझे हो तो अच्छी तरह समझ लो।

सत्यवान व सती सावित्री की कथा कौन नहीं जानता। आखिरी वरदान में सावित्री ने धर्मराज से ये ही वरदान मांगा था। मेरे धर्म परायण सौ पुत्र हों। धर्मराज की मत मारी गई और उन्होंने सौ पुत्रों का वरदान देकर (तथास्तु) कहकर चलने लगे तभी सती सावित्री ने शेरनी की तरह गरज कर, और ऊपर से अपने दोनों हाथ जोड़कर धर्मराज का रास्ता रोक लिया। और आंखें लाल पीली करके बोली हे धर्मराज, क्या कहने तुम्हारे वरदान के। छोड़ो मेरे पति को, इन्हें कहां लेकर चले। जरा श्रीमान सोचें इनके बिना मेरे सौ धर्म पुत्र कैसे पैदा होंगे। धर्मराज की आंखें खुल गई। सती सावित्री के पतिव्रत का तेज उनसे झेला नहीं गया। बात सच्ची थी धर्मराज हार मान गये और अपने नैन नीचे करके बोले।

धन्य हो भारतवर्ष की पतिव्रता देवी तुम जीत गई और मैं हार गया। अपने सौ पुत्रों के वरदान के साथ साथ अपने पति को भी ले और चार सौ साल की इनकी आयु होने का वरदान भी ले।

अब तो आप समझ गये होंगे कि दिन फिरते देरी नहीं लगती। अब आप अपने वन जाने की तैयारी जब चाहें तब कर सकते हैं। अब आपको कुछ समझाना बाकी नहीं रह गया है। प्यारे बन्धुओं, रानी बाछल की बात सुनकर राजा जेवरसिंह को बड़ी शांती मिली। थोड़ी देर के वास्ते उनकी ये ही इच्छा हो गई, कि घर पर रहकर अपना काम ही देखना चाहिए। परन्तु तीर हाथ से छूट चुका था और साथ ही क्षत्री का कौल, और बढे बूढ़ों की इज्जत का सवाल आन खड़ा हो गया। भगवान राम अपनी माता के कहने से चौदह वर्षों को वन में जा सकते हैं तो क्या मैं कुछ दिनों के लिए घर नहीं छोड़ सकता। मुझे अपना विचार अब नहीं बदलना चाहिए। जबकि रानी बाछल को भी इजाजत मिल चुकी है। इसलिए वन जाने में ही बहतरी है। मैं हमेशा को थोड़े ही वन जा रहा हूं। न साल दो साल के लिए जब जी उकता जायेगा तभी वापिस आ

जाऊंगा।

अपने मन को इस प्रकार धीरज दे, राजा जेवर सिंह ने वन जाने की तैयारी शुरू कर दी और वस्ती के सेठ, साहूकारों तथा दरबारियों, मन्त्री, फौजदार वगैरह को बुलवाकर, सब के सामने राज मुकट रानी बाछल के शीश पर धर दिया। और वसीयत नामे पर जुम्मेदार पन्च लोगों के दस्तखत करवाकर आज्ञा दी कि आज से राज की मालिक महारानी बाछल हैं। आज से हर मामले में इनकी ही मोहर व दस्तखत काम देंगे। राजा जेवर अपनी जनता को धीरज दे जोगिया वस्त्र पहन चिमटा झोली उठा जब चलने लगे तो सब की आंखें आंसुओं से तर थीं। परन्तु वह शिव शिव रटते जब चल पड़े तब रानी बाछल ने आगे बढ़कर दोनों हाथ जोड़ अपने पती के चरण छूकर विनती की।

दोहा--विछुरन भारी दुख भयो, सुखी नहीं मन मोर।
शीघ्र नाथ दर्शन दियो, चन्द्र बिन दुखी चकोर॥

प्यारे बन्धुओ ! राजा जेवरसिंह शहर को सब जनता व प्राण प्यारी रानी बाछल तथा सकल दरबारियों को रोता बिलखता छोड़, वन को सिधारे। उनके पीछे पीछे नगर निवासी भी चल पड़े। जिन्हें

राजा जेवरसिंह ने संन्यासी भेष में हाथ जोड़कर, बड़ी मुश्किल से लौटाया। नगर निवासी आंखों से आंसू बहाते हुए, अपने अपने घरों को लौट पड़े। अब हमें महारानी बाछल की सुध लेनी चाहिए। वह विचारी, कर्मों की मारी अपने पति के वन जाने का भारो दुख न झेल सकी। वह मूछित ही चारों खाने चित्त कलाबाजी खाकर गिर पड़ी। महल की सारी बांदी दासी दौड़ पड़ीं कि हमारी महारानी को क्या हुआ। रानी जी बेहोश हो गिर गई, इन्हें दौड़ा पड़ गया दीखे है। हे भगवान हम लोग क्या करें, रानी जी अब भी बेहोश पड़ी हैं। कोई दौड़ भाग कर, लख लखा उठाकर सुंघा रही है। कोई हिना इतर की शीशी, बहन काछल, नन्द छबीलदे व सास रामकौर ये तीनों दहाड़ मार मारकर रोने लगीं। राजा उम्मरसिंह व नेवरसिंह भी अधीर हो रहे थे।

काफी देर पीछे काफी उपचार करने पर रानी बाछल की मूर्छा टूटी। और आंखें खोलने पर सारे रनिवास को अपने सामने खड़ा देखकर धीरज धर कर बोली। आप लोगों को मेरे मूछित हो जाने से काफी परेशानी हुई। आप लोग मुझे आशीर्वाद दें, मैं धर्म पूर्वक सब कठिनाइयां झेलते हुए अपना जीवन

आप लोगों की सेवा में व्यतीत करूं। सज्जनो, महारानी बाछल सब को धीरं बंधा, गुरु गोरखनाथ की जोत बालने में लग गई। अब हमें राजा जेवरसिंह का हाल जानना चाहिए।

* श्री गोगा पुराण अठारहवां भाग समाप्त *

उन्नीसवां अध्याय

प्यारे मित्रो ! राजा जेवरसिंह सारी नगरी को रोता बिलखता छोड़ शिव शिव रटते दिन रात चलते रहे। अगले दिन वनखन्ड के बीच जा पहुंचे। तो जंगल ही जंगल दिखाई दिया। उन्हें वहां कहीं पानी दूर तक दिखाई नहीं दिया। प्यास के मारे बड़े परेशान थे। सर पर भगवान सूर्यदेव के आने का भय भी कम नहीं था। वह सोचने लगे, ऐसी हालत में क्या करना चाहिए। पीछे लौटने को उनका क्षत्री धर्म रोड़ा बना हुआ था। इसलिए उन्होंने शिव शिव रटते हुए, आगे बढ़ना ही मुनासिब समझा। वह लगभग एक घन्टे मुंह उठाये नाक की सीध में चलते ही रहे। तब क्या देखते हैं कि एक जल का छोटा सा सरोवर है। उसी के निकट एक महात्मा जी की कुटिया है। महात्मा जी की उम्र अस्सी नब्बे साल

के लगभग होगी। जो भगवान के भजन पूजन में लगे हुए थे। राजा जेवर सिंह ने महात्मा जी की कुटिया के पास पहुंचकर, उनके दोनों चरण पकड़कर प्रणाम किया। महात्मा जी ने भी प्रणाम का उत्तर प्रणाम में ही दिया। क्योंकि राजा जेवरसिंह जोगिया कपड़े पहने सन्त के ही बाने में थे।

राजा जेवरसिंह बोले महात्मा जी मैं ददरेड़ा नगर का राजा जेवरसिंह हूं और महान दुखी होकर घरबार तज वन में आपकी शरण में आया हूं। कृपया आप मुझे अपना शिष्य बना उपदेश देने की दया करें। जिससे मेरे पापों का बन्धन कटे। महात्मा जी बोले राजा जेवर सिंह तुम दुखी तो बहुत ही ज्यादा हो पर मेरे पास क्या धरा है जो तुम्हें शिष्य बनाकर उपदेश करूं। इसलिए मेरी राय है तुम नित्य कर्म से फारिग होकर स्नान ध्यान कर कुछ फल फूल का सेवन कर अपने घर को वापस चले जाओ। सन्त का जीवन खांडे की धारा है।

महात्मा जी की बात सुनकर राजा जेवरसिंह बोले। गुरुदेव, क्षत्री लोग खान्डे की धारा से नहीं डरते। आप मेरी परीक्षा लेकर देख लें, आप मुझे अधिकारी समझें तभी मुझे अपना शिष्य बनाने की

कृपा करें। मुझे पूरी आशा है कि मैं परीक्षा में फेल नहीं होऊंगा। राजा जेवर सिंह के वचन सुनकर महात्मा ने दया कर राजा जेवरसिंह से कहा। पहले कुछ दिन तो तुम हमारे पास रहकर, अपनी वृतियों को अपने वश में करो। जब मैं मुनासिब समझूंगा तुम्हें दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाऊंगा। अभी तो तुम सिर्फ कहने के लिए ही मेरे शिष्य और मैं तुम्हारा गुरू हूं। अब जाकर नित्य कर्म से फारिग हो, पूजा अर्चना से निबट कर फल फूलों का सेवन कर, मेरे पास बैठो तब मैं तुम्हें उपदेश सुनाऊंगा।

राजा जेवरसिह ने महात्मा की आज्ञानुसार, नित्य कर्मों से निबट कर परमात्मा का भजन किया, फिर महात्मा जी के साथ मधुर फलों का नाश्ता किया जिसे सेवन कर राजा जेवरसिंह की आत्मा निरमल हो गई। महात्मा जी पहले ही भगवान को भोग लगाकर आचमन ले चुके थे। अब महात्मा जी ने राजा जेवर सिंह अपने शिष्य को आसन पर अराम करने को कहा और आप भी चटाई बिछा पैर फैलाकर, शिवजी महाराज को ध्यान धर खुर्राटे भरने लगे। राजा जेवरसिंह को भी

खूब जोर की नींद आई, जिससे उनकी सारी थकान दूर हो गई। दोनों गुरू चेले को चार बजे तक आराम से सुख की नींद सोये। आगे हम राजा जेवरसिंह को राजन ही लिखेंगे। जब तक महात्मा जी की संगत में हैं।

महात्मा जी से राजा ने अपने सब दुख रो-रो कर ब्यान किए। जिस कारण अपना राजपाट छोड़ कर सन्यासी का वाना धर वन में आपकी शरण ली। कृपा कर अब मुझे उपदेश दें जिनसे मेरे मन को शांती प्राप्त हो।

राजा जेवर सिंह को ब्रह्मज्ञान सुनाना

सन्त जी बोले-हे राजा जब मनुष्य के मरने का समय आता है उस समय सब इन्द्रियों की वृति वाणी में लय हो जाती हैं। उसके पश्चात वाणी की वृति मन में लय हो जाती है। फिर मन वृति प्राण में लय हो जाती है। हे राजन! जागृत अवस्था में पांचों इन्द्रियां और पांचों काम इन्द्रियां, मेरे सामर्थ से अपने अपने व्यौपार में लग जाती हैं। स्वप्न अवस्था में पांच काम इन्द्रियां और पांच ज्ञान इन्द्रियां मन के साथ दाम्पत्य भाव में अपने अपने भाव को त्याग कर सो जाती हैं। और स्वप्न अवस्था में मन

सहित इन्द्रियां लय हो जाती है। तब भी प्राण आदि वायु अपने अपने व्यौपार करते ही रहते हैं। निद्रा में पड़े मनुष्य को कोई ज्ञान ही नहीं रहता। तो भी मैं (प्राण) पेट के अन्न को पचा कर जाग्रत रहता हूं। जैसे अग्नि अग्निहोत्री के घर में सदैव रहती है तथा हवन के लिए आह्वानीय अग्नि ही ली जाती है उसी तरह अपान वायु अपना व्यौपार करता रहता है। इस अपान वायु में से जब प्राण वायु का उत्थान होता है उस काल में मनुष्य को जाग्रत अवस्था प्राप्त होती है। इस प्रकार अपान वायु मल मूत्र को निकालने वाला रक्षणीय होने से गार्हपत्य अग्नि है। अपान वायु के अन्दर आने से प्राण बाहर आता है इसलिए प्राण आह्वनीय अग्नि है।

हे राजन, जैसे रसोई बनाने की अग्नि दक्षिण कोने में रहने से दक्षिणअग्नि कहलाती है उसी प्रकार भोजन किये अन्न को पचाने वाला होने से और हृदय के दक्षिण कोनेमें रहने से अपान वायु दक्षिणाग्नि है। समान वायु श्वास-प्रश्वास को समान भाव में काटने वाला होने से हवन करने वाला होता है क्योंकि वह प्रातः और सन्ध्या को दो आहुति देता हैं। मन यजमान है और उदान वायु इष्ट फल देने वाला होने से

इसे अग्नि होत्री का फल है ।

हे राजन, जैसे सन्ध्या काल में दशों दिशाओं के पक्षी एक बड़े वृक्ष के ऊपर जाकर आश्रय लेते हैं इसी प्रकार पृथ्वी आदिक पन्चभूत गंधादिक उनके गुण और प्राणादिक सर्व प्रपंच रूप पदार्थ मुझ चैतन्य प्राण का आश्रय लेकर रहते हैं । विद्वान मनुष्य मुझ प्राण के स्वरूप को पहचानता है कि प्राणात्मा से पांच वायु दसों इन्द्रियां अर्थात जगत उत्पन्न होता है और उसी में स्थिर रहकर उसी में लय हो जाता है । हे राजन और भी सुनो । मैं सर्मष्टि रूप को धारण करके सूर्य आदि रूप से व्यापक होता हूं और मेरा पांच प्रकार से नक्त होना जो कोई जानता है वह विद्वान शरीर त्यागकर अमृत बन जाता है ।

हे राजन ! बिना अंगों के सहित निराकार ब्रह्म की उपासना ऐसी है कि जैसे किसी स्त्री का पति के अभाव में अग्नि चिता पर बैठना । मृत्यु के साथ बराबर युद्ध करना पड़ता है । जो साधक बिना उपासना के ही निराधार तत्व की साधना करना चाहते हैं उनके मार्ग में बेशुमार विघ्न आते हैं तथा उनके मार्ग में काम क्रोध बहुत उपद्रव करते हैं । जो उपासक मूर्खता वश दुस्साहस करके उस शून्य जैसे

ब्रह्मतत्व को प्राप्त करना चाहते हैं उनको अति कष्ट होता है । इसलिए हे राजन अपने अपने वर्ण आश्रम अनुसार जो कर्म अपने हिस्से में आते हैं उन सब को अपनी कर्मेन्द्रियों द्वारा शान्तिपूर्वक फल की इच्छा त्याग कर शास्त्रोक्त विधि से करते रहना चाहिए और शास्त्र विरुद्ध कर्म छोड़ देता है तथा जो लोग भोग मोक्ष प्रद दोनों ही दुर्बल तथा दरिद्र कुल को भी छोड़ देते हैं वही मेरी बताई हुई उपासना में जुड़ते हैं । हे राजन, जो साधक मेरी इस उपासना का सम्पादन कर लेता है और निःशंक होकर कर्म फल की आशा त्याग देता है उसको इस संसार में शान्ति स्वयं ही आगे बढ़कर जयमाला पहना देती है । ऐसे साधक कर्म फल की तरफ से उदासीन रहते हैं । वे समझ लेते हैं ये सब कर्म हमारे किए हुए नहीं हैं । इनका करता धरता कोई दूसरा ही है ।

हे राजन ! इस प्रकार का उपासक जिस तरफ नजर डालता है उसी तरफ से आनन्द की वर्षा होने लगती है । वह जहां भी रहता है वहीं आत्म बोध का निवास हो जाता है । वह नौ छिद्रों वाले शरीर में रहकर भी शरीर को अपना नहीं समझता, उसे हीन

भाव ही पसन्द है। जिस समय उसका अभिमान पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है उस समय उसके जीवन में भ्रान्ति की कालिमा नहीं रहती और उसे अनुभव होने लगता है मैं ही ईश्वर और कर्ता हूं। जब ये बात अच्छी तरह से हृदय में बैठ जाती है तब मनुष्य स्वानुभव से तमाम जगत को मुक्त स्थिति में ही देखता है। जरा सोचो कभी ऐसा भी हुआ है कि पूर्व की दिशा से सूर्य का उदय हो और वह पूर्व को ही प्रकाशवान करे, दूसरी दिशाओं में अन्धकार ही बना रहे, कभी नहीं। हे राजन, मेरी (प्राण) उपासना में बुद्धि स्थिर होकर यह बात मन में भली प्रकार जम जायेगी कि मैं प्राण आत्मा हूं। अर्थात मैं ही ब्रह्म हूं। तभी मनुष्य कोई गलत कर्म नहीं कर सकेगा और मन चन्चल होना छोड़ ब्रह्म तत्व में रहने लगेगा और मैं साक्षी पूर्वक कहता हूं सब भेद भाव जड़ से उड़ जायेगा।

हे राजन जो लोग (प्राण) आत्मा के साथ वैर भाव करते हैं उनकी वह किस प्रकार व्यवस्था करता है. ध्यान देकर सुनो। वह (प्राण) आत्मा उनकी ऐसी दुर्गति करता है, कि क्लेश रूपी नाम का सारा कूड़ा करकट जमा होता है और जहां संसार नाम नगर

का सारा पानी बहकर जमा होता है उसी स्थान की तमाम योनियों में, मैं (प्राण) आत्मा इन मूर्खों को रखता हूं। जिस स्थान पर खाने के लिए उनको कुछ भी नहीं मिलता। हे राजन ! अब मैं तुम्हें स्पष्ट रूप से बतलाता हूं कि जितनी भी छोटी या बड़ी चराचर वस्तुएं इस संसार में हैं, मन या बुद्धि में जितने भी विषय आ सकते हैं। जो वस्तुयें पंचभूतों से बनी हैं, जिनका नाम रूप है। तू और मैं के, जिस सोने के भूतमात्र रूपी सिक्के बनते हैं। जिन कौड़ियों के सहारे, कालरूपी ज्वारी का खेल होता है। जो प्रत्येक क्षण में विपरीत भ्रम या मोह में जिन जिन बातों का ज्ञान होता है। जो प्रत्येक क्षण में पैदा और नापैद होता है। मखं प्राणी इसी को संसार कहने लगते हैं। जो प्रकृति द्वारा माया से अष्ट प्रकार के भेदों से युक्त हैं जो शरीर क्षेत्र के द्वारा उन छत्तीस प्रकार के भिन्न-भिन्न तत्वों से बना है। व सब मुझ प्राण आत्मा के रहने का नगर है।

हे राजन ! जहां तुम और मैं ही निवास करते हैं अर्थात प्राण आत्मा ने ही ये रूप धारण कर रखा है। जिस प्रकार जल में रहने वाले आकाश तत्व पर ही आकाश का प्रतिविम्ब पड़ता है। उसी प्रकार

अद्वैत भी द्वैत को स्वीकार करता है और द्वैत को स्वीकार करके ये समझने लगता है मैं सुखी हूं, मैं दुखी हूं और फिर स्वप्न के समान अहंता के शब्दों में बड़बड़ाने लगता है। और सोचने लगता है ये मेरा पिता है, ये मेरी माता है, मैं गोरा हूं, मैं काला हूं, बहुत हीन हूं, ये मेरी स्त्री है, ये मेरा पुत्र है, क्या यह सब मेरे नहीं है। नहीं, मेरे हैं। इसी स्वप्न के कारण वह इस लोक और परलोक के चक्कर में पड़ता है। जो अपने को भूलकर भूत मात्र के गुण धर्म के अधीन होकर व्यौहार करने लगता है। उसी प्राण आत्मा को शरीर कहने लग जाता हैं।

हे ! राजन विचार की दृष्टि से देखो वह पूर्ण ब्रह्म ही है। प्राण ही आत्मा है। उसी ही दृष्टि से उस को अहं ब्रह्मास्मि: कहा गया है। तभी ये जीव शोभा पाता है। हे राजन, अब मैं तुम्हें ये बतलाता हूं। यह प्राणात्मा ज्ञान अज्ञान के अंगों से लिप्त नहीं होता। न यह शुद्ध ज्ञान से, एकता ही प्राप्त करता है। और न अज्ञान के कारण, उसमें द्वैतभाव ही आता है। इस प्रकार केवल ज्ञातृत्व से युक्त तटस्थ ही इसका स्वरूप है। जिसने मेरा सच्चा स्वरूप जानकर भेद भाव का उसी प्रकार त्याग

किया है जिस प्रकार मनुष्य सोने के आभूषणों को मिथ्या समझता है। जो यह जानता है आभूषण सोने के हैं, सोने से भिन्न नहीं हैं। उसी प्रकार मैं ही सर्व व्यापक अद्वितीय और खुद सिद्ध प्राण हूं। जो स्वयं को मुझ से भिन्न नहीं समझता, जो मेरा आत्म स्वरूप पहचानता है। उसी के सम्बन्ध में समझना चाहिए कि उसने सब कुछ जान लिया है।

हे राजन ! सब विवेचन मैंने शास्त्रीय रीति से, तेरे सामने कर दिया है। इस संसार की छोटी बड़ी सभी वस्तुओं में कर्ता कर्म और कर्म फल की त्रिपुटी के सिवाय और कुछ भी नहीं है। जिस प्रकार कपड़े के तार बुने होते हैं, उसी प्रकार इस त्रिपुटी के तीनों गुण ओत-प्रोत हैं। हे राजन, ये आत्मा अलौकिक वस्तु है और मन वाणी का विषय है। इसी कारण उपाधि द्वारा ही इस प्राणात्मा को जाना जाता है। स्थूल शरीर और इन्दियादिक उपाधियों की अपेक्षा क्रिया शक्ति वाला प्राण और ज्ञान शक्ति वाली बुद्धि, ये दोनों ही आत्मा के निकट हैं। इस लिए लोक प्रसिद्ध प्राण और बुद्धि रूप उपाधि को ग्रहण कराके मैं तुमको इस अलौकिक आत्मा का उपदेश करता हूं।

हे राजन ! शरीर में प्राण और बुद्धि के रहते हुए ही शरीर व इन्द्रियों की स्थिति समझी जाती है। प्राण और बुद्धि का अभाव होते ही, शरीर व इन्द्रियों की स्थिति नहीं रहती। इसलिए तमाम उपाधियों की साधक, प्राण प्रज्ञा ही सिद्ध होती है। प्राण और प्रज्ञा ही ज्ञान के हेतु हैं। जैसे जड़ वस्तुयें महल आदि, दीपक की सहायता चाहते हैं। उसी प्रकार प्राण और प्रज्ञा भी जड़ होने से अपनी प्रतीति में किसी दूसरे प्रकाश की सहायता चाहते हैं। सो प्राण प्रज्ञा को प्रकाश देने वाला कूटस्थ आत्मा मैं ही हूं। इस तरह की युक्ती पूर्वक प्राण प्रज्ञा ही, आत्म ज्ञान का कारण है।

हे राजन ! प्राण और प्रज्ञा शब्द शक्ति-वृत्ति करके तो आत्मा के बोधक नहीं हैं। किन्तु लक्षणा-वृत्ति करके आत्मा के बोधक हैं। प्राण और प्रज्ञा तथा प्राण-प्रज्ञा का प्रवर्तक चैतन्य जो मैं आत्मा हूं, यह लक्षणावृत्ति करके हैं। प्राण कहते हैं, जो शरीर आदि को प्रेरणा करे और प्रज्ञा कहते हैं अन्तः-करण की वृत्ति विशेष को, अर्थात् बुद्धि को घट पट आदि पदार्थों को अतिशय करके जाने। इसी को प्रज्ञा कहते हैं। यथार्थ में प्राण में चेतनता का अभाव

है और बुद्धि में भी पदार्थों का ज्ञान करने की सामर्थ नहीं है। क्योंकि दोनों जड़ हैं। जड़ में स्वतन्त्र क्रिया नहीं होती है। जड़ वस्तु अपने और दूसरे को नहीं जानती।

हे राजन ! शरीर इन्द्री आदि और अन्तर वायु प्राण में जो चैतन्य रूप क्रिया होती है। सो चैतन्य आत्मा ही सब जड़ पदार्थों में प्रकाश रूप होने से, अपने स्वरूप को भी चैतन्यात्मा प्रकाश देता है। जड़ पदार्थ मुझ आत्मा को प्रकाशित नहीं करते। ऐसा आनन्द स्वरूप मैं (आत्मा) ही, प्राण और प्रज्ञा शब्द का अर्थ हूं। हे राजन, तेरे से भिन्न कोई भी वस्तु प्राण और प्रज्ञा शब्द का अर्थ नहीं है। अनेक प्रकार की अच्छी बुरी क्रियाओं का कारण सिवाय तेरे दूसरा नहीं है। सिर्फ तू ही है। इसी से तो तू-मैं सब प्राण स्वरूप हैं। भेद से रहित स्वयं प्रकाश तू ही है इसी से तू प्रज्ञा स्वरूप है। ऐसा जो प्राणात्मा अपना निजी स्वरूप मैंने तेरे लिए कथन किया है उसको तुम विचार कर अपने को कह कि- अहं प्राणोऽस्मि, प्रज्ञा आत्मा, अहं अन्नं अहं अन्नं, अहं अन्नादं अहं अन्नादं। इस प्रकार उपासना करनी चाहिए। इतना ब्रह्मज्ञान का उपदेश सुन

कर राजा जेवर सिंह को बड़ी शान्ति मिली। उनको बड़ा सुख मिला और उन्होंने अपने को बहुत कुछ समझ कर महात्मा जी के चरणों में अपना मस्तक नवाया और प्रभू स्मरण कर महात्मा के साथ भजन पूजन कर फल फूल खा आराम किया।

* श्री गोगा पुराण उन्नीसवां अध्याय समाप्त *

बीसवां अध्याय

प्यारे मित्रो, अब हमें गुरु गोरखनाथ जी महा-राज की, जमात की सुध लेनी चाहिए। जिन्हें गौड़ बंगाले प्रान्त से चले, काफी अरसा गुजर जाने के बाद भी वह अबतक ददरेड़ा नगरी में क्यों नहीं पधारे। रानी बाछल को जोत बालते मुद्दत गुजर गई क्या अभी तक भक्त की परीक्षा पूरी नहीं हुई। बात कुछ ऐसी ही है, जबतक पूर्व जन्म के पापों की करनी का फल इन्सान भोग नहीं लेता तब तक उस के पुण्य उदय नहीं होते। कलेश किसी प्रकार नहीं कटते, हवन करते हुए भी हाथ जलते ही रहते हैं। गुरु गोरखनाथ जी शीघ्रता पूर्वक ददरेड़ा नगरी में आ जाते तो राजा जेवर सिंह को वन जाने की नौबत

ही काहे को आती और महारानी बाछल के कन्धे पर बेशुमार जिम्मेदारियों का भार क्यों लदता। एक तरफ जनता की भलाई का काम करना, दूसरी तरफ राज काज देखना, तीसरी तरफ साधू सन्तों तथा गरीब भिखारियों के दान मान की चिन्ता, चौथे गुरु गोरखनाथ की जोत जलाना भूल न जाऊं। बिचारी के जिम्मे इतने काम थे, एक घड़ी आराम नहीं मिल पाता था। रात को जब अवेरी सवेरी सोती थी तो उसे अपने पति जेवर सिंह के वन जाने की चिन्ता के कारण नींद ही न आती थी और पलके पर पड़ी पड़ी सोचती रहती थी, कि हे प्रभू दीन बन्धु! क्या मैंने ही सबसे ज्यादा पाप किए हैं, जो मुझे न रात को निद्रा है, न दिन को चैन। राम राम करके दिन निकला, और वह नित्य कर्म से फारिग हो गुरु गोरख नाथ की जोत बाल अपने पति राजा जेवर सिंह की याद में अपनी आंखों के आंसू पोंछती हुई अपनी सास राम कौर के पास पहुंच मस्तक उनके चरणों में धर कर इस प्रकार बोली-

(तर्ज बारह मासा सवाल जवाब)

बारह मासा

रानी बाछल और सास रामकौर का

(सवाल जवाब)

आसाढ़— सासूजी आसाढ़ मास घनघोरे, बिजली चमक-चमक चुप होरे, मेरे पीतम न हैं धोरे, मैं मरूं जहर विष खाय के।१। राजा जोगी बन गये प्यारे हो गए मुझ दुखिया से न्यारे, अब को बिछड़े काज सुधारे, किसको सोऊं गले लगायके।२। सासूजी मुश्किल से रैन कटे है, तन में दूनी अगन उठे है, मेरा सूना माल लुटे है, इसको कैसे रखूं छिपाय के।३। रो रो कहे बाछलदे प्यारी, मो मन खटके दुनियां सारी, मेरे कहां छिपे तपधारी, जल्दी सुध लेना जी आयके।४। कहे राम कौर जेवरसिंह की मैया, बहू मुझे भी प्यारा छबीलदे का भैया, मैंने पाला ले ले बलइया, नित उठ अपना दूध पिलावती।१। मेरा भोला भाला लाला, बहूरी बड़े दुखों से पाला, मेरा जेवर चन्द्र उजाला, जिसको गोदी रोज खिलावती।२। बहू मैंने रक्खा प्राणों से प्यारा, कभी मन से नहीं विसारा, बहू रानी वो कभी मुझसे हुआ न न्यारा, मेरी जरा न पार

बसावती।३। बहुअल सोच करे मत ज्यादा, कहीं लग न जाय कोई ब्याधा, रानी बाछल का मन आधा, वो मन ही मन घबरावती।

सावन - सासूजी सावन मास कोकला कूके, वह तो घड़ी भर भी न चूके, सोती चौंक पड़ूं घबरायके।१। पी पी करके पपैया बोले, मेरी चढ़ी जवानी डोले, जी घबराये होले होले, मेह की घटा उठे घहराय के।२। सासू जी कामन करके सिंगार, जाती तीज झूलने नार, मेरे जीवन को धिक्कार, कैसे रक्खूं धीर बंधाय के।४। बहू सावन मास मन भावन रंगवा लो चुनरी दामन, टंगवा सच्चे मोती कामन, सखियां सब सिंगार बनावती।१। जिनके प्रीतम जावें हैं परदेश, वो क्या मैले रहवें भेष, दिल में रक्खें नहीं कलेस, रंग रंगीले गीत वो गावती।२। घर में हंसी खुशी बहू रहना, बढ़िया पहन जड़ाऊ गहना, क्यों न मेंहदी हाथ रचावती।३। बहुअल सोच करे मत ज्यादा।४।

भादों—सासूजी भादों बरस रहा घनघोर, वन में मोर कर रहे सोर, बालम छोड़ गये हैं मोर, उनको लावे कौन मनाय के।१। चहूं ओर चढ़ रहे नदी नाले, कैसे जांय ढूंढने वाले, मेरा रात दिन दिल हाले, बैरन ज्वानी ने घर घाले, इसको रक्खूं कहां छिपाय के।२।

सासूजी दुश्मन हो रही रात अन्धेरी, सूनी सेज पिया बिन मेरी, मुझको बिरह अगन ने घेरी, त्यागन कर गये नेहा लगाय के ।३। बहुअल सोच करे मत ज्यादा ।४।

भादों-भरम बोझ में रहिये, ओछी बात न बहू अब कहिए, तुमको जो भी नियामत चहिये, वोही अभी मैं मोल मंगावती ।१। मैंने बहू कभी नहीं तरसाई, तुझे जेवर से ज्यादा चाही, जब से इस घर में तू आई, सुन्दर भोजन रोज जिमावती ।२। तेरी सुध लेंगे गिरधारी, बहू मेरा आवे कुमर हजारी, तैंने यूं ही हिम्मत हारी, नाहक रो रो नैन सुजावती ।३। बहुअल सोच करे मत ज्यादा ।

असोज - सासुल चौथा मास असोज, मुझ पर चढ़ी विरह की फौज, प्रीतम बन में मारे मौज, मुझे दुख दीना ब्याह रचाय के ।१। जो मैं अपने पीहर होती, क्या मैं आंसुन से मुख धोती, सुख से नींद छमासी सोती, चित्तर सारी पैर फैलाय के ।२। यहां मेरी फुंके रात दिन छाती, लिखकर भेजूं पीहर पाती, दुशमन मुझे मौत न आती, कैसे करूं ऐसे मन भाय के ।३। आया यूं ही असोज महीना, बहू कोई खोटी बात कहीना, भूकी नंगी यहां रही ना, नाहक जग के लोग हंसावती ।१। पीहर पीहर तू है करती, बतला

यहां कौन दुख भरती, बहू सुसराल बिना न सरती, दुनिया सौ सौ ऐब लगावती ।२। बहुअर हमारे कमी नहीं कुछ धन की, तू मालिक है राज भवन की, बातें भूलो बालापन की, पटरानी राजा जेवर सिंह की कहलावती ।३। बहुअल सोच करे मत ज्यादा, कहीं लग जाय न कोई व्याधा, रानी बाछल का मन ।४।

कार्तिक—सासूजी कार्तिक मास कठोर, जाड़ा करके आया जोर, पी की लगी हिरदे में डौर, वो तो रम गए बन में जाय के, मुझ को सासू दिया दुहाग, ऐसे ओछे मेरे भाग, बैठी महल उड़ाऊं काग, खोया जन्म ब्याह करवाय के, सासुल जिनके घर हैं प्रीतम आली, वोही पूजेंगी दिवाली, हो रही घर घर में खुशआली, कामन खुश सिंगार बनाय के ।३। सासु कहें बाछल प्यारी ।४। लागा कार्तिक सरदी रमकी ये रुत आई और किसम की, बहू आशा छोड़ो मत प्रीतम की, मन में किस कारण घबरावती, बहुअर ग्रहचक्र है जालम, जिसने छुटाया तेरा बालम, विध का क्या कर सकता आलम, बहुअर धीरज क्यो . धारती, जल्दी प्रीतम तेरा आवे, तेरे चोहदे को पावे, तेरे कैसे समझ में आवे, मन में क्यों दलगीरी लावती ।३। बहुअल सोच करे मत ज्यादा ।४।

मंगसिर - सासूजी आया मंगसिर महीना, पीतम बिना मुझे नहीं जीना, मौकूं विधना ने दुख दीना, जोगन बनूंगी भस्म रमाय के।१। मैंने देखी बाट बहुतेरी, प्रीतम भूल गये सुध मेरी, अब न बाली उमर कटेरी, किससे विथा कहूं समझाय के।२। सासूजी मैं दिनों रात झुरूं हूं मन में, कुछ बाकी न रही बदन में, ऐरी सासू आग लगो इस धन में, क्यों बोलो हो गरभाय के।३। बहुअर सोच करे मत ज्यादा कहीं लग जावे न कोई ब्याधा।४।

अगहन - बहू रानी ठन्डी हवा अगहन की चसकी, जग में जिन्दगानी दिन दस की, बहुअर बात न मेरे बसकी, ना तो तुरन्त उसे बुलावती।१। बहुअर मत कर भगवां बाना, दुनिया मारेगी सब ताना, टुकड़ा पड़े मांग कर खाना, घर घर फिरोगी अलख जगावती, बहु रानी तेने देखे ठाट अमीरी, तेरी जूती ले फकीरी, रख लो चार दिना टुक धीरी, क्यों कुनवे की लाज उतारती।३। बहुअर सोच करे मत ज्यादा तुझको लग जावेगी ब्याधा।४।

पूस - सासूजी धरूं कैसे पूस में धीर, जाड़ा ड़ता गैर गम्भीर, मेरा व्याकुल भया शरीर, या कुछ कीजे जतन वनाय के।१। पिया जोगी बन

गये परदेश, जीवन खिलना नहीं हमेश, सोरन रूपा पड़ जायं केश, कैसे मन रहूं समझाय के, सासूजी भेजूं किसके हाथ सन्देशा, जिगरी मित्र न कोई ऐसा, सासूजी खोटा अपना पैसा मैंने देख लिया परखाय के।३। बहुअर सोच करे मत ज्यादा लग जाय न कोई व्याधा।४। बहूरी पूस महीना खासा, रख मन धीरज और दिलासा, जग में सब जगह हरि का बासा, जिन को नर नारी सब ध्यावती, मेरे घर सोने की खान, जिसको खावे खर्चे जहान, हमारा नामी गोत चौहान, मेरे लाल को बुरा बतावती।२। बहुअर तुम हो राजा कुंवरपाल की राज दुलारी, तुमने क्योंकर हिम्मत हारी, बहू तुझे सब तरियां समझावती।३।बहुअल सोच करे मत ज्यादा, तुझ को लग जाय न कोई ब्याधा, रानी बाछल का मन आधा, वह मन ही मन घबरावती।४।

माह - सासूजी माह में आया बसन्त, नहीं घर कंथ, लेके गुबवंत घर आई मालिन, मैं कैसे पूजूं बसन्त नहीं घर साजन, नहीं भाये बसन्ती फूल, पड़ी सर धूल, लगा मन हालन, बिन पिया बसन्त के लगा कलेजा जालन, पति बिन सूख गई कुम्लाय के।३। बहुअल सोच करे मत ज्यादा, कहीं लग न जाय

कोई व्याधा, रानी बाछल का मन आधा, वह मन ही मन घबरावती ।४। बहू मत माह मास में तरसे, अब तो हेत लगा ले हर से, आखिर कभी तो इन्द्र बरसे, कामन पति बिना कुम्लावती तू तो चातर चन्चल वैतरानी, कोई खोटी कीनी करनी, मेरे बेटा के संग बरनी, जैसा बोया वैसा पावती ।२। तुझे मिल गई नार कोई दूती, वह बहका गई, निपूती मन में न रक्खो मजबूती, आखिर खोटी बात बिचारती ।४। बहुअल सोच करे मत ज्यादा, कहीं कोई लग न जाय व्याधा, रानी बाछल का मन आधा वह मन ही मन घबराती ।४।

फागन - सासूजी आया रंग रंगीला फागन, बालम कर गए मेरा त्यागन, होली खेलेंगी बढ़भागन पी संग धूम मचाय के ।१। कामन गावें और बजावें, पति संग खुशी भी मनावें, कोली भरभर अधर उठावें, सोवें पचरंग पलंग बिछाय के ।२। प्रीतम जो घर होते मेरे, मैं भी उड़ाती रंग बहुतेरे, मलती खूब ही लाल गुलाल, अब क्या होवे मन पछताय के ।३। बहुअल सोच ।४। बहूरी आई फागन की रुत खासी, तू क्यों दिल पर धरे उदासी, पी पी करके रोल मचाती, तेरी सुध लेंगे अविनासी, तू क्यों न

खुशी मनावती ।२। बहू भरले केसर रंग पिचकारी, बुलवा संग सहेली सारी, घर में धूम मचाओ भारी, कामन सभी रंग उड़ावती ।३। बहूअल सोच करे मत ज्यादा ।४।

चैत - सासूजी आया चैत का मास, चिन्ता दई त्याग, जाऊं कहीं भाग, वन के त्यागन, गोरे अंग मल भभूती बनूं वैरागन, वे कैसे साधू लोग, लगा दिया वियोग, कहेंगे लोग वियोगन, मैं जाऊं पिया को ढूंडन बनकर योगन, बन में जाऊं सास अकेली, संग न लेऊं सखी सहेली, मेरे हैं रामजी बेली, मैं डाल गले में सेली, योगन बन कर जाऊं, ढूढ ले आऊं, तभी सुख पाऊं, पी को सोऊं गले लगाय के ।३। बहूरी आया चैत बदल गया सम्वत, मौसम अच्छा हेटी किस्मत, बहूरी मतना हारो हिम्मत, मन में क्यों न धीरज धारती: तुम हो शीलवन्त सतवन्ती, अपने कुल की हो लाज न्ती ।१। बहूरी फिकर करे कुछ न बनती, काहे व. .न पछतावती ।२। दुनिया उनको चातुर जाने, कहना सास ननद का माने, नर नहीं तकती फिरें विराने अपने पति पर सिंगार बनावती ।३।

बैसाख - सासूल आया कठिन मास वैसाख,

जल के जिगर हो गया राख, पड़ गई मेरे बदन पर खाक, हड्डी गई घुन खाय के, रोरो हाथोंको मैं मलती, अपने पिया के गम में जलती, सासू बारह महीने गये बीत, गरमी और सीत रहा नित झुरना आने वाला है।

जेठ - जेठ बचाऊं लाज जाऊं कहीं भाज, न आया आज भी प्रीतम प्यारा, पड़े बदरोठे की धूप, हुआ दिल निधारा, अब मेरी उमर हुई है स्यानी, रुत में पके फल बौराय के ।२। और बारह मास हुए हैं आखर, बैठी एक ताम पर आकर, दर्शन दीजो बालम आकर मेरे सारे दोष भुलाय के ।३। बहूरी जेठ मास सुख देवा, कर तू गुरु गोरख की सेवा, तेरा पार लगादे खेवा, क्यों तू नाहक लोग हंसावती ।१। मतना अब रोवे बड़भागन, नाजुक गोरी बहू सुहागन, करदे सोच फिकर का त्यागन, जीवन काहे को छिजावती ।२। बहू गुरु गोरख के गुन गाना, काशिद के हाथ भेजो परवाना, उसमें लिखदे जिगरी ताना पढ़ते ही आवें जेवर राना, क्यों न खत भिजवावती ।३। बहू अब सोच करे मत ज्यादा, मतना लग जाए कोई व्याधा, रानी बाछल का मन आधा, वह मन ही मन घबरावती ।४।

लौंद - लागा लौंद महीना राम, सासूजी पूरन हो गये काम, मेरी रटना आठो याम, मुझ को लीजो आप निभाय के, काशिद ढूंढे प्रीतम प्यारे, गुरु गोरख नाथ ने स्वप्न दिया रे, जल्द आवें महल मंझारे, रानी बाछल के पौवारे, कृपा करी द्वारकावारे, अब मैं सोऊंगी गले लगायके ।

।।बोलो अटल छत्र की जय ।।

इसके बाद रानी बाछल मन ही मन बड़ी प्रसन्न थी और सोचती थी गुरुदेव जल्दी ही हमारी नगरी में पधारकर, हमें दुखों से छुटकारा दिलाने की कृपा करें। पता नहीं वह आज कल में ही आजायें। सो मित्रो ! रानी बाछल का सोचना ही ठीक है। यह साधु सन्यासी मन के मौजी होते हैं। जो जगह-जगह ठहरते, हरि गुण गाते, ढोल, मृदंग बजाते, भक्तों का कष्ट हरते, नगर नगर घूमते, ग्राम और बस्तियों में ठहरते, घूमते घामते चले आ रहे थे। फिर कहां गौड़ बंगाला देश और कहां बागड़ प्रान्त। काफी दूर का पैदल सफर, न रेलों का जमाना था, न मोटर कार का युग, हवाई जहाज का तो जिकर ही क्या था। इसके अलावा अपनी भक्त महारानी

बाछल की परीक्षा भी लेनी थी कि वह मेरी जोत बालने की भूल तो नहीं करती है। भगवान भक्तों की परीक्षा इस प्रकार लेते आये हैं।

इधर राजा जेवर सिंह अपने गुरु से रोज ब्रह्म ज्ञान का उपदेश सुनते हैं और उनके बताये अनुसार तपस्या कर प्रभू भजन में मन लगाते हैं। जब रानी बाछल सब तरफ से निराश हो गई, एक दिन, दिन निकलने से काफी पहले उठकर, नित्य कर्म से फारिग हो, गुरु गोरखनाथ की जोत बाल, नीली घोड़ी पर चढ़ कर अपने पति राजा जेवर को ढूंढ़ने को वन में घुस गई। जब खोजते खोजते परेशान हो गई तो रो रोकर प्रभू से अपनी मौत भेज देने के लिए प्रार्थना करने लगी। हे दयानिधान! मुझे धरती से उठालो। मैं बहुत दुखी हूं। अगर तुमने नहीं सुना तों मैं अपना सर फोड़कर जान दे दूंगी।

पतिव्रता नारी की बात सुनकर भगवान बड़े बेचैन हुग। भला भगवान अपने भक्त को इस प्रकार मरता कैसे देख सकते थे। उन्होंने तुरन्त ही नारद मुनि को वुलाकर आदेश दिया कि हें मुनिराज, तुम एकदम मृत्यु लोक में जाकर कजली वन में पहुंचो जहां गुरु गोरखनाथ के चौदह सौ चेलों की जमात

पड़ी हुई है। वो बेफिक्री से वहां भांग घोट घोट कर पी रहे हैं और अपनी झांझर खन्जरी को बजा बजा कर जोर शोर से कीर्तन कर रहे हैं। तुम खास गुरु गोरखनाथ से कहना कि अति शीघ्र ददरेड़ा नगर पहुंचकर रानी बाछल का कष्ट हरो वर्ना रानी बाछल सर फोड़कर अपनी जान गवां देगी। देर करने से उसे जिन्दा न पावोगे। उसका पति राजा जेवर सिंह घर बार छोड़कर साधू हो वन में चला गया है। वह वन वन अकेली नीली घोड़ी पर चढ़ी खोजती फिर रही है। और ये भी कहना वह आपकी भक्त है अगर उसने अपनी जान दे दी तो उसकी हत्या अकाल मृत्यु ही होगी जिसका हम सबको बड़ा भारी पाप लगेगा। वह क्षत्री जाति की नारी चौहान कुल उजागर स्त्री है। न मालुम दुखी होकर कब अपनी जान पर खेल जावे।

भगवान विष्णु की आज्ञा शिरोधार्य कर, नारद मुनि वीणा- बजाते, हरिगुण गाते, अति शीघ्र कजली वन गुरु गोरखनाथ के सामने जा पहुंचे जहां गुरु गोरख समाधी लगाए बैठे थे और उनके चौदह सौ चेले भंग घोट घोटकर जैकारा बोल रहे थे। नारद मुनि वहां पहुंच कर नारायण नारायण कहा तो गोरख

गुरु के चेले नारद मुनि को देखकर सकपका गए और आपस में कहने लगे आज जरूर दाल में काला है। नारद मुनि आए हैं और खैर रहे। इधर गुरु गोरख नाथ से उनका आना कैसे छिपा रह सकता था। वह योग द्वारा नारद मुनि के पधारने का सारा कारण जान गए। फिर नारद मुनि को नमस्कार कर मुस्करा कर बोले, मुनि राज ! कैसे दर्शन दिए। दास को सेवा बताइये, मैं आपके दर्शन करके निहाल हो गया। आप इस समय कहां से पधार रहें हैं।

गुरु गोरखनाथ के वचन सुन कर, देवऋषि नारद बोले, योगी राज जी आप से क्या छिपा है। परन्तु जब आप पूछ ही रहे हो तो, आज्ञा पालन करना दास का कर्तव्य है। मैं विष्णु भगवान का भेजा सीधा विष्णु लोक से आ रहा हूं। आपकी परम भक्त ददरेड़ा नगर की महारानी बाछल, इस समय बड़ी दुखी है। आपको तुरन्त ही ददरेड़ा नगर पहुंचकर उसका कष्ट हरना चाहिए। वह वीर क्षत्राणी है ऐसा न हो वह ज्यादा दुखी होकर अपनी जान ही गंवा दें। हम सब पर रानी बाछल की अकाल मृत्यु का पाप चढेगा। उसका पति जेवरसिंह साधू बन कर बन को चला गया है। इसलिए वह अधीर

हो वन में उसे खोजती फिर रही है।

नारद मुनि की वार्ता सुनकर तुरन्त ही गुरु गोरखनाथ ने अपने प्रमुख चेले औघड़नाथ को आदेश दिया कि चटपट डेरे तम्बू उखड़वाकर, बैल गाड़ी और छकड़ों में भरवा दो। और जमात को आदेश करो कि अति शीघ्र ददरेड़ा नगर को कूच करना है। अपने गुरु की आज्ञा मानकर सन्त औघड़नाथ ने झटपट डेरे तम्बू उखड़वाये। कूंडी सोटे संगवा, चिपटे बगल में दबाये, और बिगुल बजाकर आदेश दिया। अति शीघ्र अपना अपना सामान संगवा कर नगाड़ा बजते ही कूंच बोल दो। चन्द मिनटों में ही सारा समान संगवा कर नगाड़ा बजते ही जमात चल पड़ी और गुरु गोरख नाथ की माया द्वारा शीघ्र ही ददरेड़ा नगर पहुंच गई। और बिगुल बजते ही रानी बाछल के सूखे हुये नौलखे बाग में अपने डेरे तम्बू खड़े कर दिये।

एक एक सन्त ने एक एक पेड़ के नीचे, अपना अपना आसन जमाया और अपनी धूनी पर पेड़ों को काट काटकर लक्कड़ सुलगा दिये। धूनों को धूवां उड़कर आसमान में छा गया एक ऊंचे टीले पर गुरु गोरखनाथ ने अपना धूना चेताया। जो अब तक

कायम है। यात्री लोग गोगा मेड़ी पहुंचने पर धूने के दर्शन करने अवश्य जाते हैं। यह जगह ददरेड़ा नगर से जो सादूलपुर जंक्शन से दस बारह मील है। स्टेशन से दस कोस पश्चिम की तरफ है। आप भी गोगा मेड़ी जाने पर धूने के दर्शन कर सकते हैं। रात्रि के समय बालू के टीले रेशमी गद्दों का आनन्द देते हैं। गुरू गोरखनाथ जी के चौदह सौ चेले उन बालू के टीलों पर ऐसे सोये, उन्हें दीन दुनिया की खबर ही नहीं रही। और सफर के थके होने के कारण सूर्य उदय होने के बाद तक सोते रहे।

जब सूर्य भगवान तेजी से आनकर, अग्नि वर्षा करने लगे। तब सब सन्त हड़बड़ा कर उठ बैठे और नित्य कर्म से निबटने के लिए पानी के लिए बेचैन हो दौड़ने भागने लगे। जब कुंए पर पहुंचे तो कुआ सूखा हुआ नजर आया, जिसमें एक बूंद भी पानी की नहीं था। पानी के लिए जब काफी परेशान हो गए तब सब मिलकर गुरु गोरखनाथ के धूने के पास जा कर जमा हो गए और हाथ जोड़ कतार बांध कर एक लाइन में खड़े हो गए। गुरु गोरखनाथ ने जब धूनी पर जमा दुखी चेलों पर नजर घुमाई तो सब को उदास पाया। सब चेलों को उदास देखकर अपने

प्रमुख चेले औघड़नाथ से बोले, क्या परेशानी है।

औघड़नाथ, जो ये सब के सब यहां आन कर जमा हुए हैं। अपने गुरू के मुख से अनजाने जैसी बातें सुनकर औघड़नाथ हाथ जोड़कर बोले। गुरु देव न जाने हम लोगों को किस पाप के कारण इतनी कड़ी सजा मिल रही है। जो आपने इस सूखे ठुन्ट बाग में जहां न पेड़ पर एक पत्ता और न कुंए में पानी की एक बूंद। हम सब बिना पानी के, और सूर्य की गरमी में, सब झुलस कर बिना मौत मर जायेंगे यहां चौदह सौ मुर्दों को उठाकर फूंकने वाला भी कोई नहीं मिलेगा। मैंने आपसे गौड़ बंगाला प्रांत में ही बतलाया था बागड़ देश बड़ी खराब जगह है परन्तु आपने आश्वासन देकर कहा था कि वहां बड़े बढिया देशी घी के पकवान मिलेंगे और एक से एक लाजवाब फल फलूट, मेवा। परन्तु मुझे तो बदन को झुलसाने वाली बालू के सिवा कुछ भी नजर नहीं आता है।

अपने प्रमुख चेले औघड़ नाथ की बात को सुन कर, गुरू गोरखनाथ को गुस्सा आ गया और आंखें लाल पीली करके कहा। औघड़, तू रहा पूरा औघड़ नाथ ही। मुझे जरा ये तो बता क्या मैंने तुमसे कभी

झूठ बोला है या और किसी से गलत बात कही है। मनुष्य जो पाप करता है उसे उसका दन्ड तो मिलता ही है। वह चाहे घड़ी भर का हो चाहे सारी उम्र का। धर्मराज युधिष्ठर ने अपनी जिन्दगी में एक बार ऐसा झूठ बोला था। वह भी जबरदस्ती श्री कृष्ण जी महाराज के समझाने पर। परन्तु बोला तो था। जिसके कारण ही गुरु द्रोणाचार्य जी की हत्या हो गई थी। इसी झूंठ के कारण, धर्म राज उन्हें नरक लोग में ले गए थे। जहां धर्मराज युधिष्ठर की नाक घोर बदबू के कारण सड़ गई थी। और बहाना ये किया गया था कि चारों भाइयों व महारानी द्रोपदी से मिल लो। और तुम घड़ी भर में ही सबके सब घबड़ा गए।

उन्होंने अपनी धूनी से भभूति उठाकर, थोड़ी थोड़ी सब चेलों को पकड़ा दी। कहने लगे इस भभूति को थोड़ी थोड़ी सब पेड़ पौधों पर अलख निरन्जन कहकर उड़ादो। और एक चुटकी भस्मी अपनी झोली से निकाल कर, औघड़नाथ को देकर कहा। अलख निरन्जन कहकर ये कुए में छोड़ देना। भभूति लेकर सब चेले, पेड़ पौधों की तरफ दौड़ गये और अलख निरन्जन कहकर पेड़ों पर उड़ा दी। भस्मी के प्रभाव

से पल भर में सब पेड़ पौधे हरे भरे होकर फल फलूट मेवों से लद गए। जितने फल फलूट मेवे, पेड़ों की डालियों पर लद रहे थे। उससे दसियों गुना ज्यादा पत्ते थे जिससे सारे बाग में छाया ही छाया हो गई थी। धूप तो बराय नाम कहीं कहीं नजर आती थी।

गोरखनाथ गुरू के सारे चेले अपने करामाती गुरू का गुणगान करने लगे। उनके जय जय कार के जयकारों की आवाज़ कोसों दूर तक जा पहुंची। जब औघड़नाथ ने भस्मो की पुड़िया अपने गुरू गोरख का का नाम लेकर अलख निरन्जन कहकर कुंए में छोड़ी तो कुंए का जल मीठा ठन्डा तथा शीतल होकर एकदम उफनकर कुंए के मन से निकल बाग में बहने लगा। जिसे देखकर औघड़नाथ एकदम घबराकर बोले। तुम्हें मेरे गुरू गोरखनाथ की आन है जो हद से बाहर निकले। अपनो हद में रहो। संत औघड़नाथ के वचन सुनकर कुंए का पानी बाहर निकलना बन्द हो गया और कुंए के भीतर ही हद के अन्दर ठहर गया। सब सन्त लोग प्रसन्न हो गये और झटपट नित्य कर्म से फारिग हो अपने अपने धूने पर लक्कड़ सुलगाकर बैठ गए। और प्रभू का नाम स्मरण कर

गुरु गोरख के नाम की माला जपने लगे। अलख निरन्जन कहकर घन्टे घड़ियाल बजा बजाकर भजन आरती गाने लगे।

* श्री गोगा पुराण इक्कीसवां अध्याय समाप्त *

बाईसवाँ अध्याय

महारानी बाछल

सज्जनो ! जब राजा जेवरसिंह को तलाश करती हुई रानी बाछल वन में बड़ी दुखी थी। तब इधर तो गुरु गोरखनाथ के पास विष्णु भगवान ने नारद मुनि को पठाया और उधर आकाशवाणी द्वारा वन में ही रानी बाछल को कहा तुम एक दम सीधी अपने ददरेड़ा नगर को वापिस चली जाओ। गुरु गोरखनाथ तुम्हारी नगरी में शीघ्र पहुंचने वाले हैं और समय आने पर राजा जेवरसिंह भी पहुंच जायेंगे। आकाशवाणी को बन के बीच सुन कर रानी बाछल ने अपनी नीली घोड़ी की बाग प्रसन्न हो अपनी नगरी की तरफ मोड़ दी। गोरख गुरु की जय कहकर और आकाशवाणी की बात याद करके घोडी को नचाती, कुदाती अपने महल में जा पहुंची। गुरु गोरखनाथ जी के आने की खुशी में गुरु

गोरखनाथ की जोत बालकर पलंग पर सो गई। थकी होने के कारण उसे अपने तन बदन की भी सुध न रही।

इधर सन्त महन्त पूजा पाठ कर रहे हैं। उधर रानी बाछल की प्रमुख दासी मूंगादे अपने घर से छम छम करती, अपनी डियूटी के वास्ते चल पड़ती है। जब मूंगादे घूमती घामती, नौलखे बाग के निकट पहुंची तो अपनी दोनों आंखें मल मल कर कभी गुरु गोरख के चेलों को देखती तो कभी नौलखे बाग के पेड़ पौधों को। जो बेतादाद फल फलूटों से लदे हरे भरे होकर झूम रहे थे। उसे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ये हरा भरा बाग महारानी बाछल वाला ही है या कोई दूसरा। मैं रास्ता तो नहीं भूल गई। अगर रास्ता नहीं भूली तो ये सूखा बाग हाय राम एकदम कैसे हरा भरा हो गया। इतने पत्ते, इतने फल फलूट मेवा तो मैंने किसी बाग में भी नहीं देखे। और ये इतने सन्डे मुस्तन्डे सन्त महन्त हजारों की तादाद में कहां से आए हैं। मीलों तक इन्होंने लक्कड़ ही लक्कड़ सुलगा रखे हैं। और कितने ही महात्मा नहा धोकर धर्मशाला की तरफ से निकल रहे हैं। क्या कुए में पानी भी आ गया है।

पता नहीं खारा है या मीठा, प्यास तो मुझे भी सता रही है। किससे कहूं, किससे पूछूं। मुझे तो बड़ी शर्म लग रही है। कोई अपने जा में क्या कहेगा।

मूंगादे बावली सी बनी चारों तरफ नजर घुमा घुमाकर देख रही थी उसकी हिम्मत किसी से बात करने की नहीं हो रही थी। इतने में सन्त औघड़नाथ की दृष्टि बांदी मूंगादे पर पड़ी, जो सजी धजी मुख में पान चबाये अपने दोनों नैन घुमा घुमाकर सन्त महन्तों को घूर रही थी। सन्त औघड़नाथ ने देखा इस औरत को खड़े काफी देर हो गई है, जो जाने का नाम ही नहीं लेती। चारों तरफ निगाह घुमा घुमा कर देख रही है। इसका क्या मतलब है यहां आने का और ये है कौन जानना चाहिए।

आगे बढ़कर औघड़नाथ बोले, माई क्या बात है और कैसे खड़ी हो? क्या किसी से कुछ पूछना है? तुम हो कौन और किस उद्देश्य से यहां खड़ी हो? सन्त औघड़नाथ के एक दम ढेर सारे प्रश्न सुनकर बांदी मूंगादे घबरा गई। मुंह से बोल नहीं निकल पाया फिर भी हिम्मत बांध हाथ जोड़कर बोली। हे महाराज, मैं पूछना ये चाहती हूं क्या ये हमारी महारानी बाछल का वही सूखा हुआ नौलखा बाग है

या मैं ही गलती से किसी दूसरी जगह आ गई हूं। आज तो मुझे ये बाग दस ग्यारह लखा लग रहा है। आप लोग कहां से पधारे हैं। और कौन आप लोगों के गुरु हैं। उनका नाम बताने की कृपा करें। मैं महारानी बाछल की प्रमुख बांदी हूं और मूंगादे मेरा नाम है। आपकी मुझ दासी पर बड़ी कृपा होगी जो आपका परिचय मुझे मिल जाएगा।

बांदी मूंगादे के वचन सुनकर सन्त औघड़नाथ बोले, हम लोग सब के सब योगीराज गुरु गोरखनाथ के शिष्य हैं। हमारी जमात में चौदह सौ सन्त हैं। जो गौड़ बंगाले प्रान्त से चलकर कल शाम के वक्त आनकर इस बाग में ठहरे हैं। सूखे बाग को हरा भरा व कुए के जल को एक दम गंगा जल के समान मीठा और निर्मल कर देना हमारे गुरु जी की करामात है। सन्त औघड़नाथ की बात सुनकर मूंगादे फूलकर कुप्पा हो गई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह सन्त औघड़नाथ को प्रणाम कर मस्तक झुका छम छम करती महल की तरफ रवाना हो गई। मारे खुशी के उसके पैर धरती से अधर ही उठकर चल रहे थे। तलवों में धूल लगती ही नहीं थी। वह जल्दी जल्दी महल की तरफ चली जाती

थी और सोचती जाती थी आज मेरे सभी दुख दर्द दूर हो जायेंगे। इधर बांदी महल की तरफ दौड़ी चली जाती थी और उधर सब सन्तों को इकट्ठा कर सन्त औघड़नाथ ने अपने गुरुदेव की स्तुति शुरू करी।

स्तुति गुरू गोरखनाथ जी महाराज की

गुरु द्वारे चलो सब मिलकर गुरु द्वारे
गुरु गोरख सिद्ध बड़े हैं, भक्तों के कष्ट हरे हैं
चौदह सौ चेलों के नायक,
गुरु गोरख सिद्ध बड़े हैं
योगेश्वर ज्ञानी [illegible]ानी, भक्त कहते जिन्हें हैं स्वामी
मछेन्द्रनाथ योगी से विद्या ये ही पढ़े हैं।
गुरु गोरख सिद्ध बड़े हैं
मैनावन्ती ने सुमरा, धोला गढ़ से धाये
जालन्धर गुरु की चेली बना के दीनी अमर कराए
गुरु गोरख सिद्ध बड़े हैं,
जब संकट पूरन जति पे आया।
कुए से उसे निकाला
अमृत छिड़ककर अमर कर दिया।
इन्छरे दे का लाला।
गुरु गोरख सिद्ध बड़े हैं

रानी बाछल ने है सुमरा, गुरु की जोत जलाई
खुशी हुए हैं तब तपधारी, इनके भी दुख हरे हैं
गुरु गोरख सिद्ध बड़े हैं
जो भी भक्त जन करे स्तुति,
मनइच्छित फल पावे
सुबह शाम जो जोत जगावे, सब सन्ताप भगावे
गुरु गोरख सिद्ध बड़े हैं

इधर सन्तों की स्तुति समाप्त हुई और उधर मूंगादे बांदी ने महारानी बाछल को नमस्कार कर चरणों में अपना शीश झुकाया। अपनी बांदी मूंगादे को प्रसन्नचित्त अपने सामने खड़ी देखकर रानी बाछल बोली, मूंगादे! आज तो तुम बड़ी खुश नजर आ रही हो। क्या कुछ रास्ते में पाया है। सज्जनो! जब से राजा जेवर सिंह बन सिधारे थे, रानी बाछल के साथ-साथ रनिवास के सभी दास दासी उदास रहते थे। खुशी किसी के भी चेहरे पर दिखाई नहीं देती थी। सबके ही चेहरों की खुशी गायब हो चुकी थी। मूंगादे को हंसता मुस्कराता देख रानी बाछल ने उपरोक्त वार्ता की।

रानी बाछल की बातें सुनकर मूंगादे अपने दोनों हाथ जोड़ कर बोली, महारानी अभी पाया तो कुछ

नहीं, परन्तु आपको खुशखबरी सुनाकर बहुत कुछ पाने की आशा है। मैं अपनी खुशी का रहस्य पीछे बताऊंगी, पहले मेरी गोदी हीरे मोती नीलम पन्नों से भरदो। अपनी बांदी मूंगादे की बात सुनकर बाछल बन में हुई आकाश वाणी को याद करके समझ तो बहुत कुछ गई फिर भी धीरज धर कर चेहरे पर मधुर मुस्कान विखेरती हुई बोली, मूंगादे! बता तो सही ऐसी क्या खुशखबरी लाई है जो अपनी गोदी हीरा पन्ना मोतियों से भरवाना चाहती है। जो समाचार लाई है मुझे शीघ्र बता। मेरी पूजा अर्चना को देर हो रही है और गुरु गोरखनाथ जी महाराज की जोत भी बालनी है।

इतनी बात सुन कर मूंगादे बोली, अब गुरु गोरखनाथ जी महाराज की जोत बालना वृथा है। तुम्हारी जोत बालने की तपस्या पूरी हो गई। तुम्हें बहुत बधाई है। आपकी मनोकामना पूरी होने का वक्त नजदीक आ गया है। हमारा सूखा हुआ नौलखा बाग हरा भरा हो गया है। फल फूल मेवा पेड़ों पर इस कदर लदा हुआ है कि अब हमारे बाग का नाम नौलखा न रह कर दस ग्यारह लखा हो जाना चाहिए। बाग में दूर दूर तक साधु सन्यासियों के

आसन बिछे हैं। आसनों के पास ही समाधी लगाए सन्त महन्त बड़े बड़े लक्कड़ सुलगाए आंखें बन्द किए माला जप रहे हैं। उनकी धूनो का धुंआं आसमान तक पहुंच रहा है। कुंए का जल गंगा जल के समान एकदम निर्मल और मीठा हो गया है। गुरु गोरख नाथ जी महाराज सबसे ऊंचे टीले पर आसन जमाए आंखें बन्द किए बैठे हैं।

आप महल की छत पर चढ़कर तो देखो, तभी आपको पता पड़ेगा मैं रास्ते में क्या क्या पाकर लाई हूं। भगवान सबकी सुनते हैं, सदा किसी के दिन एक से थोड़े ही रहते हैं। मुझे आपसे बहुत कुछ पाने की आशा है। मांगने से थोड़ा मिलेगा। इसीलिए भगवान श्री कृष्ण जी महाराज से सुदामा जी ने कुछ नहीं मांगा। अगर मांगते तो उन्हें इतनी सम्पदा थोड़े ही मिल जाती जितनी भगवान श्री कृष्ण जी महाराज ने अपनी हैसियत के माफिक बिना मांगे दे डाली। वह तो रुकमिणी जी ने उनका हाथ पकड़ लिया नहीं तो न जाने और कितना कुछ मिलता। अब मैं पछता रही हूं कि मैंने हीरे मोती पन्ने काहे को मांगे, अपनी मरजी से जाने हमारी महारानी जी हमें क्या बक्स देतीं। महारानी जी मैं तो उन स्त्री पुरुषों पर लाख

लाख लानत भेजती हूं जो अपने लड़कों के ब्याह में लड़की वालों से दहेज के लिए व्यर्थ रस में विष घोल देते हैं और आप खुद दुखी होकर बेटी वालों को भी दुखी करते हैं ।।अनर्थ कारी दौलत किसीको क्या सुख पहुंचाती है । वह तो जी दुखाए की दौलत ठहरती ही नहीं है । परन्तु घरों में कलह की नींव जरूर जमा जाती है । नई ब्याही बहू को खिदमत करने के बजाय सांपन की तरह फुंकारना जरूर आ जाता है । वह अपने सास सुसर की बजाये सेवा करने के उनसे बात बात में कहनी अनकहनी कह बैठती है जो उसे नहीं कहनी चाहिए । अपने पति देव तक से कह बैठती है तुम मेरे खरीदे हुए गुलाम हो मेरे पिताने तुम्हें इतना रुपया देकर खरीदा है । इसलिए महारानी जी, जी दुखाए की दौलत फलती फूलती नहीं है। लक्ष्मी जी किस प्रकार घर में वास करती हैं यह पीछे इस पुस्तक में लिखा जा चुका है ।

अपनी बांदी मूंगादे की वार्ता सुन कर महारानी बाछल मुस्कराकर बोली, मूंगादें तुझ पर बड़ी बातें बनानी आ गई हैं । तूने व्यर्थ दासी के घर में जन्म पाया । तुझे तो पंडतानी होना चाहिए था । शायद तू भी मेरी तरह अपने पूर्व जन्म के पाप भुगत रही है

अच्छा, इनाम इकराम आनकर दूंगी पहले अपनी पूजा अर्चना कर गुरु गोरख महाराज की जोत बाल,अपनी अटारी के झरोखे में से, गुरुदेव के दर्शन उनके शिष्यों सहित करके फारिग हो लूं ।

सज्जनो ! अपनी बांदी मूंगादे को इस प्रकार धीरज दे महारानी बाछल अपने नित्य कर्म से फारिग हो नहा धोकर प्रभू स्मरण कर गुरु गोरख नाथ महाराज की जोत बाल, अपनी सबसे ऊंची अटारी पर चढ़ अटारी के झरोखे में से गुरु गोरखनाथ, जो ऊंचे टीले पर विराजमान थे जी भरकर दर्शन कर अपनी आंखें तृप्त कीं ।

मारे खुशी के अपने दुखों को याद करके उनके आंखों से नीर की धारा बहने लगी । फिर उसने अपने नौलखे बाग पर निगाह डाली तो दूर से कुछ हरे हरे पत्ते नजर आए और बाग से बेतहासा धुंआं आसमान की तरफ जाता दिखाई दिया । रानी के चेहरे पर पहले खुशी के आसार दिखाई दिए, पीछे उदासी छा गई । खुशी तो इसलिए छा गई कि गुरु गोरखनाथ जी अपने चौदह सौ चेलों के साथ बाग में आन कर विराजमान हैं और मेरी मनोकामना पूरी कर मुझे पुत्र प्राप्ति का वरदान देने की दया करेंगे ।

मैं मां बनूंगी और मेरा सूना महल राज कुमार की किलकारियों से गूंज उठेगा और राज सिंहासन हम लोगों के पीछे सूना रहने का खटका मिट जाएगा। पर दुखी इसलिए हुई कि राजा जेवर सिंह इस समय बन में ही विराजमान हैं। जब तक वह महलों में न पधारें, ये सब किस प्रकार होगा।

रानी बाछल की आंखों से अपने पति के बन में होने के कारण नीर जारी हो गया। उसने अपनी दोनों आंखों के आंसू पोंछ मूंगादे को आवाज दी। और अपने गले की अनमोल मणि माला मूंगादे के गले में पहना दी। मूंगादेसे अपनी महारानी की आंख के आंसू छिपे न रहे।

* श्री गोगा पुराण बाईसवां अध्याय समाप्त *

तेईसवां अध्याय

(गुरु दर्शन)

प्यारे मित्रो ! रानी बाछल अपने मन में अधीर हो अपनी सास राजमाता रामकौर के पास सलाह मिलाने जा पहुंची और अपने दोनों हाथ जोड़कर चरण छूकर बोली। हे मातेश्वरी मुझे खबर मिली है कि हमारी नगरी में योगेश्वर गुरु गोरखनाथ जी

महाराज अपने चौदह सौ चेलों के साथ आन कर हमारे नौलखे बाग में ठहरे हैं। मैं आपके पुत्र के कहने से एक अरसे से उस की जोत बालती हूं। आपके बेटे हो ने मुझ से कहा था जोत बालने से उनके कभी न कभी दर्शन जरूर होंगे। उन्हीं से पुत्रवती होने का वरदान भी मिलेगा। ये ऐसे करामाती योगेश्वर हैं जो अनहोनी को भी होनी में बदल देने की शक्ति रखते हैं। अब मैं क्या करूं समझ में नहीं आता। मैं बड़े घरों की रानी, महाराजा जेवरसिह की पटरानी और चौहान बंस उजागर महाराणा उम्मर सिंह की पुत्रवधू अकेली सन्त महन्तों के दर्शनों को जाना उचित नहीं समझती। मुझे सलाह दो मैं क्या करूं। अगर राजा जी बन न गये होते, तो बात दूसरी थी। अब आप जैसी आज्ञा देंगी उसका पालन करूंगी।

अपनी बहू महारानी बाछल की बात सुनकर राजमाता रामकौर बोली। बहू मेरी सलाह पर चलना है तो मन लगाकर मेरी बात सुनो। ये जितने भी सन्त महन्त, साधू संन्यासी, जोगी योगी है, इन्हें इनके गुरुओं की आज्ञा है। इनका धर्म भी है कि घर घर भिक्षा मांगकर अपने उदर भरने की कोशिश

करो। इसलिए सारी बस्ती में ढिंढोरा पिटवा दो जो भी साधू सन्त आये उसे भिक्षा पहले राजमहल से ही दी जावेगी। नगरी की जनता किसी भी साधू सन्त को भिक्षा न दे सकेगी। जनता के लिए भिक्षा देना आज दिन से निषेध है और जो व्यक्ति आज्ञा का पालन न करेगा उसे राज दन्ड दिया जायेगा। इससे ये होगा घर बैठे सन्तों के दर्शन हो जायेंगे।

रानी बाछल को अपनी सास राजमाता रामकौर की सलाह पसन्द आई। और तुरन्त ही ढिंढोरची को बुलाकर आज्ञा दी की सारी बस्ती में ढिंढोरा पीट कर इत्तला कर दो कि महारानी बाछल की आज्ञा है कि किसी भी सन्त महन्त को भिक्षा देना निषेध है जो भी राज आज्ञा का उलंघन करेगा सख्त सजा पायेगा। भिक्षा केवल राजमहल से ही दी जावेगी। ढिंढोरची ने राज आज्ञा का पालन किया और सारी नगरी में अपना ढिंढोरा पीट दिया जिसे सुनकर ददरेड़ा नगर की जनता में एकदम खलबली मच गई। सेठ साहूकार बड़े दुखी हुए। सब नगर में घर घर इसी की चरचा होने लगी। ये रानी बाछल की कैसी आज्ञा है। जो दान पुन्य पर पाबन्दी लगा रही है। इस महारानी का दिमाग फिर गया मालूम

होता है।

जनता दान पुन्य करती है तो इसका क्या बिगड़ता है जब साधू सन्तों को राज दरबार से ही मन चाही भिक्षा मिल जावेगी तो जनता का पाव आध पाव अन्न कौन लेना गवारा करेगा। हमें तो ये नगरी अब छोड़नी ही पड़ती दिखाई देती है। जब हमलोग जाने अन्जाने में अधर्म तो करेंगे ही और धर्म पुन्य ये बाछल महारानी करने नहीं देती तो इसके साफ माने हैं हमारे धर्म अधर्म बराबर किसी प्रकार भी न होंगे। धर्मराज के यहां इस बस्ती के लोगों का अधर्म का ही रजिस्टर होगा। धर्म जब करेंगे ही नहीं तो उसका रजिस्टर बनेगा ही क्यों। मरने के बाद हम सब लोग नर्क कुन्ड में ही झोंक दिए जावेंगे। स्वर्ग लोक में सिर्फ राज परिवार का ही अधिकार होगा और इसी प्रकार वहां भी अधिकार जमाया जायगा जिस प्रकार इस नगरी में जमाया जा रहा है। ऐसा अन्धेर तो कभी नहीं हुआ जैसा ये रानी बाछल करने को तैयार है।

सारी बस्ती में ये ही चरचा घर घर होने लगी। इस बस्ती को छोड़ दो, हमें इस अन्धेर नगरी में नहीं रहना है। जब सारी नगरी में खलबली मची तो

राज महल में रानी बाछल को भी खबर लग गई कि हमारी जनता बस्ती छोड़कर जाने को तैयार है। सेठ साहूकार भी ढिंढोरा सुनकर महा दुखी हैं। जब जनता ही नगरी छोड़कर जाने को तैयार है तो वह लोग यहां रहकर अपना रोजगार किसके साथ करेंगे। उन्हें हार कर नगरी छोड़नी ही पड़ेगी। बस्ती के चौधरी और साहूकारों को बिना समझाए बात बनती नहीं दीखती। न मालूम ऊंट किस करवट बैठे। जो करना है जल्दी करना चाहिए। रानी बाछल ने तुरन्त ही ढिंढोरची को तलब किया और उसके आ जाने पर तुरन्त ही आज्ञा दी, अभी इसी वक्त बस्ती में जाकर ढिंढोरा पीट कर ऐलान करो कि आप लोगों ने रानी बाछल का मतलब ठीक प्रकार नहीं समझा। इसलिए दरबार में चन्द समझदार पढ़े लिखे लोग, सेठ साहूकार और बाजार के चौधरी शाम के वक्त पधारें। रानी बाछल उनसे सलाह मशविरा करना चाहती हैं।

बन्धुओ ! ढिंढोरची ने तुरन्त ही राज आज्ञा का पालन कर ढिंढोरा पीट पीट कर बस्ती को सब जनता को रानी बाछल का हुक्म सुना दिया। रानी बाछल की आज्ञा का ढिंढोरा सुनकर बस्ती के चुने हुए

इज्जतदार सज्जन, पन्च, सरपन्च, चौधरी, सेठ, साहूकार, वकील, बैरिस्टर शाम को ठीक समय पर दरबार में पधारे। रानी बाछल ने जलपान देकर सब सम्मानित सज्जनों को तख्त व मूढ़ों पर बिठला कर उनका स्वागत सत्कार किया। शर्बत इलायची देकर सबका सम्मान कर हाथ जोड़ कर बोली, हे बन्धु बान्धवों ! मुझे पता चला है आप लोग एक दम मुझसे नाराज हो गए हैं और बस्ती छोड़कर जाने को तैयार हैं। सो मुझ अबला नारी को आपने समझने में भूल की है। मुझे पता लगा है कि मैंने जो आप लोगों को दान पुन्य करने को मना किया है उसका कारण आप को ठीक प्रकार समझाया नहीं गया है। सो आप ध्यान पूर्वक सुनें। हमारी इस धर्मात्मा नगरी में सन्त महात्माओं की बड़ी भारी जमात पधारी है। ये सब सन्त लोग योगीराज गोरख नाथ जी महाराज के शिष्य हैं जिनकी तादाद लगभग चौदह सौ के है। आप उनसे परेशान न हों और वह आप सज्जनों को परेशान न करें इस लिए राज दरबार से ही भिक्षा देने का ऐलान कराया गया था। परन्तु आप लोगों की नाराजगी दूर करने के लिए ये फैसला ठीक रहेगा कि पहले राजभवन से

भिक्षा दी जाए पीछे बस्ती से आप लोग भी दे सकते हैं।

रानी बाछल की वार्ता सुनकर पन्च लोग आपस में कानाफूसी करने लगे कि भाइयो बात तो वहीं की वहीं रही। एक हाथ से कान न पकड़ा दूसरे से जा पकड़ा। जब महात्मा लोगों को राजमहल से मनचाही भिक्षा मिल जायेगी तो हमारा पाव आध पाव अन्न, कोई क्यों लेना गवारा करेगा। यहां बात कुछ बनती नजर नहीं आती। अपने संगी साथियों की वार्ता सुनकर बड़े बूढे, पुराने अनुभवी सरपन्च बोले, महारानी बाछल तुम मेरी बेटी के समान हो। हमारे साथियों का विचार है बात जहां की तहां रही। जब सन्तों महन्तों को राज दरबार से ही भरपूर भिक्षा मिल जाएगी तो हमारा पाव आध पाव अन्न लेना किसे सुहावेगा। ये कोई पेशेवर भिखारी तो हैं नहीं जो मनो अन्न जमा करके मन्डी में बेच आवेंगे, और उस मुफत जैसी कमाई को जुए व शराब में हरामखोरी के साथ बरबाद करेंगे। ऐसे लोगों को तो अपने दरवाजे पर खड़ा ही कौन होने देता है। उनका तो दाव लग जाये तो जूता, चप्पल, थाली, लोटा, बरतन भाड़े, कपड़ा लत्ता,

लेकर ही चम्पत हो जावें। जो ऐसे लोगों को पूजते हैं वह महान पाप के भागी होते हैं। किसी ने क्या ठीक ही कहा है। लोभी गुरु लालची चेला, दोनों नरक में ठेलम ठेला। और भी सुनो, पानी पियो छानकर और दान दो पहचानकर।

ये जो गुरु गोरखनाथ जी महाराज के चेले हैं, इन लोगों के आने का हमें भी बहुत दिनों से इन्तजार था कि योगेश्वर गुरु गोरखनाथ की जमात एक दिन हमारे नगर में जरूर आएगी। जिसे पता नहीं भी था उसे भी अब तो पता पड़ ही गया है। सबको बड़ा भारी उत्साह है। सबने अपनी अपनी श्रद्धा अनुसार अन्न, धन, बरतन भांडे, कपड़ा लत्ता, रुपया पैसा जमा कर रखा है। इसी दिन के लिए कि सन्त महन्तों के दर्शन कर उनके उपदेशों का लाभ भी उठावेंगे और दान धर्म करके पुन्य के भी भागी बनेंगे। जिससे यमराज हमें वैतरणी नदी पार करने से न रोकें। आशा है महारानी जी मेरा मतलब समझ गई होंगी। आशा है उचित आज्ञा देकर अपनी जनता को शुभ काम करने की मनाई न न करेंगी। अपनी प्रजा को दान पुन्य करने दें। जिससे धर्म की बेल बढे, और जनता का उत्साह

दुगना हो।

सरपन्च चौधरी की बात सुनकर, महारानी बाछल बोली। बुजुर्गवार आप पिता के समान हैं। और आप मुझे अपनी ही बेटी मान चुके हैं। आपने दुनिया देख रखी है और मैं एक नासमझ अबला नारी हूं। जैसा आप उचित समझें आप फैसला कर दें। मुझे आपकी आज्ञा परम पिता परमात्मा के सामान शिरोधार्य है। मेरा कुछ उद्देश्य था परन्तु पंचों की इच्छा, वैसी अपनी इच्छा, महारानी बाछल की वार्ता सुनकर सरपन्च महोदय बोले। महारानी, तुम तो बेटी बन कर छूट गई। और मुझे धर्मसंकट में फंसा दिया। मनुष्य क्या कर सकता है, प्रभू इच्छा ही बलवान है। अच्छा भाइयो, अब मैं फैसला देताहूं हमारी धर्म परायण महारानी का क्या उद्देश्य है उसे भी हम क्यों जानने की दुविधा में पड़ें। राजनीति जानना राजा लोगों का काम है। मैं अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार फैसला देता हूं, हम लोगों को जो भी दान पुन्य करना है वह सब सामान राज दरबार में आकर जमा कर दो। जब सन्त लोग भिक्षा लेने आवेंगे तब रानी जी का कर्तव्य होगा पहले जनता की सामग्री का दान हो पीछे राज दरबार का।

रानी जी को अपने सेवकों को सख्त हिदायत कर देनी चाहिए, जिससे कोई भूल न कर बैठे और गरीब जनता का धन राज दरबार में ही पड़ा ठोकरें खाता रहे। इस पाप के भागी वही जुम्मेदार लोग होंगे जो आदेश का पालन करने में लापरवाही बरतेंगे। इसमें हमारी महारानी जी को भी कोई ऐतराज न होगा और हम सब भी व्यर्थ परेशानी से बच जायेंगे। हमें तो आम खाने से मतलब है पेड़ गिनने से नहीं। हमारे राजा के यहां अधर्मी लोग तो हैं ही नहीं, जो लोग दिखावे के लिए थोड़ा सा दान करके बाकी बचा खुचा चोरी छिपे अपने घरों को भेज दें। यहां तो रात दिन धर्म के जैकारे हैं। अब रही दर्शनों की बात सो नौलखे बाग में खूब भारी मेला लग रहा है। महात्माओं के दर्शनों का लाभ भी करो और पान फूल रोली चन्दन सामग्री लकड़ी उपले अपने साथ ले जाकर सन्तों को पहुंचाओ और पुन्य के भागी बनो। सिर्फ भिक्षा देने की बात की लड़ाई थी, उसका फैसला हो गया।

जब सब लोग महारानी बाछल को नमस्कार कर जानेको तैयार हुए। तब महारानी बाछल सरपंच चौधरी से हाथ जोड़ कर बोली। पिताजी आपका

फैसला उसी प्रकार का हुआ है जिस प्रकार का झगड़ा अशर्फियों के हन्डे का हुआ था। मैं तो अपने धर्म के झगड़े और उसके फैसले को देख स्वर्ग समान भारत के पुराने लोगों को बधाई देती हूं जो धर्म के लिए अपनी जान तक पर खेल जाया करते थे। उसी तरह हमारे नगर की जनता ने मुझ से धर्म के लिए लड़ाई लड़ी। मैं अपनी इस राजिस्थानी जनता को आशीर्वाद देती हूं कि इसका मस्तक संसार में सदा ऊंचा ही उठा रहे और सदा भलाई के कामों ही में इसका ध्यान रहे। अब मैं आपको वह कथा सुनाती हूं जिसका ऊपर जिकर किया जा चुका है सब लोग थोड़ी देर ठहर कर सुनने की कृपा करें।

बहुत दिन की बात है कि किसी नगर में एक धर्म पारायण राजा राज्य करते थे। सुना है कि उनके राज्य में शेर बकरी, एक ही घाट पर बराबर बैठकर पानी पिया करते थे। चारों तरफ धर्म की ही जय जयकार सुनाई पड़ती थी। गरीब अमीर होना अलग बात है, इसी प्रकार धर्मपरायण होना अलग बात। और पापी होना अलग बात। न सब अमीर धर्मात्मा होते हैं, न सब गरीब पापी ही होते हैं। ऐसे ही एक बनिए ने गरीबी से परेशान होकर,

अपनी जमीन एक धनी बनिये के हाथ बेच दी। जब धनी बनिया ने मकान की नींव भरवाने के लिए जमीन की खुदाई करवाई। भगवान की कुदरत उस जमीन के कोने में सोने की अशर्फियों से भरा एक हन्डा निकला।

उस सेठ ने विचारा मैंने तो उस गरीब बनिये की जमीन का ही पैसा दिया है। इन अशर्फियों के हन्डे का थोड़े ही दिया है। इसलिए उसे उसका हन्डा पहुंचा देना चाहिए। वह धर्मधारी बनिया, अपने मकान की नींव भरवाने का काम रुकवाकर एक मजदूर के सर पर वह भारी हन्डा लेकर उस बनिये के मकान पर पहुंचा। जहां वह गरीब रहा करता था। उसने उसका नाम लेकर आवाज दी अरे भाई गरीबदास, जरा बाहर आना। गरीबदास अमीरदास की आवाज पहचानकर घर से बाहर आया और हाथ जोड़कर बोला। सेठ जी कैसे तकलीफ की, मुझे वहीं बुलवा लिया होता। अमीर दास बोला भाई क्या बताऊं, जो परेशानी परमात्मा ने भाग्य में लिखी है वह तो उठानी ही पड़ती है। जब मैंने मकान की नींव भरवाने के वास्ते जमीन को खुदवाया तो उस तुम्हारी जमीन के कोने में ये

सोने की अशर्फियों से भरा हन्डा निकल आया। मैंने सोचा जिसकी अमानत है उसको पहुंचा देनी चाहिए। इसलिए मकान की नींव का काम बन्द करवा कर उस मजदूर के सर पर रखवाकर हन्डा लाना पड़ा अब ये अपना हन्डा संभालो और मुझे विदा करो।

सेठ अमीरदास से अशर्फियों के भरे हन्डे की बात सुनकर गरीबदास बोला। सेठ जी अगर यह हन्डा मेरे भाग में होता तो जमीन बेचने से पहले ही मुझे मिल जाता। फिर मुझे जमीन बेचने की नौबत ही क्यों आती। ये हन्डा जमीन बेचने के बाद निकला है। इसलिए मेरा इस पर कोई हक नहीं है। इसे आप उल्टा अपने घर ले जाओ। अमीरदास व गरीबदास इसी बात पर झगड़ा करने लगे। एक कहे हंन्डा तेरा है मैं क्यों लूं। दूसरा कहे हन्डा तेरा है मैं क्यों लूं।

बहुत से सज्जन इकट्ठे हो गए। एक आप जैसे बुजुर्ग बोले। इनका झगड़ा यहां नहीं निपटेगा। इन का झगड़ा तो राजा साहब ही निवटा सकते हैं। उन दोनों की समझ में भी बात बैठ गई। और वह रास्ते भर लड़ते झगड़ते राज दरबार में जा पहुंचे।

उनका रास्ते का लड़ना भी किस प्रकार का था। देख लेना राजा साहब मेरे ही हक में फैसला देंगे और ये हन्डा तुझे ही वापस अपने घर ले जाना पड़ेगा। अमीरदास कहता था कि राजा साहब मेरे ही हक में फैसला देंगे। जब ये हन्डा तेरा है तो मुझे कैसे दिलवा देंगे। वह किसी की चीज किसी को दिलवादें ऐसा अधर्म कर ही नहीं सकते।

जब दोनों बनिये राज्य सभा में पहुंचे, तो भरे दरबार ने उन दोनों धर्म धारियों की लड़ाई का आनन्द लूटा। जब राजा ने झगड़े की जड़ जाननी चाही तो दोनों बनियों ने जो सच्ची सच्ची बात थी ऊपर लिखे अनुसार राजा साहब को समझा दी। राजा साहब भी बड़े पशोपेश में पड़ गए। उनकी समझ में भी बात नहीं बैठी हन्डा किसे दिलवाना चाहिए। आजकल का कोई कलयुगी राजा होता तो कह देता जमीन का निकला माल राजा का होता है। इसे राज के खजाने में जमा करो। ये जनता की भलाई के काम आएगा।

परन्तु उस धर्मधारी राजा ने कहा तुम दोनों बनिये हो। अमीरदास बोला जी सरकार! तुम्हारे कितने बच्चे हैं। अमीरदास बोला हुजूर सिर्फ एक

लड़की है । लड़के का मुंह देखना ही नसीब न हुआ न जाने पूर्व जन्म में कितने पाप किए थे। राजा धर्मधारी सिंह ने फिर गरीबदास से पूछा तुम्हारे कितने बालक हैं । वह बोला हुजूर मुझ गरीबके एक लड़का है और एक लड़की । तुम्हारे लड़के की उमर कितनी है । गरीबदास बोला हुजूर ये ही अठारह उन्नीस साल की होगी । फिर अमीरदास की तरफ मुखातिब होकर पूछा और सेठ जी आपकी लड़की की आयु कितनी है । अमीरदास बोला, धर्मावतार सोलह साल की,इतनी बातें राजा के पूछने का अर्थ न कोई दरबारी समझा, न दोनों बनिये । विचारे सब चक्कर में थे फैसला अर्शफियों का और बात चल रही है लड़के लडकियों की उम्र के बारे में । सोच विचार कर राजा धर्मधारीसिंह बोले । हे अमीरदास तुम्हारे मुकदमे में हमारा ये ही फैसला है कि तुम अपनी लड़की की शादी गरीबदास के लड़के के साथ कर दो । दोनों ब्याह लायक हो गये हैं और जो तुम अपनी लड़की को देना चाहो उसके अलावा यह अर्शफियों का हन्डा भी लड़की के दहेज में दे देना । इसे भी अपने जैसा अमीरदास बनालो ।

राजा धर्मधारी सिंह का फैसला दोनों बनियों ने

शीश झुका कर मान लिया और दोनों बनियों ने खूब धूमधाम के साथ ब्याह की रस्म पूरी की और अमीर दास ने गरीबदास को बहुत सा दहेज भी दिया । इसके अलावा अर्शफियों के हन्डेके साथ वह मकानकी जमीन भी लड़की के दहेज में दे दी जिसमें अर्शफियों का हन्डा निकला था । गरीब दास भी अमीर दास जैसा अमीर बन गया । उसने दहेज में मिली जमीन पर जमीन में निकले हन्डे से वह शानदार कोठी बनवाई जिसकी शान की कोठो दूर दूर तक नहीं थी । वह कोठी उसने अपने बेटे बहू को देकर आप अपने पुराने मकान में ही रहकर प्रभु का भजन करता रहता था । अमीर दास की लाड़ली बेटी खूब बढ़िया कोठी में मखमली गद्दे पर मौज करती थी ।

सो हे पिताजी ! उस राजा के राज जैसी ही जनता हमारी बस्ती ददरेड़ा की है जिसने अपने धर्म पुन्य करने के हक को छिनता हुआ देख खूब बवेला मचाया और आप सज्जनों को फैसला करना पड़ा । रानी बाछल की वार्ता सुनकर सब पन्च लोग अपना अपना शीश झुका विदा हुए और बस्ती भर की सब जनता ने अपने अपने घर से दान में देने योग वस्तु राज दरबारियों को संभलवा दीं । किसी ने भी देरी

नहीं को । व्यर्थ समय बरबाद करने से लाभ ही क्या था ।

ददरेड़ा नगर में भिक्षा

एक दिन योगीश्वर गुरु गोरखनाथ जी ने अपने प्रमुख चेले औघड़ नाथ को आज्ञा दी कि तुम इस नगरी के भीतर जाकर भिक्षा मांग कर लाओ। परन्तु भिक्षा में सिर्फ खाने पीने की वस्तुयें ही होनी चाहिए। आटा, दाल, चावल, घी वगैरह। आलतू फालतू सामान मत इकट्ठा करना। अपने सिद्ध गुरु की आज्ञा सुन, सन्त औघड़नाथ अपने चुने हुए गुरु भाइयों को संग लेकर ददरेड़ा नगरी में भिक्षा मांगने के लिए रवाना हुए। साथ ही सब सन्तों ने अपने अपने झोली खप्पर कमण्डल चीमटे भी अपने अपने साथ उठा और प्रभू का कीर्तन करते अपने गुरु के गुण गाते पहली ड्यौढ़ी पर जाकर रुके तो अपनी नजर उठा कर देखने पर उन्हें एक बोर्ड नजर आया जिस पर लिखा था भिक्षा निषेध। उसके बाद जिस द्वार पर भी गए वही सब योगियों से कहा यहां भिक्षा नहीं मिलेगी। भिक्षा सिर्फ राज महल से ही मिलेगी जब किसी भी द्वार से भिक्षा नहीं मिली तब सन्त औघड़नाथ बीच बाजार में खड़े होकर कहने लगे, ये

कैसी अन्धेर नगरी है जहां सब पापी लोग ही बसते हैं। क्या धरमात्मा इस नगर में कोई है ही नहीं। मैंने पहले ही गुरु जी से मना किया था कि बागड़ देश में धर्मधारी लोग कहां से आए, वह तो बड़ा खुश्क प्रान्त है। वहां हम सबों को भूखा मरना पड़ेगा। सो मेरी बात बावन तोले पाव रत्ती ठीक निकली।

जब सन्त औघड़ नाथ ने बीच बाजार में खड़े होकर इस प्रकार कहा तब एक सज्जन बनिए ने संतों महन्तों को निराश देखकर कहा, बाबा लोगो ! आप लोग निराश न होवें। हे नाथ जी ! न हम लोग कंगाल हैं और नाहीं दान पुन्य में किसी से पीछे रह जाने वाले हैं। ये धनवानों की वस्ती है, और भगवान की कृपा से खूब मौज है। यहां आधी से अधिक जनता ऐसी है जिनके सोने चांदी से कोठे भरे पड़े हैं और मोहर अशर्फियों के ढेर लगे पड़े हैं परन्तु राज आज्ञा मानना भी हम सबका परम धर्म है। हमारी धर्मशीला महारानी बाछल का अपनी जनता को आदेश है कि भिक्षा राजदरबार से ही दी जायेगी। इसलिए सब वस्ती के लोगों ने अपनी अपनी श्रद्धा-अनुसार दान पुन्य की सामग्री दरबार में भिजवा दी

है। वहीं दान पुन्य भिक्षा वगैरह की व्यवस्था है। आप लोग राज महल में पधारें और मन इच्छित वस्तुयें प्राप्त करें। वहां आपको रत्ती भर भी परेशानी नहीं होगी।

सेठ साहूकारों की बात सुन कर संत औघड़नाथ जी का दिमाग ठन्डा हो गया। उनकी समझ में सब बात बैठ गई। उन्होंने अपने गुरु भाइयों को संग ले कर राजमहल के दरवाजे पर जाकर अलख जगाया। घन्टे घड़ियालों की ध्वनि और अलख निरन्जन का नारा जब राजमहल में गूंजा तब सब रानी बांदियों के कान खड़े हुए। सारे राज महल में रोला मच गया कि सन्त लोग आन पहुंचे हैं, महात्मा लोग आन पहुंचे हैं। महारानी बाछल को अपना शुभ समय आता दिखाई दिया। प्रसन्न हो रानी बाछल ने अपनी दासी के हाथ एक कन्चन थाल में हीरे मोती भरकर भेजा कि ये सन्तों को ड्यौढ़ी पर जाकर दे आओ। सो सज्जनों! महारानी बाछल की दासी आंख मटकाती, नैना चमकाती, वनी ठनी, सोलह सिंगार किए, मुखमें पान चबाए, ऐंठती इठलाती-सी, अपने हाथ में भिक्षा का सुनहरा थाल लिए, सन्त औघड़ नाथ के सामने आन पहुंची। नाज नखरे

दिखाती सी बोली, नाथ जी जल्दी से भिक्षा ले लो। मुझे अभी बहुत से काम करने पड़े हैं। दासी की बात सुनकर और उसके हाथ में हीरे मोतियों से भरा सुन्हरी थाल देखकर, सन्त औघड़नाथ पांच कदम पीछे हट गए और दासी से बोले।

हे माई, ये कंकर पत्थर काहे को उठा लाई। हम इनका क्या करेंगे। ये तो हमारे किसी भी काम के नही हैं। हमें तो हमारे गुरु जी महाराज की आज्ञा है खाने पीने की वस्तुयें, अन्न सामग्री घी वगैरह भिक्षा में लाना। सन्त औघड़नाथ की बात सुनकर दासी आपे से बाहर होकर कहने लगी। तुम दो कौड़ी के भिकमंगे लोग इन चीजों की सार क्या जानो। इनका सार तो जौहरी लोग ही जानते हैं। इस लाखों रुपए के माल से तुम अपना भंग के साथ माल पुए भी रोज खाओगे, तब भी वर्षों खत्म होने वाले नहीं।

दासी की बात सुनकर, सन्त औघड़नाथ बोले अरी जा अपना काम कर, शेखी न बघार, ऐसे तो रोजमर्रा मन सवा मन मेरे गुरु महाराज जी के धूने में जलते हैं। जिनकी भभूति बनाकर जनता में बांटी जाती है। सन्त औघड़नाथ की बात सुनकर

दासी ऐंठ कर बोली क्या कहने हैं तुम्हारे, और तुम्हारे गुरू जी महाराज के। अगर ऐसे ही करामाती हो तो, पाव आधा पाव यहीं बखेर कर दिखादो। शेखी वघारनी अच्छी नहीं होती। दासी से इतनी बात सुनकर सन्त औघड़नाथ ने अलख निरन्जन कह कर अपने गुरूदेव का ध्यान किया और झोली के एक कोने को थोड़ा सा टेढ़ा कर दिया। चन्द मिन्ट में ही डियोडी के भीतर दासी के ही सामने मनों हीरे मोतियों का ढेर लग गया।

दासी की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। उसके नैन नीचे की तरफ झुक गये। वह खिसियानी बिल्ली जैसी हो गई। सिर्फ रोने की ही कसर बाकी रह गई थी। परन्तु उसके चेहरे पर बजाये रन्ज के खुशी दिखाई दी। वह सोचने लगी जिस गुरू के चेले ऐसे करामाती हैं उसके गुरू को हमारी महारानी जी को, एक सन्तान देना कौन बड़ी बात है। आज मेरे मन को पक्का जंच रहा है कि महारानी बाछल की मनोकामना जरूर पूरी होगी। और हम लोगों को मंगलगीत गा गाकर नाचने कूदने का खूब मौका मिलेगा।

सज्जनो, रानी बाछलको अपनी दासीका महलमें

इन्तजार करते काफी अरसा गुजर गया। इतनी देर लगने का कारण समझ में नहीं आया। वह अधीर हो अपनी डियौडी पर पहुंच सन्त ओघड़नाथ और उनके गुरु भाइयों के दर्शन किये। अपनी दासी के हाथ में अपना सुनहरी थाल ज्यों का त्यों भरा भराया देखा। सन्त औघड़ नाथ और अपनी दासी के बीच हीरे मोतियों का खूब बड़ा ढेर देखा, रानी बाछल को अपनी दासी की, बेवकूफी समझते देर न लगी। इस घमन्डिन दासी ने जरुर कोई घमन्ड भरी बात कही है। तभी सन्त को अपनी करामात दिखाकर इसका घमन्ड तोड़ना पड़ा है। अब कैसे इस बेवकूफ ने अपने नैन नीचे कर रखे हैं। किसी ने ठीक ही कहा है। घमन्डी का सर सदा नीचे। इस प्रकार अपने मन में विचार कर, महारानी बाछल अपने दोनों हाथ जोड़कर, सन्त औघड़ नाथ से बोली। सन्त जी भिक्षा स्वीकार करो और इस बेवकूफ दासी का अपराध क्षमा करो।

इतनी बात रानी से सुनकर औघड़ नाथ बोले। माताजी, हमारे गुरूदेव केवल अन्न की ही भिक्षा ग्रहण करते हैं। वह भी बच्चों का झूंठा। औघड़नाथ के वचन सुन महारानी बाछल फूट फूटकर रोने

लगी और सन्त औघड़ नाथ के चरण पकड़कर कहने लगी। सन्त जी महाराज आपने मुझे माता कहा है। इसलिए तुम मेरे बच्चों के समान हो। मेरी लज्जा रक्खो, मेरे कोई बच्चा नहीं है। मैं बांझ हूं। मुझे एक महात्मा जी बता गये थे कि गुरुगोरख नाथ जी महाराज अनहोनी को होनी में बदल देने की सामर्थ्य रखते हैं। उन्हीं की जोत नित्य बाला करो। जब तुम्हारी शुभ घड़ी आवेगी, तभी वह अपने चौदह सौ चेलों के साथ, इस नगरी में पधार कर तुम्हारे सूखे हुए बाग को हरा भरा करके तुम्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान देंगे। वह सामर्थ्यवान योगेश्वर हैं और उनमें भक्तों की इच्छा पूर्ती करने की सामर्थ्य है। सो बाग हरा भरा होने की बात तो उनकी बताई सही हो चुकी है। बाकी जो मुख्य बात रह गई है, जिसके कारण मैंने नित्य नियम से मुद्दतों गुरु महाराज की जोत वाली है। सो कृपाकर उसे पूरा करना आप सन्तों के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। हे करामाती सन्त जी मुझ दुखिया का दुख शीघ्र हरो। मैं आपकी आज्ञा से बाहर नहीं हूं। और मेरी दासी ने जो खता की है उसकी मैं आपसे क्षमा मांगती हूं।

रानी बाछल की आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी। सन्त औघड़ नाथ को रानी पर बड़ी दया आई। वह महारानी बाछल की व्यथा सुनकर अधीर हो गये और नम्र वाणी में बोले। माता जी धीरज धरो, अधीर होने से मुश्किल आसान नहीं हुआ करती। जब आपने गुरुजी की शरण ली है तो सब मुश्किल आसान हो जायेगी। भगवान जरूर अपने भक्त पर दया करते हैं। मैं अपने गुरु की आज्ञा उलघंन करने की शक्ति नहीं रखता हूं। उन का आदेश है कि पुत्रवती नारी का ही भोजन प्राप्त करो। बांझ स्त्री का भोजन लेने की मुझे आज्ञा नहीं है। परन्तु एक उपाय मेरी समझ में आया है। आप भोजन सामग्री लेकर नौलखे बाग चलें, अगर गुरू जी नाराज होंगे तो उन्हें मनाना मेरा कर्तव्य है। इससे न सांप मरेगा न लाठी टूटेगी। और अगर गुरुजी प्रसन्न हो गये, तो मन इच्छित फल जरूर प्राप्त हो जावेगा। भक्तों की मनोकामना पूरी करना हम सब सन्तों का परम धर्म है।

संत औघड़नाथ के वचन सुनकर महारानी बाछल अपनी सास रामकौर के पास जा चरण छूकर विनती करने लगी। हे राजमाता अगर आप प्रसन्नता पूर्वक

आज्ञा प्रदान करें तो मैं अपने साथ कुछ दासियों को लेकर आपके नौलखे बाग में जहां श्री गोरखनाथ जी महाराज अपने चौदह सौ शिष्यों के साथ धूनी रमाये ठहरे हैं, जाकर उनकी सेवा सत्कार करूं। मुझे पूर्ण आशा है वह मेरे सेवा सत्कार से प्रसन्न होकर मुझे जरूर ही पुत्र प्राप्ती का वरदान देंगे। आज मुझे आपके बड़े बेटे की याद सता रही है। अगर मेरे पति देव यहां मौजूद होते तो अपने मन में अति प्रसन्न हो, मेरे साथ साधू सन्तों की सेवा सत्कार तन मन धन से हंस हंस कर प्रेम पूर्वक करते। इतनी बात कहकर अधीर हो और नेनों से नीर बहाने लगी।

राजमाता के अपनी प्राण प्यारी बहू रानी बाछल की आंखों में आंसू देखकर नैन भर आयें, और वह भी अपने बेटे राजा जेवरसिह की याद में अधीर हो नैनों से नीर बरसाने लगी। अपनी पुत्र वधू की आंखों के आंसू पोंछकर, फिर साड़ी के पल्ले से आंसू पूछं और धीरज धर कहने लगी। मेरी प्राण प्यारी बेटी छबीलदे से भी प्यारी बहू बाछल, मैं तुम्हारे दुख से भी कम दुखी नहीं हूं। भगवान ऐसी लायक बहू सबको दे जो अपने बड़ों का मान सम्मान

परम पिता परमात्मा के समान करती हो। अवज्ञा करने वाली बहू बेटी दुश्मन को भी न दे। मैं तुम्हारी साधू सेवा से अति प्रसन्न हूं। साधु सन्तों की सेवा तो तन मन धन लगाकर करना ही हम सभी सद् गृहस्थों का परम धर्म है। सो तुम्हें मेरी आज्ञा है। साधू सन्तों की सेवा सत्कार करो, उनके खुश हो जाने पर तुम्हें अवश्य ही पुत्र प्राप्ति का वरदान मिलेगा। गुरुगोरखनाथ परम दयालु हैं। वह तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेंगे। तुम्हें मेरा आशीर्वाद है।

महारानी बाछल अपनी सास की आज्ञा पाकर फूली न समाई और उनका आशीर्वाद पाकर सन्त दर्शन की अभिलाषा काफी बढ़ गई। पुत्र प्राप्ति के वरदान की आशा में हंस हंसकर भन्डारे का इन्त-जाम बड़ी तेजी से करने लगी। महारानी बाछल ने अपने दास-दासियों को आज्ञा दी। कुछ लोग भन्डारे का अति शीघ्र इन्तजाम करो और कुछ लोग नौलखे बाग की धर्मशाला में पहुंचकर साधू सन्तों के सत्कार की व्यवस्था करो। शहर के नामी गिरामी हलवाई बुलाकर मीठा पकवान, हलुवा, खीर, पूरी, मोहन भोग, मालपुवा, नमकीन, दई पकौड़ी, सोंठ रायता, समोसे (त्रिकोन) जल्दी बनने वाला सामान हलवाइयों

से बनवा कर और कहारों की बहगियों में भरवाकर नौलखे बाग में पहुंचाने का इन्तजाम करो। सब इन्तजाम हो जाने पर मुझे खबर करो जिससे मैं अपनी चार घोड़ों वाली बग्गी में अपनी सखी सहेलियों के साथ, गुरु गोरखनाथ जो महाराज की सेवा में पहुंचकर, साधू सन्तों के जीमने का इन्तजाम करूं।

प्यारे मित्रो ! महारानी बाछल की आज्ञानुसार नगरी के हलवाइओं को बुलवाकर भन्डारे के सकल सामान को बनवाने की अति शीघ्र व्यवस्था हुई। उन्होंने अति उत्तम पकवान चटपट तैयार कर दिया जिसे दास दासियों ने कहारों की बहगियोंमें भरवाकर नौलखे बाग में भिजवाने की व्यवस्था करी। जब पकवान वगैरह के सामानकी बहगियां लेकर कहार चल पड़े तब रानी बाछल को इत्तला करी गई। इत्तला मिलते ही महारानी बाछल अपनी सकल सहेलियों को नौकर चाकरों सहित, चार घोड़ों वाली बग्गी में सवार होकर गुरु गोरखनाथ जी महाराज के दर्शनों के लिए रवाना हो गई।

आगे आगे साधू सन्त, उनके पीछे भन्डारे का सामान, सबसे पीछे बाछल की बग्गी और पीछे

अरदली। सब सद्दी मुसद्दी अपने अपने घोड़ों पर सवार थे जिसकी शोभा का वर्णन मेरी तुच्छ बुद्धि से सर्वथा असम्भव है। सज्जन पाठक गण ध्यान दें कि महारानी बाछल अपनी सहेलियों तथा कर्मचारियों सहित चन्द घड़ियों में नौलखे बाग में जा पहुंची और भन्डारे की सकल सामिग्री गुरु गोरख को अपने दोनों हाथ जोड़ प्रणाम कर उनके सामने जा धरवाई। जिसे सन्त औघड़ नाथ जी ने खुश हो अपनी सुपुर्दगी में संभाल लिया। चटपट पत्तलें बिछ गई। गुरु गोरखनाथ जी के सकल शिष्य सन्त महन्त पत्तलों पर विराजमान हो गए। शुद्ध देशी घी के बने पकवान की खुश्बू बाग के चारों तरफ फैल गई। सुगन्धित सामान के कारण सकल सन्तों की जीभ लपलपाने लग गई कि देखें कब गुरु देव आज्ञा देवें और कब पत्तलों पर ये अमृततुल्य सुगन्धित पकवान परोसा जाय जिससे उदर भरे और आत्मा की संतुष्टि हो।

त्रिकालदर्शी गुरु गोरख नाथ जी महाराज से अपने शिष्यों की मनोभावना छिपी नहीं रही। वह तुरन्त ही अपने प्रमुख चेले औघढ़नाथ से बोले, ये कौन नारी है, जो भन्डारे का सामान लेकर यहां आई है। अपने गुरु के बचन सुनकर सन्त औघड़नाथ को

महान दुख हुआ कि गुरु देव भोजन के समय इस प्रकार का व्यर्थ प्रश्न कर क्यों रस में विघ्न पैदा कर रहे हैं जब कि पत्तलें बिछ चुकी हैं। सज्जनो संत औघड़ नाथ से उत्तर देते न बना। उन्होंने गुरु चरणों में अपना शीश झुका दिया और दोनों हाथ जोड़कर बोले। गुरुदेव ये ददरेड़ा नगर की महारानी बाछल, आपकी परम भक्त अपने गुरुभाइयों व गुरू जी के वास्ते भोजन सामग्री लाई हैं। ये अपने चमत्कारी गुरु के चमत्कार की भूखी हैं। इतना सुनते ही योगेश्वर गुरु गोरख नाथ जी महाराज ने अपनी दोनों आंखों की पलकें बन्द करके दोनों हाथों की हथेली बजाई। हथेली बजने के साथ ही चमत्कारी गुरु की धूनी के सामने दूध की नदी बह निकलीं जो एक तालाब के रूप में अब भी मौजूद है और गोरख गंगा के नाम से प्रसिद्ध है। सज्जनों! अपने चमत्कारी गुरु का चमत्कार देखकर सकल बाग के नर नारी व सन्त समाज सिद्ध गुरु गोरखनाथ जी महाराज की जय जयकार बोलने लगे। सारे नौलखे बाग में गुरु गोरखनाथ की जै के जयकारों की गूंज दूर दूर तक जा पहुंची। सर्व प्रथम गुरु गोरख नाथ जी ने सकल भोजन सामग्री का पूजन कर भगवान

का भोग लगाया और अपने प्रमुख चेले औघड़ नाथ को आज्ञा दी कि पहले एक एक चम्मच खीर सब संतों की पत्तलों पर परोस दो।

सन्त औघड़ नाथ की पिटाई

सन्त औघड़ नाथ जी महाराज ने जब खीर का ढक्कन उठाया तो खीर की खुश्बू से उनका दिमाग एक दम तरोताजा हो गया। पिस्ते बादाम मखानों वाली जाफरानी खीर देखकर वह सोचने लगे, ये थोड़ी सी तो खीर है और गुरु जी ने इतना बड़ा चमचा अगाड़ी रखकर कह दिया कि एक एक चमचा खीर चौदह सौ पतलों पर परोस दो। अगर खीर थोड़ी पड़ गई तो मैं ही इस खीर के खाने से वंचित रह जाऊंगा। इसलिए इस अमृत तुल्य खीर का एक चम्मच अपने लिए पहले से ही अलहदा करके रख लेना चाहिए। इस प्रकार अपने मन में विचार कर अपने गुरुदेव व सकल सन्तों की दृष्टि बचा, एक चमचा खीर अलग बरतन में करके छिपा कर रख दी। घट घट जाननहार योगीश्वर से क्या कुछ छिपा रह सकता था। वह अन्तरयामी गुरुदेव अपनें चेले की चालाकीं भरी करतूत सब जान गए। वह विचार करने लगे औघड़ नाथ को पिटे बहुत दिन हो गए हैं

आज इसे पीटने को फिर मेरी हथेली में खुजली हो रही है। ये अपनी करतूत के कारण आज जरूर मार खाएगा। परन्तु अभी इसकी पिटाई करने के मुहूर्त में थोड़ी देरी है। विना मुहूर्त अच्छा बुरा कोई काम हो ही नहीं सकता है। इसलिए औघड़ नाथ की पिटाई करने में ही अपने हाथों की उठती हुई खुजली को भी रोकना पड़ रहा है। उन्होंने अपने मन को मारकर खामोशी अख्तियार करली।

इधर सन्त औघड़नाथ ने सब सन्तों को खीर परोसने पर भी खीर का बरतन आधे से भी ज्यादा भरा भराया जहां भन्डारे की सकल सामग्री धरी थी लाकर धर दिया। तब गुरू गोरखनाथ जी महाराज मुस्करा कर बोले, औघड़ तुम भी अपने वास्ते खीर परोस लो। अपने गुरू की वाणी सुनकर औघड़ नाथ बोले। गूरू जी मैंने अपने वास्ते खीर पहले ही अलहदा करके अलग रख ली है।

इतना सुनते ही गुरू गोरखनाथ जी महाराज आग बबूला हो गए और धूनी के पास में धरा हुआ चीमटा उठाकर तड़ातड़ पांच सात चीमटे औघड़ नाथ जी महाराज कीं पीठ पर जमा दिए। अपने गुरु के हाथ से चीमटों के तड़ातड़ पड़ने के कारण

सन्त औघड़ नाथ तिलमिला गए। उनके मुंह से चीख निकल पड़ी, मर गया गुरू जी मर गया। अपने प्रमुख चेले की चीख चिल्लाहट सुनकर योगीराज बोले, अरे पेटू तूने लज्जा को बिलकुल ही बेच खाया है। क्या इसीलिए गृहस्थ जीवन त्याग कर सन्त बना है। इससे तो गृहस्थी ही बना रहता तो सन्त समाज को लज्छा तो न आती। एक तो मना करने पर भी बांझ का भोजन ले आया, ऊपर से ये बदमाशी इसे क्यों लाया मेरे धूने पर। मैंने तुझे क्या आदेश दे रखा है कि पुत्रवती नारी की ही भिक्षा लेनी चाहिए।

रानी बाछल गुरु गोरखनाथ का गुस्सा और औघड़नाथ की पिटाई देखकर थर थर कांपने लगी। उसकी मृगनयनी आंखों से मोतियों के समान आंसुओं की वर्षा होने लगी। रानी बाछल कीं आंखों से नीर की वर्षा सन्त औघड़नाथ से नहीं देखी गई। वह अपने गुरु देव के चरण पकड़ कर बोला, परन्तु गुरु देव जी महाराज ये भी तो आपका ही उपदेश हैं, कि दुखी प्राणी पर दया करना सन्त का स्वभाव होना ही परम धर्म है।

मुझे अपनी पिटाई का कतई दुख इसलिए नहीं

है, कि मेरी भारी गलती थी। परन्तु मैं अपने दोनों हाथ जोड़कर आपसे विनती करता हूं कि इस भक्त धर्म पारायण पतिव्रता नारी से नाराज होने का कोई कारण मेरी समझ में नहीं आता है। ये यहां के महा राजा जेवर सिंह की धर्मपत्नी है, जो सन्तानहीन होने के कारण आपकी दोनों वक्त जोत बाल बाल कर मुद्दतों से सेवा कर रही है। इन्हीं के तप बल का प्रभाव है जो हम सब को इस मरुभूमि में खींचकर लाया है। अब आप दया कर इस सन्तान-हीन को एक सन्तान देकर इसके तपको सार्थक करें। ये सौभाग्यवती आपकी दया की अधिकारिणी है। अपने प्रमुख चेले औघड़नाथ की दया की भरी वार्ता सुनकर योगेश्वर बोले, औघड़ बहुत बोलना आ गया है। अपने गुरु को प्रसन्न चित देखकर औघड़नाथ बोले, गुरु जी सब आपकी ही सिखाई हुई बातें हैं। इतना कहकर औघड़ नाथ चुप हो गया। और योगेश्वर गुरु गोरखनाथ जी महाराज अपने दोनों नैन मूंद पलकें बन्द कर समाधिस्थ हो गये। महारानी बाछल पत्थर की मूर्ती बनी देखती की देखबी रह गई। औघड़नाथ अपने गुरु देव के समाधिस्थ हो जाने पर धूनी पर पहरा देने लगे।

महारानी बाछल को वरदान

सज्जनो, रानी बाछल गुरु गोरखनाथ जी महाराज के समाधिस्थ हो जाने से पहले तो अधीर हो गई। फिर धीरज धर कर सोचने लगी अभी भगवान भक्त की और जांच करना चाहते हैं। अभी मुझे और परीक्षा देकर पास होना पड़ेगा। यह अपने शिष्य औघड़नाथ के तर्क वितर्क से अप्रसन्न हो समधिस्थ हो गये हैं। अगर मैंने तुरन्त ही कर्तव्य पालन नहीं किया तो हो सकता है ये समाधि वर्षों तक न खुले। अब तो मुझे तन मन धन से जैसे भी बने, इनकी सेवा करनी चाहिए। इस प्रकार अपने मन में विचार कर अधीर हो अपने सिर के लम्बे बाल खोल डाले और अपने लम्बे घने बालों से धूनी के आस पास की राख व कूड़ा करकट साफ करने लगी, मन ही मन में रो रो कर प्रार्थना करने लगी, हे गुरूदेव घटघट की जानने वाले योगेश्वर महाराज, मुझे मेरा कर्तव्य सुझाओ। मुझे अब क्या करना चाहिए। गुरूदेव मैं अज्ञानता से भरी अबला नारी आपको किस प्रकार खुश कर सकती हूं मैं कोई उपाय नहीं जानती हूं, मैं तो केवल आपकी दया की भिकारिन हूं। आप ही दया कर मेरी झोली भर दें।

जब इस प्रकार रानी बाछल ने अधीर होकर प्रार्थना की, तब उसके मन में प्रेरणा उठी। रानी अधीर न हो, धीरज धर, सेवा ही मनोकामना पूर्ण होने का सरल उपाय है। बाछल रानी अपने मन की प्रेरणा सुन फूली न समाई। और मन में धीरज धर सुबह शाम दोनों वक्त सन्तों की सेवा में लग गई। वह सन्तों के खाने पीने पहनने की पूरी व्यवस्था करती उन्हें किसी समय भी, किसी चीज की दिक्कत न होने देती और बचे समय में, अपने बालों द्वारा गुरु गोरखनाथ जी महाराज का धूना साफ करती थी। इसी प्रकार नित्य नियम से सेवा करते रानी बाछल को एक अरसा हो गया। उसका चेहरा काला स्याह पड़ गया, मुंह पर उदासी छा गई।

अब योगेश्वर से रानी बाछल का चेहरा देखा न गया और अपने भक्त को ज्यादा परेशान करना उचित न समझा। परीक्षा की घड़ी समाप्त हो गई। रानी बाछल सन्त सेवा के कारण परीक्षा में पास हो गई। अपने मन में अति प्रसन्न हो घटघट की जानने वाले गुरु गोरखनाथ ने शाम के समय अपनी आंखों की पलकें अपने आप ही भगवान शिवशंकर का नाम जप कर खोल दीं। फिर महारानी बाछल की

तरफ देखकर बोले। देवी भूख लगी है भोजन लाओ, भोजन अपने हाथ से बनाकर कल सुबह आना भोजन जीमकर ही वरदान देंगे।

योगेश्वर गुरु गोरखनाथ जी महाराज के श्री मुख की वाणी सुनकर रानी बाछल फूल कर कुप्पा हो गई। उसका चेहरा गुलाब के समान, खिल उठा उसकी खूशी का ठिकाना न रहा। उसका मन मोर की तरह भीतर ही भीतर नाच उठा। अब उसे निश्चय हो गया मुझे गुरू कृपा से जरूर पुत्र प्राप्ती का वरदान मिलेगा। और मेरे महल में भी कोई किलकारियां भरकर मचल मचलकर, कभी रोवेगा कभी हंसेगा। ईश्वर सदा से ही अपने भक्तों की सहायता करते चले आये हैं। फिर मेरी तपस्या ही क्यों वृथा जाने लगी। अपने मन में इस प्रकार विचार कर हंसी खुशी गुरु गोरख नाथ जी को प्रणाम कर उनके कदमों में अपना शीश झुका कर चल पड़ी उसके पैर जमीन से अधर ही उठकर चल रहे थे। वह बाग से बाहर होकर अपनी चार घोड़ों वाली बग्गी में बैठ मिन्टों सैकिन्डों में अपने महल में आन पहुंची।

महारानी बाछल को शाम के समय खुश खुश

महल में आता देखकर रानी काछल को बड़ा ताज्जुब हुआ कि मेरी बहन जो सदा उदास रहती थी आज इतनी प्रसन्न क्यों है। कोई न कोई जरूर ही खुशी का खास कारण है। पहले कभी इतना खुश हम लोगों ने इसे कभी नहीं देखा था। जरूर ही कुछ न कुछ दाल में काला है। इस प्रकार मन में विचारकर रानी बाछल से बोली, बहन क्या बात है। गुरु गोरख नाथ की समाधि खुली या नहीं, सब अमन चैन तो है। अपनी बहन काछल की बात सुनकर गुरु गोरख नाथ जी से जो वार्ता हुई थी। सब खुश होकर, अपनी बहन काछल को निश्छल हो, ब्यौरेवार सच सच बता दी। जिसे महल से जुड़े दास दासियों, व रानी बाछल की सहेलियों ने भी सुना। और सबने खुशी खुशी प्रभू की दया और गुरु गोरखनाथ जी महाराज की कृपा का हाथ, रानी बाछल पर होने के कारण, लाख लाख धन्यवाद माना।

रानी काछल भी मधुर मुस्कान बखेर महल की और सखी सहेलियों की तरह ही आशीर्वाद दे, हंसी खुशी अपने महल में जा पहुंची। और अपने मन में कपट धारण कर सोचने लगी, अगर गुरु गोरखनाथ जी महाराज के वरदान से बहन बाछल के सन्तान

पहले होगई तो सारे राज्यका मालिक इसीका बेटा बन जावेगा और ये राजमाता बन जावेगी। इसलिये इससे भी पहले भोजन सामग्री लेकर रात रात में ही गुरु गोरख नाथ जी महाराज की सेवा में मैं ही पहले क्यों न पहुंच जाऊं। और दिन निकलने से पहले ही वरदान लेकर अपने घर लौट आऊं। किसी को कानों कान खबर भी न हो पायेगी। मेरी और मेरी बहन महारानी बाछल की सूरत में ज्यादा अन्तर नहीं हैं। हम दोनों बहनों की सूरतें बहुत ही मिलती जुलती हैं। रात में गुरु गोरखनाथ जी महाराज को धोका देना कोई बड़ी बात नहीं है। कपट रूप धारण करने के लिए मैं अपनी बहन के कपड़े पहनकर नौलखे बाग में भोजन सामग्री लेकर जाऊं तो ब्रह्मा जी भी मुझे नहीं पहचान सकते।

इस प्रकार कपटिन काछल कपट रूप धारण कर रानी बाछल के पास जाकर अपने दोनों हाथ जोड़ अपनी बड़ी बहन रानी बाछल से बोली, बहन जी, मैं आज दिनभर आपका इन्तजार करती रही। मैंने दुर्गा देवी के नौ दिन के व्रत कर रक्खे हैं और आज नवां दिन समाप्त है। मांगे के कपड़े पहन कर नव दुर्गा पूजन का विधान पुरोहित जी ने बत-

लाया है। सो तुम मुझे अपने कपडे मंगनई में दे दो। मैं शीघ्र ही पूजन कर आपके कपडे अभी लौटा दूंगी। पूजन का वक्त बीता जा रहा है। इसलिये जरा शीघ्रता करो। बाछल अपनी कपटिन बहन काछल के कपट जाल में फंस गई और मीठी चुपड़ी बातों में फंसकर, तुरन्त ही अपनी पोशाक उतारकर अपनी कपटिन बहन काछल के हवाले कर दी। अपनी बहन काछल की पोशाक पर कब्जा जमा लेने के बाद उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसका मन भीतर ही भीतर मोर की तरह नाच उठा। वह चटपट अपने महल में आ, झटपट दास दासियों को संग में ले, भोजन तैयार करने में लग गई।

जल्दी जल्दी में जैसा उल्टा सीधा भोजन बन पाया दिन निकलने से पहले ही दास दासियों को साथ ले रानी बाछल वाली पोशाक पहन भोजन-सामग्री कहारों की बहगियों में भरवा, चटपट नौलखा बाग में जा पहुंची और गुरु गोरखनाथ जी महाराज के चरणों में अपना मस्तक जा नवाया, खाने की सब सामग्री बहगियों में भरी भराई गुरु गोरख नाथ जी महाराज के धूने के सामने रखवा दी। योगेश्वर गुरु

गोरखनाथ जी महाराज कपटिन काछल के माया जाल में फंस गये। उन्होंने काछल के कपट पूर्ण पहनावे को देख उसे महारानी बाछल ही समझा। वह कहने लगे बेटी अभी तो दिन निकलने में देरी है तुमने बड़ी जल्दी की। बाछल भेषधारी कपटिन काछल हाथ जोड़कर मुस्करा कर बोली, गुरुदेव मैंने सोचा आपको बड़ी भारी भूक लग रही होगी। इस लिए जल्दी जल्दी में जैसा बन पाया बनाकर सेवा में हाजिर हो गई।

कपटिन काछल के जाल में होनी के बस में आनकर त्रिकालदर्शी महात्मा गुरु गोरखनाथ की भी बुद्धि भ्रष्ट हो गई। कहावत है होनी के बस संसार है। होनी ऋषि मुनियों के टाले भी नहीं टलती। होनी बस राजा रामचन्द्र भगवान वन गए। होनी बस सीता हरण हुआ। और होनी बस बालो व रावण मारे गए। होनी ने राजा नल को न बक्शा, न धर्मराज युधिष्ठर को। सारे युद्धवंश का नाश हो गया। भगवान कृष्ण जैसे योगेश्वर भी भील के एक बाण से परलोक गमन कर गए। ये सब होनी का ही चमत्कार था। होनी बस गुरु गोरख नाथ जी महाराज ने शंख नाद कर सब चेलों को

आदेश दिया कि नित्य कर्म से शीघ्र फारिग हो लो।

सज्जन वृन्दो, अपने गुरु देव की शंख धुनि सुन कर, सब सन्त महन्त गुरु गोरख नाथ जी महाराज के चौदह सौ चेले मिनटों सेकिंडों में योगीराज के सामने जमा हो गए। अपने गुरु की आज्ञानुसार चटपट नित्य कर्म से शीघ्र फारिग हो, स्नान ध्यान से निबट कर अपने गुरु महाराज की धूनीं के सामने आनकर जमा हो गए। जब गुरु गोरख नाथ जी महाराज ने देखा, सब चेले धूनी के सामने आनकर लाइन में जमा हो गए हैं तो अपने प्रमुख चेले औघड़नाथ से बोले। बेटा औघड़ नाथ, चटपट महारानी के लाये भन्डारे का भोग लगाकर सब सन्त शीघ्रता से निबटो। और डेरे तम्बू उखड़वाकर कूंच बोल दो। अब इन्हें वरदान देने के बाद यहां कोई काम नहीं रह जायेगा। इसलिए ठन्डे ठन्डे में यहां से कूंच कर कर देना ही, मुनासिब रहेगा। भोजन सामग्री भी ठन्डी हो रही है इसलिए देर करना वृथा है।

अपने गुरु का आदेश मिलते ही सबने एक एक पत्तल उठाकर लाइन बार बैठना शुरू कर दिया। और कपटिन बाछल के कर्मचारियों ने झटपट भोजन सामग्री पत्तलों पर परोसनी शुरू कर दो। इधर सन्त

महन्तों ने अपने गुरु गोरखनाथ जी महाराज का सुमरण कर उदर पूर्ती की, और उधर कपटिन काछल सोच सोच कर मुस्कराने लगी। वह अपने कपट पूर्ण व्यौहार से अति प्रसन्न थी कि मेरा फरेबगुरु गोरख नाथ जैसे त्रिकालदर्शी महात्मा भी नहीं समझ सके। जब इतने बड़े महात्मा भी कपट जाल में आ जाते हैं तो ऐरे गैरे नत्थू खैरे की तो बात ही क्या है। जब गुरुदेव से मुझे वरदान मिलते ही यहां से सब चले जायेंगे और महारानी बाछल तमाम जिन्दगी हाथ मलकर रोया करेगी। और मेरी सन्तान ही इस ददरेड़ा नगरी पर सदा सदा को राज्य करेगी।

सज्जनो, रानी बाछल ने इस कपटिन को सारी कथा सुनाकर सारे भेद बता दिए थे। उसी के बताये अनुसार गुरु गोरखनाथ जी की पूजा अर्चना करने लगी। कपटिन काछल की लीला देखकर गुरु गोरख नाथ ने योगमाया द्वारा सब जान लिया और मन ही मन सोच विचार कर निश्चय किया कि माता पिता का कर्त्तव्य है कि वह अपने बुरे बेटा बेटी का लालन पालन भले बेटा बेटी की तरह ही करे। परम पिता परमात्मा नास्तिक की भी उसी प्रकार सुध रखते हैं जैसे आस्तिक की। उन्हीं के बनाये हुए

नियम हम सन्त लोगों को भी बरतने पड़ते हैं। अच्छे नियमों में जो अच्छाई मिलती है बुरे नियमों मैं उसी प्रकार बुराई फलती फूलती नजर आती है। यानी जैसा बोया जाता है सोई काटने को मिलता है। किसी ने क्या ठीक ही कहा है।

दोहा–खोटी करनी जो करे, सो पीछे पछताय।
कांटे बोये बबूल के, आम मिलेंगे नाय।

मैं इस फरेबी औरत को जान बूझकर एक संतान के बजाये दो संतानों का वरदान दूंगा। जो कपट छल में इसी अपनो माता काछल के समान होवेंगे और कपटी होने के कारण ही बिना मौत मारे जावेंगे। महारानी बाछल के पुत्र द्वारा मारे जाने से ही इनकी अकाल मृत्यु होवेगी। इन्सान का इसमें कुछ बस नहीं चल सकता, ये तो धर्म अधर्म की लड़ाई है। पाप पुन्यात्मा का लेखा जोखा है। होना वही है जो प्रभु ने रच रखा है।

इस प्रकार अपने मन में तर्क वितर्क कर, योगेश्वर गुरु गोरखनाथ ने उस जगत पिता भगवान शिव शंकर का सुमरन किया और दो जौ के दाने, अपनी झोली में से निकालकर कपटिन काछल के हवाले किये और मुस्कराकर बोले। रानी हम तुम

से बहुत खुश हैं। तुम्हें हम ये दो दाने जौ के दे रहे हैं। तुम इन दोनों जौ के दानों को खा लेना। इन के खाने से ठीक नौ मास पर्यन्त तुम्हारे दो पुत्र जन्मेंगे।

योगेश्वर गुरु गोरखनाथ जी महाराज के वचन सुनकर कपटिन काछल फूली न समाई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। चटपट दोनों जौ के दाने कब्जे में कर गुरु गोरखनाथ को अपना मस्तक नवा राम गुण गाती, दोनों जौ के दानों को रास्ते में ही अपने मुंह में डाल जल्दी जल्दी चलकर अपने महल में जा पहुंची। उसे सबसे भारी भय इस बात का लग रहा था कि कही रास्ते में मेरी बहन बाछल महारानी मुझे न मिल जाए। जो उसने मुझे इस रास्ते से आता देख लिया, तो सारा भेद आप ही आप खुल जायेगा। वह तुरन्त ही समझ जाएगी ये बाग से गुरु गोरखनाथ जी महाराज के दर्शन करके ही लौट रही है। उसने अपने दास दासियों को भी पीछे छोड़ दिया। उनकी जरा भी परवाह नहीं की, अपने महल के कमरे में पहुंचकर ही सांस ली। तब उसके मन को धीरज आया। उसने चटपट अपने कपड़े पहने और अपनी बड़ी बहन रानी बाछल को

उसकी पोशाक वापस करके अपना मस्तक नवाया। हाथ जोड़कर बोली बहन जी अपने कपड़ों को संभाल लो। महारानी बाछल बोली संभल, गए बहन यहीं रख दो।

इतना कहकर अपने सिद्ध गुरु गोरखनाथ जी महाराज के भंडारे का सामान नौलखे बाग में ले चलने को अपने दास दासियों को आज्ञा दी। जल्दी से जल्दी भन्डारे की सकल सामग्री लेकर नौलखे बाग को चलो। वहां गुरु जी इन्तजार कर रहे होंगे। महारानी बाछल की बातें सुनकर कपटिन काछल अपने मन ही मन मुस्कराती हुई अपने महल के कमरे में जा पहुंची और मन ही मन खुश होती हुई कहती थी अब नौलखे बाग में क्या धरा है। सब साधू सन्त चले गए होंगे। जिसके भाग बनने थे बन गए। जिसके फूटने थे फूटे रह गए। इधर इस प्रकार कपटिन काछल सोच रही थी और उधर महारानी बाछल यह सोचते हुए कि गुरुदेव भूखे होंगे जल्दी जल्दी नौलखे बाग को पहुंचने का आदेश देने लगी और उधर गुरु गोरखनाथ जी महाराज की आज्ञानुसार सब साधू सन्यासियों ने अपने डेरे तम्बू बाग नौलखे से उखाड़ छकड़ों तथा बैलगाड़ियों में

भरवा और झोली खप्पर संगवा, मृगछाला कन्धे पर डाल ली और हाथ में कमंडल, बगल में चिमटा दबा, अपने सिद्ध गुरु की जय बोल चलने से ध्यान लगाया।

इधर रानी बाछल जब भन्डारे की सकल सामग्री लेकर नौलखे बाग में पहुंची तो वहां एक भी सन्त महन्त उसे नहीं दिखाई दिया और न कोई डेरा तम्बू ही। सिर्फ सन्तों की धूनी की राख जरूर पड़ी दिखाई दे रही थी। ऐसा नजारा बाग का देखकर और गुरुदेव को व साधू सन्यासियों को वहां न पा कर अति हैरान हो, माली मालिन से पूछने लगी। यहां से सब सन्त महात्मा लोग क्यों चले गए। क्या तुम लोगों को इसका कारण ज्ञात है। मैं तो गुरु गोरखनाथ जी महाराज की आज्ञानुसार, अपने हाथ से बनाकर भन्डारे की सकल सामग्री लेकर आई हूं। उन्हें इस प्रकार नहीं जाना चाहिए था। वह कब गए, कहां गए, तुम कुछ बता सकते हो तो मुझे जल्दी से जल्दी बताओ।

महारानी बाछल की घबराहट देखकर माली मालिन हाथ जोड़कर कहने लगे। महारानी जी बड़े ही ताज्जुब की बात है कि एक नारी आप जैसे ही

वस्त्र पहने अन्धेरे में ही भोजन सामग्री कहारों द्वारा बहगियों में भरवा, सब सन्तों को ज़िमा, दो पुत्रों का वरदान लेकर चली गई। आपकी बात सुनकर तो ये अन्दाजा लगता है। वह हम दोनों तथा सब साधू सन्तों को मय गुरू गोरखनाथ जी महाराज को भ्रम में डाल धोका देकर दो पुत्रों का वरदान लेकर चलती बनी और आपके करे धरे पर पानी फेर गई। अपने बाग के मालिन माली की बात सुनकर महारानी बाछल बोली। सन्त महन्तों को गए कितनी देर हो गई और वह किधर को गए हैं। सो मुझे शीघ्र बताओ।

सज्जनो, महारानी बाछल की परेशानी सुनकर बाग के माली मालिन बोले। महारानी जी, उन्हें गए ज्यादा देर नहीं हुई है मुश्किल से मील आधा मील ही पहुंच पाए होंगे। वह सन्त लोग इधर को ही गए हैं। वह सामने ही उनके झन्डे दिखाई दे रहे हैं। क्या शंख घड़ियालों की आवाज आपको नहीं सुनाई पड़ रही है। हमें तो खूब सुनाई पड़ रही है। जरा इधर मुंह घुमाकर देखो, उनके झन्डे बिल्कुल साफ दिखाई दे रहे हैं। अपने माली मालिन की बात सुनकर महारानो बाछल हक्की

बक्की सी अपनी निगाह उठाकर चारों तरफ देखने लगी। तब उसे सन्तों महन्तों के झन्डे दिखाई दिए। और धीमी आवाज घन्टे घड़ियालों की भी उनके कान में सुनाई पड़ी। उसे अपनी बहन काछल के कपट जाल को समझने में एक पल की भी देर न लगी।

वह घबड़ाकर अपने सब दास दासियों तथा कहारों से बोली, तुम लोग भण्डारे की सब भोजन सामग्री लेकर मेरे पीछे आओ। मैं अपनी चार घोड़ों वाली बग्गी में बैठकर शीघ्र ही साधू सन्तों को रोकने की कोशिश करूंगी। तब तक तुम लोग वहां पहुंच जाओगे जहां ये भगवा रंग के झन्डे दिखाई दे रहे हैं तथा घन्टे घड़ियालों की ध्वनि सुनाई दे रही है। अपने सभी नौकरों को आदेश दे रानी बाछल बग्गी में सवार हो चन्द मिनटों में ही गुरु गोरख नाथ जी महाराज की जमात में पहुंच गई।

सज्जनो ! जब गुरु गोरखनाथ जी महाराज ने दूर से रानी बाछल को बग्गी में बैठे अपनी जमातकी ओर आते देखा। पास पहुंच, अपने गुरू के दर्शन कर महारानी बाछल की आंखों से मोतियों के समान टपा-टप आंसुओं की धारा बहने लगी। वह अपने दोनों

हाथ जोड़ कर निराश हो बोली, गुरुदेव, मैं बड़ी अभागिन हूं, न मालूम पूर्व जन्भ में मैंने कितने पाप किए थे जिनका फल इस जन्म में भोग रही हूं। आप की दया होने पर भी हवन करते हाथ जल जाते हैं। ये पापों का ही परिणाम है। मैं आपकी आज्ञा अनुसार रात भर मर खप कर अपने हाथ से बना भोजन सामग्री लेकर ठीक समय पर बाग में आन पहुंची और आप सब लोग उससे पहले ही यहां चले आए। ये मेरे भाग्य का ही दोष जान पड़ता है। जब मैं नौलखे बाग में पहुंची, उससे पहले ही आपकी जमात डेरे तम्बू उखाड़कर यहां तक आन पहुंची। गुरु गोरख नाथ जी महाराज तो अपनी भक्त रानी की परीक्षा ही ले रहे थे। वह गुस्से में भरकर मुंह बिगाड़ कर बोले।

ओ औघड़! ये क्या बात है। अभी-अभी जरा देर पहले तो इसे वरदान दिया था और ये अब फिर हमें दुखी करने आन पहुंची। ये सब क्या बात है। सन्त औघड़ नाथ ने महारानी बाछल के सामने पहुंच सकल बात भली प्रकार समझी और कपटिन काछल का कपट जाल अच्छी प्रकार समझ लिया। आज हमारे गुरुदेव भी कपटिन काछल के धोके में फंस

धोका खा गए। सन्त औघड़नाथ अपने दोनों हाथ जोड़कर गुरु गोरखनाथ जी महाराज से बोले, गुरुदेव इस मायावी संसार से आप भी धोका खा गए। कपटिन वरदान ले भागी और आपकी भक्तिन ये ददरेड़ा नगरी की महारानी बाछल, चौहान वंश उजागर राजा जेवरसिंह की धर्म पत्नी, जिन्हें आप की जोत बालते मुद्दतें गुजर गई, आपके प्रसन्न हो जाने पर ये आपकी दया पात्र थी। इसी लिए हम सब लोग आपके साथ बागड़ देश आए थे। वह तो हम सब सन्तों की दिनरात सेवा करके भी खाली हाथ रह गई और कपट वेषधारी दूसरी नारी आपको धोखा देकर वरदान ले चम्पत हो गई।

अपने चेले सन्त औघड़नाथ की सकल वार्ता सुनकर योगेश्वर गोरखनाथ जी महाराज अपनी दोनों आंखें लाल लाल कर बोले। अच्छा! तो अब इतना खराब जमाना आ गया कि सन्त महन्तों के साथ भी ये लोग धोका-धड़ी करने में नहीं चूकते। मुझे भी देखना है धोका देकर जायगी कहां। इतना कह कर गुरु गोरखनाथ जी महाराज ने अपना कमण्डल हाथ में उठा लिया। थोड़ा सा जल कमण्डल में से लेकर ‥ना चुल्लू भरा और जब मन्त्र पढ़कर श्राप देने को

हुए तभी महारानी बाछल अपने दोनों हाथ जोड़कर एकदम रोती हुई बोली गुरुदेव मैं सब समझ गई अब आप दया करें।

इतना सुनते ही योगेश्वर गुरु गोरखनाथ जी महाराज बोले, कौन थी वह प्रपंचनी, साफ साफ क्यों नहीं बताती। महारानी बाछल बोली गुरुदेव वह कोई गैर नहीं थी। मेरी खास सगी बहन है जिसका नाम काछल है। जब मैं आपके भण्डारे का इन्तजाम करने अपने महल में पहुंची तो काछल ने मेरे चेहरे पर खुशी के आसार देखकर पूछा था।

बहन ! आज तुम्हारे चेहरे पर अति खुशी झलक रही है। इसका क्या कारण है। मैंने गुरुदेव के प्रसन्न होने और वरदान मिलने की सम्पूर्ण वार्ता उसे ब्यौरे-वार जो भी मेरे मन के भीतर थी, समझा दी। उसने मुझसे सम्पूर्ण विवरण समझकर कहा, बहन मैंने देवी के नौ दिन के ब्रत किये हैं जो आज पूरे हो गए हैं। अब मुझे तुम अपनी पोशाक पहनने को दे दो। मैं भी अभी पूजन से निपटकर वापिस भिजवा दूंगी। पुरोहित जी ने मांगे हुए कपड़े ही पहनकर पूजन का विधान बताया है। मैंने अपनी बहन को सीधे स्वभाव कपड़े उठाकर पकड़ा दिये। वह जल्दी जल्दी उल्टा

सीधा भोजन बना आप लोगोंको जिमा व चटपट वर-दान लेकर घर जा पहुंची और मेरी पोशाक मुझे वापिस भिजवा दी। इस तरह देवी के पूजन के बहाने उसने मुझे भी अपने कपट जाल में फांस लिया। श्री गुरु महाराज मैं उसका माया जाल उस समय न समझ पाई परन्तु अब अच्छी तरह जान गई हूं। गुरु देव उसकी कोई खता नहीं है। वह भी बांझ थी। उसने वरदान लेने की अपनी कपट की योजना ही पुत्र प्राप्ति का साधन ठीक समझा। और वह अपने उद्देश्य पूर्तिमें बिना दुख उठाए ही कामयाब भी होगई इसलिए वह दया की पात्र है। आप उसे श्राप न दें। वह भी बिना संतान के मेरी तरह ही दुखी है।

महारानी बाछल के वचन सुनकर गुरु गोरखनाथ जी महाराज मन ही मन अति प्रसन्न हुए और कहने लगे वाह रे भारत की सन्नारी देवियों, तुम कितनी उदार और दयावान हो। इसलिए तुम्हारी मनो-कामना कैसे अधूरी रह सकती है। फिर प्रत्यक्ष में परीक्षा लेने के लिए बोले, परन्तु महारानी उसने तो बड़ा भारी धोका दिया है। मैंने तो तुम्हारे धोके में उसे दो पुत्रों का वरदान दे दिया। मेरे पास सिर्फ दो ही दाने जौ के सिद्ध किए हुए थे। अब तो मेरे पास

और कोई साधन नहीं है । उसका भाग्य अच्छा था वह अपने पुन्य प्रताप से एक के बदले दो पुत्रों का वरदान ले भागी । तुम्हारे भाग्य का सितारा मध्यम था, तुम अपने पूर्व जन्म के पाप के कारण हाथ मलती रह गई । अब ऐसा करना, उसके दो पुत्र जन्म लेंगे। उनमें से एक उससे मांग कर तुम पाल लेना और अपना ही बेटा समझकर उसका पालन-पोषण कर अपना कलेजा ठन्डा करना । और अपने प्रमुख चेले संत औघड़नाथ से बोले ।

औघड़ अब तुम रानी बाछल से कहो अपने घर जावे, सन्तों को व्यर्थ परेशान करना ठीक नहीं होता, सन्त औघड़नाथ ने जब अपने गुरुदेव को इस प्रकार रूखा उत्तर देते देखा तो अपने मन में बड़ा हैरान हुआ फिर अपने गुरुदेव से हाथ जोड़ कर बोला, धन्य है गुरुदेव तुम्हारी माया को । कपट वेष धारी मायाविनी नारी को दो दो पुत्रों का वरदान और अपनी पक्की भक्त सती सुशीला नारी जो छल कपट से एकदम सौ-सौ कोस दूर है वह एक पुत्र से भी वंचित रह जावे । क्या इसे एक पुत्र का वरदान देने में आपके खजाने में कमी आ जायेगी ? क्या करूं मैं भी बेबस हूं । गुरू शिष्य का नाता है नहीं तो मैंने

आपसे क्या नहीं सीखा ।

अपने चेले औघड़नाथ की बात सुनकर गुरुगोरख नाथ जी महाराज अपने दोनों नेत्र बन्दकर समाधिस्थ हो सीधे पाताल लोक जा पहुंचे जहां नागों का राजा बासुकी राज्य करता था । राजा बासुकी ही सब नागों का राजा था । उसके भरे दरबार में गुरु गोरख नाथ जी महाराज जा पहुंचे । जब राजा बासुकी ने निगाह उठाकर गुरु गोरखनाथ जी महाराज को देखा तो अपने दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम किया । तब गुरु गोरखनाथ महाराज ने राजा वासुकी को आशीर्वाद दिया । राजा बासुकी हाथ जोड़ कर बोले, गुरुदेव ! सिंहासन की शोभा बढ़ावें और यहां आन कर दर्शन देने का अभिप्राय अपने दास को बतावें ।

राजा बासुकी के मधुर रसभरे बैन सुनकर योगेश्वर गुरु गोरखनाथ जी सिंहासन पर विराजमान हो गए और राजा बासुकी से कहने लगे, हे राजन! मैं आपके पास जरूरी कामसे आया हूं मुझे अपनी चेली रानी बाछल को एक सन्तानका वरदन देना है और भगवान ने उसे सन्तानहीन यानी बांझ बनाया है उसके भाग्यमें सन्तान लिखी ही नहीं है । परन्तु मुझे उसे ऐसा वर-दान देना है कि उसके इस पुत्र को भारत वर्ष के क्या

विदेशों तक के लोग हमेशा किसी न किसी रूप में पूजते रहें और इसकी पूजा करने वालों की मनो-कामना पूरी होती रहे। और सब लोग इसे ही अपनी मनो कामना पूरी करने वाला देवता समझते रहें।

राजा बासुकी अपने दोनों हाथ जोड़कर बोले, गुरुदेव जिसे आप उचित समझें ले जायें। मुझे आपसे कोई उज्र नहीं है। आप चाहें तो तक्षक को लेजायें, और आज्ञा हो तो मैं खुद आपके साथ चलूं। ये कौन नहीं चाहेगा कि मुझे दुनियां के लोग देवता के समान पूजें। जैसी भी आज्ञा गुरुदेव करेंगे सेवक हुक्म का पालन करेगा। श्री गुरु गोरखनाथ राजा बासुकी की प्रेमभरी नम्र वाणी सुनकर बोले हे राजन मुझे सिर्फ पदम नाग की दरकार है और किसी की आवश्यकता नहीं।

राजा बासुकी ने अपना शीश झुकाकर गुरु गोरख नाथ जी महाराज की आज्ञा मान मन्त्र जपा। मन्त्र के पढ़ते ही पदमनाग हाजिर हो गया और राजा बासुकी व गुरु गोरखनाथ को अपना शीश झुका कर प्रणाम किया। राजा बासुकी और गुरु गोरखनाथ ने आशीर्वाद दिया। युग युग जियो बेटा। फिर राजा

बासुकी ने उस पर अपना हाथ फेरा और देखते ही देखते उसका चोला बदल गया। वह मनुष्य के समान अति सुन्दर दिव्य देहधारी राजकुमार बन गया और दोनों हाथ जोड़कर पूंछने लगा, राजन ! मुझे क्या आज्ञा है। राजा बासुकी बोले बेटा पदम नाग ! अब अब तुम्हें इन योगेश्वर गुरु गोरखनाथ जी महाराज के साथ जाकर इनकी आज्ञा पालन करना है। ये योगेश्वर महान सन्त सिद्ध आत्म पुरुष हैं। इनका अवतार ही भक्तों का दुख हरने के लिए हुआ है। इनकी आज्ञा मानकर चलने में ही हम सब का कल्याण तथा मोक्ष प्राप्ति का सरल उपाय है।

पदम नाग ने अपने दोनों हाथ जोड़कर गुरु गोरख नाथ जी महाराज को प्रणाम किया और बोला, गुरु जी सेवक को आज्ञा करें। योगेश्वर गोरखनाथ बोले बेटा पदम नाग तुम्हें मेरा आशीर्वाद है कि तुम सारे संसार में पूजे जाकर मेरा नाम भी रोशन करोगे। अब तुम मेरे धूने पर जाकर जो गूगल वेद मन्त्रों द्वारा सिद्ध करी हुई धरी हुई है सूक्ष्म शरीर से उसमें समा जाओ। जब महारानी बाछल उसका सेवन करले तब तुम उसके गर्भ में जा विराजना।

सज्जनो ! पदमनाग ने तुरन्त ही गुरु गोरखनाथ

जी महाराज की आज्ञा का पालन किया। वह तुरन्त ही धूनी पर पहुंच, गूगल के भीतर जा विराजा। इधर पदमनाग ने गुरु आज्ञा का पालन किया उधर गुरु गोरख नाथ ने अपनी दोनों आंखें खोलकर समाधी भंग की। समाधी तोड़ने पर वह क्या देखते हैं कि महारानी बाछल, तन मन धन से, गुरु सेवा में तल्लीन है। उसके सरके बाल बिखरे हुए हैं, चेहरा काला स्याह पड गया है, आंखें सूज रही हैं। गोरख नाथ जी महाराज ने रानी बाछल के शीश पर हाथ रखकर कहा, रानी तूने बड़ा कष्ट उठाया है। इतना सुनते ही रानी बाछल की आंखों से मोती के समान आंसुओं की वर्षा होने लगी। गरु गोरखनाथ ने कहा रानी, तुम्हारी तपस्या पूरी हुई। अब तुम्हें मनचाहा वरदान दूंगा। गुरु गोरखनाथ के इतना कहते ही, रानी बाछल अपने सारे कष्टों को भूल गई। उसके चेहरे पर चमक और आंखों में रौनक दिखाई देने लगी। महारानी बाछल का दिल बाग बाग होकर गुरु गोरखनाथ के चरणों में झुक गया। उसे अपनी मनोकामना पूरी होती नजर आने लगी। उसके चेहरे पर नूर टपकने लगा।

प्यारे बन्धुओ! महारानी बाछल का मस्तक

योगेश्वर गुरु गोरखनाथ के चरणों में झुक गया। वह अपने गुरु को बारम्बार प्रणाम करने लगी। योगी राज बोले, रानी मस्तक ऊंचा करके अपना हाथ बढ़ाओ। रानी बाछल ने गुरु आज्ञा का पालन कर अपना मस्तक उठा कर हाथ आगे कर दिया। सिद्ध गुरु गोरखनाथ जी महाराज ने हव्य नाम की गूगल अपनी धूनी से उठाकर जिसमें पाताल लोक वाला पदमनाग भी सूक्ष्म रूप धर कर विराजमान था। और अपनी बांई जांघ की मैल से एक बत्ती सी बट कर बनाई और मैल और गूगल को एक जगह मिला कर बोले।

बेटी बाछल! ये परशादी रूपी गूगल खाना। इस सिद्ध करी हुई महान गूगल के प्रताप से तुम्हें वीर धीर पुत्र की प्राप्ति होगी। जिसका यश भारत-वर्ष में तो फैलेगा ही विदेशों में भी देवता की भांति लोग इसे पूजेंगे। क्योंकि इसका मिला हुआ वरदान भक्तों की मनोकामना पूरी करेगा। इसीलिए इसे हर जाति के नर नारी पूज करके अपना मस्तक झुकाया करेंगे। इस गूगल को जो भी बांझ परशादी रूप में खायेगी वह भी वीर धीर सन्तान की जननी बनेगी।

तुम्हारी कपटिन बहन काछल के जो पुत्र जोड़ा नामधारी जन्मेंगे, वह भी अपनी माता के समान ही कपटी होंगे। अपने कपटी स्वभाव के कारण ही तुम्हारे पुत्र द्वारा मारे जावेंगे। तुम्हारी कपटिन बहन काछल अपने स्वभाव के कारण ये भी न सोच सकी कि परशादी का जौ का दाना एक साथ न खा कर कुछ दिन आगे पीछे एक एक कर खाना चाहिए। दोनों एक साथ खाने से दोनों सन्तानें एक साथ ही जन्म लेंगी। उससे उसे बड़ी भारी तकलीफ उठानी पड़ेगी। दो सन्तानों से उसके पेट की दशा क्या बनेगी। दुष्टा को अपने अन्याय का नतीजा न्यायकारी ईश्वर की तरफ से खुद व खुद मिल जाएगा। अच्छा अब तुम जा सकती हो। हमारा भी अब यहां से चलना ही ठीक है। रमता जोगी बहता पानी ही ठीक होता है।

अपने सिद्ध गुरू गोरखनाथ के वचन सुनकर महारानी बाछल गूगल की परशादी ले और गुरु गोरखनाथ को प्रणाम कर अपने महल में आ गई और अपनी सास राजमाता रामकौर के चरन छूकर आशीष प्राप्त कोनी। रानी बाछल को महल में आया देखकर सभी सखी सहेलियां व दास दासियाँ

जुड़ आईं। और तरह तरह के प्रश्न और उत्तर देने और सुनने लगीं। महारानी बाछल ने भी सिद्ध गुरु गोरखनाथ जी महाराज की तारीफ कर करके वह हव्य रूपी गूगल दिखाई। जिसे देखकर सब के चेहरों पर प्रसन्नता झलकने लगी। परन्तु जो बांझ सहेलियां थीं उनके चेहरे पीले पड़ गए, मुंह पर जरदाई छा गई, और किसी किसी की आंख से तो आंसुओं की धारा भी बहने लगी। परन्तु अपनी हम जोलियों का दुख, दयालु महारानी बाछल से नहीं देखा गया। उसने अपने मन में विचारा क्यों न उस हव्य गूगल में से थोड़ा थोड़ा इन्हें भी खाने को दे दूं। दया धर्म की नाव के खुद प्रभू खेवन हार हैं। इस प्रकार अपने मन में विचार कर भगवान के भरोसे गुरु गोरखनाथ का ध्यान धर, थोड़ी थोड़ी गूगल तोड़कर परशाद रूप में सभी बांझ नारियों को बांट दी।

पदमनाग महारानी बाछल की यह लीला देख कर पहले तो हैरान हुआ फिर सोच विचार कर अपना थोड़ा थोड़ा अंश सहेलियों की गूगल में भी छोड़ दिया। महारानी बाछल ने अपनी बांझ सहेलियों से कह दिया इस परशादी रूपी गूगल को

ताजे पानी के साथ निगल लेना। पंडतानी ने उसी समय तुरन्त पानी पीकर गूगल को निगल लिया। और उसके बाद लूना चमारी ने भी पंडतानी की देखा देखी पानी के साथ निगल लिया। उसके बाद दासी ने खाया, फिर हाथ जोड़कर दासी रानी बाछल से बोली। महारानी जी, अपनी नीली घोड़ी भी तो बांझ ही है। थोड़ी गूगल उसके दाने में भी क्यों न मिला दी जाए, शायद उसके भी भाग जाग जायें। दयालु महारानी बाछल ने दासी के कहने से थोड़ी गूगल अपनी लीली घोड़ी के दाने में भी मिलवादी और बाकी बची हुई गूगल गुरु गोरखनाथ महाराज का ध्यान धर प्रभू का नाम स्मरण कर पानी के साथ आप खुद सटक गई। ईश्वर इच्छा बलवान कहकर, संतोष की सांस ली।

एक दिन महारानी बाछल का सईस लीली घोड़ी को टहलाने व पानी पिलाने तालाब पर ले गया। उसने घोड़ी को पानी मिलाकर पास ही एक पेड़ से बांध दिया और आप अपने कपड़े उतार तालाब में घुस नहाने में लग गया। भगवान की दया हो या गुरु गोरख नाथ जी महाराज की कृपा स्वर्ग लोक के राजा इन्द्र का घोड़ा उसी तालाब के

निकट आ पहुंचा और लीली घोड़ी को बंधा देख समागम कर इन्द्र लोक को उड़ गया। स्वर्ग लोक में पहुंचकर अपने थान पर जा पहुंचा। सईस ने नहाते-नहाते यह सारी घटना अपनी आंखों से भली प्रकार देखी थी। और अपने संगी साथियों को सुनाई थी। जिसके कारण महल के सभी दास दासियों, वगैरह, वगैरह को पता चल गया था।

जब ये खबर महारानी बाछल को महल के दास तथा महारानी की सहेलियों ने सुनाई। जिन्होंने गुरु गोरखनाथ जी महाराज की दी हुई हव्य गूगल का सेवन किया था तो उन्होंने भी अपने अपने पतियों के संग प्रेमालाप किया। महारानी बाछल पर भी गूगल ने अपना प्रभाव किया और उन्हें भी गूगल की तासीर का पता अपनी सखियों की तरह शीघ्र ही चल गया। वह घबराकर खिसियानी सी होकर अपनी सास राजमाता रामकौर के पास जा पहुंची। जिसे सुनकर वह भी सोचने लगी, देखो दुनिया के लोगों पर इस बात का क्या असर पड़ेगा। ये दुनिया बड़ी विचित्र है। इन दुनिया वालों ने सतवन्ती सीता जी को भी नहीं बख्शा। उन्हें भी कह दिया, जब ये रावण के घर रह आईं तो राम के

किस मतलब की रह गई। मेरा बेटा घर होता तो कोई बात नहीं होती। बाछल रानी की नन्द छवीलदे उस समय अपनी सुसराल गई हुई थी वह भी मौजूद होती तो रस में विष शायद इस प्रकार न घुलता।

* श्री गोगा पुराण बाईसवां अध्याय समाप्त *

तेईसवाँ अध्याय

महारानी बाछल को जब उनकी सास रामकौर का कोई तसल्ली बख्स जबाब न मिला तो वह अपने मन में अधीर हो धीरज को खो मन ही मन चिन्ता के कारण दुखी हो सूखने लगी। मैं अपनी शक्ल किसी को किस प्रकार दिखाऊंगी। दुनिया के लोग लुगाई मुझे क्या कहेंगे। पतिदेव का आज तक कोई पता नहीं है। उन्होंने अपने आप आज तक खबर नहीं ली और तलाश करने पर भी मिले नहीं। जाने कहां छुपे हुए हैं। गुरु गोरखनाथ जी महाराज की परशादी रूपी गूगल अपना पूरा असर दिखा रही है। आखिर देवता का वरदान है। असर क्यों न दिखलावे।

मेरी जिन जिन बांझ सखी सहेलियों ने गूगल खाई है सब ही के पेट फूलने लगे हैं। फिर भी उन

की बात है। उनके पति तो उनके साथ घर ही पर तो रहते हैं। मुझे तो अपना हाल महारानी कुन्ती जैसा होता दीखता है जिन्हें भगवान भुवन भाष्कर (सूर्य) के वरदान के कारण कुवांरेपन में ही लड़के का जन्म हो गया था और महारानी कुन्ती ने अपने पिता के घर ही पर अपने कुवांरेपन के डर के कारण दुनिया से भयभीत हो उस सूर्य पुत्र (देवता के परशाद) को एक सन्दूक में छिपाकर गंगा नदी में दुनिया की नजर बचाकर बहा दिया था। जिसे अधीरथ नामक सारथी ने उस सन्दूक को नदी से निकाल लिया था जिसमें वह अबोध सुकमार बालक बड़ी बुरी तरह घबरा कर रो रहा था। उसे अधीरथ नामक सारथी ने सन्दूक से निकाल अपनी छाती से चिपटाकर प्यार करके पुच-कारा था और बालक के चुप हो जाने पर अपनी पत्नी जिसका नाम राधा था, की गोद में दे दिया था। उस भारत वर्ष की सती नारी ने अपनी छाती का दूध पिला पिलाकर पुचकार पुचकार कर उसे पाल पोस कर बड़ा किया था। ये ही सुकमार बालक आगे चलकर दानवीर कर्ण के नाम से दुनियां में पुकारा जाने लगा। महाभारत की लड़ाई में अर्जुन

के हाथ से मारा गया। इस वीर ने भगवान कृष्ण के समझाने पर भी पाण्डवों से दुश्मनी नहीं छोड़ी थी और दुर्योधन के साथ अपनी भरपूर मित्रता निभाई थी। इस बहादुर के मारे जाने में भगवान कृष्ण को चालाकी भरे बड़े बड़े उपाय करने पड़े थे। इस प्रकार बाछल महारानी सोच फिकर करके महा दुखी होती थी। वह सोचती थी महारानी कुन्ती का जमाना दूसरा था उस समय के समाज की नीतियां दूसरी थीं। अब प्रथायें बदल चुकी हैं। मेरी तो समझ में कुछ आ ही नहीं रहा है।

सज्जनो ! महारानी बाछल इसी प्रकार चिन्ता फिकर कर महान दुखी थीं और उनकी कपटिन बहन काछल इसी ताक में रहती थी कि मैं अपने कपट जाल में इसे किस तरह फांसूं। कौन सा ऐसा जाल रचूं जो बाछल महारानी का खाना पीना हराम तथा जीना दूभर हो जाय। उसकी सगी बहन मां की जाई थी इसलिए जो भी वार करती थी दुनिया से डरकर कि कोई मुझे निरदई व खोटी कहने का साहस न करे। मुंह की मीठी भी बनी रहूं और चोरी छिपे निशाना मारने से भी न चूकूं।

इधर काछल का कपट जाल था उधर बद-

किस्मती से महारानी बाछल की नन्द छबीलदे भी अपनी ससुराल से पीहर में आन विराजी। आनकर अपने पिता महाराज उम्मरसिंह को प्रणाम किया और अपनी माता रानी रामकौर के गले मिल मिल कर जी भरकर खूब रोई। छबीलदे के रोने की आवाज सुनकर कपटिन काछल भी अपने कमरे से आन कर नन्द रानी के पैर छूकर छबीलदे के गले से चिपटकर प्रेम दर्शा दर्शा कर खूब रोई। फिर थूक के आंसू पोंछ कर अपनी नन्दरानी से उसकी ससुराल की राजी खुशी पुछी और अपने नन्दोई के हालचाल भी मुस्करा मुस्करा कह पूंछे। बातें करती करती नन्द छबीलदे को अपने कमरे में ले आई और पलके पर बैठालकर नन्दरानी के पैर छूकर छबीलदे से आशी-र्वाद प्राप्त किया कि भाभी दूधों नहाओ पूतों फलो। आशीर्वाद देकर छबीलदे ने पूछा, भाभी बड़ी भाभी दिखाई नहीं पड़ रही हैं वह क्या अपने पीहर गई हैं या तबियत वगैरह खराब है।

छबीलदे का प्रश्न सुनकर कपटिन काछल का काफी खून बढ़ गया। मारे खुशी के उसका चेहरा खिल उठा। मुंह की मुस्कराहट से आंखों में बिजली जैसी चमक पैदा हो गई। वह अपने मन में सोचने

लगी, या तो मेरी बहन बाछल का गर्भ गिराया जाएगा या उसे जान से ही मार दिया जाएगा। वह मुंह तो किसी को दिखाने लायक रह ही नहीं गई। बहुत मुमकिन है वह खुद ही शर्म के मारे किसी तालाब पोखर या कुंए आदि में कूद कर डूब मरे।

इस प्रकार अपने मन में निश्चय कर अपनी नंद छबीलदे से हाथ जोड़कर कान के पास मुंह लगा कर धीरे धीरे कहने लगी, नन्दरानी ! बड़ी वैसी बात है, किसी से कहना नहीं और मेरा नाम तो बिल्कुल भी आना ही नहीं चाहिए। तुम्हें मेरी सौगंध है जो मेरा रत्ती भर भी नाम लो। आज कल बाछल बहन जी अपने कमरे में ही पड़ी रहती हैं। लाज के कारण हर किसी को अपना मुंह दिखाने में भय मानती हैं। ऐसा लगता है किसी साधू सन्यासी से अपना मुंह काला करवा बैठी हैं। ये तो ठीक है गुरु गोरख नाथ जी महाराज ने हम लोगों को भी पुत्रवती होने का वरदान दिया है परंतु बिना अपने पति से मिले तो गर्भ ठहर ही नहीं सकता। नन्दरानी जी दोनों कुलों की नाक जड़ से कट गई है। मेरी आपसे हाथ जोड़कर बार बार मे ही प्रार्थना है कि मेरा नाम न

आने पाए। हमारा मां जाई बहनों का मामला है। मैं क्या करूं मेरे पेट में बात छिपती ही नहीं। मैंने तुम्हें अपना जानकर ही सब कुछ बता दिया है। आशा है तुम मेरे मुंह पर कालिख नहीं पुतवाओगी।

सज्जनों ! अपनी छोटी भावज कपटिन काछल की बातें सुनकर छबीलदे दहकते अंगारे के समान जल भुनकर कोयला बन गई और कपटिन काछल से बोली, भाभी जी ! अगर तुम्हारी बात में रत्ती भर भी सच्चाई निकली तो मैं इस महारानी बाछल भाभी को जड़ मूल से ही नेस्त नामूद कर दूंगी। इसने मुझे अभी समझ क्या रखा है। ये हमारी जड़ मूल से नाक काटे और ये सांपिन हमसे बच कर निकल जाय। मुझे भी छबीलदे कौन कहेगा जो इसे जिन्दी जमीन में गड़वाकर इसका मीठा मांस खूनी कुत्तों को न खिलवाया। सीधी सी बात है, जब भैया वन में हैं तो इसके गर्भवती होने का क्या कारण हो सकता है।

नन्द छबीलदे गुस्से में चूर आपे से बाहर होती हुई धरती में पैर पटकती हुई महारानी बाछल के कमरे में जा पहुंची और शेरनी के समान सोती हुई

रानी बाछल की चुनरी को झटका मार कर सोते से जगा दिया। रानी बाछल गहरी निद्रा में सो रही थी और उन्हें कोई सपना दीख रहा था जिसके कारण वो बेहोश सी सोई पड़ी थीं। जब उन्होंने निद्रा से एकदम जागकर, अपनी आंख खोल कर देखा तो अपनी नन्द छबीलदे की त्यौरी चढ़ीं देखकर, चिंता मग्न हो बुरी तरह घबरा गई। फिर अपने मन में धीरज धारण कर नींद पर काबू पा अपनी नन्द छबीलदे के चरण छूकर प्रणाम कर बोली, नन्दरानी जी आप कब आईं मैं सो गई थी इसलिए आपके आनेका मुझे कुछ पता ही नहीं पड़ा।

रानी बाछल पूरी बात कहने भी न पाई थी कि छबीलदे ने शेरनी की तरह गरजकर उसे जोर से धक्का देकर ऊपर से अपने पैर की एक लात लगाई और महारानी बाछल से बोली परे हट पापिन ! तुझे मेरे पैर छूने का क्या अधिकार रह गया है। दोनों कुलों की जड़ से नाक काटकर सन्त महन्तों से मुंह काला कराकर डायन पेट फुलाए कैसी सुघड़ लग रही है। देख मैं अभी तेरा इलाज कर, तेरी मस्ती झड़वाती हूं। तूने अपने आप को समझ क्या रखा है।

कलेजा कांप गया। उसे अपने सुसर की मन गड़न्त बातें समझते देर न लगी कि नन्द छबोलदेई ने ही नमक मिर्च लगाकर इनके कान भरे हैं। मेरी सास रामकौर को भी इन दोनों बाप बेटो के सामने बोलने की हिम्मत नहीं पड़ती। उनकी बिना सलाह ही ये दोनों बाप बेटी मिलकर मुझे मेरे पोहर भेजने पर उतारू हैं। मेरी तो सांप छछूंदर जैसी गति है न उगले बने न खाते। अगर मेरे पति मेरे पीछे यहां आ भी गये तो इन दोनों के बहकावे में आनकर वह भी बहक जावेंगे। मैं किस प्रकार धीरज धारण करूं। इससे तो मैं बांझ ही भली थी। बांझ रहने में मुंह काला करवा पीहर तो न जाना पड़ता। अपनी नींद सोती अपनी नींद उठती। प्यारे सज्जनो, महारानी बाछल ने रात भर रो रोकर अपने दोनों नैन सुजा लिये कोई भी उसके पास ऐसा न था जो उसके आंसुओं को पोंछकर उसको धीरज बंधाता। उसने हिम्मत करके पीहर जाने की तैयारी शुरू करदी और अपना बहुत जरूरी सामान बांधकर शीघ्र ही फारिग हो गई।

ठीक चार बजे रथवान ने रथ लेकर राज महल की डियौढ़ी पर आनकर आवाज दी। महाराजा

साहिब रथ आन पहुंचा है जिन्हें सिरसा पाटन जाना है शीघ्र तैयारी करके भिजवाओ अपने रथवान की आवाज सुनकर महारानी बाछल अपने सामान का बक्स उठाकर रथ में चढ़कर आन बैठी और कलेजे पर पत्थर रखकर रथवान को रथ हांकने की आज्ञा दी।

प्यारे भाइयों, अकेली रानी बाछल को रथ में सवार देख और रथ हांकने की आज्ञा सुन रथवान को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह मन ही मन कहने लगा। हे प्रभू! अकेली रानी राजा जेवरसिंह की बहू इस प्रकार पीहर क्यों भेजी जा रही है। जरूर कुछ न कुछ दाल में काला है जिसकी वजह से इनके संग में न कोई नौकर नौकरानी हैं न दास दासी हो। रानी की शकल से भी साफ पता चल रहा था कि वह बहुत ही उदास व चिन्ताजनक दशा में बैठी हुई है इस प्रकार रथवान ने अधीर हो अपना धीरज खोकर बेमन से रथ हांक दिया। जब रानी का रथ चला तब गुरु गोरखनाथ की माया से रथ के चलने की झंकार पातालपुरी तक जा पहुंची। राजा वासुकी के कान खड़े हुए। वह अपने मन में विचारने लगें कि ऐसी झंकार तो राजा जन्मेजय के

रथ की हुआ करती थी। जिसने यज्ञ करके हम नागों को कुलो हवन कुन्ड द्वारा भस्म करवा दी थी।

अब ये कौन दुशमन जन्मेजय के समान पैदा हो गया। क्या ये फिर नाग वन्स का दमन करेगा। इस प्रकार सोच समझकर राजा बासुकी ने तुरन्त ही नागों की सभा बुलाई। तब राजा बासुकी ने भरी सभा में सब नागों को अपनी तरफ मुखातिब करके अपनी सब व्यथा समझाई और कहा कि मुझे पता पड़ा है कि जो नारी रणभेरी माता वाले वन में इस समय ठहरी हुई है उसी के गर्भ में जो बालक है वह खास राजा जन्मेजय को तरह ही है। दुशमन की ताकत का अन्दाजा लगाना बड़ा मुश्किल काम है। इसलिये मौके से नहीं चूकना चाहिये।

इस समय वह दुखी रानी अपने पीहर जा रही है और रथ वट वृक्ष के नीचे खड़ा है और वह रथ में गहरी नींद में सो रही है। नीचे रथवान सो रहा है और पास ही बैल बन्धे हैं। मेरी दिव्य दृष्टि इतना ही काम कर सकती है। अब तुम में से कोई भी विषधर वहां पहुंचकर उन बैलों और रथ-वान को डस कर मार डालो तो वह स्त्री और उस का गर्भ बिना दाना पानी के उस वन में खुद ही

बिना मौत मरकर अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जावेंगे।

राजा बासुकी से राजा जन्मेजय का नाम सुन कर सभी नागों की हवा सरक गई। उनकी बोलती बन्द हो गई शरीर से पसीना टपकने लगा। मुंह से बोल तक निकलना बन्द हो गया। जब राजा बासुकी ने सभी नागों की बुरी दशा देखी तब ताखी नाग की तरफ इशारा करके बोले ताखी राजा जन्मेजय से तूने ही बाजी जीती थी। मुझे सिर्फ तेरा ही एक भरोसा है मैंने स्वर्गलोक के राजा इन्द्र से सहायता दिलवाकर उस महायज्ञ में तेरी रक्षा की थी। मुझे तुझ से चतुर और बलवान नाग जाति में कोई भी नजर नहीं आता है। अब तुम्हीं बीड़ा खाकर दुशमन का गर्भ नष्ट करो। सब नाग जाति की रक्षा का भार तुम्हारे ही कन्धे पर है।

राजा बासुकी की बात सुनकर ताखी नाग भी भयभीत हो गया। उसके होश गुम हो गए। परन्तु उसने और किसी भी नाग को अपने समान बलवान नहीं समझा जो सभा के बीच बीड़ा खाकर राजा बासुकी की आज्ञा का पालन कर सके। उसके सामने अपनी इज्जत और नाग बन्स की भलाई का सवाल

था। उसने हिम्मत करके पान का बोड़ा भरी सभा के सामने उठा कर अपने मुख में चबा लिया और हाथ जोड़कर बोला, राजा जी आपके आशीर्वाद से दुशमन को नष्ट करके ही में वापिस लौटूंगा।

इस प्रकार कहकर और अपनी नागनी को संग लेकर ऊंची उड़ान के संग उसी बन में पहुंचे। जहां रानी बाछल बटवृक्ष के नीचे अपने रथ में सो रही थी। ताखी नाग ने रानी बाछल को स्त्री समझ कर काटना उचित न समझ कर रथ के बैलों पर ही दृष्टिपात किया और अपना फन घुमाकर दोनों को डस लिया और पास ही एक बमी में छिपकर बैठ गया। जब रामू रथवान की आंख खुली तब वह उठ कर बैलों के पास पहुंचा इस इरादे से कि अब बैलों को रथ में जोड़कर सफर करना चाहिए। परन्तु बैल तो ताखी नाग के काटते हो मुंह से झाग डालने लगे थे।

जब रथवान ने बैलों की दशा देखी जिनके अगाड़ी सेरों झाग जमा थे और बैलों को बेहोशी की दशा में पाया। उसने भली प्रकार समझ लिया इन्हें किसी सांप ने काट खाया है और ये दोनों ही तड़फ तड़फ कर मर गए हैं। सज्जनों रथवान बेचारे

से अपने बैलों की हालत न देखी गई और वह हिड़की भर भर कर रोने लगा। ताखी नाग ने जब रथवान को गमगीन दशा में देखा तो वह गुस्से में भरकर बामी से निकला और पेट के बल तेजी से चलकर रथवान को भी फुंकार मार कर जा डसा। जब उसने सांप को अपने को डसता देखा तो भयभीत होकर चारों खाने चित्त जा गिरा।

उसके धड़ाम से गिरने तथा रोने की आवाज सुनकर रानी बाछल के गर्भ में से ही गोगावीर ने गुरु गोरखनाथ की दया से सब घटना जान ली। अब ताखी नाग ने पाप पुन्न का ख्याल छोड़ स्त्री जाति के सताने को दया को भूल महारानी को डसने रथ की तरफ लपका।

हमारे नायक गोगा जी भी माता के गर्भ में ही ताक झाक लगाये विराजमान थे। चटपट बाहर निकलकर अपनी माया फैला दी। जिसने अपने फौलादी पंजों से ताखी नाग की गर्दन धर दबाई और कहने लगे नीच पापी अधरमी या तो इन तीनों को जिन्दा कर वरना तुझे जान से मारकर अभी ज़मीदोज कर दूंगा तू किसका भुलाया फिरे है मेरा नाम पदमनाग है। मैं तुझ ही से बूझता हूं। तूने इस

विचारे रथवान को क्यों डंसा है। तूने ये भी न सोचा कि इसके बिना इसके बाल बच्चे किस प्रकार अपना गुजारा करेंगे। कौन उन्हें खाने को देगा। इसका इस प्रकार बिना मौत मरना सुनकर इसके बाल बच्चे तुझे और मुझे दुआ देंगे या बददुआ। तू अपने धर्म से ही कह मनुष्य नागों के दुश्मन हैं या नाग मनुष्यों के। इतनी बात गोगा जी की सुनकर और अपने पति को बेवस समझ नागनी अपने दोनों हाथ जोड़कर बोली दयावान राजकुमार आप मेरे पिया को छोड़ दें। मैं आपकी आज्ञा मान अभी तीनों को जिन्दा करवा दूंगी।

नागिन की बात सुनकर गोगावीर को दया आ गई। वह ताखी नाग को छोड़कर गर्भ के भीतर बढ़ गये। सज्जनों! अपने वायदे के अनुसार नागिन ने ताखी नाग को राजी कर तीनों प्राणियों का जहर चुसवाकर उन्हें जिन्दा करवा दिया। इसके बाद रामू रथवान ने दोनों बैलों को रथ में जोड़कर उन्हें हांक दिया।

जब रथ चल पड़ा तब ताखी नाग सोचने लगा मैं राजा वासकी को अपना मुंह किस प्रकार दिखाऊंगा। मुझे भरे दरबार मे बीड़ा नहीं चबाना

चाहिए था। अब इस बेगैरत जिन्दगी के जीने से मरना ही बेहतर है। अपने मन में इस प्रकार की धारणा बना, ताखी नाग बढ़कर रथ के पहिये पर चढ़ गया। उसे समझाने के लिए उसकी नागनी भी पीछे से आन पहुंची। परन्तु गोगावीर ने गर्भ के के भीतर से हो ऐसी माया फैलाई कि ताखी नाग रथ के पहिए पर ही चिपका रह गया। उसके पीछे ही अपने पति को समझाने के वास्ते नागनी भी आ पहुंची। उसने अपने पिया को बुरी दुर्दशा में देखा कि वह रथ के पहिये से न आगे सरक सकता है न पीछे को।

तब वह अपने दोनों हाथ जोड़कर बोली महा-रानी जी मेरे बालम की रक्षा करो ये बेखता हैं। किसी भूत प्रेत ने इनको मत हरली है। मैं जीते जी आपका ऐहसान न भूलूंगी। नारी के दुख को नारी ही भली प्रकार समझ सकती है। नागिन के आखरी शब्दों से रानी बाछल का हृदय मोम के समान पिघल गया। रानी सोचने लगी, मेरे राजा सिर्फ वन ही को गए हुए है उनके बिना मेरी क्या कुगत बनी है, इसलिए नागनी को उसने दया की अधिकारणी समझा और सोचा अगर इसका नाग मर जाएगा

तो इस नागनी का जीना मरने से भी बुरा हो जायेगा।

रांड स्त्री का भी कोई जीने में जीना है इस प्रकार अपने मन को धीरज दे रानी बाछल कहने लगी। तुम्हारे खुशामद करने से मेरा दिल पिघल तो गया है परन्तु इसकी करतूत इसकी रक्षा करने लायक नहीं है। जरा तू ही इन्साफ से कह मैं दुखियारी नारी किस्मत की मारी जी में दुखी हो अपने पिता के घर जा रही थी। तुम्हारे नाग ने बिला वजह बैलों व रथवान को डसा तब भी उसे सब्र नहीं हुआ। अब मुझे डसने के वास्ते उड़कर पीछा करता हुआ रथ के पहिये से आनकर चिपट गया। ये तो गुरु गोरख की कृपा का फल है जो इसे झक मारकर उन्हें जिन्दा करना पड़ा। वरना बिना बैलों के मैं वन में भटककर ही अपने प्राण खो बैठती। दुष्ट जनों पर रहम करना नीति विरुद्ध बात है जिन्होंने भी दुष्टों पर रहम किया उन्हीं का पतन हो गया।

रानी बाछल की वार्ता सुनकर नागिनी निराश हो बोली, रानी जी आप नारी हैं और मेरे दुख को आप भली प्रकार समझ सकती हैं कि विधवा स्त्री

का जीवन कितने दुखों से भरा है। इसलिए आपसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूं मुझे रंडापे का दुख न दिखायें। मैं आपसे वायदा करती हूं कि मैं व मेरा पति जिन्दगी भर आपका तावेदार रहेगा जो भी काम आपके वंस का होगा उसे आज्ञा मिलते ही सर आंखों के बल जी जान से पूरा किया जायेगा।

रानी बाछल से जब नागनो का विलाप नहीं देखा गया। तब उन्होंने गुरु गोरखनाथ का सुमरन किया। तभी गोगावीर ने गर्भ के भीतर ही से अपनी माया समेट ली। तभी ताखी नाग आसमान को उड़ गया और उसके पीछे उसकी नागनी भी। उसी समय रथवान ने भी रानी बाछल की आज्ञा से रथ हांक दिया और रात दिन की मंजिल करके सिरसा पाटन नगर में जा पहुंचे। रानी बाछल रथ में से उतरकर अपनी माता के पास महल में जा पहुंची।

* श्री गोगा पुराण तेईसवां अध्याय समाप्त *

चौबीसवा अध्याय

सज्जनो! जब महारानी बाछल को उनकी माता सारंदे ने इस प्रकार अकेली आते हुए देखा।

तब दोनों मां बेटी गले से चिपटकर जी भरकर खब रोईं और सभी सखी सहेलियां महारानी बाछल का आना सुनकर उन्हें देखने व राजी खुशी पूछने को अपने बाल बच्चों को रोता छोड़, महल में आन कर इकट्ठी हो गई जहां दोनों मां बेटी गले मिल रो रही थीं। बड़ी मुश्किल से सखियों ने धीरज बंधाकर दोनों मां बेटी को अलग किया। तब मां बेटी ने अपने अपने आंचल से आंसुओ को पूंछा।

इसके पश्चात रानी सारंगदे अपनी बेटी को प्यार पुचकार कर सुसराल वालों की राजी खुशी पूछने लगी और अपने दामाद राजा जेवरसिंह की राजी खुशी का हाल जानना चाहा। अपनी माता को अधीर देख रानी बाछल ने अब तक की सारी घटना ब्यौरेबार ब्यान कर दी और कहने लगी माताजी आप भली प्रकार समझ गईं होगी कि इन सब बखेड़ों की जड़ मेरी नन्द छबीलदेई ही आफत की परकाला है उसी ने अपने पिता के कान भरकर झूंठी सच्ची बात बना कहनी अनकहनी कहकर मेरी तरफ से मेरे ससुर जी का मन फेर दिया। उन्होंने भी अपनी बेटी की वार्ता को पत्थर की लकीर समझ कर तुरन्त ही रथवान को बुलाकर चटपट हुक्म दे

दिया कि दिन निकलने से पहले ही रथ में बिठाकर मुझे सिरसा पाटन आपके यहां छोड़ आवें।

उन लोगों ने गुरु गोरखनाथ के वरदान को मेरे पति के मौजूद न होने कारण मुझे बदचलन समझ अपने घर के काबिल न समझा। अगर माता जी मेरी बात में बाल भर भी फर्क निकले तब आपको मुझे जिन्दा जमी में गड़वा देने का पूर्ण अधिकार है। आप पूर्ण विश्वास करें सन्तों की सेवा और दान पुन्न से प्रसन्न होकर ही गुरु गोरखनाथ जी ने मुझे जो वरदान दिया है मेरे पेट में वही फल है।

बन्धुओ! अपनी बेटी को दुखों से भरपूर दास्तान सुनकर, रानी सारंगदे ने अधीर हो, अपनी दासी द्वारा अपने पति को दरबार से बुलवा कर सारीराम कथा सिलसिलेवार मय छबीलदेई के प्रपन्च सहित राजा कुंवरपाल सिंह से कह सुनाई। अपनी पत्नी की वार्ता से राजा का मन नहीं भरा। वह खुद अपनी बेटी से तर्क बितर्क करके पूछने लगे और सब वार्तालाप समझने के पश्चात बोले, बेटी बाछल अगर तुम्हारी बात सच्ची है और उसमें झूंठ और चालबाजी जरा भी नहीं है तो मैं तुम्हारे ससुर का दिमाग भलो प्रकार सही कर दूंगा।

परन्तु बेटी मुझ से कोई भी भेद की बात हो छिपाना भूलकर भी नहीं। अगर कोई बात कहने से भूल में रह गई हो तो मुझे और बता डालो। ऐसा न हो बाद में शरमिन्दगी उठानी पड़े। क्षत्री गरदन झुकाना पसन्द नहीं करता मरना पसन्द करता है।

अपने पिता कुंवरपाल सिंह की वार्ता सुनकर रानी बाछल बोली, पिताजी मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आप अपनी बेटी को भली प्रकार समझ ही नहीं पाये। क्या आपने मुझे कभी झूठ बोलते देखा है। जब आप लोगों ने मुझे झूठ बोलना सिखाया ही नही तो मैं झूठ बोल ही कैसे सकती हूं।

झूंठ सच छल फरेब चोरी सब माता पिता की ही देन बच्चों को होती है। सब कुछ समझते हुए भी आप अनहोनी बात कहकर मेरा अविश्वास क्यों कर रहे हो। अगर मेरी बात में बाल भर भी फर्क हो तो आप मुझे जमीन में गड़वा देना। आप देख लेना कि आपकी सतवन्ती बेटी मर जाने के पश्चात भी सतवन्ती ही कहलायेगी। अपनी बेटी की वार्ता सुनकर राजा कुंवरपाल सिंह सन्तुष्ट तो काफी हो गए फिर भी धीरज धर कहने लगे। बेटी तुम्हारी वार्ता ठीक

तो निकलेगी ही फिर भी मैं परीक्षा लेना चाहता मैं अपने महल के भीतर कुआं खुदवाकर कच्चे सूत धागे से बुना पलंग उस पर बिछवाऊंगा। अगर तु उस पलंग पर सुख से सो गई और पलंग का कोई धागा न टूटा तो तुम्हारी ससुराल को चिट्ठी लिख कर तुम्हारे ससुर का दिमाग सही कर दूंगा। जो वह भी सदा याद किया करेंगे कि मेरा किसी से पाला पड़ा था और सूत के धागे तुम्हारे बैठते ही टूट गये और तुम उस मौत के कुंए में गिर कर मर गई तो अपनी मूंछ नीची कर मुंह छिपाकर चुपचाप ही हरि इच्छा बलवान कहकर घर में दुबका रहूंगा।

अपने पिता की वार्ता सुनकर महारानी बाछल ने परीक्षा देनी स्वीकार कर कहा पिताजी आप मेरी परीक्षा बड़ी खुशी से लेवें। किसी कवि ने क्या ही ठीक कहा है सांच को आंच कहां।

महारानी बाछल की परीक्षा

प्यारे बन्धुओं, महारानी बाछल ने जब अपने पिता की शर्त स्वीकार कर ली तब राजा कुंवरपाल सिंह ने, राज मिस्त्री को बुलाकर महल के आंगन में काफी गहरा कुंआ खुदवाया जिसके भीतर कीकर के

कांटे व नोकदार कांच के टुकड़े तथा लोहे के कांटेदार तार भी उस कुंए में भरवा दिए। जिसके ऊपर कच्चे सूत का बुना पलंग बिछवा कर बहुत आहिस्ते से सफेद चादर बिछवाकर हलका सा तकिया भी रखवा दिया और अपनी बेटी रानी बाछल को सोने की आज्ञा दी।

जिसे सुनकर सारे महल के दास दासी, नौकर चाकर माता सारंगदे के पास अति शीघ्र पहुंचकर सारी घटना ब्यान कर कहा। तुम्हारी बेटी मौत के मुंह में समा जाएगी। दास दासियों द्वारा अपने पति की इस प्रकार की हरकत देख रानी सारंगदे वहां से किल्ली मारते हुए रोती रोती दौड़ी, जहां कुंए के पास बेटी बाछल और राजा कुंवरपाल सिंह खड़े हुए थे। सारंगदे अपनी पति से नैन जलधारा बहाती हुई बोली। अगर तुम्हें मेरी राजदुलारी की हत्या ही करनी है तो इस प्रकार तड़फा तड़फा कर मारने से क्या लाभ, इससे तो बेहतर ये है तलवार लेकर एक ही वार में इसका सिर धड़ से जुदा कर दो।

अपनी माता को अति अधीर देख धीर बंधा हुई रानी बाछल कहने लगी। जननी बिना वजह धीरज खो बैठीं। क्या तुमने ये दोहा नहीं सुना।

जाको राखे साइयां मार सके न कोय। बाल न बांका कर सके चाहे सब जग बैरी होय। माताजी आपने अपनी सतवन्ती बेटी को मामूली हाड़ मांस की पुतलो समझ रक्खा है। अगर में सच्ची हूं और गुरु गोरख नाथ महाराज का वरदानी फल मेरे उदर में है और मैं उनकी सच्ची भगत हूं। तो ये कच्चे धागे लोहे से भी मजबूत बन जायेंगे। माताजी आप इस लिए घबरा रही हैं कि आपको कोई सतवन्ती नारो देखने को मिली ही नहीं है।

ये जो सूरज चांद रोशनी दे रहे हैं हम में से हो सतवन्ती सतियों के ही तप का प्रभाव है। किसी ने कहा है—सांच को आंच कहां। तो क्या आपने इस कहावत को मन गढ़न्त ही समझ लिया है। आपको घबराने की कतई जरूरत नहीं है। आपको भली प्रकार विदित हो जायेगा कि मेरी बातों में सार है या नहीं। इस भारतवर्ष में अनगिनत सत्यधारी राजा हरिश्चन्द्र व धर्मराज युधिष्ठिर के समान हुए हैं जिनके काफी इतिहास आपकी ये बेटी बांच चुकी है और उन्हीं के रास्ते पर चलने की है मैंने भी अपनी सामर्थ अनुसार थोड़ी बहुत चलने की कोशिश की है और उन्हीं की तरह थोड़े बहुत कष्ट

इस प्रकार की बातें क्यों कर रहे हैं। क्या आपने कभी मुझे झूठ बोलते देखा है। जब आपने मुझे झूठ बोलना सिखाया ही नहीं तो मैं झूठ किस प्रकार बोल सकती हूं। पता नहीं आज आप अविश्वास क्यों कर रहे हैं। अगर मेरी बात गलत निकले तो मुझे जिन्दी ही जमीन में गड़वा देना। आपकी सतवन्ती बेटी मरते समय तक भी सतवन्ती ही रहेगी। महारानी बाछल की बात सुनकर, राजा कुंवरपाल सिंह सन्तुष्ट तो हो गए, परन्तु फिर भी धीरज धर कर कहने लगे। बेटी तुम्हारी बात ठीक तो होगी ही परन्तु मेरा मन कहता हैं परीक्षा लेना बहुत जरूरी है। मैं अपने इसी महल में कुआं खुदवाकर कच्चे सूत का बना पलंग उस कुए पर बिछवाऊंगा। अगर तुम उस कच्चे सूत के पलंग पर सुख से गहरी नींद सो गई और सूत का धागा न टूटा तो राजा उम्मरपाल सिंह को वो करारी चिट्ठी लिखूंगा कि जिन्दगी भर याद रखेंगे कि कोई मिला था। अगर सूत के धागे टूट गए और तुम कुए में जा गिरीं, तो अपनी मूंछ नीची कर और तुम्हारी मृत्यु हरि इच्छा बलवान समझ कर चुप हो, मुंह छिपा कर अपने घर में बैठ जाऊंगा। राजा कुंवर पाल की वार्ता सुनकर महारानी बाछल

ने अपने पिता की शर्त मान ली और बोलीं, पिताजी ठीक है। किसी ने ठीक ही कहा है सांच को आंच नहीं।

महारानी बाछल की परीक्षा

प्यारे मित्रो ! महारानी बाछल ने जब अपने पिता की शर्त मानली, तब राजा कुंवर पाल सिंह ने राज्य मिस्त्री को बुलवाकर अपने महल में काफी गहरा कुआं खुदवाया। कुआं खुद जाने के बाद, उसमें कीकर के कांटे व नुकीले कांच के टुकड़े तथा लोहे की कांटेदार तारें, कुएं के भीतर भरवा दिए। ऊपर से कच्चे सूत के धागों का बुना पलंग बिछवा कर उसके ऊपर सफेद चादर बिछा कर आहिस्ते से तकिया धर, महारानी बाछल को पलंग पर सोने की आज्ञा दी।

अपने पति राजा कुंवर पाल सिंह की इस प्रकार की हरकत देख कर और अपनी बेटी को मौत के मुंह में जाता देख कर रानी सारंगदे किल्ली मार फूट फूट कर रोने लगीं और अपने पति से हाथ जोड़ कर बोलीं, अगर तुम्हें बेटी की हत्या ही करनी है, तो इस प्रकार तड़पा तड़पा कर मारने से क्या लाभ। तलवार लेकर एक ही बार में सिर धड़ से अलग क्यों

नहीं कर देते।

अपनी माता को अधीर देख कर महारानी बाछल बोली, जननी ! बिला वजह धीरज क्यों खो रही हो। क्या आपने यह नहीं सुना—जाको राखें साईयां, मार सके ना कोय। बाल न बांका कर सके चाहे सब जग बैरी होय। माताजी क्या आपने अपनी सतवन्ती बेटी का सत मामूली ही समझ रखा है। अगर मैं सच्ची हूं और गुरु गोरखनाथ जी महाराज की कृपा का हाथ मेरे सिर पर है तो ये ही कच्चे धागे लोहे की छड़ों से भी ज्यादा मजबूत बन जायेंगे। माता जी आपने अभी सत्य की महिमा को समझा ही नहीं है। जितने भी इस धरती पर सत्यधारी जन्मे हैं वह सदा अमर रहेंगे। ये जो सूरज चांद चमक कर रोशनी देते हैं, ये सब उन सत्यधारियों का ही प्रताप है। माता जी सांच को आंच कहां, क्या ये कहावत मन गढ़न्त है। जननी, घबराने की जरा भी जरूरत नहीं है। ये कहावत कितनी सच है, आपको भली प्रकार विदित हो जाएगा। सतवादी राजा हरिश्चन्द्र और राजा युधिष्ठिर जैसे अनेक सत्यधारी भारतवर्ष में हुए हैं जिनके इतिहास तुम्हारी इस बेटी ने पढ़े और समझे हैं और उन्हीं के रास्ते पर

चलने की कोशिश की है। उन्हीं की तरह दुख भी उठाए हैं। परन्तु जिस प्रकार उनके नामों की कीर्ति तीनों लोकों में फैली है उसी प्रकार तुम्हारी इस अभागिन बेटी की भी फैल सकती है। अभी तो भगवान् मेरी भक्ति की परीक्षा ही ले रहे हैं। अगर गुरु गोरखनाथ की मुझ पर दया है और मेरी भक्ति सच्ची है तो मैं अपनी परीक्षा में जरूर सफल निकलूंगी।

इतनी बात कहकर अपनी माता को धीरज दे, चटपट कूद कर एक ही छलांग में योगेश्वर गुरु गोरख नाथ की जय बोलकर कच्चे धागे से बुने हुए पलंग पर चढ़ गई थी। सज्जनो! सब ने आंख फाड़ फाड़ कर देखा कि कच्चे सूत का एक तार भी नहीं टूटा और महाराना बाछल लम्बे लम्बे पैर फैलाकर बड़े ही आराम से लेट रही थीं। किसी ने क्या बढ़िया कहा है- जाको राखे साइयां मार सके नहीं कोय, बाल न बांका कर सके चाहे सब जग बैरी होय। राजा कुंवर पाल सिंह व रानी सारंगदे ने जब अपनी सतवन्ती बेटी को इस प्रकार प्रेम से पैर फैलाकर सोते देखा, तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने तुरन्त ही अपना खजाना खोलकर, हीरे मोती

का दान गरीब फकीरों को दिल खोल कर दिया। पन्डित पुजारी लोगों ने भी रानी सारंगदे से भारी दान दक्षिणा प्राप्त की। इधर तो रानी दान दक्षिणा देने में लगी थी उधर राजा कुंवर पाल सिंह ने महाराजा उम्मर पाल सिंह को एक करारा पत्र लिखा जिसका सारांश इस प्रकार था।

* श्री गोगा पुराण चौबीसवां अध्याय समाप्त *

पच्चीसवां अध्याय

चिट्ठी का मजमून

श्री सिद्ध सर्वोपमा योग लिखी सिरसा पाटन से ददरेड़ा नगर निवासी महाराज उम्मर पाल सिंह को राजा कुंवर पाल सिंह की राम राम बांचना। समधी साहब के चरणों मे निवेदन है आपने अपनी नासमझी के कारण जुल्म करने का हद कर दी है। आप की नासमझी के कारण मेरा कलेजा कोयले की तरह जलकर खाक बन गया है। आप धन के नशे में इतने मदहोश हो गए हो जो जरा भी परमात्मा से नही डरते। मैंने आपके बेटे के साथ अपनी प्यारी बेटी का नाता एक सज्जन खानदानी महाराजा समझ कर किया था। जिसका बदला आपने बिना सोचे

समझे अपनी बेटी के कहने से मेरी सतवन्ती बेटी को अकेली रथ में बिठलाकर बिना खता ही मेरे यहां भेज दिया है। मैं उसके निर्दोष होने की भली प्रकार परीक्षा कर चुका हूं। तभी पत्र लिखने को कलम उठाई है। जिसके बुरे दिन आते हैं उसकी बुद्धि भी उलटी हो जाती है।

कृपा कर आप अपने बेटे कुंवर जेवर सिंह को अति शीघ्र यहां भेज दें। अगर मेरी बेटी खतावार निकले तो मैं अपना शीश काटकर आपको भेंट कर दूंगा और अगर आपकी बेटी छबीलदे के समझने में गलती है तो आप अपनी भूल का प्रायश्चित्त करलें। मेरे लिए छबीलदे भी बाछल के समान ही मेरी बेटी है परन्तु नन्द भावज के ये झगड़े पुराने जमाने से ही होते आए हैं। इसे कौन नहीं समझता। पत्रोत्तर तुरन्त दें। आपका हितैषी :

राजा कुंवर पाल सिंह

सिरसा पाटन नगर

सज्जनो ! राजा कुंवर पाल सिंह ने सांड़नी सवार को बुलाकर कहा, ये पत्र महाराजा उम्मर पाल सिंह के दरबार में पहुंचा कर उत्तर हाथों हाथ लेकर आना। राजा कुंवर पाल सिंह की आज्ञा सुन

कर सांड़नी सवार ने झट पट पत्र लेकर अपने झोले में संभालकर रख लिया। सफर का सामान खाना दाना संगवाकर सांड़नी पर सवार हो, भगवान का ध्यान धर अपने राजा को नमस्कार किया। तब राजा कुंवर पाल सिंह ने अपने समधी महाराजा उम्मर पाल सिंह को भेंट देने के लिए कीमती जवाहरात व रास्ते के खर्च के लिए मोहरें दीं। जिन्हें उसने संभाल कर धर अपनी सांड़नी बढ़ा दी। सांड़नी की सजावट का हाल लिखना व्यर्थ है। वह तुरन्त ही अपनी तेज चाल से बबल बबल कर चल पड़ी। उसकी चाल में इतनी मस्ती थी कि कब जमीन पर पैर धरा, कब उठाया जानना बड़ा ही कठिन था। रात दिन का सफर कर लगभग ढाई दिन में बागड़ देश के ददरेड़ा नगर में राजा उमर पाल सिंह के दरबार में पहुंच प्रणाम कर चरणों में मस्तक नवाया और अपने झोले से पत्र व भेंट का सामान निकाल उनके सिंहासन पर धर दिया।

राजा कुंवरपाल का पत्र पढ़कर और छबीलदे की बात समझ कर, महारानी बाछल की जांच की बात बांचकर बड़ी चिन्ता में पड़ गये। जेवरसिंह के भेजने की बात पढ़कर भारी पशोपेश में पड़ गए।

सबसे प्रथम उन्होंने सांड़नी सवार के नहाने खाने का इन्तजाम किया। उसके बाद अपने महल में पहुंच अपनी बेटी छबीलदे को राजा कुंवरपाल सिंह की चिट्ठी पढ़कर सुनाई। चिट्ठी के हर शब्द पर गौर करके बाप बेटी ने परामर्श किया कि बेटी अब क्या उत्तर देना चाहिए। छबीलदे बोली पिताजी मेरी समझ में पत्र पढ़ कर कुछ भी नहीं आ रहा है। वैसे तो बड़ी भाभी में कभी भी कोई अवगुण देखने में नहीं आया। परन्तु गर्भ की बात सुनकर ही मेरे तन बदन में आग लग गई थी। बिना मर्द के शरीफ नारियों के गर्भ रहता मैंने कभी नहीं सुना था। बदमाशों की बात अलग है। अब तो ये ही ठीक है भैया जेवरसिंह को वन से तलाश करके बुलवा लिया जाये। वह सिरसा पाटन जाकर जैसा उचित समझें करें। राजा उम्मरपालसिंह को अपनी बेटी छबीलदे की बात जंच गई। उन्होंने वन से राजा जेवरसिंह को खोज लाने के लिए चारों तरफ दूतों को रवाना किया और राजा कुंवरपालसिंह को नम्र पत्र लिख कर उत्तर दिया। हम अति शीघ्र कुंवर जेवरसिंह को सिरसा पाटन आपके पास भेजेंगे। हमें आपसे बेहद हमदर्दी है। नाराज होते हुए भी आपने मुझे

भेंट भेजी है। आपको बहुत बहुत धन्यवाद।

सज्जनो! इधर तो सांड़नी सवार राजा उम्मर पाल सिंह से अपनी बिदाई में हीरे मोती लेकर विदा हुआ और मंजिल दर मंजिल कर के सिरसा पाटन पहुंच कर राजा कुंवरपाल सिंह को पत्र देकर बाकी समाचार मुंह जवानी सुना दिया। इस तरफ तो महाराजा उम्मरपाल सिंह के दूत वन में राजा जेवर सिंह को खोजते फिर रहे थे और उधर जब महारानी बाछल गहरी निद्रा में सो रही थीं उनका ही गर्भ स्वप्न में उनसे बोला। माता जी, मैं नाना के यहां जन्म नहीं लूंगा। जो बच्चे अपनी ननिहाल में जन्मते हैं, उसके साथी बच्चे उसे ननुआ ननुआ कहकर चिढ़ाया करते हैं। अपने गर्भ की वार्ता सुनकर महा-रानी बाछल की नींद उचट गई। महारानी बाछल असमंजस में पड़कर बोलीं, तू अच्छा मेरे गर्भ में आया। न दिन को चैन न रात को निद्रा। मेरे दुखों का तो अन्त ही नजर नहीं आता। मैं तो तब तक जाने से रही जब तक कोई बुलाने नहीं आयेगा।

अपनी माता की बात सुनकर गोगा जी गर्भ में से ही बोले। जननी धीरज धर अधीर मत हो। गुरु गोरखनाथ जी महाराज की कृपा होनी चाहिए। अब

सबसे प्रथम उन्होंने सांड़नी सवार के नहाने खाने का इन्तजाम किया। उसके बाद अपने महल में पहुंच अपनी बेटी छबीलदे को राजा कुंवरपाल सिंह की चिट्ठी पढ़कर सुनाई। चिट्ठी के हर शब्द पर गौर करके बाप बेटी ने परामर्श किया कि बेटी अब क्या उत्तर देना चाहिए। छबीलदे बोली पिताजी मेरी समझ में पत्र पढ़ कर कुछ भी नहीं आ रहा है। वैसे तो बड़ी भाभी में कभी भी कोई अवगुण देखने में नहीं आया। परन्तु गर्भ की बात सुनकर ही मेरे तन बदन में आग लग गई थी। बिना मर्द के शरीफ नारियों के गर्भ रहता मैंने कभी नहीं सुना था। बदमाशों की बात अलग है। अब तो ये ही ठीक है भैया जेवरसिंह को वन से तलाश करके बुलवा लिया जाये। वह सिरसा पाटन जाकर जैसा उचित समझें करें। राजा उम्मरपालसिंह को अपनी बेटी छबीलदे की बात जंच गई। उन्होंने वन से राजा जेवरसिंह को खोज लाने के लिए चारों तरफ दूतों को रवाना किया और राजा कुंवरपालसिंह को नम्र पत्र लिख कर उत्तर दिया। हम अति शीघ्र कुंवर जेवरसिंह को सिरसा पाटन आपके पास भेजेंगे। हमें आपसे बेहद हमदर्दी है। नाराज होते हुए भी आपने मुझे

भेंट भेजी है। आपको बहुत बहुत धन्यवाद।

सज्जनो! इधर तो सांड़नी सवार राजा उम्मर पाल सिंह से अपनी बिदाई में हीरे मोती लेकर विदा हुआ और मंजिल दर मंजिल कर के सिरसा पाटन पहुंच कर राजा कुंवरपाल सिंह को पत्र देकर बाकी समाचार मुंह जवानी सुना दिया। इस तरफ तो महाराजा उम्मरपाल सिंह के दूत वन में राजा जेवर सिंह को खोजते फिर रहे थे और उधर जब महारानी बाछल गहरी निद्रा में सो रही थीं उनका ही गर्भ स्वप्न में उनसे बोला। माता जी, मैं नाना के यहां जन्म नहीं लूंगा। जो बच्चे अपनी ननिहाल में जन्मते हैं, उसके साथी बच्चे उसे ननुआ ननुआ कहकर चिढ़ाया करते हैं। अपने गर्भ की वार्ता सुनकर महा-रानी बाछल की नींद उचट गई। महारानी बाछल असमंजस में पड़कर बोलीं, तू अच्छा मेरे गर्भ में आया। न दिन को चैन न रात को निद्रा। मेरे दुखों का तो अन्त ही नजर नहीं आता। मैं तो तब तक जाने से रही जब तक कोई बुलाने नहीं आयेगा।

अपनी माता की बात सुनकर गोगा जी गर्भ में से ही बोले। जननी धीरज धर अधीर मत हो। गुरु गोरखनाथ जी महाराज की कृपा होनी चाहिए। अब

मेरा चमत्कार देखो। महारानी बाछल से इतना कह कर अपने बाबा उम्मरपाल सिंह की आंख में दर्द पैदा कर दिया और बुआ छबीलदे के सिर में आधा शीशी का दर्द। जिससे राजा उम्मर पाल सिंह अपनी आंख पकड़ कर बड़े बेचैन और बुआ छबीलदे अपना सिर पकड़े दुखी थे। उसे यही दिखाई दे कि मेरी दर्द वाली आंख बाहर निकल कर गिर पड़ेगी। इधर इन बाप बेटी का बड़ा बुरा हाल था। उधर अपने पिता राजा जेवरसिंह को स्वप्न दिया कि पिताजी आप अति शीघ्र सिरसा पाटन आन कर मेरी माता महारानी बाछल को घर लिवा जाओ। मैं अपने घर पर ही पुष्य नक्षत्र में जन्म लूंगा। मैं नाना के घर जन्म नहीं लेने का। इधर राजा जेवरसिंह इस स्वप्न के बारे में विचार मग्न थे, उधर से राजा उम्मरपाल सिंह का भेजा हुआ दूत इन्हें ढूंढता हुआ वन में आन पहुंचा और राजा जेवरसिंह को उनके पिता की आज्ञा सुनाई।

सज्जन वृन्दो! राजा जेवरसिंह अपने गुरु की आज्ञा लेकर, चटपट दूत के साथ चल पड़े। और चन्द घन्टों में अपनी नगरी ददरेड़ा में पहुंच, महल में पधार अपने पिता को अपने दोनों हाथ जोड़, मस्तक

नवा प्रणाम किया। महाराजा उम्मरपालसिंह दर्द के कारण बड़े बेचैन थे। इसलिए अपने पुत्र को आशीर्वाद न देकर हाय हाय करने लगे। इधर महाराजा आंख दर्द से दुखी थे उधर से बहन छबीलदे अपने भाई को महल में आया जान, आंख को पकड़े हुए रोती डकराती आन पहुंची। अपने पिता और बहन की बेचैनी राजा जेवरसिंह न देख सके। उन्होंने तुरन्त ही सेवक को भेजकर राज ज्योतिषी जी को महल में बुलवाया।

ज्योतिषी जी के पधारने पर राजा जेवरसिंह बोले। पंडित जी महाराज, मेरे पिताजी और बहन छबीलदे दर्द के कारण महान दुखी है। किसी दवा से भी चैन नहीं पड़ता है। पत्रे में देख भाल कर, ज्योतिष विद्या द्वारा बतावें, इन का दुख दूर किस उपाय से होगा। प्रिय मित्रो! राज ज्योतिषी ने अपनी पोथी पत्रा देखकर, गणित कर और हिसाब लगाकर बतलाया कि आपकी महारानी जी के गर्भ में कोई महान अवतारी आत्मा विराजमान है। उस बच्चे के चमत्कार के कारण ही इन दोनों को कठिन बीमारी ने धर दबाया है। जिसका इलाज किसी भी वैद्य के बस की बात नहीं है। आपके पिता व बहन के

षडयन्त्र ने ही महारानी बाछल को बिना खता घर से निकाला है। इसी से इन दोनों को उस चमत्कारी बालक ने अपना चमत्कार दिखलाया है। जब तक महारानी बाछल घर पर नहीं आजावेगी इन दोनों की बीमारी बजाये घटने के बढ़ने की सम्भावना अधिक है।

राज ज्योतिषी की बातें उनके वन में देखे स्वप्न से बिलकुल मिलती जुलती थीं। इसलिए राजा जेवर सिंह के हृदय में बैठ गईं। उन्हें पक्का निश्चय करना पड़ा, बिना सिरसा पाटन जाये ये मुश्किल आसान नहीं होने की। मगर कौन से मुंह से वहां जाऊं। मुझे तो इन दोनों की करतूतों के कारण बड़ी लज्जा लग रही है। इन्होंने तो मुझे सर उठाने के काबिल भी नहीं छोड़ा। पर बिना जाये भी काम नहीं चल सकता। इसलिए जाना ही पड़ेगा।

प्यारे बन्धुवो ! राजा जेवर सिंह अपने पिता महाराजा उम्मर पाल सिंह से हाथ जोड़कर बोले, पिताजी आपने ज्योतिषी महाराज की वार्ता सुनी, अब आप जैसी आज्ञा दें किया जावे। इस पर महाराजा उम्मर पाल सिंह बोले बेटा क्या करूं अब तो मुझे अपना व छबीलदे का ही दोष दिखाई पड़ रहा

है। इस समय तो सब घटनायें हमारे प्रतिकूल हो रही हैं। इसलिए अपनी ससुराल सिरसा पाटन जा कर बहू को लिवा लाने में ही बेहतरी है। तुम अपने साथ फौज पलटन भी जरूर लेते जाना। राजा कुंवर पाल सिंह घमन्डी तथा झगड़ालू आदमी है। क्या पता पड़ता है वहां युद्ध ही न छिड़ जाए। राजी नाराजी जैसे भी बने बहू को तो लेकर ही आना पड़ेगा। जहां तक बने लड़ाई झगड़ा न करके, आधीनी से ही काम निकाल लेना। इसी में बुद्धिमानी है। जब सीधी उंगली से घी निकलता न दिखाई दे तब उंगली टेढ़ी करके घी निकालना चाहिए। अगर तुम समझते हो कि गलती अपनी तरफ से हुई है तो दो बातें नरम गरम सुनकर भी आधीनी से ही काम निकाल लेना।

अपने पिता महाराजा उम्मर पाल सिंह की वार्ता राजा जेवर सिंह को भा गई। वह अपने पिता की आज्ञानुसार थोड़ी फौज पलटन सजा, नीली घोड़ी पर सवार हो, मन्जिल दर मन्जिल सफर करते हुए, सिरसा पाटन नगरी जा पहुंचे और अपने लश्कर के तम्बू डेरे बाग में गढ़वा दिए। राजा जेवर सिंह के पधारने की खबर बाग के माली द्वारा राजा कुंवर

पाल सिंह को मिली। खबर मिलते ही वह अपने घोड़े पर सवार हो अपने जामाता से मिलने बाग में ही जा पहुंचे। अपने ससुर को बाग में आता हुआ देख कर राजा जेवर सिंह ने आधीनी से हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और बोले। पिताजी, जो भी भूलें हुई हैं, मेरी गैर मौजूदगी के कारण हुई हैं। आशा है आप हम सबकी भूलें क्षमा करने की कृपा करेंगे। मैं अपने पिताजी की आज्ञा अनुसार ही रानी जी को लिवाने आया हूं। उन लोगों को भी अपनी गलती का काफी पश्चाताप है।

अपने जामाता की आधीनी देखकर राजा कुंवर पाल सिंह का गुस्सा एकदम ठन्डा पड़ गया और वे प्रसन्न हो हाथ पकड़ वार्तालाप करते हुए उन्हें महल में ले आए। अपनी रानी सारंगदे के सुपुर्द कर बाग में ठहरी फौज पलटन के खाने दाने के बन्दोबस्त में लग गए। राजा जेवरसिंह के सिरसा पाटन में पधारने की खुशी में बड़ा भारी जश्न मनाया गया। सांग तमाशे नाच गानों से नगरी में खुशी की लहर दौड़ गई। राजा जेवर सिंह सबकी निगाह बचा कर मौका देख महारानी बाछल से मिले। जो कुएं के ऊपर अपने कच्चे धागे वाले पलंग को कुएं पर

बिछाए विश्राम कर रही थीं। जब उन्होंने राजा जेवर सिंह को अपने सामने खड़े देखा तो उनकी आंखों से नीर की वर्षा होने लगी। वह अपने प्रीतम से हाथ जोड़कर बोलीं, आपने मुझे तरसा तरसा कर अधमरी कर डाला अब तो वनको न जाओगे। राजा जेवर सिंह मुस्कराकर बोले महारानी, अब वन क्यों जाऊंगा, अब तुम्हें भी घर तुरन्त चल देना चाहिए। पिताजी व बहन छबीलदे की तबियत बहुत खराब है वह दोनों दर्द के कारण बड़े बेचैन हैं। मुझे यहां आए कई दिन गुजर गए हैं, कुछ समय आने में लगा कुछ जाने में लगेगा इस तरह हफ्तों लग जावेंगे। महारानी बाछल बोलीं ठीक है, मैं आज ही माता जी को बुलवाकर आज्ञा लेती हूं।

इतना सुनते ही राजा जेवर सिंह पलंग पर बैठने लगे। तब महारानी बाछल घबराकर बोली, हैं! हैं! ये क्या करते हो, इस कच्चे सूत के बने पलंग पर सत्यधारी योगीश्वर गुरु गोरखनाथ जी महाराज के चेले चेली ही बैठ सकते हैं। क्या इस पलंग पर बैठ कर इस कुएं में गिराकर अपने साथ हमें भी मारोगे। इस पर राजा जेवर सिंह बोले। महारानी जी आपको पता नहीं है पर मुझे तो मालूम है काठ

की संगत से लोहा भी तैर जाता है। तुम सत्यधारिन गुरु गोरखनाथ की चेली वाले पलंग पर, मुझ पापी के साथ पलंग के धागे किस प्रकार टूट सकते हैं। ये बात मेरी समझ में नहीं बैठी। हां ये हो सकता है तुम पलंग से दूर हटकर अलग हो जाओ और तब मैं बैठूं तो अलबत्ता पलंग के धागे टूट सकते हैं और मैं कांटेदार कुएं में गिर सकता हूं। इतना कह कर राजा जेवर सिंह पलंग पर बैठ गए और गोगा वीर के चमत्कार व गुरु गोरखनाथ जी की दया के कारण धागों का एक तार भी नहीं टूटा। मुस्कराते हुए अपने कमरे में चले गए।

उनके चले जाने पर महारानी बाछल ने तुरन्त ही बांदी को भेजकर अपनी माता रानी सारंगदे को अपने पास बुला भेजा। उनके आने पर अपने दोनों हाथ जोड़कर बोली, माता जी, इनके पिताजी व बहन छबीलदे दोनों बीमार हैं। इसलिए मुझे जल्दी घर पहुंचना उचित है। कृपा कर अब आप मुझे विदा करदें। रानी सारंगदे को अपनी बेटी की बात जंच गई। वह अपने पति राजा कुंवरपाल सिंह से बोली, अब आप अपनी बेटी को शीघ्र विदा कर दो। जमाता को घर जाने की जल्दी है। उनके

पिता व बहन बीमार हैं। अपनी रानी सारंगदे की बात सुनकर राजा कुंवरपाल सिंह ने विदाई का इन्तजाम करवाया और भेंट पुरस्कार वगैरह में कपड़े लत्ते, धन, जेवर, मिठाई, पकवान जो कुछ भी बेटी दामाद को देना था देकर महारानी बाछल को विदा किया। राजा जेवरसिंह अपने सास ससुर को प्रणाम कर अपनी फौज पलटन को साथ लेकर हंसी खुशी के साथ ददरेड़ा नगर में आन पहुंचे और अपने पिता व बहन छबीलदे को भला चंगा पाया। जो जाहरवीर के चमत्कार से कभी के भले चंगे हो चुके थे।

* श्री गोगा पुराण पच्चीसवां अध्याय समाप्त *

छब्बीसवाँ अध्याय

जाहरवीर के जन्म का वृतान्त

प्यारे बन्धुओ! अपने बेटे बहू को आया देख कर महाराजा उम्मरपाल सिंह को बड़ी भारी खुशी हुई। ददरेड़ा नगर दुल्हन की भांति सजाया गया। खूब गरीब फकीरों को धन लुटाया गया। ननद छबीलदे अपनी सखियों को महल में बुलवाकर ढोलक मंजीरे बजवाकर, मंगलाचार गवाने लगी। आप खुद

नाचती, कूदती, फुदकती उछलती फिर रही थी। उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था। सारी नगरी में राजा जेवरसिंह व महारानी बाछल के आने से खुशी की लहर पैदा हो गई थी। इसी प्रकार हंसी खुशी में समय गुजरते गुजरते गोगावीर के जन्म का महूर्त आन पहुंचा। ठीक भादों बदी अष्टमी को रात के बारह बजे दिन बुद्धवार को हमारे नायक जाहरवीर ने जन्म लिया था। इसी महूर्त में इसी महीने में इसी तिथि को और इसी दिन पुष्प नक्षत्र में ही भगवान श्री कृष्ण भगवान द्वारकाधीश का जन्म राजा कंस की जेल में मथुरा नगरी में हुआ था। जिसकी पूर्ण कथा का प्रेमसागर या सुखसागर में सविस्तार वर्णन है।

हां तो उस समय बुआ छबीलदे दाई के साथ सोहर में ही मौजूद थी। जाहरवीर का जन्म होते ही वह सीधी अपने पिता महाराजा उम्मरपाल सिंह के सम्मुख आन पहुंची और उसने अपने पिता को ऊंच नीच समझाकर उनका मन खराब कर दिया। ये दोनों ही बाप बेटी गोगावीर के चमत्कार से अनभिज्ञ थे। महाराजा उम्मरपालसिंह ने अकेले में दाई को बुलाकर डरा धमकाकर और धन का लालच

देकर कहा कि तू इस लड़के को घूंटो में ये जहर की पुड़िया घोलकर मिला देना तुझे भारी इनाम मिलेगा। दाई लालच में फंस गई, उसने भगवान का जरा भी भय न माना और बच्चे की घूंटी में महाराजा उम्मर पाल सिंह की दी हुई पुड़िया का जहर घोल दिया।

बन्धुओ ! जाहरवीर से अपनी दाई की चालाकी कैसे छिपी रह सकती थी। उसने तुरन्त ही अपनी माया के चमत्कार से उसके जिस्म में खुजली पैदा कर दी। जो कीरे खुजली होते ही जहर वाली घूंटी का बरतन उसके हाथ से छूटकर दूर जा पड़ा। सारी घूंटी जमीन में फैल गई। मारे खुजली के दाई का बहुत बुरा हाल था। उसने खुजली से बेचैन होकर, अपने पाप को याद करके महारानी बाछल से अपने दोनों हाथ जोड़कर सारी घटना रो रो कर बयान कर दी। रानी बाछल ने दाई द्वारा सच सच हाल सुनकर, उस पर रहम किया। वह दाई से बोली, गुरु गोरखनाथ जी महाराज को शीश झुकाकर उनसे अपने पापों की क्षमा मांग। दाई ने महारानी बाछल के बताये अनुसार अपने दोनों हाथ जोड़ कर आंखें बन्द कर के अपने किए अपराध की क्षमा मांगी

और जाहरवीर को गोदी में उठा लिया। जब उस की खुजली बन्द हो गई। तब उसने गोगावीर को स्नान कराया व बच्चे का नाल काटा और रानी बाछल की भी जरूरी सेवा सुश्रूषा कर अपने काम से छुट्टी पा महाराजा उम्मरपाल सिंह के पास जा पहुंची। अपने शरीर में खुजली उठने व ठीक हो जाने और घुटी बिखर जाने की घटना व्यौरेवार बयान की।

महाराजा उम्मरपाल सिंह दाई की बात सुनकर एकदम उदास हो गए। सन्त गुरु गोरखनाथ जी महाराज से प्रार्थना कर अपने कुकर्म की माफी मांग कर पश्चाताप किया। तब दिल की गिलानी दूर हुई। अपने चमत्कारी पोते गोगावीर के जन्मने की खुशी में अपने महल के द्वार पर नौबत बजवाई तथा गरीब फकीरों को वस्त्र और आभूषण का दान देकर उन्हें निहाल कर दिया तथा नगरी भर में चांदी के कटोरे में भर भरकर मिठाई बटवाई।

गोगावीर का नामकरण संस्कार

प्यारे बन्धुजनो ! जब हमारे नायक गोगावीर कुछ बड़े हुए तब उनके नामकरण संस्कार के लिए अपने कुल पुरोहित को बुलवा ज्योतिष गणित से घड़ी

मुहूर्त बिचार, महाराजा उम्मरपाल सिंह व पिता जेवरसिंह को सामने बिठा नामकरण संस्कार की रस्म अदा कर कहा। ये कुम्भ लगन में जन्मे हैं। नाम इनका जाहरवीर निकला है। इसी महूरत में मथुरा नगरी जेल के भीतर भगवान श्री कृष्ण चन्द्र महाराज का जन्म हुआ था। इसी महूर्त में अयोध्या नगरी में राजा दशरथ के घर भगवान रामचन्द्र ने अवतार लिया था। जिस प्रकार इन दोनों ने जनता की भलाई के लिए कष्ट उठाये थे और दुनिया वालों ने उन्हें भगवान समझकर उनकी पूजा की, उसी प्रकार इन्हें भी सब जातियां पूजेंगी। ये सब मैं शुरू में इनकी भूमिका में लिख चुका हूं। परन्तु दुख इन्हें भी कम नहीं उठाने पड़े। जती सती योगी सन्यासी दुख को ही सुख समझकर जीते हैं। उन्हें तो अपने सिद्धान्त के ही लिए जीना और सिद्धान्त के लिए ही वलिदान हो जाना पड़ता है कि किसी प्रकार उजाला हो। अपने कुल पुरोहित की वार्ता से सारे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई थी महाराजा उम्मरपाल सिंह ने अपने पुरोहित जी को मनचाही दक्षिणा देकर विदा किया। वह उनके पोते राजकुमार गोगावीर को आशीर्वाद दे विदा हुए।

भक्ती में शक्ति

जिस प्रकार हमारे गोगावीर का जन्म महारानी बाछल की तपस्या की प्रचन्ड शक्ति, सन्त सेवा, दान धर्म करने पर भी दुनिया की तो बात क्या, सगी बहन व सगी नन्द ने भी उसे पापिनी कहा और घर से नन्द तथा अपने ससुर द्वारा निकाले जाने पर अपने पिता के यहां भी अपनी परीक्षा में पास होकर दिन काटे । अगर गुरु गोरख नाथ की कृपा न होतीं तो महारानी बाछल कभी की यमलोक पहुंच गई होती । उसकी भक्ती में शक्ती थी । कभी गुरु गोरखनाथ जी महाराज की जोत बालने से न चूकी । जब तपस्या पूरी हो गई, तब भी एक पुत्र के लिए क्या क्या नहीं करना पड़ा ।

ऐसे ही एक साहूकार का दृष्टान्त है । सो मित्रो ध्यान लगाकर सुनो । लक्ष्मी पुर का रहने वाला एक सेठ था और विष्णु दास उनका नाम था । उस का परिवार सब प्रकार से सुखी सम्पन्न था । वह छल कपट से रहित भक्ति भाव वाला आदमी था । स्त्री उसकी सदाचारणी पति आज्ञा में चलने वाली पतिव्रता थी परन्तु उसके भी सन्तान कोई नहीं थी । सन्तान की चिन्ता ने उसकी भक्ति बेकार कर डाली ।

वह काफी दान पुन्न करने लगा । कैसा भी नामधारी सन्त महात्मा आवे, वह उसकी ईश्वर के समान पूजा करता था । प्रत्येक व्यक्ति पर वह बहुत जल्द अपना भाव दर्शाने लगता था । इस प्रकार करने से वह बहुत सी बार ठगा भी जाता था । परन्तु वह उसकी कतई परवाह नहीं करता था । कारण उसके पास धन बहुत था । उस पर लक्ष्मी जी की विशेष कृपा थी । परन्तु स्त्री पुरुष सन्तानहीन होने के कारण अधिक चिन्तित रहते थे ।

इसी चिन्ता के कारण उन्हें लौकिक सुख का विशेष आनन्द नहीं मिल पाता था । पुत्र प्राप्ति का जिसने भी जो उपाय बताया । सब की सब वह कर चुका था । भंगी, चमार, तेली, तम्बोली, कोली सब को मना चुका था । साधू, सेवड़ा, जती, जंगम, मरघट मसानी तक पूज चुका था । पंडितों के बताये शास्त्र के अनुष्ठान पर अनुष्ठान वह कर चुका था । इतने सारे उपाय करने पर भी सन्तान होने के कोई चिन्ह नजर नहीं आते थे । सूक्ष्म रूप से तीनों लोकों में विचरने वाले नारद जी उसके दान पुन्न को देखकर उसे महान भक्त समझने लगे । वह भक्त था भी । नारद जी को उसका भक्ती भाव देखकर बड़ा

आश्चर्य हुआ कि इस भक्त साहूकार के लाखों यत्न करने पर भी इसे एक सन्तान नहीं देते। भगवान कैसे कठोर हृदय के हैं। इस प्रकार सोच विचार करते हुए नारदमुनी बैकुंठ लोक में जा पहुंचे। भगवान के पास जाकर पूछा, हे प्रभू! वह जो लक्ष्मी पुर में आपका भक्त एक महाजन रहता है। जिसका नाम विष्णू दास है। भगवान बोले नारद जी आप सच कहते हैं, वह मेरी भक्ती करता है। परन्तु उसकी भक्ति सकाम नहीं है। नारद जी ने कहा तो प्रभू इसमें क्या बुराई है। आपने अपनी गीता में अर्जुन को चार प्रकार के भक्त गिनाये हैं। चारों को उत्तम ही कहा है। उन्हीं में से वह भी एक तो है ही। दूसरे आपने ये भी कहा है, जो भी जिस भावना से मेरी भक्ति करता है। मैं उसकी भावना पूरी करता हूं। आपको अपने वचन के अनुसार उसको एक पुत्र जरूर देना चाहिए। भगवान बोले नारद जी, मेरा वचन असत्य नहीं है। परन्तु सत्यता का भेद सत्य गुरु ही जान सकते हैं। जब तक उसके पूर्व जन्म के कुकर्मों का नाश नहीं होता, तब तक उसे इस भक्ति का फल नहीं मिल सकता। इस जन्म का तो बात ही क्या है उसके भाग्य में सात जन्म तक पुत्र प्राप्ति



नहीं लिखी है । मुझ से तर्क वितर्क करना आप जैसे भक्त को शोभा नहीं देता ।

नारद जी भगवान का कोरा उत्तर सुनकर चुप हो गए । परन्तु भगवान की माया उनकी समझ में नहीं बैठी । उधर सेठ विष्णू दास अपनी मनोकामना पूर्ण होने के साधन में जुटा रहा । उसने यत्न करना न छोड़ा । एक दिन रात्रि के वक्त एक सन्त उसके मकान के सामने आनकर चिल्ला चिल्ला कर कहने लगा । जो एक रोटी देगा, वह एक बेटा लेगा । जो दस रोटी देगा, दस बेटे लेगा । ये शब्द विष्णूदास के भी कान में पड़े । उन्होंने अपनी स्त्री से कहा । अजी सुन रही हो, ये सन्त क्या कह रहा है । उसे जाकर रोटी दे आओ । स्त्री ने कहा, स्वामी सब उपाय तो करके हार गये. कुछ भी सार न निकला । इस भिखमंगे के कहे से क्या हो सकता है । सेठ बोला भाग्यवान ऐसा नहीं कहा करते । न मालूम किस भेष में नारायण मिल जाये । लग्न सच्ची होनी चाहिए । तुम जाकर श्रद्धापूर्वक रोटी दे आओ । अपने पति की आज्ञा मान पत्नी ने बची हुई सातों रोटियां सन्त जी को दरवाजे पर जाकर दे दीं । सन्त ने सातों रोटियों को गिनकर देखा और बोले, तुम्हें सात पुत्रों

की प्राप्ति होगी। स्त्री ने पति से जाकर सन्त की बात कही। पति ने कहा सन्त सिद्ध मालूम पड़ता है। उसकी बात सही भी हो सकती है। इन लोगों पर ईश्वर की विशेष कृपा होती है।

दस मास पर्यन्त सेठानी ने एक पुत्र जन्मा, उसके सात साल में सात पुत्र उत्पन्न हो गए। इसके बाद जब नारदजी मृत्यु लोक में सेठ का हाल चाल जानने लक्ष्मीपुर आए तो सेठ के सात पुत्र देखकर बड़े हैरान हुए। क्षीर सागर में विष्णु भगवान के पास पहुंचकर बोले। प्रभू, आपने झूठ बोलना किससे सीखा। आप तो कहते थे लक्ष्मीपुर निवासी सेठ विशणुदास के सात जन्म तक कोई पुत्र नहीं होगा। उसके तो सात पुत्र इसी जन्म में खेलने लगे। भगवान बोले, नारद जी आप ये बात नहीं जानते, मैं उसको उस समय तक कोई पुत्र नहीं दे सकता था, जब तक उसकी प्रारब्ध पक्क न जाये। जिसने उसे पुत्र दिए हैं। अपनी कमाई में से दिए हैं। देने वाला मेरा पूर्ण भक्त है। मुझे उसके शब्दों को काटने की सामर्थ्य नहीं है। मुझसे मेरा भक्त विशेष शक्ति रखता है। नारद जी बोले। प्रभू, जो कंगाल गली गली रोटी के टुकड़े मांगता फिरता है। उसमें

ऐसी क्या विशेषता है।

भगवान बात बदलकर बोले, अरे! यह मेरे पेट में दर्द क्यों उठने लगा। ये तो बड़ा भारी दर्द है। नारद जी जल्दी से कोई उपाय करो। नारद जी बोले प्रभू, आप ही बतावें मैं क्या उपाय करूं। भगवान बोले नारद जी संसार में मेरे भक्तों की कमी नहीं है। करोड़ों अरबों भरे पड़े हैं। तुम उनके पास जा कर कहो, भगवान के पेट में भारी दर्द है उसे भक्त के कलेजे से आराम होगा। जो अपना कलेजा खुशी से दे दे तुम लेकर मेरे पास आ जाओ जिससे इस दर्द से छुटकारा मिले। नारद जी चलकर तीनों लोकों में घूमे और हर भक्त से उन्होंने भगवान के पेट में दर्द बताकर उससे उसका कलेजा मांगा। परन्तु अपना कलेजा काढ़कर किसी ने नहीं दिया। कई जगह पर उल्टी सीधी बातें सुनने को मिलीं। किसी किसी ने तो पागल होने तक की उपाधि उन्हें दे डाली।

अन्त में हारकर भगवान के पास पहुंचकर और उन्हें दर्द से बेचैन देखकर बोले, प्रभू अपना कलेजा कोई नहीं देता। भगवान बोले, नारद जी जिसने लक्ष्मीपुर वाले सेठ को पुत्र दिये थे, उस कंगाल के पास आप नहीं पहुंचे। उसके पास आप जाओ तो वह

अवश्य देगा। नारद जी उसी सन्त के पास जाकर भगवान के पेट का दर्द ठीक करने के लिए उससे उस का कलेजा मांगा। वह दर दर रोटी मांगने वाला प्रसन्न हो छुरी उठाकर अपना कलेजा काढने के लिए छुरी पेट में घुसेड़ने को हुआ।

तभी भगवान ने प्रगट होकर उसका हाथ पकड़ लिया। कहने लगे भक्तवर, मेरा दर्द ठीक हो गया है। अब कलेजा नहीं चाहिए। इस संसार में मेरा सच्चा भक्त एकमात्र तू ही है। फिर नारद जी की तरफ देखकर बोले, कुछ समझ में आया। ऐसे भक्त के वचन मैं कैसे मिथ्या कर सकता हूं। जब मैंने पेट दर्द से बेचैन होकर आपको कलेजा मांगने भेजा था तो तुम जैसे भक्त के पास में होते हुए भी मेरा पेट दर्द ठीक कर सकते थे। नारद जी ने शरमिंदा होकर अपनी गरदन झुका ली।

नारद जी अपने को पूर्ण भक्त समझते थे। उस रोटी मांगने वाले भक्त के सामने, उनका घमन्ड चूर चूर हो गया। सन्त जो रोटी के बदले पुत्र देता था वह अपने किए शुभ कर्मों की भक्ती के आधार से देता था। कोई भी अपने शुभ कर्मों का फल चाहे जिसे दे सकता है। ये भक्तो में ही शक्ती है। सूक्ष्म योग

प्रभाव वाली बुद्धि में इस प्रकार का भाव होना सम्भावित है। मन ही सृष्टी स्वरूप है। मन कौन सी रचना नहीं कर सकता है। आजकल गेरूआ रंग के वस्त्र पहन कर झुन्ड के झुन्ड मनुष्य साधू संत बने घूमते हैं। ऐसे सन्तों से गृहस्थी लोग लाख दर्जे अच्छे हैं। क्योंकि गृहस्थी का भाव दान देने का ही होता है और साधू का भाव लेने का। भला आप ही बतावें सद्गृहस्थियों से इस प्रकार ठगकर धन लेकर उन्हें अपनी उदर पूर्ती करने का क्या अधिकार है इस प्रकार ठगी का लिया धन वह किस प्रकार हजम कर सकते हैं। कभी न कभी कुत्ता या बैल बनकर, जिस से जो कुछ लिया है मय ब्याज के चुकाना पड़ेगा। ईश्वर के नाम पर भक्ति रहित अज्ञानी उस दान के कर्जे को मय सूद दर सूद अगले जन्मों में चुकाकर ही बन्धन से मुक्त होता है। आप पूछोगे ज्ञानी भी तो मांगकर लेता है। उसको क्यों नहीं चुकाना पड़ेगा। अरे भाई, ज्ञानी का चित्त ईश्वर में होता है इसलिए जो उसे दिया जाता है, उसका जुम्मेदार ईश्वर बन जाता है उसको दिया हुआ ईश्वर चुकाता है। अज्ञानी जो लेता है वह दान नहीं वह दान के बहाने ऋण लेता है। उसे अवश्य ही चुकाना पड़ेगा। त्यागी

बनना कोई सहज बात नहीं है, त्याग की उच्च श्रेणी बड़ी कठिन है ।

गुरू गोरखनाथ के एक और भक्त राजा की कथा

एक राजा अपने बालकपन से ही भगवान का भक्त था । कुछ बड़ा हो जाने पर उसका भक्ती भाव तीव्र हो गया । उसे अपना राजपाट व्याधि प्रतीत होने लगा । उसने सोचा बिना पूर्ण त्याग के भक्ती होना असम्भव है । राजपाट ही भक्ति में बाधक है। बिना इसको त्यागे मैं पूर्ण भक्त नहीं बन सकता हूं। ऐसा विचार अपने मन में सोच कर अपने बेटे को राजपाट सौंप और उत्तम विश्वास वाले अधिकारियों के सुपुर्द कर त्यागी बन, राजधानी से दूर बहुत दूर एक पहाड़ की कन्दरा में, अपना घर बना कर, दिन भर उसी में रहकर, अपने पूर्व जन्म के शुभ कर्मों द्वारा, भगवान की भक्ति करता और योग साधना में लगा रहता था ।

वह दिन भर कन्दरा से बाहर नहीं निकलता था और न किसी से मिलता जुलता था। उसने प्रपंच के जाल में फंसना उचित न समझा। जहां वह रहता था वह गुफा ऐसे एकान्त स्थान में थी जो बिलकुल मनुष्य की दृष्टि से ओझल थी। उस का

दरवाजा पत्थर से बन्द कर देने पर किसी को कोई पता नहीं चलता था । राजा दिन भर उसमें अपना पूजा पाठ करता और सायंकाल पास के शहर में जाता और जाते ही जिसने रोटी का टुकड़ा डाल दिया ले लेता । खाने लायक मिल जाने पर वह सीधा अपनी गुफा को लौट आता था ये उसने अपना नित्य का नियम बना रक्खा था । वह सदा नग्न ही रहता था ।

कुछ दिनों में उस शहर में उसकी चरचा घर घर हो गई कि एक दिव्य देहधारी महात्मा उनके शहर में रोटी मांगने आता है । बहुत से लोग वन से बाहर आने वाले रास्ते पर रोटी लेकर पहुंचने लगे और सन्त के दर्शन कर रोटी देने लगे । एक दिन राजा के शहर का एक आदमी उस शहर में आया और अपने रिश्तेदारों से सन्त की तारीफ सुनी तो उनके साथ वह भी सन्त दर्शन की अभिलाषा से उन के साथ साथ चला आया था । उसने अपने राजा को पहचानकर कितने ही आदमियों से कह दिया ये तो हमारे नगर का राजा है । जो बड़ा भारी राज्य त्याग कर सन्यासी बना है ।

इतना सुनते ही वहां के लोगों ने एक दूसरे से

चर्चा की सारी बस्ती में ही ऐसे त्यागी सन्त राजा राजा की चर्चा घर घर में हो गई। लोग हजारों की तादाद में रोटियां लेकर आने लगे और संध्या से पहले ही जमा होने लगे। ऐसी भीड़भाड़ देखकर राजा ने अपना मार्ग बदल डाला और दूसरी बस्ती से रोटियां लाने लगा। उसी समय योगीराज गुरू गोरखनाथ जी महाराज उस नगरी में पधारे और सन्त राजा की प्रशंसा सुनी। उन्होंने उसकी परीक्षा लेने का विचार किया। जब वह रोटियों के टुकड़े लेकर जाने लगा तब गुरु गोरखनाथ ने पीछे जाकर उसको बुलाया परन्तु उसने बिना पीछे देखे ही अपना मार्ग तय करना जारी रक्खा। चांदनी रात होने से गुरु गोरखनाथ भी उस के पीछे लग गये और थोड़ा आगे बढ़कर, हाथ मार कर रोटियों के टुकड़ों को उसके हाथ से गिरा दिया। इस पर भी वह सन्त राजा कुछ नहीं बोला। उसने शांतीपूर्वक उन टुकड़ों को एक एक कर बीन लिया और अपनी राह चल पड़ा।

परन्तु गुरु गोरखनाथ इतनी शांती देखकर भी सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने उसका पीछा नहीं छोड़ा। और अवसर मिलते ही राजा के हाथ को ऐसा झटका मारा कि सारी रोटियों के टुकड़े दुबारा हाथ से गिर

पड़े। उसने फिर बिना बोले चाले शांतीपूर्वक पहले के समान ही उन्हें भी बीन हाथ दृढ़ कर शांती पूर्वक चल पड़ा। तभी गुरु गोरख नाथ ने एक साथ आगे बढ़कर तीसरा झटका बल पूर्वक मार कर फिर सब रोटियों को गिरा दिया। रोटियों के टुकड़ों को तीसरी बार गिरा देखकर राजा ने समझ लिया ये सन्त महात्मा मेरी परीक्षा ले रहा है।

राजा बोले, जिन बातों को आप ढूंढते हैं उन बातों को छोड़कर ही यहां आया हूं। अब मेरे पास कुछ नहीं रहा। मैंने अपना राजपाट छोड़ अपना अभिमान छोड़ सारे विकार भी छोड़ दिये हैं। अब इनमें से मेरे पास एक भी नहीं है।

राजा की बात सुनकर गुरु गोरखनाथ प्रसन्न हो बोले, इसमें सन्देह नहीं तुम त्यागी हो। परन्तु अभी पूर्ण त्यागी नहीं बने। तुमने राजपाट सब छोड़ दिया परन्तु उसकी याद नहीं छोड़ी। इसलिए त्याग का घर अभी कोसों दूर है। ऐसा कहकर गुरु गोरखनाथ नगर की तरफ लौट गये और सन्त राजा भी अपनी गुफा में जा पहुंचा। अपने जी में विचारने लगा। ये संत पुरुष कोई पहुंचा हुआ भारी महात्मा था। जिस ने मुझे त्याग के सूक्ष्म स्वरूप का उपदेश दिया है।

मैं इन महात्मा के उपदेश से कृतार्थ होऊंगा। त्याग का भाव त्याग करना कि मैं त्यागी हूं। और त्याग की हुई वस्तु का स्मरण करना कि मैंने फलां वस्तु त्यागी है। ये सब न्यूनता बताकर ही उस योगी ने मेरी आंखें खोली हैं। राजपाट के वैभव का त्याग मेरे अन्तःकरण से नहीं निकला था। उस दोष को राजा ने गुरु गोरखनाथ की कृपा से अपने अन्तःकरण से निकाल दिया। त्याग का कितना ऊंचा रहस्य है। इसकी ऊंची अवस्था का त्याग बिना अभ्यास के बिना योगी बने कोई किस प्रकार कर सकता है।

* श्री गोगा पुराण छब्बीसवां अध्याय समाप्त *

सत्ताईसवां अध्याय

सज्जनो ! अब आपको कपटिन काछल का हाल सुनाया जाता है। गुरु गोरख नाथ को धोका देने के अपराध के कारण उसे बड़ा भारी कष्ट सहन करना पड़ा था। दोनों भाई एकदम जुड़वां पैदा हुये थे। काछल रानी की जान न निकली। ये उसकी पूर्व जन्म की तपस्या का फल समझना चाहिए। ये दोनों भाई गोगा वीर से उम्र में बड़े थे क्योंकि कपटिन काछल गुरू गोरखनाथ से अपने कपट द्वारा पहले ही

वरदान लेकर तुरन्त हो दोनों जौ के दाने खा गई थी। ये दोनों भाई एक साथ पैदा होने के कारण, जुड़वां भाई के नाम से प्रसिद्ध थे और जोड़ा के नाम से पुकारे जाते थे। गोगावीर से बड़े होने के कारण अपने को राज्य का अधिकारी समझते थे। उनकी माता कपटिन काछल रानी भी, अपने पुत्रों को बढ़ावा देने के कारण, अपने बेटों को बड़ा और जाहरवीर को छोटा भैया कहलवाती थी। परन्तु महारानी बाछल उन दोनों को भी, गोगावीर की तरह अपनी ही सन्तान समझती थी। वह तीनों भाइयों को एक जैसा हो प्यार करती थी।

परन्तु राजा उम्मरपाल सिंह को हमारा नायक जाहरवीर ही अधिक प्यारा था। कारण एक तो छोटा बच्चा ही सबको अधिक प्यारा लगता है। फिर उसके चमत्कारी खेल देख देखकर प्यार की मात्रा में बराबर बढ़ोतरी होती ही चली गई। एक दिन राजा उम्मर पाल सिंह सोच विचार करने लगे। जैसे कौरव पांडव भाई भाई आपस में लड़े थे हमारा कुटुम्ब भी इसी तरह आपस में युद्ध न करे। इसलिए अपने छोटे बेटे नेवर सिंह के हिस्से में इलाका सांभर का और उसका किला कर दिया तथा बड़े बेटे के

हिस्से में ददरेड़ा नगरी को लिख दिया। इन दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम था इस लिए दोनों भाई ददरेड़ा नगरी में ही हंसी खुशी रहकर सांभर की भी देख भाल किया करते थे।

समय अपना प्रभाव दिखलाता है। सांभर का इलाका रफते रफते कमजोर पड़ गया और ददरेड़ा अपनी तरक्की करता हुआ काफी उन्नति कर गया। परन्तु आपस के प्यार के कारण किसी ने कतई परवा नहीं की। इसके अलावा नेवर सिंह उतना ही अधिक सीधा था जितनी चालाक उसकी रानी कपटिन काछल थी। वह अपने बड़े भाई जेवरसिंह की आज्ञा का भी उसी प्रकार आज्ञाकारी था, जिस प्रकार भगवान राम के आज्ञाकारी लक्षमण जती थे। उनके दिन खूब आनंद पूर्वक गुजर रहे थे। सब सुख की नींद सोते थे और सुख की नींद ही उठते थे। किसी बात की चिंता फ़िकर से सारा परिवार कोसों दूर था। महारानी बाछल की तीनों सखियों के बालक भी जो जाहरवीर से पहले ही जन्म लेने के कारण थोड़े बड़े थे क्योंकि उनकी माताओं ने महारानी बाछल से गूगल लेकर पहले ही खा ली थी। इसलिए उनके जन्म भी पहले हो चुके थे। ये भी जाहर वीर के साथ मि... ...आ

सगे भाइयों के समान ही व्यबहार करते थे।

हमारे नायक गोगा वीर भी छूत छात को न मान कर, ऊंच नीच का भेद भाव भुलाकर, इन तीनों को भी अपने दोनों भाई अरजन सरजन की तरह ही प्यार कर, उनके साथ भी खेल कूद में शामिल हुआ करते थे। पढ़ने लिखने में भी सब साथ दिया करते थे। कारण ये सभी गुरु गोरखनाथ महाराज की गूगल द्वारा हो जन्म लेने से एक ही सी खसलत के थे। जो एक दूसरे के लिये अपनी जान देने को तैयार रहते थे और जाहरवीर के विशेष उपासक थे। क्यों कि जाहरवीर निश्छल वीर योद्धा, न्यायकारी, गौ भक्त, अछूतोद्धारक स्वभाव के, माता पिता और गुरु आज्ञा पालक थे। कपटिन काछल के बेटे अरजन सरजन कपट वेष धारी कपटी स्वभाव के थे। जो अपने छल कपट के कारण जाहर वीर तथा उनके संगी साथियों से द्वेष भाव रखते और बात में लड़-झगड़ पड़ते थे। तब जाहर वीर न्याय पूर्वक एक दूसरे को डपट धमका कर, आपस में शीघ्र ही मेल मिलाप करा दिया करते थे। उन सब में किसी को भी जाहर वीर की आज्ञा न मानने की शक्ति नहीं थी। उन तीनों के नाम इस प्रकार थे, पन्डतानी के

बेटे का नाम नरसिंह पांडे, लूना चमारी के बेटे का नाम भज्जू कोतवाल तथा दासी भंगिन के बेटे का नाम रतन सिंह (भंगी) था। राजा जेवर सिंह की नीली घोड़ी के बछेड़े का नाम लीला था जो अपने नीले रंग का होने के कारण विश्व विख्यात था। उसकी खूबसूरती और बहादुरी की तारीफ गोगा वीर के दुश्मन भी किया करते थे। ये छओ भाई अस्त्र शस्त्र चलाने की विद्या सीख कर बड़े ही निपुण तथा बहादुर बन गये थे और सब ही अपने अपने घोड़ों पर चढ़ कर, नित्य प्रति शिकार खेलने जंगल में जाया करते थे।

बन्धुवो ! दिन जाते क्या देर लगती है। हमारे गोगा वीर भी बारह वर्ष के हो गए। तब राजा जेवरसिंह ने तीनों राजकुमारों का अपने राजपुरोहित को बुलाकर यज्ञोपवीत संस्कार करवाया और ब्रह्म भोज कर सबको मनचाही दक्षिणा दी थी। कुछ दिन बाद गोगावीर नित्य नियम पूर्वक सुबह चार बजे उठ कर, गुरु गोरखनाथ जी महाराज के धूने पर पहुंच कर, गुरु सेवा के अलावा, भजन पूजन, तपस्या आदि कर योगीराज की सेवा सुश्रूषा कर उनकी आज्ञा का पालन करते थे। घर पर आन कर अपने पिता

राजा जेवर सिंह को राज काज में सहायता पहुंचाते थे। जिससे उनकी योग्यता, बहादुरी और न्याय-प्रियता की धूम राज्य में चारों तरफ फैल गई थी। इसी तरह परोपकार, गो सेवा, अछूत उद्धार के कार्य बचपन से ही समझदारी से कर दया भाव रखते हुए उनकी उमर सोलह साल को हो गई।

एक दिन हमेशा की तरह गुरु गोरखनाथ जी महाराज का सुमरन करके रात के वक्त अपने महल में सो रहें थे। तो रात को तीसरे पहर दिन निकलने के समय ब्रह्म मुहूर्त में क्या स्वप्न देखते हैं कि एक राजकुमारी अति सुन्दर, स्वर्ग लोक की अपसरा के समान खूबसूरत, उनके कमरे में आनकर और शर्त बदकर चौपड़ सार खेलने लगी। शर्त में बात ठहरी जो जीते वह मालिक और जो हारे वह गुलाम बन कर एक दूसरे के साथ रहकर जीवन व्यतीत करे। दोनों ने शर्त हंसी खुशी मान कर खेल शुरू कर दिया. जिसमें जाहर वीर की जीत हुई और राजकुमारी की हार हो गई। शर्त के अनुसार विवाह पक्का करके भांवरें फिरने लगीं। अभी आधा विवाह ही हो पाया था कि गोगा वीर का स्वप्न टूटकर, दोनों आंखें खुल गई। जाहर वीर इधर उधर देखकर घबरा गए कि

जिसके साथ आधा ब्याह हो कर साढ़े तीन फेरे फिर चुके हैं वह राज कुमारी एकाएक कहां गायब हो गई ।

अपने सामने धर्म संकट देखकर, वे बड़े बेचैन हो गए । उनकी समझ में नही आया कौन उपाय किया जाते । थोड़ी देर पीछे ही दिन निकल आया और नित्यकर्मसे निबटकर गुरु गोरखनाथ का ध्यान धर,प्रभू भजन से निबट, अपनी माता के महल में पहुंच कर, उनके चरण स्पर्श कर, दोनों हाथ जोड़ प्रणाम किया अपनी जननी महारानी बाछल से, अपने अनोखे स्वप्न को सुस्त होकर ब्यौरे वार सारा बयान किया । जननी साढ़े तीन फेरे होकर आधा ब्याह तो हो गया है आधा और बाकी है । इतना सुनते ही महारानी बाछल अधीर हो बोली । अरे बेटा ऐसे स्वप्न न जाने रात दिन कितने दिखते हैं । स्वप्न में राजा भिखारी बन जाते हैं और भिखारी राजा । कभी किसी के स्वप्न सच्चे हुए भी हैं । तुम अपने गुरु गोरखनाथजी महाराज का ध्यान करो, जिससे सब अलायें बलायें दूर हो जावें । गोगा वीर कहने लगे, नहीं माता जी, अगर आपकी कृपा और गुरु गोरखनाथ जी महाराज की दया हुई तो मैं इस स्वप्न वाली राज कुमारी के

साथ जरूर विवाह करूंगा ।

महारानी बाछल ने बहुत तरह से अपने बेटे जाहरवीर को समझाया । परन्तु गोगावीर ने अपनी धुन के सामने अपनी माता की एक भी न चलने दी । भोजन जीमकर अपने दोस्तों को संग लेकर, रोज-मर्रा की तरह नौलक्खे बाग में जा पहुंचे । सब मित्रों से अपने स्वप्न का हाल ब्यान किया कि आप लोग सलाह दो ये स्वप्न वाली राजकुमारी किस प्रकार हाथ आवे । उसके दोस्त बोले, भैया जाहर वीर स्वप्न की बात पर भरोसा करना कौन सी बुद्धिमानी है । उसने तुम्हें कुछ अपना नाम पता भी बतलाया हो, तब भी कुछ अन्दाजा लगाया जा सकता है कि स्वप्न ठीक है या गलत । अगर स्वप्न में अपने शहर व गली मौहल्ले का नाम पता जानने से तो पता भी लगाया जा सकता है । बिना पते तुम्हारे पागलपन का कोई इलाज हमारे पास नहीं । धूल में लट्ठ मारने से कोई लाभ नहीं । चलो तुम्हारे कहने से धूल में लट्ठ मार भी देवें तब भी तो ये पता जरूर होना चाहिए कौन सी धूल में लट्ठ मारें ।

जाहरवीर की समझ में अपने मित्रों की भी कोई बात नहीं बैठी । उन्हें अपनी धुन के सामने सब की

बातें वेबुनियाद दीखने लगीं। वह अपने मित्रों का साथ छोड़कर अपने अस्तबल में जा पहुंचे। जहां अपनी माता नीली घोड़ी के पास लीला बछेड़ा बन्धा था। वह भी जाहरवीर की तरह तगड़ा जवान हो गया था। वह भी गोगावीर के दूसरे मित्रों की तरह जाहरवीर से बड़ा था। गुरु गोरखनाथ महाराज की गूगल द्वारा ही उसका भी जन्म हुआ था। जाहर वीर ने लीले बछेड़े से कहा। मैं तुम्हें मित्र कहूं या गुरु भाई। आज तुम्हें मेरे साथ लम्बे सफर को चलना है। लीले घोड़े ने कहा। गुरु भाई, मैं तुम्हारी आज्ञा से बाहर नहीं हूं। जहां चाहे ले चलो, मुझे आपसे कब इन्कार है। वह खुशी खुशी अपनी माता नीली घोड़ी का मुंह ताकने लगा। नीली घोड़ी ने जब अपने बेटे को मुंह ताकते देखा तो उस की भी आंखें भर आईं और अपने बछेड़े को प्यार से पुचकार कर अपनी निगाह नीची करली।

तब जाहरवीर ने अपने सईस को बुला, गुरु गोरखनाथ महाराज का ध्यान धर, अपने नीले घोड़े की मालिश करवाकर, उसे स्नान करवाया, और सुन्हरी साज से सजवाकर उसके गले में मोहन माला पहनाकर सावर का तंग कस दिया और दुलकी

तिलकी पहनाकर अपनी माता महारानी बाछल को दूर से ही प्रणाम कर, अपने पिता को दूर ही से अपना मस्तक नवा दिया और एक ही छलांग में अपने लीले घोड़े पर सवार हो गया। फिर कुछ सोच विचार कर, कि मैं न जाने कब लौट कर आऊं, माता जी घबरा जायेंगी। अपने घोड़े का मुंह महल की तरफ मोड दिया। महल में जा महारानी बाछल को प्रणाम किया। महारानी बाछल अपने बेटे जाहरवीर तथा नीले घोड़े को ठाट वाट में देखकर फूली न समाई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह फूल कर कुप्पा बन गई और अपने पुराने सारे दुख भूल गई। अपनी माता को अत्यन्त खुश देखकर गोगावीर हाथ जोड़कर बोले !

जननी आशीर्वाद दें मैं अपने स्वप्न वाली राज-कुमारी को तलाश करने जा रहा हूं। आप आज्ञा देने की कृपा करें। महारानी बाछल अपने मन में अधीर हो अपने बेटे जाहरवीर से बोली। बेटा अभी तुम्हारी उम्र ही कितनी है। परदेश में बड़ी तकलीफ होती है। कहां खाओगे, कहां पियोगे, कहां उठोगे, कहां बैठोगे न दास होंगे न दासी, न यार होंगे न ही दोस्त। कौन तुम्हारा दुख सुख देखेगा। मेरा तो तुम्हारी बात

सुनकर ही दिल कांप रहा है। जहां भी तुम जाना चाहते हो, अपने बाबाजी और पिताजी से पूंछ कर जाना। तुम्हें इन दोनों बड़े बूढ़ों की आज्ञा लेना बहुत ही जरूरी है। अपनी माता महारानी बाछल की बात सुनकर जाहरवीर बोले।

जननी तुम इस प्रकार की बातें करके क्यों अधीर हो रही हो। जो मुझे वीर से कायर बनाने की बात बनियों की तरह सोच विचार रही हो। हम क्षत्री वंश के नामी ग्रामी वीर, जिनका नामी गोत्र चौहान उस पर भी हम लोगों के सर पर योगीराज गुरु गोरखनाथ जी महाराज की कृपा का हाथ। कष्ट तो ऐसे इन्सानों की सकल देख कर ही, भागता नजर आता है। जिस योगेश्वर की कृपा से वह स्वप्न दीखा है। उन्हीं की कृपा से वो सच्चा भी होगा। तुम वीर क्षत्राणी होकर, अपने मन को छोटा मत करो। दादा जी और पिताजी के सामने मैं जाना नहीं चाहता हूं। मुझसे उनकी आज्ञा का उलंघन न हो सकेगा। उन्हें मालूम होते ही, वह लोग मुझे हरगिज यहाँ से जाने न देंगे। उनको आप पता भी मत होने देना तब ही ठीक रहेगा। आप गुरु गोरखनाथ जी महाराज का सुमरन कर मुझे विदा करें। भगवान सब

प्रकार भली करेंगे उन्हीं की कृपा से मेरा स्वप्न जरूर सच्चा होगा।

अपने बेटे गोगावीर की वार्ता सुनकर, महारानी बाछल निराश होकर लीले घोड़े से बोली। बेटा लीले तुम भी गुरु गोरखनाथ महाराज की उसी परशादी से पैदा हुए हो जिससे तुम्हारा ये भाई जाहरवीर पैदा हुआ है। इसलिए तुम परदेशों में चौकस होकर रहना, कोई संकट आने पर गुरु गोरखनाथ जी महाराज का ध्यान धर, दोनों गुरु भाई एक दूसरे की रक्षा जी जान से करना, और दगा फरेब में किसी दुश्मन के न फंस जाना। इतनी सुनकर लीला घोड़ा बोला। मातेश्वरी आप चिन्ता न करो, जहां मेरे गुरु भाई गोगावीर का पसीना गिरेगा, वहां मेरी रक्त की धारा बहेगी। अब आप चिन्ता फिकर त्याग धीरज धर उसी प्रकार हमें जाने की इजाजत दे दें जिस प्रकार मेरी माता ने आज्ञा दी है।

लीले घोड़े के वचनों पर विश्वास कर महारानी बाछल आंखों में जल भर लाई और अपने पशु की हिम्मत देखकर आप भी अपने आंसू पूंछ हिम्मत कर, गुरु गोरखनाथ जी महाराज का ध्यान धरकर रोली चावल मंगवा कर, दोनों गुरु भाइयों का तिलक किया,

उन्हें आशीर्बाद दिया जुग जुग जिओ, जब तक गंगा जमना में पानी रहे उससे भी ज्यादा तुम्हारी उम्र हो। योगेश्वर गुरु गोरखनाथ से प्रार्थना की। गुरु महाराज ये दोनों जिद्दी बालक, आपकी ही परशादी के परशाद हैं। परदेशों में इनकी रक्षा करना और लीले घोड़े से बोली बेटा, अगर परदेशों में कोई दुर्घटना घट जाय, तो अपने गुरु भाई जाहरवीर को जिन्दा हो या मुर्दा महल में ही लाकर छोड़ना। महारानी बाछल की बात सुनकर नीला घोड़ा बोला, माता जी हम लोग न दूध बतासे हैं, न दई की पकौड़ी जो हमें दुश्मन घोलकर पी जावेगा। आपने मुझे समझ क्या रक्खा है मैं राजा इन्द्र के स्वर्ग लोक में रहने वाले पिता की सन्तान हूं मेरी माता ददरेड़ा नरेश महाराजा जेवर सिंह बहादुर की घोड़ी है। क्या मैं अपने माता पिता का नाम डुबा दूंगा। माता जी वह तो बोझा ढोऊ गधे की औलाद खच्चर ही होते हैं जो इक्कों में जोते जाते हैं और दिन रात मार खाते हैं। मुझे तो हवा में उड़ने वाला हवाई जहाज ही समझो। परन्तु भैया को समझादो मुझे चाबुक न मारे, नहीं तो मैं चाबुक खाकर गुस्सा हो तुरन्त ही भाग आऊंगा। मैं तो इशारा मिलते ही तीर के माफिक

हवा में उड़ना जानता हूं।

अपने नीले घोड़े की बहादुरी भरी बातें सुन सुन कर महारानी बाछल खिल खिलाकर हंस पड़ी और मन ही मन मुस्करा कर, दोनों मित्रों को जाने की आज्ञा दे दी। जाहरवीर ने आज्ञा मिलते ही अपनी जननी के चरण छुए। और शीश झुकाकर नीले घोड़े पर सवार हो गया। जब जाहर वीर ने अपने घोड़े को पैर की ऐड़ लगाई, तब वह ऐड़ लगते ही आसमान में ऊंचा उड़ गया। उसके फैले पंखों ने क्षण मात्र में उन्हें समुद्र के किनारे पहुंचा दिया। जाहर वीर समुद्र की लहरें देखकर, आनन्द विभोर हो गए। उन्होंने अभी तक नदी नहर और तालाब ही देखे थे। समुद्र की लम्बाई चौड़ाई का विस्तार और उसकी गहराई का अन्दाजा लगाकर भारी गमगीन हो गए। जिसका अन्त न हो उसका अन्दाजा कैसे लग सकता है।

सज्जनों! जब जाहरवीर की अक्ल ने काम नहीं दिया, तब उन्होंने चिन्ता त्यागकर और घोड़े की पीठ से उतरकर गुरु गोरखनाथ का ध्यान धर नीले को समुद्र में स्नान कराया। फिर लहरों का आनन्द लेते हुए स्नान ध्यान से फारिग हो गए। फिर योगेश्वर

गुरु गोरखनाथ का ध्यान धर बोले । गुरुदेव प्रेरणा दो अब मैं क्या करूं । इस प्रकार कहते हुए चारों तरफ अपनी नजर घुमा कर देखने पर वो क्या देखते हैं कि उनसे लगभग सौ गज की दूरी पर एक वृद्धा नारी अति जीर्ण शरीर वाली सफेद वस्त्र पहने हुए जिसके हाथ पैरों की खाल सिकुड़कर, मुंह पर झुरियां पड़कर काया सिकुड़ गई और चलने फिरने में भी भारी कष्ट उठाना पड़ता था वह एक बुढ़िया के समान थी । सज्जनों, उसे देखकर हमारे दयानिधान, गोगा जी ने सोचा ये बुढ़िया आफत की पुड़िया, अपने बहू बेटों से लड़कर जरूर समुद्र में डूबने आई है और इसे मरने से बचाकर अपना क्षत्री धर्म निभाकर कर्तव्य पालन करना बहुत ही जरूरी है ।

ऐसा विचार मन में कर गोगा जी मिन्टों सैकिण्डों में उस बुढ़िया के निकट जा पहुंचे । वह बूढ़ी माई को प्रणाम कर बोले । हे माता जी आप कौन हो और किस कारण से यहां आई हो । मुझे तो आप बड़े कुलीन घराने की महिला नजर आती हो । फिर समुद्र किनारे इस सुनसान जगह आने की क्या वजह है । अगर आपकी बहू लड़ाका है या आप के बेटे ने आपसे कुछ कहा है तो उन्हें बुलाकर डाट

डपटकर मैं समझा दूंगा । आपको भी अपने बच्चों से नाराज नहीं होना चाहिए था । बड़ों का धर्म है छोटों को क्षमा करो । हम क्षत्रियों का धर्म है दुखियों का दुख दूर करना, गिरतों को उठाना । दुर्बलों की बलवानों से रक्षा करना और अनाथ विधवाओं का कष्ट दूर करना । आपको जो भी परेशानी है मुझे बताने की कृपा करें । मैं आपकी हर प्रकार से सहायता करने को तैयार हूं । कृपा कर आप मुझे परेशानी बतावें । और समुद्र में डूबकर मरने का इरादा छोड़कर, मुझ पर ऐहसान करें ।

गोगा वीर की वार्ता सुनकर वह बुढ़िया आफत की पुड़िया बोली । ओ महारानी बाछल बांझ के बेटा गुरु गोरखनाथ की गूगल से पैदा पदम नाग के अवतार, नीले घोडे के सवार, राजा उम्मर पाल सिंह के पोते, बढ चढ़कर न बोल । जा पहले अपना वह काम कर जिस काम के लिए घर से आया है । मेरी मदद तू क्या खाके करेगा । तेरी मां खुद बरसों जोत बाल बाल कर, गुरु गोरखनाथ से तुझे मांग कर और अपनी नाक घिस घिसकर पाया है । बता तू मेरी किस प्रकार मदद कर सकता है । बुढ़िया माता की जली कटी बातें सुनकर गोगा वीर ने उनके चरण

पकड़ लिए और अपने दोनों हाथ जोड़कर बोले। माता जी मेरा अपराध क्षमा करो। आप तो ज्योतिष विद्या की बड़ी भारी पंडित दीखती हैं। आपने तो अपनी विद्या द्वारा मेरा तथा मेरे सकल परिवार का खुफिया हाल तक बता कर, मुझे भ्रम जाल में डाल दिया है। इतनी बात तो कोई राज ज्योतिषी भी नहीं बता सकता है। कृपा कर आप मुझे अपना परिचय देने की दया करें।

बुढ़िया बोली, बेटा जाहरवीर! तुम्हारी माता गुरु गोरख नाथ जी महाराज की चेली है। जिसने बरसों जोत जला जलाकर अपनी तपस्या द्वारा, गुरु गोरखनाथ के प्रसन्न हो जाने पर पाताल लोक से तुम्हें लाकर गूगल रूपी परशादी द्वारा दिया है। तुम देवताओं के अन्शी हो और बेटा सुनो। ये जितने देवी देवता हैं सब मेरे इशारे पर नाचते हैं ये सूरज चांद, सितारे, ब्रह्मा, विष्णु, महेश समस्त देवता गण मेरे बनाये नियमों पर चलते हैं सब मुझे बैमाता के नाम से पुकारते हैं। अब जाओ और अपना काम देखो, मेरे काम में विघ्न न डालो।

इतना कहकर वह दो दो कागज अपने रजिस्टर में से फाड़ फाड़कर समुद्र के जल में छोड़ने लगी।

जिसमें से कोई शीघ्र ही समुद्र में डूब जाता था कोई बहकर आंखों से ओझल हो जाया करते थे।

गोगा वीर ये तमाशा देखकर हैरत में रह गये। उनकी समझ में कुछ नहीं आया। तब बुढ़िया के चरण पकड़ अपना मस्तक नवा बोले, मातेश्वरी ये और बताने की कृपा करो। ये आप क्या तमाशा कर रही हैं। मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है जिसमें कोई डूब जाता है बाकी बहुत से लापता हो जाते हैं। जाहरवीर की बात समझकर, बैमाता बोली बेटा जाहर, मैं जो कागज समुद्र में छोड़ रही हूं, ये स्त्री पुरुषों का जोड़ा मिलाती हूं। जिसे गठ-बन्धन या शादी व्याह भी कहते हैं। जो कागज आंखों से दीखता हुआ समुद्र में डूब जाता है, अधबीच में ही उनका जोड़ा बिछुड़ जाया करता है। जो आंखों से ओझल हो जाते हैं वह लोग पूरी उम्र भोग कर बुढ़ापे तक मौज करते हैं। बैमाता की बात सुनकर जाहरवीर बड़े प्रसन्न हुए। उनके चेहरे का तेज दुगना हो गया। उनका रोम रोम खुश हो उठा वो हाथ जोड़ बैमाता से बोले। माताजी, इतना कहकर चुप हो गए। उनके मुंह से अगाड़ी बोल न निकला। जुबान पर ताला लग गया।

बैमाता जो घट घट का हाल जानने वाली है भला गोगा वीर के हाथ जोड़ने का कारण क्यों न समझती। वह उनके हाथ जोड़ने का और मुंह बन्द होने का कारण खूब समझ गई। फिर मुस्करा कर बोली मैं समझ गई। तुझे भी अपने ब्याह की जानकारी हासिल करनी है। इसीलिए शर्मा कर गरदन झुका रखी है। तुझ से तो लड़कियां भली, अभी आठ दिन की बात है राजा सिन्धा की राजकुमारी श्रीयल, इसी समुद्र पार तन्दुल नगरी की रहने वाली तुम्हारी तरह पूछने आई थी। मेरा ब्याह किसके साथ होगा, और कब होगा। सो बेटा उससे कह दिया था बेटी तेरा ब्याह जाहरवीर से होगा। जो गोरख गुरु का चेला है। क्योंकि तुम्हारी माता के गुरु योगी जालन्धर नाथ हैं। उन्हीं के आशीर्वाद से तुम्हारा जन्म हुआ था। वह तुम्हारे माता पिता से कह गए गए थे। तुम अपनी बेटी श्रीयल का विवाह गुरु गोरखनाथ के शिष्य गोगा वीर के साथ हंसी खुशी कर देना। अच्छा अब तुम जाओ जो तुम्हारे मन में था बता सो दिया। अब तुम भी जाकर अपना काम करो, मैं भी अपना काम करूं।

बैमाता के वचन सुनकर गोगा वीर बोले। माता

जी, आपने किसी राजकुमारी के ब्याह का हाल सुना दिया जिसकी माता के गुरु जालन्धर नाथ योगी हैं और आठ दिन हुए आपके पास आई थी। मुझे किसी से क्या लेना देना मुझे तो आपसे ये पूछना है जिस राजकुमारी को मैंने स्वप्न में देखा है उसका क्या नाम है ? और किस राजा की बेटी है ? और कहां की रहने वाली है ? इस पर बैमाता बोली, बेटा गूगा तुम हो बछिया के ताऊ ही, तुम शायद इस दुनियां में थे या दूसरी दुनियां में। तुम्हें सारी रामायण सुन कर ये ही पता न पड़ा कि सीता का ब्याह राम से हुआ था या रावण से। तुम से तो तुम्हारा घोड़ा ही मुझे होशियार दीखता है। इतनी बात बैमाता की सुनकर जाहरवीर से नीला घोड़ा बोला। भैया मुझ से बुढिया की उल्टी सीधी बातें नहीं सुनी जातीं, ये तो सठिया गई है। और ये समझती है मेरे ही जलाए चिराग से रोशनी होती है। तुम बैठो मेरी काठी पर मैं तुम्हें तुम्हारी स्वप्न वाली राजकुमारी से अभी मिलाये देता हूं। पागलों के मुंह लगना हम वीरों का काम नहीं।

नीले घोड़े की उल्टी सीधी वार्ता सुनकर, बैमाता जान गई कि इस होशियार घोड़े ने मेरी

एक एक बात ध्यानपूर्वक सुनकर अपने जी में धरली है और अब ऐंठ कर किस चालाकी से अपनी उस्तादी दिखा रहा है। आखिर है तो स्वर्गलोक के घोड़े की ही औलाद। इस प्रकार उधर से अपना मुंह फेरकर अपना काम करने लगी। नीला घोड़ा भी बैमाता के मुंह फेर लेने के पश्चात और गुस्से में भर गया। वह गोगावीर को अपनी पीठ पर चढ़ा, आसमान को उड़ गया। उसने अपने पंख इस तेजी से चलाये कि सवा पहर और तीन घड़ी में संगलदीप पर्यन्त तन्दुल नगरी, राजा सिंधासिंह के जनाने बाग में पहुंच गया और गोगावीर से बोला। भैया, ये ही तुम्हारी स्वप्न वाली राजकुमारी श्रीयल का जनाना बाग है। जो राजा सिंधासिंह की प्यारी इकलौती बेटी है। ये उसके स्नान करने के लिए कटोरा ताल बना हुआ है। ये ही राजकुमारी श्रीयल अपने व्याह की तारीख पूछने बैमाता के पास गई थी। आप जिनके ध्यान में कुछ नहीं समझ पाए थे। मैंने सारी बात ध्यान से सुनकर तुम्हें तुम्हारी स्वप्न वाली राजकुमारी के बाग में ला उतारा। जब गोगावीर ने अपने नीले घोड़े की वार्ता सुनी तो उसकी कमर ठोंक कर बडी तारीफ की। फिर राजकुमारी श्रीयल के

कटोरा ताल पर जा पहुंचे। जिसे पहचानते उन्हें एक मिनट भी नहीं लगा कि यह वो ही कटोरा ताल है, जहां बैठकर हमने चौपड़ा सार खेली थी और राजकुमारी को हराकर, साढ़े तीन फेरे लेकर आधा ब्याह किया था।

हमारे नायक जाहरवीर राजकुमारी श्रीयल के कटोरा ताल की कारीगरी देखकर हैरान रह गए। कारीगरों ने अपनी कारीगरी दिखाकर कमाल कर दिया था। रंग बिरंगे पत्थरों पर भांति भांति की चित्रकारी खोदकर रंग बिरंगे आईने जड़ रखे थे। जिनकी चमक माणिक मोतियों की सजावट को भी मात कर रही थी। कहीं तोता मैना किस्सा कह रहे थे, कहीं मोर नाच रहे थे, कहीं कोयलें किलोल कर रही थीं, कहीं भंवरे गुंजार रहे थे। कहीं कहीं रंग बिरंगे पक्षी मधुर बोली बोल रहे थे। गूगावीर ने अपने लक्ष्य पर पहुंचकर गुरु गोरखनाथ जी को अपना मस्तक नवाया और उन की ध्यान लगाकर वन्दना की।

नीले घोड़े को ताल के किनारे बांधकर और उसी के पास अपना सामान कपड़े लत्ते धरकर लंगोट कसकर, गोरख गुरु को मना कटोरा ताल में

स्नान करने के वास्ते जल में बढ़ गया। ताल कटोरे के जल की खुश्बू हिना, इतर, गुलाब, केवड़े की खुश्बू को भी मात कर रही थी। जाहरवीर ताल के भीतर कभी डुबकी मारते थे और कभी कलाबाजी खाकर उल्टे सुल्टे हो तैरने का आनन्द लेते थे। ये कटोरा ताल राजा सिन्धा सिंह ने अपनी लाड़ली बेटी श्रीयल के नहाने के वास्ते ही अपने बाग में बनवाया था। जहां पुरुष प्रवेश तथा नहाने और कपड़े धोने की सख्त मनाई थी। जाहरवीर काफी देर से कटोरा ताल में, उछल कूद कर रहे थे। जब उनका जी अच्छी तरह भर गया, तब ताल से बाहर निकले। बदन पर चमेली के तेल की मालिश कर पोशाक पहनकर गुरु गोरखनाथ जी महाराज का ध्यान धरा। एक लोटा जल सूर्य देवता को चढ़ाकर एक लोटा जल का नीले घोड़े के पास ला धरा। मन ही मन खुश हो उस पर हाथ फेर, मधुर मुस्कान बखेर हंसने लगे।

नीला घोड़ा बेचारा, मंजिल का मारा, थका हारा, बहुत ही परेशान था। वह सोच रहा था ये मनुष्य जाति कितनी खुदगर्ज, लालची और मतलबी होती है। इसे दूसरे के दुख दर्द से कोई मतलब

नहीं। अपने सैर सपाटे, मौज बहार, नाच कूद में कमी नहीं आनी चाहिए। वह मन ही मन जल भुन कर कबाब हो रहा था। गोगावीर से आते ही बोला, भैया अब मेरा काम समाप्त हो गया। आप अब अपनी सुसराल में जाकर साली सलेजों के साथ हंसी खुशी मुस्करा मुस्कराकर मौज बहार लूटो। सासू रानी से आरता उतरवाओ और राजा सिन्धासिंह की बेटी को ब्याह कर, जब जी करे घर चले आना। मैं तो अभी अभी महारानी बाछल मौसी के पास जा रहा हूं। जाहरवीर अपने बहादुर घोड़े की जली कटी बातें सुनकर तड़फड़ा कर, ताज्जुब करने लगे। नीला इतना समझदार होकर आज किस तरह की वार्ता कर रहा है। गूगावीर ने उसे सहलाकर, पीठ थपथपाकर, प्यार पुचकार कर उसकी नाराजगी का कारण जाम लेना चाहा। नीले की नाराजी का क्या कारण है। ये किस कारण रूखा रूखा बोल रहा है। इस प्रकार सोचकर घोड़े की पीठ थपथपा, अपनी गलती बताने के लिए नाराजगी का कारण जानना चाहा।

गोगावीर की मीठी चुपड़ी मतलबी बातों को सुनकर नीला बोला। गुरु भाई गलती तुम्हारी नहीं,

हमारे पूर्व जन्म के पापों के कारण ही हमें ये बेरहम मनुष्य जाति के हवाले सताये जाने तथा दुख उठाने के लिए सुपुर्द किया है। कहने के लिए मतलब के वक्त मैं तुम्हारा गुरु भाई हूं। तो क्या, हूं तो आखिर जानवर और पशु ही। जानवर पशु के न जान होती है न दिल। मन तो जानवर के भगवान ने बनाया ही नहीं। उसका काम तो मालिक के डन्डे खाकर उसकी सेवा सुश्रूषा करना है। खाना दाना देना न देना मालिक की मरजी पर निर्भर है। चाहे जब दे चाहे जब जानवर को भूखा मारे। जब उसका मतलब हुआ खुशामद करली, मतलब निकल जाने पर पानी तक को न पूछे। निलहाना धुलाना मालिश करने की क्या चिन्ता। जानवर को न गरमी लगती है न भूक प्यास ही। ये सब आराम तो मनुष्य के लिए हैं क्योंकि अति धर्म पुन्न करने के कारण उसे मनुष्य का चोला मिला है। आपने अपने जी में ये भी सोचा जिसने महीनों का सफर दिनों में पूरा किया है। पूरा हफ्ता भी न लगने दिया। इस जानवर के न जी है, न आत्मा। भूक प्यास और तमाम तफरीबाजो इन्सानों के लिए ही परम पिता परमात्मा ने पैदा की है मैं तो आज ही ददरेड़ा नगर

पहुंचकर, अपनी बाछल मौसी से कहूंगा। राजा सिन्धासिंह के सिपाही तुम्हारे बेटे गोगावीर को पकड़ कर तथा बांधकर अपने साथ ले गए। जाहरवीर ने राजा के जनाने, नौलखे बाग में जाकर उसकी बिना इजाजत कटोरा ताल में नहाकर राजा के बने कानून को तोड़कर बड़ा भारी अपराध किया था।

गोगावीर से इतना कहकर गुस्से में भरकर एक जोर का झटका अपनी गरदन से मारकर, पेड़ से बन्धे रस्से का बन्धन तोड़ दिया। अपने नीले घोड़े का विकराल रूप देखकर, गोगावीर ने अपनी भूल और लापरवाही पर काफी पश्चाताप किया। प्यार भरे शब्दों में अपनी गरदन झुकाकर बोले, गुरु भाई वाकई बड़ी भारी भूल मुझसे हुई है। मैं अपनी खुशी में इतना पागल हो गया था कि अपनी मस्ती के कारण दुनियादारी की सभी सुधबुध खो बैठा था और रही साथ छोड़ने की बात तो ये हमारा तुम्हारा मित्रता का बन्धन मरने के बाद भी न छूटेगा। तुम्हारा ऐहसान क्या भुला देने के काबिल है। मेरी सारी मुश्किल क्या बिना तुम्हारे निबट सकती थी। तुम मेरे बड़े भाई हो। क्या अपने छोटे गुरु भाई का पहला अपराध क्षमा न करोगे। अब ऐसी भूल स्वप्न

में भी न करूंगा। परदेश में तेरे सिवा और किसका सहारा है। अब तू गुस्से को थूक कर स्नान ध्यान से फारिग हो, खाने दाने से निबट लो। अगर परदेश में हम दोनों का मनमुटाव होगा तो दुश्मन हमें चुटकियों में मसल डालेगा। बड़ी भारी जग हंसाई होगी। तुम समझदार हो जग हंसाई मर जाने से भी बुरी चीज है। अब गुस्सा त्यागकर मुझे क्षमा कर दो।

इतना कह अपने घोड़े का साज सामान उतार, कटोरा ताल में उसे भी स्नान कराया। सज्जनो ! नीले घोड़े ने महकदार जल में स्नान कर खूब जल क्रीड़ा की और उसके निर्मल जल को उछल उछल कर एक दम कीचड़ के समान गंदला कर डाला। धमा चौकड़ी करके कई पैड़ी कटोरा ताल की तोड़ डालीं। पेशाब और लीद करके महकदार जल को दुर्गन्धयुक्त कर डाला।

जाहरवीर अपने नीले घोड़े की करतूत देख कर उसके गुस्से से एकदम घबरा गए। अपना गुस्सा दबा कर कहने लगे नीले भैया जिसका ये कटोरा ताल है अगर वह इस समय यहां आ जावे तो हम दोनों गुरु भाइयों का भली प्रकार स्वागत होगा। परदेश में छटी

का दूध याद आ जायेगा। वह मुझे बन्धन में डालकर तुमसे जिन्दगी भर ईंट पत्थर ढुलवावेगा। नीला बोला भैया घबरा गए। तुम्हें मालूम नहीं बागड़ वालों का नाम सुनकर ही अच्छे अच्छे चौकड़ी भूल जाते हैं। तुम हारी हारी बातें मेरे सामने न किया करो। क्या गुरु गोरखनाथ जी महाराज के चेलों को सताने वाला कोई शूरमा इस धरती पर जन्मा है। ये जो ऊधम मैंने मचाया है ये यहां के राजा सिंघा सिंह को एक चुनौती मात्र है। यहां बागड़ प्रान्त के वीर आन पहुंचे हैं। जिस बागड़ देश के घोड़े इतने बलवान और निडर हैं वहां के वीर बहादुर नर कैसे होंगे। भैया अब बाग में चलो मेरी तो भूख के मारे जान ही निकली जा रही है।

अपने नीले घोड़े की बहादुरी की बात सुनकर गोगा जी ने पल भर भी देर लगाना मुनासिब नहीं समझा। वह नीले घोड़े को उसका साज पहना जीन कस, उसके ऊपर सवार होकर, बाग के फाटक पर आन पहुंचे और दरबान से बोले। ऐ चौकीदार ! फाटक खोलो हमें बाग की सैर करनी है। घोड़े की सजावट और जाहरवीर की शानो शौकत देखकर दरबान दोनों हाथ जोड़कर बोला, श्री मान बीर

बहादुर राजकुमार जी मैं यहां के राजा सिन्धा सिंह की बेटी श्रीयल राजकुमारी का नौकर हूं। उनके इस नौलखे बाग की रखवाली की मैं तनख्वाह पाता हूं। अगर मैं उनकी आज्ञा बिना आपके वास्ते फाटक खोल दूंगा तो मय बाल बच्चा कोल्हू में पिलवाकर मरवा दिया जाऊंगा। आशा है आप मेरे गरीब बाल बच्चों पर रहम खा कर उन्हें मरने से बचावेंगे।

बाग के चौकीदार का गिड़गिड़ाना, नीले घोड़े से न देखा गया। वह बोला गोगा भैया ये किसी भी तरह दरवाजा खोलने में असमर्थ है। तुम संभल कर मेरी काठी पर बैठो, अभी आपको मिन्टों सैकिन्डों में बाग के भीतर पहुंचाये देता हूं। इतनी कहकर नीले घोड़े ने अपने पंख फैलाकर उड़ान भरी और सर-सर कर आसमान में पहुंच गया। फिर नीचे उतर कर फाटक फांदकर फर फर कर बाग के भीतर जा उतरा। हमारे नायक गोगावीर ने खुश हो घोड़े की पीठ से उतर कर नीले को पेड़ से बांधना चाहा तो वह झटके के साथ अपनी लगाम छुड़ाकर अपनी आंखें दिखाता हुआ जाहर वीर से बोला, क्या मुझे भूंका मारने का इरादा है जो पेड़ से बांध रहे हो।

इतना कहकर पेड़ पौधों पर भेड़िये के समान टूट पड़ा और सेव, सन्तरे, केले, अमरूद, आम, अलूचे, खिरनी लोकाट खूब जी भरकर खाए। जब खूब पेट भर गया तो पेड़ पौधों को तोड़-तोड़कर अपने खुरों से कुचल मसल कर बरबाद कर डाला। पेड़ पतझड़ के समान दिखाई देने लगे। जब अपने घोड़े की लीला गोगावीर से न देखी गई तो वह दूसरी तरफ मुंह फेर कर निकल गए।

आगे बढ़ने पर क्या देखते हैं कि एक बड़ा ही खूबसूरत सजा सजाया शानदार बंगला उनकी नजर के सामने दिखाई दिया जिसे देखते ही पहचान गए अरे! यह तो मेरे स्वप्न वाला वही बंगला है। जब जाहर जोधा ने बंगला खोलकर देखा तो उसमें भांति भांति की चित्रकारी और तसवीरें तथा झाड़ फानूसों से सजे बंगले की चित्रसारी में मुलायम रेशमी गद्दे, तोषक तकियों वाले पलंग के बिस्तर थे। गोगा जी महाराज थके तो थे ही, झटपट अपना पटका सिर-हाने धर बिस्तर पर आराम फरमाने लगे और शेष-नाग पहरा देने लगे। नीले घोड़े ने जब यह देखा कि गोगा भैया का दूर तक पता नहीं है तो निडर हो कर और भी ज्यादा धमा चौकड़ी मचाने लगा।

वह सब सब्जियों की क्यारियों और फुलवारियों को अपने खुरों से कुचल कर सत्यानाश करता हुआ जाहरवीर को ढूंढता हुआ सारे बाग में चक्कर लगा आया।

जब जाहरवीर कहीं दिखाई नहीं दिए तो बड़े भारी सोच में पड़ गया और विचारने लगा क्या मुझसे नाराज होकर तो यहां से नहीं चले गए या किसी से कहा सुनी तो नहीं कर बैठे। मुझे उनकी मरजी बिना इस प्रकार उत्पात नहीं मचाना चाहिए था। मैं तो उनकी भलाई के लिये ही ये सब लीला कर रहा था। बिना लीला किये हमें कौन जानता कि बागड़ वाले आन पहुंचे। इस प्रकार सोच फिकर में डूबा नीला घोड़ा बंगले के पास आन पहुंचा और खिड़की में से झांक झांक कर देखने लगा। जब चित्रसारी में पलंग पर सोते हुये गोगा जी उसको नजर पड़ गए जिनका पहरा शेषनाग दे रहे थे। तब नीले के जी में जी आया। वह उन्हें बंगले में सोता देख फिर विनाश लीला पर उतारू हो गया। बाग में बचे खुचे लता कुन्ज, बेल बूटे, रोस पट्टी सारे ही अपने पैरों से कुचल कुचल कर तहस नहस कर डाले।

दोपहर हो जाने के कारण बाग का माली भी अपनी मालिन के हाथ की बनी रोटी जीम कर बेफिक्री के संग बगिया में सो गया था। इधर नीला धमा चौकड़ी मचा मचाकर थक गया। शाम के समय ठन्डक के वक्त राजकुमारी श्रीयल अपनी सखी सहेलियों को संग लेकर अपने महल से बाग की बसंत बहार की हरियाली का मजा लूटने अपने अपने डोलो पर सवार होकर अपनी माता रानी सिरौंजा की आज्ञा अनुसार बाग में आन विराजी। जब वह सब सखी सहेलियों के संग अपने अपने डोलों से उतरी तब सब से पहले उनकी नजर कटोरा ताल पर ही जा पहुंची जिसकी कई पैडियां टूटी फूटी पड़ी हुई थीं। उसमें से नीले की लीद और पेशाब के कारण बड़ी भारी दुर्गन्ध उठ रही थी। बदबू के कारण सबका दिमाग फटा जा रहा था। राजकुमारी श्रीयल की एक मुंह लगी सहेली बोली, राजकुमारी जी पहले कपड़े उतार कर आप स्नान ध्यान करो बड़ा आनन्द आएगा।

राजकुमारी को चिन्ता के कारण बेसमय का मजाक अच्छा न लगा। वह चौकीदार और बाग के माली की लापरवाही के कारण काफी गुस्से में थी। जिन्होंने ऊधम मचाने वाले को न रोककर लापरवाही

की हद करदी। मैं आज ही पिताजी से कहकर इन्हें काफी सजा दिलवाऊंगी, तभी इन लोगों की बुद्धि ठिकाने आवेगी। इस प्रकार सोचती विचारती जब अपनी सखी सहेलियों के साथ फाटक के रास्ते बाग में घुसी और अपने नौलखे बाग की हालत देखी तब तो तोबा ही मुख से निकल पड़ी। राजकुमारी श्रीयल से अपने बाग की हालत देखी नहीं गई। पहरे पर चौकीदार व माली को न देख, आग बबूला हो गई और शेरनी की तरह अगाड़ी बढ़कर सोते हुए माली को जा जगाया और कड़ककर कहा, ये बगिया का सत्यानाश किस प्रकार तुम्हारे होते हुए हुआ है। क्या तुम्हें रखवाली के लिये नौकर रखा गया है या आराम तलबी के लिये। न मालूम किस नालायक घुड़सवार का घोड़ा बाग में घुसकर सारी बगिया की फुलवारी का सत्यानाश कर गया है।

बागवान आंख मलते हुए उठकर बोला, राज-कुमारी जी मैं तो फाटक बन्द करके अभी अभी लेटा था। मैंने तो किसी घुड़सवार को बगिया के अन्दर बढ़ते हुए देखा नहीं। न मालूम जरा सी देर में ऐसी प्यारी बगिया की सारी रौनक बिगाड़ डाली। जरा देर पहले तो खूब बाग बहार और फुलवारी खिली

हुई थी। इतना सुनकर श्रीयल गुस्से में भरकर बोली और ये कटोरा ताल को भी तुम्हारे जरा देर सोने से ही दुर्गन्ध युक्त बनाकर, सारी पैड़ियां तोड़ डाली गयीं। राजकुमारी श्रीयल को बागवान से नाराज होकर उलझते देख कर पेड़ के पास खड़ा नीला घोड़ा खूब जोर से हिनहिनाया। तब राजकुमारी श्रीयल और उनकी तमाम सखी सहेलियों की नजर ऊधमी नीले घोड़े की तरफ गई। सबने उस नीले रंग के विचित्र अश्व को बड़े गौर के साथ देखा और उसकी विचित्रता को देखकर कौतूहल से देखती हुई उसके निकट जा पहुंची। नीला घोड़ा अकड़ के साथ खड़ा होकर राजकुमारी श्रीयल की सजी धजी सखी सहेलियों को देखकर मन ही मन मुस्कराया। उसी प्रकार जिस प्रकार वह सब उसे देख कर मुस्करा रही थीं। जब राजकुमारी श्रीयल ने पंखयुक्त नीले घोड़े को पेड़ के नीचे अकड़ के साथ खड़े देखा तो राजकुमारी श्रीयल को बड़ा ही कौतूहल हुआ। राज कुमारी अपनी सहेलियों से बोली, घोड़ा तो काफी सुन्दर है पर इसका सवार दिखाई नहीं देता। वह किधर चला गया। अभी सखियों ने कोई उत्तर दिया भी न था कि नीला घोड़ा मनुष्य की बोली में बोला

भाभी जी नमस्कार ! आपको जिसकी तलाश है, वह मेरा स्वामी, इस सामने वाली चित्रसारी में, पलंग के ऊपर आराम से सो रहा है। घोड़े को मनुष्य की बोली बोलता देख राजकुमारी श्रीयल को और भी भारी ताज्जुब हुआ। ये मुआ तो मनुष्य की बोली समझता भी है और बोलता भी है, तो अपनी आंखें लाल पीली करके बोली, ऐ गुस्ताख अश्व ! इसके माने ये हुए कि इस बगिया की फुलवारी और क्या-रियां उजाड़ने तथा मेरे कटोरा ताल का पानी गंदला करने वाला गुस्ताख तू ही है। अब गुस्ताखी कर मुझे भाभी कहकर डबल गुस्ताखी कर रहा है। तुम्हें और तुम्हारे सवार को इसका भारी दन्ड मिलेगा।

सज्जनों ! राजकुमारी श्रीयल को सोलह शृंगार किये हंसनी के समान अति सुन्दर बदन, गुस्से में देखकर उसका नूर निहारा तो गोगावीर की तकदीर की मन ही मन सराहना की और हाथ जोड़कर बोला। राजकुमारी जी, आप भाभी कहने से व्यर्थ बुरा मान गईं। मेरा जो सवार है, उससे मेरा गुरू भाई का नाता है और आप उनकी भार्या हैं। इस अधिकार से आप मेरी भाभी हैं और ब्याह हो जाने पर पक्की भाभीजी हो जावेंगी। बैमाता के लिखे को

मिटाने की शक्ति तो ब्रह्मा में भी नहीं है मेरा सवार आपके पलंग पर सुख नींद सो रहा है जिसका आधा ब्याह स्वप्न में आपके साथ हो चुका है। सिर्फ आधा ही बाकी रह गया है। अब जाकर अपने पतिदेव के दर्शन करो और मेरा पीछा छोड़ो ऐसी गुस्से वाली भाभी को मेरा दूर से ही नमस्कार।

सज्जनों ! नीले घोड़े की गुस्ताखी भरी बार्ता सुनकर राजकुमारी काफी क्रोध में भर गई। पेड़ की टूटी पड़ी मजबूत सन्टी को हाथ में उठाकर बोली। अरे गुस्ताख जरा ठहर, बजमारे, तेरी बार बार की गुस्ताखी से राजकुमारी कन्या को भाभी कहने का मजा चखाती हूं। न मालूम किस बेवकूफ नगर के रहने वाले तुम लोग हो। हमारे यहां तो सब बड़े बूढ़े लोग लड़कियों को बेटी और बराबर वाले बहन जी तथा छोटे बच्चे बुआ जी कहकर बुलाते हैं। ले अब भाभी कहने का मजा चख। ये कहकर छः सात सन्टी जोर जोर से अपने दांत भींचकर नीले की पीठ पर तड़ातड़ जमा दीं और बोली, अब भाभी कहकर बोल।

अपनी पिटाई की परवाह न कर नीला घोड़ा बोला, हमारे बागड़ प्रान्त में तो जो जाहरवीर का

ददरेड़ा नगर है । चाहे आधी ब्याही हुई हो, चाहे सारी । छोटे भाभी कहकर ही पुकारा करते हैं । मैं आपकी बात का बुरा नहीं मानता । अपने अपने प्रान्त की बोली जुदा जुदा होती है । रही मेरे साथ सन्टी खेलने की बात, तो हमारे यहां तो देवर भाभी ब्याह हो जाने के बाद ही सन्टी खेलने का खेल खेला करते हैं । मैं तो अपना नेग जब ही पूरा करूंगा, जब मेरी पीठ पर सवार होकर आप हमारे घर पहुंच जाओगी और कुआ पूजने नौलखे बाग़ में पहुंचोगी । राजकुमारी श्रीयल की सबही सखियां नीले घोड़े की वार्ता सुनकर मन ही मन मुस्करा कर राजकुमारी श्रीयल का मुख देख रही थीं । राजकुमारी श्रीयल से अपनी सहेलियों का मन ही मन मुस्कराना उनका चेहरा देख कर छिपा न रहा । वह कहने लगी बेवकूफों के मुंह लगना व्यर्थ है । आखिर है तो जानवर ही ।

नीला घोड़ा बोला ठीक है अब आप यहां से तशरीफ ले जावें । अपनी चित्रसारी में पहुंच कर अपने पति गोगावीर के बायें पैर का अंगूठा पकड़ या चूम चूम कर, जिस प्रकार जो हो जगा लेना । लेकिन मेरा मालिक बड़ा ही गुस्से वाला है । उसके

कोड़ों की मार से मेरी पीठ सूजी पड़ी है । ऐसा न हो कच्ची नींद से जगने के कारण एक दो कोड़ा मार कर आपकी भी पीठ सुजा दे । मैं तो बुराई के बदले भी भलाई ही करने वाला पशु जो हूं ।

इतना सुनकर राजकुमारी श्रीयल अपनी सखियों से बोली । इस विचित्र घोड़े के सवार को भी चलकर अवश्य देखना चाहिए । जिसने मेरी चित्रसारी में पहुंचकर मेरे पचरंग पलंग पर सोने की गुस्ताखी की है । तुम थोड़े से फूल यहीं से साफ साफ बीनकर उठा लो । न मालूम किस मौके पर काम आ जावें ।

* श्री गोगा पुराण सत्ताईवां अध्याय समाप्त *

अट्ठाईसवाँ अध्याय

राजकुमारी श्रीयल और गोगा जी की मधुरता का बयान

सज्जनो ! राजकुमारी श्रीयल की आज्ञानुसार सब सखियों ने साफ साफ फूल जमीन में से बीनकर बढ़िया बढ़िया फूलों को चुनकर अपनी अपनी झोलियां भरलीं और राजकुमारी श्रीयल को संग लेकर गोगा बीर को जगाने के लिए बंगले की चित्रसारी में जा पहुंची । राजकुमारी श्रीयल के माता पिता यशी

जालन्धरनाथ के शिष्य थे और उन्हीं के वरदान से काम देव के समान सुन्दर राजकुमारी श्रीयल का जन्म रानी सिरौजा के उदर से हुआ था । जो संगल-द्वीप नरेश राजा सिन्धासिह की धर्मपत्नी थी । बसन्त ऋतु होने के कारण उपवन का वातावरण बड़ा ही मनमोहक हो गया था । राजकुमारी श्रीयल की सारी सखियां जवानी से भरपूर अप्सराओं के समान उनके चेहरे पर नूर, एक से एक सुन्दरी, ऊपर से बसन्ती वायु की बहार, समय अपना रंग दिखला रहा था ।

उधर गुरु गोरखनाथ महाराज की दया से आसमान में बादल होकर वर्षा भी रिमझिम रिमझिम कर नन्नी नन्नी फुआर गिराने लगी । जब राजकुमारी श्रीयल और उसकी सखियों ने जाहरवीर को प्रगाढ़ निद्रा में पलंग पर सोते हुए देखा जहां शेषनाग अपना पहरा दे रहा था । उनका चेहरा चन्द्रमा के समान चमचमाकर दैदीप्यमान हो रहा था । जब सखियों की नजर उनके चमचमाते चेहरे पर नहीं जम सकी, तो सबने अपनी अपनी गरदन नीचे को झुकाली । राजकुमारी श्रीयल तो एक ही झलक में अपना तन मन निसार कर बैठी । वह तो अपनी

टकटकी बांधे उन्हें निहारती ही रही । दीन दुनिया को भूलकर अपने नेत्र तृप्त करने में ही लगी रही ।

राजकुमारी श्रीयल की यह बौरानी दशा देखकर उसकी प्रमुख सखी चतुरंगी बोली । ऐ सखी श्रीयल ! तुम तो इन पर ऐसी बलिहारी हो रही हो कि अपनी सारी ही सुधबुध खो बैठी । लोक लाज, कुल की कान, किसी का भय भी न माना । ऐसी अधीर हो, धीरज नहीं खोना चाहिए । जरा सोचो तो अगर तुम्हारे पिताजी को, इन बातों का पता पड़ गया तो हम सब की क्या गत बनेगी । राजकुमारी जी, कुल मर्यादा का उलंघन करना बड़ा ही दुख देवा होता है । हम लोग तो तुम्हारी मातेश्वरी को मुंह दिखाने लायक न रहेंगी ।

अपनी सखी चतुरंगी की बातें सुनकर राजकुमारी श्रीयल बोली सखी जरा चुपकी रहो, तुम क्या जानती नहीं प्यार किया तो डरना क्या । छुपछुप आहें भरना क्या । सखी मुझे तो ऐसा भान होता है कि मेरा इन का जन्म जन्म का नाता है । मैं तो इन्हें जगाकर इन के साथ चौपड़सार खेलूंगी । इनके हार जाने पर इन्हें कैद करके, इनके उजड्ड घोड़े से ईंट पत्थर ढुलवा कर, अपने रहने को विशाल भवन तैयार करवाऊंगी ।

अपनी सहेलियों से इस प्रकार कहकर चतुरंगी सखी की गोद से मुट्ठी भर फूल लेकर, सोते हुए गोगाजी के पलंग पर, पुष्प वर्षा करने लगी। परन्तु गोगाजी की नींद इस पुष्प वर्षा से भी न टूटी। जब पुष्प वर्षा बेकार साबित हुई तब आगे बढ़कर, बायें पैर का अंगूठा जा दबाया।

इस उपक्रम से जाहरवीर जोधा की निद्रा भंग हो गई। आंखें खोलकर देखने से, जो दृश्य दिखाई पड़ा तो गरदन नीची कर के पलंग से नीचे उतर कर खड़े हो गये। इतनी सारी सुन्दर नारियों को देखकर जो अपसराओं जैसी चमचमा रही थीं। परन्तु स्वप्न वाली सुन्दरी उन्हें न दिखाई पड़ी। वह चन्द्रमा के समान मुख वाली राजकुमारी श्रीयल फूल फैंककर सब सखियों के पीछे छिप कर जा खड़ी हो गई थी जिस प्रकार बादलों के पीछे चांद छिप जाया करता है। जाहरवीर जोधा अपनी स्वप्न वाली राज कुमारी को, अपनी सखियों के पीछे छिपा देख कर, मन ही मन मुस्कराकर, प्रेम नशे में सरावोर हो गये। विचारने लगे, ये ही है वो, जो मेरे संग साढे तीन फेरे फेरकर, यहां भाग आई। मैंने भी इसे गुरु गोरखनाथ जी महाराज की दया से ढूंढ ही निकाला।

राजकुमारी श्रीयल को भी उसी प्रकार स्वप्न आया था। जिस प्रकार गोगा जी को आया था। उसे भी अपना आधा ब्याह होने का सारा विवरण भली प्रकार ध्यान आ गया। उसे भी अपना स्वप्न सच्चा होता दिखाई देने लगा। राजकुमारी जी की हालत देखकर गोगा जी जान गये कि राजकुमारी को भी मेरी तरह स्वप्न दीखा है। उसी पर ये विचार कर रही हैं। इसीसे वह मन ही मन मग्न हो रही है।

सज्जनों, इस प्रकार राजकुमारी श्रीयल को मन में मग्न देखकर, गोगा मुंह उठाकर बोले, राज-कुमारी जी मुझे क्षमा करें। मैं सफर का हारा थका होने के कारण, घोर निद्रा का सताया हुआ, आपके पलंग पर आकर, सुख की नींद सो गया और पड़ते ही बेहोश हो गया। अब आप इजाजत दें, जिससे मैं अपने घोड़े को खोजकर, अपने उद्देश्य की पूर्ति को जाऊं। इतनी बात गोगा जी की सुनकर, राजकुमारी श्रीयल भी जान गई, ये जो कुछ भी कह रहे हैं सब बनावटी बातें ही हैं। मेरे मन को तो पूर्ण निश्चय है इन्हें भी मेरी तरह स्वप्न दीखा है और किसी चमत्कार द्वारा मुझे तलाश करते हुए यहां आनकर मेरे पलंग पर पसर गए। इस प्रकार विचार करके

राजकुमारी श्रीयल व्यंग्य पूर्वक बोली ।

ऐ राजकुमार जी । जुल्म तो आपने बड़ा भारी किया हैं । परन्तु ये समझ में नही आ रहा है आपको सजा किस प्रकार दी जावे । एक तो तुम्हारे उजड्ड घोड़े ने मेरी बगिया का सत्यानाश करके सब फुलवारी बिगाड़ डाली । मेरे कटोरा ताल का जल बिगाड़ कर उसकी पैड़ियां भी उछल कूद मचाकर फोड़ डालीं । अब ये सब नुकसान कौन अदा करेगा। पहले आप ये बतावें, आप किस उजड्ड प्रांत के रहने वाले हैं । आपका तथा आपके माता पिता का क्या नाम है ।

इतना सुनकर गोगा जी गरदन ऊंची करके, निगाह से निगाह मिलाकर बोले । राजकुमारी जी मैं वागड़ प्रांत ददरेड़ा नगर का निवासी हूं । मेरे पिता का नाम राजा जेवरसिह है और माता का नाम महारानी बाछल है । जो गुरु गोरखनाथ जी महाराज की प्रमुख शिष्या हैं । उन्हीं की कृपा से मेरा जन्म पुष्प नक्षत्र में हुआ है । मेरा अब तक कहीं मस्तक नहीं झुका था, सिर्फ आपके सामने ही अपने नालायक नीले घोड़े की करतूतों के कारण झुकाना पड़ रहा है । मुझे तो लग रहा है, मैंने जिस राज-

कुमारी को अपने स्वप्न में देखा था और आधा ब्याह करवाकर रूहपोश हो गई थी वह भी बिलकुल आपके समान ही सुन्दर थी । अब आप भी अपने माता पिता का नाम बताने की कृपा करें ।

राजकुमारी श्रीयल ने भी अपने माता पिता का नाम बताकर अपना पूर्ण परिचय दिया और बोली । हे बागड़ देश के राजकुमार, जिस प्रकार आपने मुझे स्वप्न में देखा था । उसी प्रकार मैंने भी आपको स्वप्न में देखा था और आधा ब्याह भी जरूर हुआ था कि परन्तु ये ही सोचकर चुप हो मन मार बैठ गई थी कि कहीं स्वप्न भी इस प्रकार सच्चे होते हैं इतना सुन गोगाजी बोले प्राणबल्लभे होते कैसे नहीं हैं । अगर स्वप्न सच्चे नही होते तो मैं तुम्हें किसी भी प्रकार ढूंढ नहीं सकता था । अब जब स्वप्न सच्चा ही करना है तो चौसर सार खेलकर बाकी का आधा ब्याह भी कर डालें ।

इस पर राजकुमारी श्रीयल बोली, मुझे आपसे कोई इन्कार नही है । पर शर्त यह रहेगी । आप हार गये तो आपको पुष्पमाला पहनकर मेरे देश में ही रहना पड़ेगा । जिससे मैं अपने माता पिता के नगर में ही रहकर आपकी चरण सेवा करूं । अगर मैं हार

गई तो आप मुझसे जहां चलने को कहेंगे, वहां ही चलकर आपकी चरण सेवा करूंगी। इन दोनों का वार्तालाप सुनकर राजकुमारी श्रीयल की सारी सखियां हैरान होकर अपने घर जाने की जल्दी करने लगीं। तब राजकुमारी श्रीयल की सखी चतुरंगी आगे बढ़ कर बोली।

हे राजकुमारी जी, तुम्हें तो अपने माता पिता का जरा भी डर भय नहीं है। ऐसी बेहयाई हमने न कभी देखी, और न कभी सुनी। ये क्या कुलवन्ती राजकुमारी को शोभा देता है। अपने माता पिता की मर्जी के बिना ब्याह हुए, एक परदेशी के साथ चौपड़ सार खेलो। ये तो अपने बड़े बूढ़ों की पगड़ी उछाल कर कुल को कलंकित करना है। तुम तो हमें कटोरा ताल नहलाने के लिए लाईं थीं। अब न जाने कौन से ताल का स्नान कर बेहयाई दरशाने लगीं; हमें तो नहाने का बहाना मात्र ही दिखाई पड़ता है। हमें तो तुमने मुंह दिखाने लायक भी नहीं छोड़ा। तुम्हारे या हमारे माता पिता पूछेंगे कि ताल नहाने में इतनी देर किस प्रकार लगी, तो उन्हें क्या बहाना बताया जायेगा। हम उन्हें क्या उत्तर देंगी।

इतना सुन राजकुमारी श्रीयल बोली, प्यारी सखी

चतुरंगी, आज तुम किस प्रकार की बातें करने लगी हो। जो इस पवित्र बन्धन को गलत कदम समझ रही हो। इनके साथ मेरा ब्याह होना निश्चित है। मेरा इनका इसी जन्म का नहीं, जन्म जन्मान्तर का का नाता है। दुनिया की कोई ताकत इसमें विघ्न नहीं डाल सकती। तुम देख लेना ये तुम्हारे जीजा बनेंगे और तुम सभी सखियां इनकी सालियां कहलाओगी। राजकुमारी श्रीयल की वार्ता सुनकर, सारी सखियां खिलखिलाकर हंस पड़ीं। जिससे मौसम अधिक सुहावना बन गया। अपनी सखियों को हंसता देखकर राजकुमारी श्रीयल जाहर से बोली, आपके ही कारण ये सालियां मेरा कैसा मजाक बना रही हैं। अभी से इनका ये हाल है तो न मालूम आगे क्या कुछ न कर बैठें। मुझे यही भय है ये सब मुझे बिना वजह बदनाम न कर डालें।

इतनी सुन गोगा जी बोले। राजकुमारी जी ये तो वही मसल हुई, उल्टा चोर कोतवाल को डांट बतावे। एक तो आप लोगों ने कभी फूल फेंककर, कभी पैर का अंगूठा दबाकर मुझे कच्ची नींद से जगाकर मेरे आराम में खलल डालकर अपना स्वप्न सच्चा किया। मैंने भी गुरु गोरखनाथ जी

महाराज की दया समझकर आप सबके जी भरकर दर्शन (दीदार) किये। मुझे तो यह दीखता है अपना दोष पराये बालक के सर मढ़ने में तुम और तुम्हारी ही सभी सखियां बड़ी चालाक और चतुर हैं। इसलिए चटपट चौसर सार बिछाकर अपनी नाजुक कलाई से, पासे फेंककर अपनी चतुराई की चाल चलकर दिखाओ।

सज्जनो ! ये दोनों चौसर सार खेलने में इधर मस्त हो गए। उधर मौका देख कर राजकुमारी श्रीयल को छोड़, सब सखियां आंख बचा चुपके से खिसक गईं और अपने अपने घरों पर जा पहुंची। उन सबको भय हो गया था कि इन दोनों के चरित्र का हाल राजकुमारी श्रीयल के माता पिता को मालूम पड़ गया तो इनका तो कुछ बिगड़े या न बिगड़े हम लोगों का बुरा हाल अवश्य कर डालेंगे। इन राजा रानियों के घरों की रीति उल्टी सुल्टी हुआ करती हैं। चाहे कोई मरे चाहे कोई जिए। ये तो दूध बतासे पिये।

इस प्रकार उधर ये सोच रहीं थीं, उधर मद मस्ती के कारण गोगा जी ने गुरु गोरखनाथ जी महाराज का बिना सुमरन किये ही अपना पासा

फैंक दिया। कामदेव महाराज ने उनकी इतनी मत हरली कि उन के ऊपर भयंकर भूत सवार हो गया और अक्ल पर पत्थर पड़ गए। इनके काने तीन का दाव आया। अब राजकुमारी श्रीयल ने योगीराज गुरु जालन्धरनाथ को सुमरनकर पासे फैंके उसका पौ बारह आया। जाहरवीर की गोट बड़ी बुरी तरह पिट गई, वो बाजी हार गए। श्रीयल बाजी जीत गई। शर्त के मुताबिक जाहरवीर जोधा राजकुमारी श्रीयल के बन्धुआ बन गए।

बन्धुओ ! जब गोगा जी को राजकुमारी के बन्धुआ बने हुए छः माह बीत गए और ब्याह हुआ न गौना, तब वह बार बार अपने माता पिता और घर की याद करते परन्तु उन्हें कोई उपाय न सूझा। तब उन्होंने हारकर गुरु गोरख नाथ जी महाराज का सुमरन किया और मस्तक नवाकर प्रार्थना की। गुरु देव अब दया करो और मुझे इस आफत से छुटकारा दिलाकर मेरे, माता पिता के दर्शन मुझे घर भिजवा कर करा दो। मेरी माता मेरी याद में रात दिन अधीर हो अपना धीरज खोकर गाय की तरह बिना बछड़े के तड़फड़ाती होगी।

जब गोगाजी ने मन कर्म से गुरु गोरखनाथ का

ध्यान धरा। तब उनकी समाधी कजली वन में एक दम भंग हो गई। जब उन्होंने योगमाया द्वारा ध्यान धर कर देखा, तो अपने चेले जाहर जोधा को तन्दुल नगरी में महादुखी पाया। वह तुरन्त ही अपने प्रमुख चेले औघड़नाथ को अपनी धूनी सौंप, उड़न खड़ाऊं पर चटपट चढ़कर राजा सिन्धासिंह की राजधानी तन्दुल नगरी आन पहुंचे। गोगावीर ने अपने गुरुदेव को अपने सामने खड़ा देख तुरन्त ही उनके चरण पकड़ लिए। अपने शिष्य गोगावीर को महान दुखी देखकर गुरु गोरखनाथ जी महाराज बोले। बेटा जाहर जोधा अब चिन्ता करने और दुखी होने की कोई जरूरत नहीं। जब मैं यहां आन ही पहुंचा हूं। तुमने चौसर सार खेलते समय मेरी याद भुलादी। वही भूल तुम्हारी हार का कारण बनी है और राजकुमारी श्रीयल अपने गुरु जालन्धर नाथ योगी का स्मरण कर खेल में तुमसे बाजी जीत गई है। अब तुम और राजकुमारी श्रीयल अंगूठी का खेल खेलो। जिस प्रकार मैं तुम्हें समझाऊं। पांसा भी फैंको तो मेरी आन लगाकर ही फैंकना। अभी गुरु चेलों की वार्ता हो ही रही थी कि राजकुमारी श्रीयल भी आन पहुंची। गोरखनाथ जी महाराज को देखकर अपने

दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उन्होंने उसे अटल सौभाग्यवती रहने का आशीर्वाद दिया।

राजकुमारी श्रीयल ने अपने मन ही मन विचार किया कि जब ये यहां तक आन हो पहुंचे हैं, तब ये जरूर ही मेरे पतिदेव को अपने साथ लिवा जायेंगे। ये गुरुदेव बड़े ही पहुंचे हुए सिद्ध योगीराज हैं। जब उसे और कोई उपाय नजर नहीं आया। तब उसने अपने सिद्ध गुरु जालन्धर नाथ योगी का स्मरण किया और नगरकोट की देवी को मन ही मन मनाया। तभी गुरु जालन्धरनाथ योगी अपनी शिष्या राजकुमारी श्रीयल के सन्मुख आन कर खड़े हो गए। वह अभी हाल ही में राजा गोपीचन्द की राजधानी हैला पट्टन नगरी से अपने शिष्य कनिफानाथ द्वारा घोड़ों की लीद वाले बदबूदार गड्ढे की कैद से निकल कर आये थे। ये बारह वर्ष पूर्व राजकुमारी श्रीयल की माता रानी सिरौंजा व राजा सिन्धासिंह से वरदान देते समय बोल गए थे। मेरे वरदान से तुम्हारे घर एक सौभाग्यशाली कन्या रत्न का जन्म होगा। उसकी सगाई तुम गोरखनाथ के शिष्य जाहरवीर जोधा से कर देना। वही इसके लायक वर है। ये सब वार्ता पीछे हम लिख चुके हैं। जिसे आप पढ़ चुके हो।

राजकुमारी श्रीयल ने दोनों हाथ जोड़कर अपने गुरुदेव को नमस्कार किया और उन्होंने भी अपनी शिष्या को सौभाग्यवती रहने का ही वरदान दिया। फिर जालन्धरनाथ योगी को नमस्कार कर गुरु गोरखनाथ जी ने भी अपना मस्तक नवाया। अब वह धीरज धर जाहरवीर से बोली। राजकुमार जी अब क्या इरादा है? जब जाहरवीर जोधा ने देखा ये तो कोई बड़े ही महान योगीराज मालूम पड़ते हैं। जिन्हें मेरे गुरुदेव ने भी अपना मस्तक नवाया है। अपने गुरु की देखा देखी जाहरवीर जोधा ने भी अपने दोनों हाथ जोड़ नमस्कार कर अपना मस्तक नवाया और चिरन्जीव रहो का आशीर्वाद प्राप्त किया और राजकुमारी श्रीयल को उत्तर दिया इरादा क्या होता हम तो हर हाल में मस्त हैं। अगर तुम कुछ इरादा रखती हो तो हो जाए अंगूठी का खेल शुरू। मैं एक बार और आजमाना चाहता हूं कि मेरा मुकद्दर तेज है या आपका।

राजकुमारी श्रीयल बोली, मुझे आपकी बात से कोई उजर नहीं है। मगर दाब बदकर ही खेल खेला जाएगा। जाहरवीर जोधा बोला अब तो मैंने दो दो गुरुदेवों का आशीर्वाद प्राप्त कर लिया है। लगाओ

दाव पर क्या लगाती हो, राजकुमारी श्रीयल बोली मैं अपने हीरे पन्ने के कीमती जेवरात जो मैंने पहन रक्खे हैं और अपना प्यारा बंगला, सजी सजाई चित्र सारी सहित। आप बताओ इसके बदले में क्या वस्तु लगा रहे हो। जाहरवीर जोधा बोला, मैं इन वस्तुओं के बदले में, अपना देव दुर्लभ, नीला घोड़ा लगाता हूं। राजकुमारी श्रीयल ने चटपट पासा फेंका और नीले घोड़े के जीतने की खुशी में उसने न गुरु जालन्धरनाथ योगी को सुमरा, न नगर कोट की देवी को मनाया। इसलिए उसके दाव में काने तीन का ही नम्बर आया।

जाहरवीर जोधा ने खुश हो जवाबी कार्यवाही में गुरु गोरखनाथ जी महाराज का सुमरन कर, अपनी माता बाछल रानी को मनाया और योगी जालन्धर नाथ की तरफ देखकर पांसा फेंक दिया। पौ बारह देख खुश हो, एकदम उछल पड़ा। जाहरवीर जोधा जीत गया और राजकुमारी श्रीयल की गोट पिट गई। वह एकदम भारी उदास हो गई। उसने अपनी नजर नीची कर एक बाजी और खेलने को कहा। जाहर वीर बोला अब किस चीज का दाब बदोगी, जरा

बताओ तो सही । एक बार हारने से ही तुम्हारे चेहरे पर बुरी तरह उदासी छा गई है । अबके हार जाने पर शायद रोने ही लग जाओगी ! पर राजकुमारी श्रीयल ने कहा इसमें रोने की क्या बात है ।

अबकी बाजी हमारे आपके जीवन की बाजी होगी । अगर मैं जीत गई, तो आपको मय अपने नीले घोड़े के हमारा तन्दुल नगरी में हमारे पास बंधुआ होकर अपनी जिन्दगी गुजारनी पड़ेगी, जिस प्रकार इस समय तक रह रहे हो । आपकी मदद करने आप के गुरुदेव यहां नहीं आवेंगे जिस तरह अपने शिष्य की मदद देने इस दफा आन पहुंचे हैं । ये कोई जीत हार थोड़े ही हुई है, ये तो इन गुरुदेव की माया का चमत्कार हुआ । आगे ध्यान धर कर सुनो अगर मैं हार गई और आप जीत गये तो आपकी चरण सेविका बनकर, जिन्दगी भर आपके बागड़ प्रान्त के ददरेड़ा नगर में हंसी खुशी रहकर अपने जिंदगी के दिन पूरे करूंगी ।

इतना कह राजकुमारी श्रीयल ने अधीर हो धीरज खोकर पांसा फैंक दिया । परन्तु गुरु गोरखनाथ जी महाराज की माया के चमत्कार से इस बार भी वह अपने गुरुदेव जालन्धरनाथ व नगर कोट की देवी

को मनाना भूल गई । जिसकी वजह से राजकुमारी श्रीयल के काने तीन का ही पांसा पड़ा । तब जाहर वीर जोधा ने खुश होकर अपने गुरु गोरखनाथ जी महाराज के चरणों मे ध्यान धर कर अपनी पतिव्रता माता महारानी बाछल को मनाकर अपना पांसा फैंका जिससे उनका पहले वाला दांव पौ बारह ही पड़ा । राजकुमारी श्रीयल की गोट अबके भी पिट गई । राजकुमारी श्रीयल बाजी हार गई और जाहर वीर जोधा बाजी जीत गए । राजकुमारी श्रीयल ने बड़ी बुरी तरह बाजी हारकर, अपनी आंखों में आंसू भर कर गोगा वीर का पैर पकड़कर कहा, आप मेरे तन मन धन के देवता हो गए और मैं आपके चरणों की चरणदासी । मुझे आप जहां भी ले चलोगे वहां आप के साथ जाना ही मेरा परम धर्म है । मुझे आप इसी वक्त अपने घोड़े की पीठ पर चढ़ाकर ले चलो और ददरेड़ा नगर में चलकर मेरे संग अपना ब्याह हंसी खुशी से करवा लेना । राजकुमारी श्रीयल की इस प्रकार की वाणी सुन कर गोगा वीर बोले ।

रानी ! अगर मैं तुम्हें इसी प्रकार घोड़े की पीठ पर चढ़ा कर अपने साथ बागड़ देश ले जाऊं तो मेरे

घर वाले और मेरे भाई अरजन सरजन या विरादरी के अन्य भाईबन्द तथा नगर निवासी जन तथा मेरे यार दोस्त किस प्रकार मेरे जन्म में थूकेंगे । कहेंगे ये कुल डूबा जाहर वीर योधा किसी की कुंवारी कन्या को भगा लाया है । ये भी कहेंगे ये किसी नीच कुल की है जो बिना ब्याह गौने के ही एक परदेशी घुड़सवार के घोड़े पर बैठ भाग आई है । तुम्हें कोई राजा महा-राजा की बेटी न समझ कर किसी नीच जाति की कुल डूबा कन्या ही समझेंगे । गोगा इसकी खूबसूरती को देखकर इसे भगा लाया है या किसी गरीब आदमी को धन देकर इसे मोल ले आया है । मैं वहां किस किस का मुंह बन्द करता फिरूंगा । इससे दोनों ही कुलों की बदनामी होगी । यहां के लोग किस प्रकार तुम्हारे माता पिता को ताने तिसने देकर उनका जीना दूभर करदेंगे, ये तुम्हारे सोचने-विचारने की बात है । इसलिए तुम अपने माता पिता को समझा बुझाकर अपने नाई पुरोहित के हाथ टीका भिजवाना । तब हम तुम्हारे यहां का टीका लेकर अपनी फौज पलटन सजाकर राजा महाराजाओं के साथ, तुम्हारी तन्दुल नगरी में आनकर, राजी से या नाराज़ी से जैसे होगा ब्याह करेंगे । इस समय तो

ज्यादा से ज्यादा ये ही मुनासिब है कि अपने स्वप्न की भांति ही, अपने और तुम्हारे गुरुदेव, दोनों की मौजूदगी में आधा आधा ब्याह करके यानी साढ़े तीन फेरे फिर जावें ।

सज्जनो ! जाहर वीर जोधा की वार्ता सुनकर राजकुमारी श्रीयल ने शर्म से अपना सिर नीचा कर लिया और अधीर हो बोली कि मुझे तो आपकी आज्ञा से इन्कार नहीं है । मैं तो आपकी चरण सेविका बन ही चुकी हूं । परन्तु मुश्किल ये बड़ी भारी है कि हमारे पुरखा तंवरवंशियों में और आपके पुरखा चौहानों में काफी पुराना मन मुटाव है । दोनों में बड़ी भारी दुश्मनी मुद्दतों से चली आ रही है । मेरे पिता ये सम्बन्ध राजी से हरगिज न होने देंगे । वह भी कम बलवान नहीं हैं । दोनों तरफ के हजारों सूरमाओं का बलिदान हो जावेगा । उन्हें हराकर ये ब्याह करना आसान काम नहीं है । इतना सुनकर जाहर वीर जोधा बोले रानी चिन्ता फिकर त्याग दो । ये ब्याह सम्बन्ध पूर्व जन्म के संस्कारों द्वारा ही होते हैं । जब हमारे तुम्हारे इन दोनों योगेश्वरों का हाथ हम दोनों के शीश पर है, इनका आशीर्वाद हमारे साथ हैं तो कोईभी अड़चन या विघ्न बाधा, कुछ भी

नहीं बिगाड़ कर सकेगी। वैमाता के लिखे को मिटाने की सामर्थ्य किसमें है। अब जल्दी से साढ़े तीन फेरे फिरवाकर आधा ब्याह हो जाने पर दोनों गुरुओं का आशीर्वाद प्राप्त कर अपने घर जाओ, बाकी का आधा ब्याह महूर्त आने पर करके तुम्हें अपने साथ बागड़ देश लिवा जाऊंगा।

राजकुमारी श्रीयल को गोगा वीर की वार्ता भली प्रकार समझ में आ गई और दोनों ने आपस में एक दूसरे का गठ बन्धन कर दोनों सन्तों के सम्मुख पति पत्नी बन कर साढ़े तीन फेरे ब्रह्मा विष्णु शंकर को साक्षी कर हंसी खुशी फिरवा लिए। आधा व्याह हो जाने पर हमारे गोगावीर ने दोनों गुरुओं का शीश नवा आशीर्वाद प्राप्त किया।

जब रानी श्रीयल ने देखा अब ये यहां से चले ही जावेंगे, तब अपने दोनों हाथ जोड़कर बोली। आप मुझे जहां ले चलो वहां आपके साथ जाना ही पड़ेगा, ये मेरा परम धर्म है। परन्तु मेरा मन उजड्ड बागड़ प्रान्त में जाने से बहुत ही बेचैन है। जहां सवारी के वास्ते ऊंट, फलों में मतीरा या फूट, हवा के नाम लूएं (यानी गर्म हवा) पानी एकदम खारा बदबूदार, जहां न कोई मेवा है न मिष्ठान। जहां भोजन में

मिलती है बाजरे की मोटी झोटी रोटी और मोठ की दाल, पीने के वास्ते ऊंटनी का बदबूदार दूध। जहां रात दिन आंधियों का ही जोर रहता है और गर्म बालू रेत से जल जलकर सारा ही नाजुक व खूबसूरत बदन काला कोयला बन जाता है आंधी तूफानों में तो जीना मर जाने से भी बुरा होता है। आपके बागड प्रान्त में सबसे ज्यादा फूट ही एक मेवा है जो पैदा होती है। जो खाने और लड़ने झगड़ने दोनों ही काम में आती है। इसी फूट के कारण भारत वर्ष की जो दुर्दशा हुई है। उसका ब्यान करना एकदम नामुमकिन है। इसी फूट के कारण ऋषि मुनियों का ये सुन्दर भारत देश बरबाद हुआ है। किसी कवि ने फूट की पहेली भी बनाकर लिखी है। खेत में हो तो सब कोई खावे, घर में हो तो घर बह जावे। बताओ उत्तर (फूट)

अब हमारे संगल दीप प्रांत की भी वार्ता ध्यान पूर्वक सुनो। इससे बढ़िया प्रांत भारत वर्ष में तो क्या सारे संसार भर में दूसरा प्रांत नहीं है। ये ही वो प्रांत है जहां पर पदमिनी नारियों की खान है। मेरी कही मानो यहां से भूलकर भी जाने का नाम ही न लो। यहां आपकी सेवा में एक से एक सुन्दर दासियां,

अपसराओं को मात करनेवाली मधुर मुस्कान बखेरने वाली, चटक मटक दार सालियां। देवताओं जैसा देशी घी से बने मिष्ठान का मधुर भोजन, दूध, जलेबी, खीर, पूरी, हलूआ और रसभरी इमरती और मोहन भोग समुद्र की जीवनदायिनी वायु, सवारी के वास्ते हाथी घोड़े, यहां न वहां जैसी आंधियां हैं न अंधिआर न गर्म लूयें जिससे जिस्म काला स्याह पड़ जाये। तूफान को तो यहां कोई जानता ही नहीं क्या बला है। इसलिए उसका तो जिक्र करना ही वृथा है। अगर केवड़े गुलाब इतर के फव्वारे की हवा खानी है तो घर जमाई बन कर यहां रहने में लाभ ही लाभ है हानि का कोई काम नहीं। जाहरवीर जोधा रानी श्रीयल की वार्ता सुन सुन कर अधीर हो बोले, रानी जी, समझ से काम लो, अधीर बनकर धीरज मत खोवो। बागड़ प्रान्त की हवा खाकर तन्दुल नगरी को एक दम भूल जाओगी। अब पहले जैसी बातें नहीं हैं।

इतना कहकर अपने घोड़े की बाग रानी श्रीयल से छुड़ा ली जो तन्दुल नगरी से जाने के कारण पकड़े हुए खड़ी थी। नीले घोड़े को एकदम अपने पैर की ऐड़ लगाई। ये देख रानी श्रीयल अधीर हो, अपने नैनों से नीर बरसाने लगी। रानी श्रीयल को रोता देख नीला घोड़ा मुस्कराकर बोला, भाभी जी नमस्कार। नीले घोड़े का अनोखा नमस्कार सुन कर रानी श्रीयल अपने आंसू पोंछ मधुर मुस्कान बिखेर गुलाब की कली के समान खिल खिलाकर एक दम हंस पड़ी। दोनों सन्तों के मुख पर भी मुस्कान फैल गई। तब नीले घोड़े ने अपने दोनों पंख पसार कर ऊंची उड़ान भरी। रानी श्रीयल का जरा भी बस न चला। तब आसमान की तरफ मुंह करके इस प्रकार कहने लगी :

दोहा-प्रीतम प्रीत न तोड़ना, नीक न ये सन्सार।
नेहा तज क्यों जात हो, होकर अश्व सवार।
बिना पंख बेबस हुई, हृदय धरे ना धीर।
घायल की गति घायल जाने, श्रीयल हुई अधीर।

इस प्रकार कहकर अपना धीरज खोकर बराबर आसमान की तरफ अपना मुंह उठाए चकोर के समान ताकती रही। उसने देखा मेरे प्राण आधार का नीला घोड़ा अपने दोनों पंख फैलाये काले बादल की लाली में सरसर फर फर कर, बाज के माफिक आसमान के बीचोंबीच जा पहुंचा। तब रानी श्रीयल ने उदास मन से दोनों सन्तों को अपना सिर

झुकाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर अपने घर का प्रस्थान किया। दोनों धर्म गुरू भी अपना अपना उड़न खड़ाऊं पहन कर हवा के माफिक उड़कर अपने अपने स्थान पर जा विराजे।

* श्री गोगा पुराण अट्ठाईसवां अध्याय समाप्त *

उनतीसवां अध्याय

राजकुमारी श्रीयल और उसकी माता रानी सिरौंजा का वार्तालाप

प्यारे बन्धुओ, राजकुमारी श्रीयल की सभी सखी सहेलियां अपने अपने घर पहुंच गई और राजकुमारी श्रीयल घर न पहुंची। तब अपनी बेटी के अति देर करके भी न पहुंचने पर, अधीर हो राजकुमारी की माता ने उसकी प्रमुख सहेली चतुरंगी के मकान पर अपनी दासी को भेजकर उसे अपने महल में बुलाया और अपनी बेटी के न आने का कारण पूछा। तब राजकुमारी की सखी अपने दोनों हाथ जोड़ कर रानी सिरौंजा से बोली, किसी घुड़सवार के घोड़े ने बाग में बढ़कर पेड़ पौधों की बड़ी भारी हानि पहुंचाई है और कटोरा ताल का पानी भी बड़ी बुरी तरह गंदला कर दिया है। इसलिए हम सब तो

तुरन्त ही बिना नहाये ही अपने अपने घरों को चली आई और आपकी बेटी राजकुमारी गुस्से में भरकर माली और चौकीदार को बड़ी बुरी तरह डांटने फटकारने में लगीं रहीं। जब हमने उनसे चलने को कहा, तो वह नाराज होकर कहने लगीं तुम लोग जाओ मैं भी शीघ्र ही आ रही हूं। समझ में नहीं आ रहा है वह अब तक इतनी देर किस कारण से रुकीं।

इतनी बात कहकर चतुरंगी चुपचाप अपने घर चली आई। रानी सिरौंजा ने उदास हो अपनी बेटी के जनाने बाग में राजकुमारी श्रीयल के घर अब तक न पहुंचने से अधीर होकर खबर सुध लेने को अपनी दासी रूकमदे को भेजा। इधर जब राजकुमारी श्रीयल की आंखों से गोगावीर का नीला घोड़ा ओझल गया, तब दोनों धर्म गुरुओं के जाते ही एक ठन्डी आह भरकर पृथ्वी पर पछाड़ खाकर चारों खाने चित हो, गिरकर बेहोश हो गई। उसे अपने तन बदन की भी सुध बुध न रही। बाग के माली ने जब अपनी राजकुमारी श्रीयल को अकेली बेहोश पड़े देखा तो ठन्डे जल के छींटं उसके मुंह पर मारे। तब उसे कुछ होश आया।

दासी के पहुंचते ही अपने डोले में सवार हो

महल में आनकर, आसन पाटी ले कोप भवन में जा पड़ी। दासी ने जो कुछ माली से सुना कि इन्हें गश आगया था। बड़ी देर पीछे मुश्किल से होश में आई हैं। सुना हुआ वाक्या अपनी रानी सिरौंजा से ब्यान कर दिया। और ये भी कहा कि बाग में चारों खाने चित गिर जाने के कारण उनके शीश में गुमड़े भी उमड़ आये हैं। हाथों की चूड़ियां भी मौल गई हैं उनकी चुन्दरी भी कीचड़ मिट्टी लग जाने के कारण काफी मैली और गन्दी हो गई है।

अपनी बेटी की बुरी दशा सुनकर रानी सिरौंजा अधीर हो धीरज खोकर एकदम उसके कमरे में जा पहुंची। अपनी राजकुमारी श्रीयल की दशा देखकर उसके सर पर हाथ फेरकर रोती हुई बोली। ऐ बेटी, मेरी लाड़ो, बता तो सही बाग में क्या क्या घटना घटो तेरा तो हंसमुख चेहरा जो सदा गुलाब की कली के समान खिला रहता था एकदम मुरझा गया है। तेरे तो मुख की मुस्कराहट भी गायब हो गई है। जो भी बात बाग में गुजरी अपनी माता से ब्यान कर दे। जब अपनी माता रानी सिरौंजा को कोई उत्तर न दिया तो वह प्यार पुचकार कर बोली। बेटी श्रीयल, अपनी माता से कुछ तो अपनी तबियत का हाल ब्यान कर।

तेरी तबियत इतनी ज्यादा खराब किस प्रकार हो गई। मुझ से अपने दुःख की सारी घटना ब्यान कर।

राजकुमारी श्रीयल ने अपनी मां को अति अधीर देखा। रानी सिरौंजा और बांदी रुक्मदे के उदास मुख पर आंसुओं की धार बह रही है। राजकुमारी श्रीयल भी बेचैन हो ठन्डी आह भरकर फिर बेहोश हो गई। तब रानी सिरौंजा और बांदी रुक्मदे दोनों ने मिलकर पूरी कोशिश के साथ गुलाब केवड़े के जल के छींटे मुख पर मार मारकर राजकुमारी श्रीयल को चैतन्य अवस्था में किया। जब महारानी सिरौंजा ने अपनी बेटी राजकुमारी श्रीयल से कहा। बेटी उठ नहा धोकर खाना खा लो। तुम्हारी चिन्ता में तो मैं भी बड़ी बेचैन हो रही हूं। जो भी तुझे कष्ट हो मुझे शीघ्र बता। तू मेरी इकलौती लाड़ली बेटी बड़ी मुश्किल से योगीराज गुरु जालन्धर नाथ की रातदिन सेवा करने और उनके वरदान द्वारा प्राप्त हुई है और नौ मास तुझे अपने उदर में रखकर महान कष्ट सहकर जन्म दिया है। मेरे होते मेरी लाड़ो बेटी दुख उठाए मैं यह कैसे बर्दास्त कर सकती हूं। अपने दुखी दिल का सकल अहवाल मुझे शीघ्र बता। मुझे मेरी

नाजों की पली लाड़ो बेटी के सुख में सुख और दुख में दुख है।

इतना कहकर रानी सिरौंजा अपनी बेटी श्रीयल के बालों को अपने हाथों की उंगलियों से सहलाने लगी। अपनी बेटी के सुनहरे केशों को संवारने सुधारने लगीं। राजकुमारी श्रीयल की बलइयां लेकर बार बार उसका मधुर मुख चूमने लगी। माता का प्यार देख राजकुमारी श्रीयल भी अधीर हो मोतियों के समान अपने नैनों से नीर गिराने लगी। अपनी माता सिरौंजा के गले से चिपटकर फूट फूटकर रोने और सिसकारियां भरने लगी। दोनों मां बेटी खूब जी भरकर सुबक सुबक कर रोईं। जब रो धोकर मां बेटी का जी भर गया तब दोनों ने अपनी अपनी साड़ियों के पल्लों से अपने अपने पलक साफ किये। फिर रानी सिरौंजा बड़े ही दुलार के साथ बोली। बेटी अपने जी की सारी व्यथा अपनी माता से बयान करो। तुम्हारे अधिक अधीर होने का क्या खास कारण है। बेटी तुम्हें मेरे सर की कसम है जो अपनी जननी से जरा भी अपना भेद छिपाओ। गुरु जालन्धर नाथ सब दुख दूर करेंगे। तुम्हें उन्हीं का सुमरन करना चाहिए।

अपनी माता के अधीर वचन सुनकर और उनकी आंखों में दुबारा भरे आंसुओं को देखकर निढाल ही उनकी गोद में गिर पड़ी और औंधे मुंह पड़ी पड़ी फूट फूटकर रोने लगी। अपनी माता के बहुत धीरज बंधाने पर राजकुमारी श्रीयल ने इस प्रकार कहना शुरू किया। माता जी आप मेरी सखी सहेलियों को तो खूब जानती ही हैं कैसी मुंहफट और आग लगावा हैं और हंसी मखौल करने में कितनी कमीनी वार्ता कर बैठती हैं। मुझे इनसे अपना पीछा छुड़ाने का कोई उपाय नजर नहीं आता। आज ही की तो बात है जब मैं कटोरा ताल स्नान करने के वास्ते उनके साथ जाने लगी तो रास्ते में कहने लगीं, ये महाराजा सिन्धा सिंह जी अपनी लाड़ली बेटी राज कुमारी श्रीयल को कब तक कुंवारी घर में बिठाए रक्खेंगे। ये इतनी बड़ी हो गई, हमें तो ऐसा लगता है बैमाता ने अभी तक इसका जोड़ा मिलाया ही नहीं है। इन की बातें सुन सुनकर मैं परेशान थी ही, बड़ी मुश्किल से कटोरा ताल पर पहुंच पाई।

जब अपने वस्त्र बदलकर स्नान ध्यान के वास्ते कटोरा ताल के निकट पहुंची तो वहां क्या देखती हूं कि मेरे प्यारे कटोरा ताल का महकदार जल किसी

घोड़े की लीद और पेशाब के कारण दुर्गन्ध युक्त हो गया है। मारे बदबू के मेरा दिमाग सड़ने लगा। तब अपनी नाक पर रूमाल रखकर आगे बढ़ी। जब देखा मेरे सुनहरे सुन्दर कटोरा ताल की पैड़ियां बुरी तरह टूटी फूटी दिखाई पड़ीं जिन्हें देख कर अपना धीरज खो एकदम अधीर हो गई। मेरे पिता जी ने कितना अधिक धन खर्च करके ये स्वर्गलोक से भी अधिक सुन्दर कटोरा ताल मेरे स्नान ध्यान के लिए बनवाया था। किस मूर्ख के घोड़े ने इसकी बेदर्दी के साथ कैसी दुर्दशा की है। मैं गुस्से में भरी जब फाटक के रास्ते बाग में घुसी तो मेरा जी अत्यन्त दुख सागर में गोते खाने लगा। क्या केशर क्यारी और क्या रंगीन फूलों से सजी फुलवारी, रोश पट्टी सब घोड़े ने घुड़-दौड़ कर-कर के अपने खुरों द्वारा कुचल कर सबका सत्यानाश कर डाला है। मेरी बाटिका के पेड़ पौधों को एकदम पतझड़ के समान वीरान कर तहस नहस कर डाला है। फलों को पेड़ों पर से तोड़ तोड़कर जितने खाए गए खाए बाकी अपने पैरों से कुचल कुचल कर विध्वंश कर डाला था। आम, अंगूर, अनार, अमरूद, सेव, सन्तरे, लीची, अलूचे, जामन और केले, क्या खिरनी क्या खुमानी। फलों का एक

पेड़ भी बाकी न छोड़ा।

माता जी आपही बतावें जिसकी नौलखी बगिया बेदर्दी के संग वीरान हो जाय उसके मालिक को कैसे दुख न होगा। मैं गुस्से में भरकर बागवान से कह रही थी तुम्हारे मौजूद होते हुए कौन सा बलवान यहां आ गया जिसका तुम कुछ न बिगाड़ सके और वह सारा बाग वीरान कर चला गया। क्या तुम्हें बाग की रखवाली करने के लिए नौकर रखा गया है या बाग में सोने और गुलछर्रे उड़ाने के लिए। इस नुकसान का कौन जिम्मेदार है। माता मैं बागवान से बात कर ही रही थी तभी एक पेड़ के नीचे खड़ा नीले रंग का एक घोड़ा बड़े जोर के साथ हिनहिनाया। उसका हिनहिनाना सुन जब मैं उस नीले घोड़े के निकट पहुंची तो वह मनुष्य की वाणी में बोलने वाला अति सुन्दर अश्व जो मनुष्य की तो बात ही क्या देवताओं तक को दुर्लभ है, को अकड़ के साथ खड़े देखा। प्रथम तो मैंने अपने दोनों नेत्र फैला फैलाकर जी भर कर टकटकी लगा उसके दर्शन किये। उसके बाद धैर्य धर कर उससे कहा। क्या बाग उजाड़ने और ताल बिगाड़ने की ये भारी हरकत तुमने की है।

तब वह मेरी ओर मुंह करके करके बोला, हां भाभी जी, मेरे सिवा इस प्रकार का चमत्कार और कौन करने की जुर्रत कर सकता है। ऐसा कमाल ये सेवक ही कर सकता है। सो हे मातेश्वरी, उसका एक कुवारी राजकुमारी को भाभी कहना सुनकर मैं आपे से बाहर हो गई। एक पौधे से सन्टो तोड़ कर गुस्से में मतवाली होकर, अपने औसान खोकर पांच सात सन्टी उस नीले घोड़े की पीठ पर जमा दीं। उससे कहा अब कह भाभी, फिर देखना भाभी कहने का मजा। माता जी मुझे गुस्से में भरा देख कर वो ढीठ घोड़ा बोला। अगर आपका मन संटी खेलने को ज्यादा बेचैन है तो जाकर अपने बालम से संटी खेलो जो तुम्हारी सेजों पर सुख की नींद बंगले में सोया है।

उसकी इस प्रकार की ये ढीढता देख अपनी सभी सखी सहेलियों के सामने शर्म से मेरी गरदन झुक गई। मैं अपने मन ही मन शर्मा कर, पानी-पानी होकर, अपने औसान खो बैठी। मैं मछली की भांति तड़फड़ा कर, गुस्से में चूर् हो, अपने पैर पटकती हुई अपने प्यारे बंगले की तरफ चल पड़ी। आगे आगे मैं और मेरे पीछे पीछे मेरी सकल सखी सहेलियां भी अपने मन में मुस्कराती हुई चल पड़ी थीं। उनका

मन ही मन मुस्कराना और चहचहाना देख मेरा जिगर जलकर छलनी हो गया। मेरे जी से तो ये भावना बड़ी जोर शोर के साथ उठने लगी कि पहले इन सबको धक्के देकर अपने बाग से निकाल दूं। ये अपनी काहे की सखी सहेलियां हैं। जो मेरे अधीर मन को धीर न बंधा कर, अपने मन ही मन प्रसन्न हो रही हैं। दुख सभी पर पड़ता है। ऐसा कौन सा इन्सान है, जिस पर दुख न पड़ा हो। माताजी, आप यकीन करो, जितना दुख मैंने अपने जीवन में आज उठाया है उतना दुख सारी जिन्दगी में न उठाया होगा। मैं अपने मन में अधीर होती हुई धीरज खो कर, अपनी चित्रसारी में लपककर जा पहुंची।

माता जी मैंने वहां पहुंचकर जब अपने पलंग पर, उस देव दुर्लभ घोड़े के सवार को सोते हुए देखा तो मैं गुस्से में चूर होते हुए भी, उसके नूर को देखकर खड़ी की खड़ी रह गई। उसका चमचमाता हुआ चेहरा, चन्द्रमा की रोशनी को भी मात कर रहा था। उस देवताओं से भी अति सुन्दर इन्सान की रक्षा के लिए पहरेदार शेषनाग पहरा देकर, उसके सिरहाने अपना फन फैलाये खड़े थे। माता जी मैंने आज तक ऐसा खूबसूरत और बलधारी इन्सान

नहीं देखा था। मैंने हिम्मत बांध उस बलधारी राजकुमार के बायें पैर का अंगूठा पकड़कर, उसके जाग जाने पर पूछा। आपको मेरे इस जनाने बाग में घुस कर इस सजे-धजे पलंग पर सोने की हिम्मत किस प्रकार हुई। किसी कुंवारी लड़की के पलंग पर सोने की सजा से शायद आप वाफिककार नहीं हैं।

तो ऐ मेरी मइया, वह अपने घोड़े की तरह ही ढीठ राजकुमार बोला, मैं गुरु गोरखनाथ जी महाराज और योगी जालन्धर नाथ जी महाराज की आज्ञा ले कर ही यहां आया हूं। इस पर मैंने अधीर हो अपना धीरज खोकर कहा। मेरा कटोरा ताल बिगाड़ने और बाग उजाड़ने की आज्ञा भी इन्हीं गुरु देवों ने ही आपको दी होगी। इसीलिए आप ने यहां आकर और ऊधम मचाकर मेरी बाग बहार बिगाड़ कर धर दी।

इतनी वार्ता सुनकर ढीठ राजकुमार बोला उन्होंने मुझे ये आज्ञा दी है कि तुम राजकुमारी श्रीयल के संग जीवन की बाजी बदकर चौसर सार का खेल खेलो। मैं अपने गुस्से में अधीर हो धीरज खोकर सोचने लगी, मैं योगेश्वर गुरु जालन्धर नाथ की प्रमुख शिष्या हूं। ये बेचारा मुझ से चौसर सार में किसी

भी प्रकार नहीं जीत पायेगा। मैं इसे हराकर कैद में डलवाकर सजा करा ही दूंगी। इसके सुनहरी साज वाले देव दुर्लभ नीले घोड़े को भी जीतकर और उस से ईंट पत्थर ढुलवाकर भाभी कहने का भली प्रकार मजा चखा दूंगी। मैं दीवानी बन अपने औसान खो कर उसके साथ चौसर सार (यानी चौपड़) का खेल खेलने बैठ गई। ये मेरी सभी सखी सहेलियां मौका देख मुझसे कहे बिना ही बाग में मुझे अकेली छोड़कर सबकी सब खिसक आईं।

माता की गुरु जालन्धर नाथ जो की विद्या ने मेरा कतई साथ नहीं दिया। उसके गुरु गोरख नाथ महाराज ने सकल सिद्धि सिखा रक्खी थी मुझे ऐसा भास हुआ। पहली बाजी घोड़े के मय सुनहरी साज के उसने अपना दाव वदा जिसकी ऐवज में मैंने अपना बंगला और मय कटोरा ताल के नौलखा बाग को दाव पर लगाया। पहला दाव मैं जीत गई और सोचने लगी मेरे मन की मुराद पूरी हो गई। मेरा मन चाहा गुरु कृपा से पूरा हो गया। अब मैं इस देव दुर्लभ घोड़े का घमन्ड, अच्छी तरह ठीक कर दूंगी। भाभी कहने का सारा मजा भली प्रकार चखाकर, इसे छटी का दूध पीना भूला दूंगी।

मैंने उसके कहने से घमन्ड में भरकर दूसरी बाजी भी खेलने का इकरार कर हामी भर ली। दूसरे दाव में हम दोनों ने अपने अपने जीवन को दाव पर धर दाव बदा कि हारने वाला जीतने वाले का गुलाम बनकर, उसका कहना मानकर उसकी हर प्रकार की सेवा सुश्रूषा करेगा। इस दफा का दाव मैं हार गई। मैंने गुरु जलन्धर नाथ जी को काफी मनाया। न मालूम वह अपनो समाधी से उठकर कहां चले गए थे। होनी वश उन्होंने मेरा साथ कतई भी नहीं दिया। सो है मेरीं मइया उसने मेरे साथ मेरे बंगले के भीतर ही ब्रह्मा, विष्णु और भोलेनाथ को साक्षी कर साढ़े तीन फेरे फेरकर, अपने नीले अश्व पर सवार होकर मुझ अध ब्याही को छोड़ कर न जाने कहां चला गया। मैं अपने मन में अधीर होकर गिर पड़ी। आगे जो हुआ वह आपको दासी रुकमदे ने सब बता ही दिया था।

अपनी बेटी की परेशानी भरी अनहोनी गैंवी दास्तान सुनकर, रानी सिरौंजा भी अपने मन में काफी अधीर हो धीर खोकर एक दम बेचैन होकर गुस्से में भरकर बोली। ऐ बेटी, तुमने बड़ा बुरा काम किया है। ये तुम्हारी सखी सहेलियां ही सारे नगर में

घर घर जाकर तुम्हारी करतूतों की चर्चा करती फिरेंगी। माता पिता जन्म के ही साथी होते हैं, कर्म के थोड़े ही होते हैं। जैसी तुमने करनी करी है वैसा ही हम सब को भुगतना पड़ेगी। तेरी वजह से तेरे माता पिता की नाक कितनी नीची होगी। तूने ये भी न सोचा कि हमारी राजपूती जाति की सीता सावित्री सतवन्ती नारियों के पतिव्रत की चर्चा तीनों लोकों और चौदह भुवनों में सूर्य चन्द्रमा की रोशनी की समान देदीप्यमान हो रही है। जरा ध्यान लगाकर सुन।

जगत जननी सीता माता के चरित्र से सभी सतवन्ती नारियों को ये शिक्षा मिलती है कि कोई कन्या अपने लक्ष्य पर तभी पहुंच सकती है जब उस के माता पिता ने अति स्नेह पूर्वक उसका लालन पालन कर उसे आदर्श नारी बनाया होगा। उसे पति भी ऐसा ही मिले जो अपनी नारी को अपना अंग समझे और उसकी सास भी ऐसी हो जो अपनी बेटी से अधिक बहू को प्यार करे। हमारे देश वासी बहुत से माता पिता, आजकल कन्या के जन्मते ही अपने भाग्य को कोसने लगते हैं। ये सोचने लगते हैं कि कन्या तो पराया धन है। ऐसे भाग्यहीनों के

घर जो कन्या जन्म लेती है वह भी उनकी भाग्य हीनता से अभागिनी ही बन जाती है। उपेक्षा पूर्ण वातावरण में उसे अपने जीवन के दिन व्यतीत करने पड़ते हैं। न उसे लड़कों के समान खाने को मिलता है, न पहनने को, उसके स्वास्थ्य की ओर उसकी सगी माता, जिसके उदर से वह पैदा हुई है। वह भी उस का कोई ध्यान नहीं रखती। जबकि वह अपने धनी माता पिता के घर, सब अपमान सहकर इस घर में ब्याह कर आई थी और अब मालकिन बनकर अपनी माता के समान ही अपनी प्यारी कन्या को अभागिनी आदि कहकर रातदिन उसका अपमान करती रहती है और उसकी शिक्षा दीक्षा की कतई परवा नहीं की जाती है।

अगर महाराजा जनक भी ऐसे ही पिता होते, जैसे आजकल के कलयुगी राजा या सेठ साहूकार होते हैं। तो जनक नन्दनी सीता का आदर्श रूप, किसी भी प्रकार हमारे सम्मुख नहीं होता। सीताजी को पाकर राजा जनक ने, परम पिता परमात्मा की कृपा को बहुत ही बड़ा उपकार माना था, और अपने को बहुत ही बड़ा सौभाग्यशाली समझा था। सीता जी के जन्म के समय उन्हें बड़ा भारी हर्ष हुआ था।

जब सीताजी को उन्होंने अपनी गोदी में उठाया था। तभी उन्हें निश्चय हो गया था कि मुझ जैसा सौभाग्यशाली व्यक्ति संसार में दूजा नहीं है। उनका हृदय अपार आनन्द और उत्साह से परिपूर्ण था। सीताजी के जन्म की खुशी में, उनका मस्तक गर्व से ऊंचा उठ गया था। इसलिए वह उसी समय से प्रयत्न में लग गये थे कि मेरी सीता एक आदर्श नारी बनकर अपनी कीर्ति द्वारा सकल संसार की नारी जाति को अपने आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दे।

बेटी श्रीयल मैंने और तुम्हारे पिताजी ने, राजा जनक की तरह हो सीता जैसो आदर्श बालिका और शिक्षित नारी बनाने में, अपने कर्तव्यों का भली प्रकार पालन किया है। वर्तमान शिक्षा दिलाने के साथ साथ जगत गुरुओं द्वारा भी शिक्षा तुम्हें दिलवाई है। तुम्हें भी हमने सीता सावित्री के समान ही गुण वाला बनाकर, संसार को रोशनी दिखाने के कर्तव्य में जरा भो ढीलढाल नहीं की। आज इस भारतवर्ष में कितने माता पिता राजा जनक और रानी सुनेना की तरह, अपनी पुत्री का लालन पालन करते हैं। अगर इन कर्महीनों की कन्यायें सीता सावित्री नहीं बन पाई, तो इन कर्महीनों के भाग्य का

दोष नहीं है कर्तव्य पालन न करने की गलती है। इसमें इन बेचारी, भोली भाली कन्याओं का क्या दोष है।

बेटी, कर्महीन पिताओं की बातें तो जाने दो। ये हमारी स्त्री जाति की पतिव्रता कर्तव्य शीलता, सराधू स्वरूप से अपनी गृहस्थी का पालन करने वाली हमारी मां बहनें भी,इस दोष से मुक्त नहीं है। ये सब भी पुत्र जनने की कामना करके भगवान सत्यनारायण की कथा बोला करती हैं। और अधर्मी लोगों से ताबीज गन्डे बनवाकर अपने गले में पहना करती हैं। वह अपने उस दुखदाई पुराने समय को भूल जाती हैं कि मेरे माता पिता ने मेरे जन्म का शोक उसी प्रकार मनाया था, जिस प्रकार कन्या जन्म पर हम मनाती हैं। कभी हम भी अपने भाइयों के मुकाबले पर, रात दिन अपमानित हुआ करती थीं। इस मामले में हमारी मां बहनों को, अपना दृष्टि कोण राजा जनक व रानी सुनेना के समान ही एक दिन हार कर झक मार कर अवश्य बनाना पड़ेगा। तभी ये भारतवर्ष पतिव्रता नारियों का देश बनकर, सब देवी देवताओं को अपनी ओर आकर्षित करेगा। उनसे मन चाहे वरदान पाकर, अपने को पूर्ण सुखी और समृद्धशाली

समझेगा। वरना यह अबसे भी ज्यादा दुख भोगता रहेगा। अगर आपके घर कन्या का जन्म हो तो हमें उसी प्रकार हर्ष मनाना चाहिए जिस उत्साह से पुत्र जन्म ढोलक, मन्जीरे बजा बजाकर मनाते हैं।

किसी जमाने में पाताल पुरी में भी हमारे यहां जैसा ही दोष था। वहां की जनता के कर्णधारों ने, साधू सन्तों के परामर्श से अपने पुराने नियमों को बदल डाला था। उनके यहां यह नियम प्रचलित हुआ कि पिता के माल का पुत्र मालिक न होकर, पुत्री ही मालिक होगी। उसके बाद उसका ब्रह्मचारी बेटा अपने नाना के माल का मालिक बनेगा और अगर वह शादी कर लेता है, तो अपनी स्त्री के पास अपनी सुसराल में रहकर, गृहस्थी का सुख भोगेगा। ये नियम महाभारत के जमाने में भी प्रचलित था। एक समय जब पांडव लोग वनवास में थे तब वीर अर्जुन ने पाताल लोक में पहुंच कर वहां के राजा की रूपवती कन्या से विवाह सम्बन्ध स्थापित किया और उन के उस अलूपी नाम की राज कन्या से, एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ। उसके बाद वीर अर्जुन अपना कार्य पूर्ण कर चुकने पर, अपने भाई और रानी द्रोपदी के पास चले गये। उनकी स्त्री अलूपी रानी उनके दुख

से दुखी होकर, अपने पुत्र को ही आधार मानकर बच्चे का लालन पालन कर, उसको शिक्षित करके अस्त्र शस्त्र विद्या सिखा कर, परिपूर्ण बना दिया। और उसके नाना मामा उसे वीर बब्रावाहन कहकर, दुलार किया करते थे। जब वीर बब्रावाहन समझदार हो गया तब राज काज में अपनी माता का भी हाथ बंटाने लगा। उधर जब सारे कौरवों के मारे जाने पर, राजा युधिष्ठिर राजा बने, तब उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के परामर्श से, राजसूय यज्ञ का घोड़ा, दिगविजय हेतु, देश विदेशों को रवाना किया और बहुत सी सेना के साथ वीर अर्जु न को भेजा। अपने चक्रवर्ती राजा बनने के वास्ते वीर अर्जु न ने देश विदेशों में भ्रमण कर और बहुत से राजाओं से भेंट पूजा लेकर और अपने आधीन करते हुए पाताल लोक जा पहुंचे।

जब रानी अलूपी ने सुना भारत वर्ष से वीर अर्जुन यहां आन पहुंचे हैं। तब रानी अलूपी ने अपने वीर बेटे बब्रावाहन से कहा बेटा वीर अर्जु न तुम्हारे पिता हैं। उनके लिये हीरा जवाहरात की भेंट ले जाकर उनके चरन छूकर उन्हें अपना परिचय प्राप्त कराओ। आज्ञाकारी बेटे ने अपनी माता की आज्ञा

शिरोधार्य कर नजर भेंट ले जाकर वीर अर्जु न के चरण छूकर प्रणाम किया और कहा मैं आपका पुत्र हूं और आप मेरे पिता। मैंने यहां की महारानी अलूपी के उदर से जन्म धारण किया है। मैं आपका बेटा वीर बब्रावाहन हूं। वीर बब्रावाहन की वार्ता सुनकर वीर अर्जु न को अपने बेटे अभिमन्यु की याद आगई। उनकी आंखों से आंसू बहने लगे। अभिमन्यु, जिसने कौरवों के साथ अकेले लड़कर और दुश्मनों के छक्के छुड़ाकर बड़ों बड़ों की नाक में दम कर दिया था। तब कई महावीरों ने उसके निहत्था होजाने पर उसकी हत्या कर दी थी। अर्जु न अति अधीर होकर बब्रा-वाहन से बोले। हट मेरे आगे से वेश्या के बेटे। मेरा वीर बेटा केवल अभिमन्यु था जो असमय में दुश्मनों के छक्के छुड़ाकर वीरगति को प्राप्त हुआ। एक तू है जो नजर भेंट लेकर कायर की तरह हाथ बांधकर वीरता को लजाकर मेरे सामने आनकर खड़ा हो गया। तू अगर मेरा बहादुर बेटा होता तो अपने दुश्मन के सामने धनुष वाण लेकर मुकाबला करता जो तुझे नजर भेंट लेकर अपने आधीन करना चाहता है।

वीर अर्जु न की वार्ता सुनकर वह वीर बब्रावाहन

अपनी कायरता और वीरता को भली प्रकार जान गया और एकदम उल्टा लौटकर अपनी माता को अपने पिता के वाक्यबाणों से परिचित कराया। अपनी चतुरंगी सेना को मिन्टों सैकिन्डों में सजाकर और धौंसा बजवाकर वीर अर्जुन का आगा एकदम आन कर रोक दिया। अपनी माता के अपमान को याद कर करके रण मैदान में वह मार काट की कि अर्जुन के छक्के उसी भांति छूट गए जिस भांति भगवान राम की सेना के छक्के वीर लव और कुश ने छुड़ा दिए थे। उन्होंने तो अन्जनी सुत वीर हनुमान को अपनी माता जी के कहने से छोड भी दिया था। परन्तु हमारे वीर बभ्रावाहन ने अपने पिता अर्जुन का सिर धड़ से जुदा कर दिया। तब उसने अपनी माता के अपमान का बदला लिया था। इस हत्या के हो जाने पर द्वारकाधीश भगवान श्री कृष्ण ने पाताल लोक से अमृत लाकर वीर अर्जुन को जिन्दा किया था!

मेरे कहने का मतलब ये है कि भारत वर्ष में यहां के पुरुषों ने हम नारियों को असमर्थ बना कर रखा हुआ है। यह बात राजा जनक के समय में नहीं थी। जब तक यहां के सास ससुर अपना दृष्टिकोण नहीं बदलेंगे उन्हें अच्छी बहुएं और बेटियां नहीं मिल

सकतीं। प्राचीन काल में लड़कियों का भी लालन पालन लड़कों के ही समान होता था जिसके सबूत में सीता का हाल तो आपने पढ़ ही लिया। बाकियों के नाम सुनो सावित्री, दमयन्ती, द्रोपदी और पार्वती की कथाओं का प्रचार घर घर में होता है। जिन राज परिवारों में इन देवियों ने जन्म लिया था उनमें पुत्र जन्म भी जरूर ही हुए होंगे। परन्तु लड़कियों के लालन पालन में अधिक सावधानी बरती जाने के कारण इनके भाई लोगों को कोई जानता भी नहीं है। इसीलिए इतिहास और ग्रन्थों में इन्हीं की चर्चा का विषय भरा पड़ा है जो लड़कियों को पाठशालाओं में दिन रात पढ़ाया जाता है। दमयन्ती देवी तो इतनी सुन्दर और योग्य लड़की थीं कि उनके स्वयं-वर में देवता लोग भी मनुष्य का वेष धर कर आये थे कि शायद ये सुकमारी हम में से ही किसी देवता को वर ले। सती सावित्री अपने माता पिता को इतनी दुलारी थीं कि उनके माता पिता ने इतनी छूट दे दी थी कि सारे विश्व का भ्रमण कर, अपने पसंद का वर चुन लो। पार्वती और द्रोपदी का लालन पालन कर योग्यता प्राप्त हो जाने पर इनका ब्याह भी धूम-धाम से किया गया था।

अगर हमारे घर कन्या रत्न का जन्म हो तो हम सब भारत वासियों का परम धर्म है कि हम उपरोक्त देवियों जैसा ही लालन पालन कर उन्हें धर्म शिक्षा देकर सुयोग्य बनावें। बासदेव राजा की तरह उपेक्षा करके उन्हें अधर्मी कंस जैसों को न सौंपें। हमारा धर्म ये कहता है पुत्रों के समान ही कन्याओं की भी जन्म तिथि मनावें। उनके दिल को ये अनुभव ही न होने दें कि बेटों के मुकाबले में हमारी हस्ती का मूल्य घटा हुआ है। अगर हम लोग ऐसा कर सकें तो हमारे समाज और घर घर में ढेर की ढेर सीता सावित्री आन विराजेंगी। अपनी कन्या के वास्ते पति चुनते समय सत्यवान, हरिश्चन्द्र, नल, राम, शिव के जैसा आदर्श वाला पति देखना चाहिए। कन्या का विवाह करते समय केवल यही नहीं देखना चाहिए कि उसके सास ससुर का घर धनवानों का घर है। उसे वहां बढ़िया भोजन बढ़िया कपड़े मिलेंगे। खूब सारे जेवर। मिलेंगे परन्तु देखना ये चाहिए कि उसे अपनी जीवन शक्ति को विकसित करने का अवसर भी मिलेगा या नहीं। उसकी शक्ति से देश और समाज को उन्नति करने का अवसर प्राप्त होगा या नहीं।

सच तो ये है पुत्र का जन्म तो एक बार होता है परन्तु कन्या का जन्म दो बार होता है। दूसरे जन्म का मतलब ये है कि उसका विवाह ही उसका दूसरा जन्म है उसके सुख दुख का पाप पुन्य उस अबोध कन्या के माता पिता को ही भोगना पड़ता है। जिस दिन उसका बिवाह होता है तो उसके लिए सारा वातावरण ही एकदम बदल जाता है। यहीं से उसका नारी जीवन शुरू होता है। कन्या के लालन पालन में अच्छे माता पिता के मिलने की बात एक इत्तफाक की ही बात है। फिर भी अच्छे कुल और अच्छे सास ससुर और पति का मिलना भी इत्तफाक की ही बात है। लेकिन अच्छे कुल और अच्छे पति की खोज योग्य व्यक्ति की खोज पर सब कुछ निर्भर है। आजकल हमारे समाज में ऐसे काफी व्यक्ति हैं जो स्त्रियों के साथ ऐसा व्यवहार रखते हैं जैसा पशुओं के संग रखा जाता है। बहुत से प्रान्तों में तो कन्या जन्म इतना अशुभ माना जाता है कि पैदा होते ही लड़की का गला घोंट कर गहरे गड्ढे में दबा दिया जाता है। कन्याओं को बहुत से घरों में बिल्ली कुत्तों जैसा भी आदर नहीं मिलता है।

सो हे मेरी लाड़ली बेटी श्रीयल, तूने उस परदेशी राजकुमार का नाम धाम भी पुछा था ? वो कहां का रहने वाला है ? उसका नाम क्या है और पिता का नाम क्या है ? उसकी जाति क्या है ? उसकी माता किस राजा की बेटी है और माता का क्या नाम है ? या बिना विचारे ही उससे आधा विवाह रचा लिया। मैंने जो तुम्हें इतना सुयोग्य बनाकर तुझ लड़की को लाड़ प्यार कर लड़के से भी बढ़कर, ऊपर लिखी देवियों के इतिहास की शिक्षा दिलवाई वह सब तुमने मिट्टी में मिलादी। मेरे करे धरे पर पानी फेर दिया। मैंने आजतक यही समझा हमारी लाड़ली बेटी श्रीयल हमारी नामवरी व हमारे किए धरे को मिट्टी में नहीं मिलायेगी बल्कि सती सावित्री की तरह धर्म पूर्वक रहकर हमारा नाम अपने पतिव्रत धर्म और समाज सेवा द्वारा रोशन करेगी।

* श्री गोगा पुराण उनतीसवां अध्याय समाप्त *

तीसवाँ अध्याय

राजकुमारी श्रीयल अपनी माता सिरौंजा रानी की उपदेश भरी बात सुनकर अपने दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में मस्तक झुका कर कहने लगी।

हे मेरी प्यारी मातेश्वरी, मैं आपकी दी हुई शिक्षा का एक हरूफ भी नहीं भूली हूं और न अपने जीवन में कभी भूलूंगी। मैं आपको एक दिन दिखा दूंगी कि जिन महान सतियों और देवियों का वृतान्त आपने पीछे किया है। तुम्हारी लाडली श्रीयल किसी भी भांति उनसे पीछे नहीं हैं। रही उस देवता तुल्य राजकुमार के पते की बात सो वह बहुत ही उच्च घराने का राजकुमार देवताओं का अन्शी है। सो उन्होंने मेरे पूछने पर अपना पता इस प्रकार बताया उसे ध्यानपूर्वक सुनो।

मैं महाराजा उम्मरपाल सिंह का पोता, राजा जेवर सिंह बहादुर का पुत्र और मेरा नाम जाहरवीर जोधा है। माता का नाम महारानी बाछल है। मैं और मेरी जननी दोनों गुरु गोरखनाथ महाराज के शिष्य हैं। उन्हीं को प्रेरणा से मैं बागड़ प्रांत की ददरेड़ा नगरी से चलकर, तुम्हारे तन्दुल नगरी में आया हूं। हम लोगों की जाति क्षत्री है और गौत्र चौहान वंश है। वह मुझ अधब्याही को छोड़कर चलता बना। बताओ मेरी मैया मैं अब क्या करूं ? वह तो चलते समय में ये और भी कह गया जब तुम्हारे माता पिता टीका लेकर नाई ब्राह्मण को

भेजेंगे तब हम राजा महाराजाओं को लेकर, तुम्हारे प्रांत में ठाट बाट के संग बारात लेकर आवेंगे और सनातन धर्म के रीति रिवाज के अनुसार गाजे बाजे बजवाकर धूमधाम से, राजी या नाराजी जैसे भी होगा इस आधे ब्याह के साढ़े तीन फेरे फेरकर विवाह को पूरा करेंगे।

राजकुमारी श्रीयल ज्यों ज्यों अपनी माता को आपबीती सुनाती जाती थी। त्यों त्यों रानी सिरौंजा का चेहरा गमगीन होता चला जाता था। उसकी छाती सुन सुनकर छलनी हो रही थी। आखिरी वार्ता सुनकर तो एकदम सारे शरीर में कंपकंपी होनी शुरू हो गई। उनका सिर चक्कर खाने लगा। वह अपनी छाती में मुक्का मारकर अधीर खोकर बोली। बेटी श्रीयल तुमने तो अपने माता पिता की जड़ से ही नाक सफा करवा डाली। तुमने अपने माता पिता और कुल मर्यादा का कतई ख्याल नहीं किया। तुमने अपने पिता की इज्जत को एक खिलवाड़ समझ लिया। हमें किसी के सामने गरदन ऊंची कर चलने के काबिल भी नहीं छोड़ा। इस प्रकार की हरकत तो नीच से नीच खानदान के व्यक्ति भी करते कांप उठते हैं। तेरे इन कुलच्छनों को जो भी

सुनेगा, वोही दांतों में उंगली देकर थू थू करेगा। बेटी श्रीयल तूने तो बादल ही फाड़ डाले। इतनी भी गुन्जाइश नहीं छोड़ी, कोई उन्हें सी भी ले। ऐसा करते समय तो कुकर्मी भी भय मानते हैं।

तूने ये भी न सोचा, मैं राजा सिंधा सिंह की कुंवारी कन्या एक परदेशी युवक से, बिना जाने पहचाने, अपनी सखी सहेलियों की गैर मौजूदगी में, बिना अपने माता पिता की इच्छा के ब्याह रचा कर क्या अंधेरगर्दी कर रही हूं। तेरे कुकर्मों की चर्चा कभी की, गली-गली कूंचे-कूंचे और घर घर में फैल गई होगी। बटी श्रीयल तूने तो महाराज मनु का विधान हो पलटकर धर दिया और सन्तों महन्तों के बताये नियमों को ही उलट डाला। तेरी जैसी कुलतारा बेटी से मैं बांझ ही भली थी। तेरे इन लच्छनों को देख धरती माता किस प्रकार टिकी हुई है। वह फट क्यों नहीं पड़ती, आसमान ढह क्यों नहीं जाता, मैंने रात दिन सन्त महन्तों की सेवा और दान पुन्न द्वारा, परम योगी जालन्धर नाथ जी की कृपा के वरदान द्वारा तेरा जन्म नौ महीने तकलीफ उठाकर, बड़ी ही मुश्किल से हुआ था। अगर मैं तुझे जन्मते ही गला घोटकर मार डालती तो मुझे यह घड़ी देखने को

नहीं मिलती। अब ये तेरे बबूल के कांटे किस प्रकार समेटने में आवेंगे।

अपनी माता रानी सिरौंजा की बार्ता सुन सुन कर, राजकुमारी श्रीयल अधीर हो, धीरज खोकर बोली। जन्मदात्री मां हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और होते हैं, उसी प्रकार की आपकी बातें हैं। मैंने कोई अधर्म का कार्य नहीं किया है। न आपके कहे अनुसार किसी भी देवी देवता का मस्तक नीचा किया है। जिस प्रकार आजाद होकर सती सावित्री ने अपने गरीब पति सत्यवान को अपनी मनसे पसन्द कर, नारद मुनि के कहने से भी ब्याह सम्बंध नहीं तोड़ा था चाहे उसकी एकसाल की ही उम्र थी। उसने अपने सतपन पर रहकर ही यमराज के छक्के छुड़ाकर उनसे सब कुछ पाया था। उस जमाने में उसकी मनमानी करने पर उससे उसके माता पिता न नाराज हुये और न ही सास ससुर। वह अपने व्रत नियमों तथा कर्तव्यों द्वारा सबकी दुलारी पहले से भी अधिक बन गई थी। उसके माता पिता ने उसकी मन मानी का बुरा नहीं माना।

आपकी बेटी ने तो मनमानी की भी नहीं है। जो-जो घटनायें नौलखे बाग में मेरे साथ घटीं हैं। न

मालूम प्रभु ने उन्हें मेरे लिए अच्छा समझा है या बुरा। उसकी माया में कोई कुछ नहीं कर सकता। मैंने देव दुर्लभ नीले घोड़ या उसके सवार को न्यौता भेजकर तो अपने यहां बुलाया नहीं था। अगर मैं न्यौता भेजकर बुलाती तब आपको मुझे कुल कलंकनी कहने का पूर्ण अधिकार था। ईश्वर की लीला में तो मेरा आपका कोई चारा चल ही नहीं सकता। अगर विधाता ने मेरी किस्मत में ये ही वर लिख दिया है तो मैं और आप या पिताजी और उनकी सैना के किए भी कोई उपाय नहीं बन पायेगा। रही मेरे जन्मते ही मेरा गला घोटने की बात। सो हे माता जी! आपका हाथ अब कौन पकड़ रहा है। मेरा गला आपको अब भी घोटने का पूर्ण अधिकार है। अगर आप मेरा गला घोटकर मुझे मार डालो तब तो कोई चिन्ता रहेगी ही नहीं। जब बांस ही नही रहेगा तो बांसरी बजेगी ही किस तरह।

आपकी सतवन्ती श्रीयल बेटी ने कुल मर्यादा विरुद्ध कोई गलत कार्य न अब किया है और नाहीं आगे करेगी। मैं आपको एक दिन दिखा दूंगी कि आपकी लाड़ली बेटी किसी भी सती सावित्री देवी से पीछे नहीं है। मैं अपने कर्तव्य पालन करने में अपना

शिक्षा दीक्षा को लजाऊंगी नहीं, बल्कि अपने देश और समाज को ऊंचा उठाकर अपने माता पिता के नाम को रोशन करूंगी। आप व्यर्थ अपना धीरज खोकर अधीर हो रही हो। ये विवाह संस्कार पूर्व जन्म के संस्कारों द्वारा ही होते हैं जिसे दुनियां के सभी स्त्री पुरुष जानते हैं। ये कोई मनमानी घटना नहीं है। भाग्यवश ही इस प्रकार की अनहोनी घटनायें घट जाया करती हैं। मैं दुबारा फिर कहती हूं, अगर ये ईश्वरी लीला आपको पसन्द नहीं हैं तो उसके विरुद्ध उपाय करके ही क्यों न देख लो। समय बतायेगा ईश्वर लीला किसके विरुद्ध है और किसके अनुकूल।

राजकुमारी श्रीयल की बातें सुनकर, उसकी माता रानी सिरौंजा अधीर हो बोली। बेटी श्रीयल मैं बिना खता तुझे लानत मलामत देकर अपना धीरज खो बैठी और बोलते बोलते मेरा कन्ठ सूख गया है। मुझे थोड़ा ठन्डा पानी मंगवा कर पिलवा। तब राजकुमारी श्रीयल ने तुरन्त ही बांदी रुकमदे द्वारा सोने के गडुये में ठन्डा नीर मंगवाकर अपनी माता रानी सिरौंजा को अपने हाथ से पिलाया। जब उनका गला ठन्डा हो गया और कन्ठ हरा हुआ तब

बोलीं। ऐ लाड़ो बेटी श्रीयल, तेरे जन्म लेने से काफी दिन पहले की घटना है। जब मैं और तुम्हारे पिताजी ने सन्तानहीन होने के कारण एक सन्त के कहने से गुरु गोरखनाथ महाराज की जोत सुबह शाम दोनों वक्त बालनी शुरू कर दी। जब मुझे जोत बालते एक मुद्दत हो गई तब एक दिन अपने चौदह सौ चेलों के संग इस तन्दुल नगरी में वह पधारे। हम दोनों पति पत्नी ने मिलकर तन मन धन से उनकी खूब सेवा सुश्रूषा की और उनकी आज्ञा अनुसार जोर शोर से भन्डारा कर उनके चौदह सौ शिष्यों की ज्यौनार कर अपने दोनों हाथ जोड़कर मनमानी दान दक्षिणा उन्हें प्रदान की।

हम लोगों की सेवा सुश्रूषा से सन्तुष्ट होकर वे बोले। हे राजन, मैं बारह वर्ष से अपने गुरु मछेन्द्र नाथ जी महाराज की खोज में लगा हुआ हूं। बारह वर्ष से मेरी भेंट वार्ता नहीं हो पाई है। न मालुम वो कहां छिपकर बैठे हैं। इसलिए मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ति करने में असमर्थ हूं। क्योंकि कोई भी शुभ कार्य बिना क्रिया किये पूरा नही उतर सकता। इसलिये मेरा कहा मान कर गुरु जालन्धर नाथ जी महाराज की सेवा सुश्रूषा करो। वह मेरे गुरु मछेन्द्र नाथ जी के

गुरु भाई हैं और योग विद्या के चमत्कार के पूर्ण ज्ञानी ध्यानी हैं। उनकी सेवा सुश्रूषा करके वरदान प्राप्त करने से स्वर्ग की अपसरा जैसी चन्द्रमा के मुख के समान एक मृगनैनी कन्या रत्न का जन्म होगा। जब वह ब्याह लायक सयानी हो जाय तो मेरे शिष्य जाहर वीर जोधा से जो मेरी शिष्या महारानी बाछल के गर्भ से जन्म धारण करेगा, ब्याह कर देना। मैं अभी अभी महारानी बाछल को पुत्र होने का वरदान देकर ही तुम्हारे यहां आया हूं।

इस प्रकार की वार्ता करके गुरु गोरख नाथ जी महाराज तो अपने गुरू की खोज में त्रिया राज्य की ओर निकल गए और योगी जालन्धर नाथ जी महाराज की जोत सुबह शाम बाल कर दोनों दम्पति उनकी आराधना करने लगे तो वह एक रोज अनायास ही, अपने चेले कनीफा नाथ को संग लेकर हमारे यहां पधारे और तुम्हारे पिताजी से बोले। हे राजन! मैं यहां आ तो और पहले ही जाता परन्तु क्या करूं गौड़ बंगाले प्रान्त के हेलापट्टन नगर के धूर्त राजा गोपीचन्द ने मुझे समाधि पर से उठवाकर एक गहरे गड्ढे में बन्द कर दिया था। मेरा प्रमुख शिष्य कानिफा नाथ उस गोपी चन्द राजा की कैद से छुड़ा

कर मुझे आपके यहाँ लेकर आया है। सो हे बेटी श्रीयल हम दोनों प्राणियों ने मिलकर तन मन धन से उनकी खूब सेवा सुश्रूषा की। तब उन्होंने गुरु गोरखनाथ की तरह बहाना न बनाकर, आशीर्वाद दे प्रसन्न हो कहा। हे राजन, तुम्हारे यहां दूज के चंद्रमा के समान मुख वाली अपसराओं के समान कन्या रत्न का जन्म होगा। तभी हम जमात के संग आनकर कन्या के जन्मोत्सव का भंडारा जीमेंगे।

सो लाड़ो, उनके आशीर्वाद से नौ दस मास पर्यन्त तुमने जन्म लिया। तब हमने पुरोहित जी को बुलाकर, उनसे तुम्हारे नामकरण का महूर्त सजवाया कि किस शुभ दिन कन्या का नामकरण संस्कार होगा। उन्होंने बुधवार का दिन निश्चित करके तुम्हारा नाम संस्कार करवाया। उसी दिन ठीक समय पर योगी गुरु जालन्धर नाथ ने अपने प्रमुख चेले कनिफानाथ तथा चेली चेलों की जमात लाकर बड़ी ही धूमधाम के संग ढोल मंजीरे और मृदंग बजाते हुए इस तन्दुल नगर उर्फ धूपा नगरी में प्रवेश किया। हम दोनों दम्पतियों ने भी तुम्हारा जन्मोत्सव बड़ी ही धूमधाम से मनाया। जमात के जीम लेने के पर मनमानी दक्षिणा दे सबको सन्तुष्ट किया। तब गुरु जालन्धर नाथ ने हम दोनों को आदेश दिया कि कि सौभाग्यशाली

कन्या रत्न का विवाह बागड़ प्रांत के ददरेड़ा नगर निवासी महाराज जेवरसिंह बलवान के सुत जाहरवीर जोधा के संग कर देना। वह देवताओं का अन्शी है। गुरु गोरखनाथ की परसादी गूगल खाने से महारानी बाछल के गर्भ से लगभग अबसे ढाई साल पहले, उत्पन्न हुआ है। जो तुम्हारी बेटी के समान चन्द्रमुख वाला उज्ज्वल वर्ण का वीर धीर योधा है।

सो हे बेटी श्रीयल योगीराज के वचन सुनकर तुम्हारे पिताजी गुस्से में भरकर बहुत लाल पीले हुए और हाथ जोड़कर बोले। गुरुदेव कन्या चाहे मरे चाहे जिये, परन्तु मैं अपनी सुता को बागड़ प्रांत के झगड़ालू चौहानों में हरगिज नहीं ब्याहऊंगा। तुम्हारे पिता की इस बात को सुनकर गुरु जालन्धर नाथ योगी जी के प्रमुख चेले कानिफानाथ ने राजा के सुर में सुर में मिलाकर कहा, ठीक बात है राजन बागड़ देश के उजड्ड लोगों में बेटी ब्याहने की मेरी भी मन्शा नहीं है। इस पर योगी जालन्धर नाथ बोले तो क्या मेरा वचन मिथ्या हो जावेगा। बेटा कनिफानाथ मेरा वचन पूर्ण ही होकर रहेगा। बैंमाता का लिखा मिटा नहीं करता। उनके लिखे को मिटाने की शक्ति ब्रह्मा में भी नहीं है। इतनी बात सुन कानिफा नाथ

बोले, गुरु जी आप तो नाराज हो गये। मैंने आपको नाराज करने के लिए कुछ थोड़े हीं कहा था। गोरख नाथ मुझे कई दफा अपमानित कर चुका है। क्या मैं उससे किसी बात में कम हूं। मैंने तो राजा सिंधासिंह जी से जो कहा है अपने मन की बेचैनी के कारण ही कहा है। परन्तु इन बखेड़ों में पड़ना मेरी गलती है चाहे किसी का ब्याह होय चाहे गौना, हमें इन झंझटों से क्या लेना और क्या देना। हमारी बला से कोई चाहे मरे, चाहे कोई जिये। सन्त तो दूध बतासे ही पियें। हम लोगों का माथा पच्ची करना व्यर्थ है।

अपने शिष्य की बात सुनकर योगेश्वर बोले बेटा कानिफानाथ, तुम्हारा स्वभाव बहुत ही उग्र और गरम है। मैं गोरखनाथ को जितना जानता हूं, तुम उतना अभी नहीं जानते। योगी गोरखनाथ अनेकानेक विद्याओं का परम ज्ञानी और सच्चा ईश्वर भक्त है। सबसे बड़ी बात यह है कि वह बहुत ही नम्र स्वभाव का पूर्ण सन्त है। वह विद्या बुद्धि का जितना तेज है उतना गुमान रत्ती भर भी नहीं करता है। वह बड़ा दयालु भी है। वह अपने गुरु मछेन्द्र नाथ योगी के समान ही मुझे अपना शीश झुका कर मेरी इज्जत

करता है और उन्हीं के समान मुझे भी अपना गुरु समझता है। तुम भी उससे द्वेष करना छोड़ कर, उससे सेवा सत्कार करना सीखो। अपना गुरु भाई समझकर चार बातें सीखो और सिखाओ। आपस के मेल के बराबर दुनियां में दूसरी कोई शक्ति नहीं है। वह अपने प्रमुख चेले कानिफानाथ को समझा बुझाकर अन्तरध्यान हो गये। तबसे अब तक उनके दर्शन नसीब नहीं हुए हैं। जिन गुरु देव की दया से अब तक हमारे बिछड़े सभी काम सुधर जाया करते हैं।

मैं आज ही रात्रि के समय तुम्हारे पिता को समझाऊंगी। अब तुम अनसन पाटी त्यागकर, नहा धोकर कुछ खा पी लो। तुम्हारा रूप कैसा बिगड़ रहा है सो अपने बाल संभाल मनुष्य की तरह बन जाओ। धीरज खोकर अधीर मत बनो। मुझे पूर्ण विश्वास है गुरु जालन्धरनाथ महाराज, तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूर्ण करेंगे। अपनी बेटी को समझा बुझा निलहा धुलाकर, उसका श्रृंगार बगैरा कर अपने पलंग पर जाकर लेट गई। लेटी लेटी भी अपनी बेटी श्रीयल के बारे में सोच विचार करती हुई थक कर गहरी निद्रा में सो गई। उन्हें स्वप्न अवस्था में

भी अपनी बेटी श्रीयल का ध्यान सताता रहा।

जब शाम के वक्त राजा सिधासिंह राजकाज निबटा कर दरबार से अपने महल में पधारे, तब बांदी रुकमदे ने सोती हुई रानी सिरौंजा को झकझोर कर कच्ची नींद से जगा दिया। रानी सिरौंजा एक दम घबराकर, अपनी दोनों आंखें मलती हुई, पलंग से उठकर खड़ी हो गई। अपने सम्मुख अपने प्राणवल्लभ को खड़ा देखकर गरदन नीची कर सुनहरी कुरसी बिछा दो और धीरज धरकर बोली, मुझे बड़ी भारी निद्रा आ गई थी। आप विराजो मैं आपके वास्ते पान का बीड़ा लगाकर लाती हूं।

* श्री गोगा पुराण तीसवां अध्याय समाप्त *

इकत्तीसवां अध्याय

प्यारे, बन्धुओं राजा सिधासिंह, बड़े दूरंदेशी भूपाल थे। उनका जीवन न्याय करने में ही समाप्त हुआ था। वह दूर से शक्ल देखकर ही अपराधी और निरअपराधी को पल भर में ही पहचान जाते थे। वह उड़ती चिड़िया को भी दूर से भांप लेते थे। जब उनकी रानी सिरौंजा पान का बहाना बना राजा सिधासिंह के सम्मुख से हट गई तभी अपनी पत्नी

के मुख पर उदासी और चिन्ता की रेखायें साफ-साफ दिखाई दे गईं। उनके मन को निश्चय हो गया, आज महारानी किसी गहरे सदमे के कारण, महान दुखी है। थोड़ी देर पीछे जब वो पान का बीड़ा लेकर पधारीं और हंसमुख चेहरा बना कर, अपने करकमलों द्वारा, मधुर मुस्कान बखेरकर अपने प्रीतम के मुख में पान दिया। तब महाराजा सिंधासिंह भी मुस्करा कर बोले। रानी सच बताना आज तुम्हारा चेहरा चमकने की जगह गमगीन क्यों दिखाई दे रहा है। मधुर मुस्कान की जगह चिन्ता की रेखायें साफ दिखाई दे रही हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है। रानी जी जब हमारे परिवार पर योगी जालन्धरनाथ महाराज की दया का हाथ है। तो तुम्हें चिन्ता रूपी डायन के सताने का क्या कारण है। मैं तुम्हारे मुख पर उदासी देखकर बहुत हो हैरान हूं। तुम धीरज धर कर अपने सुस्त होने का कारण अति शीघ्र मुझे बताओ।

अपने प्रीतम के मुख के मधुर बोल सुनकर, रानी सिरौंजा धीरज धर कर अधीर हो बोली। हे प्राणाधार ! मेरे धीरज का बांध टूट गया है। मुख की वाणी सूख गई है। मुझे कुछ भी दिखाई नहीं

देता है। इतना कह राजा सिन्धा सिंह के सीने पर अपना सिर रखकर सिसक सिसक कर रो पड़ीं। अपनी महारानी की हालत देखकर, राजा सिन्धा सिंह के नैन भी गीले हो गए। वो धीरज खोकर अधीर हो बोले। रानी जी ! आपको अधीर देखकर मेरे भी धीरज का बांध टूट गया है। अपने सीने पर से अपनी महारानी सिरौंजा का सिर उठाकर बालों को अपने कर कमलों द्वारा सहलाकर अपने को संभालकर और उदास मुख से बोले। रानी ! जब तक अपनी विपत कहानी अपने मुख से बयान नहीं करोगी तब तक वह किस प्रकार जानी जा सकती है। तुम्हारा दुख किस प्रकार दूर किया जा सकता है।

अपने प्राण बल्लभ के मुख से मोहब्बत भरी वार्ता सुन, रानी सिरौंजा का रोम रोम खुशी से भर गया और वह फूलकर कुप्पा बन गई। वह मन ही मन प्रसन्न हो राजा सिंधा सिंह ने अपनी दोनों आंखें पौंछ हंसमुख चेहरा बना हाथ जोड़ कर बोली। हे प्राणनाथ, मेरे हृदयेश्वर ! माता पिता को सब से अधिक दुख अपनी बिन ब्याही सुता के कारण ही उठाना पड़ता है। हमारी राजकुमारी श्रीयल बड़ी

होकर अब जवान हो गई है। जब राज काज से आपको अवकाश मिले तभी तो घर द्वार का ध्यान धरा जावे। मेरी राय में आप नाई ब्राह्मण को भेजकर अपनी बेटी श्रीयल के अनुरूप अच्छा घर वर देख कर किसी बड़े राजा के राजकुमार को टीका भिजवाने की कृपा करें। लड़की तो पराया धन है, हम लोग इस पराए धन की कब तक संभार सुधार करेंगे। इसे आपको किसी दिन तो हार झक मारकर पराए घर तो भेजना ही पड़ेगा। जगत की रीत करनी कितनी जरूरी होती है। इसे आपने अब तक क्यों नहीं सोचा। राजकुमारी श्रीयल की हमउमर सभी सखी सहेलियां अपना ब्याह करवा करवा कर अपनी ससुराल चली गईं। अब जो मौजूद हैं वह सब हमारी राजकुमारी श्रीयल से छोटी ही रह गई हैं।

अपनी महारानी सिरौंजा की गमगीन और दर्द भरी दास्तान सुनकर राजा सिंधा सिंह खूब जोर से खिलखिलाकर हंस पड़े। मुस्करा कर मधुर मुस्कान बिखेर अपनी महारानी के सिर पर हाथ फेर कर बोले। रानी साहिबा मैं तो आपके त्रिया चरित्र के ड्रामे को देखकर इतना अधिक घबरा गया था कि

हमारे राजमहल के ऊपर बादल फट गए या बिजली गिर गई या कोई आसमानी कहर अनगेबी बन कर हमारी महारानी के सिर टूट पड़ा है। मैं हैरान हूं कि राजा सिन्धा सिंह की महारानी होकर ये सब पागलपन का ड्रामा क्यों किया।

तुम्हारी मत किसने मार दी, तुम्हारी अकल पर पत्थर किस प्रकार पड़ गए हैं। श्रीमती जी हमारे कोई दरजन दो दरजन बालक बच्चे तो हैं ही नहीं जो व्यर्थ की चिन्ता करें। सिर्फ अकेली राजकुमारी श्रीयल ही अपने माता पिता की लाड़ली बेटी है। वह हमारे घर का उजाला है। हमारी ढलती उमर में जोगी जालन्धरनाथ की दया द्वारा, उनके उपकार का ये फल है। सच जानो मुझे तो अपनी आंखों से ओझल हो जाने पर अपने प्राण निकलते नजर आते हैं। तुम कैसी मां हो जो पत्थर की छाती करके उसे घर से बाहर भेजने पर तुली हो। अब तुम हर प्रकार की चिन्ता फिकर अपने दिल से दूर कर दो। मैं अति शीघ्र अपनी बेटी के जोड़े का दामाद तलाश करवा कर उसके संग अपनी राजकुमारी श्रीयल का ब्याह रचाकर उसे घर जमाई बनाकर अपने घर रखूंगा। मुझे भी वह आनन्द सुख भोगकर प्रसन्न

मन से राजकाज में सहयोग देगा। हम लोगों के स्वर्ग गमन के पश्चात इतने बड़े राज का राजेश्वर कहलायेगा।

राजा सिन्धा सिंह को मन के लड्डू फोड़ता देख कर, रानी सिरौंजा राजा सिन्धा सिंह की वार्ता सुन कर बोली। ऐ मेरे सिर के ताज, ऐ मेरे प्राणेश्वर! आपने मेरी सारी बातों को थोथी समझकर जरा भी ध्यान नहीं दिया। मेरी बातों को ड्रामा और मेरा त्रियाचरित्र कहकर मुझ अबला को बेवकूफ समझकर, कतई ध्यान नहीं दिया। बहुत सी बातें इस दुनियां में ऐसी हो जाती हैं जिनका भेद नारियां अपने पुरुषों को न बताकर अपने मन में ही रख छिपाने में ही अपने परिवार का भला समझती हैं। मैं आपको घर का सारा भेद बता कर दुखी करना नहीं चाहती हूं। अगर आपका मुझसे रत्ती भर भी प्यार है, तो तुरन्त ही नाई ब्राह्मण को बुलाकर अपनी बेटी राजकुमारी श्रीयल के ब्याह का टीका आज ही भेज दो जिससे वह लोग देश विदेश में घूम घाम कर राजदुलारी के अनुरूप गुणी वर की तलाश करें और घर वर अपने अनुकूल देखकर टीका चढ़ा आवें।

महाराजा सिन्धा सिंह ने अपनी हृदयेश्वरी रानी सिरौंजा की वार्ता खूब ध्यान पूर्वक सुनी। खूब सोच विचार करके उसके दुखी दिल को और ज्यादा दुखी करना मुनासिब नहीं समझा। रात भर इसी उलझन में उलझ कर भली प्रकार हमेशा की तरह सुख नींद सो नहीं पाए। सुबह तड़के ही ब्रह्म मुहूर्त में अपनी शैया त्याग, नित्य कर्म से अति शीघ्र फारिग हो परम पिता परमात्मा का स्मरण कर गुरु जालंधर नाथ योगी को मनाया। उसके पश्चात अपनी प्रमुख बांदी रुकमदे को हुक्म दे, नाई पुरोहित को बुलवाने के वास्ते रवाना किया। अपने राज राजेश्वर की आज्ञा मान बांदी रुकमदे अपना सिंगार पटार कर नैंनों में सुरमा सार, अपने बाल संवार, माथे पर चमकदार बिन्दी लगा, छम छम करती हुई नाई पुरोहित को बुलाने उनके घरों पर जा धमकी।

बांदी रुकमदे की पायल की झंकार सुनकर नाई पुरोहित दोनों ही सुबह सुबह उसके आने का कारण न समझ सके। सोचने लगे ये बिल्ली के समान आंख वाली चूहों की मौसी क्या खुशखबरी लेकर यहां आई है। दासी रुकमदे का स्वरूप देखकर नाई बोला, हे श्रीमती रुकमदे देवी, पुरोहित जी पूछ रहे हैं, सुबह

सुबह के सुहावने मौसम में आप क्या सन्देशा लेकर आई हो । आप खड़ी क्यों हैं । यहां मूढ़े पर विराज कर अपने पधारने का उद्देश्य बताओ । बांदी रुकमदे नाई की मधुर वार्ता सुनकर अपने दोनों दीदे मटका कर, रस भरी बाणी से बोली, ऐ विरातिया जी, मैं जब कभी भी पुरोहित जी को बुलाने आती हूं तब आप लोगों के पांचों पोरवे उंगली के घी में भिगवाने के उद्देश्य से ही यहां आती हूं । कृपा कर आप दोनों सज्जन मेरे साथ चलने की दया करें । राजा सिन्धासिंह राजेश्वर ने आपको बुला लाने की आज्ञा देकर आपके पास भेजा है । सो आप अति शीघ्र मेरे साथ चलें और पुरोहित जी से कह दें, अपना पोथी पत्रा बगल में दबाना न भूलें ।

बांदी रुकमदे की वार्ता सुन, नाई ब्राह्मण फूल कर कुप्पा हो गये । उन्हें अपने दिन फिरते दिखाई दिये । पंडित जी ने चटपट नये कपड़े पहन कर और अपना पोथी पत्रा बगल में दबाकर रामनामी दुपट्टा ओड़ प्रभू का गुण गाते हुए, बांदी रुकमदे के साथ चल पड़े । आगे आगे बांदी अपने पैरों की पायल बजाती हुई छमछम करती हुई चल रही थी और पीछे पीछे राधाकृष्ण की जै करते हुए नाई पुरोहित ।

पांच सात मिनट में ही तीनों राजमहल में जा पहुंचे । उन्हें ये भी पता न पड़ा हम इतनी जल्दी किस प्रकार आ गये । बांदी तो रानी सिरौंजा का सिंगार करने जनाने महल में बढ़ गई । नाई ने महाराजा सिंधासिंह को अपना मस्तक उनके चरणों में झुका नमस्कार किया । राजा सिंधासिंह ने पुरोहित जी को अपने सामने खड़ा देखकर, उनके चरण छूकर उन्हें आसन पर अपने पास बिठला लिया । नाई को मूंढे पर बैठने का आदेश दिया ।

नाई के मूंढे पर बैठ जाने के उपरांत राजा सिंधासिंह पुरोहित जी से हाथ जोडकर बोले, गुरुदेव अब आपकी राजकुमारी श्रीयल विवाह योग्य हो गई है । इसलिए अपना पोथी पत्रा विचार पूर्वक देख, लग्न महुर्त छांट, कन्या की जन्म कुण्डली पर विचार करो । सही महुर्त निकाल आप दोनों जने टीके का सामान लेकर शुभ घड़ी शुभ पल में यहां से गमन करो । देश विदेश में घूम घूमकर किसी वीर बहादुर गुणवान राजा के रूपवान होनहार राजकुमार को, राजकुमारी श्रीयल का टीका चढ़ा आओ । जिससे हम लोग अपनी कन्या के कन्यादान से निश्चित हों । जिसका ये धन है उसको उसकी थाथी सौंप कर सुख

की नींद, दोनों पैर फैलाकर सोया करें।

सज्जनों, महाराजा सिधासिंह की वार्ता सुनकर नाई और राजपंडित मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए। दोनों के ही पेट में लड्डू फूटने लगे। उन्हे अपने धनवान बनने में अब ज्यादा विलम्ब नजर नहीं आ रहा था। पुरोहित जी ने चटपट अपना पोथी पत्रा खोला और राजकुमारी श्रीयल की जन्म कुण्डली पर विचार करने लगे। कभी घड़ी पल पर विचार करें, कभी ब्रह्मा विष्णु और भोले बाबा को मनावें और कभी ग्रह गोचर देखें। कभी विघन हरण मंगल करण गणेश जी को सुमरें और अपने प्यारे पंचांग रोजी रिजक देने वाले को, भगवान समझ बारबार उलट पुलट करें।

इधर जब महल में ढोलक बजने की भनक नगर निवासी स्त्री पुरुषों के कान में पड़ी, तो सज सजकर महल में आनकर, कुरसी मूढ़ों पर विराजमान होने लगे। जो अब तक अपने आप नहीं आ पाये थे उन्हें बुला लाने को बांदी रुकमदे और उसकी दूसरी साथिन दासियों को आज्ञा महारानी सिरौंजा ने दी। वह घर घर द्वार द्वार पहुंच कर, अपनी महारानी की आज्ञा सबको सुनाने लगी। माता बहनें और बहू बेटियां

सब सज सजकर अपना सिंगार पटार बना, अति शीघ्र राजमहल में चलो। राजकुमारी श्रीयल की सगाई के टीके का सामान, नाई ब्राह्मण अभी अभी लेकर जा रहे हैं।

सारे शहर में खुशी की लहर दौड़ गई। नगर की सकल सुकुमरियां, चटपट अपना सिंगार पटार करने में, मतवालों के समान शीघ्रता करने लगीं। किसी का बालक सिंदूर की डिबिया बिखेर रहा है, तो किसी का शीशा कंघी ही ले भागा। कोई कन्या चुपके से कंघी उठा अपने बालों को संभारती है तो किसी ने अपनी माता की नई साड़ी पर तेल की शीशी ही उड़ेल दी। कोई अपने बालक को धमाधम पीट रही है तो कोई गालियों की बौछार ही कर रही है। एक अपने पति से कहती है कि तुम जरा ध्यान नहीं रख सकते। मैं जरा सज संभर कर राजकुमारी श्रीयल की सगाई में जाने की तैयारी में लगी हूं। तुम जरा बालकों की रखवाली कर लेते। जरा आंखें खोलकर देखो। मेरे पीहर की नई साड़ी, तुम्हारी लाड़ली बेटी ने तेल में तरवतर कर रख दी।

दूसरी कहती है चटपट जरा शीशा ही उठा दो, तुम्हारा तो ये भी सहारा नहीं जो जरा ये भी बता

दो मैं बुरी तो नहीं लग रही हूं। मेरे बाल ठीक प्रकार से संभरे सुधरे हैं या नहीं। इसी प्रकार सारी नगरी में घर घर कयामत बरपा हो रही थी। नगर भर की सकल सुकुमारी सुन्दरियां राजकुमारी श्रीयल की सगाई में, बन ठन कर पहुंच रही थीं। किसी की उमर बारह साल की थी तो किसी की अठारह साल की और अधिकतर बीस पच्चीस की सुन्दर सुकुमारियां किसी का तो ब्याह भी नहीं हुआ था और किसी का गौना भी हो चुका था। किसी की गोद में बालक था, तो किसी की गोद खाली थी। बौरानी हुई सी राजमहल को लपकी झपकी चली आ रही थीं। ये ही पुरुषों की हालत थी। एक बच्चे को गोदी में लिए दूसरे की उंगली पकड़े नये नये कपड़े पहनकर, अपनी प्रियतमा के पीछे पीछे चल रहे थे। जिनके ब्याह नहीं हुए थे, वह मन मसोसकर दोनों हाथ मलते जा रहे थे।

इधर राजा सिंधासिंह ने जब देखा नगर निवासी सेठ साहूकार और बूढ़ी मातायें बहनें, अपने सकल परिवार सहित महल के आंगन में, यथा स्थान आन कर विराजमान हो गए हैं और ढोलक मन्जीरों की आवाज कानों में अधिक जोर शोर से पड़ने लगी

है और जनाने महल में जुड़ी रानी सिरोंजा की सुन्दर सहेलियों और राजकुमारी श्रीयल की सखियों की मधुर धुनी कानों के परदे फाड़ने लगी और ंपी के फुव्वारे फूटने लगे। सारा राजमहल और महल का आंगन ठसाठस भर गया है। मंगलगान सुन सुनकर जी भर गया तब पुरोहित जी ने नाई की ओर देखकर राजा सिंधासिंह और उसके परिवार के भाई बन्धुओं से कहा।

हे श्रीमानो! आज का महूर्त कन्या के लगन का सबसे बढ़िया दिन है। कारण आज बुधवार का बड़ा ही शुभ दिन है। अपने पुरोहित जी की वार्ता सुन कर राजा सिन्धासिंह ने देर करनी मुनासिब नहीं समझी। टीके लगन का सकल सामान चटपट मिन्टों सेकिन्डों में अपने दास दासियों द्वारा मंगवा कर पुरोहित जी के सामने ढेर करवा दिया। जिसे नाई ने संभाल कर भली भांति सजा सजा कर धर दिया।

अपने परिवार के बड़े बूढ़े नर नारियों की सलाह से राजा रानी मिल कर लगन भेजने की तैयारी में लग गये। राजसी ठाट बाट से राजकुमारी श्रीयल के टीके का सामान और बहुमूल्य पदार्थों का

ढेर लग गया। एक कंचन के कीमती थाल में मूंगा मोती मणियों को रख कर, दूसरे में हीरे पन्नों पुखराजों और कन्या के देने लायक सकल आभूषणों को धरवा दिया। तीसरे में राजा रानियों के पहनने लायक पोशाकें, शाल दुशाले, कीमती साड़ियां सज गईं। चौथे में रोली मेंहदी, पान सुपारी, गोला नारियल और कलावे धरवा दिए गए। मोहरों की खुर्जी भरवाकर पुरोहितजी के हवाले कर दी गई। जिसे पुरोहित जी ने नाई को सौंप दी और कहा तुम ऐसे कामों में अधिक होशियार आदमी हो संभालकर इसे अपने पास धर लो। इतने में नाई ने मोहर अशर्फियों की थैली संगवाकर धरी उतने में ही देशी घी की एक से एक बढ़िया मिठाई, खूशबूदार फलों के भरे टोकड़े आ गए। जिन पर सोने चांदी के वर्क चिपके हुए बहार दे रहे थे। ये सब काम पूर्ण हो जाने के पश्चात राजा सिन्धा सिंह अपने पुरोहित जी से अपने दोनों हाथ जोड़कर बोले।

गुरू महाराज, राजकुमारी श्रीयल आप ही की बेटी है। किसी अच्छे राजा महाराजा को देख कर उसके वीर बहादुर सभ्य राजकुमार को टीका चढ़ाना और राजकुमार का स्वरूप भी राजकुमारी

श्रीयल के समान होना बहुत जरूरी है। लड़के वालों से उनकी सुविधा अनुसार विवाह की तिथि भी निश्चित करना न भूल जाना। जिससे शुभ घड़ी शुभ महूर्त में कन्या के हाथ पीले करके सुख की नींद सोवें। लड़का पक्ष वालों से ये भी कहना न भूल जाना हमारे कोई और लड़का लड़की नहीं है। ये ही इकलौती लाड़ली बेटी है। इसलिए हमारे उपरान्त हमारे इस बड़े साम्राज्य का सर्वेसर्वा महाराज भी आपका कुमार ही बनेगा। राजा सिन्धासिंह और उनकी रानी सिरौंजा ने पंडित जी के खूब निहोरे करे और अपने नाई को खूब समझा बुझाकर और राह खर्च को एक अलहदा से मोहरों की खुर्जी देकर उन्हें अपने महलों से विदा किया।

प्यारे बंन्धुओं ! जब राजा सिन्धासिंह से आज्ञा ले उन्हें नमस्कार कर नाई ब्राह्मण चलने को हुए। तब मौका देख रानी सिरौंजा ने अपनी प्रमुख बांदी को भेज कर पुरोहित जी को अपने प्राइवेट कमरे में बुलवाकर हाथ जोड़ बोली। गुरु देव, मेरी आपसे एक प्राथंना है। अगर आपने मेरे कहे अनुसार मेरा काम भली प्रकार पूरा कर दिया तो तुम्हें इतनी दान दक्षिणा दूंगी जो तुम्हारी सात पुश्तों को बैठे खाने

पर भी समाप्त न होगी । आप पुन्न के भागी बनोगे, दूसरे नफे में रहोगे । मैं ये भेद आपका नाई को नहीं बताऊंगी और आप मेरे प्रीतम को न बतावें । भेद खुल जाने पर हम दोनों ही आफत में फंस जावेंगे । इसीलिए मैंने बांदी मूंगादे को भेजकर, आपको अलग कमरे में बुलवाया है । ये बातें किसी के सामने कहने की नहीं हैं । मेरा कहना मानो तुम्हें देश विदेश में धक्के खा कर फिरने की कोई आवश्यकता नहीं है । मेरे गुरु जालन्धरनाथ योगी मेरी कन्या के अनुरूप वर मुझेको बता गए हैं । उन्होंने ये भी कहा है कोई भी मेरे बताये हुए राजकुमार के अलावा सम्बन्ध नहीं कर सकता है । उल्टी धारणा बनाकर दुखी चाहे कोई भले ही होता फिरे । ये जोड़ा बैमाता का बनाया जन्म जन्मान्तर का नाता है । इसे बदलने की ताकत ब्रह्मा में भी नहीं है ।

इसलिए आप अपने नाई को भी न बताकर सीधे समुद्र किनारे पहुंच जाओ । समुद्र पार करके भारत वर्ष के बागड़ प्रान्त में पहुंच जाओ ।बागड़ प्रान्त के पास ही ददरेड़ा नगर है जहां महाराजा उम्मर पाल सिंह का राज्य है। जिनके बेटे का नाम राजा जेवर सिंह बहादुर है । सो तुम राजा

जेवर सिंह बहादुर के पुत्र और महाराजा उम्मर पाल सिंह के पौत्र जाहर बीर जोधा को ये तिलक चढ़ा आओ । ये राजकुमार गोगावीर के नाम से वहां खूब सरनाम है । गुरु गोरखनाथ जी महाराज के शिष्य हैं । रानी बाछल ने गुरु गोरखनाथ जी की तपस्या करके, उन की खूब सेवा सुश्रूषा कर, वरदान प्राप्त कर गोगा जी को अपने उदर से जन्म दिया है । आप तुरन्त ही समुद्र किनारे पहुंच जाओ । वहां आप लोगों के पहुंच जाने पर गुरु जालन्धर नाथ योगी की माया की नाव समुद्र घाट पर तैयार मिलेगी । जो तुम्हें समुद्र पार पहुंचा कर सीधा रास्ता बताकर गुम हो जाएगी और जब अपना काम करके बापिस लौटोगे तब भी तुम्हें उसी घाट पर जहां तुम्हें उतारा जायेगा नाव तैयार मिल जायेगी । परन्तु घाट न भूल जाना नहीं तो ब्यर्थ ही परेशान होते फिरोगे ।

रानी सिरौंजा की सकल वार्ता सुनकर पुरोहित जी बोले । महारानी जी, मुझसे मेरे पिताजी कहा करते थे कि हमारे राजा की चौहानों से पुश्तैनी दुश्मनी है । कहीं ऐसा न हो राजा साहब नाराज हो जावें । रानी सिरौंजा बोली पन्डित जी आप चिन्ता न करें वह सब मैं संभाल लूंगी । यह कहकर एक थैली

मोहर अशर्फियों की पंडित के हवाले करदी और कहा ये तुम्हारी पेशगी दक्षिणा है । आप जब काम करके वापिस आओगे तब और दूनी दक्षिणा आपको दूंगी। बेफिक्री से जाओ । कोई आपका बाल भी बांका नहीं कर सकता है । योगी के वचन और वैमाता के लिखे को मेटने की शक्ति किसी में भी नहीं है । पुरोहित जी अपनी मुट्ठी गरम देख कुछ न बोले और मारे खुशी के फूल कर कुप्पा हो गए । उन्होंने अपने मन में विचार किया, घबराने से कोई काम नहीं चलेगा। भगवान सब भली करेंगे। मेरे लिये तो जैसा राजा वैसी रानी । मैं नाई से नहीं कहूंगा ये भेदभरी राम कहानी ।

इन मोहरों की थैली को यही कहीं समुद्र के किनारे छिपा जाऊंगा और वापिस आने पर जब मौका मिलेगा निकाल कर अपने घर ले जाऊंगा। एक ठाकुर जी का खूब बड़ा मंदिर बनवाकर, उसका महन्त बन जाऊंगा और जो ठाकुर जी के चढ़ात्रे में धन माल आयेगा उससे तरमा तरम खूब माल खा कर भांग के लोटे घोट घोट कर खुद और अपने इष्ट मित्रों को पिलाऊंगा। शंकर भगवान तथा देवीपार्वती के गुन गाऊंगा ।

इस प्रकार सोच विचार कर मन के लड्डू फोड़ रानी सिरौंजा को आशीर्वाद दे, मोहरों की थैली को कमर में बांध, नाई को अपने साथ ले, राजा सिन्धा सिंह की बग्गी में बैठ, समुद्र किनारे आन पहुंचे । जब राजा जी की बग्गी इन दोनों को समुद्र किनारे छोड़ कर वापस चली गई तो उन्होंने नाई से कहा, मैं तो समुद्र किनारे स्नान ध्यान करूं तुम इतने नाव की खोज बीन करो । बन्धुओ, नाई तो नाव को तलाश करने चल पड़ा । जब पंडित जी ने देखा नाई काफी दूर चला गया है तब उन्होंने चुपके से एक पुराने पेड़ की जड़ में मोहरों की थैली छिपा कर गाड़ दी और ऊपर से जमीन इकसार कर ऊपर से बालू बुरक दी जिससे किसी को कुछ भी पता न लगे । कभी कभी पंडित जी के मन में यह प्रेरणा उठतीं थी, कहीं ये अधर्म की कमाई अनर्थ का ही काम न कर डाले । मुझे नाई को इसका हिस्सा दे देना चाहिए । मुझे पंडित पुरोहित होकर बेईमानी करना शोभा नहीं देता । ये सब धर्म-कर्म के विपरीत बात है। किसी ने ठीक ही कहा है—ब्राह्मण हो चोरी करे, विधवा हो पान चबाय, वैश्या बनकर धर्म विचारे, सीधे नरक में जाय ।

इस वजह से इस थैली की कथा नाई को जरूर बता देनी चाहिए। परन्तु रानी सिरौंजा ने भेद खोलने को मना कर दिया है। जिसका खाय उसका गाय। इसलिए नाई से भेदभाव इस समय छिपाने में ही हम सब की भलाई है। रानी सिरौंजा के बताए अनुसार कार्य कर आने के बाद यहां पहुंचने पर इस नाई को बिना भेद बताए, इसका हिस्सा ईमानदारी के साथ जरूर दे दूंगा। अगर न भी दूं तब भी कोई हरज नहीं है। ब्राह्मण को सबका ही माल हजम है। समय पर जो होगा देखा जायेगा। पंडित जी अपने मन की प्रेरणा के अनुसार इस प्रकार तर्क बितर्क कर राम नाम जप रहे थे, सो उसी समय माया रूपी नाव सामने आनकर खड़ी हो गई। थोड़ी देर बाद नाई भी जब उसे कहीं नाव न दिखाई दी तो वापस आन पहुंचा। अपने मुख के सामने समुद्र के किनारे नाव खड़ी देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और चटपट सारा टीके का सामान नाव पर चढ़ाकर फिर पंडित जी महाराज को नाव पर सहारा देकर चढ़ा दिया। सबके पीछे आप भी उछल कर नाव पर सवार हो गया। जब नाविक ने देखा अब कुछ चढ़ाने को बाकी नहीं रहा तब पंडित जी की आज्ञा लेकर

भगवान भोलेनाथ का स्मरण कर, नाव खेनी शुरू कर दी। पंडित जी ने नाव खेने वाले मल्लाह के चेहरे पर देवताओं के समान तेज देख कर पूछा, तुम कहां के रहने वाले हो तो उसने कहा मुझे गुरु जालंधर नाथ योगी ने भेजा है। तुम्हें ही तो भारत वर्ष पहुंचने के लिये समुद्र पार जाना है। पुरोहित जी की आज्ञा अनुसार दोनों मल्लाहों ने इस प्रकार नाव खेनी शुरू कर दी जैसे मोटर कार सड़क पर दौड़ती जा रही हो। दिन ढल जाने पर शाम के वक्त समुद्र के अन्तिम तट पर नाव जा लगी। नाव के भीतर बैठे हुए नाई और पुरोहित जी भारत वर्ष की अपार अनुपम शोभा को नाव में बैठे बैठे ही निहार कर चकित हो रहे थे और परमपिता परमात्मा का ध्यान करते हुए गौरी नन्दन गणेश को मनाकर नाव से नीचे उतर पड़े।

तब नाई ने राजकुमारी श्रीयल के टीके की सकल सामग्री, एक बड़े गट्ठर में बांधकर अपने सिर पर धर ली। नाई और पुरोहित के चल पड़ने पर नाव और नाविक दोनों अन्तर्ध्यान हो गए। तब ये दोनों गुरु चेले भी तेज रफ्तार से बातें करते हुए समुद्र की भूमि छोड़ रेतीले मैदान मे पथरीली पृथ्वी पर भारत

वर्ष की सम्पत्ति तथा सभ्यता का गुणगान करते हुए मंजिल मंजिल चल कर अगाड़ी बढ़े । वे कह रहे थे कि इस प्रांव के आदमी अतिथि सेवा को भगवान की सेवा से भी अधिक करने के अभ्यासी हैं । परदेशी मनुष्य को राह रास्ता बताने और सभ्यता पूर्वक व्यवहार करना अपना परम धर्म समझते हैं । यहां के सज्जन वृन्द महापुरुष अपना काम धाम छोड़कर भी परदेशी मुसाफिर को टेढ़े मेढ़े रास्ते से हटाकर, सीधे मार्ग पर पहुंचाकर, तब वापस अपने घर लौटते हैं । इसी प्रकार धर्म अधर्म की वार्ता करते हुए रात दिन ठहर ठहर कर मंजिल दर मंजिल तय करते पांच सात दिन पीछे, राजस्थान प्रांत के ददरेड़ा नगर में जा पहुंचे और वहां दूध की नदी में पुरोहित जी तथा नाई दोनों ने स्नान ध्यान कर खा पीकर अपने नित्य कर्म से फारिग होकर, महाराज उम्मर पाल सिंह के महल के दरवाजे पर आन पहुंचे ।

दोनों नेगियों ने द्वारपाल को नमस्कार कर, अपने आने का उद्देश्य बयान किया और महाराज उम्मर पाल सिंह से भेंट वार्ता करने की अपनी इच्छा प्रगट करी । द्वारपाल ने नाई पुरोहित जी को उन के नमस्कार का उत्तर नमस्कार में देकर आप दर-

बार हाल में जा पहुंचा और राजा उम्मर पाल सिंह को अपने दोनों हाथ जोड़कर मस्तक नवाकर निवेदन किया । हे राजन, संगल द्वीप पर्यन्त तन्दुल नगरी के धूपा शहर से दो नाई ब्राह्मण अपने राजकुमार जाहरवीर जोधा की सगाई के वास्ते, आपके दरबार में पधारने की आपसे प्रार्थना करते हैं । आपकी आज्ञा मिलने पर मैं उन्हें आपके सम्मुख ला कर पेश कर दूंगा । तन्दुल नगरी के नाई पुरोहित के आने और सगाई लाने की खुशखबरी सुनकर, राजा उम्मर पाल सिंह और उनके सकल दरबारी मन ही मन बड़े प्रसन्न हुए । दरबारी अपने अपने मूढ़ों से उछल उछल कर कानाफूसी करने लगे । जब हमारे जाहरवीर जोधा की बारात समुद्र पार संगल द्वीप जायेगी । तब हम लोग भी बारात में बाराती बनकर चलेंगे और गोगाजी की बारात का भरपेट आनन्द जी भरकर खूब लूटेंगे । वहां बेटी वालों के पक्ष की परम सुन्दरी पदमनी नारियां जरूर ही लड़की के ब्याह में शामिल होंगी । उन्हें जी भर कर अपना चश्मा आंखों पर लगा नजदीक से देखेंगे । हमने नार पदमिनी का होना अपने कानों से ही सुना है नैनों से कभी नही निहारी हैं ।

ये लोग इधर इस प्रकार आपस में वार्तालाप कर रहे थे उधर मन ही मन खुश हो राजा उम्मरपाल सिंह ने अपने दरबान को आज्ञा देकर, नाई ब्राह्मण को दरबार में हाजिर करने का आदेश दिया। हे बन्धुओं, तब पहरेदार अति प्रसन्न हो भागा भागा द्वार पर पहुंच कर पुरोहित जी को भीतर पठा दिया और आप अपने पहरे पर डटकर पहरा देने लगा। जब नाई पुरोहित ने दरबार हाल में पहुंचकर राजा उम्मरपाल सिंह और उनके सकल दरबारियों को हाथ जोड़कर अपना मस्तक नवाया। तब मन ही मन सभी बड़े प्रसन्न हुए। महाराजा उम्मर पाल सिंह व राजा जेवरसिंह व नेंवरसिंह ने नाई के सिर पर खूब भारी गट्ठर सगाई के सामान का देखकर तीनों जने फूल कर कुप्पा बन गये। उन्होंने इतनी खुशी मनाई जो कलम के बाहर की बात है।

सज्जनो ! राजा जेवरसिंह बहादुर ने नाई नेगी दोनों को कुरसी आसन देकर बिठलाया और पान तम्बाकू से उनकी खूब खातिर करी। तब उनसे उन के आने का उद्देश्य बयान करने को कहा।

नाई अपने हाथ जोड़कर बोला, महाराजा साहब, मैं नाई और ये पंडित जी समुद्र पार, संगलदीप

पर्यन्त तन्दुल नगरी के धूपा शहर से आये हैं। हमारे राजा सिंधासिह ने हमें सगाई देकर भेजा है। आज्ञा दी है कि किसी बहादुर नरेश के योग्य राजकुमार के साथ हमारी बेटी राजकुमारी श्रीयल की सगाई कर आओ। टीके का सामान हमारे संग ही भेज दिया है। सो आप अपने राजकुमार का हमें दर्शन करादें। जिससे हम उन्हें देखभाल और समझ बूझ कर अपने राजा के भार को हल्का कर आपके बहादुर राजकुमार की सगाई कर जावें। राजा उम्मरपाल सिंह पुरोहित जी की वार्ता सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और अति प्रसन्न होकर बोले। गुरुदेव ये सब कार्य तो पीछे होते रहेंगे। पहले आप दोनों हमारी अतिथि-शाला में पहुंचकर भोजन जीम आराम करो। आप दोनों मंजिल के थके हारे हो। इतना कहकर तुरन्त राजा ने सेवक को आदेश दिया। इन दोनों को अतिथिशाला में पहुंचाकर, इनके भोजन व आराम करने का पूरा बन्दोवस्त कर दो। इन्हें जिस चीज की चाहना हो, उसका भी प्रबन्ध कर देना। जिससे इनकी रात बहुत आराम से बीते। तकलीफ कोई न होने पाए।

सज्जनो, चपरासी ने महाराजा उम्मरपाल सिंह

की आज्ञा का, अपना मस्तक नवाकर पालन किया और नाई ब्राह्मण को अपने साथ अतिथिशाला में ले जाकर भरपेट भोजन में, भांति-भांति की मिठाई पकवान, बरफी रसगुल्ले, मोतीचूर के लड्डू, मावे का मलीदा, खूब ठूस ठूसकर खिलाया। सुपारी, पान, इलायची देकर उन्हें बिस्तर बिछवाकर आराम से लेटने को कहा। सुबह राज आज्ञा मिलते ही आपको अपने साथ लिवा ले जाऊंगा। इतने आप नित्य कर्म और पूजा पाठ से निबटकर, कलेवा करना। इतना कहकर चपरासी पुरोहित जी के चरण छूकर और नाई को नमस्कार कर, विदा मांग कर अपने घर चला गया।

इधर ये दोनों गुरू चेले अपने-अपने पेट पर हाथ फेरकर, काफी रात तक वार्तालाप करते रहे और महाराजा उम्मरपाल सिंह और उनके बंगले की सजावट की कथा का बयानकर कहने लगे। इस राजा का कैसा सुन्दर सुनहरी खम्बों वाला बारहद्वारी का बंगला है। जिसके अठारह द्वारी के दालान हैं और बैठक अठासी खम्बों वाली है। जिसके सभी खम्बों में भांति-भांति के सुन्दर सुनहरी नगीने जड़े हुए हैं। जिनकी शोभा ही न्यारी है। बंगले के भीतर कहीं पर

ब्राह्मण वेद पाठ कर रहे हैं। कहीं यज्ञ हवन हो रहे हैं। कहीं दूधिया भंग घुट रही है तो कहीं कन्चनी का नाच हो रहा है। कहीं तबले सितार बज रहे हैं, तो कहीं ढोल मृदंग, तो कहीं खुशबूदार फुव्वारे छूट रहे हैं तो कहीं हिना इतर की महकार, कहीं गुलाब केवड़े के शर्बत बंट रहे हैं, तो कहीं कुर्सी पर बैठे क्षत्री अपनी अपनी मूंछें उमेठ रहे हैं। कहीं देशी विदेशी महाराजा हौदेदार करीने से कुर्सी मूढ़ों पर बैठे हैं, तो कहीं लक्षमी की वर्षा हो रही है। इस प्रकार नाई पुरोहित बहुत देर वार्तालाप करते हुए, बेहोश गहरी निद्रा में सो गये। कई दिन के थके हारे, मंजिल के मारे पड़कर ऐसे सोये कि उन्हें अपने तन बदन की सुध बुध भी नहीं रही।

जब सुबह चपरासी ने आनकर इन दोनों को जगाया, तब कहीं हाथ मलते हुए हड़बड़ा कर उठ कर बैठे हुए और राम नाम जपते, दोनों गुरु चेला दिशा मैदान से फारिग हो चटपट स्नान ध्यान कर, कपड़े पहन दोपहर का भोजन जीम सगाई के सामान का गट्ठर नाई के शीश पर धरकर दरबार हाल में आन पधारे। महाराजा उम्मर पाल सिंह को, अपना शीश झुकाकर नाई ने नमस्कार किया। और पुरो-

हित जी ने महाराजा को आशीर्वाद दिया। तब राजा उम्मरपाल सिंह ने नाई को मूढे और पुरोहित जी को कुर्सी देकर अपने पास बिठलाया।

पुरोहित जी बोले अब आप अपने राजकुमारी को बुलवाकर हम को दिखलादें। हमारे राजा सिन्धासिंह के चन्द्रमा के मुख से भी सुन्दर पढ़ी लिखी चतुर राजकुमारी कन्या है। जिसका नाम श्रीयल देवी है। जो योगी जालन्धर नाथ महाराज की शिष्या है और उन्हीं के वरदान द्वारा हमारी रानी सिरौंजा सुन्दरी के उदर से जन्म धारण किया है। बड़ी ही भाग्यशाली देवी भगवती के सामान गुणवती, और अपनी माता की दुलारी है। इसके अलावा यह हमारे राजा रानी की अकेली बेटी है। राजा रानी के स्वर्ग लोक गमन करने के पश्चात वहां का भी राजराजेश्वर आपका ही राजकुमार बनेगा हम लोग अपने राजा रानी की इच्छानुसार ही, इतना लम्बा सफर करके आपके नगर में आये हैं। अगर हमारी राजकुमारी के योग्य कोई आपके यहां होनहार खूबसूरत वीरबहादुर राजकुमार हो तो हम उसकी सगाई अवश्य करके यहां से अपने घर को कूंच करेंगे।

सज्जनो, महाराजा उम्मरपाल सिंह ने और राजा जेवरसिंह बहादुर ने राजा सिंधासिंह के पंडित जी की वार्ता मन लगाकर ध्यान पूर्वक सुनी और पुरोहित जी से बोले, क्या आपके राजा सिंधा सिंह हमारे चौहान गौत्र में, अपनी राजकुमारी का रिश्ता करने को राजी हैं या आप अपने मन से ही हमारे यहां रिश्ता करने को पधारे हैं। हमारा और उनका बहुत ही पुराना पुश्तैनी मनमुटाव है। अगर उनकी राजी से रिश्ता करने आये हैं, तो हमारे यहां एक से एक अधिक सुन्दर वीर बहादुर, तीन राजकुमार हैं। तीनों ही गुरु गोरखनाथ जी महाराज के वरदान द्वारा ही जन्म धारण कर, हमारे यहां विराजमान हैं।

जब महाराजा उम्मरपाल सिंह और पुरोहित जी का वार्तालाप चालू था तभी कपटिन काछल रानी के दोनों बेटे, अरजन सरजन अपने दादा के पास आन कर अपने बाबा महाराजा उम्मरपाल सिंह व ताऊ राजा जेवरसिंह को प्रणाम कर कुर्सियों पर विराजमान हो गए। तब दोनों राजकुमारों का सुन्दर और कसरती गठीला बदन देखकर, नाई ब्राह्मण दोनों को भारी खुशी हुई। नाई पुरोहित को प्रसन्न देख

कर महाराज उम्मरपाल सिंह बोले। पुरोहित जी ये हमारे दोनों बड़े राजकुमार अरजनसिंह व सरजन सिंह हैं। अगर आपको इन दोनों में से कोई पसन्द हो तो रिश्ता पक्का कर लो। अभी पुरोहित जी महाराज हां या ना का उत्तर देने भी नहीं पाये थे कि अपने गुरु गोरखनाथ जी महाराज की कृपा से उसी समय जाहरवीर जोधा शिकार खेल कर, दरबार में आन पहुंचे और अपने दादा महाराज उम्मरपाल सिंह और पिता जेवरसिंह बहादुर को चरण छूकर मस्तक नवा नमस्कार किया और पुरोहित जी को प्रणाम कर अपनी कुर्सी पर विराजमान हो गया। पुरोहित जी ने उसकी आन बान और वीरों जैसी शान देखी। इनका मुख चन्द्रमा के समान चमक रहा था। उन्हें अपनी राजकुमारी के लायक ये ही होन-हार युवक जंचा। पुरोहित जी का ध्यान अरजन सरजन की तरफ से हटकर, गोगा वीर की तरफ जम गया। वह जाहरवीर जोधा की तरफ आकर्षित हो गये। अपने नाई से इशारा करके बोले, हमारी राजकुमारी श्रीयल के वास्ते यही वीर राजकुमार मेरी समझ में उसके योग्य वर है।

पुरोहित जी को जाहरवीर जोधा की तरफ

गौर से देखते हुए और नाई से कानाफूसी करते हुए महाराजा उम्मरपाल सिंह ने देखा और पुरोहित की दृष्टि जाहरवीर जोधा पर जमी देखी, तो महाराजा उम्मरपाल सिंह बोले।

गुरुजी, ये हमारे सबसे छोटे राजकुमार हैं। जो शिकार खेलने के अधिक शौकीन होने के अलावा अस्त्र शस्त्र विद्या में बहुत ही प्रवीण हैं। इतनी वार्ता महाराजा उम्मरपालसिंह की सुनकर, पुरोहित जी बोले, महाराजा साहब हमारी राजकुमारी के वास्ते, हमें भी आपके छोटे राजकुमार ही पसन्द आये हैं। हम इनको बिना रोक टोक टीका करने को तैयार हैं। आप हमारी विनय स्वीकार करके, हमें हमारे भार से मुक्ती दिलावें। जिससे हम निश्चित हो, यहां से अपने घर को सिधारें। पंडित जी की वार्ता सुन कर, महाराज उम्मरसिंह बोले, गुरु देव आपकी वार्ता विपरीत है। रीति अनुसार प्रथम बड़े राजकुमार का ब्याह करना ही हम सबको शोभनीय है। परन्तु आप इतनी दूर से आशा लिए लम्बा सफर करके मेरे यहां पधारे हैं तो मैं आपको निराश नहीं लौटाऊंगा। इसके अलावा इस सम्बन्ध से हम चौहानों और तंवर वन्सियों में पुराना बैर

भाव भुलाकर मेल मिलाप भी हो जावेगा। हम दोनों की आपस की कटा मरी के कारण जो धन जन की हानि होती है वह भी प्यार मौहब्बत के कारण रुक जाएगी। आप अपनी पसन्द के राजकुमार गोगा वीर का ही तिलक करदें। हम अपने दोनों बड़े राजकुमारों का ब्याह कहीं अन्यत्र कर देंगे। चौहानों में भी राजकुमारियों का टोटा नहीं है। एक से एक सुघड़ राजकुमारियां बिन ब्याही घर-घर भरी पड़ी हैं।

अपने दादा महाराजा उम्मर पाल सिंह और पुरोहित जी की वार्ता तीनों राजकुमारों ने अपने अपने कान लगा कर ध्यान पूर्वक सुनी। अरजन सरजन दोनों ने अपने विपरीत वार्तालाप सुनकर काफी बेचैन हो अपनी कुर्सियों से उठ, गुस्से में चूर हो दरबार हाल से बाहर निकल कर अपने घर चले गए। तब गोगावीर अपने दादा से शीश झुकाकर बोले, बाबाजी ये दोनों सज्जन कहां से पधारे हैं और हमारे यहां किस उद्देश्य से आये हैं। इनकी वेशभूषा देखकर तो यह अन्दाजा दीख पड़ता है कि ये लोग किसी दूर प्रान्त के निवासी हैं। अपने छोटे पौत्र की वार्ता सुनकर महाराजा उम्मर पाल सिंह मन ही मन

मुस्करा कर बोले बेटा, गोगा वीर तुम्हारा अन्दाजा एकदम बिलकुल ठीक है। ये नाई पुरोहित संगल द्वीप प्रान्त की तन्दुल नगरी के धूपा शहर से यहां पधारे हैं। वहां के नरेश राजा सिन्धा सिंह ने अपनी बेटी राजकुमारी श्रीयल की सगाई का टीका भेजा है। अपने बाबा महाराज उम्मर पाल सिंह की वार्ता सुन कर जाहर वीर जोधा फूलकर कुप्पा बन गए। उनका रोम रोम आनन्द से पुलकित हो गया। अरजन सरजन के चले जाने के कारण इन्हें और अधिक हर्ष हुआ। इधर सबने आपस में मशवरा करके पुरोहित जी से कहा। गुरू जी अब देरी करना व्यर्थ है। टीके का सामान मंगवा कर नेग जोग शुरू करो। हमें आपकी मनोभावना के विरुद्ध चलना शोभनीय नहीं मालूम पड़ता है।

श्री गोगा जी की सगाई का बयान

सज्जनो! पुरोहित जी ने महाराजा उम्मर पाल सिंह की आज्ञा अनुसार अपने नाई को इशारा कर, टीके की सकल सामग्री महल के आंगन में धरवाकर, ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों महान आत्माओं को मनाकर विघ्न हरन मंगल करन गौरी सुत गणेश को मनाया, राजाके पक्के महल के आंगन में थोड़ी सी भूमि गाय

के पवित्र गोबर से लिपवा कर, एक सुनहरी चौकी और पटली बिछवादी। इधर राजा जेवर सिंह ने दास दासियां भेजकर अपने सकल सम्बन्धियों और मिलने वालों को महल से बुला लाने को भेजा और नगर के सेठ साहूकारों को जाहर वीर जोधा की टीके सगाई के उत्सव की खबर भिजवाई। अपने पुरोहित जी पर एक सेवक, उन्हें लिवा लाने के वास्ते पठाया।

अपनी बांदी मूंगादे को, नगरी की सकल नारियों को बुला लाने की आज्ञा महारानी बाछल ने दी, जिसे सुनकर बांदी मूंगादे ने अपना मुंह हाथ धो पौंछ नैंनों में सुरमा सार कर माथे पर चमकीली बिन्दी लगाई, तब मतवाली चाल से चलकर छम छम करती अपनी पायल की झन्कार सबको सुनाती घर घर जाकर महारानी बाछल की सकल सखी सहेलियों और सेठ साहूकारों की अलबेली नई नवेलियों को तथा कुनबे वालियों को गोगा जी की सगाई की खबर दे देकर राज महल की तरफ सबको रवाना कर रही थी।

जिसे सुन सुनकर तमाम नगर निवासी टेढ़े तिरछे सीधे आड़े, काने भेंड़े, नई नई पोशाकें पहन पहन कर

मुख में पान चबा चबाकर जाहर वीर जोधा की सगाई के लिए महाराजा उम्मरपाल सिंह के महल को दौड़े भागे चले जा रहे थे। उन्हीं के पीछे उनकी सकल सुन्दर नारियां, माता बहनें और बेटियां महारानी बाछल के बेटे गोगावीर की सगाई में पहुंचने के वास्ते अपने छोटे मोटे बच्चों को बगल में दबाए मतवालियों के समान अपने अपने पुरुषों के पीछे दौड़ी चली जा रही थीं। महल के भीतर सकल सुन्दरियों का और बाहर पुरुषों का मेला सा जुड़ गया। पैर रखने की तिल भर भी जगह नहीं रही। महल के जनाने भाग में ढोल मंजीरे की मधुर तान सुनाई पड़ने लगी। ददरेड़ा नगर की सुन्दर नारियों की कोयल के समान कूकने की धुनी पुरुषों के कान के परदे फाड़ने लगी।

पुरोहित जी ने गोगा वीर को पटले पर बिठाया और टीके का सकल सामान आंगन में फैला दिया। जो जवाहरात नीलम पन्ना वगैरह लाए थे उससे जाहर वीर जोधा की गोद भरदी। बाकी कपड़े शाल दुशाले कीमती साड़ियों का ढेर मिठाई पकवान मेवा मिश्री वगैरह सब सामग्री यहां राजा उम्मर पाल सिंह के सामने धरवादी। ये लाखों रुपये का सामान देखकर

अरजन सरजन तथा उनकी माता रानी काछल कपटन के कलेजे पर सांप लोटने लगा। ये तीनों मां बेटे आपस में अति अधीर हो बैठ कर बतराने लगे। ये गोगा अगर पांच मिनट और न आता तो ये सगाई हम दोनों में से किसी एक भाई की जरूर हो जाती। इस कमबख्त को उसी समय दरबार में आन कर हमारे रंग में भंग करना था। इस प्रकार तीनों मां बेटों को बड़ा भारी रन्ज पहुंच रहा था और जाहर वीर जोधा को पानी पी-पीकर मनही मन भरपेट कोसा जा रहा था।

इधर महल में खूब शान शौकत के साथ गोगा वीर की सगाई का जश्न मनाया जा रहा था और उधर पंडित जी ने जाहरवीर जोधा के माथे पर मन्त्र पढ़कर तिलक कर दिया। ऊपर से बासमती चावल के दाने चिपका कर फूल माला पहना दी। तब सब नर नारियों ने अपनी अपनी हैसियत अनुसार नौछावर कर करके नाई पुरोहित को खूब दान दक्षिणा भंट की। तब सुनहरी कटोरों में भर भरकर हर नगर निवासी नर नारी को मिठाई पकवान दिए। वह सब हंसी खुशी जाहरवीर जोधा की सगाई के गीत गाते और तारीफ के पुल बांधते बांधते अपने

अपने घर जा पहुंचे। इधर नाई पंडित ने कई दिन ददरेड़ा नगर में रहकर खूब आनन्द लूटा। भांति-भांति के पकवान मिठाई खाकर, खीर पूरी सटककर महाराजा उम्मरपाल सिंह की जय जयकार मना कर विवाह की तिथि फागुन बदी नौमी का महूर्त निकाला। सो नाई पुरोहित दोनों ने नोट कर लिया।

राजा जेवरसिंह बहादुर ने अपने माता पिता तथा महारानी बाछल की सलाह से पुरोहित जी को दक्षिणा में कन्चन कड़े और शाल दुशाला भेंट किए और नाई को पांचों कपड़े और एक सौ एक मोहर अशर्फी दीं। जिसे इन दोनों नेगियों ने लेने से साफ इन्कार दिया और हाथ जोड़कर मस्तक नवा कर बोले। महाराजा साहब अगर हम आपकी ये भेंटें स्वीकार कर लें तो हमारे राजा सिंधासिह जिन्दा ही दोनों को जमीन में गढ़वा देंगे। कहेंगे तुमने कन्या के दरवाजे पर पहुंचकर अपना धर्म भ्रष्ट किया है। हमारे यहां से क्या तुम्हें कम मिलता है, जो तुमने उन लोगों के सामने हाथ पसारा। हमारे राजा ने हम दोनों को भर पेट दान दक्षिणा देकर आपके दरवाजे पर पठाया है।

ये कहकर और हाथ जोड़कर शीश नवा बिना

कुछ लिए दिए दोनों नाई पुरोहित विदा हुए। सैर सपट्टा करते हुए समुद्र तट पर दो तीन दिन पीछे जा पहुंचे। जहां उन्हें वही दोनों वीर धीर मल्लाह, गुरु जालन्धर नाथ के भेजे हुए अपनी नौका लिए समुद्र तट के घाट पर खड़े तैयार मिले। उन्होंने तुरन्त ही दोनों नेगियों को दिन छिपने से पहले ही तन्दुल नगरी के तट पर जा उतारा। दोनों नाई पुरोहित उछलते कूदते मन-ही-मन प्रसन्न हो नगर के समीप जा पहुंचे।

नगर के समीप पहुंचते ही मुख के सामने से ही पनहारिन खाली घड़े लिए आती हुई दिखाई दी और उसने सनमुख हो चटपट से छींक दिया। जरा और आगे बढ़े तो चट से फौरन ही बिल्ली रास्ता काट गई। पुरोहित जी का तीनों अपशुकन एक साथ देखकर बड़ी जोर से माथा ठनका। वह उदास हो नाई से बोले, बिरातिया जी इस समय राज महल में पहुंचना मौत के मुंह में जाने के समान है। बड़े भारी अपशकुन हुए हैं। इसलिए मेरी बात मानकर अपने अपने घर चलो सुबह राजमहल में चलेंगे। भगवान सब भली करेंगे। इस प्रकार सलाह मसबरा कर दोनों अपने अपने घर आराम से भगवान का भजन

कर सुख की नींद सोये।

✻ श्री गोगा पुराण इकतीसवां अध्याय समाप्त ✻

बत्तीसवां अध्याय

सज्जनो! नाई को पुरोहित जी के अपशकुन की वार्ता सुनकर रात भर गम के मारे नींद नहीं आई। उस बेचारे ने तारे गिन गिनकर रात काटी। बेचारा सुबह तड़के ही उठ अन्धेरे में ही नित्य कर्म से फारिग हो, स्नान ध्यान कर राम राम जपता हुआ पुरोहित जी के घर घबराया हुआ सा जा पहुंचा। रात भर नींद न आने के कारण और कुछ बदशकुनों के कारण उसके गमगीन चेहरे पर उदासी छा गई थी। मुंह पर मुस्कराहट का नामोंनिशान भी नहीं रहा था। चिन्ता फिकर के कारण उसका बहुत बुरा हाल था। उसने सुबह तड़के ही ब्रह्ममहूर्त में पहुंचकर पुरोहित जी को जगा दिया। अपने दोनों हाथ जोड़कर अपना मस्तक झुका अधीर हो सामने खड़ा हो गया। पुरोहित जी से अपना धीरज खोकर बोला, गुरुदेव दया कर अब राजमहल में चलने की कृपा करो। पुरोहित जी अपनी दोनों आंखें मलते हुए, रामनाम जपते उठकर बैठ गए और नित्य कर्म से फारिग हो

स्नान ध्यान कर, सन्ध्या हवन से निबट कर, गौरी सुत गणेश का सुमरन कर माथे पर चन्दन का तिलक पोत कर अपका रामनामी पीताम्बर ओढ़ राधा कृष्ण जपते हुए राजमहल में जा पहुंचे। जहां राजा सिंधासिंह और उनकी रानी सिरौंजा सुन्दरी दोनों ही विराजमान थे।

इतने कम समय की अवधि में, नाई पुरोहित को लौटता देख, राजा सिंधासिंह ने, अपनी कन्या के भाग्य की सराहना की। पुरोहित जी को प्रणाम कर बैठने को चौकी दी और नाई को मूढे पर बैठ जाने की आज्ञा दी। पुरोहित जी राजा सिंधासिंह व रानी सिरौंजा को आशीर्वाद दे, अपने आसन पर विराजमान हो गए। तब राजा सिंधासिंह ने, अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा। गुरुदेव, आपको यहां से जाने पर रास्ते में काफी परेशानी उठानी पड़ी होगी। आपने अपनी बेटी राजकुमारी श्रीयल का टीका किस देश के राजा के राजकुमार को चढ़ाया और कौन तिथि कौन मिति का ब्याह संस्कार का महुर्त निकाला है। राजकुमार की आयु कितनी है। क्या उस राजकुमार का नाम है। राजा सिंधासिंह के एक साथ इतने सारे प्रश्न सुनकर पंडित जी थर थर कांपते

हुए बोले।

हे राजन ! भारत वर्ष की पश्चिमी सीमा पर राजस्थान प्रांत के अन्तर्गत, बागड़ देश में एक ददरेडा नगर है। जहां महाराजा उम्मर पाल सिंह का बड़ा भारी राज्य है। वह एक चौहान वन्शी क्षत्रपती महाराजा हैं। जिनके बड़े बेटे राजा जेवरसिंह बहादुर हैं और छोटे बेटे नेवरसिंह जी हैं। राजा जेवरसिंह के होनहार राजकुमार, जाहरवीर जोधा को राजकुमारी श्रीयल की सगाई का टीका चढ़ाकर, फागुन बदी नौमी का ब्याह संस्कार पक्का कर दिया है। ये होनहार युवक और इनकी माता महारानी बाछल दोनों ही गुरु गोरखनाथ जी महाराज के शिष्य हैं। उन्हीं के वरदान द्वारा देवताओं के अन्श से इनका जन्म हुआ है। वे अनेक विद्याओं तथा रिद्धि सिद्धि के धुरन्धर विद्वान हैं।

प्यारे बन्धुओं, ज्यों ज्यों पुरोहित जी बागड़ देश के गुणवान राजकुमार जाहरवीर जोधा का यशोगान करते थे त्यों त्यों राजा सिंधासिंह के दिमाग का पारा बेहद गर्म होता जाता था। वह अपने गरम दिमाग के कारण अपना सन्तुलन बड़ी बुरी तरह खो बैठे। उनकी आंखें लाल पीली होकर अंगारा बन गई थीं

और उनका खूबसूरत चेहरा क्रोध के कारण बड़ा भयानक लग रहा था। वह चेहरा यमराज के समान बन गया था। उन्होंने तुरन्त एक लोटा ठन्डा नीर मंगवाकर पिया और क्रोध को दबाकर बोले।

पुरोहित जी, मैंने ब्राह्मण जाति को सर्वेसर्वा माना है। परन्तु आप लोगों से वफादारी की उम्मीद करना ऐसा है जैसे सांप को दूध पिलाना। मैं आपकी बेवकूफी देखकर हैरान हूं। अब बहुत जल्द ऐसा समय आने वाला है कि आप लोगों को कोई होनहार कन्या का रिश्ता करने नहीं भेजा करेगा। रिश्ता करने के वास्ते, कन्या के मां बापों को ही वर तलाश करने जाना पड़ेगा। माता पिता खुद ही लड़का लड़की पसन्द कर सम्बन्ध स्थापित किया करेंगे। आप लोगों के पुरखों की कीर्ती इसीलिए थी, वह अपने जिजमान के वास्ते अपना तन मन धन तथा जान तक न्यौछावर करने में नहीं हिचकिचाया करते थे। वह आप लोगों की तरह बेईमान नहीं होते थे।

अब तुम लोगों का पतन हो चुका है। आजकल आप लोगों का ये ही उद्देश्य है, जहां देखी तवा परात वहीं गंवाई सारी रात। मैं तुझसे पूछता हूं हे ब्राह्मण देवता, ओ बामन के बैल, क्या तुझे ये

जानकारी नहीं थी कि बागड़ देश के चौहानों और तन्दुल नगरी के तम्बर वन्शियों में, पुश्तैनी दुश्मनी सदा से चली आ रही है। इसे तो यहां का बच्चा बच्चा जानता है। फिर तुमने किस दुश्मन के साथ षडयन्त्र रचकर, जान बूझकर किस लालच वश, मेरा जरा भी भय नहीं मानकर, मेरे साथ दगा की है। उनके वंश में अपनी प्राण प्यारी पुत्री देने के वास्ते मैंने अपने परम हितैषी गुरु जालन्धर नाथ जी की भी आज्ञा का उल्लंघन कर दिया था। तुम लोगों की नालायकी देख देखकर मेरा तन बदन भस्मीभूत हुआ जा रहा है। गुस्से के मारे इतना अधीर हो रहा हूं कि तुम दोनों गुरू चेलों का सिर अपनी तलवार लेकर एक ही बार में धड़ से जुदा कर दूं, मैं ब्रह्महत्या का पाप अपने सिर न भी लूं तब भी जेलखाना तो अपने लिए आप निश्चित ही समझो। क्या आपने मेरे स्वाभिमान को जानबूझ कर मिट्टी में नहीं मिलाया है।

राजा सिंधासिंह की वार्ता पुरोहित जी अपने दोनों कान दबा कर, नीचे को मुंह किए सुनते रहे। उन्होंने सिंधासिंह के चाहने पर भी अपनी जबान नहीं खोली। उन्होंने राजा सिंधासिंह से ये भी कहकर

अपनी जान न छुड़ानी चाही कि हम आपकी रानी सिरौंजा सुन्दरी जी के परामर्श से, बागड़ प्रांत में ये टीका लेकर गये थे। इसमें हमारा कोई दोष नहीं है। रानी सिरौंजा सुन्दरी इसी भय से पहले ही घर का काम काज करवाने के बहाने, वहां से खिसक गई थीं। पुरोहित जी को उत्तर देना तो दूर की बात थी, उन्होंने अपना मुंह ऊपर उठाकर भी नहीं देखा, यमराज से लोहा लेने की सामर्थ्य कौन कर सकता है। उत्तर देने के मायने अपनी मौत अपने हाथ खुद बुलानी थी। बेचारा नाई तो मूंढे पर बैठा थर थर कांप रहा था ये पुन्न किये पाप करने की तोहमत क्यों लग रही है। पंडित जी ने जो अपशकुन शाम के वक्त देखे थे। सब उन्हीं अपशकुनों की ये माया है। हम दोनों पर बड़ा भारी ग्रह चक्र है। रात को जो हम लोग यहां आ जाते तो बिना मौत मारे जाते। और मेरी गौनयाई विरातयानी रो रोकर अपनी जान खो देती। उस बेचारी दुखियारी, सुकुमारी के, नैनों से कोई आंसू पोंछने वाला भी हमारे घर के भीतर नहीं दिखाई देता है। हे कन्हैयालाल, राधिका वल्लभ इस भारी आफत से मुझे आप ही बचा सकते हो। मुझ अनपढ़ निर्दोष को केवल आपका ही भरोसा है।

आप ही मेरी नैया खेकर मंझधार से निकालोगे। तो मैं एक दिन भूखा रहकर दो पैसे का परसाद मन्दिर में जा आपको भोग लगाकर सारे नगरमें घर बांटूंगा।

इधर नाई इस प्रकार भगवान से प्रार्थना कर रहा था। उधर जब सिधासिंह को पंडित जी ने कोई उत्तर नहीं दिया और न अपनी आंखें ही ऊंची कीं। तब राजा सिधा सिंह अधीर हो अपना धीरज खोकर बोले। इस वक्त आप लोगों की यही सजा है कि आप लोग बागड़ प्रांत में पहुंचकर वहां से अपने टीके का सामान, सगाई तोड़कर के वापिस ले आओ। और किसी दूसरे नगर के राजा के राजकुमार से राजकुमारी श्रीयल की सगाई पक्की कर आओ। राजा सिधासिंह की वार्ता सुनकर पुरोहित जी की जान में जान आ गई, उनके प्राणों को शांती मिली और नाई ने भगवान श्री कृष्ण का ध्यान करके, दसों दफा उन के चरणों में अपना मस्तक झुकाया। अपने मन में कहा जान बची और लाखों पाये, लौट के बुद्धु घर पर आये। दोनों नाई ब्राह्मण राजा सिधासिंह को नमस्कार कर, मस्तक नवा महल से विदा हो, समुद्र तट पर आन पहुंचे। नाव आने का इन्तजार कर आपस में इस प्रकार बतलाने लगे।

नाई बोला, पुरोहित जी आपकी बात बावन तोले पाव रत्ती बिल्कुल ठीक बैठी। अगर रात को ही हम लोग महल में पहुंच जाते तो बिना मौत ही मारे जाते। इस वक्त तो मैंने अपनी बुद्धि पर जोर देकर, भगवान को दो पैसे का परशाद बोल कर, बारबार उसके चरणों में प्रार्थना की हे। प्रभु, मुझ भाग्यहीन को, मेरी नई ब्याहिता नायन के भाग्य से ही दया कर बचादो। अब जान जाने में देरी नहीं है। सो भगवान ने सिन्धा सिंह राजा के दिल में रहम पैदा कर दिया। वह सुबह सुबह अपने नित्य कर्म से निबटने और दरबार में पहुंचने के कारण हम दोनों को कोई भारी सजा नहीं दे सके। पंडितजी मैं भाग्यहीन तो अपनी नायन के भाग्य तथा आपकी दया से ही बच पाया हूं वरना मुझ कर्महीन के ऐसे कर्म कहां जो मौत के मुंह में पहुंच कर जिन्दा बच जाता। पुरोहित जी आपकी ज्योतिष बड़ी पक्की है। तभी तो आपकी बात बावन तोले पाव रत्ती ठीक बैठी।

अपने चेले विरातिया की वार्ता सुन कर, पुरोहित जी महाराज अपनी मूंछों पर ताव देकर बोले। क्या हमारी ज्योतिष विद्या को तुमने ऐसी वैसी ही

समझ रक्खा है। अगर हम लोग विद्या पढ़कर विद्यावान न बनें तो ये यमराज के नाती, नरेश लोग हमें काहे को मस्तक नवावें। मैंने इस राक्षस सिन्धा सिंह की जो इतनी बातें बरदाश्त की हैं, सिर्फ तेरे कारण, मेरा तो वह बाल भी बांका नहीं कर सकता था। मैं उसे श्राप देकर तुरन्त भस्म कर देता। उसकी रानी सिरींजा सुन्दरी तो मेरा भय मानकर, पहले ही बहाना बना रूपोश हो गई। परन्तु एक तो हमारे पुरखाओं ने ब्राह्मणों के वास्ते शान्ति व धीरज रखने की ताकीद कर रखी है। दूसरे गुस्सा करने की सख्त मनाही करी है। तीसरे तेरी वजह से भी मैं अपनी गरदन नीची करके बड़े भारी मन्त्रों का जाप करके भगवान से तुझ निर्दोष को बचाने की प्रार्थना, उनके चरणों में सिर झुका कर करता रहा। इसी का नाम दया धर्म है। इसी दया धर्म के कारण ब्राह्मण पंडित सब का सिरमौर है।

इस प्रकार ये दोनों अपनी अपनी बढ़ाई की डींग मार रहे थे। उधर हमारे जाहर वीर जोधा ने सोचा, मुझसे रानी श्रीयल ने अपने नौलखे बाग में कहा था। हमारे तम्बर बंशियों में और आपके चौहानों में पुस्तैनी दुश्मनी मुद्दत से चली आ रही है,

पता नहीं नेगी यहां सबकी सलाह से आये हैं या रानी श्रीयल ने इन्हें कुछ लालच देकर, हमारे ददरेड़ा नगर को भेजा है। अगर नाई ब्राह्मण सिंधा सिंह की बिना मरजी किसी के बहकावे में आन कर टीका सगाई लेकर यहां आये हैं। तो उनपर क्या बीत रही होगी, मुझे वहां चलकर पूरी जांच करनी चाहिए। इस प्रकार अपने मन में सोच विचार कर मन्सूबा बांध अस्तबल में जा अपने नीले घोड़े को बाहर निकलवाया। घोड़े की पीठ थपथपा कर उसकी पीठ अपने कर कमलों से प्यार के साथ सहलाई। सुनहरी साज सजाकर उसके ऊपर सवार हो, उसे समुद्र पर चलने को कहा।

नीला घोड़ा मन ही मन मुस्कराकर बोला, गुरु भाई, भाभी श्रीयल के यहां चलना है। जाहर वीर जोधा अपने घोड़े की शैतानी हरकत देख बोला। चल तो सही यहां से, वहां पहुंचकर जैसा मुनासिब समझूंगा करूंगा। ये कहकर एक चाबुक उसकी पीठ पर जमा दिया। सो बन्धुओ, नीले घोड़े ने आव देखा न ताव एकदम अपने दोनों पंख फैला कर आसमान को ऊंचा उड़ गया। तन्दुल नगरी की तरफ अपना मुंह करके नीचे उतरना शुरू कर दिया। बीस मिन्ट

और तीस सैकिंड में तन्दुल नगरी के समुद्र तट पर जा उतरा। जहां पुरोहित और नाई दोनों गुरु चेल बेबुनियाद वार्तालाप करते हुए बैठे गुरु जालन्धरनाथ योगी की नाव और उनके खेवटों का इन्तजार कर रहे थे। जाहर वीर जोधा ने पुरोहित जी के चरण छूकर नाई को नमस्कार किया। पुरोहित जी से चिरन्जीवो रहने का आशीर्वाद प्राप्त किया।

तब जाहर वीर जोधा ने कहा, कहो ब्राह्मण देवता क्या हाल चाल हैं। यहां किस कारणवश आप लोग समुद्र तट पर बैठे हो। मेरे लायक जो सेवा हो कृपया बताने की कृपा करें। जाहर वीर जोधा की वार्ता सुनकर नाई पुरोहित दोनों ने रो रोकर अपनी आपबीती का बयान किया और कहा राजा सिन्धा सिंह की आज्ञा अनुसार हम दोनों सगाई का सामान लौटाने आपके ददरेड़ा नगर जा रहे हैं। अपने राजा की आज्ञा अनुसार और नाव के इन्तजार में दोनों जने यहां बैठे हुए हैं। बन्धुओ, नाई और पुरोहित की वार्ता सुनकर गोगावीर सोच में पड़ गये। तब पंडित जी ने अपनी गर्दन नीची करके कहा। हे वीर राज-कुमार, इसमें राजा सिन्धा सिंह की रत्ती भर भी खता नहीं है। हम लोगों ने जो सगाई आपके संग

करी है उसमें राजकुमारी श्रीयल और उनकी मातेश्वरी रानी सिरौंजा सुन्दरी की आज्ञा का पालन ही हमने किया है । राजा सिन्धा सिंह का उग्र रूप देख कर ही ये दोनों मां बेटी अपने महल में बैठी थर थर कांप रही थीं । वह अपने मन ही मन भयभीत हो सोच रही थीं कहीं पुरोहित जी राजा से अपनी जान बचाने के लिए हमारा नाम न ले दें ।

हम दोनों को आपके यहां जाकर टीका वापिस न लाने पर, सूली पर चढ़ाकर मार डालने का आदेश राजा सिन्धा सिंह ने दिया है । हमने राजा सिन्धा सिंह से इन दोनों अबलाओं का भेद कतई नहीं बताया है । उनकी बला अपने सिर ओट ली है । चलो इसी बहाने आपसे भेंट हो गई । आपके दर्शन कर हमारी चिन्ता आधी रह गई है । पुरोहित जी और नाई की दुख कथा सुनकर और उनकी सन्तुष्टी का कार्य देख समझकर जाहरवीर जोधा बोला ।

गुरु देव, आप निराश क्यों होते हो । हम आपके चरण सेवक और किस दिन के लिए जन्म धारण कर आए हैं । आप अपने मन से आधी चिन्ता का ख्याल भुलादें । आप अपनी सारी ही चिन्ताओं को समाप्त समझें । आप अपने जी में जरा भी अधीर न

हों । धीरज धर कर आराम के साथ यहीं बैठे रहो । मैं अति शीघ्र आपके टीके का सकल सामान अपने घर से लाकर आपको यहीं वापस किये देता हूं । आपके ददरेड़ा नगर जाने से न जाने मेरे दादा उम्मर पाल सिंह महाराज राजा सिन्धा सिंह की तरह क्या कयामत ढाह बैठें । कारण उन्होंने आपसे अच्छी तरह खोजबीन करके पूंछ लिया था कि आप राजा सिन्धा सिंह की राजी से सगाई लेकर आए हो या अपने मन से, आपने वहां मेरे सामनेही झूंठ बोलकर राजा सिंधा सिंह का नाम लिया था कि उनकी मरजी से ही टीका लेकर आये हैं । वहां आपने अपनी राजकुमारी और उनकी माता की आज्ञा का कतई जिक्र नहीं किया था । जैसा आप अब कह रहे हैं कि इन दोनों अबलाओं के परामर्श से ददरेड़ा नगर टीका लेकर पहुंचे थे । पुरोहित जी आप खूब अच्छी तरह जानते होंगे पाप धोके का बाप है जो छिपाए नहीं छिपा करता । इसलिए आप राजी खुशी टीका वापिस हमारे यहां जाकर नहीं ला सकते हैं । हमारे दादा, पिता और माता सगाई वापस करने में अपना बड़ा भारी अपमान समझेंगे । बहुत मुमकिन है आप दोनों को कैद खाने में बन्द करवादें ।

वहां आप दोनों पर क्या बीतेगी यह मैं किसी प्रकार नहीं बता सकता हूं। इसलिए तुम्हारा हमारे यहां जाना खतरे से खाली नहीं है। हमारे घर के लोग आपके राजा के मुकाबले पर ज्यादा ही खफा होंगे। कम खफा होंगे, इस बात को दिल से निकाल दो। वहां आपके जाने पर ऊंट किस करवट बैठेगा, कुछ भी नहीं बताया जा सकता है। अभी आप लोग राजा सिन्धा सिंह की फटकार से महान दुखी हैं। कहीं ददरेड़ा नगर पहुंचकर आपकी चिन्ता दुगनी न हो जाय। इसमें हम लोगों की बड़ी भारी बदनामी की बात है। कोई कुछ अन्दाजा लगाएगा, कोई कुछ समझेगा। इससे बात बजाय घटने के बढ़ जानेकी ही मुझे अधिक सम्भावना है। जाहर वीर जोधा की दूरंदेशी को वार्ता सुन नाई ब्राह्मण दोनों बड़े प्रसन्न हो बोले।

राजकुमार जी, हम अपने मुंह से जितनी आप की बढ़ाई करें उतनी ही थोड़ी है। हम में आप का गुणगान करने की शक्ति नहीं है। हम आपको आशीर्वाद देते हैं। परम पिता परमात्मा आपकी मनोकामना पूरी करें। हमारे राजा सिन्धा सिंह या राजकुमारी श्रीयल के भाग्य का ही दोष है जो वह ऐसे

धीर वीर गम्भीर योधा से नाता तोड़ने की जिद कर बैठे हैं। उन्हें एकदिन अपनी करनी पर पछताना पड़ेगा। उन्हें इतना सुघड़ जामाता तीनों लोकों में ढूंढने पर भी नहीं मिल सकता। हम दोनों आप की आज्ञा मानकर यहीं बैठे समुद्र की हवा खाते रहेंगे। आपके वापस आने पर ही सगाई का सामान लेकर कहीं अन्य राज में अपनी राज कुमारी श्रीयल की सगाई करने यहीं से सीधे चले जायेंगे।

बन्धुओ ! जाहर वीर जोधा ने पंडित और नाई को समझा बुझा कर अपने नीले अश्व पर सवार हो, अपने पैर की एक ऐंड़ घोड़े की पीठ पर लगाई। जाहर वीर जोधा की अपने पीठ पर ऐड़ लगी देखकर नीला घोड़ा एकदम कबूतर की सी कलाबाजी खाता हुआ आसमान को उड़ गया और पहले के समान ही उतर कर अपने समुद तट पर जा पहुंचा। फिर समुद्र तट से उड़ान भरकर महारानी बाछल के महल तले जा पहुंचा। तुरन्त ही हमारे जाहर वीर जोधा ने अपनी माता महारानी बाछल को उनके कक्ष में पहुंचकर नमस्कार कर, सारी घटी घटनाओं को विस्तार पूर्वक चन्द मिन्टों में ही सुना डाला। और अपनी सगाई की सकल सामग्री अपनी माता से वापस

लेकर अपने कब्जे में करी जो इनकी जननी ने सुर-क्षित रख छोड़ी थी ।

माता बाछल ने कहा बेटा, गोगा, इस प्रकार सगाई का सामान वापस करने पर बड़ी भारी बद-नामी होगी । तो उन्होंने उत्तर में सिर्फ ये ही कहा कि जननी, इसका भी उपाय किया जावेगा । गुरु गोरखनाथ जी महाराज की दया के कारण कोई बुराई, बदनामी नहीं होगी । जो होगा उसे भुगतना ही वीरों की वीरता है । घबराने से कोई काम नहीं संवरा करता है । इस समय मुझे जाने की जरा जल्दी है, आन कर अपनी सब योजना आप को बताऊंगा । वहां नाई ब्राह्मण बैठे दोनों मेरा इन्तजार कर रहे होंगे । जब तक वह सगाई का सामान लेकर दरवाजे के बाहर आये तब तक सईस ने नीले घोड़े को स्नान करा, उसकी मालिश कर, दाना घास खिला, सुनहरी साज पिन्हा, ताजा दम कर दिया था । फिर अपनी अतिथिशाला से नाई ब्राह्मण के वास्ते पूरी पकवान और साग भाजी, अचार चटनी लेकर अपने नीले अश्व पर सवार हो, फौरन ही वापिस हो लिया था।

नीले घोड़े ने अपने पंख पसारकर हवा की माफिक उड़ना शुरू कर दिया । जिस प्रकार काले

बादल की लाली में बाज मन्डराता हुआ उड़ता है उसी तरह कबूतर के समान कलाबाजी खाता हुआ अति शीघ्र समुद्र पार कर नाई पुरोहित के सनमुख पहुंच चौकडी भरकर खड़ा हो गया । पंडितजी को प्रणाम कर हमारे नायक जाहरवीर जोधा ने अपना मस्तक नवाया । सज्जनो, अपने सामने जाहरवीर जोधा को खड़ा देख, नाई पुरहित दोनों अति प्रसन्न हुए । फिर धीरज धर कर बोले, आप ने लौटने में बड़ी जल्दी की । तब राजकुमार जाहरवीर बोले । गुरु जी पहले परशाद पालो । आप दोनों सज्जन भूके होंगे । ये कह पुरोहित जी और नाई के सनमुख खाने पीने की सब ही वस्तु रख दी । जिन्हें दोनों गुरु चेलों ने उस मधुर मिष्ठान तथा कचौड़ी पूरियों को प्रेमपूर्वक, अपने अपने उदर में उतारकर ठन्डा नीर पिया । तब अति प्रसन्न हो गोगावीर से बोले ।

राजकुमार जी, आप जुग जुग जियो । आपकी उतनी उमर हो जावे जितनी सूर्य चन्द्रमा की है । आप सदा अमर रहें । आपकी कीर्ति तब तक कायम रहे जब तक गंगा जमुना में जल की धारा बहती है । ये हमारी अन्तरआत्मा की आवाज है जो खाली नहीं जा सकती । बन्धुओ, नाई पुरोहित की आशीर्वाद वर्षा

से जाहरवीर जोधा अति प्रसन्न हुए। पुरोहित जी के चरण छूकर सगाई की सकल सामिग्री उन्हें भली प्रकार समझा समझा कर सौंप दी और अपने दोनों हाथ जोड़कर बोले। गुरुदेव संभाल लो कोई चीज बाकी तो नहीं रह गई है। इतना सुनते ही पुरोहित जी ने फिर आशीर्वाद की झड़ी लगा दी। जब आशीर्वाद से छुटकारा मिल गया तब गोगाजी बोले।

गुरुदेव आपसे मेरी एक प्रार्थना है। आज्ञा करें तो आपसे कहने का उत्साह करूं। वैसे मुझे पूर्ण आशा है इस छोटी सी प्रार्थना मान लेने में आपका कोई विशेष हर्ज नहीं है। जब आपने मेरी सगाई का टीका चढ़ाया था और बाबा जी तथा पिताजी ने आपको दक्षिणा देनी चाही थी। तब आपने यह कह कर अस्वीकार कर दी थी कि यह आज से हमारी बेटी का घर हो गया है इसलिए किसी प्रकार की दान दक्षिणा हमें स्वीकार करने का अधिकार नहीं रहा है। इसलिए हम लोग कुछ भी स्वीकार करने में असमर्थ हैं। परन्तु अब यह रिश्ता टूट गया है और मैं आपके राजा का अब दामाद नहीं रहा हूं। इसलिए अब आप ये मेरी तुच्छ भेंट स्वीकार करें।

प्यारे मित्रो! जाहरवीर ने अपने गले की

मोतियों की माला और एक खुरजी भर कर मोहर अशरफी भेंट कीं। जिसे दोनों ने खुश हो बड़े प्रेम पूर्वक स्वीकार कर ली। भेंट स्वीकार हो जाने पर गोगा जी बोले। पुरोहित जी, जब आप राजकुमारी की सगाई करके लौटने लगें तब मुझसे ददरेड़ा नगर में आनकर मेरे पास सूचना भिजवा कर जरूर जरूर मिल लें। मुझे आप सिर्फ ये बता जायें विवाह कौन तारीख का पक्का हुआ है। जहां तक बने आप ये सम्बन्ध फागुन वदी नौमी का ही व्याह होने का पक्का करें। आपसे मुझे पूर्ण आशा है आप मुझसे बिना मिले तन्दुल नगरी हरगिज न जायेंगे। मुझे आपके हाथों राजकुमारी श्रीयल के वास्ते भेंट भी भेजनी है। इतना कह नाई पुरोहित को नमस्कार कर अपने नीले घोड़े पर सवार हो समुद्र पार कर अपने यहां के उसी वन में शिकार खेलने के वास्ते जा पहुंचे। जहां इनके सब यार दोस्त भाई बन्द इन्तजार कर रहे थे। अरजन सरजन, रतना भंगी, भज्जू कोतवाल और नरसिंह पान्डे वगैरह इन्हें अपने पास आया हुआ देख प्रसन्न हो उछलने कूदने लगे कि जाहरवीर भैया ऐसे कहां अलोप हो गए थे। हम लोग तुम्हारा इन्तजार कर करके महान दुखी हो

गए थे।

अपने मित्रों की प्रेम भरी मधुर बानी सुनकर जाहरवीर जोधा केवल मुस्करा कर रह गए। फिर सभी ने मिलकर भांति भांति के खेल खेलकर घोर वन के बीच जा शेर का शिकार खेला। शेर को घसीटते हुए ले जाकर अपने नगर ददरेड़ा आन पहुंचे। उधर दोनों नाई पुरोहित गोगावीर की बढ़ाई करते हुए राजकुमारी श्रीयल के वास्ते वर खोजने के लिए चल पड़े। बन्धुओ, अब हम यहां की वार्ता यहीं रोककर हमें गुरु गोरख नाथ जी महाराज के पीछे पीछे चलकर देखना है। वह बेचारे राजकुमारी श्रीयल के जन्म से एक वर्ष पूर्व अपने गुरू मछेन्द्र नाथ जी की तलाश में त्रिया राज्य की तरफ रवाना हुए थे। तब से उनकी खोज खबर किसी को नहीं मिली है। सो अगले अध्याय में लिखी जायेगी।

* श्री गोगा पुराण बत्तीसवां अध्याय समाप्त *

तेतीसवाँ अध्याय

त्रिया राज में गोरख लीला

प्यारे बन्धुओ, आपको पूर्ण रूप से ध्यान होगा कि पीछे अपने प्रमुख शिष्य कानिफानाथ को, गुरु

जालन्धर नाथ योगी ने राजा सिंधासिंह के महल में, उनकी पटरानी सिरौंजा सुन्दरी के सामने काफी डाट फ़टकार बताई थी कि तुम गोरखनाथ से द्वेष करना छोड़ कर, उससे कुछ सीखो और कुछ सिखाओ। वह बहुत विद्यमान योगी हैं। अपने गुरु देव परम योगी जालन्धरनाथ की वार्ता सुनकर, वह गोरखनाथ से मिले थे। और मीठे मीठे आम, आमिमंत्रित मंत की भस्म से मंगवाकर खिलाये थे। वह सारी कथा पीछे लिखी जा चुकी है जो आप पढ़ चुके होंगे कानिफा नाथ ने व्यंग किया था तुम्हारे वही गुरु है न। जो भोग विलास के चक्कर में त्रिया राज्य में फंसे पड़े हैं। गुरु गोरखनाथ महाराज बोले भाई, कोई बात नहीं आपके द्वारा मुझे पता चल गया कि मेरे गुरु मछेन्द्र नाथ जी महाराज कहां हैं और क्या कर रहे हैं। इतना कहकर प्रेमपूर्वक गले मिल अपने गुरु को खोजने त्रिया राज्य की तरफ चले गये थे क्योंकि बिना वहां जाये, अपने गुरु के उद्धार का कोई दूसरा उपाय नहीं था।

इस प्रकार सोच विचार करते हुए अपने लक्ष्य पर पहुंचने के वास्ते, मंजिल दर मंजिल तय करते हुए त्रिया राज्य की सीमा पर जा पहुंचे। जहां पुरुष

प्रवेश एकदम वर्जित था। कोई भी पुरुष राज्य के भीतर नहीं जा सकता था। वहां वीर नारियों का सख्त पहरा रहता था। जब गुरु गोरखनाथ जी महाराज को कोई उपाय नही सूझा तो वह बाहर ही एक पत्थर की शिला पर बैठ कर विचार मग्न हो गए। काफी समय बीतने पर भी जब कोई रास्ता समझ नहीं आया तो बैठे बैठे हरि गुणगान करने लगे। वह इस संकट से अति शीघ्र मुक्ती पाना चाहते थे। तो प्रभू कृपा से थोड़ी देर पश्चात क्या देखते हैं कि जिधर से आकर वे यहां पहुंचे हैं, उधर से ही कई रूपवती सुन्दर नारियां रथ में बैठी, उन्हीं की तरफ चली आ रही हैं। जिनमें एक नारा यौवन सम्पन्न अपसरा के समान अति सुन्दर सुसज्जित भेष भूषा में सुन्दर आभूषण पहने तबला सारंगी के साथ, रथ से उतर गोरख गुरु के निकट ही विश्राम करने के वास्ते अपनी साथिनों सहित ठहर गई।

तभी गुरु गोरख नाथ जी महाराज ने, उस सुन्दरी से पूछा। आप लोग सबकी सब कहां से आ रही हो और कहां जाने का विचार है। उसने अपने नयन मटका कर उत्तर दिया, हम लोग इधर एक दूसरे राज्य से आ रही हैं और वहीं की रहने वाली

हैं। त्रिया राज्य में जाने के विचार से यहां आई हैं। गुरु गोरखनाथ जी महाराज बोले किस कार्य के लिए, उत्तर मिला संगीत कला के प्रदर्शन दिखाने के लिए, गुरु गोरखनाथ बोले तो क्या यहां कोई संगीत कला विशारद नहीं है। उसने उत्तर दिया, है क्यों नहीं, परन्तु संगीत कला का भाव जुदा जुदा होता है। यहां की रानी मैनाकिनी को नवीन कला प्रदर्शन में भारी रूची है और प्रेम है। गुरु गोरखनाथ जी ने कहा आप कौन सा पाठ अदा करेंगी। आपका शुभ नाम क्या है। गुरु गोरख नाथ जी से, वह अपूर्व सुन्दरी मुस्करा कर बोली। मैं एक विधवा नारी हूं और नाच गाना मेरा व्यवसाय है। कलिंगा रानी मेरा नाम है। और जो पूछना हो खुशी से पूंछिए।

गुरु गोरखनाथ बोले, हम साधू सन्त हैं माताजी, हमें इससे क्या लेना देना। आप क्या करती हैं, क्यों करती हैं। मेरा अभिप्राय सिर्फ इतना है कि किसी प्रकार मुझे भी आप त्रिया राज्य में अपने साथ ले चलें। गुरु गोरख नाथ की वार्ता सुनकर, सुन्दरी कलिंगा रानी बड़े जोर से खिल खिलाकर हंस पड़ी और भौंयें टेढ़ी करके बोली। सन्त महात्मा होकर त्रिया राज्य के भीतर घुसने का अपना मतलब बयान

करो। ये तो मैं भी भली प्रकार जानती हूं कि कामदेव के प्रभाव से बड़े बड़े तपधारी ऋषि मुनि भी नहीं बचे तो आप किस गिनती में हैं। कलिंगा रानी की बात सुनकर गुरु गोरखनाथ महाराज बोले ये बात नहीं माता जी। मैं बाल ब्रह्मचारी केवल राज्य ही देखने के लिये जाना चाहता हूं। आप मेरे लिए गलत भावना मत बनाओ। मुझे तो पेट भरने के वास्ते केवल दो रोटी ही चाहिए।

गोरखनाथ की वार्ता सुनकर कलिंगा रानी ने सोचा इतना सस्ता सेवक जिसे पेट भरने को केवल दो रोटियां ही चाहिए, संसार भर में मिलना दुर्लभ है। परन्तु सबसे कठिन समस्या ये है, इसे अपने साथ ले किस प्रकार चलें। गोरखनाथ जी महाराज का दो रोटियों वाला तीर ठिकाने पर जाकर बैठा। तब कलिंगा रानी बोली, महात्मा जी मैं आप को किसी प्रकार भी त्रिया राज्य के भीतर ले चलने में एकदम असमर्थ हूं। इस राज्य के भीतर पुरुषों का प्रवेश निषेध है। गोरखनाथ महाराज ने पूछा माता जी वह किस वजह से और मनाही का क्या कारण है? कलिंगा सुन्दरी बोली मैंने ऐसा सुन रक्खा है यहाँ पवन सुत हनुमान जी रात के समय गर्जना

करते हैं। जिसको सुनकर कोई पुरुष जीवित नहीं रह सकता और स्त्रियां उस गर्जना को सुनकर गर्भवती हो जाती हैं। जिनके गर्भ से कन्यायें ही उत्पन्न होती हैं। बेटा कोई पैदा नहीं होता। गुरु गोरखनाथ बोले बड़ी विचित्र बात है। तब कलिंगारानी बोली ब्रह्मचारी जी मुझे तो यहां के जलवायु में इस प्रकार के गुण दिखाई देते हैं, जिसकी वजह से नर मर जाते हैं और नारियां गर्भवती हो जाती हैं।

गोरखनाथ महाराज बोले, माताजी हम तो योगी संन्यासी हैं। हमारा पवनसुत क्या बिगाड़ सकते हैं, अगर उन्होंने मुझे सताया तो मेरे पास उनका भी उपाय है। कलिंगा सुन्दरी ने पूजा, आपके पास ऐसा क्या उपाय है। गुरु गोरखनाथ बोले, मैं अपने तपोबल द्वारा जब चाहे स्त्री बन सकता हूं जब चाहे पुरुष। जब मैं अपना स्त्री रूप बना लूंगा तब पवन सुत हनुमान भी मुझे पुरुष नहीं कह सकते। कलिंगा रानी मन ही मन मुस्करा कर बोली, तब तुम्हें उनकी गर्जना सुनकर गर्भ भी धारण करना पड़ेगा। गुरु गोरखनाथ महाराज बोले, योगियों पर हनुमान जी की गर्जना का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता है। गुरु गोरखनाथ जी की वार्ता सुन सुनकर अपूर्व आनन्द

उसे आ रहा था और वह मन ही मन सोच रही थी इतना चतुर आदमी जो केवल दो रोटियों में ही गुजारा करले। जरूर अपने साथ रखना चाहिए। वो बोली, ब्रह्मचारी जी, आपको किस प्रयोजन के बहाने अपने साथ ले चलें।

गुरु गोरखनाथ जी बोले आप मुझे अपना साजिंदा बनाकर ले चलें। कलिंगा सुन्दरी ने कहा आप साजिन्दे के माने भी समझते हैं। साजिन्दा उसे कहते हैं जो साज बजाने में काफी निपुण हो। तुम्हें तो साज के सुर ज्ञान से कभी वास्ता भी नहीं पड़ा होगा तुम तो मुझे केवल साधू संन्यासी नजर आते हो। गुरु गोरख नाथ बोले, साज की बात ही क्या है, मैं गाने में भी काफी निपुण हूं। आप मेरा इम्तहान लेकर देख सकती हैं। इतना सुन कलिंगा सुन्दरी ने साज गुरु गोरखनाथ जी के सामने धर दिया। गुरु गोरखनाथ जी ने गन्धर्व विद्या की भस्म को अभिमं-त्रित करके मस्तक पर लगाई और सकल साजों को भांति भांति से बजाकर दिखला दिया। इसके बाद गुरु गोरखनाथ ने साज महिलाओं को पकड़ा दिया और उनके साथ स्वरों को मिला मिला कर गाना प्रारम्भ कर दिया। जिसके प्रभाव द्वारा पशु पक्षी

भी उनके आस पास संगीत की धुन सुनने को जमा हो गये।

कलिंगा सुन्दरी गोरखनाथ महाराज की गान विद्या देखकर अति प्रसन्न हुई। उन्होंने गुरु गोरख नाथ को अपने मन में हरफन मौला समझ लिया। कहने लगी सन्त बाबा तुमने हरफन मौला को भी हरा दिया। इस त्रिया राज्य की रानी मैनाकिनी आपके संगीत को सुनकर अति प्रसन्न होगी और उनसे हमें भरपूर इनाम इकराम मिलेगा। परन्तु महात्मा जो आपने हमें अपना नाम तो बतलाया ही नहीं, क्या है। गोरखनाथ जी महाराज बड़े शशोपंज में पड़ गए। वह अपना नाम बताना नहीं चाहते थे। नाम बताते ही सारा का सारा गुड़ गोबर एक हो जाने का भारी भय था। इसलिए वह अपना नाम छिपाकर बोले।

माता जी, आश्रम का तो मेरा कोई नाम है नहीं, वहां पर तो सन्त जी कहने से ही काम चल जाता है और पहले का मेरा नाम पूर्वडाम है। कलिंगा सुन्दरी ने विचारा सन्त बाबा को अपने साथ ले चलने में लाभ ही लाभ है। नुकसान किंचित मात्र भी नहीं है। वह अपनी सखियों के साथ रथ में जा

बैठी और गुरु गोरखनाथ जी महाराज सारथी के स्थान पर जाकर विराजमान हो गए। रथ त्रिया राज्य की तरफ चल पड़ा। त्रिया राज्य में एक चिन्ना पट्टन नामक स्थान है। जहां कलिंगा सुन्दरी के आदेशानुसार रथ रोक दिया गया। सायंकाल का समय था। सूर्य भगवान अस्त हो रहे थे। कलिंगा सुन्दरी ने रथ से उतरकर अपनी सखी सहेलियों के साथ मिलकर भोजन किया। दो रोटी गुरु गोरखनाथ जी महाराज को देकर अपने विस्तर बिछा सोने की तैयारी की और गुरु गोरखनाथ से बोली सन्त बाबा आप भी बिस्तर बिछाकर आराम करो।

गुरु गोरखनाथ महाराज जी बोले, माता जी, अभी तो नींद नहीं आ रही है और हम सन्तों का क्या सोना और क्या जागना। हम तो बैठे बैठे भी सो लेते हैं और जागते भी रहते हैं। कलिंगा सुन्दरी ने गुरु गोरखनाथ जी महाराज की वार्ता नहीं समझी और बिना समझे ही अपनी सहेलियों के साथ लेटकर खुर्राटें भरने लगी। गुरु गोरखनाथ जी बैठे बैठे विचारने लगे कि अपने गुरु मछेन्द्रनाथ महाराज को यहां के त्रिया जाल से निकालने का क्या उपाय किया जावे। तभी उनके दिमाग में एक उपाय आ

गया। उन्होंने अपने मन ही मन विचारा। अगर हनुमान जी को इस राज्य के भीतर घुसने ही न दिया जावे, तो सम्भव है समस्या का हल निकल आवे। उन्होंने अपने मन में निर्णय करके मोहनास्त्र, नागास्त्र, इपशास्त्र, बज्रास्त्र और प्रक्षेपास्त्र आदि के मन्त्रों द्वारा ऐसी व्यवस्था की कि त्रिया राज्य के भीतर हनुमान जी आ ही न सकें।

हनुमान और श्रीराम से गुरू गोरखनाथ की भेंट वार्ता

उस समय हनुमान जी का निवास सेतुबन्ध रामेश्वर में था। वह सदैव भगवान राम की सेवा सुश्रूषा में रहते थे। त्रिया राज्य में उनके आगमन का समय एक पहर रात्रि बीत जाने पर्यन्त था। जब गुरु गोरखनाथ जी के सावर मन्त्रों द्वारा अस्त्रों की व्यवस्था हो चुकी, उसके बाद ही हनुमान जी त्रिया राज्य की सीमा तक आये। उन्होंने ज्योंही सीमा के भीतर अपना कदम रखा, तभी उनके हृदय पर बज्रास्त्र का आघात लगा। जिससे वह मूर्छित हो भूमि पर गिर पड़े। उसके पीछे इपशास्त्र ने अपना प्रभाव दिखाया जिससे वह पृथ्वी के आकर्षण में बन्ध

गए । उनकी सभी गति विधियां शान्त हो गईं । इस के बाद मोहनास्त्र की बारी आई जिससे वह ऐसे सम्मोहित हो गए कि किसी भी क्रिया का विरोध न कर सके । उसी स्थिति में नागास्त्र ने उन्हें बांध लिया और उन्हें त्रिया राज्य की सीमा से काफी दूर फैंक दिया ।

बहुत देर बाद जब हनुमान जी की चैतन्यता लौटी । परन्तु उनकी समझ में कुछ भी न आया कि ये सब हुआ कैसे । तब अधीर हो उन्होंने भगवान राम को याद किया । हनुमान जी के स्मरण करते ही भगवान राम आनकर प्रगट हो गए । अपने दास की बहुत बुरी अवस्था देखी । तब हनुमान जी से पूछने लगे । हनुमान जी ने उन्हें अस्त्र शस्त्रों का सारा विवरण सुनाया और बोले, भगवान आपके अजय दास की ये दुर्दशा । इसका क्या कारण है । भगवान राम ने जब ध्यान लगाकर देखा, तो उनसे कोई भी घटना छिपी नहीं रही । उन्होंने तुरन्त ही अपने गरुड़ास्त्र, इन्द्रास्त्र, ज्ञानास्त्र का प्रयोग कर हनुमान जी को गुरु गोरखनाथ जी के सभी अस्त्रों से मुक्त कर दिया । हनुमान जी को आई हुई विपत्ती से छुटकारा मिल गया ।

उन्होंने भगवान राम के सम्मुख अपने को बहुत ही अपमानित समझकर हाथ जोड़ मस्तक नवाकर धीरज खोकर, अधीर होकर बोले, प्रभूजी आपके दास की ये दुर्दशा करने वाला कौन राक्षस पैदा हो गया, मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है । ये तो कोई मेघनाथ सरीखा दैत्य दानव होगा । देवताओं और मनुष्यो में तो कोई ऐसा बलबान नजर नहीं आता, जो आपके इस दास को दुख देकर, इससे लोहा ले । भगवान बोले, पवन सुत हनुमान जी, कोई दैत्य दानव इस भांति तुम्हें अपमानित करने की शक्ति नहीं रखता । देवताओं और मनुष्यों में भी आपके सामान कोई बलशाली नहीं हैं । परन्तु सेर को सवा सेर हमेशा पैदा होता रहता है । इसीलिए कहा गया है कि गरूर का सिर सदैव नीचा रहता है । इस सामर्थ्य का पृथ्वी पर एक मनुष्य पैदा हो गया है । हनुमान जी बोले, प्रभू आप उसका नाम बतावें । बिना खता मुझे सताने का उस दुष्ट को परिणाम शीघ्र भुगतना पड़ेगा । मैं उसे उसकी दुष्टता की शिक्षा देना चाहता हूं ।

भगवान राम मधुर मुस्कान बखेर कर बोले, पवन सुत शांत हो जाओ । जो भी कदम उठाओ

सोच समझकर विचार पूर्व उठाओ। कहीं दई के धोके में चूना खा जाओ। बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय, काम बिगारे आपनो जग के लोग हंसाय। हनुमान जी अपने विरोधी के बल की परीक्षा किये बगैर, उलझ पड़ना बहुत ही नादानी है। हनुमान जी अपने दोनों हाथ जोड़ बोले प्रभू जी! जब तक उसके नाम का पता न चले, उसके बल की परीक्षा की जांच किस प्रकार की जा सकती है। भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज बोले, हनुमान जी, पृथ्वी पर इस समय में नाथ सम्प्रदाय का काफी जोर शोर है। नाथ सम्प्रदाय के योगी जन ही इस प्रकार के चमत्कार कर सकते हैं। परम योगी सन्त मछेन्द्र नाथ जी द्वारा, प्रदत्त भस्मी से, भगवान हरिहर ने, भक्तों का कष्ट हरने के लिये अवतार लिया है। जिन का वर्तमान नाम गुरु गोरखनाथ है।

हनुमान जी उछल कर बोले प्रभू जी, मछेन्द्रनाथ का चेला गोरखनाथ इतना बड़ा शक्तिशाली हो गया है। जिनका गुरु त्रिया राज्य के भीतर, भोग विलास के चक्कर में फंसा पड़ा है। भगवान बोले, हनुमान जी इसमें आश्चर्य की क्या बात है। सब करने की ही विद्या होती है। तपस्या में बड़ी भारी सामर्थ्य

है, तपस्वी क्या नहीं कर सकता। तपस्वी से भिड़ना कोई हंसी खेल नहीं है। हनुमान जी बोले प्रभु, एक से एक बड़े चढ़े साधन कर्ता, उपासक, हरि भक्त, इस नाशवान संसार में विराजमान हैं। क्या वह तपस्वी के आगे सभी सामर्थ्यहीन हैं। क्या तपस्वी से सब ही का दरजा नीचा है। भगवान बोले पवन सुत बात कुछ इसी प्रकार की है। परन्तु गोरखनाथ योगी का अभिप्राय, आपका अपमान करना नहीं है। वे तो अपने गुरु मछेन्द्रनाथ को इस त्रिया राज की कीचड़ से बाहर निकाल कर अपने साथ ले जाना चाहते हैं। इसी कारण से उनके नाथ सम्प्रदाय की बदनामी हो रही है। उन्होंने आपको अपना चमत्कार दिखाकर सूचित किया है कि आप उनके कार्य में, कतई भी बाधा न डालें।

भगवान राम की बात सुनकर हनुमान जी बोले प्रभू, मछेन्द्रनाथ जी तो मेरी आज्ञानुसार ही त्रिया राज्य की रानी मैनाकिनी के साथ रहते हैं। मैंने ही मैनाकिनी महारानी को उनकी सेवा करने का आदेश दिया है। अगर ये अपने गुरु मछेन्द्र नाथ जी को त्रिया राज्य से निकाल ले जावेंगे तो भारी उलझन उत्पन्न होगी। भगवान बोले, परन्तु उपाय भी तो

दूसरा नहीं है। वह अपने गुरु को अपने साथ निकाल ले जाने के वास्ते ही यहां आये हैं। उन्हें इस शुभ कार्य से कैसे रोका जा सकता है। हनुमान जी बोले। प्रभूजी, अगर आप उन्हें समझायें तो क्या वह आपकी बात भी न मानेंगे। कोई किसी की अन्याय पूर्ण वार्ता क्यों स्वीकार करेगा। कृपा कर आप उन्हें मेरे साथ चलकर समझा कर तो देखें। शायद आपकी बात मान जायें। अगर वह किसी तरह मान जायें तो मेरी बात खराब नहीं होगी।

भगवान ने हनुमान जी की प्रार्थना स्वीकार कर ली। दोनों ने अपना बाना बदलकर ब्राह्मण का भेष धारणकर, चिन्नापाटन की तरफ प्रस्थान किया और गुरु गोरखनाथ के सामने वहीं जा पहुंचे जहां चिन्ना पाटन में कलिगा सुन्दरी अपनी सखियों के साथ, गहरी निद्रा में बेहोश हो सो रही थी। वहीं गुरू गोरखनाथ अपने आसन पर विराजमान हुए हरि गुण-गान कर रहे थे। रात्रि आधी से भी अधिक बीत चुकी थी। जल जीवों के शब्द साफ सुनाई पड़ रहे थे। ऐसे बेवक्त समय में, गुरु गोरखनाथ महाराज ने दो ब्राह्मणों को अपने सामने आते देखा। गुरु गोरख को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। एक तो घोर रात्रि का समय

दूसरे उनके अस्त्रों की व्यवस्था, तीसरे पुरुष प्रवेश का वर्जित होना। इन दोनों को सीमा के अन्दर घुसने से, किसी ने क्यों नहीं रोका। गुरु गोरख इसी प्रकार सोच विचारकर चिन्ता में मग्न थे। तब तक वह दोनों ब्राह्मण उनके सम्मुख आन पहुंचे।

उन्हें अपने सामने खड़ा देख, गुरु गोरख उठकर खड़े हो गये और आदरपूर्वक हाथ जोड़कर दोनों को प्रणाम किया। उनका स्वागत कर, उन्हें अपने आसन पर बिठा लिया। फिर अपना मस्तक नवाकर बोले हे ब्राह्मण देवता, आप दोनों सज्जन कौन हैं और किस उद्देश्य से कहां से पधारे हैं। आधी रात के बाद किस कारण से मेरे पास आये हैं। अपना प्रयोजन बताने की कृपा करें। ब्राह्मण भेषधारी भगवान राम बोले, हम दोनों एक विशेष कार्य के कारण से आपके पास आये हैं। यदि आप उसे पूरा करने का वचन दें तो सभी कुछ वृतान्त आपको बताया जाये।

भगवान राम की बाणी सुनकर गुरु गोरख को भारी संशय हुआ। वह सोचने लगे। इन दोनों ब्राह्मणों का यहां आने का उद्देश्य जाने बिना बचन देने से कोई लाभ तो होना नहीं,परन्तु हानि होने की सम्भावना अवश्य हो सकती है। न मालूम ये कौन

महापुरुष हैं और मुझसे क्या चाहते हैं ? न मालूम कितने देव दानव अपना रूप छिपाये भेष बदले इस पृथ्वी पर घूमा करते हैं । इस प्रकार अपने मन में सोच विचारकर धारणा बना गुरू गोरखनाथ बोले हे विप्रदेव ! बिना आपका परिचय प्राप्त किये वचन-बद्ध होना नीति विरुद्ध सिद्धांत है । वचन में प्रथम ही बन्ध जाने के कारण ही ब्राह्मण भेषधारी बटू भगवान ने राजा बलि को पाताल लोक पठा दिया था । इसलिए आप लोग प्रथम अपना परिचय दें कि आप दोनों सज्जन कौन हैं ।

भगवान राम जानते थे कि उनका परिचय जरूर पूछा जायेगा । गोरखनाथ की बात सुन मुस्कराकर बोले । योगीराज आपसे क्या छिपा है । मेरा नाम राम है और ये हनुमान जी हैं । मुझे आपके पास, अपने इस परम भक्त के कारण आना पड़ा । गोरख गुरु ने दोनों महापुरुषों के चरण छूकर उन्हें प्रणाम किया । भगवान राम बोले अब तो परिचय मिल गया । अब तो आप हमारे कार्य करने का वचन भर दें । गुरू गोरख बोले । प्रभु वचन बद्ध होने से पहले मैं आपकी आज्ञा भी जानना चाहता हूं । भगवान राम जी बोले 'हनुमान जी योगीराज को अपनी मनोभावना

बताओ । भगवान राम की आज्ञा पाकर हनुमान जी बोले, योगीराज महाराज, मुझे पता चला है कि मछेन्द्रनाथ जी आपके गुरुदेव हैं और आप उन्हें इस त्रिया राज्य से बाहर निकालकर अपने साथ ले जाना चाहते हैं । परन्तु मछेन्द्रनाथ जी मेरी आज्ञा अनुसार यहां आये हैं उन्हें यहीं रहने दें ।

गुरु गोरखनाथ महाराज बोले, पवनसुत मुझे आपकी आज्ञा न मानने का काफी दुख है । परन्तु जरा आप ही सोचें क्या अपने गुरुदेव को इस नरक कुन्ड में गोते खाने के लिए यूं ही छोड़ देना मेरे लिए उचित है । क्या यहां फंसे रहने के कारण उन की योग साधना में विघ्न नहीं पड़ रहा है । उनके इस नरक कुन्ड में गोते खाने के कारण जगत में नाथ पन्थ की कितनी निन्दा हो रही है । गुरु गोरख की उचित वार्ता सुनकर, हनुमान जी भारी सोच में पड़ गये । हनुमान जी को सोच विचार करते देख कर गुरु गोरखनाथ महाराज बोले, अन्जनी सुवन, मैं अपने गुरु को इस नरक कुन्ड से निकाल कर ले जाना चाहता हूं, इस कार्य में आपको मेरी सहायता करनी चाहिये । हनुमान जी बोले, योगी राज जब मैंने उन्हें खुद यहां रखा है और मेरी मरजी से

यहां रह रहे हैं। तो मैं आपकी सहायता किस प्रकार कर सकता हूं। गुरु गोरखनाथ बोले, आप सहायता करें या न करें, मैं इस कीचड़ से उन्हें निकालूंगा अवश्य ही। मेरा कर्तव्य तो आपसे प्रार्थना करने का था, अपनी बात को आप समझो।

हनुमान जी थोड़े तुर्स होकर बोले, योगीराज मेरे होते हुए आप उन्हें यहां से निकाल कर ले जा नहीं पाओगे। गोरखनाथ जी महाराज ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया। कपिराज आप भी कान खोल कर सुन लो। संसार की कोई शक्ति भी मेरे इस शुभ कार्य में बाधा नहीं डाल सकती है। इतना सुन हनुमान जी गरज कर बोले, फिर आपको मुझ से युद्ध करना पड़ेगा। मेरी आज्ञा का उल्लंघन इस संसार का कोई व्यक्ति नहीं कर सकता है। इतने पर भी गोरखनाथ मधुर वाणी से दृढ़ता पूर्वक बोले, हनुमान जी, अगर सीधी तरह मेरा कार्य न बना और युद्ध करने के लिए विवश होना पड़ा तो युद्ध भी करूंगा।

हनुमानजी ने गुस्से में भरकर अपनी गदा उठाई तो रामचन्द्र ने उन्हें रोककर समझाया। पवन सुत क्रोध से हर काम आसान नहीं हो जाता, अगर आप को क्रोध ही करना था तो मुझे अपने साथ क्यों लाये

काम बनाने के लिए नीति बरतनी परम आवश्यक है। पहले आप मुझे यह बतायें क्या आपने मैनाकिनी रानी को जीवन पर्यन्त के लिए मछेन्द्र नाथ के संग सुख भोगने का वरदान दिया है। हनुमान जी शांत स्वर में बोले नहीं, तब प्रभु बोले, क्या आपने मछेन्द्र नाथ योगी को जिन्दगी भर राज्य सुख भोगने का वचन दिया है। हनुमान जी बोले ऐसा भी नहीं है नाथ। तो भगवान राम बोले तब तुम्हारा क्रोधित होना वृथा ही है। योगी मछेन्द्र नाथ काफी समय से आपकी आज्ञा पालन में लगे हुए हैं। अब आप उन्हें उनकी इच्छा पर छोड़ दो। वह अपने शिष्य गोरख नाथ के साथ जांय या न जायें।

अगर गोरखनाथ अपना कार्य कुशलतापूर्वक करके अपने गुरु मछेन्द्र नाथ को अपने साथ ले भी जावेंगे तब भी तुम्हारे वचन की कोई निन्दा नहीं कर सकता। कारण आप जिन्दगी भर का ठेका लेकर किसी से बचन बद्ध नहीं हुए थे। हनुमान जी नम्र पड़कर धैर्य धर बोले, तो प्रभू अब मेरा कोई कर्तव्य शेष नहीं रहा। भघएान मुस्करा कर उन्हें अधीर होते देख कर बोले। आप रानी मैनाकिनी और योगीराज मछेन्द्र नाथ को सूचित कर

दें कि आप के त्रिया राज्य में, गोरख नाथ अपने गुरु को साथ ले जाने के लिए आन पहुंचा है। आप दोनों सचेत रहे। हनुमान जी ने भगवान के वचनों को सुन अपना मस्तक नवा कर शिरो धार्य किया। और गुरु गोरख नाथ जी महाराज ने, भगवान राम की उपरोक्त नीति की मन ही मन सराहना कर दोनों के चरणों में अपना मस्तक नबाया। तब भगवान राम बोले।

योगीराज हनुमान जी की बातों का बुरा नहीं मानना। ये पुराने जमाने के निश्छल व्यक्ति हैं और अपने दिये हुए वचन को पूरा करने में अपनी जान की बाजी लगाने को हर किसी से उलझ पड़ते हैं। इनके जो भीतर है, वही बाहर है, हर मनुष्य को अपने दिए हुए वचन का पालन करना तन मन धन से परम आवश्यक है। जो गन्दे लोग वचन देकर किसी के साथ धोखा करके, अपने वचन से फिर जाते हैं। वह घोर नरक कुन्ड में जाकर नरक भोगते हैं। इस लोक में निन्दा के पात्र होते हैं और परलोक में नाना प्रकार के दुख भोगकर घृणा पूर्ण योनियों में बार बार जन्म लेकर कल्पों तक जीते और मरते रहते हैं। जो की हुई प्रतिज्ञा का पालन करते हैं, उनकी देवताओं के

समान शक्ति हो जाती है। हमारे पूर्वजों के नाम इसी लिए संसार में अजर अमर हैं कि उन्हें अपने वचन पालन करने में अपने प्राण न्यौछावर करते हुए तनिक सी भी हिचकिचाहट नहीं होती थी। यही खूबी इन अन्जनी सुवन में भी है। हम रघुवंशियों की नीति की तो घर घर चर्चा है। रघुकुल रीति सदा चली आई प्राण जायें पर वचन न जाई। इसलिए मेरे कहने से अगर हनुमान जी की वार्ता में कुछ गलती भी है तो आप उन्हें क्षमा कर दें।

भगवान राम की वार्ता सुनकर, गुरु गोरखनाथ जी महाराज बोले, प्रभू जी ! आप इस प्रकार मुझे क्यों शर्मिन्दा कर रहे हैं। हनुमान जी हमारे बुजुर्ग भी हैं और देवता भीं। मुझे इनकी आज्ञा का जरूर पालन करना चाहिए था। परन्तु मैं बेबस इसलिए हो गया कि अपना भी कर्त्तव्य पालन करना मेरा धर्म था। फिर इस कर्त्तव्य पालन में लोक निन्दा का भय भी दूर भागता नजर आएगा। मैं हनुमान जी के अपार गुण गाने की शक्ति नहीं रखता। जिनकी वजह से आपके दर्शन मुझे अनायास ही हो गए जो बड़े बड़े तपधारियों को भी दुर्लभ है। आपके और पवनसुत के दर्शन कर मैं अपने आपको सबसे

बड़ा सौभाग्यशाली समझ रहा हूं। गुरु गोरखनाथ अपने मन की मनोभावना बखानते ही रहे। भगवान राम हनुमान जी को इशारा कर अन्तर्ध्यान हो गए। गुरु गोरखनाथ हाथ जोड़े उनका आदर भाव करते खड़े के खड़े ही रह गए।

भगवान के अन्तर्ध्यान हो जाने के पश्चात हनुमान जी गुरु गोरखनाथ को आशीर्वाद दे त्रिया राज्य की महारानी मैनाकिनी के राज्य भवन में जा पहुंचे। उस समय रात्री काफी बीत चुकी थी। दिन निकलने में डेढ़ दो घन्टा ही केवल बाकी था। राज भवन का वातावरण शान्तीपूर्ण था और प्रकाश के लिए घी की दीप मालिका जगमगा रही थी। राजमहल का फाटक बन्द था। सभी सेविकायें मीठी निद्रा का आनन्द ले रही थीं। जब हनुमान जी रानी मैनाकिनी के पलंग के पास पहुंचे। तब भी वह प्रगाढ़ निद्रा के वशीभूत हो चारों खाने चित्त पड़ी पड़ी कोई मधुर स्वप्न देख कर मुस्करा रही थी। हनुमास जी ने उन्हें जगाने के लिए कई उपाय किए परन्तु उसकी निद्रा किसी भी उपाय से भंग नहीं हुई। तब हारकर उन्होंने रानी मैनाकिनी को झकझौर कर उठाया। तब रानी की निद्रा भंग हुई। पवन सुत को सामने खड़ा देख कर

एकदम हड़बड़ा कर उठ कर बैठ गई। उन्होंने तुरन्त ही उठ कर हनुमान जी के बैठने को आसन दिया और उनके सामने दोनों हाथ जोड़ कर मस्तक नवा मधुर स्वर में बोली।

प्रभू! इस बेवक्त पधारने का कष्ट आपने क्यों किया है। अन्जनी सुवन अधीर हो बोले, जिसके भक्त पर संकट हो वह कैसे बेचैन न होकर चैन से बैठा रह सकता है। हनुमान जी की वार्ता सुनकर रानी मैनाकिनी के होश उड़ गए। वह एकदम घबराकर अपने दोनों हाथ जोड़ कर बोली। मुझ पर कौन सा संकट आने वाला है। प्रभु जी, साफ साफ कहो। हनुमान जी बोले, रानी वैसे तो वह कोई खास संकट नहीं है। फिर भी मानसिक कलेश बड़ा भारी है। मैनाकिनी बोली आपकी रक्षा का हाथ हमारे शीश पर रहते हुए संकट चाहे कैसा भी क्यों न हो भागता नजर आना चाहिए। बड़े ही ताज्जुब की बात है जो आप भी अधीर हो अपना धीरज खो बैठे हैं। फिर भी बताओ तो सही वह कौन सा संकट आने वाला है। मुझे स्पष्ट बताने की दया करें। मैं इस समय आपकी बात सुन कर अपना धीरज खोकर अधीर हो उठी हूं।

रानी मैंनाकिनी की अधीरता देख हनुमान जी बोले। एक समय मैंने तुम्हारे प्रार्थना करने पर तुमसे कहा था तुम्हारी काम इच्छायें योगी मछेन्द्रनाथ द्वारा पूरी हो सकती हैं। वह बारह वर्ष से आपके पास रह रहे हैं और तुम्हारी मनोइच्छा की पूर्ति कर रहे हैं। जिसकी वजह से तुम्हारे उदर से एक पुत्ररत्न भी उत्पन्न हुआ है। परन्तु मछेन्द्रनाथ का चेला, गोरखनाथ बड़ा ही कट्टर बेरहम सख्त दिल का शक्तिशाली योगी है। जिसके सामने ब्रह्मा का भी बस नहीं चल सकता। ऐसी ऐसी उसे सिद्धियां प्राप्त हैं। उसने अपने गुरु के अलावा दूसरे सन्तों से भी अनेक विद्यायें सीखी हैं। वह जब चाहे एक नये संसार की रचना कर सकता है। जब चाहे भारी अनिष्ट भी कर सकता है। वह अपने गुरु मछेन्द्र नाथ को तलाश करता हुआ यहां आन पहुंचा है और उनको अपने साथ वापिस लेकर यहां से जायेगा।

हनुमान जी की वार्ता सुनकर रानी मैंनाकिनी बहुत बुरी तरह घबरा गई। अपना धीरज खोकर, अधीर हो अन्जनी सुत कैं चरण पकड़ कर अपनी दोनों रतनारे नयनों से नीर की बरसा मोतियों के समान करती हुई बोली। प्रभु, कोई तो युक्ती

कीजिए, जिससे गोरखनाथ अपने गुरु को यहां से न ले जा सकें। हनुमान जी बोले, गोरखनाथ संसार भर की सभी युक्तियां काटने में परिपूर्ण है। उसे हटाना महा कठिन कार्य है। रानी मैंनाकिनी अधीर हो बोली, तो प्रभु--किसी प्रकार भी उसे समझा बुझा कर ही यहां से भगाइए। पवन सुत बोले वह समझाने बुझाने से भी काबू में नहीं आता। उसका तो सिर्फ एक ही कहना है इस नर्क कुन्ड की दलदल से अपने गुरु को निकाल कर अपने साथ वापिस लें जाऊंगा। रानी मैंनाकिनी आंखों में आंसू भरकर निराश हो बोली। तब कोई उपाय नहीं है प्रभू।

इतना सुन हनुमान जी बोले मेरी समझ में एक ही उपाय बाकी है। जो तुम्हारे ऊपर निर्भर है। तुम अपने त्रिया चरित्र के हावभाव दिखाकर मछेन्द्र नाथ को अपने मोहनी रूप से बांधे रखो। यदि मछेन्द्रनाथ तुम्हारे रूप के बन्धन में जकड़ कर बंध गये और तुम्हारे रूप के जाल का बन्धन जकड़कर बन्ध गया तो गोरखनाथ अपने गुरु को यहां से किसी प्रकार भी नहीं ले जा सकेगा। अगर तुम्हारा बन्धन ढीला रह गया तो गोरखनाथ मछेन्द्रनाथ को अवश्य ही अपने साथ ले जायेगा। रानो मैंनाकिनी कुछ

और प्रश्न करती परन्तु सुबह हो जाने के कारण वह ब्रह्ममहूर्त में भगवान राम की सेवा में पहुंचने के कारण अन्तर्ध्यान हो गए, रात्रि समाप्ति पर थी।

प्रातःकाल होनेका समय निकट था तभी कलिंगा सुन्दरी और उसकी सभी सखी सहेलियों की निद्रा भंग हो गई। दिन निकलने का समय जान जब उस ने उठकर देखा तो गुरु गोरखनाथ जी महाराज पदम आसन लगाये हुये, अपने बिछे हुए आसन पर विराज-मान थे। वह अपनी सभी सखी सहेलियों को उठा कर, अपने संग लेजाकर जल्दी जल्दी नित्य कर्म से फारिग हुई। गोरखनाथ जी महाराज भी निबटे हुए तैयार बैठे हुए थे। सबके रथ में सवार हो जाने के पश्चात गुरु गोरख भी सारथी के स्थान पर बैठ कर रथ हांकने लगे। चिन्ना पाटन से चला रथ त्रिया राज्य की राजधानी श्रृंगमुण्ड में राजसभा के प्रथम द्वार पर जा पहुंचा। जहां गुरु गोरखनाथ ने तुरन्त ही रथ को रोक दिया। सब सुन्दरियां रथ से उतर पड़ीं, तभी कलिंगा सुन्दरी ने गुरु गोरखनाथ से कहा सन्त जी महाराज, अब तुम्हें तुरन्त ही अपना स्त्री रूप बना लेना चाहिए। अन्यथा आपके साथ हम भी घोर संकट में पड़ जावेंगी।

इतना सुनते ही गुरु गोरखनाथ ने योगमाया द्वारा अपने चोले को नारी रूप में परिवर्तित कर लिया। गुरु गोरख का स्त्री रूप निहार कर कलिंगा सुन्दरी और उसकी सभी सखी सहेलियां मन ही मन मुस्करा कर बड़ी विस्मित हुई। गुरु गोरखनाथ से हंसकर मधुर वाणी में बोलीं। बाबा जी आपने तो अपनी सुन्दरता के कारण इन्द्रलोक की अपसराओं को भी मात दे दी। औरों की तो बात ही क्या है, इस त्रिया राज्य की कोई भी सुन्दरी आपके मुकाबले में सुन्दर नहीं होगी। कलिंगा सुन्दरी की बात सुनकर गुरु गोरखनाथ जी मुस्करा कर रह गये।

कलिंगा सुन्दरी ने राज्य नियमानुसार अपनी एक चतुर सखी को सेविका बना कर, रानी मैनाकिनी के दरबार में भेजा। जिसने मछेन्द्रनाथ जी के पास बैठी हुई महारानी मैनाकिनी को अपने दोनों हाथ जोड़-कर नमस्कार किया। उसके बाद निवेदन किया। आदरणीय महारानीजी मेरी स्वामिनी कलिंगा गायिका आपके सामने अपनी संगीत कला का प्रदर्शन दिखाने बहुत दूर से आई हैं। अगर आज्ञा दें तो हम सब लोग, आपके सम्मुख उपस्थित होकर, अपनी कला का प्रदर्शन दिखा कर आपका मनोरंजन करें। बन्धुओं,

त्रिया राज्य की स्वामिनी मैनाकिनी इस समय अपने मानसिक दुख के कारण बड़ी अधीर थी, परन्तु मन बहलाव के कारण तुरन्त ही स्वीकृति दे दी कि कुछ तो अधीर मन को धीरज बंधेगा ही। कलिंगा सुन्दरी की चतुर सखी ने आनकर कहा स्वीकृति तो मिल गई है, परन्तु महारानी अनमनी सी बैठी हुई थी। अगर तुरन्त चलकर उनका मनोरंजन किया जाये और हमारे कला प्रदर्शन से उनका अनमनापन दूर हो जाये तो काफी पुरस्कार मिलने की सम्भावना है।

इतना सुनते ही कलिंगा सुन्दरी ने अधीर हो, अपनी सभी सखी सहेलियों को और स्त्री भेषधारी गुरु गोरखनाथ को संग लेजाकर दरबार हाल में पहुच महारानी मैनाकिनी को अभिवादन किया जहां वह अपने रत्नजड़ित सिंहासन पर, मछेन्द्र नाथ के साथ विराजमान थीं। पश्चात कलिंगा सुन्दरी की सकल सखी सहेलियों ने, अपने सुन्दर साजों के स्वरों को ठीक किया। गुरु गोरखनाथ ने भी मृदंग (तबला) बजाना प्रारम्भ कर दिया। स्वर ठीक हो जाने पर कलिंगा सुन्दरी मुस्करा मुस्करा कर, अपने मधुर कंठ से गाने लगी। जिसने सभी स्त्री समाज का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। फिर गाना बन्द

करके नाचना शुरू कर दिया। जिससे प्रसन्न हो सबने उसके नाच गाने की भी प्रशन्सा की। उसी समय कुछ महिलाओं का ध्यान मृदंग (तबले) की थाप की तरफ गया, जो उसके बजाने की थपकी की अद्‌भुत विशेषता थी।

चेत मछेन्द्र गोरख आया

मृदंग की ध्वनि सुनकर महारानी मैनाकिनी मग्न हो गई। उनका अनमनापन उस वक्त गायब हो चुका था। परन्तु मछेन्द्रनाथ का बहुत बुरा हाल था। उन्हें मृदंग की थाप की धुनी से बार बार ये बोध मिलता था। चेत मछेन्द्र गोरख आया। धीरे धीरे ये शब्द और अधिक स्पष्ट हो गये। जिससे उन के धीरज का बांध टूट गया और अधीर हो वह बड़े व्याकुल हो गये। उन्हें सिंहासन पर बैठना दूभर हो गया। जब महारानी मैनाकिनी ने मछेन्द्रनाथ को बहुत बेचैन देखा तो उनका भी सुख चैन हवा हो गया। हनुमान जी की बताई गोरख लीला का चक्कर ही उन्होंने समझा। तब वह बोली मुझे ऐसा लगता है आपको यह नृत्य गान रुचा नहीं। आप कहो तो इसे इसी समय बन्द करवा दिया जाय। मछेन्द्रनाथ बोले। रानी हुआ तो कुछ नहीं सचेत

जरूर कर दिया गया हूं।

महारानी ने घबरा कर उत्सुकता से पूछा, आपका अभिप्राय मैं समझ नहीं सकी। मछेन्द्रनाथ बोले, नहीं समझी हो तो अब समझने का प्रयत्न करो। देखो इस मृदंग से क्या धुनी निकल रही है। मैनाकिनी रानी बोली, आप ही बतावें मुझे तो इसके समझने का ज्ञान ही नहीं है। मछेन्द्रनाथ बोले, मृदंग की धुनी साफ कह रही है 'चेत मछेन्द्र गोरख आया'। अगर ध्यानपूर्वक कान लगा कर सुनोगी तो साफ साफ समझ में आ जायेगा। अपने गुरु देव की वाणी सुनकर गोरखनाथ ने धुनी और स्पष्ट कर बजाई तो वह बोली। शब्द तो कुछ इसी प्रकार के लगते हैं, जैसा आप कह रहे हो। परन्तु इसका अभिप्राय क्या है। जो आप इतने अधीर हो रहे हो। मछेन्द्रनाथ धीरज धर कर बोले। महारानी अभिप्राय तो स्पष्ट है, मेरा शिष्य गोरख आन पहुंचा है और मुझे उसके साथ जाना पड़ेगा।

महारानी मैनाकिनी तो हनुमान जी द्वारा पहले से ही सचेत हो, धीरज धरे अधीर हुई बैठी ही थीं। उसकी समझ में साफ साफ आ गया। यही मृदंग बजाने वाली नारी गोरखनाथ के अतिरिक्त दूसरी नहीं

है, फिर भी उसने स्त्री भेषधारी गोरखनाथ को वहां से हटाकर दूसरी स्त्री से मृदंग बजवाया। उसकी धुनी वैसी न बज पाई जैसी गोरखनाथ की बज रही थी। ये परीक्षा और भी कई सुन्दरी बादिकाओं द्वारा ली गई जो सब की सब वैसी धुनी बजाने में असफल रहीं। अन्त में फिर उस स्त्री भेष धारी गोरखनाथ से बजवा कर देखी तो उसकी धुनी और साफ निकलने लगी 'चेत मछेन्द्र गोरख आया'। अब उसे यह बिल्कुल पक्का यकीन हो गया ये स्त्री भेष धारी गुरु घण्टाल गोरखनाथ के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है।

उसने तुरन्त ही गोष्ठी समाप्त कर कलिंगा सुन्दरी और उसकी साथिनों को, इनाम इकराम देकर विदा हो जाने की आज्ञा दी तथा मृदंग वादिका को वहीं बैठे रहने का आदेश दिया। कलिंगा सुन्दरी ने अत्यन्त भयभीत होकर कहा। महारानी जी, इसे मत रोकिये, इसके बिना तो हमारा व्यौपार ही ठप्प हो जायेगा। इस जैसी सुन्दर मृदंग बजाने वाली सुन्दरी कहां मिलेगी। मैनाकिनी रानी बोली, यह स्त्री नहीं पुरुष है। हमारे त्रिया राज्य में पुरुष प्रवेश वर्जित है। इसलिए तुमने इसे स्त्री भेष में यहां लाकर भारी अपराध किया है। राज्य के नियमानुसार

बजाय पुरस्कार के तुम्हें भारी दन्ड मिलना चाहिये था। लेकिन हमने तुम्हारे प्रदर्शन से प्रसन्न होकर तुम्हें कुशलपूर्वक जाने को कह दिया है। इस छद्म-वेशी को यहां से नहीं जाने दिया जायेगा।

महारानी मैनाकिनी की गम्भीर वाणी सुन कर कलिंगा सुन्दरी अधीर हो, अपनी कुशल मना, अपनी साथिनों को संग ले, अपना साज बाज उठा, बिना उधर देखे, अधीर हो अपना धीरज खोकर चटपट चल दी। परन्तु मन ही मन सन्त बाबा के पकड़े जाने का उसे बड़ा भारी दुख था। जिसका कारण ये था कि इतना सस्ता हरफन मौला आदमी जो केवल दो रोटियां खाकर ही अपना गुजारा करे तीनों लोक और चौदह भुवनों में भी नहीं मिल सकता था और जो अनायास ही हाथ आ गया था। इन्सान ईश्वर इच्छा के सामने मजबूर है। उसकी प्रवीणता और चतुराई जीवन पर्यन्त तक नहीं भूली जायेगी। इस प्रकार धीरज का पत्थर अपने सीने पर रखकर, कलिंगा सुन्दरी ने अपने मन पर काबू किया। सोचा अपराध करके जेलखाने नहीं जाना पड़ा। इस खुशी में ये कविता कही जान बची लाखो पाये, लौट के बद्ध घर को आये। ऐसा कहकर बार बार परमपिता

परमात्मा को अपना मस्तक नवाया। और वाणी द्वारा कहा, हे प्रभू तेरा ही एक सहारा है, तू ही सब की रक्षा करता है।

गुरू चेले की भेंट वार्ता

गुरु गोरख नाथ जो महाराज पकड़े गये। जिन्होंने अपने गुरु को साथ ले जाने का खटराग किया था। बह त्रिया राज्य में इसलिए आये थे कि अपनी गुरु माता महारानी मैनाकिनी के दर्शन कर अपने गुरु से वार्तालाप करेंगे। परन्तु मैनाकिनी महारानी ने अपने प्राइवेट कक्ष में पहुंचकर, अपनी चतुर सेविकाओं को आज्ञा दी। उस स्त्री भेषधारी पुरुष को मेरे सनमुख लाकर उपस्थित करो। गुरु गोरखनाथ बिना कुछ कहे राजीखुशी सेविकाओं के संग, महारानी मैनाकिनी के सनमुख जा पहुंचे। उन्हें अति श्रेष्ठ स्थान अपने पास बैठने के वास्ते दिया। तब मधुर स्वर से गम्भीर हो रानी मैनाकिनी बोली, मैं आपका वास्तविक परिचय जानना चाहती हूं।

गुरु गोरखनाथ को यह अच्छी तरह मालूम था कि हनुमान जी इन लोगों को सूचित कर गये हैं। उनके अलावा मैंने भी इन्हें मृदंग बजा बजाकर अच्छी तरह जता दिया है कि मैं यहां आन पहुंचा

हूं। इसलिए तुरन्त ही गुरु गोरखनाथ ने अपनी योग माया द्वारा अपना स्त्री चोला पलटकर अपने सन्त के चोले में आनकर गुरु गोरख के रूप में प्रगट हो गए और हाथ जोड़कर बोले माता जी, अब मैं अपने यथार्थ रूप में आपके सामने खड़ा हूं और आपको मस्तक नवा नमस्कार करता हूं। मेरा नाम गोरख नाथ है और योगीराज मछेन्द्रनाथ जी मेरे गुरुदेव हैं। मैं इन्हें यहां से अपने साथ लिवा ले जाने के लिए बड़ी कठिनाई से काफी दिन तलाश करने के बाद पता लगाकर यहां आया हूं। आपके राज्य में पुरुषों का प्रवेश निषेध है। इसलिए स्त्री भेष धारण करना पड़ा।

इतना सुन मैनाकिनी महारानी बोली, बेटा मैं तुम्हें उनसे मिलाये देती हूं फिर वह जाने या तुम। गुरु शिष्य आपस में निबट लेना। इस प्रकार कहकर गुरु गोरखनाथ को अपने साथ लेकर मछेन्द्रनाथ के पास जा पहुंची और बोली। ये आपके शिष्य आपसे भेंट वार्ता करने आये हैं। उन्होंने अपने गुरु मछेन्द्र नाथ महाराज को रत्नजड़ित मखमली पलंग पर तकिये के सहारे उसी प्रकार बैठे देखा जैसा मृदंग बजाते समय अपने स्त्री भेष में देखा था। तुरन्त ही

दोनों चरणों को स्पर्श कर मधुर वाणी से बोले, गुरु देव आपका शिष्य गोरख आपको हाथ जोड़कर नमस्कार करता है। गुरु मछेन्द्रनाथ जी महाराज ने उठकर अपने प्यारे शिष्य को हृदय से लगा लिया और आशीर्वाद देकर श्रेष्ठ आसन पर बिठलाया। फिर सब सन्तों की कुशल क्षेम पूछी। उनके अध्ययन के बारे में वार्तालाप किया।

तब गुरु गोरखनाथ ने मस्तक नवाकर अपनी बारह वर्ष की विद्या प्राप्ति का ब्यौरा अपने गुरु को दिया। मुझे किस प्रकार तपस्या करने पर भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए। राजा गोपीचन्द और गुरु जालन्धरनाथ योगी की कथा कही। कनिफानाथ के मीठे मीठे ताजे आम खाकर आपका इस त्रिया राज्य में होने का समाचार जाना। हनुमान जी व रामचन्द्र जी की भेंट वार्ता का सब विस्तार पूर्वक और अपने यहां पहुंचने का सारा ब्यौरा अपने गुरुदेव से धीरज धर कर ब्यान किया। तब गुरु मछेन्द्रनाथ महाराज ने शिष्य गोरखनाथ की खूब प्रशंसा की। अपने गुरुदेव से अपनी प्रशंसा सुनकर गोरखनाथ विनीत स्वर में बोले, गुरुदेव ! ये जो कुछ भी मुझे विद्या प्राप्ति हुई है। सब आपके आशीर्वादों का फल

है। आपके द्वारा ही मैं इस योग्य हो पाया हूं कि कहीं असफलता नहीं मिलती। मेरे सभी क्रिया कलापों में आपका आशीर्वाद काम करता रहा है।

सज्जनो, योगी मछेन्द्रनाध चुपचाप अपने चेले की मधुर वाणी सुनते रहे। अपने गुरु को चुप्पी साधे देख, गुरु गोरखनाथ बोले, गुरुजी आप तो खुद उधव कर्ता सिद्ध योगी हो। आपको इस त्रिया राज्य की सुन्दर रानी के भोग विलास में लिप्त देखकर, हमारे नाथ पंथ की मर्यादा भंग होने के कारण, विश्व में अनेक तरह की चर्चायें हो रही हैं। जिससे अपना नाथ पंथ कलंकित हो रहा है। गोरखनाथ की वाणी सुनकर गुरु मछेन्द्रनाथ जी महाराज, कुछ लज्जा सी दर्शाते हुए बोले। बेटा गोरखनाथ तुम्हारा कहना मिथ्या नहीं हैं परन्तु मैं व्यवस्थाबस ही यहां ठहरा हुआ हूं। गोरखनाथ बोले—गुरुदेव वह ऐसी क्या व्यवस्था है। कृपया मुझे समझाने की दया करें।

मछेन्द्रनाथ बोले-बेटा गोरखनाथ, मैं तुम्हें बद्री नाथ जाने का आदेश देकर, स्वयं भी तीर्थ यात्रा के वास्ते चल पड़ा था। सेतुबन्ध रामेश्वर में हनुमान जी से भेंट वार्ता हुई। उन्होंने मुझे यहां आने के लिए विवश किया। उन्हीं की आज्ञानुसार मैं बारह

वर्ष के काफी पहले से यहां रह रहा हूं। मुझे यहां रहते काफी वर्ष समाप्त हो गए हैं। अपने गुरु मछेन्द्र नाथ के समाप्त कहते ही गुरु गोरखनाथ बोले, तो अब मेरे साथ चलने की दया कीजिये। गुरु महाराज हनुमान जी के दिये हुये वचनों का समय कभी का समाप्त हो चुका है। अब आपकी प्रतिज्ञा का भय उपस्थित नहीं हो सकता। इस पर मछेन्द्रनाथ बोले तो बेटा मुझे इससे कब इन्कार है। बेटा तुम अपनी गुरु माता महारानी मैनाकिनी को राजी करने का प्रयत्न करो। उनके राजी होते ही, मुझे तुम्हारे साथ चलने में यहां कोई बाधा नहीं रहेगी।

गुरु गोरखनाथ सोचने लगे, गुरु महाराज इस त्रिया राज्य के जाल से निकलना तो चाहते हैं परन्तु मोह माया के जाल में फंसे होने के कारण इन्होंने अपनी रानी को राजी करने का भार मेरे कंधे पर डाला है। इसी का नाम माया मछेन्द्र है। परन्तु मेरे गोरख धन्धे के जाल में एक दफा फंसकर निकल जाना आसान बात नहीं है। उधर रानी मैनाकिनी सोचने लगी कि गोरखनाथ बहुत चालाक और चतुर है। वह अपने गुरु को यहां से अपने संग ले जाने में सफलता प्राप्त कर सकता है क्यों न मैं इसे भी सुन्दर

स्त्रियों के जाल में फंसा दूं। अगर यह किसी तरह त्रिया जाल में फंस गया तो इसकी अपने गुरु को अपने साथ ले जाने की बीमारी खुद व खुद समाप्त हो जावेगी। फिर यहां से इनके गुरु के जाने का प्रश्न ही समाप्त हो जावेगा। इस प्रकार अपने मन में मनसूबा बांध, धीरज धर कर अपनी सर्वाङ्ग सुन्दर सुघड़ सहेलियों को गोरखनाथ को रिझाकर काबू में करने का आदेश दिया।

महारानी मैनाकिनी का आदेश पा, त्रिया राज्य की सर्वश्रेष्ठ एक से एक सुन्दर सुकुमारियां, सज धज कर गुरु गोरखनाथ के चारों ओर तितली की भांति हाव भाव दिखाती मुस्कराती हुई मंडराने लगीं और नैना चमकाती हुई बोलीं। हम सबको आपकी सेवा में तत्पर रहना है। उनके इतना कहते ही गुरु गोरख नाथ बोले, मैं स्त्रियों से अपना कोई कार्य नहीं कराता हूं। तो वह ढीठ सुन्दरियां बोली, जब यहां कोई पुरुष सेवक है ही नहीं तो सिवा स्त्रियों के आप की और कौन सेवा करेगा। गुरु गोरखनाथ ने उत्तर दिया मुझे अपने कार्य कलापों के लिए गैर की आवश्यकता है ही नहीं। मैं अपना काम स्वयं कर लेता हूं। उन सुन्दरियों ने गुरु गोरखनाथ को रिझाने के

लिये काफी प्रपन्च रचे, यहां तक की अर्धनग्न अवस्था में नाचती गाती रहीं। परन्तु गुरु गोरखनाथ ने उन की तरफ आंख उठाकर भी नहीं देखा।

अन्त में हारकर झकमार कर महारानी मैनाकिनी के नजदीक जाकर बोलीं। महारानी उस पत्थर के बुत गोरखनाथ को रिझाना असम्भव है। उसके सामने हम सब अपनी जादूगरी में फेल हो गई हैं। वह तो हमारी तरफ मुंह उठाकर देखने में भी लज्जा अनुभव करता है। रानी मैनाकिनी को अपनी सेविकाओं की बातें सुनकर घोर निराशा हुई। उसने कितने ही उपाय सोचे पर कोई कारगार होता नजर नहीं आया। मछेन्द्रनाथ के संग से मैनाकिनी रानी को एक पुत्र प्राप्त हुआ था। जिसका नाम मौनीनाथ रक्खा गया था। वह रानी मैनाकिनी का अत्यन्त दुलारा था। जब कभी आंख से ओझल हो जाता था तो रानी बुरी तरह घबरा जाती थी।

एक दिन का जिक्र है कि मछेन्द्रनाथ के पास मौनीनाथ रानी मैनाकिनी और गोरखनाथ तीनों बैठे थे। तभी गोरखनाथ के गुरु मछेन्द्रनाथ बोले, वत्स मौनीनाथ ने जाड़े से बुखार आने के कारण कई दिन से स्नान नहीं किया है। अब बीमारी के

समाप्त हो जाने पर, स्नान कराना परम आवश्यक है। तुम नदी पर पहुंचकर इसे ठीक प्रकार स्नान करा लाओ। गोरख नाथ समझ गये कि ये महारानी, मैनाकिनी को मेरी विद्या का चमत्कार दिखाना चाहते हैं। जो चमत्कारी प्रदर्शन होगा उसका श्रेय भी मुझे ही मिलेगा। अपने मन में ऐसा विचार कर मौनीनाथ को नदी तट पर ले गये। उन्होंने मौनी नाथ को टांग पकड़कर अधर में उठाया तो वह रोने लगा: परन्तु गोरखनाथ ने कोई परवा नहीं की। और बिना परवा किए शिलाखन्ड पर इस प्रकार पछाड़ना शुरू किया जिस प्रकार धोबी पटलं पर कपड़े पछाड़ता है। परन्तु वस्त्रों वाली क्रिया मनुष्य के लिए प्राणघातनी होती है। जिसके कारण तीन चार पटकियों में मौनीनाथ के प्राण पखेरू उड़ गए। उसके बाद मरे हुए की त्वचा को खूब रगड़ रगड़कर फिर धोना शुरू कर दिया। जिससे जो गन्दगी उसके भीतर भरी हुई थी वह भी साफ हो गई। तब उसे राजमहल में ले जाकर रानी मैनाकिनी के सामने ही सूखने के लिए डाल दिया।

जब गुरु मछेन्द्रनाथ को मौनीनाथ काफी समय तक दिखाई नहीं दिया तब अधीर हो बोले। बेटा

गोरख, मौनीनाथ कहां रह गया। गोरखनाथ बोले आपने ही तो उसे ठीक प्रकार से स्नान कराने की मुझे आज्ञा दी थी। इसीलिए मैंने उसे ठीक प्रकार से स्नान कराकर उसके शरीर की खाल छत पर धूप में सूखने को डाल दी है। उसके शरीर की चमड़ी छत पर सूख रही है। मछेन्द्रनाथ को ध्यान लगाकर देखने से ज्ञात हो गया, मौनीनाथ मर चुका है। महारानी मैनाकिनी भी गोरखनाथ की वार्ता सुन कर एकदम चौंक पड़ी और बावली के समान मछेन्द्र नाथ का हाथ पकड़कर, छत पर जा पहुंची। जो गोरखनाथ ने कहा था, वही नजारा नजर के सम्मुख दिखाई दिया कि मौनीनाथ मर चुका है और छत पर उसकी खाल सूख रही है।

अपने लाड़ले बेटे की ऐसी दुर्दशा देखकर, रानी मैनाकिनी अपनी छाती में दुहत्तर मार मारकर रोते रोते बेहोश हो गई। जब महारानी की मूर्छा भंग हुई, तब उसने मछेन्द्रनाथ को अपने कानों से ये कहते हुए सुना। अरे निरदई गोरखनाथ, तूने जो इस अबोध बालक को मारकर इसकी इस प्रकार हत्या की है। इस अबोध ने तेरा क्या बिगाड़ा था। तैने तो इसके प्राण ही निकाल डाले। मैनाकिनी बोली, प्राण

ही नहीं निकाल डाले बल्कि उसके अस्थि पंजर भी तोड़ मरोड़ कर अलग अलग कर दिए। अस्थि पंजर सब ढीले पड़े हुए धूप में सूख रहे हैं। इतनी वार्ता सुन और अपने गुरुदेव और रानी मैनाकिनी को अत्यन्त अधीर देख, धीरज धर कर बोले।

परन्तु माताजी गुरुदेव ने ही तो मुझे आदेश दिया था इसे भली प्रकार से स्नान कराना। गुरुदेव के आदेशानुसार काम करने में मेरा अपना कोई दोष नहीं है। मछेन्द्रनाथ क्रोध प्रदर्शित करते हुए गरज कर बोले, अरे गोरख, स्नान के माने मार डालना कौन से गुरु की पोथी में तूने पढ़ा है, तूने तो ईर्ष्यावश कार्य किया है। जिससे मेरा शोक जिन्दगी भर नहीं जाने का है। रानी मैनाकिनी रोती रोती अधीर हो अपना धीरज खोकर बोली। आप तो कह रहे थे गोरखनाथ सतगुणी और बड़ा विद्यावान है। इसी आपके अपूर्व चेले ने मेरे बालक को ईर्ष्यावश मार डाला है। हाय ! अब में अपने मौनीनाथ को कहां ढूंढूं।

गोरखनाथ बड़ी ही नम्र वाणी में बोले, माता जी ! न कोई किसी को मारता है न कोई किसी के मारे से मर सकता है। इसलिए ऐसी बातों का शोक

करना वृथा है। मछेन्द्रनाथ बोले, जान बूझकर हत्या करके ऊपर से उपदेश बखानता है। बालक को मार कर ज्ञानी बनने का ढोंग करता है। गोरखनाथ बोले, गुरुदेव आप तो परम ज्ञानी और महान योगो हैं। ये आत्मा अमर है, ये पाठ आप ही का पढ़ाया हुआ है। ये संसार नाशवान है। इस ससार में रहने वाले व्यक्ति एक न एक दिन अवश्य मरेंगे। इसलिए मरने जीने का शोक कभी नहीं करना चाहिए।

मछेन्द्रनाथ बोले, तो क्या ये उपदेश तुझे अबोध बालक की हत्या कर डालने के लिए दिया गया था। तू अपने सीने पर हाथ धर कर बता, मौनीनाथ के बगैर हम दोनों की जिन्दगी किस प्रकार कटेगी। महारानी मैनाकिनी रोती रोती बोली, मौनीनाथ के बगैर हमारी जिन्दगी में अब रह ही क्या गया है। मैं तो अब किसी प्रकार भी जिन्दा नहीं रह सकूंगी। अरे गोरखनाथ जरा मुझे भी तो बता। मैं किस प्रकार धीरज धर कर अपने अधीर मन को समझाऊं, किस प्रकार अपनी छाती पर पत्थर रखकर जी का भार हलका करूं। गोरखनाथ धीरतापूर्वक बोले, माता जी अब हो भी क्या सकता है। जिसकी आई थी वह मर गया। मुझे जो दन्ड देना चाहो दे लो।

मछेन्द्रनाथ बोले, गोरखनाथ मैं नहीं जानता तू कहीं से भी कैसे ही कर, हमें तो असली मौनीनाथ ही चाहिए। अगर हम दोनों की जिन्दगी चाहता है तो हमारे मौनीनाथ को इसी समय इसी वक्त हमें ला कर दे।

अपने गुरु मछेन्द्रनाथ की आज्ञानुसार गोरखनाथ ने संजीवनी विद्या के मन्त्र से अभिमन्त्रित भस्म को एकत्रित कर मौनीनाथ की खाल पर छिड़क दिया। फिर क्या था देखते ही देखते एक साथ एक सौ आठ मौनीनाथ पैदा होकर खेलने लगे। जिनका एक सा रूप रंग, एक सा कद सब एक जैसे मोनीनाथ उत्पन्न हो गये थे। महारानी मैनाकिनी ने जब इतने सारे मौनीनाथ को अपने आंगन में खेलते देखा तो वह एकदम बड़ी विस्मित हुई। गोरखनाथ अपने दोनों हाथ जोड़कर बोले माताजी, इतने मौनीनाथ आपके सामने हैं। इनमें से अपना मौनीनाथ छांट लो। जौन सा आपका हो ले लो। अगर सब ही को लेने की इच्छा हो तो सबको ले सकती हो।

मैनाकिनी रानी प्रसन्न हो बोली, बेटा गोरख नाथ तुम बड़े मायावी हो, अपना मायाजाल समेट कर मुझे मेरा ही मौनीनाथ लौटा दो। अपनी गुरु

माता को ज्यादा दुखी नहीं करना चाहिए। अब मुझे और दुख मत दो। गोरखनाथ हाथ जोड़ कर बोले, जब पहचान भी नहीं सकतीं, तो अपना कहने का अधिकार किस प्रकार कर रही हो। भला इस जगत में ऐसा भी कोई है जो अपनी खोई हुई चीज को न पहचान सके। मैनाकिनी रानी गम्भीरता भरी वाणी सुनकर बोली। सत्य है बेटा, इस संसार की मोह ममता, किसी प्रकार भी छुटाये नहीं छूटती। गुरु गोरखनाथ बोले, तो इसमें मैं ही क्या कर सकता हूं। मैनाकिनी महारानी बोली, तुम धुरंधर चमत्कारी हो और सब लायक हो। तुम्हें अनेक सिद्धियां प्राप्त हैं। मुझे मेरा मौनीनाथ सौंप दो बेटा।

प्यारे बन्धुओ, गुरु गोरखनाथ महाराज ने अपनी योगमाया समेट ली और असली मौनीनाथ को महारानी मैनाकिनी के सुपुर्द कर दिया। इस अपूर्व घटना से वह अति प्रसन्न हुई और गोरखनाथ को अति सम्मान की दृष्टि से देखने लगी। उनका सम्मान उनकी नजर में बढ़ गया। तब एक रोज मौका देख कर प्रसन्न हो महारानी मैनाकिनी से हाथ जोड़ बोले। जननी! अब इतनी कृपा कर दो कि मैं अपने गुरुदेव को अपने साथ लिवाकर ले जाऊं और सब

विघन बाधायें दूर हो जायें। अब इनका यहां से जाना ही जगत की भलाई के लिए उचित है। इनके न होने से हमारे धर्म प्रचार में बहुत सी बाधायें विकट रूप धर कर सामने आती हैं। महारानी मैनाकिनी ने अपने जी में भली प्रकार समझ लिया। ये चतुर गोरखनाथ अपने गुरु को अपने साथ ले जाये बिना किसी तरह भी मानने वाला नहीं है। किसी सिद्ध योगी के कार्य में वाधा डालना एकदम अनुचित और गलत है।

अतः मैनाकिनी रानी ने कहा, पुत्र गोरखनाथ, मैं ये तो अच्छी तरह जान गई, तुम अपने गुरु को अपने साथ ले जाये बिना मानने वाले नहीं हो। परन्तु केवल एक वर्ष आप लोग और यहीं रहें। एक वर्ष बाद मैं तुम्हारे गुरु को तुम्हारे साथ हंसी खुशी रवाना कर दूंगी। गुरु गोरखनाथ बोले, माताजी, एक वर्ष का समय बहुत अधिक है। हम लोगों की बनी बनाई बहुत सी योजनायें बिगड़ जायेंगी। परन्तु आपको भी नाराज नहीं करना है। इसलिए छः महीने की अवधि ठीक रहेगी और छः माह मैं यहां ठहरा रहूंगा। गोरखनाथ की वार्ता से महारानी मैनाकिनी सन्तुष्ट हो गई और अपने कमरे में जाकर

आराम करने लगी।

तब गुरु चेले की एकांत में वार्ता होने लगी। गुरु मछेन्द्रनाथ महाराज बोले, बेटा गोरखनाथ ! मैनाकिनी रानी का मोह भंग करने का इससे बढ़िया और और कोई उपाय नहीं था। अब यहां से मुझे तुम्हारे साथ चलने में कोई विघ्न वाधा नहीं रही। गुरु गोरखनाथ बोले, गुरुदेव ! आपने मौनीनाथ को मेरे साथ घाट पर क्यों भेजा था। फिर उसके मर जाने पर इतना शोक क्यों किया। गुरु मछेन्द्रनाथ बोले, बेटा गोरखनाथ ! महारानी मैनाकिनी का मोह दूर करने के लिए ये सब लीला रचाई गई थी। तुमने जो कुछ किया मेरी इच्छानुसार मेरा इशारा समझ कर किया था इसलिए तुम्हीं अधिक प्रशंसा के पात्र हो।

प्यारे बन्धुओं, सुख चैन के दिन बीतते देर नहीं लगती। योंही वर्षों बीतते चले जाते हैं। फिर छः महीने की अवधि बीतते क्या देर लगती। ज्यों ज्यों विदाई के दिन निकट आते जाते थे त्यों त्यों मैनाकिनी महारानी की अधीरता बढ़ती जाती थी। वह हरदम उदास रहने लगीं, उनकी व्याकुलता बराबर बढ़ती जाती थी। आखिर वह अवधि वाला दिन

आन ही पहुंचा । जिससे वह बहुत ही उदास होगई । वह अपने दोनों नैनों से अश्रु धारा बहाती जाती थीं और अपने प्यारे की जुदाई का सामान जुटाती जाती थीं । उन्होंने थोड़ा धीरज धर कर योगी मछेन्द्रनाथ से पूछा । मौनीनाथ आपके साथ जायेगा या मेरे पास रहेगा । गुरु मछेन्द्रनाथ जी महाराज बोले, रानी जैसी तुम्हारी मर्जी । मैं तुम्हारी मर्जी में किसी भी प्रकार की वाधा डालना उचित नहीं समझता ।

महारानी मैनाकिनी बोली, आपके पिता उपरिक्ष वसु द्वारा दिये हुए श्राप की अवधी में अभी छै मास और बाकी हैं । उसके पश्चात मुझे स्वर्ग लोक गमन करना ही है । इसीलिये मैंने गोरखनाथ से एक वर्ष यहां रहने को कहा था । उसने छै महीने की अवधि तै की । आगे की अवधी में मौनीनाथ इस त्रिया राज्य में अकेला रह जायेगा । आपकी मौजूदगी के कारण हनुमान जी की गर्जना का प्रभाव इस पर नहीं पड़ता था । आपके और मेरे यहां से चले जाने के बाद उस प्रभाव को रोकना मौनीनाथ के लिये असम्भव है । ऐसी परिस्थिति में मौनीनाथ जीवित नहीं रह सकता है । इसलिये ये हीं उचित है आप मौनीनाथ को भी अपने साथ ही ले जावें ।

योगी मछेन्द्रनाथ बोले ठीक है, मौनीनाथ तुम हमारे साथ ही चलो । मैनाकिनी महारानी ने चलते समय मछेन्द्रनाथ की झोलो में एक सोने की ईंट रख दी । ईंट के साथ ही उनके वस्त्र आदि और रास्ते में खाने पीने का सामान रखकर उन्हें सब बता दिया । जब चलने को हुए तब सबसे आगे गुरु गोरख नाथ, उनके पीछे योगी मछेन्द्रनाथ जी महाराज साथ में उनका पुत्र मौनीनाथ । महारानी मैनाकिनी ने अपने लाड़ले बेटे मोनीनाथ को गोदी में लेकर प्यार पुचकार और दुलारकर उसका मुंह चूमा और अपने नैनों से नीर की वर्षा कर पिता पुत्र दोनों को विदाई दी । तब तीनों पंथी सन्त साधू रूप में उनके भवन से बाहर निकले । तब रानी मैनाकिनी सहित उसकी सखी सहेलियों के अलावा नगर की सभी सुन्दरियों के भी नयन, उन्हें विदाई देते समय टप टप मोतियों के समान आंसुओं की वर्षा करने लगे ।

जब तीनों सन्त आंखों से ओझल हो गए । तब सब अपने अपने आंसू पौंछ पौंछकर अपने अपने घरों को सिधार गईं । महारानी का अधिकतर समय रो रो कर ही बीतता था । उसकी सखी सहेलियां सभी उन्हें धीरज बंधाती थीं, परन्तु उसके अधीर मन को शांती

कहां। जिसका जिन्द: पति पुत्र छोड़कर चला जाय। उस दुखियारी नारी के जी का जख्म, किसी भी मरहम से भरना नामुमकिन है।

यह तीनों सन्त घूमते घामते, हवन यज्ञ भन्डारे करते हुए, महेन्द्र गिरी पर्वत पर पहुंचकर तपस्या करने लगे। तब गुरु गोरखनाथ अपने गुरु मछेन्द्रनाथ से एक दिन आज्ञा लेकर तीर्थ यात्रा करते हुए गिरनार पर्वत पर जा पहुंचे। जहां परम योगेश्बर महाराज दत्तात्रेय जी का स्थान है।

* श्री गोगा पुराण तेतीसवां अध्याय समाप्त *

चौंतीसवां अध्याय

अब सज्जनो! यहां की वार्ता यहीं छोड़कर, अपने नायक जाहरवीर जोधा की तरफ चलते हैं। जिन्होंने नाई पुरोहित जी से वायदा करवा कर कि रानी श्रीयल की सगाई जिस राजकुमार के साथ भी पक्की होगी उसकी आपको सूचना देकर तन्दुल नगरी जावेंगे। आप बेफिक्र रहें। बन्धुओं, नाई पुरोहित जाहरवीर जोधा की जय बोलते हुए और राजा सिंधासिंह को दुर्वचन कहते हुए, आपस में इस प्रकार बतराते हुए आगे बढ़े कि हमारी राजकुमारी श्रीयल

के लायक ये लड़का कितना बढ़िया, धीर, वीर न्यायकारी, प्रजा पालक, गोभक्त, अछूत उद्धारक, दानवीर था। इस गुमानी राजा सिंधासिंह ने इसका टीका लौटवा लिया। अब इस भाग्यहीन राजा को हमें ऐसा सबक सिखाना चाहिए और ऐसा जमाई ढूंढना चाहिए जिससे ये मनमानी करके जीवन पर्यन्त अपने दोनों हाथ मलमल कर पछताता रहे। ये जिन्दगी भर कभी न भूल पाये कि हमने नाई और पुरोहित का अपमान बिना खता बिना कसूर किया था। हमारे सिर बुराई थोपकर ये अपने मन में इस समय खुश भले ही हो ले। पर एक दिन मूढ़ पकड़कर यह रोया करेगा।

इसी प्रकार अनमने से रोते झींकते कई राज्यों में घूमे और बढ़िया भले राजकुमारों को अपने हृदय की जलन शांत करने के कारण त्याग दिया और जान बूझकर सगाई का टीका नहीं चढ़ाया। कई राजाओं के राज्य में धक्के खाते हुए, घूमते घामते अन्त में आमेर नरेश राजा हरिसिंह की राजधानी में जा पहुंचे। दरबार बीच पहुंचकर नेगियों ने महाराजा हरिसिंह से अपने आने का कारण बताया। तब राजा हरिसिंह ने अपने कुरूप लड़के को बुलाकर दिखाया।

जिसका ब्याह सगाई उसकी कुरूपता के कारण कोई करने को तैयार ही नहीं होता था और इसी वजह से वह इतना बड़ा हो जाने पर भी कुंवारा ही डोल रहा था। उसे ही नाई पुरोहित के सामने खड़ाकर दिया। कहा हमारे यहां इस समय ये ही होनहार राजकुमार कुंवारे हैं।

नाई और पुरोहित को अपने अपमान की भावना अभी भूल नहीं पाई थी। इसी कारण अधीर हो अपने हृदय की ज्वाला शांत करने के लिए इसी तवे के समान काले, चेचक के दाग वाले मुंह चेहरे वाले गंजे राजकुमार को राजा सिंधासिंह का नगद जमाई बनाना मंजूर कर लिया। टीके की सकल सामग्री धन दौलत कपड़े लत्ते सहित राजकुमार तारासिंह के सामने धर कर मन्त्र पढ़कर रोली चावल से तिलक कर दिया। अतुल सम्पत्ति टीके में देख कछवाये राजा हरिसिंह अति प्रसन्न हुए और विवाह तिथि निश्चित कर उन्हें कीमती वस्तुयें देकर खुश कर दिया।

आमेर नरेश से प्रसन्न हो नाई पुरोहित मंजिल दर मंजिल तय करते हुए समुद्र तट पर आन पहुंचे। वहां से सीधे ददरेड़ा नगर का रास्ता पकड़ा। तब राजमहल के दरवाजे पर पहुंच कर वीर जाहरवीर

जी को नमस्कार कर बोले। वीर राजकुमार, राजा सिंधासिंह की राजकुमारी बेटी श्रीयल का टीका हमने आमेर नरेश राजा हरिसिंह के राजकुमार तारासिंह को चढ़ाया है, विवाह की तिथि आपके बताये अनुसार फागुन बदी नौमी ही निश्चित कर दी है। अब आप जिस प्रकार मुनासिब समझें करें। हमने जो आपसे वादा किया था उसे पूरा कर दिया है।

नेगियों की वार्ता सुनकर, जाहरवीर जोधा अति प्रसन्न हुए और अपने गले में पड़ी हुई मणी माला उतारकर पुरोहित जी के हवाले कर दी। और ये कहा, इसे आप मेरी तरफ से अपनी राजकुमारी श्रीयल को दे देना। उससे कह देना जब कोई संकट मालूम पड़े और उसका उपाय न दीखे तो विपत्ति के समय इसके सामने जोत बालकर, इसका पूजन कर इस माला से जो भी वरदान मांगोगी, तभी ये मणी माला तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करने में पलभर की भी देर न करेगी। ये मनोकामना को पूर्ण करने वाली माला संभालकर अपने पास रखना। सिर्फ़ इतना कह कर और दोनों नेगियों को खूब खिला पिलाकर, भेंट पूजा देकर हंसी खुशी विदा कर दिया। वह दोनों भी गौभक्त गोगावीर के गीत गाते हुए जय जय कार

मनाते हुए समुद्र तट पर आ पहुंचे। वहां जाहरवीर जोधा ने अपनी माया की नाव गुरु गोरखनाथ का ध्यान करके पहले से ही भिजवा दी थी। जो इन दोनों नाई पुरोहित को समुद्र पार तन्दुल नगरी के तट पर छोड़कर अन्तर्ध्यान हो गई।

दोनों नाई पुरोहित मन मारे सफर के थके हारे राजा सिंधासिंह के राजमहल में सुबह सुबह जा पधारे। अपने दोनों हाथ जोड़कर राजा सिंधासिंह को नमस्कार कर, जै जैकार मना कर कहने लगे। हे राजन, आपकी आज्ञानुसार सगाई का सामान ददरेड़ा नगर से वापिस लौटाकर बड़ा भारी दुख उठाते हुए जगह व जगह धक्के खाते हुए महाराजा आमेर नरेश हरिसिंह कछवाये के सुपुत्र राजकुमार तारासिंह को अपनी राजकुमारी श्रीयल का तिलक चढ़ा दिया है। विवाह संस्कार का शुभ दिन उन्होंने भी फागुन बदी नौमी ही पक्का किया है। अपने नाई पुरोहित की वार्ता सुन कर राजा सिंधासिंह बड़े प्रसन्न हुए, और दोनों को मनचाहा पारितोषिक देकर खुश कर दिया।

उसके बाद पुरोहितजी ने जनाने महल में पहुंचकर महारानी सिरौंजा सुन्दरी से आमेर नरेश के राजकुमार तारासिंह को तिलक चढ़ाने की खुशखबरी बयान

करी, जिसे सुनकर अपना सिर धुनकर दोनों हाथों से अपना माथा पीट पीटकर अपनी बेटी की बद-किस्मती को झोंक झोंककर अपना धीरज खोकदर और अधीर होकर रतनारे नैनों से नीर बहाकर, सुबक सुबककर मन ही मन जी भरकर खूब रोई। तब पुरोहित जी ने मौका देखकर जाहरवीर की दी हुई मणी माला राजकुमारी श्रीयल को भेंट कर दी। जिसे उसने कोई कीमती जेवर समझ कर अपनी सन्दूकची में बन्द करके ताला लगा दिया। माला की करामात पंडित जी भी बताना भूल गए।

बन्धुओ, अपनी बेटी श्रीयल राजकुमारी के ब्याह के कारण उसकी माता महारानी सिरौंजा सुन्दरी काफी परेशान थी। इधर राजकुमारी श्रीयल भी परेशान थी कि मेरा मनचाहा टीका पहुंच जाने पर भी मामूली सी बात पर सगाई छूट गई। मैं अधब्याही किसी गैर राजकुमार के साथ, अपना ब्याह कैसे करा सकती हूं। सीता सावित्री की तरह सतवन्ती राज-कुमारी अपने माता पिता की दुलारी, क्या अधर्म पूर्वक दूसरा ब्याह रचाकर, कुलवन्ती नारी कहा सकती है।

हे बैमाता, मैंने सुना था तुमने मेरा जोड़ा मिला

दिया था। क्या इस प्रकार ही जोड़ा मिलाया जाता है। जो बना बनाया सारा ही करा धरा गुड़ गोबर एक होकर रह गया। अब विवाह के दिन रह ही कितने गए हैं। क्या गुरु जालन्धर नाथ जी योगी तुम भी समाधि लगाकर गहरी निद्रा में मेरे वक्त पर सो गये। हे मेरे अधब्याहे स्वामी के गुरु गोरखनाथ जी महाराज, आप भी अपने चेले की सुध बुध लेना भल गये। हे योगीराज, जैसे मैं यहां दुखी हूं वैसे ही वहां मेरे देवता स्वरूप पति देव गोगावीर दुखी होंगे। हाय भगवान मैं क्या करूं, किससे कहूं मैं अपने जी की बात। मां से कुछ कहती भी, तो वह बिचारी मेरे दुखी होने के कारण खुद अत्यन्त दुखी है। मैं तो अपना ब्याह उसी राजकुमार से करवाऊंगी। जिसके साथ मेरे साढ़े तीन फेरे फिर चुके हैं। अन्यथा हीरे की कनी चबाकर, अपनी जान दे दूंगी। न रहेगा बांस न बजेगी बांसरी।

इधर राजकुमारी श्रीयल महादुखी थी, अब उधर का हाल ध्यानपूर्वक सुनो। उधर जाहरवीर जोधा सोच रहे थे अगर बैमाता की बात सच्ची होती तो इस प्रकार अधीर मन से क्यों पापड़ बेलने पड़ते। मुझे तो उसकी वाणी में संशय मालूम पड़ता है।

शायद उसने मुझे बहका नहीं दिया हो। शायद मेरी जननी की ही बात सच हो कि स्वप्न कभी सच्चे नहीं हुआ करते। परन्तु आधा ब्याह हो चुका है तो पूरा भी जरूर होना चाहिए। परन्तु टीका वापिस जाना भी बड़ी ही बदनामी की बात है। मेरी मौसी काछल के बेटे अरजन सरजन मेरे भाइयों को जब पता चलेगा कि गोगा की सगाई छूट गई है तो सारे नगर में बात फैल जाएगी। हम मां बेटे किसी को मुंह दिखाने के काबिल भी नहीं रहेंगे। घर के ही दुशमन ऐसी बातों की ताक में रहते हैं। कहीं मेरी माता मेरी जननी ही अपनी बहन से इस बात का जिकर न कर बैठे। अगर उन्होंने जरा भी जिकर कर दिया तो बात फैलते देर न लगेगी। नामवरी दस बीस कोस और बदनामी सौ सौ कोस उड़कर पहुंच जाती है। स्त्रियों के पेट में इस प्रकार की बातें पचाने की जगह ही नहीं होती है। किसी ने क्या ही ठीक कहा है, नेकी नौ कोस और बदी सौ कोस।

सज्जनो ! ये सारा रहस्य किसी न किसी प्रकार कपटन काछल के बेटे अरजन सरजन को भी मालूम पड़ ही गया कि गोगावीर की सगाई छूटकर आमेर नरेश के बेटे तारासिंह को टीका चढ़ गया है। तो

वह अपने मन ही मन खुश हो उछलते कूदते फिरे। उन की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। चुपके चुपके अपने इष्ट मित्रों, संगी साथियों से भी चर्चा करने में न चूके। ऊपर से यह भी कह देते थे गोगा से न कहना कि हमें पता है कि तेरी सगाई छूट गई है। नरसिंह पांडे, भज्जू कोतवाल, रतना भंगी सभी से कह कह कर अपने जी की भड़ास निकालो। गोगावीर से इन में से जिन जिन ने पूछा, उन्होंने उन्हें कोई उत्तर नहीं दिया। अपनी रुची खेल तमाशे में भी एकदम कम कर दी। गौसेवा, अछूत उद्धार, दान पुन्न की तरफ से भी अपना ध्यान हटाकर, सारे दिन रानी श्रीयल का ही ध्यान बैठे हुए करते रहते थे। वह बराबर ये हो सोचा करते थे अब मुझे क्या करना चाहिए। इसी धुन में अधीर रहकर अपना धीरज खोया करते थे।

काफी दिन पीछे अपने मन की उदासी दूर करने के लिये खेलने बैठे तो खेल खेल में अरजन का भाई सरजन बोला, गोगा तुम खेल में हार जाने पर भी धान्धलेबाजी करने में नहीं चूकते। तुम्हें अपनी वीरता का बड़ा भारी अभिमान है। घर में वीरता क्या दिखाते हो, वीरता ही दिखानी है तो तन्दुल

नगरी वाले राजा सिंधासिंह को जाकर दिखाओ जिन्होंने तुमसे टीका लौटाकर आमेर के तारासिंह को चढ़ा दिया। तुम्हारे उजड्डपने के कारण ही बागड़ वालों की लम्बी नाक कटी पड़ी है। तुम्हारी वजह से ही चौहान बन्स की गद्दी को कलंक लग गया है। जिसके कारण मुझ सहित सारा परिवार महान दुखी है। तुमने हम लोगों की वह दशा की है कि हम लोग किसी के सामने गरदन ऊंची उठाकर चलने के काबिल भी नहीं रहे।

अपने भाई सरजन की जली कटी वार्ता सुनकर जाहरवीर जोधा बड़े बेचैन हो अपना धीरज खो बैठे। उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने उनके गाल पर जोर से चांटा मार दिया हो। वह खेल छोड़कर अपने महल की तरफ रवाना हो गये। किसी से अच्छी बुरी कोई बात नहीं की। वह रास्ते में यही सोच विचार करते जा रहे थे कि जिस बात का मुझे भय था वह उजागर हो कर ही रही। उन्हें इस प्रकार चिन्ता के कारण रास्ता चलना दूभर हो गया था। एक तरफ अपने भाई सरजन के ताने का तीर, दूसरी तरफ सगाई छूट जाने के कारण मन अधीर, तीसरे रानी श्रीयल का प्यार, चौथे अब तक

कोई खबर सुध न मिलने के कारण अधिक बेकरार। सारे सन्ताप मिलकर उन्हें एक साथ सता रहे थे।

अपने गुरु भाई गोगा की दशा देख नीला घोड़ा बोला। गुरु भाई चिन्ता करने से भी कभी किसी के दुखों का अन्त हुआ है। तुम्हें धीरज धरकर कुछ उपाय करना चाहिये। अधीर होने से बनते हुए काम भी बिगड़ जाते हैं। नीले घोड़े की बात सुनकर बड़े प्रेम से उसके ऊपर हाथ फेर पुचकार कर जाहरवीर बोले, मेरे गुरु भाई नीले, ये श्रीयल रानी का प्रेम मेरी जान का दुश्मन बन गया है। पता नहीं रानी श्रीयल सुन्दरी इतनी निष्ठुर किस प्रकार हो गई। उसने मेरी अब तक कोई खबर सुध नहीं ली। मुझे तो ऐसा लगता है वह बेबस हो गई है। मैंने जो उसे खबर सुध लेने के लिए मणिमाला भिजवाई थी वह माला भूरिया नाग का ही दूसरा रूप थी। उसने भूरिया नाग के द्वारा भी कोई राजी खुशी की खबर नहीं भिजवाई और न मेरी ही खोज खबर ली।

मुझे बार बार ऐसा ख्याल होता है कि रानी श्रीयल ने वह मणी माला बजाये अपने गले में पहनने के दूसरे जेवरों के साथ अपने बक्स में बन्द करके रख दी। बेचारा भूरियानाग रानी श्रीयल के बक्स में

भूका प्यासा कैद में पड़ा मुझे कोस कोसकर काफी दुबला होगया होगा। अगर मैंने उसे छुड़ाने का कोई शीघ्र उपाय नहीं किया तो बेचारा भूका प्यासा तड़फ तड़फ कर जल्दी ही अपनी जान से हाथ धो बैठेगा। अगर वह कैद में न पड़ता तो अब तक कोई खैर खबर जरूर मिल जाती। मुझे तो ऐसा लगता है कि कहीं पुरोहित जी ने उस मणी माला को कोई कीमती जवाहरात समझकर रांनी श्रीयल को न देकर अपनी पंडितानी को देकर संभाल कर रखने की ताकीद कर दी हो और मेरा प्यारा भूरिया नाग पंडित जी के यहां कैद में पड़ा सड़ रहा हो। मौका मिलते ही इन लोगों की बेईमानी देख इन्हें डस न ले। व्यर्थ ही में मुझे ब्रह्महत्या के पाप का भारी दोष लग जावेगा।

जाहरवीर जोधा के दुखी दिल की वार्ता सुनकर नीला घोड़ा बोला। गुरु भाई, आपमें इतनी कम बुद्धि है इसे मैं नहीं समझता था। एक मामूली सी बात के लिये उसका उचित उपाय न करके व्यर्थ ही अधीर हो रहे हो। अगर मेरी राय मानकर चलोगे तो सब चिन्ता फिकर घर बैठे ही मिट जावेगी। अपने नीले घोड़े की वार्ता सुनकर जाहरवीर जोधा बोले। क्या अच्छी बात कही मेरे गुरु भाई ने। आखिर हो तो

गुरु गोरखनाथ महाराज के हो सुघड़ शिष्य । अगर तुम्हारे बताये रास्ते में बाकई इतनी खूबी है तो मैं तुम्हारा बताया उपाय क्यों न आजमा कर देखूंगा। तुमने अपने मन में कौन सा सरल उपाय सोचा है अति शीघ्र ब्यान करो ।

नीला घोड़ा बोला भैया, तुम अपने मित्र ताखी नाग को पाताल लोक से बुलवाकर, नरसिंह पांडे के संग तन्दुल नगरी को रवाना कर दो । नरसिंह पांडे तो बागी का भेष बनाकर पहले हर बात की जानकारी करें और साथ ही साथ सारी तन्दुल नगरी बस्ती में घूम घूमकर प्रचार करे कि कटोरा ताल के पास एक बड़े पहुंचे हुए महात्मा पधारे हैं । जिनके दर्शनों से ही सबकी मनोइच्छा पूरी हो जाती है। आपका मित्र ताखी सन्त महात्मा का रूप धर कर तालाब के किनारे भगवान का भजन करे। जब राजकुमारी श्रीयल सन्त दर्शन करने को अपने तालाब पर आवे तब ताखी नाग अपने असली रूप में आकर चुपके से राजकुमारी श्रीयल के पैर में काटकर अपने बाबाजी के बाने में होकर अपने आसन पर जाकर विराजमान हो जावे।

जब सब रोया पीटी मचे और राजा सिन्धासिंह

और उनका सकल परिवार महान दुखी हो जावे तब मौका देखकर राजकुमारी को ठीक करने का नरसिंह पांडे बागी के बाने में वायदा करके तन्दुल नगरी की जनता के सामने राजा सिन्धासिंह से वचन भरवा ले । मैं आपकी इस मुर्दा राजकुमारी को एक शर्त पर जिन्दा कर सकता हूं । जहां इसकी सगाई बागड़ देश में पहले हुई थी वहीं ब्याह करने का आप वचन भरें । जब राजा सिन्धासिंह महान दुखी होकर सब नगर निवासियों के सामने तीन वचन भर दें । तब नरसिंह पांडे मन्त्र पढ़कर ताखी नाग को अपने पास बुलालें । जो योजना अनुसार पहले से ही सिखा पढ़ा रक्खी हो । वह जल्दी से ताखी नागा द्वारा सारा जहर राजकुमारी के पैर के अंगूठे से चुसवाकर राजकुमारी श्रीयल को जिन्दा करवा दें । फिर यहां से बारात सजवाकर धूमधाम से अपना ब्याह मेरी भाभी श्रीयल से कर राजी खुशी मय दहेज के ददरेड़ा नगर ले आवें ।

अपने नीले अश्व की तरकीव सुनकर गोगावीर को बड़ी प्रसन्नता हुई । उसकी पीठ थपथपा कर बोले भैया नीले, तुझे तो किसी मंत्री का बेटा बनना चाहिये था । तेरी बनाई योजना इतनी दृढ़ है वह

ब्रह्मा भी फेल नहीं कर सकता है। अब मेरी सारी चिन्तायें समाप्त हो गईं। इतना सुनकर नीला घोड़ा बोला भैया गोगा, क्या तुमने मुझे किसी गधे खच्चर की औलाद समझ रक्खा है। मेरी जननी राजाधिराज जेवरसिंह राजा की सवारी में रहती है और पिता १०८ श्री राजा इन्द्र की सवारी में रहते हैं जो स्वर्ग पुरी के देवता भी है और नरेश भी। ऊपर से गुरु गोरखनाथ महाराज की दया का हाथ। फिर मैं अकलमन्द न होऊंगा तो क्या मेरी भाभी राजकुमारी श्रीयल का पिता होवेगा।

अपने नीले अश्व की वार्ता सुन सुनकर जाहरवीर जोधा हंसते हंसते लोट पोट हो गये और नीले की पीठ थपथपाकर बोले। गुरु भाई नीले, मेरा ब्याह कराने में सबसें ज्यादा तेरी ही बुद्धि का चमत्कार दुनिया मानेगी। मुझे तो तुमने अपने भारी एहसानों में बांध ही रक्खा है। शायद तेरे गुन मैं प्रलय के बाद भी न भूल सकूंगा। मैं अपने मन में अच्छी तरह समझ गया हूं मेरी पतवार का खेवनहार तू ही है। तेरे ही सहारे मेरी नाव जाकर किनारे लग जावेगी। इस प्रकार अपने नीले अश्व की तारीफ कर तुरन्त ही गुरु गोरखनाथ जी महाराज का सुमरन करके

उनके बताये मन्त्र द्वारा ताखी नाग को याद किया। गोगावीर के याद करते ही अपने वचनों में बन्धा ताखी नाग उसी दम पाताल पुरी से फनफनाता हुआ आनकर गोगावीर को नमस्कार कर अपना शीश झुका सामने खड़ा हो गया और बोला। आज्ञा करो मुझे किस कार्य के वास्ते याद किया है।

तब गोगावीर ने नरसिंह पांडे को बुला कर नीले अश्व की बताई योजना भली प्रकार समझा दी। तुम दोनों राजा सिंधासिंह के तन्दुल नगर में पहुंचकर इसे होशियारी के संग पूरी करो। योजना सफल हो जाने पर मुझे खबर देना और अन्त में अकेले में रानी श्रीयल से मालूम कर आना कि वह चमत्कारी मणी माला का उपयोग तुमने क्यों नहीं किया। पुरोहितजी ने तुम्हें उसी वक्त दे दी होगी ; वह माला भूरिया नाग है। अगर वह कैद में पड़ा हो तो उसका भी उद्धार कर अपने साथ लिवाते लाना। अगर ताखी नाग की समझ में कोई बात नहीं आई हो तो उसे भी रास्ते में भली प्रकार समझा देना। अब यहां देर मत करो और तुरन्त ही जाने का अपना इन्तजाम करो।

जाहरवीर को बताई योजना दोनों ने भली प्रकार समझकर तन्दुल नगरी को गोरख गुरु की जय बोल

कर और गौरी सुत गणेशजी का ध्यान धर गमन किया। ताखी और नरसिंह को अपने वीरों के द्वारा समुद्र पार करवा दिया। वीरों ने दोनों के कुशलपूर्वक तन्दुल नगरी के समुद्र तट पर पहुंच जाने की जाहर वीर योधा को सूचना दी, नरसिंह पांडे और ताखीनाग ने तन्दुल नगरी की धर्मशाला में प्रथम दिन अपना आसन जमाया। अगले दिन साधू सन्त का बाना ताखी नाग के लिए और सांप पकड़ने वाले बागी का बाना अपने वास्ते नरसिंह पांडे ने तन्दुल नगरी के धूपा शहर से खरीदा।

सज्जनो, ये दोनों अपना अपना बाना पहन योजना पूरी करने के उद्देश्य में लग गए और अपनी धुन के पक्के ये दोनों वीर धर्मशाला में जाकर अपना डन्डा डोली उठा नगर में घूमने निकल गए, ताखीनाग ने तो सन्त के बाने में जाकर अपना तालाब के निकट आसन जमा लिया। राम नाम जपना पराया माल अपना रटकर मौज मारने लगा और नरसिंह पांडे बागी के बाने में नगर भ्रमणकर तालाब वाले संत की तारीफों के पुल बांधते बांधते नगर की जनता को तालाब के किनारे भेजने लगा। जनता संत दर्शन को उतावली हो होकर अपनी मनोकामना पूरी होने का वरदान

प्राप्त कर लें। बन्धुओं, लालच बड़ी बुरी बला होती है। इसी लालच के कारण बेशुमार जनता भागी भागी तालाब पर जा पहुंची। क्या औरत क्या मर्द, याने सियाने और दीवाने, तेली चमार और कुम्हार बालक बच्चे धुने जुलाहे और मनिहार, खोमचे वाले और खेल खिलौने वाले सभी भागमभाग तालाब पर जा पहुंचे। वहां बड़ा भारी मेला सा लग गया।

तालाब वाले चमत्कारी महात्मा की चर्चा राजा सिंधा सिंह के महलों तक भी जा पहुंची। राजकुमारी श्रीयल सुन्दरी ने भी अपनी सखियों तथा दासियों के मुंह से भी ये खबर सुनी कि हमारे तालाब पर बड़े पहुंचे हुए सन्त आनकर विराजमान हैं। जो दुखी प्राणी का दुख दूर करके मनोकामना पूरी करने में भगवान के समान हैं। तो अपने मन में फूली न समाई और सारा दुख भूलकर मुस्कराती हुई अपनी माता सिरौंजा सुन्दरी के निकट जा पहुंची। अपनी माता के चरण पकड़ कर निहौरे करती हुई अधीर हो कहने लगी। मैंने सुना है अपने नगर के तालाब पर एक बड़े भारी सन्त आनकर ठहरे हैं। जो सबको मनोकामना पूर्ण होने का वरदान देते हैं। मेरी तमाम सखी सहेलियाँ भी उतावली सी हो नगर की बेशुमार

जनता के पीछे दौड़ी चली जा रही हैं। मैं अपनी दासियों और सहेलियों को संग लेकर डोले में बैठकर संत दर्शन कर आती जिससे मुझे भी मनोकामना पूर्ण होने का वरदान मिल जाता और मैं दुखों से छुटकारा पा जाती। आपसे कुछ छिपा थोड़े ही है। मेरी आप से ये ही कर जोड़कर प्रार्थना है कि अपनी दुखियारी बेटी को सन्त दर्शन कर आने की आज्ञा दें।

माता ने अपनी दुलारी बेटीको हिरास देख नैनों में नीर भरा देखा तो अपने मन में अधीर होकर और थोड़ा धीरज धरकर सन्त दर्शन की आज्ञा तुरन्त दे दी। तब राजकुमारी श्रीयल ने मन ही मन प्रसन्न हो अपनी सखियों को बुला दासी रुकमदे वगैरह को संग ले मखमली परदे के डोले में सवार हो जिसमें सच्चे मोतियों की झालर बहार कर रही थी। संत दर्शन को गुरु जालन्धर नाथ योगी का ध्यान धर रवाना हो गई। बन्धुओं जब राजकुमारी श्रीयल का सजा हुआ मखमली परदे वाला डोला तालाब के निकट पहुंचा तो ताखी नाग को पहचानते देर न लगी कि हमारी भाभी आन पहुंची है जिसके लिए हम इतनी दूर से यहां आये हैं। जब राजकुमारी अपनी सखियों के संग डोले से बाहर निकली तो तुरन्त

ही राजकुमारी को पहचान कर नकली संत जी ने तुरन्त ही अपना सर्प का चोला बदल आहिस्ते आहिस्ते सबकी नजर बचाता हुआ वहां जा पहुंचा। जहां राजकुमारी श्रीयल अपनी सखियों के साथ मेले की भीड़ भाड़ देख कर खड़ी मुस्करा रही थी। अपना फन मारकर उसके पैर में जोर से डस लिया। तेजी के साथ फुंकार मारता हुआ, एक पुराने पेड़ की जड़ के पास पहुंचकर सन्त का बाना बना लिया और अपने आसन पर आनकर विराजमान हो गया। इधर राजकुमारी श्रीयल सांप का फन देखकर तुरन्त समझ गई, मुझे ये सर्प डसकर रूपोश हो गया है और वह अपनी मृत्यु के भारी भय से तुरन्त ही चारों खाने चित, पृथ्वी पर गिरकर बेहोश हो गई।

राजकुमारी श्रीयल सुन्दरी को सांप ने काट खाया है और वह तालाब के निकट बेहोश पड़ी है। ऐसा सुनकर एकदम भगी पड़ गई। राजकुमारी श्रीयल के निकट बहुत भारी भीड़ लग गई और बहुत सी डरपोक जनता बस्ती की तरफ ये कहती हुई भाग लो कि राजकुमारी श्रीयल को काले नाग ने डस लिया और वह धरती पर बेहोश पड़ी अपने मुंह से सफेद झाग उगल रही है। बांदी रुकमदे ने भी

अपनी दो तीन साथिनों को महारानी सिरौंजा सुन्दरी के महल की तरफ दौड़ा दिया। राजमहल पहुंचकर राजकुमारी श्रीयल को सांप के डस लेने की खबर कर दें। ये भी कह दें राजकुमारी धरती पर पड़ी पड़ी अपने मुखार विन्द से सफेद फैन उगल रही है।

बन्धुओ, जब यह खबर महारानी सिरौंजा सुन्दरी ने सुनी, तो वह एकदम दहाड़ मारकर अपनी छाती कूट कूट कर, बड़ी बुरी तरह दहाड़ें मार मार कर रो पड़ी। राजा सिंधासिंह को तुरन्त दरबार हाल से महल में बुलवा लिया। और राजा के आते ही अपने दास दासियों सहित, पागल के समान मिन्टों सेकिन्डों में तालाब के निकट जा पहुंची। जहां उनकी बेटी राजकुमारी श्रीयल जमीन पर बेहोश हो, चारों खाने चित पडी हुई अपने मुंह से फैन उगल रही थी। राजा सिंधासिंह ने तुरन्त ही शहर पनाह के नामी ग्रामी बागी बुलवाये, परन्तु ताखी जैसे जालिम नाग पर उनका कोई हुनर काम नहीं कर सका। जब वह राजा जन्मेजय के काबू में नहीं फंस सका, तो ये तन्दुल नगरी के बागी किस खेत की मूली थे जो ताखी के डसे पर काबू पा सकते।

जब शहर के सब बागी हारकर झकमार कर चलते बने, तो रानी सिंधासिंह और महारानी सिरौंजा सुन्दरी शहर पनाह की अपनी प्यारी जनता के सामने छाती पीट पीटकर सर धुन धुनकर, दहाड़ें मार मार कर जोर शोर के साथ रोने पीटने लगे। अपनी इकलौती लाडली बेटी की दशा देखकर, शहर पनाह की जनता व राज दरबार के सकल सरदार, दास दासी सबही बड़े उदास हो, अपने नैनों से नीर बहाने लगे। हमारे राजा रानी की इकलौती बेटी के मरने से, इन बिचारों का जीवन ही नरक बन गया है। जब नरसिंह पांडे ने बड़े बड़े राजे महाराजे और सकल दरबारियों को अधीर हो रोते हुए देखा, तो अपना मतलब बन जाने का सबसे बढ़िया वक्त इसी मौके को ठीक समझ लिया। सबको हटो बचो कहता हुआ अपने बागी के बाने में, राजा सिंधासिंह और रानी सिरौंजा सुन्दरी के निकट, भीड़ को धकेलता हुआ आ पहुंचा।

राजकुमारी श्रीयल की हालत देखकर बोला, राजा साहब, आपकी राजकुमारी के शरीर में विष व्याप्त हो चुका है। फिर भी मैं अपने गुरु महाराज के प्रताप से इसे ठीक कर सकता हूं। इतना सुनते ही

नगरी की सभी जनता इस बागी आगन्तुक का मुंह ताकने लगी। जिस कन्या के सारे शरीर में बुरी तरह विष व्याप्त हो चुका है उसे ये बागी किस प्रकार ठीक कर देगा। नगर के बड़े बड़े बागी हार झकमार कर निराश हो चलते बने। अपने नगर निवासियों की अधीरता देखकर राजा सिन्धासिंह अधीर हो बोले। अगर आप मेरी बेटी को अच्छा कर देंगे तो मैं आपको मुंह मांगा इनाम दूंगा। मुझे अपनी लाड़ली बेटी के अच्छा हो जाने की खुशी में अपना आधा राज पाट देने में भी इन्कार नहीं है। मैं पुत्र-हीन होने के नाते अपनी बेटी के ठीक हो जाने की खुशी में अपना सम्पूर्ण राज पाट भी देने से नहीं हिचकिचाऊंगा। आप किसी भी शर्त पर मेरी बेटी को अच्छा कर दें। मुझे आपकी कोई भी शर्त मानने से कतई इन्कार नहीं है।

राजा सिन्धासिंह महाराज की वार्ता सुनकर अपने बागी भेष में ही नरसिंह पांडे बोले। राजन, अति दुख पड़ने पर बढ़ चढ़कर ढींग मारना बड़ी मामूली बात लगती है। कहने में और करने में बड़ा भारी अन्तर है। जो विद्वान और कलाकार होते हैं, उनका उद्देश्य ही दूसरों की भलाई करना उनका

परम धर्म है। हमें आपके राज पाट का क्या करना है। लक्ष्मी सदा हमारे पीछे हाथ बांधे फिरती रहती है। अगर हम लोग अपने गुरु की विद्या का इस प्रकार दुरुपयोग करने लगें तो चार दिन में चक्रवर्ती नरेश बन जावें। हम तो धर्मपूर्वक जनता जनार्दन की सेवा किया करते हैं। जिस भगत को जो वचन दे देते हैं उसे निस्वार्थ भाव से तन मन धन से पूरा करते हैं। अगर आप मुझे मनचाही वस्तु किसी की मनोकामना पूरी करने का वचन दें, तो मैं आपकी राजकुमारी का इलाज करने को तत्पर हूं। मुझे अपने लिये कुछ भी नहीं चाहिये। हम तो परदुख हरने को पैदा हुए हैं। मैं भी किसी को उसके दुख दूर करने का वचन दे चुका हूं।

इस प्रकार नरसिंह पांडे का भाषण सुनकर राजा सिन्धासिंह को काफी धीरज बंधा। ये बड़ा ही त्यागी सज्जन पुरुष है जिसने मेरे आधे राज-पाट क्या पूरे राज पाट को भी, ठोकर मार कर ठुकरा दिया है और इस गरीबी की हालत में भी अपनी विद्या के बल पर, परदुख भन्जनहार बनकर चक्रवर्ती नरेश को भी तुच्छ समझता है। अपने लिये कुछ न मांग कर दूसरे के उपकार के लिये मुझे बचन बद्ध

करना चाहता है। मेरे पास अपने राज्य से ज्यादा, और श्रीयल राजकुमारी के प्यार के अलावा और है भी क्या। ऐसे परदुख भन्जनहार महात्मा को बचन देकर बंधने में लाभ के सिवा हानि होने का कोई खतरा मालूम नहीं पड़ता।

इस प्रकार अपने मन में धारणा बना महाराजा सिंधासिंह ने आगे बढ़कर नरसिंह पांडे की कौली भरकर बालक के समान अधीर होकर अपना धीरज खोकर सुबक सुबक कर रोना शुरू कर दिया और अपने दोनों हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाकर बोले। हे सन्त महापुरुष आप अपनी अपूर्व विद्या का चमत्कार दिखलाओ। मैं अपनी लाड़ली बेटी की प्राण रक्षा की खातिर आपको आपकी मर्जी माफिक मनचाहा मूल्य देने को तैयार हूं। मैं आपको वचन देता हूं कि मैं अपनी की हुई प्रतिज्ञा हरगिज भंग नहीं करूंगा। नरसिंह पांडे बोले, राजन आप अधीर हो कर अपना धीरज न खोवें। अपने गुरुदेव की कृपा से आपकी बेटी को मैं अवश्य ठीक कर दूंगा। परन्तु मैं आपको अपना चमत्कार तभी दिखलाऊंगा, जब आप भगवान शंकर को साक्षी करके सब जनता के सामने त्रिवाचा भरकर कह देंगे कि कोई भी अपनी

मनचाहो दो वस्तु जब चाहे मुझ से ले सकते हो।

नरसिंह पांडे की वार्ता सुन कर बेवस हो गंगा जल हाथ में लेकर भगवान भोलेनाथ को साक्षी कर, इस प्रकार त्रिवाचा भरी कि मैं अपनी बेटी राजकुमारी श्रीयल के ठीक हो जाने पर दो वरदान आपकी मनचाही वस्तु के, आपकी इच्छानुसार देने के लिए अपनी जनता के सामने वचन बद्ध होता हूं कि आप जिस समय भी चाहें मुझसे ले सकते हैं। मैं वर-दान देने में एक पल की भी देरी नहीं करूंगा।

इसके बाद नरसिंह पांडे ने मन ही मन मन्त्र पढ़कर रोली चावल फूल बतासे बगैरह मंगवा कर लोग दिखावे के लिए पूजन अर्चना का अपना माया जाल फैलाया और गोरख गुरु का सुमरण कर लूना चमारी फुरो बाचा कहा ही था। तभी ताखी नाग जो पहले से ही इस घड़ी का इन्तजार कर रहा था जोर शोर के संग तेजी से आन पहुंचा। और नरसिंह पांडे के पास अपना फन फैला खड़ा हो गया। अपने सामने सर्प देवता को फन फैलाकर खड़ा देख, नरसिंह पांडे बोले, हे सर्पराज सही सही बताओ तुमने इस बेखता राजकुमारी को क्यों काटा है। ताखी बोला इसने मेरे फन पर पैर रख दिया था। नरसिंह पांडे बोले

जो तुम अपना भला चाहते हो तो इस कन्या का पूरा जहर चूस कर इसे अभी भला चंगा करो। तभी तुम्हें क्षमा दान मिलेगा। और इतना कहकर राजकुमारी के पैर को ताखी नाग के सामने कर दिया। ताखी नाग ने अपने आपको बेबस सा दर्शाकर नरसिंह पांडे की आज्ञा का तुरन्त ही पालन किया। राजकुमारी श्रीयल के पैर की काटी हुई जगह का अपने मुंह से जहर चूसना शुरू कर दिया। चन्द मिन्टों में सारा जहर चुस जाने पर राजकुमारी अपने गुरु जालन्धरनाथ योगी का सुमरन कर, गफलत छोड़ कर उठकर बैठ गई।

सारी जनता में खुशी की लहर दौड़ गई। सब के चेहरों पर प्रसन्नता दिखाई देने लगी। रानी सिरौंजा सुन्दरी अपनी लाड़ली बेटी श्रीयल को अच्छा हुआ देख पागलों के समान दौड़कर गले से चिपटा कर जी भरकर सुबक सुबक कर अधीर हो जी भरकर खूब रोई। मेरी बेटी योगी जालन्धरनाथ की कृपा से ही भली चंगी हुई है। इसके मरने में कसर ही क्या रह गई थी। इसका तो दूसरा जन्म हुआ समझो। मेरे गुरु ने ही इस महान परम उपयोगी सन्त को यहां भेजा है। रानी निरौंजा सुन्दरी

ने अपने गले की कीमती मोतियों की माला तोड़ कर उसके मोती अलग कर राजकुमारी श्रीयल के शीश पर न्यौछावर कर फकीरों को बटवा दिये। जनता नें खूब खुश हो कर नारे लगाने शुरू कर दिये। कोई शिवशंकर भगवान की जै बोलता तो कोई राम भगवान की, कोई कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द द्वारकाधीश की जय बोलता तो कोई सत्य नारायण स्वामी की। कोई गुरु गोरखनाथ महाराज की जै जै करता तो कोई जालन्धरनाथ योगी की। बहुतों ने तो गंगा माई की जय बोल बोलकर आसमान ही में गर्जना पहुंचा दी। महाराजा सिन्धासिह तो नरसिह पांडे की विद्या की तारीफ के पुल बांध बांधकर ही दुहरे हुए जा रहे थे। वह नरसिंह पांडे को अपने साथ बग्गी में बिठाकर महारानी सिरौंजा सुन्दरी को संग लेकर, अपने महल को रवाना हो गये। राजकुमारी श्रीयल अपनी सभी सखी सहेलियों के साथ डोले में, हंसी खुशी सवार हो जा बैठी।

आगे आगे राजा सिन्धासिह की बग्गी जा रही थी और पीछे पीछे राजकुमारी श्रीयल का डोला जिसमें चार कहार जुड़े हुए डोले को उठाये, बग्गी के पीछे पीछे दौड़े चले जा रहे थे। उसके पीछे नगर

की सारी जनता भी हंसी खुशी अपने घर जा रही थी। जब बग्गी राजमहल के दरवाजे पर पहुंच गई, तब राजा सिन्धासिंह ने बग्गी से उतर कर, एक लोटा गंगा जल का मंगवाकर, नरसिंह पांडे को उच्च आसन पर विराजमान कर, गंगा जल से उनके दोनों चरण पखारे। खीर पूरी जिमाकर पान सुपारी से खूब खातिरदारी की और हाथ जोड़कर बोले। कृपा कर अब अपने वरदान को दोनों वस्तुएं मांग कर मुझे अपने ऋण से उऋण करो।

इतनी बात राजा सिन्धासिंह की सुन नरसिंह पंडित बोले। राजन आप तो तोमर बन्सी राजपूत हैं। अगर मेरी मांग से आप अपना बचन न निभा सकें तो रहने दें। मैं किसी का दिल दुखाकर कोई वस्तु मांग कर लेना उचित नहीं समझता हूं। राजा सिन्धासिंह बोले, आप अभी तोमर बन्सी राजपूतों को जानते नहीं हैं। हम लोग अपने बचनों के कितने पक्के होते हैं। बचन बदलने के बदले गंगाजी में डूबकर मरना अधिक पसन्द करते हैं। आप आज्ञा करें तो मैं अपने हाथ से अपना शीश काटकर भी आपको भेंट करने में नहीं हिचकिचाऊंगा। मैं अपना सारा राज पाट क्या अपनी प्राण प्यारी महारानी

सिरौंजा सुन्दरी को भी बलिदान करने में जरा भी अधीर नहीं होऊंगा। इस प्रकार राजा सिन्धासिंह ने अपने महल में सबके सामने जोश में भर कर ये बचन कहे। जहां राज कर्मचारियों गण और सकल दास दासी मौजूद थीं और रानी सिरौंजा सुन्दरी तथा राजकुमारी श्रीयल भी धीरज धरे खड़ी हुई थीं।

जब राजा सिन्धासिंह को जोशीले शब्दों में भाषण देते सुना तब नरसिंह पांडे बोले राजा साहब आप मुझे बार बार मांगने पर जोर दे रहे हैं तो आप मुझे पहला वरदान ये देवें कि आप अपनी कन्या श्रीयल का विवाह आमेर राज्य में न करके, बागड़ प्रान्त के ददरेड़ा नगर निवासी, राजकुमार जाहरवीर जोधा के संग, करना स्वीकार करें। जहां से आपने सगाई वापस मंगवाली थी। वहीं दुबारा लगन पत्रिका भिजवा दें। आप चाहें तो आमेर वालों को भी मना न करें। दोनों बारात संग संग आने से भी आपको कोई परेशानी पैदा नहीं होगी। जो बल में बलवान होगा वही दुल्हन को ब्याह कर अपने संग ले जावेगा आप दोनों वीरों का रण कौशल देखकर जीतने वाले के गले में अपनी राजकुमारी से बरमाला

डलवा दें ।

नरसिंह पांडे के वचन और बागड़ देश का नाम सुनते ही राजा सिंधासिंह सिर से पैर के अंगूठे तक तिलमिला गया। परन्तु सारे नगर के सामने वचन-बद्ध होने के कारण उनकी ना करने की हिम्मत नहीं पड़ी और बागड़ लगन भेजना स्वीकार कर लिया। जिसे देख दोनों मां वेटी अपने मन ही मन अति प्रसन्न हो धीरज धरकर चुपचाप बैठी, गुरु जालन्धर नाथ योगी का भजन करती रही। इधर राजा सिंधा सिंह बोले और दूसरा वरदान भी हाथ की हाथ मांगकर छुट्टी करो। नरसिंह पांडे बोले राजन अधीर क्यों होते हो मैं यहां से कहीं न जा रहा हूं न आप। जब मुनासिब समझूंगा मांग लूंगा। अभी मेरी धरोहर अपने पास ही जमा रहने दो। अभी तो हम यहीं रहकर आपकी राजकुमारी की देखभाल करेंगे। कहीं जहर दूसरा वार न कर बैठे।

इतना सुन राजा सिंधा सिंह अपने मन में अधीर हो काफी बेबस हो गये और फिर आगा पीछा सोच धीर धर अपने दरबार में पहुंचे।

राजा सिंधा सिंह के दरबार में चले जाने के बाद तमाशबीन जनता भी अपने अपने घरों को

सिधार गई। अपनी सखी सहेलियां को विदाकर राजकुमारी श्रीयल भी अपनी चित्रसारी में पहुंच, भारी खुशी मनाकर गाने लगीं। ये सब माया प्राण-पति की, जो गुरु गोरखनाथ का चेला। कैसा चमत्कार दिखलावे, मतलब कारण वह अलवेला इसी प्रकार गुनगुनाती गुरु गोरखनाथ और अपने पति जाहरवीर जोधा के गुण गाती मधुर नींद में बेहोश हो सो गई। नरसिंह पंडित और ताखी नाग दोनों मनुष्य रूप में जाकर राजा सिंधासिंह की अतिथि-शाला में भांति-भांति के मोहन भोग जीमकर अपने पेट पर हाथ फेरकर आनन्द कर ने लगे। वहीं तखत पर जहां गद्दे तकिये लगे थे दोनों यार आराम करके चैन की बन्सी बजाने लगे। गुरु गोरखनाथ के गुण गाते नही अघाते थे।

इधर राजा सिन्धा सिंह अपने मत्री गण व रानी सिरौंजा सुन्दरा से सलाह मशवरा कर रात्रि व्यतीत होने पर बागड़ देश लगन पत्रिका भेजने के प्रबन्ध में लग गये। उन्होंने तुरन्त ही राज पुरोहित को बुलवाकर लगन पत्रिका पूजन आदि करने का प्रबन्ध किया। इधर राज कर्मचारियों और दास-दासियों ने सकल प्रबन्ध कर दिया। तब तक नरसिंह पांडे

और ताखी नाग भी मनुष्य चोले में महल के हाल में आन पहुंचे। जहां लगन पत्रिका लिखी जानी थी। जब ये दोनों मूढ़ कुर्सियों पर विराजमान हो गये तब राजा सिंधासिंह अपनी रानी सिरौंजा सुन्दरी तथा अपने भतीजे हरिनारायण को अलहदा एकान्त कक्ष में इशारे से बुला सलाह मशवरा करने लगे। तब ताखी बोला, पंडितजी आप यहां बिराजें। अभी यहां काफी देर मालूम पड़ती है। पूजन वगैरह करने में काफी वक्त लग जावेगा। इतने में भाभी श्रीयल के कक्ष में जाकर, अपने साथी भूरिया नाग की ही पूंछ ताछ कर आऊं। विचारा जिन्दा भी है या भूखा प्यासा मर गया।

इतना सुनकर नरसिंह पांडे बोले, राजकुमारी के कक्ष में पीछे जाना, पहले मक्खी का रूप धर कर राजा रानी के कक्ष में पहुंच जाओ। ये पता करके आओ, वह हमारे खिलाफ क्या षडयन्त्र रच रहे हैं। हमें भी तो उनके सलाह मशवरे की जानकारी मिलना बड़ा जरूरी है। ताखी नाग ने उसी समय मन्त्र का जाप कर, राजा वासुकी को सुमरा और गुरु गोरख का ध्यान धर, तुरन्त अपना चोला मक्खी का बना डाला और उड़कर वहां जा पहुंचा,

जहां राजा सिन्धासिंह, उनका भतीजा हरिनारायण और सिरौंजा सुन्दरी विराजमान थे। आराम से उनके सामने ही दीवाल पर चिपक कर बैठ गया।

उधर राजा सिन्धासिंह कहने लगे बागड़ वालों को भुलावे में डालने के लिये लगन पत्रिका में तिथि चार दिन आगे की लिखवादो जिससे बागड़ वाले राजकुमारी का ब्याह हो जाने के उपरान्त यहां बारात लेकर आवें और कन्या के ब्याह हो जाने के बाद विदा हो जाने पर अपना सा मुंह लेकर वापस चले जावें। चौहान बन्स में बेटी ब्य हने की मेरी मंशा न जब थी और न अब है। अगर मैं लगन पत्रिका नहीं भिजवाऊंगा तो नगर निवासी मुझे किस प्रकार थूकेगें और वैद्य राज जिन्होंने राजकुमारी की जान बचाई है किस प्रकार मेरे जन्म में थूकेगें। वह होना चाहिये सांप भी मर जावे, और लाठी भो नहीं टूटे।

राजा सिन्धासिंह की बाणी सुनकर रानी सिरौंजा सुन्दरी अधीर हो उठी और मन ही मन बेचैन होकर धीर धर, भगवान से प्रार्थना करने लगी कि प्रभूजी आप हमारे राजा को सतबुद्धि दो नहीं तो बना बनाया सब ही काम बिगड़ जायेगा। जब कन्या की

इच्छा बागड़ प्रान्त में विवाह करवाने की है और उसका आधा ब्याह हो भी चुका है, और श्रीयल ऐसी जिद्दी लड़की है, जो अपनी आन के लिये जान की भी कोई कीमत नहीं समझती है। बागड़ के राजकुमार गोगावीर के अलावा दूसरे का मुंह भी नहीं देखेगी। वह भला अन्त अपना ब्याह किस प्रकार करवा सकती है। वह अपने धर्म के लिये अपने प्राण न्यौछावर कर सकती है। पर अधर्म नहीं करेगी और न दूसरे को करने देगी। इधर इस प्रकार रानी सिरौंजा सुन्दरी भगवान से प्रार्थना करती है और उधर ताखी नाग मक्खी बना दीवार पर बैठा राजा सिन्धासिंह और उनके भतीजे हरि नारायण की वार्ता सुनता रहा।

राजा सिन्धासिंह के भतीजे और रानी सिरौंजा सुन्दरी ने अपने राजा को भली भांति समझाया। अपनी की हुई प्रतिज्ञा न तोड़कर राजकुमारी श्रीयल का विवाह बागड़ प्रान्त में ही राजकुमार जाहरवीर जोधा के संग करना चाहिये। परन्तु राजा सिन्धासिंह ने अपनी जिद्द के कारण इन दोनों में से एक की भी न चलने दी और अपने सामने राज पुरोहित को बुलाकर लगन पत्रिका की तिथि चार दिन आगे

को बदलवा दिया। राज पुरोहित ने लालचवश अपने राजा सिन्धासिंह के सामने जवान न खोली और चार दिन आगे को तिथि बदलकर गलत लगन पत्रिका बनाकर तैयार करा दी। तब राजा सिन्धासिंह ने सोचा जब तक ये बारात यहां आवेगी त तक कन्या सुसराल विदा होकर आमेर नगर हुंच जावेगी।

इसी समय राज्य के प्रधानमंत्री ने कक्ष में प्रवेश किया और आन कर बोले। पुरोहित जी ने कहा है लगन की दुहरी सामग्री तैयार हो चुकी है अब केवल आप लोगों के पधारने की ही देरो है। इतना सुनते ही तीनों प्राणी कक्ष के बाहर निकल कर चले आये। मक्खी बना ताखी भी उड़कर नरसिंह पांडे के सामने पहुंच मनुष्य बन कुर्सी पर विराजमान हो गया और गोष्ठी की सकल वार्ता चुपके चुपके कान में बयान कर दी। ये भी कह दिया कि बागड़ वालों को धोका देने के लिये ही, चार दिन आगे की तिथि बदलवाकर लगन पत्रिका तैयार करवाई है। जो कुछ गुजरा था तुम्हें सब बता दिया है। अब तुम जानो और तुम्हारा काम, जैसा उचित समझो करो। मैं तो चला अब श्रीयल भाभी के कक्ष में अपने

साथी भूरिया नाग की खबर सुध लेने के वास्ते। और मक्खी के ही रूप में वह राजकुमारी श्रीयल के कक्ष में पहुंच कर, अपना राजकुमार का रूप धारण कर बोला।

भाभी जी नमस्कार। मैं बागड़ देश से जाहर वीर ज.धा का भेजा आया हूं उन्होंने पुछवाया है कि मैंने पुरोहि. जी के हाथ जो मणीमाला भिजवाई थी तो कहा था कि जब कोई संकट पड़े तो इसकी जोत बाल कर जो भी मनचाही वस्तु मांगोगी ये माला आपका हुक्म मान कर आज्ञा पालन करेगी। सो आपने तो अपनी राजी खुशी की कोई खबर सुध भी नहीं भिजवाई। क्या पुरोहित जी ने उस मणी-माला को अनमोल वस्तु समझकर, अपने कबजे में ही तो नहीं धर ली। आपको अपने पतिदेव जाहर वीर जोधा की खबर सुध लेना नहीं भूलना चाहिये था। जो भी कारण हो मुझे साफ साफ बताने की कृपा करें।

राजकुमार (ताखी) की वार्ता सुनकर राजकुमारी श्रीयल बोली, जबसे मेरे पिता जी ने बागड़ देश से मेरा टीका वापस कराया है, तभी से मेरा दिमाग पागलों जैसा हो गया है। मैं उनकी अध-

ब्याही नारी होकर किसी गैर की दुल्हन किस प्रकार बन सकती हूं। मेरे पिताजी की जिद है कि मैं अपनी बेटी चौहानों में हरगिज नहीं विवाहूंगा। मैं जिस समय काफी परेशान थी, तभी पुरोहित जी ने आमेर नगर से आन कर एक मणीमाला दी थी। उन्होंने क्या कहकर दी थी मैंने न कुछ समझा और नाहीं कुछ पुरोहित जी से पूछा। मैंने तो अपने जेवरों के साथ डिब्बे में बन्द करके रख दिया था। उस समय से आज तक परेशानी के कारण मैं बौरानी ही बनी रही। इसलिये आज तक उस जेवर के डिब्बे को खोलकर देखने का मुझे अवकाश नहीं मिल पाया।

इतना कहकर राजकुमार (ताखी) को अपना सन्दूक खोल डिब्बा निकालकर वह मणीमाला सामने धर दी। जब भूरिया नाग ने अपने साथी ताखी को राजकुमार के भेष में देखा तो उसे पहचानते देर न लगी। उसने ताखी को पहचान कर नमस्कार किया और मुस्कराकर बोला भाई तुमने यहां आन कर मुझे कैद से छुड़ाया है इसका बदला किस प्रकार चुकाया जायगा। गोगा जी व राजा वासुकी वगैरह सब प्रसन्न तो हैं। ताखी बोला सब खूब मौज में आनन्द कर रहे हैं। तब भूरिया बोला। मित्र अगर

तुम कुछ दिन और न आते, तो मेरी इस कैद में हड्डियां भी ढूंढे न मिलतीं। ये तो मेरी पुरानी ताकत थी जो इतने दिन भूखा प्यासा कैद में पड़ा रहा। अगर मैं शक्तिहीन होता तो कभी का स्वर्गलोग सिधार गया होता।

ताखी बोला यार भूरिया असल बात ये है कि इन भाभियों का चक्कर ही कुछ ऐसा है। इनका मारा न जीने का न मरने का। अब जरा तुम भी श्रीयल भाभी को राजकुमार बनकर दिखा दो, जिन्होंने तुम्हें भूखा प्यासा मारा है। तब ताखी अपनी काया पलट करके मणीमाल के स्थान पर वह अति सुन्दर राजकुमार हो गया और अपने दोनों हाथ जोड़कर बोला। भाभी जी नमस्कार। आपने तो मुझे अपनी कैद में डालकर भूखा प्यासा ही मार डाला था। न मालूम किसके भाग्य से प्राण बचे। अगर मैं मर जाता तो मेरे बाल बच्चों का ऐसा श्राप तुम पर पड़ता कि तुम इस जन्म में बागड़ प्रांत में अपना विवाह करवा के जाने न पातीं। भूरिया राजकुमार की मधुर वार्ता सुनकर ताखी नाग हंस पड़ा और रानी श्रीयल ने झेंपकर अपना मुंह नीचे झुका लिया और बोली, मेरे ऊपर इस प्रकार गम का

पहाड़ टूटा मैं अपनी ही सुध बुध खो बैठी। जो भी अपराध हुआ है भूल के कारण ही हुआ है। इसलिए मैं क्षमा की पात्र हूं।

इतनी सुन रानी श्रीयल को नमस्कार कर ये दोनों उड़कर अपने कक्ष में जा पहुंचे, जहां वह ठहरे हुए थे। इधर ताखी द्वारा सकल वार्ता सुनकर नर सिंह पांडे वहां जा पहुंचे जहां पुरोहित जी ने बागड़ प्रान्त वाली लग्न पत्रिका में चार दिन अगाड़ी की तिथि बार लिखकर पत्रिका तैयार करके धर दी थी। राजा सिंधासिंह ने अपने पुरोहित जी की आज्ञा अनुसार राजकुमारी श्रीयल को दासी रुकमदे के हाथ बुलवाकर दोनों लउन पत्रिकाओं का पूजन करवाकर अपने कुल देवताओं को पुजवा दिया। पान सुपारी से स्वागत कर अतिथियों को विदा किया। इसके पश्चात अपने परिवार वालों की सम्मति से नाई पुरोहित को प्रथम आमेर नगर रवाना कर दिया। बागड़ की लगन भेजने में जान बूझकर इसलिये देरी की जा रही थी कि कोई नाई पुरोहित बागड़ जाने को तैयार ही नहीं होता था।

जब नरसिंह पांडे ने किसी को बागड़ जाने के लिए रजामन्द होते नहीं देखा। तब उचित अवसर

जान मधुर मुस्कान बखेर बोले, राजन आज आप मुझे मेरा दूसरा वरदान भी देने की दया करें। अब मैं यहां और ज्यादा रुकना मुनासिब नहीं समझता। राजा सिन्धासिह बोले, मांगलो वैद्य जी वरदान, वह तो आपकी धरोहर है। आप जब चाहें ले सकते हैं। नरसिंह पांडे बोले हे महाराजा साहब मैं आपसे ये मांगता हूं कि ददरेड़ा नगर वाली लगन पत्रिका मेरे द्वारा ही आप भिजवायें।

राजा सिन्धासिह मधुर मुस्कान बखेर मुस्कराये। उन्हें मनमानी मुराद मिल गई और नरसिंह पांडे के वरदान का हऊआ इस तरह समाप्त हो जायेगा उन्हें स्वप्न में भी आशा नहीं थी। वह बोले वैद्य जी महाराज मुझे आपसे कोई उजर नहीं है जिसमें आप राजी हों उसमें मैं राजी। आप बड़ी खुशी के साथ बागड़ प्रांत लगन ले जा सकते हैं। राजा सिन्धासिह ने सोचा हम लगन पत्रिका भेजने के झन्झट और खर्च दोनों से बच गये तथा वैद्य जी के वरदान से सस्ते में ही छुट्टी पा गये। देर सवेर की जो भी बुराई भलाई होगी वह इन्हीं वैद्य जी की वजह से हुई वहां जानी जावेगी और सारी जबावदेही के जुम्मेदार ये ही ठहराये जावेंगे। जो काम हम लोग

इनकी नजर बचाकर करते थे वह भी झन्झट इनके यहां से चले जाने से जाता रहेगा। इनके दोनों वरदानों का भी इतना सस्ता छूट जाने की मुझे जरा भी आशा नहीं थी। मेरी प्राण प्यारी बेटी श्रीयल भी नफे में ठीक हो गई और कुछ लेना देना भी खास नहीं पड़ा। वैसे वैद्य जी हैं तो परोपकारी ही, परन्तु मुझे तो आज तक ये हो शक रहा कि ये बागड़ वालों का भेजा ही कोई खास आदमी है।

राजा सिंधासिंह अपने राजपुरोहित और प्रधान मन्त्री को अपने पास बुला कर बोले, ये जो दयालु वैद्यजी महाराज हैं इन्होंने राजकुमारी श्रीयल को मौत के मुंह में से बचाया था और उसे दुबारा जीवन दान दिया था। हमारा भार हलका करने के कारण बागड़ प्रान्त लगन ले जाने का भार भी अपने सिर ओट लिया है और इसे ही अपना दूसरा वरदान भी दया के कारण समझ लिया है। ऐसे दयावान सन्त को हम लोग जीवन पर्यन्त भूल नहीं सकेंगे। राजा सिंधासिंह की वार्ता सुनकर प्रधान मन्त्री व राज पुरोहित दोनों ने अपना सिर झुकाकर स्वीकार कर लिया। और सारी वस्तुयें अपने दास दासियों द्वारा वैद्य जी के कक्ष में पहुंचवा दीं। रथ में वैद्य जी को

उनके साथियों सहित, उनकी सकल वस्तुयें दे उन्हें सम्मान पूर्वक बिदा कर समुद्र तट तक पहुंचवा दीं। वहां पहुंचकर ताखी नाग तथा भूरिया नाग ने समुंद्री वायु सेवन कर अपने को बलवान बनाया।

जब समुद्र तट सूना होगया और दिन मुन्दने लगा, तब दोनों नागों ने नरसिंह पांडे को अपनी पीठ पर बिठा गुरु गोरखनाथ को मना ऊंची उड़ान भर समुद्र पार कर लिया। तभी श्री गोगा राजकुमार अपने नीले घोड़े पर सवार होकर इन तीनों की सुध बुध लेने समुद्र तट पर आन पहुंचे। गोगा जी को देखते ही तीनों मित्र बड़े प्रसन्न हो नमस्कार कर गले मिले और अपनी सारी कथा हंस हंसकर व्यान करी। राजा सिंधासिंह की चालबाजियों को किस प्रकार मटियामेट किया।

बन्धुओ, जब गोगा ज़ी ने नरसिंह पांडे की सारी बार्ता सुनली, तब लगन का सारा सामान जो भूरिया नाग के कन्धे पर था, उतरवा कर अपने नीले घोड़े की पीठ पर बांध लिया और लगन पत्रिका अपनी जेब में संभालकर धर ली। चारों मित्र बल-वान नीले अश्व की पीठ पर चढ़ गुरु गोरखनाथ जी की जै बोल कर चल दिए। तब जाहरवीर जोधा

बोले, पांडे जी राजा सिंधासिंह अपने को बड़ा चलता पुर्जा समझता है। हम लोगों को जैसे तिथि वार का कोई पता नहीं हो। मुझे तो बैमाता ने पहले ही बता दिया था फागुन वदी नौमी को ही तुम्हारा और रानी श्रीयल का शुभ विवाह होना निश्चित है। हमारी बारात तो दो दिन पहले ही तन्दुल नगरी पहुंच जावेगी। परन्तु नरसिंह पांडे ने अपनी तारीफों के पुल बांधने नहीं छोड़े। इसी प्रकार हंसते मुस्कराते चारों मित्र कुछ अरसे में ददरेड़ा नगर आन पहुंचे। तब गोगावीर ने अपने तीनों मित्रों की खूब खातिरदारी की। फिर ताखी नाग नमस्कार कर आज्ञा ले अपनी पाताल पुरी में अपनी नागिन के पास जा पहुंचा। भूरिया नाग को मणीमाला के रूप में पहले के अनुसार ही अपने गले में गोगाजी ने पहन लिया।

इसके बाद नरसिंह पांडे को अपने गले से लगाकर बोले, भैया तुमने अपनी मित्रता को चार चांद लगा दिए। आपका ऐहसान भुलाया नहीं जा सकता। आप सा त्यागी मित्र इस स्वार्थी संसार में मिलना बड़ा ही दुर्लभ है। आपने राजा सिंधासिंह का न आधा राज्य स्वीकार किया न सारा। ये कह

कर एक थैली हीरे जवाहरात की अपने मित्र नरसिंह पांडे को भेंट कर दी ।

* श्री गोगा पुराण चौतीसवां अध्याय समाप्त *

पैंतीसवां अध्याय

विवाह की तैयारी

प्यारे बन्धुओं, नरसिंह पांडे को प्रसन्न कर जाहर वीर जोधा ने अपने दोनों मायावी वीरों को याद किया । मन्त्रों का उच्चारण सुनते ही पलभर में आन पहुंचे और श्री गोगावीर को नमस्कार कर हाथ जोड़ कर सामने खड़े होगये । अपने वीरों को सनमुख देख कर जाहरवीर जोधा बोले, आप दोनों तन्दुल नगरी के नाई पुरोहित बनकर मेरे दादा जी उम्मरपाल सिंह के सनमुख ये लगन पत्रिका और उसकी सकल सामग्री लेकर पहुंच जाओ और ये भी जता देना हमारे प्रांत में लगन पत्रिका में चार दिन आगे की तिथि लिखने का कायदा है । वैसे ब्याह फागुन बदी नौमी का ही निश्चित है ।

इतना सुनते ही दोनों वीरों ने अपना बाना नाई पुरोहित का बना लिया और गोगा जी को अपना शीश झुका कर तुरन्त ही सकल सामिग्री और

लगन पत्रिका लेकर भरे दरबार में जा पहुंचे । राजा उम्मरपालसिंह को नमस्कार कर, सकल सामग्री मय लगन पत्रिका के उनके अगाड़ी धर दी और गोगा जी के कहे अनुसार सारी वार्ता समझा कर बयान कर दी । महाराज उम्मरपाल सिंह से वापिस चलने की आज्ञा मांगी और बोले हमारे राजा ने शीघ्र ही हमें वापिस लौटने का हुक्म दिया है । इतना सुनकर राजा उम्मरपाल सिंह ने उन्हें खूब दान दक्षिणा दे निहाल कर दिया और सम्मान के साथ दोनों को विदा किया ।

इधर जाहरवीर जोधा ने अपनी माता महारानी बाछल को बताया, विवाह तन्दुल नगरी में फागुन वदी नौमी को ही होना निश्चित रहा है । वहां के नाई पुरोहित बाबा जी को लगन पत्रिका दरबार में पहुंचा कर वापिस चले गये हैं । अब आप भी ब्याह की तैयारी करें । अब दिन रह ही कितने गए हैं । चार दिन पहले तो बारात रवाना होगी ही तभी ठीक समय पर इतनी दूर पहुंचा जा सकेगा । अभी तुम्हें भात नौतने भी जाना है । अपने इकलौते वीर बेटे की वार्ता सुनकर रानी बाछल फूली न समाई और अपने पति राजा जेवरसिंह से सलाह मिलाकर और अपनी

सखियों को बुलाकर अपना ठाटबाट बनाकर रथ में सवार होकर अपने माता पिता के यहां सिरसा पाटन नगरी जा पहुंची और रथ महल के बाहर रुकवाकर अपनी माता से जाकर गले मिली और भात की भेली आगे धरकर बोली की माता जी, तुम्हारे गोगा का इसी फागुन बदी नौमी का विवाह है और अपने भैया से बोली भाई लगन चढ़ चुकी है। ब्याह के केवल दस दिन शेष हैं।

इतनी बात सुन महारानी बाछल का गोद लिया भाई बोला, तो इसके माने यह हुए कि आप भात नौतने नहीं आई हैं हमें बेइज्जत करने आई हैं। इतने कम समय में भात की तैयारी करना हमारे लिए कतई नामुमकिन है। दया कर आप उल्टी लौट जावें हम आपके यहां इतनी जल्दी नहीं पहुंच सकते। महारानी बाछल अपने भाई की वार्ता सुनकर बड़ी व्याकुल हुई। जब वह निराश हो वापस लौटने लगी तो उनकी माता रानी सारंगदे सुन्दरी अपने पड़ौसी बनिये को समझा बुझाकर अपने महल में बुला लाई, तब धनपत सेठ बोले, बहन बाछल उदास क्यों होती है मैं भी तो तेरा भाई ही हूं। मेरे घर चल भात की भेली दे। मैं तेरे संग भात भरने चलूंगा। तुझे

तो अपने बेटे के ब्याह में भात पहनने से मतलब।

धनपत सेठ की वार्ता सुनकर रानी बाछल के भाई ने शर्मिन्दा होकर भात की भेली उठा ली और धनपत बनिये से बोला, इतने कम समय में राजा महाराजाओं जैसा भात किस प्रकार भरा जावेगा। तब धनपत सेठ ने कहा, घबराने से कोई काम नहीं चलता। तुम्हें जो सहयोग चाहिए मुझसे लो। ब्याह सगाई रोज रोज थोड़े ही होते हैं। ये कहकर भात की पूरी तैयारी उसी दिन पूरी करवा ली। अपने भाई और कुटुम्ब परिवार तथा मिलने जुलने वालों को बुला, अपनी रानी और दासियों को संग लेकर थोड़ी सी बहादुर सेना के साथ अगले दिन सुबह ही महारानी बाछल के संग, मंजिल दर मंजिल तय करते हुए ददरेड़ा नगर जा पहुंचे। और बाजे गाजे के संग भात का आयोजन किया। उधर अरजन सरजन बुआ छबीलदे को उसकी ससुराल से लेकर आन पहुंचे। तब नगरी की कुल बधुओं ने महल में आनकर ढोलक मंजीरे बजा बजाकर, इन्द्रलोक की परियों के अखाड़े को भी मात दे दी।

इधर राजा उम्मरपाल सिंह ने अपने कुटुम्बियों तथा रिश्तेदारों को बुलवा मंढा गढ़वाकर पुरो-

हित जी से पूजन करवाया। उधर नगरी के नर नारी बूढे बालक प्रसन्न चित होकर अपने घरों को सजा रहे थे। जैसे उन्हीं के घर ब्याह हो रहा हो। राजा उम्मरपाल सिंह के घर नौबत बज रही थी गरीबों फकीरों को मनचाहा धन देकर खजाना लुटाया जा रहा था। बहुत से राजे महाराजे निमन्त्रण पाकर अपनी अपनी फौजें सजाकर गोगा जी की बारात के लिए आन पधारे। सांग तमाशों और नर्तकियों के नाच गाने ने दुगनी रौनक कर रक्खी थी। मढ़ तले केवड़े गुलाब जल से गूगावीर को स्नान कराया गया। नाना प्रकार के आभूषणों से सजाकर, नीले घोड़े को सजवाया गया। मढ़ तले जब सब बाराती जीम जूंठ कर निवट गये। तब रतन जड़ित सेहरा बांध कर सिर पर मोहर सजा घुड़चढ़ी से निबट, सुघड़ सुहागिन नारियों ने अपनी मधुर बाणी से ढोलक मन्जीरे बजा बजा कर मंगलाचार गवाये और बाजों गाजों के संग तोपों की गड़बड़ाहट में बारात ने प्रस्थान किया। गोगाजी के ब्याह की खुशी में सब ऐसे मतवाले हो गये कि गुरु गोरखनाथ जी को ब्याह का नौता ही भिजवाना भूल गये। किसी ने ठीक कहा है दुखमें

सुमरन सब करें, सुख में करे न कोय, जो सुख में सुमरन करे तो दुख काय को होय।

बन्धुओ, बारात समुद्र तट पर जा पहुंची और पशुओं के चारे दाने की व्यवस्था कर विशाल समुद्र पार करने पर विचार किया। जब किसी की समझ में कोई उपाय नहीं बैठा। तब गोगावीर ने आगे बढ़कर कहा, दादाजी अधीर होने की कोई आवश्यकता नहीं, गुरु गोरखनाथ जी की सिखाई विद्या द्वारा, इस समुद्र को क्षण मात्र में सुखा दूंगा। गोगाजी के मुख से गुरु गोरखनाथ का नाम सुनते ही सब सज्जन महान दुखी हुए। क्योंकि उन्हें उनके शिष्य के ब्याह का नौता भिजवाना सब भूल गए। सभी परिवार इतनी बड़ी भूल करने के कारण महान दुखी हुआ। अब क्या हो। उनका कोई न ठिकाना न पता और तलाश करने का समय भी जाता रहा। फिर भी सबने सलाह कर नरसिंह पांडे को कजली वन को नीले घोड़े पर चढ़ा कर रवाना कर दिया और समझा दिया। पांडे जी आप ही हम सब में काम के आदमी हो। तुम्हारे सिवा गुरु गोरखनाथ जी को मनाकर लाना दूसरा कोई नहीं जानता। जब तक आप नहीं लौटोगे हम सब आपका यहीं बैठे इन्तजार करेंगे। अब गुरु

महाराज को लाने में तुम्हारी चतुराई का काम है।

नीला अश्व कजली वन के रास्ते से परिचित था। वह कई दफा गुरु गोरखनाथ की धूनी पर जा चुका था। वह अति शीघ्र आसमान को उड़ गया और कबूतर की सी कला खाकर नीचे उतरता हुआ कजली वन में गुरु गोरखनाथ के आश्रम पर जा पहुंचा। नरसिंह पांडे को नीले घोड़े पर सवार देख कर सभी संत शंकाओं के वशीभूत हो गए और उन के आने का कारण जानने को आतुर हो गये। नरसिंह पांडे ने तुरन्त ही अश्व से उतरकर धूनी पर पहुंच गुरू चरणों में अपना शीश नवा दिया। तब गुरु गोरखनाथ जी ने अपने शिष्य के सिर पर हाथ धर कर आशीष दी और पूछा। कहो, गोगा के ब्याह की तैयारी तो खूब धूमधाम से हो रही होगी और तुम्हारे संगी साथी सब सुख से हैं। गुरु गोरखनाथ जी के वचनों को सुनकर नरसिंह पांडे बोले, त्रिकाल दर्शी गुरु से क्या कुछ छिपा है। आपके दासों को तो सुखी रहना ही है।

इतना सुन गुरु गोरखनाथ बोले, पडित जब बारात समुद्र तट पर पहुंच गई तो तुझ ब्राह्मण को मेरे गुस्से में भस्म होने को क्यों भेजा है। मैं और

मेरा चेला कोई तुम्हारे साथ नहीं जायेगा। गुरु गोरखनाथ को अपनी दिव्य दृष्टि से सब कुछ धूनी पर बैठे बैठे ही दीख रहा था। अपने गुरु के वचन सुनकर नरसिंह पांडे का मुंह सफेद पड़ गया। उसे उत्तर न सूझा। उसने आव देखा न ताव, झट पट गुरु चरणों को पकड़ लिया और अपराधों के लिए क्षमा मांगी तथा जमात सहित चलने की प्रार्थना की। परन्तु गुरु गोरखनाथ टस से मस नहीं हुए और अधीर हो बोले। मैं बारह वर्ष घूम फिर कर अपने गुरु मछेन्द्रनाथ को खोज कर यहां आया हूं मुझे भगवत भजन करने दो।

अपने गुरु का गुस्सा देखकर नरसिंह पांडे को जब उपाय नहीं सूझा तब उसने चटपट अपनी तलवार सूत कर अपने गले पर धर जमाई और अधीर हो बोला। गुरू जी अब अगर आपने चलने से इन्कार किया तो नरसिंह पांडे की गरदन आपके चरणों पर लोटती नजर आवेगी। मैं भी गुरु गोरखनाथ का चेला हूं। किसी ऐरे गैरे का नहीं। इतना कह अधीर हो सुबक सुबक कर रो पड़ा। नरसिंह पांडे का मित्र प्रेम तथा गुरु भक्ति देखकर गुरु गोरखनाथ पिघल पड़े। निश्छल भक्ति की विजय हो गई।

गुरु गोरखनाथ बोले, जरा सी बात पर आत्म हत्या मैं तो तुम्हारी गुरु भक्ति की परीक्षा ले रहा था। इतना कहकर नरसिंह पांडे को अपने गले से लगा लिया और अपने चौदह सौ चेलों को हुक्म दिया कि चटपट तैयार हो जाओ। अभी गोगा की बारात में शामिल होना है। जब सब तैयार हो गये तब औघड़नाथ ने सबको आंखें बन्द करने का आदेश दिया।

जब सबने आंखें मूंद लीं। तब पल भर भी देर न लगी। आंखें खोलते ही सबने अपने गुरु भाई गोगा की बारात में अपने को शामिल देखा। गुरु गोरखनाथ जी को मय जमात के नरसिंह पांडे के साथ आया हुआ देखकर महाराजा उम्मरपाल सिंह राजा, जेवर सिंह बहादुर तथा अरजन सरजन सहित, सभी साथियों ने गोगा वीर के संग, गुरु चरणों में अपना मस्तक नवाया। आदेश शब्द का उच्चारण कर सबने गोरख नाथ के चरण छुए। गुरु गोरखनाथ से मनोभावना छिपी तो थी ही नहीं, उन्होंने भी व्यर्थ समय खोना उचित नहीं समझा। और मन्त्र बल द्वारा योग विद्या फैलाकर ऐसी माया रची कि हर व्यक्ति को अपने साथ गुरु गोरखनाथ ही खड़े दिखाई दिये। तब

राजा उम्मरपालसिंह ने आगे बढ़कर उनकी कुशल क्षेम पूछी। उनका मस्तक लज्जा की गिलानी से झुका पाया। तब गुरु गोरख बोले।

राजा साहब आज हमें तन्दुलनगरी पहुंचना परम आवश्यक है। अन्यथा आमेर नरेश के पहुंच जाने पर, गोगा का ब्याह करने में कठिनाई पड़ेगी। गुरु गोरख नाथ की वाणी सुनकर राजा उम्मरपालसिंह बोले, गुरु देव आप हमारी भूल क्षमा कर दें। जिस प्रकार उचित समझें अपने शिष्य की बारात का संचालन करें। राजा उम्मरपालसिंह की आधीनी देखकर, गुरु गोरखनाथ ने अपने उड़नखटोले पर घोड़े, हाथी, जो जानवर थे सब को मन्त्रों द्वारा मक्खी बनाकर बिठा दिया और अपनी भभूति उड़ाकर तमाम मानव और सामान इतने हलके और छोटे कर दिये जैसे भुनी हुई मक्का के दाने। उनमें से काफी गोगा जी के नीले अश्व पर लद गये। बाकी अन्य बाराती और बचा खुचा सकल सामान औघड़ नाथ के विमान में भर दिया। जहां खाने पीने की बारातियों के लिये सामग्री भरी हुई थी।

गुरु गोरखनाथ के आदेश शब्द का उच्चारण करते ही उनका उड़न खटोला और ओघड़नाथ का विमान तथा जाहरवीर जोधा का नीला अश्व

आसमान में ऊंचा उड़कर अल्प समय में ही तन्दुल नगरी जा पहुंचे। वहां पहुंचकर तब अपना सब सामान राजा सिन्धासिंह के जनमासे में जा धरवाया और फौज पलटन हाथी घोड़े जो मक्खी मच्छर बने हुए थे, सब को बाग के पेड़ों पौधों पर चिपटा दिया। अपनी योगमाया के चमत्कार से पृथ्वी से चार हाथ ऊपर अधर में अपना धूना चेता दिया। नरसिंह पांडे, कोतवाल भज्जू चमार और रतना भंगी और अपने शिष्य औघड़नाथ को जाहरवीर जोधा और नीले घोड़े सहित राजा सिन्धासिंह के बनवाये सुन्दर डेरों में ठहरा दिया। जो उन्होंने आमेर नरेश के ठहरने के लिये बनवाये थे।

अगले दिन तन्दुलनगरी के राज कर्मचारी जनमासे का प्रबन्ध करने के वास्ते आन पहुंचे। क्योंकि आमेर वालों की बारात आने का समय आन पहुंचा था। जब उन्होंने जनमासे के निकट साधू सन्तों को आसन जमाये देखा तो हाथ जोड़कर बोले, बाबा लोगो आप सब इस स्थान से तुरन्त उठ जाओ। यहां हमारी राजकुमारी की बारात आनकर ठहरेगी। इतना सुन सन्त औघड़नाथ बोले, बन्धुओं हम कोई ऐरा गेरा नहीं हैं। हम लोग बागड़ प्रान्त के गोगा जी की

बारात के बाराती हैं। अगर आपको यकीन न हो तो जाहरवीर जोधा से जाकर पूछ लो जो राजा सिन्धासिंह का जमाई है और राजकुमारी श्रीयल के संग आधा ब्याह हो भी चुका है। वह सामने शानदार डेरे में ठहरे हुए हैं और अगाड़ी नीला अश्व बन्धा हुआ है।

बन्धुओं, सन्त औघड़नाथ की बात सुनकर और नीला घोड़ा बढ़िया स्टेन्ड पर बन्धा देखकर, तुरन्त राजा सिन्धासिंह पर खबर एक सेवक द्वारा भिजवाई। बागड़ देश का राजकुमार नीले अश्व का सवार और तीन चार उसके यार दोस्त कुछ साधु संन्यासी, जनमासे और जनमासे के बाहर आसन जमाये हुए हैं। सुन्दर डेरों में राजकुमार तथा उसके यार दोस्त ठहरे हुए हैं। एक सन्त जो इन सबका गुरु मालूम पड़ता है, धरती से चार हाथ ऊंचा अधर में धूनी रमाये तपस्या कर रहा है। अब आपकी जैसी आज्ञा हो किया जावे।

जिस समय सेवक ने राजा सिंधासिंह को जाकर सन्देश दिया, उस समय वह अपने कुटुम्बियों से बारात के स्वागत की योजना पर वार्तालाप कर रहे थे वो बेमौके की वार्ता सुनकर अधीर हो उछल पड़े,

उनकी बनी बनाई योजना पर पानी फिर गया। उन्हें ये ही पता था कि मेरे गुरु जालन्धर नाथ राजा गोपी चन्द की कैद में ही घोड़ों की लीद में अभी तक दबे पड़े हैं और अपने पूर्व जन्म के पापों की सजा भुगत रहे हैं। जिनके छूटने की अभी तक कोई सम्भावना नहीं है। उनके शिष्य कानिफानाथ वहां मौजूद थे परन्तु जालन्धर नाथ योगी ने उनसे मना कर दिया था कि मैं श्रीयल के ब्याह में शामिल नहीं होऊंगा। तुम मेरी कैद से छूट जाने का भेद छिपाये रखना। मैं ऐसे घमन्डी मूर्ख राजा को अपना शिष्य कहना भी पसन्द नहीं करता। जिसने मेरी आज्ञा का उलंघन कर मेरा अपमान तुम्हारे सनमुख किया था। तुम शौक से जाओ और मेरे वचन को झूठा बनाकर राजकुमारी श्रीयल का अन्त ब्याह करवाकर दिखाओ। इस कारण कानिफानाथ ही श्रीयल के ब्याह के समय तन्दुल नगरी में विराजमान थे। उन्होंने कहा राजन गुरु नहीं तो क्या शिष्य तो मौजूद है। मैं अभी जाकर उस बारात को देखता हूं। अगर गुरु गोरखनाथ इस बारात के साथ आये हैं तो मैं उनसे परामर्श कर आपको सब बातों से आगाह करूंगा।

इतनी वार्ता कर कानिफानाथ योगी ने गुरु गोरख नाथ के पहुंचकर, आदेश कहा। कानिफा नाथ को अपने सामने सनमुख खड़ा देखकर, गुरु गोरख नाथ ने भी आदेश शब्द उच्चारण किया और सम्मान पूर्वक अपने निकट बिठला लिया। कानिफानाथ अपने घमन्डी स्वभाव के कारण बोले, आप मेरे गुरु के स्थान पर क्या सोचकर विराजमान हो गए। गुरु गोरखनाथ भी तुर्श हो प्रेम पूर्वक बोले। कानिफा नाथ तुमने तो सन्तों के सभी गुणों को तिलान्जली दे दी। तुम राजकुमार बनकर मोहन भोग उड़ाते फिरते हो। क्या यही नाथ पन्थ की सेवा है। कानफिानाथ ईंट का जवाब पत्थर देखकर नम्र पड़ कर बोले। मुझे तो राजा सिन्धासिंह ने ये देखने भेजा है कि बागड़ की बारात में कौन कौन आया है। अब मैं यह जानना चाहता हूं अगर राजा सिंधा सिंह अपनी प्राण प्यारी बेटी का ब्याह बागड़ वालों से नहीं करना चाहते हैं तो आप सन्त होकर बागड़ के ऊबड़ खाबड़ प्रदेश में कन्या को ब्याह कर जबर-दस्ती क्यों ले जाना चाहते हो।

इतना सुन गोरखनाथ नम्र स्वर में बोले, भाई कानिफानाथ आपने सही बात समझी ही नहीं है।

प्रथम बात तो ये है कि बैमाता ने इन दोनों का जोड़ा जन्म जन्मान्तर से मिला रखा है। दूसरे आपके गुरुदेव ने भी अपनी प्रेरणा से राजा सिंधासिंह को आदेश दिया था कि अपनी कन्या का ब्याह ददरेड़ा निवासी गोगावीर से कर देना। तीसरे गोगावीर का ब्याह इस कन्या के साथ आधा हो चुका है। चौथे राजा सिंधासिंह चौहानों से वैरभाव के कारण कुपात्र को अपनी कन्या देने को तैयार हैं। इस बात की जांच पड़ताल कन्या की माता महारानी सिरौंजा सुन्दरी से आप कर सकते हैं। भाई कानिफानाथ आप ही बतावें कौन अपनी अधब्याही दुल्हन को काणे भैंणे राजकुमार के साथ जबरदस्ती कन्या के पिता की जिद के कारण अधर्म पूर्वक ब्याहने देगा।

अब आप ही बतावें ये अप्सरा के समान सुन्दरी कन्या आमेर नरेश के काणे भैंणे राजकुमार के साथ सुख पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेगी। इसके अलावा कन्या को सांप के काटने के बाद नरसिंह पांडे से कन्या बागड़ देश में ब्याहने को अपने नगर की सब जनता के सामने वचन बद्ध हुए हैं। आपको अपने गुरु का अपमान करने वाले का साथ देकर अधर्म नहीं करना चाहिए। राजा सिंधासिंह को भी अपने



वचनों के विपरीत चलने में लज्जा आनी चाहिए। अगर उसने राजी से अपनी कन्या का ब्याह न किया तो संगलदीप प्रान्त में खून की नदी बहने लगेंगीं। इस मूर्ख नृप ने दो दो बारातें अपने दरवाजे पर बुलाई हैं। ये मूर्ख राजा हम दोनों को ही आपस में लड़ाकर मरवा देना चाहता है। ऐसे ही मूर्खों के कारण देश एक दिन गुलाम बनकर रहेगा। गुरु गोरख नाथ की वार्ता सुनकर कानिफानाथ अपना सिर ऊपर न उठा सके और आदेश शब्द कह चल पड़े। चलते चलते कह गए चिन्ता न करो मैं आपके साथ हूं।

बन्धुओ, कानिफानाथ ने गुरु गोरखनाथ से हुई सारी वार्ता राजा सिंधासिंह को बता कर कहा। आपको अपने वचनों के अनुसार गोगा चौहान के साथ ही अपनी कन्या का विवाह कर देना चाहिए। इस पर राजा सिंधासिंह बोले, मैं अपने जीते जी चौहानों में अपनी कन्या को नहीं ब्याहूंगा। राजा उम्मरपाल सिंह तलवार के इतने धनी नहीं हैं जो हम सबको गाजर मूली के समान काट डालेंगे। मुझे तो उस वैद्य ने अपने षडयन्त्र में फांस लिया था। उसी वैद्य के कहने से उसी के हाथों लगन पत्रिका भेजवाई थी। मैं उनकी चालबाजियों को अब भले प्रकार

समझ गया हूं। वहां मेरी बेटी सुख से नहीं रहने की, मैं अपने सेनापति को भेजकर अभी सबको मरवाये देता हूं। दस बीस आदमियों को कटवाने में देर ही कितनी लगेगी। जरा देर में ही सब स्वर्ग लोक पठा दिए जायेंगे।

अपने पतिदेव के इस प्रकार के वचन सुनकर महारानी सिरौंजा सुन्दरी बोली। प्राणनाथ आपको लोक निन्दा से डरना चाहिए। आपने अपनी सब जनता के सामने बागड़ के राजकुमार के संग विवाह रने की बात वैद्य जी से पक्की करी थी। अगर स समय लगन पत्रिका न भिजवाते तो ये से बारात लेकर आपके यहां क्यों आते। जी के सभी उपकार भूल गए। आपने क तमाशा समझ रखा है। वह र अन्धी हो रही है। जरा उससे

रानी का भाषण सुनकर नें आंखों को सुर्ख कर ती। तुम अपनी ब्याहना चाहती नायायण बोला।

चाचाजी आप वैद्यराज से की हुई प्रतिज्ञा को इतनी जल्दी भूल गए। अभी बागड़ वाले बहुत थोड़े इस लिए आये हैं कि जलयान इन्हें न मिला होगा। इसी लिए लड़के के पिता और चाचा अभी नहीं आ पाए हैं। वो बारात लेकर आना ही चाहते हैं। उन्हें लग्न पत्रिका की देर की तारीख लिखी होने के कारण कुछ भ्रम भी हो सकता है कि अभी विवाह के कई दिन बाकी हैं। मुझे तो आपकी बातों से यहां खून का दरिया बहता दिखाई देता है।

मुझे तो ऐसा कोई भी दिखायी नहीं देता जो गुरु जालन्धरनाथ की मौजूदगी में हम लोगों को कोई इस कटामरी से बचावे। जब आपने दो बारातें बुलाई हैं तो आप भुगतो, चाचीजी पर नाराज होना वृथा है। अब आप पहले आमेर वालों को यहां बुला कर छोटे मोटे कार्यक्रम करके निबटो। बारोठी दुर्गा पूजन वगैरह और महिलाओं से मंगलगान कराओ। तुम्हें बागड़ प्रांत की बारात की बहादुर टोली का पता पड़ जायेगा। कौन कितने पानी में है। अपने भतीजे की वार्ता सुनकर, राजा सिंधासिंह ने सभी इष्ट मित्रों के चेहरे पर नजर डाली तो सभी उन्हें ससपंज में पड़े दिखाई दिये।

गुरु गोरखनाथ की दया से नरसिंह पांडे भी उसी वक्त वहां आए और राजा सिंधासिंह से बोले। मैंने आपकी बेटी को जीवनदान दिया और आपने अपनी जनता के सनमुख दो वरदान देने का वचन दिया था। वचन बद्ध होने पर बागड़ देश में लगन पत्रिका मेरे हाथ ही भिजवाई थी। बिना बुलाये तो कोई यहां आया नहीं है। आप हमारे ऐहसान भुला कर हमें गाजर मूली की तरह काट कर मरवाने को उतारू हो गये हैं आप वह दिन भूल गए जब कहते थे जो मेरी चन्दा सी सुन्दर बेटी को बचा देगा उसे अपना आधा क्या सारा ही राजपाट देने को भी तैयार हूं। हम तोमर वन्सी राजपूत हैं। जो अपने वचन के पक्के होते हैं। मतलब निकल जाने पर कहते हो वैद्य जी बागड़ वालों से मिले हुए हैं। क्या आपने मुझे यह वरदान नहीं दिया था कि मैं बागड़ प्रांत के ददरेड़ा नगर निवासी गोगा जी की शादी अपनी बेटी श्रीयल के संग करवा दूंगा।

नरसिंह पांडे की वार्ता सुन, राजा सिंधासिंह बोले, तो मैं इस बात से कब मुकर रहा हूं। आपने तो बताया था कि दोनों बारातें एक साथ बुला कर दोनों की शक्ति का अन्दाजा करलो, इतना सुन

नरसिंह पांडे बोले। शायद मैंने ये भी कहा होगा कि लगन पत्रिका में गलत तिथि लिखवा देना। आपने समझ क्या रक्खा है। उन रण बांकुरों का आप दोनों भी मिलकर मुकाबला नहीं कर सकते। गोगा जी जब चाहें आपकी बेटी श्रीयल को सर्प से कटा कर स्वर्ग पठा सकते हैं। नरसिंह पांडे की बात सुन कर, उनका भतीजा बोला, चाचाजो मेरी राय में आप श्रीयल बहन की शादी गोगा राजकुमार से कर दें और मेरी बहन चन्द्रावली का ब्याह राज-कुमार तारासिंह से करके, इस झगड़े से छुट्टी पावें।

हरिनारायण की इतनी बात सुन राजा सिन्धासिंह एक दम लाल पीले होकर बोले, ये चौहान लोग कब से बलवान बन गए। जो उनसे डरकर मुझे उल्टी पट्टी पढ़ा रहा है। जा उठ जा मेरे सामने से नामर्द कहीं का। इतनी बात सुन हरिनारायण वहां से अधीर हो अपमान सहकर उठकर चल दिया और ये कहकर गया कि बड़ों के बीच में छोटों को नहीं बोलना चाहिए था। इसलिए चाचा जी आप मुझे क्षमा कर दें और अपने मन ही मन कहता गया होनी अपना रंग दिखाकर रहेगी। होनी बस सब

लाचार हैं ।

* श्री गोगा पुराण पैंतीसवां अध्याय समाप्त *

छत्तीसवां अध्याय

अपने भतीजे के नाराज होकर चले जाने के बाद राजकुमारी श्रीयल की कलाई में अति उत्तम लाल रंग का कंगना बन्धवाया और अपने कुल की रीति अनुसार कामिनियों को कन्या के साथ भेजकर दुर्गा पूजन आदि नेग निबटवायें। फिर राजकुमारी श्रीयल की सुन्दर सखियों को जनमासे में भेजा जिन्हें दुल्हा देखने का अधिक चाव उठ रहा था। राजकुमारी की सहेलियां होने के नाते जीजा जी से हंसी मजाक करने का मन मतवाला हो रहा था। वह सब गाती बजाती, ढोलक की तान सुनाती इठलाती हुई पांव की पाजेबों की झनकारें सुनाती हुई, हंसती हंसाती बड़ी उमंग में भरी जनमासे में राजकुमार तारासिंह के सनमुख जा पहुंची। जहां वह दुल्हा बना मुख में पान चबाये अति उत्तम कीमती कंगन बांधे, चित कबरे लंगूर की सकल का बन्दर बना बैठा था। जिसका मुख कुछ कुछ सुअर से मिलता जुलता था। इस लंगूर को इसकी मां बहनों ने भले प्रकार लीपा

पोतो कर पटबीजने के समान चमका दिया था। सारी सखी सहेलियां अपना मुंह फेरकर मुस्कराने लगी।

तभी चतुरंगी सखी बोली क्या इसी लंगूर के संग श्रीयल सखी ब्याही जायेगी। इधर सब सखियां अचम्भा कर दुखी हो रहा थीं, उधर तारासिंह इन हसीन अपसराओं जैसी सुन्दरियों को देखकर कह रहा था संगलद्वीप प्रांत तो पदमनी नारियों की खान है। जिसकी सखियां इतनी सुन्दर हैं, वह राजकुमारी कैसी होगी। आमेर नरेश के नाई ने जब राजकुमारी की सखियों को नाक भौं सिकोड़ते देखा तो तारासिंह के चेहरे को घुमाकर आड़ में कर दिया। तब राजकुमारी की सखियां भी उल्टा सुल्टा पूजन कर बेगार सी टाल मन ही मन दुखी होती हुई, बिना हंसे बोले रवाना हो गईं। महल के आंगन में पहुंचकर पूजा के बर्तन चौक में पटक उल्टे पैरों अधीर मन से अपनी सखी श्रीयल के कक्ष में जा धमकीं। हाथ जोड़कर चतुरंगी सखी बोली, क्या आपके पिता ने इसी बन्दर की शक्ल वाले राजकुमार को अपनी लाडो के लिये चुना है। चलो अच्छा है जब जी चाहे डुग-डुगी बजा कर नाच नचा लिया करना।

अपनी सखी की वार्ता सुन राजकुमारी दुखी हो बोली हे प्राणप्यारी सखियों ! ये बन्दर की शक्ल वाला दुल्हा तुम्हीं सबको मुबारिक हो, जिसका तुम अभी पूजन करके आई हो। मैं तो इसके मुंह पर थूकूं भी नहीं। मेरा दुल्हा तो तुम सब देख ही चुकी हो। अगर एक दफा दर्शनों से मन नही भरा तो दुबारा बुलाकर दर्शन करा सकती हूं। जरा ठहरो ! बन्धुओ राजकुमारी श्रीयल ने, गोगावीर का ध्यान कर जोत बाली और दर्शन देने की प्रार्थना की।

सभी सखियों ने देखा वही बाग वाला सुन्दर राजकुमार अपने नीले अश्व पर असमान में उड़ाचला आ रहा है। जहां राजकुमारी सहित सभी सखियां महल की छत पर उसके दर्शनों के इन्तजार में खड़ी हुई थीं। चन्द मिन्टों में वह राजकुमार आन पहुंचा। जिनके दर्शन सभी सखियों ने नमस्कार करने के बाद हंसी खुशी जी भर कर किये। चतुरंगी सखी मुस्करा- कर बोली, जीजा जी हमारी बहन पर ऐसा बेतार का तार है जिससे तुम जैसे वीर खिंचे बन्धे चले आते हो।

चतुरंगी की वार्ता सुन कर जाहर वीर मुस्करा दिये। तब सभी सखियों ने ताली बजा बजा कर,

पुष्पों की वर्षा कर गोगा वीर का स्वागत किया। तब राजकुमारी अधर मुस्कान बखेर अपने प्रीतम से बोली। आमेर नरेश तो बड़े ठाठ बाट से ब्याह की तैयारी कर रहे हैं। आपके घर वाले रास्ते में कहां रुक गये। इतना सुन जाहरवीर जोधा बोला, ये सब तुम लोगों के सोचने की बात है मेरी नहीं। तुम्हें मेरे साथ अपना ब्याह करवाना है, तो गुरु गोरखनाथ के नाम की माला फेरो। इतना कहकर गोगा वीर ने नीला अश्व आसमान को उड़ा दिया। सखी सहेलियां हाथ मलती और ये कह देखती रहीं ये गये वो गये और नीला घोड़ा कबूतर की सी कला खाकर अपने स्थान पर जनमासे के निकट जा पहुंचा। तब सब सखियों ने रानी श्रीयल के भाग्य की सराहना की।

इधर गोगावीर ने नीले घोड़े को निहला धुला मालिश करा, दाना घास खिलाकर चौचन्द किया। उधर राजा सिंधासिंह का निमन्त्रण मिलने पर राज- कुमार तारासिंह के चेहरे पर ढेर सारे फूलों के हार का सेहरा खूब मोटा स्पेशल तैयार कराया हुआ जिस के बांध देने से मुंह अच्छी तरह छिप गया और सर पर सुनहरी काम का खूब बढ़िया मोहर बांध दिया गया, जब वह घोड़े पर सवार होने लगा। तभी किसी ने

झट से छींक दिया। उसी समय सामने से बिल्ली रास्ता काट गई। पर इन बदशकुनों को गाजे बाजे के धूम धड़ाकों में किसी ने नहीं देखा। आमेर नरेश ने तोप छुड़वाकर खबर की कि हमारी बारात बारौठी के वास्ते आ रही है।

बन्धुओ, तोप की आवाज सुनकर गुरु गोरखनाथ जी अपने शिष्यों और नरसिंह पांडे सहित बारात लेकर आगे आगे तेजी से चले और सबसे पीछे गूगा जी अपने नीले अश्व पर सन्तों के संग घन्टे घड़ियाल बजाते हुए धूम धड़ाके से चले। आगे बढ़ने पर दोनों बारातें मिल जुलकर एक हो गई। आमेर नरेश बागड़ की बारात देखकर बोले ये चौहानों की बारात है या मथुरा नगरी की रास मन्डली, परन्तु नीले अश्व का सवार वाकई चक्रवर्ती नरेश बनने लायक है। पता नहीं इसके बाप दादा और सकल बाराती कहां रह गए। इस पर एक उनके मित्र बोले आपको पता नहीं गुरु गोरखनाथ एक दूरअन्देशी चमत्कारी सन्त हैं। ये और इनकी मां गुरु गोरखनाथ के शिष्य हैं। और ये पांचों बाराती बड़े जुझारू वीर मालूम पड़ते हैं, जो गोगा जी के गुरु भाई हैं। आपकी बारात को सिर्फ ये पांचों ही मार कर भगा सकते हैं। जाहर वीर

जोधा तो आप सबको अकेला ही काफी है।

बन्धुओ, बारात बड़े धूम धड़ाके के संग राजा सिंधासिंह के महल की तरफ जा रही थी। औघड़ नाथ ने गोगा वीर के इशारे से आमेर की बारात के बराबर से रास्ता काटकर अपनी बारात आगे कर ली। राजा सिन्धासिंह ने जो बारात के स्वागत के वास्ते बादाम पिस्ते वाली बर्फी रसगुल्ले रसमलाई और गुलाब केवड़े का शर्बत वगैरह तैयार करवाया था। पहले बागड़ वालों ने खूब जी भरकर खाया पिया। गुरु गोरखनाथ की कृपा से महल के दरवाजे पर ही बाजे बजने लगे। गूगावीर की बारात महल के अगाड़ी हो रुक गई। राजकुमारी श्रीयल की सखियों ने आमेर वालों की बारात समझकर कन्या के कक्ष का दरवाजा बन्द कर दिया। तब रानी श्रीयल ने महल के झरोंके से झांककर गुरु गोरख नाथ बाबा तथा अपने पति गूगा वीर के दर्शन किये।

इधर राजा सिन्धासिंह ने बागड़ वालों का गलत ढंग देखा तो उन्होंने पिछला कार्यक्रम रद्द करके दूसरे दरवाजे पर आमेर नरेश को चुपके से बुलवा कर कहा, आप बारात को तो वहीं रोके रहो सिर्फ आप

नौशे को लेकर इधर से आ जाओ। जिससे बारौठी का कार्यक्रम निबट जाये। आमेर नरेश चुपके से नौशे को लेकर दूसरे दरवाजे पर पहुंच गए। तब श्रीयल की सखियां राजकुमारी को लेकर मुख्य द्वार की ओर मंगलगान करती हुई लेकर चली। तब राजा सिंधासिंह बोले उधर को नहीं इधर को। तब राजकुमारी श्रीयल अपने पिता से हाथ छुड़ाकर फूट फूटकर रो पड़ी। तभी रानी सिरौंजा सुन्दरी भी जोर जोर से रोने लगी। इनकी देखादेखी सारी सखियों ने भी अपने नैनों से नीर बहाना शुरू कर दिया।

तब गोगावीर ने जाना राजकुमारी के साथ कुछ जोर जबरदस्ती की जा रही है। जब पीछे मुड़ कर ध्यान से देखा तो आमेर नरेश का राजकुमार और उनका सईस मय बग्गी के गायब पाया। जब तक राजकुमारी श्रीयल दरवाजे पर खिचकर न आ पाई उससे पहले गोगावीर अपने नीले अश्व पर सवार दूसरे दरवाजे पर आन पहुंचे। गोगा जी के घोड़े को आता देखकर गुरु गोरखनाथ को शीश नवा औघड़नाथ, नरसिंह पांडे, भज्जू चमार, रतना भंगी, अरजन सरजन भी महल की दूसरी डयोढ़ी

पर आन पहुंचे। गोगा जी ने आव देखा न ताव पूजन वाले पटले पर से तारा सिंह को धक्का देकर खुद आप चढ़ गये।

इधर सिंधासिंह और उनकी दासियां मिलकर कन्या को दरवाजे तक खींच लाईं। जब राजकुमारी श्रीयल ने गोगा वीर को पटले पर खड़े देखा तो तुरन्त ही अपने मन में मुस्कराकर अपने पति के मौहर का पूजन रोली चावल से किया और माता सिरौंजा सुन्दरी ने अपने जमाई की आरती उतारकर गिन्नी मौहरों से न्यौछावर करी। ये तमाशा देख सन्त औघड़नाथ ने अपनो ऐसी माया फेरी कि आमेर नरेश की सारी बारात मोहित हो गई। न्यौछावर हो जाने के बाद बागड़ प्रान्त के सातों वीरों ने मिल कर आमेर नरेश की बारात के वीरों को अपनी तल-वारों का जौहर दिखाकर लाश के ऊपर लाश चुन दी। जो अकड़कर सामने आया उसी का शीश धड़ से अलग कर दिया।

नीला अश्व गोगा जी के इशारे की बाट देख रहा था कि गोगावीर कब मेरी पीठ पर चढ़े और कब मैं अपनी दुलत्तियों से अपनी करामात दिखाऊं। जब उसे कोई इशारा न मिला तब उसने

मौका देखकर अपनी दुलत्ती घुमा राजा सिंधासिंह के मारी । उन्हें अपनी छटी का दूध याद आ गया । दरबाजे के युद्ध का समाचार बारात में चारों तरफ फैल गया । तब कुछ आमेर वाले मतवाले योधा आगे बढ़े । परन्तु बागड़ के वीरों के अगाड़ी वह भी जख्मी हो भागते नजर आये और बहुत से तो अपना शीश कटा स्वर्ग लोक सिधार गए । बाकी बारातियों ने भाग कर अपनी जान बचाई । बागड़ के वीरों ने अपनी जीत की खुशी में गुरु गोरखनाथ की कृपा का ही गुणगान किया ।

बन्धुओ, आमेर की बारात की पिटाई का दोष आमेर नरेश ने राजा सिंधासिंह के ही माथे मंढा । आमेर नरेश ने साफ कहा आपने बागड़ प्रान्त से बारात बुलाकर हमें बेइज्जत किया है । हम लोग पिटते रहे और आप खड़े तमाशा देखते रहे । क्या तंवर बन्सी अपनी इसी वीरता का ढोल पीटते फिरते हैं । गुप्त द्वार पर बारौठी कराने के षडयन्त्र को हम भली भांति समझ गए हैं । बागड़ वालों के चले जाने के बाद हम अपने अपमान का बदला लिए बगैर आमेर वापिस नहीं जायेंगे । आमेर नरेश को अधीर देख राजा सिंधासिंह बोले मैंने तो आपके हित के

वास्ते ही दूसरा द्वार खुलवाया था । मगर क्या करूं मेरे सब करे धरे पर पानी फिर गया ।

इधर तो राजा सिंधासिंह आमेर नरेश के जख्मों पर मीठी मीठी बातों का मरहम लगा रहे थे । उधर गुरु गोरखनाथ ने संजीवनी विद्या के प्रभाव से मक्खी बने बारातियों को चेतावनी दी । जिसे सुनकर सब राजे महाराजे फौजदार अपने अपने हाथी घोड़ों पर सवार हो गए । राजा उम्मरपाल सिंह व राजा जेवर सिंह ने धोंसा बजवा कर अपने अपने हाथियों पर चढ़ आमेर नरेश को चारों तरफ चौबन्दी कर घेर लिया और हाथी घोड़ों ऊंटों पर चढ़ चढ़कर मारा मार मचादी । बागड़ के वीर आंधी तूफान के समान अपने बरछी भाले चलाते थे । ये गत देख राजा हरिसिंह बोले राजकुमारी श्रीयल हमारी मांग है आप व्यर्थ ही मार काट करने पर उतारू हैं । अगर हमें भी क्रोध आ गया तो तुम्हारे गोगा चौहान को मार राजकुमारी श्रीयल को जबरदस्ती ले जायेंगे ।

आमेर नरेश की वार्ता सुनकर बागड़ वालों को भी जोश आ गया । महाराजा उम्मरपाल सिंह ने भी अपना हाथी आगे करके मारामार मचा दी । खूनी हाथी की मार के आगे कछवाओं के पैर उखड़

गए। तब जाहरवीर जोधा ने अपने नीले अश्व को अगाड़ी बढ़ाकर तारासिंह का आगा रोक लिया। तारासिंह ने गोगावीर के सामने से बचकर भागना चाहा। तब तक तो जाहरवीर ने अपने खन्जर से उसका शीश धड़ से जुदा कर दिया। तारासिंह का मारा जाना सुनकर कछवाये राजा और उनके बाराती अपना शीश हथेली पर धरकर एकदम गोगावीर की सेना पर पिल पड़े। आमेर के राजकुमार के मारे जाने से राजा सिंधासिंह भी अपनी फौज रिसाला ले, अपने हाथी पर सवार हो, कछवाओं की तरफ से बागड़ वालों की पलटन में मार काट मचाने लगे।

जब राजा सिंधासिंह को आमेर वालों की तरफ से अपने वीरों को काटते देखा तो नरसिंह पांडे, भज्जू कोतवाल वगैरह बागड़ के सातों वीरों मे अपने अपने अश्व पर चढ़ गुरु गोरखनाथ का ध्नान धर कर घमासान युद्ध किया। इनकी मार देख कोई अपने हथियार छोड़ कर भाग रहा है। तो कोई अपना सिर कटा कर लम्बा पड़ा खूनम खून हो रहा है। नीले घोड़े ने भी अपनी रफतार तेज कर दी। गोगा वीर के एक वार से ही दो दो मारे जा रहे थे तीसरे के कठिन लड़ाई देखकर ही प्राण

निकल जाते थे। चौथे पांचने छटे सब भागते नजर आते थे। नीले घोड़े ने तो घमासान युद्ध कर कमाल ही कर दिखा था। जो जाहर जोधा की तरफ तलवार लेकर बलवान बन कर आता, उसे नीला अश्व कच्चा ही चबा जाता और जो उसके अगाड़ी तीसमारखां बन कर आता। उसे ऐसा उछाल मार कर फैंकता कि उसका पता ही न पाता था बहुतों को अपने मुंह में दबा कर ऐसा दौड़ता कि उसे दम तोड़ते ही बनती थी।

अपनी फौजों को बिना मौत मरती देखकर राजा सिन्धासिंह और आमेर नरेश बोले। हे बागड़ प्रान्त के महाराजा साहब हम दोनों क्या अगर सारा देश भी आपके विरुद्ध आनकर लड़े, सब भी आप लोगों से फतेह नहीं पा सकता क्योंकि गुरु गोरखनाथ का आपके सर पर साया है। अगर योगी जालन्धरनाथ हमारे साथ होते तो आप हमारा बाल भी बांका नहीं कर सकते थे। कल शुभ मंगलवार और फागुन वदी नौमी का दिन है। इसलिये कन्या के विवाह का महूर्त भी देखना जरूरी है। इसके अलावा इनके बेटे तारासिंह की मृत्यु युद्ध में हो गई है। इसलिये भी इनकी लड़ने की हिम्मत नहीं रही

है सो आप हम दोनों की क्षमा कर, मेरी बेटी श्रीयल के संग, अपने बेटे जाहर वीर जोधा का ब्याह, हंसी खुशी कर मुझे कन्या ऋण से मुकती दिलावें। मैंने जो आमेर वालों को अपने यहां बुलाया था वह आप के नरसिंह पांडे के बचनों के अनुसार ही आप लोगों की बहादुरी देखने के वास्ते बुलाया था। आप इन पांडे से पूछ सकते हैं। मेरी बात गलत तो नहीं है।

इस पर नरसिंह पांडे बोले राजा साहब, आप जो मीठी चुपड़ी वार्ता अपनी हांर मानकर कर रहे हैं ये सब सही नहीं हैं। योगी जालन्धरनाथ जी आप से सख्त नाराज हो गये हैं इसलिये वह आपके यहां नहीं आये। आपने अपने गुरु की अवज्ञा की थी वैसे वह राजा गोपीचन्द की कैद से छूट कर आ चुके हैं परन्तु अब वह आपसे वास्ता रखना नहीं चाहते। आपने ये ठीक ही किया जो अपनी आधीनी द्वारा लड़ाई बन्द करवादी परन्तु हमारे हृदय पर अपका कपटपूर्ण व्यवहार नहीं मिट सकता। आपने हमें भुलावे में डालने को लगन पत्रिका में चार दिन आगे की तिथि लिखवाई थी। इतनी बात कह और अपना विगुल बजा लड़ाई बन्द कर देने का आदेश दिया

जिससे तुरन्त युद्ध बन्द हो गया।

❋ श्री गोगा पुराण छत्तीसवां अध्याय समाप्त ❋

सैंतीसवाँ अध्याय

राजकुमार तारासिंह को जीवनदान

सज्जनो, इस प्रकार सुलह हो जाने पर सब वीरों ने भारी खुशी मनाई और आमेर नरेश को धीर बंधाई कि हम लोगों को आपके राजकुमार के लड़ाई में मारे जाने का काफी दुख है। पर ईश्वरी विधान के आगे मनुष्य मजबूर है। परन्तु अभी एक उपाय बाकी हैं। राजा सिन्धार्मि[illegible]
जाकर गरु [illegible]
मुमकि
लें। अ
जिन्दा [illegible]
की बुद्धि
आप वा
आप में कृ
मिथ्या नहीं
आपको बहुत
इन हारे

जाकर गुरु गोरखनाथ जी के चरण पकड़ लिये और अपनी गलतियों की क्षमा मांगी। गुरु गोरखनाथ जी ने अति प्रसन्न हो आमेर नरेश के शीश पर हाथ धरा और अपनी धूनी से भभूति उठाकर संजीवनी विद्या द्वारा सिद्ध मन्त्र पढ़कर राजा हरिसिंह को दे दो कि आप अपने बेटे तारा सिंह के मस्तक से इसे मल दें और आधी पानी में घोलकर खिला देना। इसके प्रभाव से आपका बेटा जिन्दा हो जायेगा।

फिर सिन्धासिंह नरेश से बोले राजन, आपको भी कुछ चाहिये। आप तो वैसे ही बड़े भाग्यशाली हो। आपकी बेटी श्रीयल ऐसे राजकुमार को ब्याही जा रही है जो महान देवताओं का बन्सी है। वह तो अमर है ही। आपकी बेटी भी उसके साथ अगर हो जायेगी और महान सतियों में वह गिनी जायेगी। इन तीनों का ध्यान धर जो भी निष्कपट त्याग प्रेम से पूजेगा चाहे नर हो चाहे नारी उसकी मनोकामना पूरी होगी। इनका पूजन और आशीर्वाद कभी व्यर्थ नहीं जाने का। इनके साथ ही जब तक सूरज चन्द्रमा है आपका भी नाम रोशन रहेगा। जो जो सेवा ये अपने देश की गोभक्त गोगा कर रहा है उसी से

इसकी कीर्ति में चार चान्द लगेंगे। अब आप चल के अपनी कन्या के हाथ पीले करके पुन्न और कीर्ति के भागी बनो।

गुरु गोरखनाथ की वार्ता सुनकर दोनों नृप अति प्रसन्न हो, आशीर्वाद प्राप्त कर चल पड़े। राजा सिंधासिंह राजकुमारी श्रीयल के विवाह के इन्तजाम में लगे और शहरपनाह के नामी ग्रामी हलवाईओं को विविध प्रकार के व्यंजन तैयार करने की आज्ञा दी। तब महिलाओं ने महल के भीतर ढोलक मंजीरे बजा बजाकर मधुर कण्ठ से मंगलगान गाते शुरू किये। अगले दिन अपनी बेटी के व्याह की खुशी में, महारानी सिरींजा सुन्दरी अपने दास दासियों को सब महमानों का स्वागत सतकार करने का आदेश दे रही थी।

उधर आमेर नरेश ने अपने बेटे तारासिंह के शीश को धड़ के साथ जोड़कर, आधी भभूती पानी में घोलकर उनके मुंह में डाली और आधी मस्तक पर मल दी। जिसके प्रभाव ने तुरन्त ही अपना चमत्कार दिखलाया। राजकुमार तारासिंह जीवित होकर इस प्रकार उठ बैठा, जैसे कोई गहरी निद्रा में सोया हुआ इन्सान उठ बैठता है। आमेर नरेश गुरु गोरखनाथ को

मस्तक नवा अपने नगर को लौट गये। किसी से इस अपूर्व घटना की चर्चा नहीं की परन्तु बात छिपायें छिपी नहीं। सब जनता को पता पड़ गया और सबने आपस में बैठकर यूं कहा। जान बची और लाखों पाये, लौट के बुद्धु घर को आये।

जाहरवीर और राजकुमारी श्रीयल का ब्याह

महाराज उम्परपाल सिंह ने गोगा वीर के ब्याह की तैयारी बड़ा धूमधाम के संग करी। नरसिंह पांडे से पुरोहित जी का काम लिया। उनके बताये अनुसार देवी देवताओं का पूजन गुरु गोरखनाथ के साये में हुआ। नीले अश्व को उसके सुनहरी साज से सजाया गया। गोगावीर को उनके मामा के लाये जामे और पाजामे से सजाकर मोती मणियों की माला गले में पहनाई गई और फूफा नवलसिंह चौहान और बाले भान्जे को सम्मान पूर्वक हीरे पन्नों की मालायें भेंट कीं। गोगा वीर के मित्रों भज्जू कोतवाल, रतना भंगी, नरसिंह पांडे और अरजन सरजन को, अपने सब घोड़ों में से मन पसन्द छटवाकर एक एक घोड़ा सुनहरी साज से सजवाकर बहादुरी के इनाम में दिया। जिससे सब बाराती इन्हें गोगा वीर का सगा भाई ही समझें और कोईऊंच नीच

जाति का कहने का साहस ही न करे। ये सब सज धजकर ऐसे जंच रहे थे, जैसे गोगावीर के सगे भाई महारानी बाछल ने अपने पेट से पैदा किये हों। सगलदीप की सुन्दर पदमनियां अपना तन मन निसार कर अपना धीरज खो बैठीं।

गोगा वीर की बारात ढोल तमाशों की धूमधाम में राजा सिन्धासिंह के महल के नजदीक जनमासे में जा पहुंची। गुरु गोरखनाथ के शिष्यों के वास्ते अलग तम्बू तने हुए थे। वे वहीं बैठकर भांति भांति के पकवानों को प्रसन्न हो हो तारीफों के पुल बांध बांधकर अपनें उदर की पूर्ति करने लगे। महमान राजाओं महाराजाओं को जनमासे में ही मूंढे पर कुर्सी मेजों पर ही भोजन सामग्री परोसी गई। राजा सिंधासिंहे ने आजिजी के साथ हाथ जोड़ जोड़कर सब मेहमानों की तबियत प्रसन्न कर दी। सब बारातियों को पांच पांच सोने के बर्तन और ग्यारह ग्यारह गिन्नियां भेंट कीं। गुरु गोरखनाथ के शिष्यों ने ये भेंट स्वीकार नहीं कीं और कहा ये चीजे हमारे किसी काम की नहीं हैं। तब राजा सिंधासिंह ने पांच हाथी, चांदी की अम्बारी धरवाकर गुरु गोरख नाथ को अपने दोनों हाथ जोड़, मस्तक नवा भेंट

जो उन्होंने स्वीकार कर ली ।

इधर महल में राजा जेवरसिंह, नेवरसिंह व उम्मरपाल सिंह की मौजुदगी में राजकुमारी श्रीयल के साथ साढ़े तीन फेरे बाकी के पूरे किए गए । तब राजा सिंधासिंह ने आधे ब्याह होने का कारण जानना चाहा । गुरु गोरखनाथ बोले मैंने साढ़े तीन फेरे बँमाता की आज्ञा अनुसार इनके स्वप्न में फिरवा दिये थे । आप अपनी राजकुमारी से पूछना चाहो तो पूछ देखो । राजा सिंधासिंह बोले गुरुदेव जो भी आप करते हैं हम लोगों के भले के वास्ते ही क़रते हैं । फिर राजकुमारी से क्या पूछना । इतना कहकर तन्दुल नरेश ने अपनी राजकुमारी को इतना दहेज दिया कि सब राजे महाराजे हैरत में रह गए कि इस राजा पर इतना धन आया तो आया कहां से ।

बन्धुओ, अपनी प्यारी बेटी श्रीयल को विदा करते समय अपने रतनारे नयनों के नीर बहाकर गले से चिपटाकर रानी सिरौंजा सुन्दरी ने उपदेश दिया । मेरी लाडो बेटी, ससुराल पहुंचने पर अपने सास ससुर जेठ जिठानी नन्द पीतस की,प्रेम पूर्वक तन मन धन से सेवा सत्कार करना । किसी से स्वप्न में भी कड़वा बोलने का विचार न करना । सेवा से ही कीर्ती का

मेवा जग में प्राप्त होता है । इसी सेवा वृत में नारी जाति का सम्मान सब जगह होता है । स्त्री दूधों से नहाकर पूतों की जन्मदात्री बनती है । अपनी माता की उपदेश भरी वार्ता सुनकर अपनी सखियों से मिल भेंट डोली में सवार हो, तन्दुल नगरी के छूटने के दुख से दुखी हो नैनों से नीर बहा बाजे गाजे के साथ सबसे विदा हुई । तब राजा जेवरसिंह ने सुनहरी मोहरों की मुट्ठी भर भरकर दिल खोलकर खूब बखेर की । जिससे गरीब गुरबा जिस जिसने माल समेटा चन्द मिनटों में गरीब से अमीर बन गया ।

इसी तरह धूम धड़ाके से गाजे बाजे के साथ दहेज की गाड़ियों के संग कुछ ही घड़ी पलों में समुद्र तट पर आन पहुंचे । तब अमृत तुल्य हवा खाकर सबके चित्त बहाल हुए । बारात का सामान पहले से दुगुना हो गया था । जिसके वास्ते गुरु गोरखनाथ ने पहले जैसी योजना बनाकर दो दफा में समुद्र के पार करवाया । हमारे नायक जाहरवीर जोधा ने अपने स्वप्न को पूरा हो जाते देख रानी श्रीयल को डोली से उतार कर नीले अश्व पर अपनी पीठ के पीछे बिठा लिया । रानी श्रीयल ने नीले अश्व की उजड्डुता के कारण भयभीत हो जाहरवीर जोधा की कौली

कसकर भरली।

मौका देख गुरु गोरखनाथ को अपना मस्तक नवा, नीले घोड़े को इशारा किया जिसे समझ वह आसमान में ऊंचा उड़ कबूतर की सो कला खाने लगा। कभी नीचे उड़ता कभी ऊपर उड़कर आसमान में पहुंच जाता। कभी आड़ा उड़ता कभी तिरछा होकर। जब जब वह आड़ा तिरछा होकर उड़ता तब तब रानी श्रीयल अपने प्रीतम की कस कस कर कौली भर मुस्कराती। उसी समय अश्व ने अपनी गति और तेज करदी। तब गोगावीर ने अपना मुख घुमाकर पूछा कहो रानी कैसा आनन्द आ रहा है। तब वह नीले अश्व से शर्माकर मधुर मुस्कान बखेरती जिसके मुख की दन्तावली खन्दारी अनार के दानों को मात कर रही थी। सोलह सिंगार किया हुआ गुलाबी मुखड़ा चन्द्रमा से भी अधिक चमचमा रहा था। रतनारे नैना हिरनी के नैनों को भी लजा रहे थे। गोगावीर का मुख आगे के बजाये पीछे अपनी दुल्हन को देख देखकर अपने नैन तृप्त करता रहा। उन्हें पता भी नहीं पड़ा समुद्र तट और बारात कितने पीछे रह गई।

जब नीले अश्व ने अपनी रफ्तार मन्दी की और

बाज के समान महल के फाटक पर जा पहुंचा और अड़कर खड़ा हो गया। तब गोगावीर का स्वप्न टूटा। आगे दुल्हा और पीछे दुल्हन को नीले अश्व की पीठ पर सवार देख बच्चों ने ताली पीट पीटकर हल्ला मचा दिया कि गोगा भैया आ गए हम सबके मजे आ गए और बारबार इस प्रकार उछलते कूदते महारानी बाछल के पास जा पहुंचे और वहां भी इसी तरह ताली बजा बजाकर कहने लगे। गोगा भैया आ गए गोगा भैया आ गए। तब रानी बाछल ने ताज्जुब के साथ झरोके से झांककर नीचे की तरफ देखा कि नीले अश्व पर आगे उनका लड़ला बेटा और पीछे बहुरानी नीले घोड़े पर सवार बिना गाजे बाजे के महल के बाहर सजे धजे खड़े हैं।

तब महारानी बाछल ने अपने दास दासियों व नन्द छबीलदे को व अपनी बहन कपटिन काछल को संग लेकर गाती बजाती, ढोलक मन्जीरों की तान सुनाती दरवाजे पर जा पहुंची, अपने बहू बेटे की आरती उतार मंगलगान गाकर गुरु गोरखनाथ को सुमर कौली भरकर अपनी लाड़ली बहू को नीले अश्व की पीठ से उतारा। तब तक बारात के बाराती भी सब राजे महाराजे नगर निवासी मय गुरु गोरखनाथ और

उनके शिष्यों सहित आन पहुंचे। जिन्हें आराम के साथ ठहराकर खूब खातिरदारी की। उधर महारानी बाछल अपने बेटे बहू के संग नगर की कुल बधुओं को लेकर मंगलगान गंवाती हुई, अपने कुल देवता के मन्दिर में जा पहुंची। तब पुरोहित जी ने घन्टे घड़ियाल और शंख बजाकर, सब राज परिवार वालों का स्वागत मुस्करा मुस्करा कर किया और अपनी भेंट पूजा लेकर कुल देवता का पूजन करवा, दुल्हा दुल्हन को आशीर्वाद दिया कि ये जोड़ी गंगा जमुना के समान सदा अमर रहे और इनके गुणों का गुणगान कर सारा सन्सार इन्हें अपना देवता बना कर पूजता रहे।

बन्धुओ, सब लोग मन्दिर में अपना मस्तक नवा परशाद ग्रहण कर राजमहल में पधारे। उधर सब राजे महाराजे और कुटुम्ब परिवार के भाई बन्द, तथा इष्ट मित्रों ने अपनी अपनी हैसियत अनुसार, उपहार देकर खुशी खुशी अपने घरों को रवाना हो गये। तब राजमाता ने अपने बेटे और बहु से कहा, सब लोग भोजन जीम चुके, अब तुम दोनों भी खाना खा लो। इस पर गोगा जी मुस्कराकर बोले, मइया मुझे तो भूक नहीं है। दोपहर का भोजन देर से

करने के कारण पेट भारी है। आप अपनी लाडली बहू को भोजन जिमाओ। उचित तो यह रहेगा कि खाना आप हमारे कक्ष में ही भिजवादें। थोड़ा थोड़ा हम दोनों मिल बांटकर खा लेंगे।

इतना सुनते ही रानी बाछल को अपनी शादी की बात याद आ गई कि इसी प्रकार सुहागरात के दिन हम लोगों ने भी भोजन एक साथ कक्ष में ही जीमा था। वह मन ही मन प्रसन्न हो खाना परोस दो गिलास गोरस के भरकर, अपने बेटे बहू के वास्ते उनके कक्ष में ढककर धरवा दिए। अब हमें गोगा जी के कक्ष की बनावट देखनी चाहिए। अपनी महा-रानी का इशारा पाते ही मुख्य बांदी मूंगादे ने नौलखे बाग से रंग बिरंगे सुगन्धित फूल मंगवाकर और अपने संग की दूसरी सेविकाओं को संग लेकर, कक्ष सजाने और दुल्हा दुल्हन का पंचरग पलंग सजाने में तन मन से लग गई। बेला चमेली गुलाब की कलियां चुन चुन कर बिछाई और चारों तरफ फूलों की ऐसी मोटी झालरे लटकाई कि झांककर देखने वालों को कुछ भी दिखाई न दें। महल के पूरे कक्ष में चारों तरफ फूलों की झालरें लटका लटकाकर, रंग बिरंगे कण्डील मध्यम रोशनी के वास्ते देशी घी के

दिये जलाकर लटकवा दिये । पूरी सजावट का ब्यान कलम से नहीं लिखा जा सकता । परन्तु इन फूलों की सजावट से इन्द्रलोक की अपसराओं के कमरों को भी मात कर दिया था । जब बांदी मूंगादे सजावट से फारिग हुई तब बुआ छबीलदेई और नगर की कुल बधुओं ने, रानी श्रीयल को मुस्करा मुस्कराकर भोजन जीमने के बहाने बहला फुसला कर गोगा जी की तरफ धीरे धीरे धकेलना शुरू कर दिया ।

रानी श्रीयल भी अपने दो कदम आगे बढ़ा कर एक पीछे को हटा नाज नखरे दिखाती हुई मन ही मन घूंघट के भीतर मुस्करा मुस्कराकर, आहिस्ता आहिस्ता सरकती हुई सी, गोगा वीर के कक्ष तक जा पहुंची । तब बांदी मूंगादे ने उसकी गरदन पर हाथ रखकर, कक्ष के भीतर धकेल दिया । जब नगर की कुल बधुओं ने कक्ष के किवाड़ बन्द कर, बाहर से सांकल लगा दी तब रानी श्रीयल ने घूंगट को जरा सा टेड़ा करके अपने प्रीतम को कजराली आंखों से निहारा। जो सुनहरी पायेदार पलंग पर रेशमी तकिया लगाये, फूलों की कलियों पर विराजमान होकर, अपनी रानी श्रीयल सुन्दरी का अधोर मन से इन्तजार कर रहे थे । कक्ष का वातावरण केवड़े हिना की महकारों

और फूलों की बहार से सुगन्धित हो रहा था । जब गोगम वीर ने देखा मेरी प्राण प्यारी सोलह सिंगार करे सब्ज रंग का परिधान पहने, सब्ज परी बनी सकुचाई सी खड़ी है । तब गोगा जी मन ही मन मुस्कराकर, उठे और श्रीयल सुन्दरी को अपनी गोदी ने भींचकर फूलों की कलियों के सजे पलंग पर पौड़ा दिया ।

तब रानी श्रीयल ने अपने घूंघट को अपने मुंह पर दोनों हाथों से कसकर भींच लिया । अपनी स्वप्न वाली रानी की जब ये हरकत गोगा वीरने देखी कि ये अपने दोनों हाथों से घूंघट पकड़ अपने मेंहदी से सजे पैरों को अपने कजरारे नैनों से निहार रही है । तब गोगा जी अधीर हो बोले, रानी जी यहां तो कोई भी नहीं है, अब आप अपना घूंघट हटाकर, मुखड़ा दिखा, मधुर मुस्कान बखेरों । तब रानी श्रीयल मन ही मन मुस्करा आहिस्ते से बोली, ये कर्तव्य आपका है आप खुद घूंघट खोलें । तब गोगाजी अधीर हो, अपनी रानी को अपने कठोर कलेजे से भींचकर, जबरदस्ती घूंघट उतार कर देखा कि आज मेरी सुपने की रानी का सौन्दर्य दुगना हो गया है । गले के बीच नौलखा हार झूल रहा था ।

माथे की बिन्दी के पास ही हीरे मणियों वाला झूमर अपनी बहार दिखा रहा है। उन्होंने उठकर रोशनी बुझा दीं और ये चाहा कि अब अपनी प्रान प्यारी के साथ सुपना देखूं तभी रानी श्रीयल बोली हैं हैं ये आपने क्या किया। अभी तो खाना पीना बाकी है। पहले हाथ मुंह धोकर खाना खाकर दूध पीकर तब पलक पर पौड़ना। अपनी प्राण बल्लभे की मधुर वार्ता सुनकर, गोगा राजा बोले, रानी तुम बड़ी वैसी हो भोजन की बात का बहाना बना, सब आनन्द किर-किरा कर दिया। चलो पहले भोजन ही जीमलो, व्यर्थ ठन्डा करने से उसका भी जायका क्यों खराब किया जाये। इतना कहकर मधुर मुस्कान बखेर दोनों प्राणी, एक दूसरे के मुंह में भोजन का कोर दे देकर, हंसी खुशी जीम जूठ कर फारिग हुए, और थोड़ी देर इधर उधर की वार्ता करके और दूध पीकर दोनों प्रचरंग पंलग पर लेटकर मधुर सुपनों में गाफिल हो कर चैन से सो गये। जब सुबह पांच बजे ब्रह्म महूर्त में सोकर उठे, तब सब सुहागनी बालायें, उनके बन्द कक्ष के बाहर खड़ी आनन्द के संग, अपने मधुर सुर से सुन्दर गीत अलाप रही थीं। तब रानी श्रीयल सुन्दरी ने अपना घूंघट नीचा कर अपनी सास

महारानी बाछल तथा सब बड़ों के चरणों पर अपना मस्तक नवाया और अटल सुहागवती होने का आशीर्वाद प्राप्त किया।

* श्री गोगा पुराण सेंतीसवां अध्याय समाप्त *

अड़तीसवाँ अध्याय

तीजों का त्यौहार और भाग्य की विडम्बना

बन्धुओं, माता बाछल और बुआ छबीलदे गोगा वीर से भी अधिक अपनी बहू श्रीयल रानी को अपनी सगी बेटी के समान ही प्यार करती थीं और रानी श्रीयल सुन्दरी भी अपने बड़ों की सेवा अपनी माता की शिक्षा अनुसार तन मन धन निसार करके रात दिन करती और सबके आशीर्वाद प्राप्त कर चैन की बन्सी बजाती परन्तु रानी श्रीयल की मधुरता मौसी काछल को एक पल सहन न होती थी। गोगा वीर की वीरताई और श्रीयल के संग उनका ब्याह होने के कारण अरजन सरजन का मूड़ खराब रहता था और हर समय लड़ने को आमादा रहा करते थे परन्तु गोगा वीर उन्हें अपने बड़े भाइयों जैसा ही प्यार करते थे। परन्तु होनीबस अपने कर्मों से बाज नहीं आते थे। गोगा वीर का राज्याभिषेक

और श्रीयल सुन्दरी का सौन्दर्य देख उनके अधीर मन को शान्ति नहीं थी। अपने बेटों को उदास देखकर काछल कपटन भी बड़ी बेचैन रहती, न उसे खाना भाता न कपड़ा लत्ता। वह ये सोचती रहती गोगा से राजपाट छीनकर किस भांति अपने बेटे को राजा बनाऊं।

परन्तु वह वीरों का युग था। जिसकी लाठी उसी की भैंस। बलवान ही राजा बनते थे। और कायर मिट जाते थे। हर बलवान नरेश अपने कमजोर पड़ौसी को बरबाद कर राज्य हथिया लिया करता था। थोड़ी थोड़ी दूर पर छोटे छोटे राज्य थे। बलवान लुटेरों के डर से सुख की नींद सोना हराम था। विदेशियों के भी हमले भारतवर्ष पर होने लगे थे। परन्तु गोगा वीर के भय से, ददरेड़ा की तरफ मुंह उठा कर भी देखने का साहस नहीं करते थे। पर अरजन सरजन के मारे नाक में दम था। जहां वह बैठते गोगा जी के बारे में जली कटी वार्ता रात दिन करते। गोगावीर उन्हें समझाया करते, भैया जमाना खराब है हम लोग आपस में मेल मिलाप से रहकर ही दुश्मनों से लोहा ले सकते हैं। तभी गुलामी से बचकर स्वतन्त्र रह सकते हैं।

हमारे संगठन के कारण ही दुशमन कुछ बिगाड़ नही पाते। परन्तु होतव्यता बस उनकी समझ में एक बात नहीं बैठती थी। बल्कि वह अधीर हो यही सोचते, इस बैरी जाहरवीर जोधा को किस प्रकार अपमानित करें।

इधर माता बाछल रात दिन कहा करती, बेटा गोगा अपने भाइयों से प्यार बढ़ाया करो। उन्हें स्वप्न में भी गैर न समझना। मौसी के बेटे और तुम्हारे चाचा के बेटे इनसे तुम्हारा डबल नाता है। गोगा बोले ठीक है जननी, मैं तो इन्हें सगे भाइयों से ज्यादा प्यार करता हूं, परन्तु ये मुझे दुशमन की नजर से देखते हैं। मैं क्या करूं मेरी बात उन्हें सुहाती ही नहीं। फिर भी मैं आपको शिकायत का मौका नहीं दूंगा। इतना सुन बाछल रानी बोली बेटा एक काम और बहुत जरूरी बाकी है। तुम्हारे जन्म लेने से पहले गुरु गोरख के टीले पर पहुंचकर भन्डारा करना बोला था। परन्तु तुम्हारा ब्याह भी हो गया। पर भन्डारा अब तक नहीं कर पाई। सो तुम गोरख टीले पर पहुंचकर मेरा बोला भन्डारा विधि पूर्वक करके लौट आओ।

गोगाजी बोले माता जी, चिन्ता मत करो

कल के दिन आपका बोला भन्डारा कर आऊंगा। अगले ही दिन गोगा जी एक सौ एक ऊटों पर घी खान्ड, सूजी, मैदा, सब्जी आदि अपने सेवकों से लदवाकर चन्द हलवाई और सेवक साथ ले अपने नीले अश्व पर चढ़ गुरु टीले पहुंच, गोरखनाथ के चरणों में अपना मस्तक नवाया। इधर श्रावण शुक्ला तीज आन पहुंची और रानी श्रीयल सुन्दरी अपनी सास के पास पहुंच नौलखे बाग में तीज झूलने के वास्ते मचल गई। महारानी बाछल अपनी लड़ेती बहू की जिद देखकर नगर की सुन्दर सुघड़ कुल बधुओं को बुला नौलखे बाग में तीज झूलने की सकल तैयारी करवादी। और नगर की सुघड़ नवेलियों के संग अपनी बहू रानी को डोले में बिठा कहारों के संग रवाना कर दिया। ये चर्चा काछल कपटन से भी छिपी नहीं रही थी। वो जल भुनकर अपने अन्धेरे कमरे में जाकर टूटे पलंग पर लेट गई और दासी को दीपक भी बालने को मना कर दिया।

जब अपने यार दोस्तों से फारिग होकर अरजन सरजन घर आये तो उन्हें चारों तरफ अन्धेरा दिखाई पड़ा। उन्होंने दासी को निकट बुलाकर फटकार लगाई कि महल में अभी तक दीपक क्यों नहीं

जलाया। दासी ने अपने नैन नीचे करके कहा, रानी जी ने मना कर दिया। वह गुस्से में भरी बिनाबिछे पलंग पर ही जा लेटी हैं। तब जोड़े ने अपनी मां के पास जाकर पूछा तो वह नयनों से नीर बहा कर रोने लगी। अपनी जननी को रोते देख बेटे बोले, माताजी अधीर मत हो धीरज धरकर हमें बताओ क्या तुम्हें किसी ने कुछ कहा है। जिसने हमारी जननी को सताया है। उसे हम जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। माता काछल ने अपने बेटों की वाणी सुन अपना मुंह फेर लिया। अरजन बोला मां तुम्हें बात बताने में किस बात का भय है। शीघ्र बताओ। नहीं तो हम दोनों दीवाल से अपना सिर फोड़ कर स्वर्गलोक सिधार जायेंगे।

इतना सुन काछल बोली, जान तो दीवार में टक्कर मारकर मुझे देनी है। जिसके दो हाथी जैसे बेटे वह दासियों जैसा जीवन बितावें और एक बेटे वाली बैठी बैठी हुक्म चलावे। इससे अधिक क्षत्राणी के लिए और क्या लज्जा की बात हो सकती है। इतना सुनते ही दोनों भाई अधीर हो बोले जननी बताओ तो सही, हमें तुम्हारे दूध की कसम है जो दुश्मन को जिन्दा छोड़ें। रानी काछल अपने नैनों से

नीर पौंछकर बोली। आज आस पड़ौस में कहलवाया हैं कि बहू श्रीयल नौलखे बाग में तीज झूलने जाना चाहती है जो उसके संग जाना चाहे वह बहूबेटी खुशी से जा सकती है। क्या नौलखे बाग की वह अकेली ही मालिक है। जो मेरी सलाह तक नहीं ली। तुम्हें चाहिए कल सुबह दिन निकलने से पहले ही बाग के फाटक में ताला डलवाकर पहरा लगवादो। इस नगर की नारियां और बालक बच्चे बाग की फुलवारी और फलों का सत्यानाश कर देंगे और हौज के गंदला हो जाने पर, पानी भी पीने के काबिल नहीं रहेगा। तुम किसी को बाग में प्रवेश मत करने देना। गोगा गोरख नाथ का भन्डारा करने गया है। अगर वह तीन पांच करे तो उसका हिस्सा देकर बटवारा करलो।

इतना सुन दोनों वीर गरजकर बोले ठीक है, कल दिन में तुम हम दोनों का बल देखना, हम तो उसे छोटा भाई समझकर अब तक गम खाते रहे हैं। अब उठो और हमें भोजन दो बड़ी जोर की भूख लग रही है। इतना कह अपनी माता को धीर बंधा, भोजन जीमा और रात को सोच विचार करते हुए गहरी निद्रा में अधीर हो सो गए। सुबह

तड़के ही उठ योजना के अनुसार बाग के फाटक पर जाकर ताला डाल दिया और दोनों भाई घोड़ों पर चढ़ हाथ में नंगी तलवार लिये बाग की निगरानी करने लगे। जब रानी श्रीयल की सखियों के डोले बाग के फाटक पर पहुंचे तो वहां ताला लगा पाया। और अपने दोनों जेठों को गुस्से में भरे देखा जब उन्होंने निर्लज्जता पूर्वक कहारों से कहा, डोले उल्टे ले जाओ। बाग में प्रवेश वर्जित है। ये बाग इकले गोगा का नहीं है। हम भी इसके मालिक हैं। अपने जेठों के मुख से अपनी सखियों के सामने अपमान का घूट पीकर रानी श्रीयल बाग से बिना झूला झूले ही वापिस चली आई, और अपने जेठौं की सारी वार्ता अपनी सास को समझाई।

बन्धुओं, अब यहां की घटना यहीं छोड़कर, हमें गोरख टीले पहुंचना है। बाहर बहुत से ऊंट सामान से लदे खड़े देखकर सन्त औघड़नाथ ने अपने गुरु को जाकर मस्तक नवाया और हाथ जोड़कर बोला। गुरु जी बाहर बहुत से ऊंट सामान से लदे खड़े हैं। वह किसके हैं। इतने में ही जाहरवीर जोधा ने भी आनकर गुरु चरण पकड़ प्रणाम किया। तब गुरु गोरख नाथ जी महाराज बोले, औघड़ नाथ ये गोगा

वीर अपनी माँ के बोले भन्डारे को करने आये हैं। तुम अपने साथियों को खबर कर दो सब को चार चार लाल दक्षिणा में मिलेंगे। अपने गुरु की अपूर्व वाणी सुनकर गोगा वीर बोले गुरु जी, आपने इस प्रकार के वचन किस प्रकार कह दिये। मैं अपना तथा अपनी ससुराल दोनों का राज्य भी बेच दूं तब भी आपके वचनों की पूर्ति नहीं कर पाऊंगा। इतना तो इस भारत वर्ष में कोई चक्रवर्ती नरेश भी आज तक नहीं कर पाये हैं। छप्पन सौ लाल क्या कोई मामूली बात है।

गोरख गुरु बोले, गोगा वीर तेरे मुख से ये वचन शोभा नहीं देते, तुझे अपनी हस्ती का पता नहीं हैं। सो कान लगाकर सुन, जहां के तुम निवासी हो वह महाराजा बलिका का देश है और तुम उनके बंसज हो जिनके दरवाजे पर खुद भगवान विष्णु पहरा देते हैं। और लक्ष्मी जी सात सौ मन सोने की नित्य प्रति वर्षा बरसाती है। छप्पन सौ लाल उस पदम नाग के वास्ते देने कौन बड़ी बात हैं। तुम छप्पन लाख लाल भी दे सकते हो। मैं कभी मिथ्या बचन नहीं बोलता हूं। तुम पाताल निवासी नागराज वासुकी के पुत्र हो और तमाम नाग

जाति के प्राण प्यारे राजकुमार हो। तुम्हारे मुख से निकलते ही तुम्हारा धर्मात्मा पिता गुरू भन्डारे के इस शुभ काम से खुश होकर ना नहीं करेगा और छप्पन सौ लाल अपने नागों के द्वारा गोरख टीले पहुंचा देगा। अब बेटा तुम आंख बन्द करो और अपने माता पिता के दर्शन कर भन्डारे वास्ते उनसे छप्पन सौ लाल भिजवाने पक्के करके लौट आओ गुरु आज्ञा अनुसार गोगा वीर ने, अपनी आंखें बन्द कर लीं तभी गुरु गोरख ने अपनी भभूती के प्रभाव से जाहर बीर को पदम नाग के रुप में परिवर्तित कर दिया। उसी समय गुरू माया से बिल से एक काला भयंकर सर्प निकला और पदम नाग को अपने शीश पर बिठा कर बिल में बढ़ गया और अपने मन्त्र द्वारा पाताल लोक जा पहुंचा।

पाताल लोक पहुंच जाने पर, अपने कुटम परिवार और इष्ट मित्रों से मिले। अपने माता पिता को अपना मस्तक नवा कर प्रणाम किया। वह इन्हें देख बड़े प्रसन्नचित हुए और बोले बेटा, क्या गुरु गोरख का मृत्यु लोक वाला कार्य समाप्त हो गया। पदम नाग बोला अभी कहां पिता जी। अभी तो गुरु गोरख ने भन्डारे के कार्य से मुझ यहां पठाया

है । मेरी मृत्यु लोक की जननी महारानी बाछल के बोले भन्डारे का सामान लेकर जब गुरु गोरख के निकट पहुंचा, तब गुरु महाराज ने सब सन्तों को चार चार लाल दक्षिणा में देने की आज्ञा दी है । कृपया आप छप्पन सौ लाल अपने नागों द्वारा गोरख टीले भिजवाने की दया करें । इतना कह अधीर हो अपने पिता वासुकी की शकल देखने लगे । तब राजा वासुकी धीरज धर बोले । बेटा शुभ काम में घबराने से काम नहीं चलता । प्रातःकाल ही लाल तुम्हारे गुरु के टीले पर भिजवा दिये जायेंगे । नागिनी मां ने अपने बेटे पदमनाग को जलपान कराकर विदाई दी । जो नाग जिस प्रकार लेकर गया था उसी प्रकार पहुंचा गया । जब जाहर वीर जोधा ने गुरुदेव के दर्शन किये तो यह समाधिस्थ थे । तभी समाधी खुलने पर गुरु गोरख बोले कहो बेटा, कार्य सिद्ध हुआ । गोगा वीर बोले गुरु जी आपकी माया अपरम्पार है । भन्डारे की दक्षिणा का बड़े प्रेम से बन्दोबस्त हो गया । गुरु गोरखनाथ जी बोले फिर क्या देर है हलवाई से बोलो पकवान तैयार करें ।

बन्धुओं, गोगा जी ने गुरु आज्ञा अपने शीश चढ़ा, हलवाइयों को हुक्म दिया कि बढ़िया बढ़िया

व्यंजन तैयार करो । सूर्य उदय के बाद सन्तों को जिमाना है । समय से पूर्व ही सब प्रबन्ध हो जाना चाहिये । हलवाई बोले चिन्ता मत करो गोगा जी, समय से पहले ही सब कार्य हो जावेगा । इतना कहकर हलवाइयों ने लगन के साथ लगकर भन्डारे की सब सामग्री तैयार कर दी ।

इधर तो गोगा जी हलवाइयों को आदेश दे रहे थे और उधर गुरु गोरखनाथ स्नान ध्यान से निबट भा न पाये थे तो सब सन्तों देखा कि नाग अपने शीश पर ला लाकर गुरु धूने के निकट लाल धर अपने शीश झुका झुकाकर अपने बिलों में बढ़ जाते हैं सन्तों को दक्षिणा देने के वास्ते छप्पन सौ लाल गुरु गोरख नाथ जी के पास इकट्ठे हो गये । भोजन जीम लेने के बाद हर सन्त को गुरु आज्ञा अनुसार चार चार लाल दक्षिणा में भेंट किये गये । सब सन्तों ने गोगा जी को आशीर्वाद दिया और गुरु गोरखनाथ बोले जैसा गुरु भन्डारा गोगा जी ने किया है ऐसा न पहले किसी ने किया और न आगे कोई कर सकेगा । ये बड़े धनाड्य और धर्मातमा देश का राजकुमार है । जहां घर घर सोने के अम्बार चिने पड़े हैं । ये सब राजा बलि के दान का प्रताप है । जिसने दान में

अपना शरीर तक नपवा दिया था । आगे चलकर ये ही देश अमरीका कहलावेगा जिसके बराबर सारे संसार में कोई धनी देश न होगा । पर दान धर्म में पिछड़ जाने के कारण अपना मान सम्मान खोकर पूर्ण छीन हो जाने दुष्टों की इमदाद करने के कारण पतन को प्राप्त होगा । बन्धुओं अब हम गोगा जी की अच्छाइओं की कुछ वार्ता लिखते है जिसकी वजह से इन्हें संसार भर के नर नारी अपना देवता मानकर पूजते हैं । अपने कार्य द्वारा गुरु गोरखनाथ की कृपा से ही जगत प्रसिद्ध हो कर इन्होंने कीर्ति पाई ।

अछूत उद्धारक गोगा वीर

बन्धुओं, हमारे गोगा जी आजकल के भाई बहनों की तरह गृहस्थ धर्म पालन करने के आदी नहीं थे । वह अपनी प्राण प्यारी रानी श्रीयल सती के साथ भी नियम पूर्वक ब्रह्मचारी रह कर शास्त्रों के अनुकूल ही गृहस्थ धर्म का पालन करते थे । अपने समय को व्यर्थ को गपशप में बरबाद न कर दीन दुखियों की सेवा में लगे रहते थे । उन्होंने छोटी जाति के लोगों की शिक्षा के वास्ते अनेक पाठशालायें बनवाकर उन्हें शिक्षित करके अपनी पलटन में ऊंचे ऊंचे पदों

पर औफ़िसर बना रखा करते थे । मिसाल के तौर पर जैसे भज्जू चमार को कोतवाल और रतना भंगी के सिपहसालर ।

इसी तरह जो जैसा विद्वान पढ़ लिखकर ईमानदारी से काम करने लायक हो जाता था, उसे उतना ही बड़ा पद अपने दरबार में देते थे । उनके यहां जाति पांति का भेद भाव नहीं था । पंडित जी को ही ऊंचा पद दो या लाला जी की इज्जत करो । ये कुनवा परस्ती उनके दरबार में नहीं थी । इनके यहां हर समय सदावृत जारी रहता था । कोई गरीब अमीर जीमो किसी को कोई मनाई नहीं थी । इनके इस देश भक्ति के कार्य में ब्राह्मण और ब्राह्मणों के भक्त जो अपने को ऊंची जाती का समझने वाले बेईमान लोग जिन्हें महा नीच कहना चाहिये, या सफेदपोश ठग बदमाश, मन ही मन इनके कार्य को अधर्म तथा धर्म का नाश करने वाला कहते रहते थे । इनके दिल में गरीब दुखी इन्सानों के लिये दया का सागर उमड़ता रहता था । कोई अमीर किसी गरीब दुखी या गैर जाति के लोगों को सता नहीं सकता था । अगर कोई अपने गरूर में नीच कार्य कर बैठता था तो गोगा वीर उसे कड़ी से कड़ी न्याय पूर्वक

सजा देते थे । आगे से वह किसी के साथ गरूर से बात न कर पायें । वह बुराई के बड़े भारी दुश्मन थे । चोरी बदमाशी उनके राज्य में नहीं होती थी । शराब अफीम सुलफा गांझा नशाखोरी, न वह खुद करते थे न किसी को करने देते थे । अगर कोई उपरोक्त बदमाशी करता पाया जाता था तो उसके दोनों हाथ कटवाने की सख्त सजा दी जाती थी । रिश्वत लेना या दहेज मांगना या स्त्री जाति का अपमान करना उस समय के रिवाज में ही नहीं था । जनता इन कुकर्मों से खुद व खुद डरती थी । आज भी जिन्हें हम ऊंची जाती के लोग कहते हैं । वही महा पापी अपने कर्मों द्वारा आज भी अपने कमजोर भाइयों को सताने से बाज नहीं आते । अपने धन के बल पर नर हत्या जैसा कमीना कार्य भी कर बैठते हैं । जो उस जमाने में नहीं कर पाते थे । इसीलिये ये संसार पूज्य ब्राह्मण इनके शुभ कार्यों को अधर्म कहकर भोली भाली मूर्ख जनता को बहकाया करते थे जैसे आजकल के मुसलमान लोग मुंह पर तो कहते हैं हम सब भाई भाई हैं और मस्जिद के भीतर पहुंच कर हमें काफिर कहने में अपनी बढ़ाई समझते हैं । ये ही दशा इन मूर्ख पंडितों की है कि जिस हांडी में

खायें उसी में छेद करें । ये ही इनके पतन का कारण है । तब भी अपनी धूर्तता से बाज नहीं आते । जो समझदार सज्जन ब्राह्मण हैं, उन्होंने अपने पुर्खों के कार्य से घृणा करके नौकरी आदि करना शुरू करके अपना मान सम्मान कायम किया है । बन्धुओं अब इस चरचा को अगाड़ी लिखेंगे ।

गऊ सेवा करने से ही ये गोगा जी हुए । बन्धुओ हमारे गोगा जी सच्चे गौभक्त थे । उनके नगर में इक्यावन गऊशालायें थीं । जिनमें सात हजार गऊ मातायें और ग्यारह सौ बैल और अस्सी सांड के अलावा आठ हजार दो सौ पांच बछियां और बछड़े थे । जिनकी कुल संख्या सोलह हजार तीन सौ पिचासी थी । ददरेड़ा नगर की रुपये में दो आने भर भूमी में इनकी खेती बाड़ी होती थी । एक आने भर में गौचर भूमि थी जहां इनकी और नगर की गायें चरने जाया करती थीं । खेती और गऊ सेवा के लिए दो हजार नौजवान किसान इनकी खेती और दूध घी पर अध-बटाई के हिस्से पर काम करते थे । जो अपना हिस्सा ईमानदारी के साथ लेजाकर, अपने बाल बच्चों का पालन पोषण धर्मपूर्वक कर उन्हें खिला पिला कर, देश सेवा के लिए, बलवान बनाया करते थे । नित्य

प्रति गोगा जी की पाठशालाओं में पढ़ लिखकर विद्वान बनने के लिए नियम पूर्वक भेजा करते थे। उनके बच्चे भी अपने माता पिता के आज्ञाकारी बन, शुभ कार्यो को करने में सदा तत्पर रहते थे।

गोगा जी अपनी सब गऊशालाओं और पाठ शालाओं का नियन्त्रण करने में कभी नहीं चूकते थे, उनकी गऊ शालाओं में कुत्ते, मक्खी, मच्छर, चोरों का कतई भय नहीं था। गोबर और गऊ मूत्र घास चारे का कूड़ा करकट खेतों में डलवा कर सफाई रखने की सख्त आज्ञा थी। गौ के गोबर में देवताओं का निवास समझने के कारण किसी प्रकार की दुर्गन्ध युक्त वस्तु कोई न डालने पाये, इसका पूरा प्रबन्ध था। जो सारी जनता जानती थी। जो लोग ददरेड़ा नगर में रहते थे। वह सब गऊ माता को गोगा जी की तरह ही अपने शयनकक्ष के नजदीक ही बंधवाते थे। जिससे कोई बीमारी पास नहीं फटकती थी। मक्खो मच्छर का दूर तक कोई चिन्ह नजर नहीं आता था। गौशालाओं के कक्ष भी अपने कक्ष के समान ही सुन्दर लिपे पुते होते थे। गऊ शालाओं की गऊओं का सरदी हवा धूल और धूप से बचाने का वहां खास प्रबन्ध था। वह लोग गऊ माता को अपने

प्राणों से भी अधिक प्यारा रखकर उसकी सेवा नित्य करते थे। डांस मच्छर मक्खी आदि भगाने के लिए सुगन्धित धूप का विशेष प्रबन्ध था।

जो गौ पालक कभी धूनी आदि देने को भूल जाता था उसे नरक गामी होने का भय दिखा कर प्यार पूर्वक डांटा फटकारा जाता था। गोबर और गऊ मूत्र से घृणा न करके गऊ शाला सफेद चूने के पाऊडर से सदा साफ की जाया करती थी। गर्मियों में पेड़ों की ठन्डी छाया की हवा और जाड़ों में गर्म और बिना कीचड़ के कक्ष में बांधने का नियम था। सबकी सफाई नित्यप्रति होती थी। जूता पहनकर भी गऊ शाला के अन्दर जाना सख्त मना था और सारी रात्रि गौ शाला में भी देशी घी के दीपक महलों के समान ही बला करते थे। गऊंओं के वास्ते ताजे चारे दाने की पूर्ण व्यवस्था थी। जिसे वह आनन्द पूर्वक खाकर अपने बछड़े के संग जुगाली करें और हम प्रेम पूर्वक गऊ माता का दूध पीकर और घी खाकर अपनी काया को निरोग और बलवान बनाये रक्खें। गऊ सेवा कर सुख की नींद सोकर स्वर्ग लोक के अधिकारी बनें।

इस प्रकार के विचार गोगा जी गऊ सेवा तथा

उनकी गऊशाला के भक्तों के थे। तभी उनके राज में शूरवीरों की कमी नहीं थी। पूरे प्रांत का बच्चा बच्चा वीर धीर और रणधीर था। उस समय की इन सब बातों की झलक बागड़ प्रांत में अब तक मौजूद है। गोगा जी के समय में दूध घी की नहरें बहती थीं। जैसे दूध की गोरख गंगा उनके प्रांत में अब भी सरनाम है वहां एक रुपये का पच्चीस सेर घी और पांच मन दूध तथा बारह मन गेहूं, आठ मन चावल, चौदह मन गुड़ और नौ मन बूरा धनवान लोग खरीदा करते थे। गरीब फकीरों के वास्ते मुफ्त मिलने का राज्य प्रबन्ध था। वहां गरीब और फकीर थे ही नहीं जो मुफ्त का माल समेटें, वहां लोग भीख मांगना लज्जा जनक कार्य समझते थें। बागड़ प्रदेश के लोग धनाड्य ही थे और बागड़ प्रदेश हो क्या हमारा सारा भारतवर्ष ही उन दिनों सोने की चिड़िया कहलाता था। पाताल लोक का किसी को पता ही नहीं था। केवल गुरु गोरख नाथ जैसे योगी ही पहुंच पाते थे।

गौ भक्त गोगा वीर गुरु का भण्डारा कर ददरेड़ा नगर आने पर सब घटना अपनी माता महारानी बाछल को विस्तार पूर्वक सुनाई। इधर महारानी

बाछल ने रानी श्रीयल को समझा रक्खा था कि तुम बाग वाली घटना की चर्चा अपने पति गोगावीर से मत करना। घर के भ्राताओं में झगड़ा कराना उचित नहीं। एक का क्रोध दूसरे की जान ले सकता है। कपटिन काछल भी गुरु गोरख नाथ के श्राप को भूली नहीं थी। जिसे याद कर वह कांप जाया करती थी इधर गोगा जी गुरु भन्डारा कर राजकार्य और समाज सेवा में लग गए। रानी श्रीयल भी गृहस्थी के कार्य में अपनी सास का हाथ बटाने में पीछे नहीं रहती थी। आपस की फूट के कारण कोई सुख की नींद नहीं सो सकता है। होनीवश ददरेड़ा नगर भी बच नहीं पाया।

चौमासे के कारण वर्षा ऋतु का जोर था और ददरेड़ा नगर के शासक अपनी जनता के संग कन्धे से कन्धा मिलाकर खेती बाड़ी करके गृहस्थ धर्म पालन करते थे। राज्य के खजाने को जनता की इमदाद के लिए सुरक्षित रखने में ही सबकी भलाई समझते थे। मूसलाधार वर्षा होने के कारण दास लोग खेतों पर काम करने चले गए थे और दासियां भोजन बनाकर उन्हें खेतों पर खाना देने गई हुई थीं। धूप की तेजी का जोर था और दोपहर का

समय था तथा गोगावीर आराम से लेटे हुए थे। रानी श्रीयल पंखा झल रही थीं। गोगा जो बोले गरमी का बहुत जोर है और सरोवर का ताजा जल पीने की इच्छा है। कोई दास दासी खेत से लौट आया हो मंगवालो। रानी श्रीयल बोली ये आपने क्या कहा। दास दासी से मंगवा लो। न मालूम दास दासी कब आयें। तब तक क्या आप प्यासे रहेंगे। मैं किस समय के लिए हूं। आपकी आज्ञा मिलते ही सरोवर के जल की तो बात ही क्या है। पाताल पुरी से अमृत घट भी लाकर सेवा में हाजिर कर सकती हूं। गोगा जी बोले रानी होकर सरोवर से जल लेने जाओगी, कोई देखेगा तो क्या कहेगा।

इतना सुन श्रीयल सुन्दरी बोली, आप प्यासे हैं और मैं यहां हाथ पर हाथ धरे बैठी रहूं। इससे क्या कोई मुझे पतिव्रता कह सकता है। इतना कहकर घड़ा उठा सरोवर से पानी लेने चल पड़ी। अरजन सरजन ने जब श्रीयल को सरोवर की तरफ जाते देखा तो गोगा जी को नीचा दिखाने की गरज से रानी श्रीयल के पीछे छिपते हुए सरोवर पर जा पहुंचे। जब रानी श्रीयल ने घड़ा भरकर सरोवर से निकाला, तब दोनों भाइयों ने जाकर उसे घेर लिया।

बोले अरे भाभी, इतने दास दासियों के होते तुम घड़ा भरने आई हो। लाओ मैं घड़ा लिए चलता हूं। ये कहकर अरजन हाथ पकड़कर घड़ा छीनने लगा। इधर सरजन ने उसका रेशमी चीर खींचकर कहा, सुन्दर नारियों के लिए रात दिन युद्ध हुआ ही करते हैं। इसलिए हमारी बन जाओ। गोगा के मर जाने के बाद तुम्हें दासियों का जीवन व्यतीत करना पड़ेगा अभी तो हम लोगों का ब्याह भी नहीं हुआ है। एक के मर जाने पर दूसरा तुम्हारे जीवन की नाव पार लगा देगा।

रानी श्रीयल सोचने लगी ये मेरे दोनों जेठ पागल तो नहीं हो गए हैं जो बुद्धिहीनों जैसी वार्ता कर रहे हैं। तभी सरजन बोला बोलो क्या विचार है राजी से हमारे साथ चल रही हो या जबरदस्ती उठाकर ले चलें। श्रीयल सुन्दरी बोली आप बड़े जेठ होकर अनहोनी वार्ता कर रहे हो। मैं आपकी बेटी के समान हूं। मेरे पति मेरे देर हो जाने के कारण यहां आ जायेंगे तो व्यर्थ ही झगड़ा बढ़ जाएगा। अरजन बोला तो हम क्या तेरे खसम से डरते हैं। जो वृथा बकवास कर रही है। वह अकेला हम दोनों का बाल भी बांका नहीं कर सकता, हम क्या उसे

जिन्दा बचकर जाने देंगे । रानी श्रीयल सुन्दरी चतुर गृहणी थी । उसने अपने मन में समझ लिया ये दुष्ट राजी से मानने वाले नहीं हैं । अपनी लाज बचाने का काम करना चाहिए ! वह आंखों में आंसू भरकर बोली । जेठ जी मैं एक अबला नारी हूं । उन्होंने सरोवर से जल मंगवाया है । उनका गुस्सा तेज है। अगर वह आ गये तो न मालूम किसकी मौत पुकार उठे और उन्होंने गुस्से में मुझे ही कत्ल कर दिया तो फिर आपका कुछ मतलब हल नहीं होने का। इसलिए मुझे जाने दो मैं उन्हें पानी पिलाकर और सुख से सुलाकर शीघ्र वापिस लौट आऊंगी । तब जहां आप मुझे ले चलोगे मैं आपके संग चलने से इन्कार नहीं करूंगी । आप मेरा यहां बैठकर लौटने का इन्तजार करो । मैं अभी गई और अभी आई।

इन दोनों भाइयों को रानी श्रीयल की मधुर वार्ता पसन्द आ गई । उन्होंने सोचा जब सीधी उंगली से घी निकलने की आशा है, तब टेढ़ी करने से क्या लाभ । ऐसा सोच श्रीयल सुन्दरी को जाने दिया और कहा अगर तुमने विश्वासघात किया तो आइन्दा तुम्हारी बुरी दुगर्ती की जायेगी । अरजन सरजन की बेहूदगी के कारण रानी श्रीयल हांपती कांपती गुस्से

में चूर हो महल में जा पहुंची और घट बड़ेली पर रखकर झारी में पानी भर गोगा जी के निकट जाकर जल झारी गोगा जी को पकड़ा दी । गोगा जी ने अपनी रानी के हंस मुख चेहरे के बजाय गमनाक सूरत और रोनी शक्ल देखकर पानी की घूंट भरकर कहा । तुम्हें क्या हुआ है मैंने तो पहले ही मना किया था । धूप में मत जाओ । परन्तु तुम्हारे तो पतिव्रत धर्म में खामी आ जाती । अब धूप में मुंह कुम्हला गया तो कोई क्या कर सकता है ।

अपने प्राणनाथ की वार्ता सुनकर श्रीयल सती अधीर हो अपने रतनारे नयनों से नीर की बर्षा बर्षाने लगी । जब गोगा जी ने रानी श्रीयल के सर पर अपना हाथ धर कर अधीर होने और रोने का कारण पूछा तो अपने दोनों जेठों की करतूतों की घटना सारी ब्यान कर दी । अपनी प्राणप्यारी से सरोवर की घटना सुनकर गोगा चौहान बेचैन हो उठा और तुरन्त अपना बरछा और हथियार उठा नीले घोड़े की नंगी पीठ पर ही सवार हो वहां जा पहुंचा जहां दोनों भाई श्रीयल के लौटने का इन्तजार वट वृक्ष की छाया में लेटे हुए कर रहे थे । तभी उन्होंने दूर से देखा श्रीयल सुन्दरी के बजाय, नीला

घोड़ा दौड़ता हुआ इनके निकट ही आ रहा है। अरजन सरजत जब तक भागने की सोच भी न पाये तब तक जाहरवीर जोधा का घोड़ा उन्हें घेरकर खड़ा हो गया।

गोगाजी बोले बुजदिलों अब तुम मेरे सामने से भागकर जिन्दा नहीं जा सकते। ये कहकर अपने बरछे का एक करारा हाथ सरजन की गरदन में मारा, जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो धरती पर लोटने लगा। फिर अरजन को ललकारा उसने भी अधीर हो भागकर अपनी जान बचानी चाही। परन्तु गुरु गोरखनाथ का वचन किस प्रकार मिथ्या हो सकता था। थोड़ी देर युद्ध करने के पश्चात उसका भी शीश धड़ से न्यारा कर दिया। जब उनका क्रोध कुछ शांत हुआ। तब उन्होंने उन दोनों के धड़ वट वृक्ष की आड़ में कर दोनों सिर के की चोटी बांधकर अपने भाले की नोंक में लटका कर लौट पड़े।

जब जाहरवीर सरोवर की तरफ गये थे तभी नीले घोड़े की टापों की आवाज सुनकर माता बाछल सोते से जाग गईं थी और रानी श्रीयल अपनी सास को, सरोवर वाली घटना अधीर हो सुना रही थी।

तभी अपने दोनों भाइयों के शीश भाले की नोंक पर लटकाये गोगावीर आन पहुंचे। अपने अपमान का बदला मिल जाने के कारण श्रीयल सुन्दरी का चेहरा खिल उठा। परन्तु माता बाछल अधीर हो और अपना धीरज खो बेचैन हो बोली, हत्यारे गोगा आखिर तूने अपने कुटुम्ब का सत्यानाश कर ही दिया तूने ये भी न सोचा ये मेरे दोनों भाई मेरे दोनों बाजू हैं। जिनकी वजह से दुश्मन ददरेड़ा नगर की तरफ मूह करके भी नहीं सोते थे। वह अपने मन में भयभीत होकर कहते हैं कि ये रणाबांकुरे जुझारू तीन-तीन भाई हैं, इनसे लोहा लेना कठिन है। अब तुझे अकेला समझकर कोई भी चटनी की तरह पीसकर चट कर जायेगा। तुझ मूर्ख ने अपने बाजुओं को खुद काटा है। मेरे आगे से अभी चला जा, मैं तुझ जैसे हत्यारे का मुंह भी देखना नहीं चाहती। इतना कह माता बाछल ने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया। गोगाजी ने भी बेचैन हो, अपने नीले घोड़े का मुंह घुमाकर बोले मां तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य अब मैं तुम्हें अपना मुंह कभी नहीं दिखाऊंगा। अगर होनी बस दिखाना पड़ गया तो तुरन्त ही पृथ्वी में समा जाऊंगा।

इतना कहकर, जब चलने को हुए तभी रानी श्रीयल ने दौड़कर नीले अश्व की बाग पकड़ली और अपने प्रीतम से बोली, मैं भी आपके ही संग चलूंगी। गोगा जी बोले रानी अभी मेरा कौन ठिकाना है। मैं तुम्हें कहां कहां लिये फिरूंगा। इतना सुन श्रीयल सुन्दरी बोली तो आप मुझे अपने दर्शन देने की प्रतिज्ञा करें। गोगा जी बोले ये बात ठीक है। मैं तुम्हारे महल में जल्दी जल्दी आता जाता रहूंगा। परन्तु ये बात किसी को बताना नहीं। ये कहकर अपने घोड़े की लगाम अधीर हो छुड़ाकर चल दिये और रानी श्रीयल अपने रतनारे नयनों से नीर की वर्षा कर अधीर हो खड़ी रोती रही।

तब गोगा वीर अपना घोड़ा कुदाते हुए सीधे गोरख टीले जा पहुंचे और गुरु चरणों को जाकर मस्तक नवाया। गुरु गोरख नाथ ने अपने शिष्य के सिर पर हाथ रखकर पूंछा। भक्त अभी तो तुम भन्डारा करके गये ही थे फिर इतनी जल्दी यहां आने का कारण। गोगा जी अधीर हो बोले अन्तर्यामी गुरु से कुछ छिपा हुआ नहीं है। मैं तो सिर्फ इतना बता सकता हूं कि पूर्ण रूप से अब मैं आपकी शरण में आ गया हूं। गुरुदेव बोले बेटा शरण की बात तो

पीछे की है अभी तो मैं ये जानना चाहता हूं यहां आये क्यों हो। गोगा जी बोले गुरु देव तपस्या करने के वास्ते। गुरु गोरखनाथ बोले, जैसी तुम्हारी मरजी।

बन्धुओं, दिन में तो गोगा जी तपस्या करते थे और रात को अपनी रानी के महलों में पहुंच उसे धीरज बन्धाते थे और ब्रह्म महूर्त में उठकर दिन निकलने से पहले ही गोरख टीले पहुंच जाया करते थे। ये कार्यक्रम काफी दिनों तक चलता रहा। इधर रानी बाछल ने राज काज की डोर अपने हाथ में संभाली और रात दिन अधीर हो राज प्रबन्ध में लगी रहती थी। उधर गोगा जी सोचा करते अगर किसी दिन मेरे महल में जाने की चोरी माता ने पकड़ ली, तब क्या होगा। उन्होंने सुबह ही गुरु चरणों में पहुंच अपनी माता के सामने की हुई प्रतिज्ञा की सारी कथा सुनाई। तब गुरु गोरखनाथ बोले बेटा शास्त्रों का ये मत है कि प्रतिज्ञा करके न निभाने वाला व्यक्ति, घोर नरक में स्थान पाता है। तुम भी की हुई प्रतिज्ञा का पालन करो।

इधर तो ये वार्ता हुई और उधर तीजों का त्यौहार आन पहुंचा। तब रानी श्रीयल सोलह

सिंगार कर तीज झूलने की आज्ञा अपनी सास से लेने आन पहुंची । बाछल रानी अपनी बहू का सिंगार पटार देखकर आपे से बाहर होकर बोली । जब तेरा पति घर बार छोड़ कर चला गया तो ये हार सिंगार किसे रिझाने के लिये बनाये हैं । इतना सुन श्रीयल सती बोली माताजी आपसे रूठ कर चले गये हैं परन्तु मेरे पास तो नित्य प्रति रात को आते हैं । बाछल माता बोली झूठी कहीं की । मैं तेरी बात बिना अपनी आंखों से देखे मानने को तैयार नहीं । इतना कह महारानी बाछल पास पड़ोस की, कुल बन्धुओं और बेटियों को संग लेजाकर, अपनी बहू को नौलखे बाग में तीज झुला कर लौट आई । फिर भोजन करके अपने कक्ष में जाकर थककर लेट गई ।

तब उसने अपनी प्रमुख बांदी मूंगादे को अपने पास बुलाकर कहा । मेरा बेटा जाहरवीर जब बहू के कक्ष से निकलकर जावे तब तुम मुझे जगा देना । उससे कुछ जरूरी बातें करनी हैं । गोगा जी रोज की भांति आज भी सती श्रीयल के कक्ष में आकर ठीक समय पर लौटने लगे । तभी बांदी मूंगादे ने माता बाछल को खबर की कि आपका बेटा अब जाने ही वाला है । जब गोगा जी नीले घोड़े पर

सवार हो रहे थे तब तक माता आन पहुंची । वह ये चाहती थी कि मेरा बेटा मेरे चरणों को छूकर क्षमा मांगे । परन्तु गोगावीर ने अपना मुंह घुमा लिया ।

इतने में कपटिन काछल भी आन पहुंची । वहबोली बहन जो होनी थी हो गई । गुरु गोरखनाथ की वाणी सत्य थी । अब क्यों वंश का नाश करने पर उतारू है । अगर गोगा को तुम नहीं मना सकती तो मुझे मनाने की आज्ञा दे । जो जग से चले गए उन्हें तो लौटकर आना है नहीं । माता मौसी को बात करते देख गोगावीर ने अपना घोड़ा दौड़ा दिया । यह दोनों आवाजें देती ही रह गईं । उन्होंने अपने बेटे के पीछे घुड़सवार भी दौड़ाये पर नीले अश्व की दौड़ने की कला के सामने किसी का कुछ बस नहीं चला । अपनी तेज रफ्तार के कारण नीला घोड़ा मय गोगा वीर के भारी दलदल में धंस धरती में समा गया । उसने निकलने के वास्ते काफी जोर लगाया परन्तु होनी के बस उसका सारा जोर व्यर्थ गया । दोनों गुरु भाई धरती में समा गए । बाछल काछल दोनों बहनें और घुड़सवार हाथ मलते रह गये । गोगा जी की ध्वजा और भाला ही अपनी बहार दिखा रहा

था।

इस घटना की खबर सारे में फैल गई तब रानी श्रीयल रथ में सवार हो अपना सिर धुनती रोती पीटती वहीं आन पहुंची। दोनों माताओं ने अपनी बहू के आंसू पौंछकर उसे चुपाना चाहा। तब वह गुस्से में भर अधीर हो बोली। नासपीटी कम्बख्त रांडो आखिर में रहीं बांझ की बांझ ही। अब तुम्हें मेरा श्राप है तुम आगे भी सात जन्मों तक बांझ रहोगी और तुम्हें औलाद का मुख देखने को नहीं मिलेगा और इसी तरह बेजार होकर मरोगी। अपनी सती बहू का श्राप सुन कर अधीर हो दोनों बहनों ने वहीं अपने प्राण त्याग दिये।

सती श्रीयल रोज अपने प्राण पति के आने की बाट देखा करती और अधीर हो कहती। वह कभी न कभी जरूर आयेंगे। जब ये खबर राजा सिंधासिह और रानी सिरौंजा सुन्दरी को लगी कि श्रीयल सती गम के कारण पागल हो गई है। तब दोनों ददरेड़ा नगर आनकर अपनी बेटी के दुख में शामिल हुए और अपनी बेटी को सिंगार पटार करने के कारण दुखी हो बोले। बेटी जिनके पति परलोक चले जाते हैं उन्हें इस प्रकार अपना शौक छोड़कर सादे वस्त्रों

में रहकर सादा भोजन करना चाहिए।

इतनी वार्ता अपनी माता की सुनकर श्रीयल सती बोली, जननी आप कैसी बातें करती हो। कभी सती सावित्री नारियां भी विधवा हो सकती हैं। अगर आपकी बात ठीक भी हो तो भी मैं उनकी अर्धांगिनी हूं। मेरे जिस्म में आधा शरीर उनका जुड़ा हुआ है आधा मेरा। हम दोनों का आधा आधा शरीर मरा है। फिर किसी को मुझे विधवा कहने का क्या अधिकार है। फिर गुरु गोरखनाथ के वर-दान से वह अमर हो चुके हैं। दुनिया देखेगी मेरी तपस्या से वह एक न एक दिन यहां आनकर मेरी मांग भरेंगे। आप अपनी श्रीयल का भाग्य हेटा मत समझो और बेफिकरी से अपने प्रान्त लौट जाओ। उन्होंने अपनी बेटी को अपने साथ ले जाने को रो धो कर काफी कोशिश की पर श्रीयल सती उनके साथ जाने को किसी भी कीमत पर तैयार नहीं हुई। उसका एक कहना था। मेरे प्राणनाथ मुझसे शीघ्र ही मिलने आवेंगे। जब राजा सिंधासिह और उनकी रानी का कोई बस नही चला, तब वह अपनी बेटी से विदा होकर अपने तन्दुल नगर को रवाना हो गये।

श्री गोगा पुराण अड़तीसवां अध्याय समाप्त

उनतालीसवां अध्याय

बन्धुओं, कोई तो कहता है गोगाजी को हरिद्वारके के पास कजलीवन में तपस्या करते हमने देखा है, कोई कहता गोरख टीले पर विराजमान हैं। जितने मुंह उतनी बातें उड़ती रहती थीं। ददरेड़ा नगरी में एक रामा नाम का ग्वाला गायें चराया करता था। उस का कहना है कि सुरे नाम की जो गोगा जी की सब से प्यारी गाय है। वह कई दिन से रोजाना गऊओं के झुन्ड से गायब हो जाती है और शाम को झुन्ड में आनकर मिल जाती है। एक दिन ग्वाले लक्खी ने देखा कि वह गाय गोरख टीले की तरफ भागी चली जा रही है और रामा भी उसके पीछे भागा जा रहा है। उसने वहां क्या देखा जहां गोगा जी समाये थे, वह वहीं आकर रुक गई और धरती फटी और एक बालक प्रगट होकर गाय का थन अपने मुंह में लेकर दूध पीने लगा। रामा ग्वाला पेड़ की आड़ में छिपा ये सब लीला देखता रहा था। जब उसने तिरछा होकर गौर से देखा तो उसे गोगा जी ही बच्चे के रूप में दिखाई दिये। उसने ददरेड़ा नगरी में आन कर ये खबर रानी श्रीयल को भी सुनाई। तब

श्रीयल सुन्दर बोली भइया, मुझे भी दर्शन करा दे। फिर उसने बांदी मूंगादे और रानी श्रीयल को संग ले जाकर वट वृक्ष के पीछे छिपा दिया। थोड़ी देर पीछे सुरे गाय रम्भाती हुई भागी आई और पेड़ के पास आनकर रुक गई। तब धरती फटने पर गोगा जी ने अपना मुंह गाय के थनों से लगा दूध पी धरती में समा गये। रानी श्रीयल और बांदी मूंगादे जोर शोर से रो पड़ीं। उसके बाद रानी श्रीयल वहां नित्य जाल के पास आती परन्तु सुरे गाय ने वहां जाना ही बन्द कर दिया। तब भी श्रीयल सुन्दरी नित्य नियम से जाती रही। तब एक दिन क्या देखती है उसके पति जाल के पास वृक्ष के नीचे सो रहे हैं। जब रानी श्रीयल वृक्ष के पास पहुंची, तो उसका पैर जाल में उलझ गया और वह बेहोश हो पृथ्वी पर गिर पड़ी। तभी धरती फटी और दोनों पति पत्नी भूमि में समा गये। यह जगह अब तक श्रीयल जाल के नाम से प्रसिद्ध है और वहां कुल वधुएं, चोटी मेंहदी सिन्दूर रोली चावल आदि चढ़ाकर, मनौती मानती है और सौभाग्यवती होने के आशीर्वाद की वहां से धुनी निकलती है इनके धरती में समा जाने के पश्चात एक हेमू नामक बनिये ने जिसके

पास धन की तो कमी नहीं थी परन्तु वह सन्तान हीन था। उसे उसके एक मित्र ने बताया कि बागड़ प्रान्त में एक गऊ भक्त गोगा जो सिद्ध हुए हैं। जो भगत उनकी सेवा कर मनौती मानता है वह उसकी मनोकामना पूरी करते हैं। उसने गोगा सिद्ध के नाम की जोत बालकर मनौती मानी कि हे बागड़ वाले देवता जी अगर आपने मुझ दुखी प्राणी को एक पुत्र देने की कृपा की तो मैं आपके नाम से मेडी भवन बनवा दूंगा। उसी साल उसकी पत्नी गर्भवती होकर एक पुत्र की माता बन गई। परन्तु उस कन्जूस बनिये ने पक्की मेड़ी भवन न बनवाकर कच्ची मेड़ी बनवा कर अपने वचन को निभाया।

अब मैं दूसरे सपनेकी कथा लिखता हूं। जब मुझे कोई रास्ता कलम चलाने का नहीं दीखा तब मैंने गोगा वीर की फिर जोत बाल कर प्रार्थना की अब मैं आगे क्या लिखूं। मुझे तो ये भी पता नहीं आप किस जगह किस हालत में हैं और आपके कितने ब्याह हुए और कितने पोते नाती वगैरह हैं और उनके क्या क्या नाम हैं। आप मुझे एक बार फिर दर्शन देकर, गोगा पुराण पूरा करने की प्रेरणा दें। मेरी प्रार्थना पर प्रसन्न हो उन्होंने आज रात

मुझे स्वप्न में फिर दर्शन देने की कृपा करी और कहने लगे भक्तवर तुम वृथा ही घबराते हो, मेरा वीर कलम में बैठा तुम्हारी हर मदद कर रहा है। मैं इस समय- गोरख गुरू के पास ही रहकर उनकी चरण सेवा करता हूँ। मुझे अपनी माता और मौसी के मरने का काफी दुख है और शीघ्र ही रानी श्रीयल को भी गुरू आज्ञा मिलते ही अपने साथ ले आऊंगा। वह मेरे विरह में अति ही दुखी रहती है। तुम जो कुछ जानना चाहते हो उसे ध्यान लगा कर सुनो मेरे दो विवाह हुए और दोनों रानियों से इक्कीस सन्तानें जन्मी जिनमें २० लड़के और एक लड़की ने जन्म लिया जो इस समय सहारनपुर में मेरी छोटी रानी के साथ अपने नाना के घर है। तुम चिन्ता मत करो तुम्हारी लेखनी से लिखा झूठा नहीं होगा यह मेरा तुम्हें आशीर्वाद है।

बन्धुओ अब आप ध्यान लगा कर आगे का हाल पढ़ें। भक्त गोगा राणा जो गुरू आज्ञा मिलने पर, रानी श्रीयल को गुरू मन्त्रों के द्वारा पृथ्वी के भीतर अपने साथ गोरख टोले बड़े आराम के साथ ले गये और गोरख नाथ जी महाराज के चरण स्पर्श कर

कहने लगे, गुरुजी आपकी आज्ञानुसार श्रीयल को भी यहीं ले आया हूँ, कृपा कर इसे भी, गुरु मन्त्र देने की दया करें। गुरू गोरखनाथ बोले, बेटा गोगा–श्रीयल सती नारी है, उसका कर्तव्य तुम्हारी सेवा करना है। तुम जन्म से ही राजकुमार हो और श्रीयल राजकुमारी और मेरा आशीर्वाद तुम दोनों की सदैव रक्षा करेगा, तुम लोग जो भी कार्य करोगे वह दोनों के सहयोग से ही शुभ होगा। अब जाओ और श्रीयल को अपनी कुटी में ठहरा कर, भगवान का भजन करो। मैं गुरुदेव को अपना शीश नवा और रानी श्रीयल को संग में ले जाकर कुटिया के एक कोने में ठहरा दिया और मैं धूनी सुलगा कर तप करने लग गया। मैं नित्य ही अपने गुरू को मस्तक नवा चरण स्पर्श कर, उनकी आज्ञानुसार ही प्रभु भक्ति किया करता था। जब मुझे गुरुदेव की आज्ञानुसार, कर्तव्य पालन करते काफी समय हो गया, तब मैं एक दिन क्या देखता हूँ कि गुरुदेव काफी उदास हैं और धूनी के सम्मुख किसी गहरी चिन्ता के विचार में मगन हैं। जब मैंने अपने

गुरु को अति उदास देखा तब हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना के सुर में बोला, गुरुदेव आज मैं प्रथम बार, आपको उदास देख रहा हूँ। आपके हंस मुख चेहरे पर उदासी देख मैं अति हैरान हूँ। क्या आप कृपा करके अपनी उदासी का कारण मुझे बतायेंगे। इतना सुन गोरख गुरु बोले, बेटा गोगा इंसान सोचता कुछ है और होता कुछ है। मैंने सोचा था, मैं अपने शिष्य गोगा को अपनी गद्दी सौंप कर तप करने को निकल जाऊंगा और गोगा वीर भक्तों के कष्ट हमेशा हरता रहेगा। परन्तु भाग्य के लिखे को कौन मेट सकता है। हिमालय पर्वत पर शंकर भगवान की शरण में पहुँचना मेरे भाग्य में लिखा ही नहीं और न तुम्हारे कर्म में भी योग साधना लिखा है। जब तुम्हारे भाग्य में बेमाता ने राज्य करना लिख दिया है, तो विधि के लिखे को मेटने की शक्ति किसमें है। मैं इसे लीला धारी की लीला कहूँ या अपने कार्य कलापों का कर्म फल, पता नहीं इस भारत माता के भाग्य में क्या लिखा है। चारों तरफ त्राहि त्राहि मच रही है। पर इस भारत

के नृप मनु की नीतियों को भूल धन के मद में मतवाले हुए काम क्रोध के वसीभूत हो भारी अनिती कर रहे हैं और आपस में बैर विरोध रख एक दूसरे की बहू बेटियों का हरण करने में ईश्वर का भी भय नहीं मानते और अपने भाईयों के साथ ही युद्ध करने में ही रात दिन लगे रहते हैं। इन्हें अपने भाईयों के मिटाने और उनका राज्य हड़पने में ही अति आनन्द आता है। ब्रह्मचारी जीवन को यह राजा लोग एकदम से ही भूल बैठे हैं इन्होंने कामनी कंचन को ही स्वर्ग सुख समझ रखा है। अछूत गरीबों को यह रात दिन बरबाद करने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं और हमारे यह ब्राह्मण देवता कहलाने वाले जगत गुरु भी इन क्षत्रियों की हां में हां मिलाकर, अपना तुच्छ स्वारथ साधने के कारण, इन अछूत कहलाने वाले भाइयों को इनका घर बार छुड़वा कर इन गरीबों को देश निकाले का दण्ड दिलवा समुद्र पार भिजवा देते हैं। यही दशा इस देश वासियों की रही तो शीघ्र ही यह देश गुलाम हो जायेगा और यहां की धन सम्पदा सब ही नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगी। अपने गुरुदेव को अति अघोर देख,

गोगा राणा बोले-गुरुदेव मैं आपकी आज्ञा पर चलना अपना परम कर्तव्य समझता हूं। न मुझे महाराजा बनकर कुछ लेना है और न सन्यासी बनकर कुछ देना मुझे तो गुरु भक्ति में ही अपार आनन्द आता है। आपकी आज्ञा करने की देरी है मैं गुरु चरणों में अपना शीष काटकर चढ़ा सकता हूं। अपने शिष्य की वाणी सुनकर गोरख गुरु बोले-मेरे वीर बहादुर बेटा तुमसे मुझे ऐसी ही आशा थी। तुमने मुझे दिलासा देकर मेरी सब चिन्ता ही हरली। अब तुम अपने कर्तव्य पालन और गुरु आज्ञा को ध्यान देकर सुनो।

मेरे आशीर्वाद से तुम्हारी सभी मनोकामनायें पूर्ण होंगी। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी झूठी सच्ची बदनामी करके भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेंगे। एक दिन ये ही संसार तुम्हें अपना देवता समझकर पूजा करेगा। और तुम्हारे आशीर्वाद के सनमुख वह मेरे आशीर्वाद का भी भूखा नहीं रहेगा और यह मतलबी संसार तुम्हें मस्तक नवाकर तुम से अपनी मनोकामनायें पूर्ण करायेगा॥ इति।



श्रीगागापुराण चालीसवां भाग प्रारम्भ

हूणों का हमला

बेटा तुमने राजा बिक्रमादित्य और भर्थरी का नाम अवश्य ही सुना होगा जो मेरे परम भक्त एवम् प्रिय शिष्य हैं। सो राजा भर्थरी तो अपनी रानी पिंगला के कुकर्म से दुःखी होकर उज्जैन नगरी का राज अपने भाई विक्रमादित्य को सोंप कर स्वयं अमर फल सेवन करके अमर हो तपस्या करने में मगन हैं। अब अकेला राजा विक्रमादित्य ही इतने बड़े राज्य को सम्भाले हुए है। उसने जनता की सेवा और दीन दुखियों का दुख मिटाना ही अपनी जिन्दगी का उद्देश्य बना लिया है। ऐसा पर दुख हरण राजा आजकल इस देश में होना अति ही दुर्लभ है ऐसा धर्मात्मा नरेश बड़े भाग्य से ही भारत को मिला है। सो हे बेटा खूंखार हूणों ने सारे भारत को कुचल कर अब उज्जैन नगरी को घेर लिया है। यह दुष्ट हूण चीन देश की पश्छिमी सीमा से भारत में घुस आये और बड़े ही भारी लड़ाके हैं। इनके मुख पर बाल नहीं जमते इनके कन्धे चौड़े और नाक चपटी होती

है। यह लोग राक्षसों की भांति खूंखार बन लूटपाट करते हैं। आग लगाने और नर संहार करने में, इन्हें अपार आनन्द आता है। इन्होंने धोखे से काश्मीर पर कब्जा कर लिया है और इनका सरदार मिहिर कुल बड़ा भारी क्रूर है। वह हाथियों को पहाड़ की चोटियों से धकेल कर उनकी दर्द भरी चीखों से अपार आनन्द लेता है। वह मठ मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट करना अपना कर्तव्य समझता है। इन राक्षसों के हमले के कारण भारत वर्ष के अनमोल ऐतिहासिक संग्रहालय नेश्त नाबूद हो गये हैं। सो मेरे प्यारे बेटा अब तुम अपने वीर बहादुरों और चुने हुए साथियों को संग लेकर उज्जैन नगरी पहुंचकर राजा वीर विक्रमाजीत की मदद करो और इन खूंखार दरिन्दों को ऐसा सबक सिखाओ कि छटी का दूध याद आ जाये और फिर कभी भारतवर्ष की तरफ मुंह करके भी न सोयें। ठीक तो यह रहेगा कि इन्हें अधमरा करके हिन्दू जाति में ही अप्रविष्ट होने को मजबूर करके, इन्हें अपनी हिन्दू जाति में ही मिला लो।

गोरख गुरु की बात सुनकर गोगा वीर मुस्करा कर बोले गुरुदेव आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। मैं अति शीघ्र ही उज्जैन नगरी पहुँच कर राजा वीर-

विक्रमाजीत के दुश्मन हूणों को हराकर आपकी आज्ञा का पालन करूंगा परन्तु मेरा ख्याल यह है कि अपने को उच्च कहलाने वाले यह सफेद पोश बनिये ब्राह्मण और राजपूत राजे महाराजे इन दुष्टों को अपने में मिलाने को राजी नहीं होंगे । हमारे देश में बेहद खराबियों ने अड्डा जमा लिया है । इन बड़े कहलाने वाले ब्राह्मणों ने अपने भक्तों को उल्टा सुल्टा समझाकर इन अछूत कहलाने वाले कमजोर वर्ग को मिटाने का ठेका ही ले लिया है । यह उनके घरों को बरबाद कर उन्हें समुद्र पार निकलवाकर उनकी बहू-बेटियों को ले भागते हैं और जो भी कुकर्म यह कर सकते हैं वह उनके साथ जोर जबरदस्ती करने में जरा भी शर्म नहीं करते । अगर इनके स्वार्थ में रुकावट पड़ती है तो यह धूर्त झूठे सच्चे ऐब लगाकर इन बेगुनाहों को समुद्र पार धिकलवा देते हैं ।

यह सताये हुये भारतवासी रात दिन प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान हम बेगुनाहों पर जो जुल्म हुआ है उसका बदला आप कब दिलाओगे । एक द्रोपदी के चीर हरण के कारण आपने कौरवों के पूरे कुल का विनाश कर दिया । परन्तु हम अनाथ भी तो आपके ही हैं, हमारी पत्नी व बहनों के साथ

जो कुकर्म इन धनाढ्य भारत वासियों ने किये हैं क्या वह द्रोपदी के चीर हरण से कम हैं । प्रभु तुम भी क्या इन्हीं धूर्तों से मिल गये हो । वहां तुम्हारी धन धान्य से पूजा होती है । हम गरीब उनकी बराबरी नहीं कर सकते । शायद इसीलिये आप हमारी सहायता करने में आना-कानी कर रहे हो । आपने अपना नाम ही दीनबन्धु रख लिया है । हम आपको भूल तो सकते नहीं पर हमें देखना है तुम हमारा उद्धार कब तक नहीं करोगे । हमें अपने पाप कर्मों का तो पता नहीं परन्तु इस जन्म में हमने धनाढ्यों से बहुत ही कम पाप कर्म किये हैं । गुरुजी अगर ऐसी ही हालत हमारे देश वालों की रही तो हमारे भारत वर्ष को दुर्दिन भी देखने पड़ सकते हैं । अभी तो हूणों ने ही हमला किया है । आगे न मालूम ऐसे कितने हमले होंगे । औरों की तो बात ही क्या हमारा ही घर आपस के झगड़ों के कारण तीन तेराहा हो गया बड़ों ने क्या ठीक कहा—खेत में उपजे सब कोई खाय, घर में होऊ तो घर बह जाय । यह फूट की बीमारी है ही बहुत बुरी । न मालूम किसके श्राप से यह हमारे देश में घुसी है । जहां सुमत वहां सम्पत्ति नाना, जहां कुमत वहां भीख न पाना ।। होनी से ऋषि मुनियों

का भी बस नहीं चलता । आपकी आज्ञा पालन मेरा परमधर्म है मैं उज्जैन जाने की तैयारी करता हूँ आशा है आपके चरणों की कृपा से मैं अवश्य ही सफलता प्राप्त करूँगा ।

गोगा जी की वार्ता सुनकर गोरख गुरु बोले- बेटा गोगा घबराने से कोई कार्य हल नहीं होता। मेरे छिपे हुए हजारों वीर, जो दिखाई न देने पर भी दुश्मन को करारी मार देंगे और दुश्मन को पता भी न पड़ेगा कि किसने हमें मारा और किसने हमारा शीश धड़ से न्यारा किया । और किसने हमारे डेरों में आग लगाई और किसने हमें कसकर बांधा । मेरे सभी भूत पिशाच तुम्हारी सेवा में तत्पर रहेंगे ।

कलुवा बीर मरघट की मसानी बेताल वगैरा सब तुम्हारे आधीन रहेंगे । इनसे जब चाहे जैसी सहायता तुम ले सकते हो । तुम्हारे हजारों दुश्मन तुम लोगों का बाल भी बांका नहीं कर पायेगा । तुम देश के दुश्मनों को मारना कम और बांधकर घसीटना अधिक इनके यह दुश्मन तुम्हारे तांबे रहकर देश के दुश्मनों से सदा लड़ने में तुम्हें पूरा सहयोग देंगे । और

इनकी सन्तानें भारतवर्ष को अपना देश समझकर यहां के दुश्मनों को मार भगाने में तुम्हें पूरा सहयोग देंगी ।

बेटा अब तुम शीघ्र ही अपने संगी साथियों को संग लेकर, उज्जैन नगरी पहुंचकर राजा वीर विक्रमादित्य की घोर बंधाओ ।

अपने गुरुदेव की वार्ता सुनकर गोगा वीर ने गोरख गुरु के चरणों में अपना मस्तक नवा सकल वार्ता रानी श्रीयल को अपनी कुटिया पर पहुंचकर विस्तार पूर्वक सुनाई । जिसे सुनकर सती श्रीयल प्रसन्न हो बोली—मैं भी अपना मरदाना भेष धारण कर और घोड़े पर सवार होकर पांचों हथियार बांध आपके संग उज्जैन चलूंगी । इसी बहाने मुझे उज्जैन नगर देखने का सौभाग्य प्राप्त हो जायेगा और मैं भी देश के दुश्मनों को मार-मारकर यम सदन पठाने में आपको पूर्ण सहयोग दूंगी ।

इधर रानी श्रीयल उज्जन देखने की खुशी में मन ही मन प्रसन्न हो रही थी । उधर गोगा वीर ने अपने मुख्य वीरों को ददरेड़ा नगर भेजकर नरसिंह पांडे, रतना भंगी, भज्जू कोतवाल, ताखी नाग तथा भूरिया नाग वगैरा सभी वीरों को गोरख टीले बुलवा

लिया । अब गोगा जी ने देखा सब बन्धु बांधव आ गये तब उन्होंने उनसे गले मिलकर सारी योजना समझाई और रानी श्रीयल को मरदानी पोशाक पहना कर पूर्ण रूप से राजकुमार बना दिया श्रीयल को राजकुमार के बाने में देखकर सभी मित्र मुस्करा उठे और रानी का नाम सबकी सलाह से श्रीयल देव रख दिया । अब सातों जुझारू जोधा अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो गोरख गुरु के चरणों में मस्तक नवाकर गुरु गोरखनाथ की जै बोलते हुए उज्जैन नगरी को चल पड़े । उनके आगे पीछे भूत, बेताल, यक्ष, किन्नर, देवी देवताओं और दानवों की अपूर्व सेना भी चल पड़ी जो दुनिया वालों को तो देख सकते थे पर उन्हें कोई इन्सान नहीं देख सकता था । यह सभी बांके वीर कई रोज की मन्जिल रात दिन तय करके मालवा प्रांत की राजधानी उज्जैन जा पहुंचे गुरु गोरख के मायावी वीरों की सेना तो नगर की शैर करने के लिये बस्ती के गली कूचों में फैल गई और ये सातों जुझारू योद्धा मय श्रीयल देव सहित राजा विक्रमादित्य की सभा में पहुंच राजा को प्रणाम कर अपना पूर्ण परिचय दिया । गोगा वीर बोले—राजन् हमें गोरख गुरु ने जो आपके भी गुरुदेव हैं आपकी सेवा करने के वासते भेजा है ।

उन्होंने आज्ञा दी है कि तुम लोग उज्जैन नगर जाकर देश के दुश्मन हूणों को मार कर भगादो हम सब युद्ध करने के कारण ही यहां आये हैं । मेरा नाम गोगा चौहान है यह सब जुझारू जोधा मेरे गुरु भाई हैं । गोगा राणा की वार्ता सुनकर राजा विक्रमा दित्य मुस्कराते हुए अपने सिंहासन से उतर कर, गोगा राणा को अपने कण्ठ से लगाकर बोले—मैं भली प्रकार समझ गया आप ही ने तो गुरुदेव के भण्डारे में हर सन्त को चार चार लाल दक्षिणा में दिये थे और देश के सभी अभिमानियों का मस्तक नीचा किया था । इतना कह गोगा राणा को अपने बत्तीस पुतलियों वाले अपूर्व सिंहासन पर अपने पास ही बैठा लिया फिर जुझारू वीरों के वास्ते रतन जड़ाऊ सुन्दर कुर्सियां बिछवा कर उनको भी अपने पास ही बैठा लिया और भांति भांति के मेवा मिष्ठान द्वारा खातिर करने के पश्चात् बोले-गोरख गुरु बड़े ही परोपकारी सन्त हैं । तभी तो अधीर होकर मेरे सात भाइयों को यहां भेजा है । अब मेरे बाजू बहुत ही मजबूत हो गये हैं । अब तो मैं यमराज से भी भयभीत नहीं होने का विक्रमादित्य को, अति प्रसन्न देख गोगा राणा बोले हे राजन् गुरुदेव ने अपनी योगमाया भी हमारे साथ

भेजी है हम लोग देश के दुश्मनों के छक्के छुड़ा देंगे। चाहे उनकी सेना कितनी भी अधिक क्यों न हो। गोगा राणा की वार्ता सुन वीर विक्रमाजीत महाराज ने अपने अपूर्व सिंहासन की बत्तीसों पुतलियों का नाच दिखाकर अपने महमानों का मनोरंजन किया इसके पश्चात् सबने मिलकर युद्ध की योजना पर विचार विमर्श किया। फिर शाम को भाँति-भाँति के मधुर पकवान जीमकर, नीमजरी के कामदार मखमली गद्दे तकियों पर सबने सुखसे विश्राम किया और अगले दिन धोंसा बजाकर, मैदान जंग में पहुंच दुश्मनों को धर दबाया। जिन्होंने उज्जैन नगरी को घेरकर जनता को भयभीत कर रखा था और जिन्होंने भारतवर्ष का बहुत सा प्रान्त जीतकर काफी धन भी इकट्ठा कर रखा था। यह अपने को मिहिर कुलके राजा तोरमान का बेटा बताता था। और अपने को महाराज धिराज अपने सब सेवकों से कहलवाता था। उनकी स्त्रियों की पोशाक विचित्र प्रकार के कपड़े की थी और वह सब परं घड़ंत देवी देवताओं की पूजा करती थीं। भोजन के वास्ते कमजोर पशु-पक्षियों का वध कर उन्हें कच्चा ही सब खा लिया करते थे। जब गोगा जी के छहों मित्र अपने-अपने घोड़ों पर चढ़ राजा



बोर विक्रमा वित्य के घुड़ सवारों के संग गुरु गोरख नाथ की योगमाया सहित रण भेरी बजाते हुए, दुश्मन के सन्मुख जा पहुंचे तो राक्षस मिहिरकुल अपने मुँह में रूमाल देकर खिलखिलाकर मुस्कराता हुआ बोला कि मौत के निवाले खुद व खुद ही मौत के मुंह में आन पहुंचे फिर उसने अपना हाथ ऊंचा कर कहा, मेरे वीर जवानो नर मरदानो इन दुश्मनों की बोटी-बोटी काटकर चील कौवों को खिला दो ।

तभी दुश्मन की सेना, कालदेव के समान गम्भीर गर्जन करती हुई जोर शोर से गरज उठी ।

तब नरसिंह पंडित बोले–गोगा भैया दुश्मन की फौज जबरदस्त है गोगा राणा बोले भैया गोरख गुरु के शिष्य भेड़ बकरियों के झुंड का भय नहीं करते । हम मरु भूमि के निवासी इन्हें अभी मक्खी मच्छरों की तरह मसल कर ठिकाने लगा देंगे । जब गुरु देव हम पर दयालु हैं, तो हम दुश्मन का भय क्यों करें । इधर तो यह वार्तालाप चल रहा था । उधर दुश्मन ने हमला कर दिया और चन्द वीरों पर असंख्य सेना चढ़ आई । तब गोगा जी ने इशारा किया कि पीछे को हटते हुए दुश्मन को नदी नर्वदा

के पुल की तरफ लड़ते हुए ले चलो। तभी सातों जुझारू वीरों ने दुश्मन के शीश काट-काट कर पीछे को हटना जारी रक्खा। इनके पीछे को हटने से दुश्मन ने समझा, यह भयभीत होकर अपनी जान बचाने के लिए ही, पीछे को हट रहे हैं।

तभी इन महावीरों ने पीछे हटकर मार धाड़ शुरू कर कितने ही दुश्मन को यमपुर पठा दिया अधिक सेना की रेल पेल के कारण छोटे रास्ते पर दुश्मनों को युद्ध की हारजीत का कोई अन्दाजा नहीं लग सका। जब विक्रमादित्य की सेना पुल पार कर बस्ती में पहुंच गई। तभी गोगाराणा ने भज्जू चमार (कोतवाल) और रतना भंगी से कहा, तुम सुरंग के रास्ते पुल पार कर अपनी पहले वाली जगह पर पहुँच जाओ और जब दुश्मन पुल पार करले तब बैताल वीर से कहकर पुल में आग लगवा देना और नरसिंह पांडे से बोले– तुम लोग उज्जैन की सेना लेकर पुल के पास मैदान में पहुँचो, वहीं आपको गुरुजी के मायावी वीर मिलेंगे। तुम लोग यहां से भागे बैरियों को अपने हथियारों से डराकर उन्हें बांध-बांधकर एक के ऊपर एक को पटकते जाना और जो दुश्मन तुम पर हावी

होगा, उसे गुरुदेव के मायावी वीर ऐसी छिपी मार देंगे कि वह हाहाकार कर वहीं बेहोश हो गिर पड़ेगा। चार जवान चौकसी पर रहना, बाकी के दुश्मनों को कैद करना यहां मैं और श्रीयल देव और राजा के सेनानी दुश्मनों को मार मार कर अधमरा करके, कुछ को तो नदी नर्बदा में बहा देंगे और बाकियों को बांध-बांधकर कैद कर लेंगे।

गोगा राणा की योजना सुनकर, सभी साथी अति प्रसन्न हुए। वह अपने ऊंचे-ऊंचे घोड़ों पर चढ़ कर सुरंग से बाहर मार-धाड़ करते हुए ठीक स्थान पर जा पहुँचे।

उधर दुश्मन मारो मारो लूटो पकड़ो आग लगा दो, बद हवासों की तरह दौड़ते आन पहुँचे। जब उनकी बहुत-सी सेना पुल में घुस गई, तब जाहरवीर और श्रीयल देव के बरछे से भयभीत होकर हथियार फेंक-फेंककर गिरफ्तार होने लगे। और जो खुद को वीरों का सरदार समझ आगे हो हथियार चलाता था उसका सिर उसी दम धड़ से जुदा कर दिया जाता था। राजकुमार श्रीयलदेव के आगे लाशों का ढेर लग गया। तभी मौका समझ रतना भंगी ने सब जवानों के शीश पर, तलवार घुमा घुमाकर उन्हें पुल में धंसने

को मजबूर कर दिया । इधर बैताल ने जब देखा काफी हूण जवान पुल में पहुँच गये हैं । तभी अपने पराक्रम द्वारा पुल में आग लगा दी पुल को जलता देख और अपने जवानों को भुनता देख, राजा मिहिर कुल को भली प्रकार ज्ञात हो गया कि अब हमारी हार निश्चित है । हमारी सेना और सरदार पुल में आग लग जाने के कारण बुरी तरह घिर गये हैं । इनमें से कोई भी जिन्दा बचता नजर नहीं आता। उसने वहां से भागने का भी विचार किया । तभी गोगा राणा गोरखनाथ के मायावी वीरों को संग लेकर, अपने सभी साथियों सहित ऊंचे ऊंचे घोड़ों पर सवार होकर आन पहुँचे और सबके देखते ही देखते हमारे नायक गोगा वीर ने भाले की नोंक से हूणों के राजा मिहिरकुल की पगड़ी उतार ली । अपने राजा की पगड़ी उतरते देख उसके सभी वीर जवान और स्त्रियां हथियार ले लेकर गोगा जी की तरफ लपके और अपने शीश हथेली पर धर कर किसी बाधा की परवा न करते हुए अपना पराक्रम दिखलाने लगे ।

तभी गोगा वीर नरसिंह पांडे, भज्जू कोतवाल रतना भंगी ने भी अपना-अपना पराक्रम दिखाना शुरू कर दिया । उन्होंने अपने दोनों हाथों से तलवार

चला-चलाकर उनकी स्त्रियों की बुरी गत बना डाली । उन पर गोगा वीर और राजा विक्रमादित्य के वीर जवानों की कैड़ी मार पड़ रही थी और भीतरी मार गोरख गुरु के मायावी वीरों की । जिससे घबरा कर राजा मिहिरकुल ने अपनी हार स्वीकार कर हथियार डाल दिये । और अपने को गिरफ्तार करवा लिया ।

इधर राजकुमार श्रीयल देव ने मायावी वीरों की गुप्त मार करवा कर उनकी स्त्रियों के हाथ पैर बंधवा दिये और सारे खजाने पर अधिकार कर लिया । हूण स्त्रियां गुप्त मार खाने के कारण बेहोश हो गिर पड़ीं, उज्जैन नगर में दुश्मनों को बांधते-बांधते लोहे की जंजीर और रस्सियां जब समाप्त हो गई तो गोगा राणा ने मायावी वीरों को भेज दूसरे प्रान्तों से बहुत सी रस्सियां मंगवाई तब कहीं सारे दुश्मन बंध पाये । फिर मायावी वीरों के सिर पर लूट का खजाना धरवा कर और हूणों के राजा मिहिर कुल को जंजीरों में बांध गोगा राणा वीर विक्रमादित्य की सभा में जा पहुँचे ।

जब राजा विक्रमादित्य ने अतोल खजाने को देखा जो दुश्मन ने भारत देश से लूटा था, तो वह आग बबूला हो बोले, हूणों के इस जालिम सरदार को

अभी सूली दिलवादो। ऐसे हत्यारे को यमपुर पठाना ही उचित है। इसके पश्चात सभी रणधीरों को सुनहरी कुर्सियों पर बिठलाकर, गोगा राणा को अपने सिंहासन पर अपने पास ही विराजमान किया। फिर मुस्करकर बोले–कहो राणा जी दुश्मन की कितनी पल्टन मारी गई और कितनी आपने गिरफ्तार की है।

गोगाराणा बोले-महाराजा जी हमारे तो मुश्किल से सौ सवा सौ ही डरपोक जवान मारे गये हैं और दुश्मन के दस बारह हजार जवान मारे जाने का अन्दाजा है परन्तु गिरफ्तार बारह लाख से भी अधिक हुए हैं। गोगा राणा की वार्ता सुनकर राजा विक्रमादित्य को बड़ा ही हर्ष हुआ। अति खुशी के कारण उन्होंने गोगा राणा को अपने सीने से चिपटा कर कहा- राणा साहब आपने इतना बड़ा कार्य इतने कम अर्से में कर दिखाया, जो महीनों में भी होना मुश्किल था। अब जिन दुश्मनों को आपने गिरफ्तार किया है इन्हें सूली पर लटका कर हमेशा का ही झंझट समाप्त कर देना चाहिये। इस पर परोपकारी गोगा राणा बोले–महाराजा साहब मेरी राय में लाखों आदमियों की हत्या कर डालना उचित नहीं है। इन्हें अपनी जाति में मिलाकर और इनका राक्षसपना

छुड़वाकर अपने हिन्दू धर्म में दीक्षित कर लेना उचित है जिससे इनकी सन्तानें देश के दुश्मनों को मारमार कर भगाने में हमारे देश वासियों को सदा सहायता देती रहे इस धर्म परायण देश में रहकर कुछ दिनों पश्चात यह सब भी धर्मात्मा बन जायेंगे।

इस पर राजा वीर विक्रमादित्य बोले–आखिर हो तो गोरख गुरू के ही शिष्य फिर दूर की सोचने में अचम्भे की कौन बात है। परन्तु राणा जी हमारे हिंदू धर्म के नायक, यह बनिये ब्राह्मण क्षत्री वगैरह घमंडी लोग आपके धर्म कार्य में तरह तरह के रोड़े अटकायेंगे सहयोग पाने की आशा तो इनसे मन में भी मत सोचो। और यह लोग इस शुभ कार्य करने पर आपको अधर्मी नीच, पापी कहकर बदनाम करने की पूरी कोशिश करेंगे और आपके सारे किये धरे पर पानी फेर देंगे।

इस पर गोगा राणा बोले–महाराजा साहब, अगर बिच्छू अपना काटने का स्वभाव नहीं छोड़ सकता, तो हम अपने रक्षा करने वाले स्वभाव को कैसे छोड़ सकते हैं। मैं तो अपने प्राणों की बाजी लगा कर भी अपने धर्म की रक्षा करूंगा। यह यहीं रहेंगे मुझे इनकी लूटने खसोटने की आदत छुड़वानी है॥ इति॥

श्रीगोगा पुराण ४१ वां भाग प्रारम्भ

गोगा राणा तो अपना कार्य पूरा करने लगे ही परन्तु अब हमें गुरुगोरखनाथ महाराज गोरख टीले पर बैठे क्या विचार विमर्श कर रहे हैं।

गुरु गोरखनाथ का अपने शिष्य पद्मनाथ को ब्रह्मचर्यजीवन का महत्व समझाना

बेटा पद्मनाथ जब से गोगा राणा उज्जैन नगरी गया है मेरा मन भजन करने में कतई नहीं लगता है। अब मुझे भारत देश पर निगाह दौड़ाने से ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं इस देश को दुरदिन तो नहीं देखने पड़ेंगे। क्योंकि हमने अपने कर्तव्यों को एकदम भुला दिया है। कभी इस देश में ब्रह्मचर्य जीवन का बड़ा ही महत्व था आगे ऐसा खोटा समय आने वाला है कि सभी मनुष्य काम कामनी और कन्चन के गुलाम बन जायेंगे। वैसे काम वासना इस देश में अब भी कम नहीं है। राजाशाल्य बाहन जैसे होशियार राजा ने भी अपनी छोटी रानी नूनादे के प्रेम

जाल में फंसे रहने के कारण ही बड़ा भारी धोखा खाया है और अपने बेटे पूरन जति को बुरी तरह कत्ल करवाकर अन्धे कुवें में फिकवा दिया, जिसे तुम सबों ने जीवन दान दे अपना गुरु भाई माना है। इसी तरह राजा भर्थरी की रानी पिंगला ने एक सईस के मोह जाल में फंस कर अपना धर्म गमाया और त्रिया चरित्र रचकर अपने देवर विक्रमा दित्य को राज्य की सीमा से बाहर निकलवाकर ही दम लिया। वह तो प्रभु कृपा से अमर फल के जरिये सारा रहस्य खुल गया। तभी राजा भर्थरी ने राज पाट तज रानी को धिक्कार दे नाथ पन्थ में आन कर शरण ली और अपने जीवन को संवारा। बेटा बड़ों की निन्दा नहीं करनी चाहिये पर बात तो कहनी ही पड़ती है। हमारे परम ज्ञानी गुरू मछेन्द्रनाथ जी महाराज ने हनुमान जी के कहने से अपने ब्रह्मचर्य को तज रानी मैनाकिनी के रूप जाल में जा फंसे और मैंने किन-२ मुशिकलों का सामना कर उन्हें उस त्रिया राज्य के नर्क कुण्ड से बाहर निकाला यह सब तुम पीछे पेजों में पढ़ ही चुके हो। कहने का मतलब है कि गुरुदेव काम कामनी के फन्दे में फंस नर्क कुण्ड के अधिकारी बने और अपनी योग साधना से वंचित रहकर, मुझसे भी पीछे रह

गये । तभी वह नागनाथ ब्रह्मचारी से हार मान गये जब नागनाथ को पता पड़ा ये मेरे गुरु दत्तात्रेय तथा मेरा नाम बताने पर ही नागनाथ ब्रह्मचारी के चुंगल से अपने को बचा पाये । इसके पश्चात् भी, राजा शशांक के मृतक शरीर में प्रवेश कर, शशांक नृप की सती रानी का धर्म जा बिगाड़ा ।

जब इस छल का पता रानी को चला तो उसने क्रोधित हो गुरु मछेन्द्र नाथ के शरीर के टुकड़े-टुकड़े करवा कर जंगल में फिकवा दिये और मैंने अपने ब्रह्मचर्य बल के प्रताप से ही शिव लोक में पहुंच भैरव वगैरह से युद्ध जीत अपने गुरु के शरीर को यक्षमाया के द्वारा सजीव करके सारे संसार में कीर्ति पाई और प्रसिद्ध देवताओं द्वारा बहुत-सी सिद्धियां भी प्राप्त कीं। उन्हीं सिद्धियों के प्रताप से मैंने हनुमान जैसे बलशाली को त्रिया राज्य में आने से रोक दिया था । मेरा नाथ पन्थ में इतना अधिक सम्मान है, वह सब ब्रह्मचर्य जीवन के ही कारण है । जगत की बहुत-सी जनता मुझे शिव का अवतार ही समझती है । भला कहां भगवान् शिव और कहां मैं तुच्छ जीव जो गोबर में दबा पड़ा था उस समय मेरे इन्हीं योगी गुरु ने

मेरा उद्धार किया था । उस समय गुरु मछेन्द्रनाथ जी महाराज भी पूर्णतया ब्रह्मचारी जीवन बिताया करते थे ।

बेटा पवननाथ ! जब से हमारे भारतवर्ष की जनता ने ब्रह्मचर्य जीवन की तरफ से अपना मुंह मोड़ा है तभी से अपनी बुद्धि गंवाकर काम कामनी और कन्चन को ही अपना भाग्य विधाता समझ लिया है । और अपना धर्म कर्म शर्मो लिहाज सभी कुछ गंवा दिया है । बेटा यहाँ के लोगों ने जब से ब्रह्मचर्य जीवन को त्यागा है । तभी से अपनी नैतिक आर्थिक समाजिक सभी समस्याओं में रुकावट का कारण वह काम विकार ही है । हम जब ईश्वर की स्तुति करते हैं । तब तो उसे पतित पावन करकर पुकारते हैं । परन्तु ब्रह्मचर्य जीवन धारण कर पावन बनने को हम कतई तैयार नहीं हैं । हम तुम सभी काम क्रोध और लोभ को नर्क का द्वार कहते हैं । परन्तु नर्क द्वार से अपने को बचाकर, ब्रह्मचर्य जीवन धारण कर स्वर्ग द्वार खुलवाने का कोई भाग्यशाली ही आजकल हिम्मत करता है । इसका मुख्य कारण ब्रह्मचर्य का त्याग और काम कामनी कन्चन का विकार ही है ।। इति ।।

श्रीगोगा पुराण ४२वां भाग प्रारम्भ

बेटा द्वापर युग से अब तक तो ब्रह्मचर्य जीवन को ही साधना का अंग समझा जाता रहा है। और नियमों द्वारा आत्म-शुद्धि ही की जाती रही है। साधु सन्त इसे मुक्ती का लक्ष मानकर, बाल बच्चों को तज वन में जा ब्रह्मचारी जीवन की मर्यादा से बाहर निकल काम कामनो को पाप समझ सीमित अवस्था में ही इसका पालन करते चले आये हैं और जिन्होंने ब्रह्मचर्य जीवन को तज दिया है उनकी शक्तियों का अति शीघ्र ह्रास होने लगता है। मुख पीला पड़ जाता है और चेहरा मुर्झा जाता है बेटा मैं तुम्हें यह समझाना चाहता हूं, कि ब्रह्मचारी अपने शारीरिक रोगों से एकदम मुक्त रहता है, ब्रह्मचारी मनुष्य के शरीर की शक्ति और कार्य करने की इच्छा बराबर बढ़ती रहती है और उसमें आशा प्रसन्नता धैर्य आदि सभी सद्‌गुणों की उन्नति दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ जाती है।

आज हम ब्रह्मचर्य को भूलने के कारण ही अपना तेज खोकर शरीर को अनेकों रोगों का घर

बना लिया है। ईश्वर दर्शनों के बजाये हकीम वैद्यों के दर्शनों की इच्छा हमें बनी रहती है। इसलिये आप यह समझो कि सिर्फ ब्रह्मचर्य जीवन ही बुद्धि को प्रकाश देता है। इसी से बुद्धि सात्विक होती है। और मनुष्य की निर्णय शक्ति को बल मिलता है। विवेक शक्ति जाग्रत होती है। इसी के कारण मनुष्य बुराइयों के भंवर से बचा रहता है। और इसी से सद्‌भावना आती है जो सत्य असत्य का ज्ञान कराती है। और इसी के फल स्वरूप मनुष्य महान बन जाता है। ब्रह्मचर्य नैतिकता को नींव है। बृत्ति शुद्ध हो जाने पर इन्द्रियों के बड़े से बड़े प्रलोभनों से भी नैतिकता उसे बचा ले जाती है। मनुष्य सत्य का पालन करने में निर्भय हो जाता है और वह अपार शक्तिका स्वामी बन जाता है। ब्रह्मचर्य के बिना परमात्मा से प्रेम कदापि नहीं हो सकता। क्योंकि कामी मनुष्य की प्रीति देह से होती है, और मन सदा चंचल बना रहता है, और पतनकारी प्रवृतियां उसे बुरी तरह घेरे रहती हैं। अगर मनुष्य को ब्रह्मचर्य के गुणों का पूरा ज्ञान हो जाय तो वह उसका पालन अवश्य करे।

मनुष्य वासना द्वारा भोग करके अपनी शक्ति क्षय करके, रात दिन कमजोरी की ओर बढ़ता जाता

है। फिर शक्ति वर्द्धक पदार्थों का अधिक से अधिक मात्रा में सेवन करता है। या वैद्य हकीमों की शरण लेता है इस तरह उसका खर्चा बहुत बढ़ जाता है और अधिक भोग विलास के कारण अधिक सन्तानोत्पत्ति की वजह से भी उसे अधिक धन जुटाना पड़ता है। चाहे वह गलत तरीकों रिश्वतखोरी या चोरी चकोरी से ही उसे क्यों न जुटाना पड़े मनुष्य कामवासना की तरफ बढ़कर अपने मन को शान्ती देना चाहता है। इस प्रकार उसका जीवन कीचड़ में फसा रहता है। परन्तु ब्रह्मचर्य पालन करने वाला व्यक्ति इन मुसीबतों से बचा रहकर सदा सन्तुष्ट रहता है।

मैं तुम्हें विशेष तरीके से ब्रह्मचर्य का ज्ञान कराना चाहता हूँ, जिससे तुम्हारे द्वारा सामाजिक सुधार हो इससे हर व्यक्तिके धर्मका आर्थिक नैतिक और सांस्कृतिक ढांचा तो सुधरेगा ही इसके अलावा हमारे देशका वातावरण दूषित होने के कारण जल वायु जो सभीकुछ बिगड़ गया है। अब हर मनुष्य का परम कर्तव्य है कि खुद ब्रह्मचारी रहकर समाजिक बुराइयों को दूर करे और हर व्यक्तिको ब्रह्मचारी जीवनका लाभ भली भांति समझावे। योग के द्वारा तो ब्रह्मचर्य की चरचा यमो के अंतर्गत ही की गई है और मर्यादा के माध्यम

से भी योगी हो ही नहीं सकता है। योगी को तो चित्त की दूषित वृत्तियों का निरोध ही करना होता है और वह भली प्रकार जानता है कि काम एक पतनकारी वृत्ति है और वैराग दृष्टिसे देखो तो शंकराचार्य रचित विवेक चूड़मणीमें योगवष्टिमें एव भर्थरीके वैरागशतक में भी भोग विलास की कड़ी निंदा की गई है। गीतामें भी काम को नरक का द्वार कहा गया है। इसी काम द्वारा क्रोध की उत्पत्ति और बुद्धि का भ्रष्ट होना फिर उससे सर्वनाश और पूर्णतः विनाशकारी कहा है। फिर महाभारत में भी धर्म के दस लक्षण लिखे हैं, उसमें भी इन्द्री निग्रह यानी ब्रह्मचर्य पालन अनिवार्य बताया गया है और हम सभी सन्तों का भी मत है कि कामी नारी नर न भक्ति ही कर सकता है और न मन लगा कर प्रभु का भजन ही।

दोहा—कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे है शूरमा, जाति वर्ण सब खोय॥

भक्ति भगवान से प्रीति करने को कहते हैं। परन्तु कामी की प्रीति इन्द्री विषयक पदार्थों के इकट्ठे करने की ओर ही लगी रहती है या पर नारी के मुख की ओर लगी रहती है और आशाएँ पूर्ण न होने

पर भयंकर क्रोध में भर जाता है। क्योंकि वह काम काम और दाम का भूखा होता है। ऐसे मनुष्य के मन में प्रभु स्मृति कैसे टिक सकती है।

दोहा—जहां काम वहां राम नहीं, जहां राम नहीं काम।
दोनों कभी न मिल सके, रवि रजनी एक ठाम॥

सन्त लोग तो स्वयं को पत्नी और परमात्मा को अपना पति मानते हैं। तभी तो उनके सम्मुख हर समय प्रभु खड़े दिखाई देते हैं।

दोहा—नैनन प्रीतम रल रहा, दूजा कहां समाय।
आठ पहर चौंसठ घड़ी, मुझे और न भाय॥

किसी ने क्या ठीक कहा है कि घर की नारी को क्यों पाप करके रोता है जल्दी ही तेरे तन की नारी (नब्ज) भी नहीं रहेगी और तेरा यह तन भी जला दिया जायेगा। मूर्ख मनुष्य तब तुझे काम चिता पर जलने की क्या जरूरत है। प्यारे बेटा पद्मनाथ कामी तो मोरी के कीट के समान नर्क कुण्ड में गोते खाता है। अब यह विचारना है कि हमारी नैया का खिवैया काम है या राम इसी काम विकार के कारण ही सूर्पनखा की नाक कटी और रावण के दस शीश भी काम विकार के कारण ही कटे और सोने की लंका जल कर राख हो गई।

दोहा—एक लख पूत, सवा लख नाती।
उस रावण घर दिया न बाती॥

बेटा कितनी अनसमझी का विषय है कि लोग हर साल कामी रावण का बुत बनाकर जलाते हैं और रावण के शीश पर गधे का शीश भी दिखाते हैं पर अपने भीतर झांककर नहीं देखते कि राम तो हम कामियों को मिलता ही नहीं है। हम तो रावण जैसे भी नहीं हैं। रावण कामी होते हुए भी बहुत सी मर्यादाओं का पालन करता था। बेटा पवन नाथ यह पशुओं पक्षियों से भी गया गुजरा जीव अपने को मनुष्य कहलवाता है। जबकि मनुष्यता को इसने सदियों से ही भुला दिया है कहने को मनुष्य अपने को राम-कृष्ण का वन्शज कहता है और कार्य-कलाप द्वारा रावण कन्स से भी यह गया-बीता है। बेटा तुम धर्म से कहना यह भारतवासी राम-भक्त कहाते हैं और केवल राम-राम रटकर ही स्वर्गलोक या मुक्ति का सपना देखते हैं। देखो राम अपने माता-पिता के कहने से चौदह वर्ष वन को गये तेरह वर्ष ऋषि-मुनियों के साथ पंचवटी में सीता के साथ रह कर बिताये, केवल एक वर्ष सीताजी रावण के घर रहीं। राम-लक्ष्मण दोनों ने ही ब्रह्मचर्य व्रत का पालन

किया था, और ब्रह्मचर्य के बल-प्रताप और बुद्धिबल द्वारा ही रावण के वंश को मिटाकर ही उसका सर्वनाश किया था। यही अंजाम तो काम-वासना के प्रेमियों का सदा होता आया है इसके अलावा एक वर्ष सीताजी लंका की अशोक वाटिका में रहीं परन्तु कामी रावण ने उनके साथ न कोई जोर जबरदस्ती की और ना ही हाथापाई। अब तुम ही बताओ अगर आजकल के मनुष्यों के साथ उनकी सुन्दर पत्नी तेरह साल के वास्ते परदेश में जाकर वास करे तो दस बारह बच्चे तो इतने समय के पश्चात उसके साथ अवश्य ही घर लौटेंगे परन्तु ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने वाले सीताराम के साथ कोई भी बच्चा पुष्पक बिमान में बैठ कर अयोध्या नहीं आया था इसे सारा संसार जानता है। इसीलिये राम यश्वी और पूजनीय हैं और यह राम-भक्त कहने वाले सोता-राम रट-रटकर ही स्वर्ग का सुख लूटने को तैयार बैठे हैं। उनके गुणों पर चलने को कोई कतई भी तैयार नहीं है। राम के गुणों पर इन कामी कुकर्मियों को चलना क्या आवेगा रावण के कदमों पर चलने से भी इनकी नानी मर जाती है। अगर आज रावण जैसे कामी कुकर्मियों के कब्जे में कोई दुःखी सुन्दरी नारी फंस जावे तो वह

उसके साथ क्या कुकर्म नहीं करेगा। हजारों में एक दो ही मनुष्य ऐसे निकलेंगे जो उसे धर्म बहन कहकर शरण देंगे इसीलिये तो मैं कहता हूँ कि आजकल के लोग रावण कंस से भी गये गुजरे ही नहीं गधे-खच्चरों से भी गये गुजरे हैं। इसका खास कारण भी यही है कि लोग ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने में अजर-अमर न होकर कीड़े मकोड़ों की तरह ही काम-वासना द्वारा मर-मर कर नर्ककुण्ड को भर रहे हैं। स्वर्ग-लोक तो समझो खाली ही पड़ा है।

दोहा—काम क्रोध मद-लोभ तज, गरब गरूरी मार।
बिमल प्रेम मन बारिके, रख दृष्टि उजियार॥

बेटा यह संसारी विषय-वासना वाला अधम प्राणी कनक और कामनी के फन्दे में फंसकर अपने जन्म को गंवा रहा है। वह यह भूल गया है कि आत्मा रूपी हँस को तो अकेला ही उड़ जाना है। इन दुःखों से बचाने वाला सिर्फ ब्रह्मचर्य जीवन ही है।

इंद्रियों के बस मन रहे, मन के बस रहे बुद्धि।
वहाँ ध्यान कैसे लगे, जहाँ सेवा होय विरुद्ध॥

बेटा जब तक मनका दर्पण उज्ज्वल नहीं होता, तब तक मनुष्य प्रभु-भक्ति का आनन्द लूट ही नहीं सकता है। अब प्रश्न यह है कि मन उज्ज्वल किस

प्रका. हो तो इसका सही उत्तर यह कि अपने तन मन को प्रभु के कार्यों में लगाओ और परम-पिता परमात्मा की पतिव्रता नारी बनकर, दुखियों के दुःख दूर करने के उपायों में जुट जाओ । यह कार्य ब्रह्मचर्य द्वारा करने से ही सुचारु रूप से किया जा सकता है।

दो०-उजला आया वतन से,
जब जतन किया केही काल।
भूला चाल कुचाल चल,
फंस गया जम के जाल।।

जगत् गुरु स्वामी शंकराचार्य जी महाराज की जीवनी से यह बात लोकप्रिय है कि ब्रह्मचर्य व्रत के धारण करने में, उनकी कामना कितनी प्रबल थी। बेटा स्वामी जी ने विवाह के विकार से बचने के वास्ते अपनी माता से किस चतुराई से, अपनी इच्छा पूर्ति कराई थी । स्वामी शंकराचार्य अपनी माता के इकलौते लाड़ले पुत्र थे । अभी उनकी उम्र तीन ही वर्ष की थी कि उनके प्यारे पिता स्वर्ग सिधार गये। जब वह आठ वर्ष के हुए तभी उनकी माता ने उनका विवाह कर पुत्रवधु लाने का संकल्प कर लिया । परंतु स्वामी जी ब्याह के जंजाल में बंधना नहीं चाहते थे । कारण उनके गुरुदेव ने उन्हें ब्रह्मचर्य के सब ही

गुणों का परिपूर्ण पाठ पढ़ा रक्खा था । वह अपनी माता के संकल्प को किस प्रकार विफल करे रात-दिन प्रभु से यही प्रार्थना किया करते थे । इसी तरह चिन्तन करते-करते ही एक दिन गंगा-स्नान का पर्व आ पहुंचा और दोनों मां बेटा ग्राम के निकट की बड़ी नदी में स्नान करने गये, माता तो झटपट स्नान कर नदी के तट पर आकर वस्त्र बदलने लगी, और शंकर स्वामी स्नान करते रहे । तभी उन्होंने करुणा रुदन करते हुए चिल्लाकर कहा मां-मां अब मेरा अन्त समय नजदीक आ पहुंचा है । मगरमच्छ ने मेरा पैर पकड़ लिया है । इतना सुनते ही मां ने दहाड़ मारकर रात-चिल्लाते हुए कहा, अरे कोई दौड़ कर मेरे लाल को बचाओ, अपनी माता की ऐसी दशा देख शंकर स्वामी बोले मां मेरे बचने का अब एक ही सरल उपाय है तुम कहो प्रभु तुम्हारा दास तुम्हारे ही अर्पण करती हूं आज से तुम्हीं इसके माता पिता हो ऐसा कहने से शायद प्रभु मुझे बचालें, मां जल्दी से परमात्मा से कहो देर करने से गजब हो जायेगा । सिर्फ प्रभु ही इस मगरमच्छ से मेरी रक्षा कर सकते हैं । माता अपने बेटे की दर्दरीली वाणी सुनकर और पुत्रप्रेम में पागल हो बोली-हे प्रभु यह

पुत्र मुझे आपने ही दिया है, यह अब भी मेरा नहीं आप का ही है आप इसे कृपाकर जीवन-दान दो। जिससे तमाम उम्र यह आपकी सेवा में बितावे। अपनी माता के संकल्प को सुन शंकर स्वामी मुस्कराते हुए नदी से बाहर आकर अपनी माता के चरणों से चिपट गये। और माता के चरण स्पर्श कर बोले मातेश्वरी अब विवाह-शादी का विचार त्याग दो। और अपने वचनों अनुसार मुझे ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर प्रभु सेवा करने दो। माँ बोली बेटा कौन माता यह नहीं चाहती है कि मेरे बेटे का नाम विद्वानों की श्रेणी में रोशनी फैलावे और बेटा अब तो यह बातें साधु-संन्यासियों की श्रेणी तक ही सीमित रह गई हैं। और अगर कोई बालक बालिका, इस पुस्तक के उपदेश को ग्रहण करके ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने को तैयार भी हो तो उसके माता-पिता ही मगरमच्छ का रूप धारण कर रो-रोकर और पाँव पकड़कर उन्हें विषय-वासना के भंवर में फंसाने का यत्न करेंगे। और बच्चे को समझाने के लिए अपने इष्ट मित्रों और सारे खान-दानियों को इकट्ठा कर उसे समझाने का प्रयत्न करेंगे। परन्तु जो बालक-बालिकायें अपने संकल्प पर दृढ़ रहते हैं तो वह बच्चों को मारते-पीटते

भी हैं और कहते हैं कि अभी से व्रत लेने की यह आयु थोड़े ही है। अब स्वामी शंकराचार्य जी के घर छोड़ने के बाद के विचार सुनो बेटा, शंकर स्वामी की मां मजबूर हो गई, वह तो अपने पुत्र का जीवन मन से चाहती थी। वह तो उन्हें हर तरह से सुखी देखना चाहती थी। उन्हें अब कुछ मतलब नहीं था चाहे वह विवाह करे, चाहे वह संन्यास ले। और उन्होंने हँसी-खुशी अपने पुत्र को संन्यास ले लेने के वास्ते स्वीकृति दे दी। उस समय शंकर स्वामी की आयु ग्यारह वर्ष की थी। तभी शंकराचार्य जी ने विचारा, कि काम, क्रोध, लोभ इत्यादि यह महापाप कराने वाले शत्रु हैं। उन्होंने इन विषय-विकारों को काले सर्प के विष से भी अधिक भयंकर माना है। और कहा है कि यह विष मनुष्य की बुद्धि को मलिन कर तेजहीन कर देता है और उसे पग-पग पर मृत्यु दिखाई देने लगती है। सो बेटा पद्मनाथ अब पृथ्वी पर धर्म का नाम ही रह गया है और ब्रह्मचर्य व्रत को भूल जाने के कारण पृथ्वी पर चारों तरफ हा-हाकार मचा है आराजकता तेजी से फैल रही है विषय-वासना ने हर एक नर-नारी को इतना अंधा कर दिया है कि वह अपना भला-बुरा भी नहीं विचार

सकता है। इसलिए अब मेरा विचार हिमालय पर्वत जाने का पक्का बन गया है। तुम अपने गुरु भाईयों को तैयार हो जाने का मेरा आदेश सुना दो इन मन-मानी करने वाले नर्क अधिकारी भारत-वासियों में फूट फैल रही है और सब ही काम-कंचन-कामनी के कारण पागल हो गये हैं। बेटा मुझे दीख रहा है कि इसी आपसी फूट के कारण यह देश शीघ्र ही गुलाम बन जायेगा। और, यहां मलेच्छ लोग राज करेंगे। अपने गुरुदेव के विचार सुनकर पद्मनाथ ने गुरु गोरख के चरणों में अपना मस्तक टेक दिया और फिर उठकर गुरु भाईयों के निकट पहुंचकर गुरुदेव का आदेश सुनाया तब सब ही सन्तों ने गुरु-बचनों को श्रद्धा के साथ सुनकर अपने गुरुदेव के आदेश पर मस्तक नवाकर आज्ञा-पालन में हिमालय पर्वत की तरफ कूँच करने के वास्ते अपनी झोली, खप्पर, कम्मल, चीमटा और कमण्डल संभाल खड़ाऊँ पहन कर सब शिष्य तैयार हो गये।

श्री गोगा महापुराण ४३वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ ! अब हमें गोगा राणा और उन के साथियों की भी सुध लेनी चाहिए कि उन लोगों

ने क्या-क्या मुसीबत हूणों को हिन्दू बनाने के वास्ते उठाई। हमारे गोगा राणा हूणों की स्त्रियों को धीर बंधा और महाराजा विक्रमादित्य से सलाह मिला, अपने मायावी वीरों को, हूणों की निगरानी करने के वास्ते छोड़ दिया। और आप अपने साथियों सहित अपने-अपने घोड़ों पर चढ़ विद्वानों की महा नगरी काशी में कई दिन की मंजिल तय करके जा पहुँचे, और वहाँ पहुँचकर बड़े-बड़े धुरन्धर पण्डितों को जा कर अपने देश के दुश्मन हूणों की कथा सुनाई।

हारे हुए राक्षसों को अपने लोगों में मिलाने में ही भारत देश की भलाई है। परन्तु सब ही विद्वानों ने एक मत हो एक ही बात कही, कि हमारे वेद शास्त्र ऐसा कुकर्म करने की अनुमति नहीं देते हैं। राणा साहब कभी गधी भी गाय बन सकती है। गोगा राणा ने उन महा पण्डितों को काफी ऊँच नीच समझाया, पर पंडितों ने उनकी एक भी न सुनकर, बार बार अपनी ही बात को ठीक कहा।

जब गोगा राणा ने काफी कहने सुनने पर भी अपनी दाल गलती न देखी तब निराश होकर वह वहाँ से चल पड़े। वहाँ से चलकर मथुरा में भी जाकर ब्राह्मणों से काफी मगज खपाई की और वह

भी समझाया कि हमारे गुरु गोरखनाथ जो महाराज जो बड़े पहुँचे हुए सिद्ध सन्त हैं, उनकी भी यही इच्छा है कि इन अधर्मी शक हूणों को अपने में मिला कर इन्हें धर्मधारी बना लिया जाय । इनके यहां बस जाने से हमारे देश को शक्ति दुगनी हो जायेगी । और इनके यहां रहते कोई विदेशी दुश्मन हमसे आंख न मिला सकेगा । तब मथुरा के चौबों (पंडितों) ने कहा राणा जी आप हमें क्यों अधर्म करने को मजबूर करते हो, आप नगरी के सेठ साहूकार, बनियों और राजपूत राजाओं से भी तो पूछो वह लोग क्या कहते हैं । इस पर गोगा राणा ने मथुरा के सेठ साहूकार और राजपूतों को बुलवा कर भी अपनी योजना समझाई तो यह लोग भी बोले राणा साहिब इन धार्मिक मामलों में हमारी राय लेना वृथा ही है ।

इस मामले के कर्ता धर्ता तो वेद शास्त्रों के जानने वाले यह पंडित लोग ही हैं । जो हमारे पंडितों की राय है वही हम लोगों की है इनके खिलाफ बोलने की शक्ति हम लोगों में नहीं है । इस पर सब पण्डितों ने एक मत होकर कहा, धर्म शास्त्र इन कुकर्मियों को अपने में मिलाने के सख्त खिलाफ है । उनमें साफ साफ लिखा है । जो इन्सान जबरदस्ती इस प्रकार के

कुकर्म करेगा, उसे जाति के बाहर कर उससे किसी प्रकार का वास्ता रखना भी बड़ा भारी अधर्म का कार्य है । क्योंकि वह भी नीचों का संग देकर नीच ही कहलाने का अधिकारी है । और जो उसका अन्न जल ग्रहण करेगा वह भी महा पातकी और घोर नर्क का अधिकारी होगा । वह अगली योनियों में भी अच्छा जीवन नहीं बितायेगा ।

मथुरा के पण्डितों की वार्ता सुनकर नरसिंह पंडित अधीर हो बोले, भैया गोगावीर सौ बातों की एक बात यह है कि जिन व्यक्तियों के विनाश का समय नजदीक आ जाता है, उनकी बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है । भ्रष्ट बुद्धि के कारण ही रावण जैसे राजा का नाश हो गया । लातों के देव बातों से नहीं माना करते हैं । यहां तो विनाश काले विपरीत बुद्धि वाली कहावत ही ठीक बैठ रही है ।

नरसिंह पांडे की वार्ता सुनकर सब लोग निराश होकर मथुरा नगरी से चल कर अपने नित्य कर्मों से फारिग हो यमुनाजी में स्नान करके द्वारकाधीश महाराज के दर्शन किये, और भगवान को भोग लगाकर मंदिर के पुजारी को, दान दक्षिणा दे प्रसाद पाकर अति प्रसन्न हुए। फिर गया और हरिद्वार के पण्डितों

से भी मगज खपाई कर, अपने गुरु गोरखनाथ जी महाराज की जोत जलाकर दर्शन देने की सबने मिल कर प्रार्थना की, तभी गुरु गोरखनाथ जी महाराज अपने सब चेलों को जो गुरुदेव के बिगुल बजने के इन्तजार में तैयार खड़े थे उन्हें समझा कर कि मुझे गोगा राणा याद कर रहा है। पहले मैं उससे मिल आऊँ कहकर अपने कुछ शिष्यों के साथ अपनी उड़न खड़ाऊँ पर चढ़कर आनन फानन में मथुरा आ पहुचे। तभी सब राजस्थानी वीरों ने अपने गुरु के खुश हो कर दर्शन किये और सब ही ने गुरु चरणों में अपना अपना मस्तक टिकाया, तभी गुरु ने प्रसन्न हो अपने सभी शिष्यों को आशीर्वाद दे उनकी अधीरता का कारण पूछा। तब गोगा राणा ने अपने दोनों हाथ जोड़कर राजा विक्रमाजीत के युद्ध जीतने की खुश खबरी गोरख गुरु को सुनाई और अपनी सभी योजना समझाई फिर वह कहने लगे, गुरुदेव ये पण्डित जन तो अपनी ना समझी के कारण देश के हानि लाभ को नहीं समझते। अब आप जैसी आज्ञा देंगे हम वैसा ही करेंगे।

श्री गोगा महापुराण ४४वाँ भाग प्रारम्भ

गुरु गोरखनाथ जी महाराज, अपने शिष्यों की वाणी सुन धीरज धर कर बोले, बेटा अधीर होने से कोई भी कार्य सफल नहीं होता है। यह ना समझ घमन्डी ब्राह्मण, बनिये और राजपूत वगैरह अपने को उच्च समझने वाले लोग यह कभी भी तुम्हारा साथ देने को तैयार नहीं हो सकते, परन्तु हमारे शुभ कार्य में रोड़ा अटकाने में यह कभी चूकने वाले भी नहीं है। तुम्हें तो उन लोगों से मिलना चाहिये, जिन्हें यह लोग तुच्छ समझ कर तिरछी नजरों से देखते हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि तुम्हें जाट, गूजरों के मुखियाओं से जाकर मिलना चाहिये वह बहादुर लोग किसी की परवाह न करके इन शक और हूणों को अपनी जाति में अवश्य शामिल कर लेंगे। इससे उनकी शक्ति भी डबल हो जायेगी, और शक्ति दुगनी हो जाने से यह लोग कभी भी देश के दुश्मन विदेशियों को भारत की सीमा में कदम न रखने देंगे। और यह ब्राह्मण बनिये और राजपूत अपने हाथ मलते रह जायेंगे।

अपने गुरु की आज्ञा शीश झुकाकर गोगा राणा ने स्वीकार कर ली और वह सातों वीर अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो, हरियाणा और पन्जाब प्रान्त में

जा पहुँचे और जाट, गूजरों के मुखियाओं से मिले और अपनी सारी व्यथा का बखान किया। और हाथ जोड़ कर प्रार्थना की कि आप इन देश के दुश्मन हूणों को अपनी जाति में मिला लो मेरा नाम गोगा चौहान है और यह सातों रण बांकुरे मेरे गुरु भाई हैं हम सभी गोरख गुरु के शिष्य हैं, और उन्हीं की आज्ञा से आपकी शरण में इस शुभ कार्य के लिये प्रार्थना करने आये हैं। गोरख राणा की वार्ता और गोरख गुरु का नाम सुन कर जाट गूजरों के सभी मुखियाओं ने तभी एक बड़ी पंचायत जोड़ी और भरी सभा में सर्व सम्मति से कहा गुरु गोरखनाथ जी महाराज, धर्म रक्षक और देश हितैषी परम योगी सन्त हैं और उनकी आज्ञा मानने में ही हमारे देश और हमारी भलाई है और इसमें तो जरा भी शन्सय नहीं है कि हमारी जाति की शक्ति अति प्रबल हो जायेगी, और कोई भी घमण्डी कभी भी हमसे आँख नहीं मिला पावेगा। यह ब्राह्मण, बनिये भी सदा हमारा मुंह ताका करेंगे। और कहेंगे चौधरियो हमारी लाज आपके ही हाथ है गोगा राणा के सन्मुख गोरख गुरु का काफी गुण माना कि गुरुदेव ही का हमें एक सहारा है जो उन्होंने भारत की डूबती नाव को भंवर

से निकालने का बड़ा ही सुन्दर उपाय किया है वरना इन ब्राह्मण, बनियों और क्षत्रियों ने मिलकर जो जाति भेद का प्रपन्च फैलाया है एक दिन हम सबको ही ले डूबता सभी चौधरियों ने एक मत हो सब ही हूणों को अपने में मिला लेने का गोगा राणा को वचन दिया गोगा राणा ने भी अपने सभी साथियों के संग गूजरों के चौधरियों को भी साथ लेकर अपने अपने घोड़ों पर सवार हो उज्जैन नगर आ पहुँचे और हूणों के सरदार मिहिर कुल ने जब गोगा राणा की जबानी अपने उद्धार की कहानी सुनी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा उसने फौरन ही इस खुश-खबरी की खबर तुरन्त ही अपने सभी संगी साथियों को मिनटों सैकिण्डों में सुना डाली सभी ने एक मत हो, अपने धर्म को जाट गूजरों के धर्म में हँसी-खुशी परिवर्तन कर लिया और नरसिंह पाण्डे ने सभी जालिमों पर गंगाजल छिड़क-छिड़ककर वेद-मन्त्रों द्वारा उन्हें पवित्र कर दिया तभी गोगा राणा अति प्रसन्न हो अपनी तरफ से हूणों के सभी परिवारों को एक-एक कच्चा मकान रहने को और दस-२ अशरफी व्यापार के वास्ते देकर उन सबको आस-पास के ग्रामों में बसा दिया। और उन सबने हिन्दू जाति में प्रवेश

करने की खुशी में भागीरथी गंगा में स्नान कर अपने सभी पापों से छुट्टी पाई फिर जाट गूजरों के संग भुजा भेंट कर सभी एक दूसरे को प्यार की दृष्टि से देखकर प्रेमपूर्वक सभी भाई-भाई की तरह रहकर, अपनी गुजर-बसर करने लगे और देश पर जब भी कोई विदेशियों का हमला हुआ तो सबसे आगे इन्हीं रणधीरों ने ही देश के दुश्मनों में सब से आगे बढ़कर मोर्चा लगाया। और दुश्मनों को नेस्त नाबूदकर मार भगाया आज भी उन वीरों की सन्तान भी देश के दुश्मनों को देश से मार भगाने में किसी से पीछे नहीं हैं।

श्री गोगा महापुराण ४५वाँ भाग प्रारम्भ

इस धर्म कार्य से छुट्टी पाकर महाराजा वीर विक्रमादित्य को अपने सभी कार्य-कलापों की खुश-खबरी, ब्योरेवार उनके दरबार के बीच पहुँचकर सुनाई कि किन-किन मुश्किलों से उन राक्षसों का उद्धार हुआ है गोगा राणा की बातें सुनकर महाराजा विक्रमादित्य बड़े ही प्रसन्न हुए और अपने पास ही गद्दी पर बिठलाते हुए बोले धन्य है तुम्हें राणा जी और धन्य है तुम्हारे साथियों को जिन्होंने तन मन

धन से भारत देश का उद्धार किया, और अति घोर विपत्ति के संकट से मुझे उबारा न मेरे पास आप सबकी बड़ाई करने के वास्ते अनोखे शब्द ही हैं और न आपके लायक भेंट करने को कोई नायाब वस्तु है जो अपने गुरु भाई को भेंट कर सकूँ। मैं इसी सोच-विचार में हूँ कि मैं तुम्हें क्या उपहार में दूँ। तुम्हारे वास्ते अगर मैं आसमान के चाँद-सितारे भी लाकर भेंट करूँ तो भी वह तुम्हारे कार्य के सन्मुख तुच्छ ही दिखाई देंगे। खैर अब आपने अपने एक देश हितैषी धर्म-कार्य से तो छुट्टी पा ही ली है। अब मेरे कहे अनुसार कुरुक्षेत्र भूमि थानेश्वर नगरी में आप सब पहुँच कर अपनी राजधानी कायम कर स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करो और जननी जन्म-भूमि और गऊ माता की सेवा करते हुए सदा देश-जाति के उद्धार में अपना जीवन बिताओ मेरा आशीर्वाद आप सब के साथ है कि तुम सात दीप नौखण्ड में पूजे जाओ यह ब्राह्मण बनिये क्षत्री तुम्हारी कीर्ति को बदनाम करने की भरपूर कोशिश करेंगे परन्तु तुम्हारी कीर्ति घर-घर और ग्राम-२ में सदा ही जगमगाती रहेगी और तुम्हारे पुजारियों की संख्या रात-दिन बढ़ती ही रहेगी। कारण धर्म की बेल सदा ही हरी-भरी रहा करती

है। महाराजा विक्रमादित्य की वार्ता सुन गोगा राणा अपनी निगाह नीची कर बोले महाराजा साहब आपने जो मेरा इतना गुणगान किया है मैं इस काबिल कहाँ हूँ मेरे द्वारा जो कुछ भी कार्य आप हुआ समझ रहे हैं वह सब तो गुरुदेव की कृपा का ही फल है सच्चे गुरु का दर्जा भगवान से कम थोड़े ही होता है गुरु खुश हो जाए तो बश कदमों पर लोटता फिरे और गुरु नाराज हो जायें तो त्रिलोकी में भी कहीं ठिकाना न मिले। आप मेरे बड़े गुरु भाई हैं आपकी आज्ञा पालन करना ही मेरा परम धर्म है। आप निश्चिन्त रहें, आपकी आज्ञाओं का उलंघन मैं सपने में भी न करूँगा गोगा राणा की मधुर वार्ता सुनकर राजा वीर विक्रमादित्य बोले तुम्हें जितनी सेना व धन की आवश्यकता हो यहाँ से अपने साथ लेजा सकते हो चिन्ता कतई न करना गोगा राणा बोले गुरुदेव का दिया सब कुछ है फिर जब आपका आशीर्वाद मेरे साथ है तो कामयाबी ही कामयाबी है महाराजा साहिब अब सबसे पहले तो मैं आप से विदाई प्राप्त कर, गुरु चरणों में पहुंच कर मस्तक झुकाऊँगा और अपने गुरुदेव को यहाँ का ब्योरेवार सब हाल सुनाऊँगा। यहाँ के समाचार न मिलने से गुरुदेव बड़े ही

बेचैन रहते होंगे। वैसे तो गुरुदेव त्रिकालदर्शी हैं उन्हें सब ही समाचार योगशक्ति द्वारा बराबर मिल रहे होंगे, परन्तु वह फिर भी मेरे मुख से ब्योरेवार यहाँ के सब समाचार सुनकर ही संतुष्ट होंगे इसलिये कजली वन पहुँचकर गुरु के दर्शन करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूं। वैसे भी उनके दर्शन किये हम लोगों को काफी समय व्यतीत हो गया है। मेरे सभी गुरुभाई तथा मित्र भी गुरु-दर्शन के लिए अति बेचैन हैं। इसलिए अब आप हमें चलने की इजाजत दें। प्रभु चाहेगा तो शीघ्र ही आपके इन चरणों के दर्शन दुबारा करूँगा। आशा है आप अपने छोटे गुरु भाई की भूलों को क्षमा करने की दया करेंगे। गोगा राणा की मधुर बाणी सुनकर राजा वीर विक्रमादित्य ने प्रेम-विभोर हो गोगा राणा को खड़े होकर अपने गले से चिपटा लिया और आँखों से प्रेम-अश्रु बहाकर बोले, गोगा भैया तुम्हें विदा करते हुये मुझे बड़ी भारी बेचैनी सी हो रही है। मेरा हृदय टूक-टूक हुआ जा रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरी दाईं भुजा टूटी जा रही है। तुम्हें विदा करते समय मेरा दिल मुझसे कह रहा है कि विक्रमादित्य तेरा सगा भाई तुमसे बिछुड़ रहा है। तू उसे यहाँ से किसी

कीमत पर भी मत जाने दे। तेरी इसी में भलाई है सज्जनो महाराजा वीर विक्रमादित्य ने बड़ी-बड़ी अमोल बेश कीमती अनोखी वस्तुयें गोगा राणा की गठरी में चुपके से बंधवा दीं और गोगा राणा से उनका कोई जिक्र तक न किया। राजा वीर विक्रमादित्य की बेचैनी और बड़े भाई की तरह से भी ज्यादा प्रेम देखकर गोगा राणा और उनके मित्रों के नैनों से जलधारा बहने लगी। उन्हें अपने दोनों बड़े भाई अरजन सरजन की याद ने आ संताया उनका हृदय कहने लगा देखो ये दुनिया वालो, एक यह बड़ा भाई है जो मेरे प्यार के कारण बेहद परेशान है। एक मेरी सगी मौसी के लड़के थे, जिन्होंने मेरी कदर न जानी। मेरे उनको जी-जान से चहाने पर भी वह अपनी ऐबदारियों से बाज न आये और बिना मौत ही मारे गये। उन्हीं के अंधे प्यार के कारण मेरी सगी माता ने दुश्मनों जैसा मेरे साथ खेल खेला। और अपने वंश और राजधानी को जड़मूल से ही नष्ट कर दिया यह जानते हुए भी कि जो भी घटनायें घटी हैं वह सब गोरख गुरु के श्राप के कारण ही घटी थीं।

दोहा-अब पछताय होत क्या,
जब चिड़िया चुग गई खेत।

श्री गोगा महापुराण ४६वाँ भाग प्रारम्भ

बन्धुओ ! बात बढ़ाने से क्या लाभ यह सातों जुझारु योद्धा, अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर और महाराज विक्रमादित्य को कल्पता छोड़ प्रणाम करके गोरख गुरु महाराज की जय बोलते हुए, हवा की माफिक उज्जैन नगरी से चल पड़े। और रात दिन की मंजिल तय करते हुए कजली बन में गोरख गुरु की धूनी के सामने जा पहुँचे। जहाँ गुरु महाराज आँखें बन्द किए प्रभु भजन में मस्त थे। और सामने बड़े-बड़े लक्कड़ों का धूना सुलग रहा था अपने गुरु देव को तपस्या में मग्न देख सब ही वीरों ने गुरुदेव को मन ही मन प्रणाम किया और सभी जुझारु योद्धाओं ने गोरख गुरु के चौदह सौ चेलों से भुजा भेंट कर उज्जैन नगरी की सभी घटनाओं का ब्यान हंस हंस कर प्रेमपूर्वक सुनाया।

राजा वीर विक्रमादित्य की खूब तारीफ की, कि ऐसा धर्मात्मा ज्ञानी और दानी मानी वीर राजा इस भारत माता की ही देन है। ऐसे राजाओं के जन्म लेने से ही हमारे देश की कीर्ति में सदा चार चाँद लगते रहे हैं। ऐसे ही धर्मी कर्मियों के नाम सदा अमर रहते हैं। इसी अर्से में गुरु गोरखनाथ की महा-

राज की समाधी छूट गई । और वह हर हर महादेव कह भगवान के चरणों में अपना मस्तक नवा, अपने दोनों नैन ऊपर उठा बोले । क्या गोगा राणा उज्जैन नगर में अपनी कीर्ति ध्वजा फहरा कर अपने मित्रों के साथ लौट आये । अपने गुरुदेव की तरफ मुखातिब होकर सभी रण बांकुरों ने वारी वारी से गुरु चरणों में अपना-अपना मस्तक नवाया । अन्त में गोगा राणा बोले गुरुदेव महाराजा वीर विक्रमादित्य तो, महान से महान देवता के तुल्य हैं । आपकी दया से जितनी इज्जत हमारी उज्जैन नगरी में हुई है उतनी तीनों लोक चौदह भुवनों में भी होना असम्भव है । यह सब आपकी कृपा का ही करिश्मा है । हमने उस मिहिर कुल के राक्षस को आपकी कृपा से अतिशीघ्र हरा कर उसकी बची खुची सभी सेना को गिरफ्तार करके बड़ी ही मुश्किल और काफी दौड़ धूप करने के पश्चात ही जाट गूजरों को जाति में शामिल कराया है और उन के रहने को मकान और व्यापार के वास्ते उन्हें कुछ धन भी हमने दे दिया है । जिससे वह लोग अति प्रसन्न हो गये हैं । और काफी एहसान मन्द होकर भले आदमियों की तरह रहकर, अपनी गुजर बसर करने लगे हैं ।

आगे ये ही वीर बहादुर लोग देश पर हमला होने पर हम सबके कन्धे से कन्धा मिलाकर दुश्मन को मार भगाने में भारत देश की सदा सहायता करते रहेंगे । परन्तु गुरुदेव इन ब्राह्मण, बनियों और क्षत्री राजाओं ने हमें बदनाम करने की कसम ही खा रखी है यह लोग हमारे जाति उद्धार को कुछ न समझ कर हमें भी गिरी हुई दृष्टि से देख अधर्मी कहने में जरा भी नहीं हिचकिचाते । और यहाँ तक कहते हैं कि इनका गुरु गोरखनाथ खुद गोबर का एक कीड़ा है । फिर चेले ऐसे अधर्म कार्य करते फिरते हैं, तो कौन बड़ी बात है । ऐसों के हाथ का न पानी पीना चाहिए और न इनका छुआ अन्न ही हम उच्च जाति वालों को खाना चाहिये । सो गुरुदेव मेरे दिल में ऐसी ज्वाला सी उठती है कि इन उच्च जाति वालों का वन्श ही नामेट कर दूँ । सिर्फ आपकी आज्ञा की देरी है । मेरा भाला आपके भय के कारण ही अब तक रुका हुआ है । अपने शिष्य गोगा राणा की वार्ता सुन गुरु गोरखनाथ महाराज बोले, बेटा गोगा धीर अधीर होना ठीक नहीं विनाश काले विपरीत बुद्धि हो ही जाती है ।

लंका पति रावण भी होनी वश मतवाला होकर

अपने कुटुम्ब के नाश का कारण बना, क्या वह ब्राह्मण जाति का नहीं था। अपने दुष्ट कार्य के कारण ही आज लोग उसे क्या उसके कुटुम्ब तकको राक्षस कहते हैं। इसलिये घबरा कर कोई अनुचित कार्य करना भी बड़ा भारी अधर्म है। मैं जानता हूँ वैश्य अपने धन के घमण्ड के कारण और ब्राह्मण अपनी विद्या के कारण और क्षत्री अपने बाहूबल के नशे में बड़ी बुरी तरह चूर हैं। ये धर्म के लक्षण को भूल बैठे हैं। अपने अहंकार के कारण यह अपने कमजोर वर्ग को सताने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं। यह तो इन्हें पढ़ाया ही नहीं गया है कि धर्म के अर्थ क्या हैं। निर्बलों की सहायता न कर उन्हें सताना ही इन्होंने सबसे बड़ा धर्म मान लिया है। इसलिये इन पापियों को जो करना है करने दो, इनके पाप का घड़ा इनके सर पर ही फूटेगा। भगवान के यहाँ सबका लेखा जोखा है, हाँडती फिरती सबकी आती है जो जैसा बोयेगा वैसा ही काटेगा। मुझे दिव्य दृष्टि से दिखाई दे रहा है कि ये तीनों पापी जातियाँ देश को एक दिन गुलाम बनाकर ही मानेंगी और इनकी बहन बेटियाँ अधर्मियों के हाथ दो-दो पैसे में बिकती फिरेंगी।

आज यह अपने जिन भाइयों पर जुल्म करते हैं,

वही एक दिन शक्तिशाली बन कर, इनसे गिन गिन कर अपने सारे बदले चुका लेंगे। जो सूर्य पर धूल फेंकते हैं, सूर्य का तो कुछ नहीं बिगड़ता, धूल उल्टी फिर कर उनके ही मुख पर पड़ती है। और नैनों के भीतर घुस जाती है। इसलिये तुम इस व्यर्थ के झगड़े में मत पड़ो। और राजा वीर विक्रमादित्य के कहे अनुसार कुरुक्षेत्र भूमि थानेश्वर के महाराजा बन धर्म राज स्थापित करो। सब ही लोगो को अपना हितेषी भाई समझो सब जाति एक बराबर है, कोई जाति से छोटा बड़ा नहीं होता। अपना किया धर्म कर्म ही फलता फूलता है। यह लोग अगर हमें तुम्हें बदनाम भी करेंगे और हमारी कीर्ति को अपने धर्म-ग्रन्थों में स्थान भी न देंगे तो भी कोई दुःख की बात नहीं है तुम्हारी धर्म ध्वजा बनकर सातों दीप नौ खण्डों में जगमगायेगी। कोई तुम्हें नाग देवता कहकर पूजेगा कोई जाहर दीवान और कोई गोगा वीर। जगह-जगह तुम्हारे मेले लगेंगे चाहे वह छड़ियों के नाम से हो चाहे नौमी के नाम से रोशन हों प्रथम छोटी जाति कहलाने वालों की ही तुम मनोकामना पूरी करना। उन्हें संतानों के खूब वरदान देना, इससे दो फायदे होंगे एक तो उनके यहाँ अधिक संतानें होने के कारण

उनकी शक्ति बढ़ेगी दूसरे बड़ी जाति वाले जब जान जायेंगे कि बागड़ का देवता धन संतान देने वाला है तो वह भी अपने घरबार वालों को लेकर तुम्हारी मेड़ी पर माथा टेकने आया करेंगे मेरा तुम्हें वरदान तुम्हारे जन्म से भी पहले का दिया हुआ है कि तुम्हें सातों जातें पूजेंगी और तुम्हारे पुण्य परताप का हिस्सा तुम्हरे गुरु को भी मिलता रहेगा। अब तुम शीघ्र कुरुक्षेत्र भूमि में पहुंच कर अपना धर्मराज चलाओ। भगवान तुम्हारा सदैव भला करेंगे।

श्री गोगा महापुराण ४७वाँ भाग प्रारम्भ

अपने गुरुदेव को भेंट वार्ता और शिक्षा भरे उपदेश से अति प्रसन्न हो, गोगा राणा अपने सभी संगी साथियों को साथ लेकर महाराज विक्रमादित्य की आज्ञा अनुसार, कुरुक्षेत्र की भूमि थानेश्वर को अपनी राजधानी बना महाराज हर्ष की उपाधि की मोहर दलवा देश भर में राज्य संचालन का कार्य धर्म पूर्वक करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने जिसे धूर्त, छली प्रपन्ची नरेश समझा उसी का राज्य छीन उसे अपने आधीन कर धर्म पूर्वक राज्य संचालन करने की हिदायत करके, उसका जीता हुआ राज्य उसी के

आधीन अपनी देख रेख में कर दिया। इसी तरह हमारे गोगा राणा ने. पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण चारों दिशाओं के बहुत से जालिम नरेशों को जीता।

नाम मात्र का कर वसूल करने पर भी इतनी अधिक सम्पदा उनके खजाने में जमा हो जाती थी कि उन्हें हर छठे वर्ष कुम्भ तथा अर्ध कुम्भी मेले पर प्रयागराज पहुँचकर भागीरथी गंगा के संगम पर हाथी, घोड़े, हथियार रखकर अपनी कुल सम्पत्ति न्याय पूर्वक हर एक जरूरत मन्द को दान कर दी जाती थी। देश भर के सभी संचालक अनाथालय, अस्पतालों तथा पाठशालाओं वगैरह के कैम्प दान लेने के लिये काफी पहले से आकर गढ़ जाते थे लाखों की संख्या में गरीब, फकीर, मोहताज दूर-दूर से दान के लिये भागीरथी के तट की शोभा में आकर चार चांद लगा दिया करते थे।

इच्छा अनुसार दान पाकर भाँति-भाँति के आशीर्वादों के फूलों की वर्षा करके अपनी दरिद्रता से छुटकारा पा पलभर में मालदार बनकर अपने-२ स्थान को हंसी-खुशी लौट जाते थे। अपने महाराजा के देखा-देखी उनके मातहत राजा लोग तथा सकल राज दरबारी भी एक-दूसरे की होड़ा-होड़ी में खुले

दिल से अपनी-अपनी हैसियत अनुसार दान-पुन्न किया करते थे। इसके अलावा महाराजा हर्ष उर्फ गोगा राणा, बावड़ी, पोखर, ताल, मठ मंदिर, धर्मशालायें, पाठशालायें बनवाकर और राहगीरों के वास्ते ठण्डे पानी की प्याऊ तथा खाने के वास्ते सदावृत का पूरा-२ इन्तजाम राजा की तरफ से हुआ करता था। उस समय में देश की जनता भी ईमानदार धर्म-पुण्य में रुचि रखने वाली खूब ही खुशहाल थी। यह आप पहले ही पढ़ चुके हैं कि गोगा राणा के समय में जाति-पाति छूत-अछूत यानि छोटे-बड़े का कोई भेद-भाव नहीं था। सभी जनता में सगे सम्बन्धियों जैसा आपस में बड़ा भारी प्यार था। एक-दूसरे के दुःख-सुख के सभी साजी थे और सभी सुखी रह कर दूधो नहाते थे और पूतों फलते थे। हमारे देश भारतवर्ष की जनता उस समय भी गोगा राणा को देवता की तरह पूजती थी। और उनकी आज्ञा मानने में ही अपनी भलाई समझा करती थी। और जब कहीं दूर किसी बस्ती में जाकर जहां भी उठती बैठती थी गोगाजी के गुणों की गाथा खुश हो-होकर गाया करती थी। प्यारे बन्धुओं कोई भी वीर भाई, भाई की नफरत के कारण संसार में मशहूरी नहीं पाता है और न ही देवता

बन कर पूजनीय होता है। जो भी परम पूजनीय होता है वह अपने महान गुणों के कारण ही होता है। ऐसे ही देश जाति के उद्धारक थे हमारे गोगा राणा एक बात मैं आप सज्जनों से और भी कहना चाहता हूं कि उनके समय में मुसलमान भाई इस दुनिया में जन्मे ही नहीं थे, काफी समय के पश्चात् जब वह इस भारत में आये तब गोगा राणा के चमत्कारों की गाथा सुन-सुनकर अपने पीर-पैगाम्बरों की तरह इन्हें भी पूजने लगे।

श्री गोगा महापुराण ४८वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बंधुओ ! हमारे दुष्ट कर्मों तथा आपस की फूट और बेवकूफी के कारण काफी मुद्दत के पश्चात जब भारत में इस्लामी राज्य कायम हो गया था तब दिल्ली का बादशाह नौशेरवा बगावत दबाने के कारण गोगा मेड़ी के रास्ते अपनी फौज लेकर निकलने लगा। तब उसे क्या दिखाई देता है कि एक बड़ा ही खूबसूरत हट्टा-कट्टा हिन्दू वीर नीले घोड़े पर सवार हाथ में खोफनाक भाला लिये सारी बादशाही फौज को भयभीत करता हुआ तीर की तरह अंधेरे में गायब हो गया। तब बादशाह ने अपने सिपाही

सालार से पूछा भयभीत करने वाला खौफनाक नजारा कैसा था। अपने बादशाह को वार्ता सुनकर सिपह-सालार बोला, गरीब परवर भयभीत होने का खास कोई कारण नहीं है। इस सामने वाले मजार में एक पाक हस्ती हिन्दू पीरनी आराम फरमाते हैं और सब की मनचाही मुरादें पूरी करते हैं। अपने सिपह-सालार का वार्तालाप सुनकर बादशाह नोशेरवा ने तभी मनौती मानी, कि हे पीरसाहब अबर मैं बगावत दबाकर कामयाब होकर लौटा तो आपके आराम के वास्ते कच्ची दरगाह के बराबर हो एक आलीशान पक्की दरगाह बनवा दूंगा। परन्तु भाइयो जब बादशाह बगावत दबाकर लौटा तो वह अपना किया कौल भूल गया था। और जब उसकी फौज मेड़ी से आगे बढ़ने लगी, तब वह क्या देखता है कि बड़े-बड़े भयंकर काले नाग फन फैलाय उसकी और उसकी सेना की अगाड़ी रोके खड़े हैं। बादशाह भयभीत हो बोला, सिपह सालार यह नागहानी बला कैसी है। सिपह सालार बोला हुजूर आप पीर साहब की पक्की दरगाह बनवाने के अपने कौल को भूल गये। तभी बादशाह ने तोबा-तोबा कह अपनी पलटन को हुक्म दिया कि जल्दी से जल्दी पीर साहब की दरगाह

बननी चाहिये नहीं तो यहाँ से बचकर जिन्दा जाना नामुमकिन है।

उसी समय भादरा को करिन्दे भेजकर राज-मजदूरों को बुलवाया गया और भादरा से मेड़ी भवन तक, लाईन लगाकर पलटन खड़ी कर दी गई। भादरा का सिपाही ईंट उठाकर अपने बराबर के सिपाही को देता था और वह अपने बराबर वाले को यानी पहले ने दूसरे को दी और दूसरे ने तीसरे को और तीसरे ने चौथे को इस प्रकार तमाम ईंटें हाथों-हाथ आन कर मेड़ी के निकट जमा हो गयीं और रात-रात में पक्का मेड़ी भवन बनकर तैयार हो गया तभी सब नाग देवता धरती की गोद में समा गये जिस मेंड़ी भवन पर हर साल लाखों यात्री आ कर मनौती मनाते हैं और अपनी मनोकामना पूरी होने का वरदान पाते हैं यह मेंड़ी नोशेरवा बादशाह ने भय-भीत होकर बनवाई थी सभी जाति के भक्तगण दूर-दूर से आ कर मेंड़ी में अपना मस्तक नवाकर अपने अपने घरों को लौटते हैं तो उनमें से किसी की मृत्यु साँप काटने से आज तक नहीं हुई, इसी के पास दूसरी मेड़ी ददरेवा की भी है। इसका भी पूजन भक्त-गण फूल-बतासों से करते हैं और कहते हैं कि गन्धर्वों

यक्षों सिद्धों सर्वों साध्यो विद्याधरो देवताओं के स्वामी इन्द्र आदि स्वर्ग पाताल और मृत्यु लोग के निवासी सभी पाँचों भूतल के स्वामी आपकी चरणरज के अणू कण के समान भी इस ब्रह्माण्ड में नहीं हैं माता के गर्भ में सिर्फ गोगा जी ही बोले थे यह अधिकार न शिवजी को मिला न ब्रह्मा विष्णु को न चण्डी को न दुर्गा को न गणेश जी को न राम को न कृष्ण को फिर आप ही बतावें कि इस ब्रह्माण्ड में कौन देवता श्री गोगाजी की तुलना का है।

श्री गोगा महापुराण ४९वाँ भाग प्रारम्भ

बन्धुओ ! हमारे गोगा राणा जी के दो ब्याह हुए थे एक संगलद्वीप की राजकुमारी श्रीयल के साथ दूसरा सहारनपुर के ठाकुर साहब की बेटी रानी सन्तोख के साथ। इन दोनों महारानियों ने अठारह राजकुमार और तीन राजकुमारियों को जन्म दिया। बड़ी राजकुमारी का ब्याह नेपाल नरेश और मंझली का इन्दौर नरेश और सबसे छोटी का पंजाब के राजा वीरसेन चौहान के साथ हुआ था। श्री गोगा राणा के वीर पुत्रों ने भारतवर्ष के सभी प्रान्तों के बड़े-बड़े

राजाओं को जीतकर उन्हें अपने अधीन कर राज्य कायम किया था। इन्हीं के वन्शज यानी गोगा जी के पौत्र परपौत्र ने वीर नरेशों को जीतकर काफी उन्नति की थी। श्री गोगा राणा चार सौ वर्ष राज कर असनी दोनों रानियों को साथ ले और पुत्र पौत्र को राज्य का भार सौंप तपस्या करने वन खण्ड की तरफ चले गये।

जब से उनका किसी को कोई पता नहीं है। वह कहां चले गये और क्या कर रहे हैं। इनके परपौत्रों के बहुत थोड़े नाम मिले हैं जो इस प्रकार हैं—मुलतान के स्वामी महाराजा अजयपाल, लोहकोट के मालिक सपाद लक्ष, मरुस्थली घोघागढ़ के घोघा बापा, उज्जैन के मालवराव साम्भर और अजमेर के गजधर नरेश गुजरात के चामुन्ड राय, आमेर के दुर्लभराय सिद्धपुर के मूलदेव यह उपरोक्त सभी नरेश गोगा जी के परपौत्र और उनके बन्शज थे। जो आपसी वैर भाव व आपा धापी के कारण वीर धीर होते हुए भी बिखरे हुए थे और अपार धन के मद में किसी को कुछ गिनते ही नहीं थे। यह काम कामनी और शराब के नशे में मस्त रहकर धीरे-धीरे अपने नाश की ओर बढ़ रहे थे। ब्रह्मचर्य जैसी अन-

मोल वस्तु को देव दासियों को बन्जर जमीन में बो रहे थे। और अपने बड़ों के चमत्कारों को भूल भारतवर्ष के नाम को बदनाम कर देश को अच्छी तरह मझधार में नाव डुबा रहे थे।

———

श्री गोगा महापुराण ५०वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ ! जिन धार्मिक सिद्धान्तों पर चल कर गोगा राणा ने कीर्ति पाई वह सदा धरती माता गौमाता, जननी माता के साथ साथ अपनी जनता के भी सेवक रहे उन्होंने अपनी जनता को सदा ही पुत्र तुल्य समझा वैसे ही जनता ने भी उन्हें अपने पिता तथा अपना भगवान समझकर उन्हें पूजा वैसा ही उनके पौत्र परपौत्र के समय में सब उल्टा पुल्टा हो गया यानी उनके करे धरे पर आपस में लड़ लड़कर गोगा राणा की सभी कीर्ति अलोप कर दी और रात दिन कामनी कन्चन शराब के मतवाले बन अपनी नाव मझधार में डुबाने लगे कभी किसी के साथ मार धाड़ करके बहन को ले भागे तो किसी को भान्जी को कभी किसी की बेटी हर ली तो कभी किसी की पोती को ही बहू बना आप दूल्हा बन बैठे। धन की तो इन

राजाओं पर कमी थी ही नहीं, लूट पाट, मार धाड़ का बाजार गर्म था मन्दिरों में जो सुन्दर देवदासियाँ होती थीं उनसे भी यह गोगा राणा के वन्शज राजा व्यभिचार करने में जरा भी लोक लाज और धर्म कर्म का भी भय नहीं करते थे इसके आगे का हाल जय सोमनाथ में लिखने की भरपूर कोशिश करूंगा।

ब्रह्मचर्य जीवन का नाम हो, जैसे सारी जनता ही भूल बैठी थी गोगा राणा का सेवा भाव, प्रेम प्यार भाई चारा, गऊ माता, धरती माता, जनता सेवा का भाव अहंकार के कारण कतई नहीं रहा। गोगा राणा व गुरु गोरख नाथ की शिक्षायें, किस्से कहानी बनकर रह गई। अब इन महापुरुष के कुछ दृष्टान्त भरे उपदेश लिखते हैं, आशा है छोटे बड़े सभी भाई बहन पढ़ कर लाभ उठायेंगे।

एक सर्पके मुखमें बैठा मेंढक आम जन्तुओं का भक्षण करता है उसे साँप निगलने को तैयार है। परन्तु वह यह सोचने को तैयार नहीं कि मैं तो काल का खुद ग्रास हो रहा हूँ फिर मैं अन्य प्राणियों का क्यों हनन करूँ। इसी तरह यह मनुष्य भी भली प्रकार समझता है कि रात-दिन बीतने पर यह काल बिकराल रूप धर कर सर्प के समान ही मुझे निगलने को दौड़ा

चला आ रहा है और मुझे इसका ग्रास अवश्य ही बनना है तब भले आदमी तू अपने किस मौज-मजे में मस्त होकर गरीब दुखियारों का खून पीता है। तू अपने भाइयों मित्रों में उनकी विपता से छुटकारा दिलाने का बहाना बना वकीली या डॉक्टरी विद्या की कला से क्यों धोका देकर बेचारे गरीबों का गला घोटता है और प्रपन्च के साथ मीठा बोल बोलकर ठगी द्वारा अपने वास्ते बंगले व कोठियां बनवाता है। और उन भोले-भाले आदमियों के बाल बच्चों के मुख का ग्रास छीनकर उन्हें कंगाल भिखारी और दाने-दाने का मोहताज बना देता है। लेकिन क्रूर काल तुझ पर भी दाँत पीस रहा है। तेरे कोठी बंगले यहीं धरे रह जायेंगे और तेरे काले कारनामे तेरे संग जावेंगे जो तुझे अनेक तरह के कष्ट देंगे। जन्म जात रोगी लूले-लंगड़े कोढ़ी जो पैदा होते हैं। यह सब उपरोक्त पापी ही तो मरकर पैदा होते हैं। और आगे पाप का बीसियो गुना दण्ड भोग कर फिर मर जाते हैं और मर कर ऊँट, बैल, गधे, सुअर, कुत्ता बनकर सदा दुःख झेलते हैं।

प्यारे बंधुओ ! आप गृहस्थाश्रम सुख भोगने या अपने मान-गुमान के बड़प्पन को कायम रखने के

लिए और यश-कीर्ति सुनने के लिए स्थिति अच्छी होते हुए भी अनेक कष्ट उठाकर परिश्रम द्वारा अधिक से अधिक धन कमाकर इकट्ठा करते हो। धन की अधिक लालसा के कारण सर्दी गर्मी वर्षात की गुलामी रात-दिन किया करते हो और यह सब दुःख तुम्हें विवश होकर लोभ के कारण सहने ही पड़ते हैं। यह तुम्हारे लोभ के सारे कार्य तेरी अशान्ति को शान्ति में कदापी नहीं बदल सकते हैं। यह सब तुम्हारा रत्ती भर भी हित नहीं कर सकते हैं। इसके अलावा अगर तुम मैत्री सम्बन्धी करुणा दया माध्यस्था और प्रमोद इन चारों भावनाओं के द्वारा कष्ट सहने का तप करते हो तो इस तप के प्रभाव से तुम्हारे अनेक जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं और तुम परम शान्त ध्रुवपद के आनन्द को प्राप्त कर सकते हो। इसी का नाम सुकाम कर्म है जो श्रीमद्‌भगवत गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भली-भांति समझाया था हे मूर्ख मनुष्य जिन सुखों के कारण तू पाप कर्मों में लिप्त है वह जीवन के पश्चात तेरे किसी भी काम के नहीं रहता जब जीवन सदा नहीं रहने का एक दिन अवश्य यह काल के गाल में समा जायेगा तो हे भोले भाई तू अपनी दुर्गति से क्यों भयभीत

नहीं होता है ! क्यों तू व्यर्थ ही पापी बन अनाचार अत्याचार करता है। शुभ-कर्म ही तेरे साथ जाकर तुझे सुख पहुँचावेंगे और पाप कार्य कितने ही जन्मो-जन्मान्तरों तक दुःख पहुँचाते रहेंगे पाप द्वारा जिन्हें इकट्ठा कर तू अपना मानता है यह कोठी बंगले, बाग बगीचे तेरे मरते ही बेगाने हो जायेंगे। फिर तेरे पश्चाताप किये कुछ भी न होगा। इसे और स्पष्ट करने के वास्ते यह दृष्टांत पढ़ें।

श्री गोगा महापुराण ५१वाँ भाग प्रारम्भ

एक साहूकार ने अति सुन्दर फरनीचर वाला सुख-सामग्री से भरा एक बंगला बनवाया। जो उसे देखता वही उसकी प्रशंसा करता। प्रशंसा सुनकर साहूकार फूला न समाता। अपनी प्रशंसा भला किसे भली नहीं लगेगी। एक दिन उसके यहाँ एक सन्त का आगमन हुआ। साहूकार सन्त जी को अपने बंगले की सैर करा कर समझाने लगा, यह वस्तु मैंने चीन से मंगवाई थी और यह जापान से, इसी तरह वह महात्मा जी को समझा समझा कर सब वस्तुयें दिखा रहा था। परन्तु महात्मा जी उसे कुछ भी उत्तर नहीं दे रहे थे। तब साहूकार ने कहा महात्मा जी आप

बोल क्यों नहीं रहे हैं। क्या मेरा यह बंगला आपको पसन्द नहीं आया। महात्मा जी बोले वैसे तो सब ठीक ठाक है। परन्तु तूने बँगला बनवाने में एक बड़ी भारी भूल की है। वह यह है कि तूने इसमें दरवाजे क्यों बनवाये। तुझे मालूम होना चाहिये था इन्हीं दरवाजों से एक दिन तुझे तेरे यह बन्धु बान्धव बांध कर बँगले से बाहर निकाल देंगे। और तेरा मन अपने बँगले में आने को करेगा भी तब भी तू यहाँ न आ सकेगा। इतना सुनते ही साहूकार की आत्म-जागृति हो गई और वह अपने आत्म उद्धार के लिए उन्हीं महात्मा जी का शिष्य बनकर उनके साथ चल दिया। बँगले का मोह फिर उसका रास्ता न रोक सका।

हे जीव तू पेड़ तो विपत्तियों के गुव बो रहा है। जिससे आगे चलकर अनेक आपत्तियां झेलनी पड़ेंगी मूर्ख तू तुरन्त ही आपत्तियों के भय से भयभीत होकर शुभ कर्म क्यों नहीं करता है। सन्त और शास्त्र संगतों से मनुष्य को भली भांति ज्ञात है कि एक एक पाप की दस दस सजायें भोगनी पड़ती हैं। और वह यह भी भली प्रकार जानता है कि किन दुष्ट कर्मों से नर्क मिलता है। फिर भी वह अन्धा हो पाप कर्म

कसरत से करता है। यह मनुष्य पाप कर्म छोड़ दे तो संसार में दुख नाम की वस्तु किसी कीमत पर भी न मिले।

श्री गोगा महापुराण ५२वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ! हमारे गोगा राणा ने थानेश्वर के किले में बैठकर और गोरख गुरु की शिक्षाओं द्वारा महाराजा वीर विक्रमादित्य की नीतियों पर चलकर सारे संसार में चक्रवर्ती राज्य कर अपनी धर्म ध्वजा देश विदेश में फहराई सभी समझदार नृपति और जनता इनके सद्गुणों की कहानियां आपस में बैठकर एक दूसरे को सुनाते और पास पड़ोस के बच्चे तथा नारियां इनकी कहानियां सुन सुनकर राम राज्य की कहानियों को भूल बैठे। घर घर नगरी नगरी गोगा राणा और गोरख गुरु की गाथाओं को गा गाकर लोग फूले न समाते। इन्होंने थानेश्वर में अठासी वर्ष तक राज्य काज कर सारे संसार में धर्म का डंका बजा दिया।

जब उनकी तबियत संसार से ऊब गई तब हमारे गोगा जी ने अपने पुत्रों पौत्रों को सब राज काज का भार सौंप गोरख टीले की तरफ गोरख गुरु की शरण

में पहुँचने के लिए चल पड़े परन्तु गोरख गुरु हिमालय की तरफ चले गये थे तबसे गोगा राणा का हमें कुछ भी पता नहीं चला कि वह गोरख गुरु के पास हिमालय जा पहुँचे या अपने पिता नागराज वासुकी के पास पाताल लोक जा पहुचे और वहीं तपस्या करने लगे। भाइयो गोगा राणा अमर हैं। गोगा राणा ही क्या गोरखनाथ गुरु के सभी शिष्य अमर हैं। और जब उनकी मौज होती है भारत देश में कहीं न कहीं प्रगट होकर अपने भक्तों को दर्शन दे जाते हैं। और गोगा राणा भी भादों सुदी कृष्ण सप्तमी को गोगा मेंडो में आकर विराजमान हो जाते हैं। और भादों शुक्ल पक्ष की दशमी तक विराजमान रहते हैं!

अपने लाखों भक्तों की मनोकामना पूरी करते हैं जो भारत के चारों कोनों से भक्त गण आते हैं। सबकी मनोकामना पूरी होती है। गोगा राणा के राजधानी से जाने के पश्चात काफी समय तक इनके बेटे पोतों ने सुदृढ़ राज्य कर भारत देश की सुख सम्पदा बढ़ा कर देश का झण्डा बुलन्द करके संसार में देश का मान बढ़ाया।

श्री गोगा महापुराण ५३वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ ! सदा किसी की न रही और न आगे रहेगी। कमाल को जमाल सदा से होता आया है। हांड़ते फिरते सबकी बारी आती है। जो शुभ कर्मों से गिर जाते हैं, उनका पतन निश्चय ही हो जाता है। रावण का पतन हुआ, कन्स का पतन हुआ, जरासिन्ध का पतन हुआ, यह धन मद का अहंकार ही हमें पतन के गढ़े में धकेलता है और आदमी को एक दम अन्धा और पागल के समान बना देता है। जब द्वारका की जनता पर अधिक धन हो गया तो वह भी श्रीकृष्ण भगवान की नीतियों पर न चल कर पतनकारी वस्तुएँ शराब वगैरह पीकर आपस में ही लड़ लड़कर मर गये कृष्ण भगवान का जब कोई भी उपदेश अपनी जनता पर न चला और बलदेवजी को भी जनता की बोली बोलते देखा तो वह बड़े ही दुखी हो, हस्तिनापुर की ओर पैदल ही द्वारका से चल पड़े। और जब वह गढ़मुक्तेश्वर के वन में एक वृक्ष के नीचे लेटे आराम कर रहे थे, तभी किसी भील ने निशाना साध उनके पैर में तीर मारा और वह तभी स्वर्ग लोक सिधार गये। अब आपको कौरवों के नाश के कारण का हाल लिखते हैं सो

समझने की कोशिश करें। हमारे इतिहास में और गीता महाभारत में भीष्म पितामह का नाम बड़े गौरव के साथ लिखा है क्योंकि वह गंगा पुत्र थे और अखन्ड बाल ब्रह्मचारी भी परन्तु उनके घमण्डी होने के कारण कौरव पाण्डव वन्श की ही क्या संसार के सभी गौरबशाली नृप नष्ट भ्रष्ट हो गये।

बालब्रह्मचारी होने के कारण भीष्म पितामह को कोई जीत तो सकता ही नहीं था उनके चेहरे का तेजही इतना प्रभावशाली था कि भगवान श्रीकृष्ण भी उन का लोहा मानते थे। अगर उनमें घमण्डी होने का अवगुण न होता और धर्म-अधर्म को समझते तो शायद महाभारत का युद्ध हो न होता। मैं आप सज्जनों से ही पूछता हूँ कि वह अपने भाई विचित्र वीर्य के वास्ते काशीराज की तीन कन्याओं का स्वयम्बर से जबरदस्ती हरण कर लाना कौन सा धर्म कार्य था। विचित्र वीर स्वयं ही स्वयम्बर में क्यों नहीं गये। भीष्मजी ने खुद अपने भाई से कहा था क्या पता तुम स्वयम्बर में कामयाब हो या न हो, मैं तो निश्चित उन त्रिलोक सुन्दरियों को अपने ब्रह्मचर्य के बल प्रताप से ले ही आऊँगा मेरा मुकाबला करने वाला इस पृथ्वी पर है ही कौन। मित्रो बात थी भी ठीक

हो बाल ब्रह्मचारी का मुकाबला करना, कोई हँसी खेल थोड़े ही है वह वहाँ गये और उनके स्वयम्बर में पहुँचते ही एक खलबली सी मच गई परन्तु काशी नरेश और स्वयम्बर में आये नृपों ने समझा भीष्मजी तो बाल ब्रह्मचारी हैं इन्हें स्वयम्बर से क्या लेना-देना है। यह तो योंही मनोरंजनार्थ आये होंगे, या काशी नरेश से कोई व्यक्तिगत कार्य होगा। परन्तु जब भीष्मपितामह ने अपने विचार वहाँ प्रगट किये तो भरी सभा में सन्नाटा छा गया सब ही नृप भयभीत हो गये और वह काशी नरेश की तीनों राजकुमारियों को अपने रथ में बिठा हस्तिनापुर ले आये और काशी नरेश खड़े-खड़े देखते रह गये। इस जुल्म के खिलाफ सारा संसार चुप रहा भगवान कृष्ण के जन्म से तो यह बहुत ही पहले की घटना है इसी घटना के कारण भीष्म और परशुराम का युद्ध भी हुआ परन्तु बाल ब्रह्मचारी होने के कारण उन्हें उनके गुरु परशुराम जी भी हरा न सके यह सब महाभारत पढ़ने वालों को पता है कि भीष्म जी ब्रह्मचर्य के प्रताप से महाबलवान थे परन्तु यह न्यायकारी व गरीब परवर रहम दिल कतई नहीं थे। काशी नरेश और उनकी पुत्रियों को भीष्म का इतना बड़ा जुल्म

मन मसोस और भीष्मजी को कोष कर किसी प्रकार शह तो लिया, परन्तु बदले की भावना और भीष्मजी की मृत्यु का उपाय काशी नरेश का कुटुम्ब रात-दिन भीष्म वधकी ही योजना बनाता रहा और वह प्रभुसे प्रार्थना करता था कि हे प्रभु आप ही हमें कोई उपाय बताओ जो हम भीष्म ब्रह्मचारी को मारने में सफल हों। हे जगत के मालिक आपसे तो कुछ भी छिपा नहीं है कि इस घमण्डी गंगापुत्र ने बिना वजह हम पर कितना जोर-जुल्म किया है।

इसके पश्चात भी भीष्मजी ने अपने घमण्डी होने के कारण कितने जुल्म जनता पर किये होंगे, उनको गीता महाभारत में कहीं भी चरचा नहीं है इसके काफी समय के उपरान्त भीष्मपितामह का दूसरा जुल्म महाभारत में पढ़ने को मिलता है कि भीष्मजी एकाएक गान्धार देश जा पहुँचे और अपने घमण्ड के कारण वहाँ के राजा गंधार नरेश को जा ललकारा कि या तो मेरे अंधे भतीजे राजा धृष्टराष्ट्र से अपनी सुन्दर पुत्री गांधारी का विवाह करदे, वरना तेरा सत्यानाश कर दूँगा। भीष्म पितामह की आज्ञा सुनकर गंधार नरेश और उनका पुत्र शकुनी भीष्म ब्रह्मचारी के वचन सुनकर अति गुस्से के कारण अपने

नन हो मन खूब क्रोधित हो गये परन्तु भीष्म ब्रह्मचारी से युद्ध करने की उनमें सामर्थ नहीं थी हार झकमार कर उस नौजवान शकुनी को अपनी बहन गांधारी का डोला भीष्मजी के सुपुर्द करना पड़ा और आप भी अपनी बहन के डोले के साथ अपने घोड़े पर सवार हो हस्तिनापुर कौरवों के वंश के मिटाने का उपाय सोचता हुआ मंजिल दर मंजिल तय करके हस्तिनापुर अपनी बहन के डोले के संग-संग आन पहुँचा।

श्री गोगा महापुराण ५४वाँ भाग प्रारम्भ

हस्तिनापुर के महल की शान शौकत देखकर जितनी खुशी गांधारी और उसके भाई शकुनी को न हुई उससे लाखों गुणा दुःख उन दोनों भाई बहनों को जब हुआ, जब उन्होंने देखा भीष्म ब्रह्मचारी ने हमें बड़ा भारी धोका भी दिया है। इन्होंने तो पिता जी से कहा था मेरा भतीजा अंधा जरूर है परन्तु है तो चक्रवर्ती नरेश। परन्तु यहां तो महाराजा पाण्डु राजा हैं मेरा अंधा बहनोई (जीजा) कोई राजा वाजा नहीं है। परन्तु शकुनी बेचारे में यह कहाँ सामर्थ थी कि वह भीष्मजी से कहे कि आप मेरे पिता से झूठ क्यों

बोले कि मेरा अंधा जीजा राजा है। सच बात तो यह है कि अपने भाई की बातें सुन-समझकर गांधारी ने उसी समय अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली कि ऐसे धूर्तों की शक्ल में जीवन भर नहीं देखूंगी, और शकुनी से कहा भैया अब तुम यहीं रहो, मेरा कोई तो यहां होना ही चाहिये। मैं इन दगाबाज धूर्तों की शकल न देखकर भगवान से नित्य-नियम से प्रार्थना करूंगी कि हे अनाथों के नाथ इन दगाबाजों का जितनी जल्दी हो सके तू सत्यानाश कर दे मुझ अनाथ अबला की जीवन नैया को खेवनहार तेरे सिवा मेरा दूसरा कौन है। अपनी बहन गांधारी के दुखभरे विचार सुनकर शकुनी बोला बहन तुम चिन्ता मत करो जो तुम्हारे विचार हैं, वही मेरे भी हैं। मैं पहले किसी भी उपाय से राजा पाण्डु को मरवा कर अपने जीजा को महाराजा बनाऊँगा और तुम्हें पटरानी, इसके पश्चात ऐसे उपाय करूंगा जो ये लोग आपस में ही लड़-भिड़ कर मर जावें। चाहे मुझे भी इनकी कटा-मरी में मर जाना ही क्यों न पड़े अपने भाई के विचार सुन बेचारी गांधारी को कुछ-कुछ ढाढस सा बधता रहा।

प्यारे बंधुओ! जिस शकुनी को महाभारत के

टोकाकर छली-कपटी और महाधूर्त लिखते हैं। जिन्होंने असलियत पर पर्दा डाल रखा है। अब आप भली प्रकार बिचारें कि भीष्म पितामाह का कितना कसूर है। और गान्धार के राजकुमार शकुनी का कितना है। मित्रो जिस पर कोई बिना वजह जोर-जुल्म करता है, वह बेचारा इन्सान अगर इस प्रकार अपने दुश्मनों का नाश करता है, और अपने ऊपर हुये जुल्म का बदला लेता है। तो क्या वह वाकई अन्याय और जुल्मी लिखे जाने योग्य है। इसी प्रकार हमारे एतिहासिक सभी ग्रंथों को मनमाने ढंग से बिगाड़ा गया है। भगवान श्रीकृष्ण भी महायोगी राज और ब्रह्मचारी थे। उनका ब्याह भी केवल महारानी रुक्मणी के साथ ही हुआ था। और उन्होंने अपने जीवन में एक बार भोग करके एक ही संतान पैदा की थी, जो राजकुमार प्रदुम्न के नाम से विख्यात है। अब आप ही कहें कि हमारे बाममार्गी ग्रंथकारों ने जो भगवान कृष्ण के अनगिनत रानियाँ ग्रंथों में लिखी हैं, क्या वह कपोल कलपित नहीं हैं। अरे मेरे भोले मित्रो अगर योगीराज श्रीकृष्ण ने बहु-विवाह किये होते, तो उन रानियों की संतानें भी तो होतीं और उन संतानों के नाम भी होते, और उनके किये

कारनामे भी होते यह तो धूर्त अय्याश राजे महाराजों ने पंडितों को धन देकर, इस प्रकार के ग्रन्थ बनवाये हैं जिससे उन्हें अय्याशी करने की सुविधा हो जाये। श्रीकृष्ण भगवान ने ग्यारह-बारह वर्ष की उम्र में ही वृन्दावन छोड़ दिया था। और जो वृन्दावन की गोपियां थीं वह सभी उनकी चाची ताई बुआ बहनें वगैरह थीं। जो श्रीकृष्ण के नटखट स्वभाव की बाल लीलायें देख देखकर खुद भी उनके साथ बाल लीलाओं में भाग लिया करती थीं जो राश लीलायें कही जाती हैं। राधा जी भी रिश्ते में कृष्ण भगवान की मामी लगती थीं जो राजा वृषभान की सुपुत्री थीं। और दुष्ट कन्स के मारने में श्रीकृष्ण के सत्याग्रह में राधाजी ने पूरा योगदान दिया था। वह कथा इस प्रकार है कि भगवान कृष्ण ने दुष्ट कन्स के नाश करने के लिये एक ग्वाल बाल दल की स्थापना की थी और उसके नेता खुद आप बने थे।

वृन्दावन की जनता और ग्वाल बाल दल में जो व्याख्यान दिया वह इस प्रकार था। भाइयो ! राजा कन्स ने अपने राक्षस भेज भेजकर, हमारे ब्रज के सैकड़ों बच्चों का वध करवा डाला है। उसके जुल्मों को रोकने का सरल उपाय केवल एक ही है कि ब्रज

से घी दूध की बिक्री मथुरा के लिए एकदम बिल्कुल बन्द हो जानी चाहिये । हम लोगों को रुपये पैसे का क्या करना है । वस्त्र हमारे यहां बुने जाते हैं, खेती द्वारा अनाज हमारे खेतों में पैदा होता है, दूध, घी, मक्खन हमारी गाय भैंसें देती हैं, अगर हमारी बहनें जेवर गढ़वाकर पहनने का लालच छोड़ दें तो हम अपना घी दूध मक्खन खा-२ कर और कसरत कर करके बलवान बन जायेंगे तो किसी की हिम्मत न होगी जो हम लोगों को सताये । कहो भाइयो जिन्हें मेरी बात पसन्द है, वह हाथ उठायें और जिन भाइयों को मेरी बात पसन्द नहीं है, वह विरोध प्रकट कर सकते हैं, भाइयो सभी नौजवानों ने कृष्ण भगवान के पक्ष में अपना हाथ उठाकर कहा, कन्हैया का प्रस्ताव हम सबको स्वीकार है और आज़ से मथुरा को घी दूध मक्खन बिलकुल नहीं जायेगा ।

हमारी माता बहनें जो हमें आज तक छाछ पिला कर सारा घी दूध मथुरा के राक्षसों के हाथ बेच कर उन्हें बलवान बनाकर हमें कमजोर रखती रही हैं । कल से हमारा ग्वाल बाल दल उन्हें राजी से या नाराजी से घी दूध बेचने से रोकेगा । कुछ बड़े बूढ़ों ने विरोध भी प्रकट किया और सर्व प्रथम नन्द

बाबा ने ही कहा, कृष्ण तू बावला हो गया है भला राजा का मुकाबला कौन कर सकता है । राजा भगवान का स्वरूप होता है । राजा की आज्ञा मानने में ही हमारी भलाई है । कृष्ण अभी तुम बालक हो अभी राजनीति के दाव पेच क्या जानो । भगवान कृष्ण ने उत्तर दिया बाबा राजा जनता का पिता होता है । यह हम भली प्रकार जानते हैं, अगर जालिम राजा जो बिना कसूर ही जनता को सताये उसे बदलना जनता का कर्त्तव्य हो जाता है । बिना कुरबानी किये कुछ भी नहीं होता है । बिना मेहनत के तो भगवान रोटी तक नहीं देता है । आप बैठे-बैठे तमाशा देखो कि कल से हमारे ग्वाल बाल दल का कार्य किस प्रकार सफल होता है । हमारे सत्याग्रह की किस प्रकार जीत होती है । भरी पंचायत में जनता ने नारा बोला है कि हमारे कन्हैया की जय हो और कल से सब ही ग्वाल बाल दल कन्हैया के कहे अनुसार कार्य करेगा । जिस नौजवान को हमारे ग्वाल बाल दल में नाम लिखवाना हो वह हंसी खुशी लिखवा दे । जिसे सोच विचार कर लिखवाना हो वह बाद में लिखवा सकता है । हमारे ग्वाल बाल दल में ब्रज भर के कार्यकर्ता नर नारी भी अपना नाम लिखवा सकते हैं ।

श्री गोगा महापुराण ५५वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ ! आप विश्वास करें सब ही गोकुल वासियों ने इस सत्याग्रह में उसी समय अपना अपना नाम स्वयं सेवकों में लिखवा कर तुरन्त प्रतिज्ञा की कि आज से हम, श्यामसुन्दर की आज्ञा पर जियेंगे और मरेंगे। और सारे ब्रज मण्डल की दूध घी की बिक्री बन्द करवा कर ही अपने सत्याग्रह को सफल बनायेंगे। बन्धुओ अगले दिन ही सुबह सुबह दिन निकलने से पहले ही सारा ग्वाल बाल दल उस रास्ते के चौराहे पर जाकर जमा हो गया, जिस रास्ते से गोकुल की ग्वालनियां घी दूध बेचने को जाया करती थीं। सब ही ग्वाल बाल दल जिस समय के इन्तजार में था वह भी आ पहुंचा और आठ दस गोपियां घी दूध की मटकिया अपने शीश पर रखे इठलाती मुस्काती आ पहुची। तब श्रीकृष्ण ने उन्हें प्रणाम कर हाथ जोड़कर कहा, मात ओ और बहनो क्या आपको अभी पता नहीं पड़ा कि आज से मथुरा जाकर घी दूध बेचना बिलकुल बन्द है इस घी दूध को अपने गोकुल ग्राम के सभी बच्चों को खिला पिलाकर बलवान बनाओ। राक्षसों को बलवान बनाने में हम लोगों को बड़ी हानि पहुँच रही है।

इतने में ही बीस पच्चीस गोपियों का एक झुण्ड आ पहुंचा, और उनमें से एक मोटी ग्वालिन बोली क्या माजरा है और कैसे रुकी खड़ी हो। तो उनमें से एक गर्भिली ग्वालिनी बोली, बहन यह नन्द बाबा का छोरा कहता है कि आज से घी दूध की बिक्री बन्द यह बौरा गया है। इसे यह पता नहीं कि घी दूध की बिक्री के कारण ही यशोदा रानी बनी और नन्द बाबा के बेगिनती गाय भैंसे हैं। तो वह बोली बकने दो इस यशोदा के छोरे को मैं भी देखती हूँ यह हमें कैसे नहीं जाने देता है। इतना सुनते ही श्याम सुन्दर ने अपने ग्वाल-बाल दल से कहा तुम सब रास्ता रोककर लम्बे-लम्बे होकर लेट जाओ जिन्हें जाना हो वह हमारे पेट पर पैर रखकर आगे बढ़े। अपने कन्हैया के मुंह की वाणी सुनकर सभी ग्वाल बाल दल जो हजारों की संखियां में था सारा रास्ता घेर कर लम्बा लम्बा लेट गया तब उस मोटी ग्वालनी ने कहा बहनो इन छोकरों की कतई परवाह मत करो, इनके सोने पर पैर धर-धर कर सड़क पार करो। उस मोटी ग्वालिनी के कहने से जो नीच प्रकृति की गोपियां थीं वह ग्वाल-बालों के सोने पर पैर रख-रखकर जाने लगीं। और

जो भली थीं वह वहीं खड़ी-खड़ी तमाशा देखती रहीं। तभी मनसुखा ने चीखकर कहा कन्हैया जुल्म की हद हो गई यह नीच राजी से मानने वाली नहीं है। भाईयो मेरी तुम्हें आज्ञा है कि इनकी मटकियों को लाठियां मार-मार कर मिट्टी में मिलादो। मनसुखा श्री कृष्ण का गहरा मित्र था उसकी आज्ञा और श्याम सुन्दर की आज्ञा सबने एक समझी और सभी ग्वालों ने उठ-उठकर मार मार लाठियां सभी ग्वालनी की मटकियां फोड़कर उनके सभी घी दूध को मिट्टी में मिला दिया इस आपा धापी में अपने कन्हैया की बातों पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया।

जिन गोपियों ने ग्वाल बालों के सीनेपर अपने पैर रखे थे उन सभी गोपियों के कपड़े मुँह और बाल बुरी तरह घी दूध में सन गये और गुस्से की वजह से उनके चेहरे बड़े ही भयानक बन गये थे। वह गालियां बकती तथा रोती पीटती सीधी यशोदा मैया के पास जा पहुंची और गरज गरज कर कहने लगीं, देख अपने सपूत की करतूत उसने हमारा क्या हाल कर डाला है तू रानी है तो अपने घर की, हम अपने नुकसान की रकम तुझसे पाई-पाई वसूल करके ही अपने घर जायेंगी। यशोदा रानी बोली, बहनो

धीरज धरकर मेरी बात सुनो, कल की आमसभा में यह प्रस्ताव पास हो गया था कि मथुरा जाकर घी, दूध मक्खन बेचना कतई बन्द। इसमें गोकुल ग्राम के सभी नौजवान शामिल थे। इन नौ जवानों ने प्रण किया है कि ब्रजभूमि की दूध-घी की बिक्री मथुरा के वास्ते हमें बन्द करवानी है। तुम सबको इस बात का पता तो पड़ ही गया होगा। फिर तुमने खुद ही बहनो अपने बालकों की बात की परवाह नहीं की और मुझसे झगड़ा करने यहाँ चली आयीं, अकल से काम लो, और अपने जवान बच्चों की बात मानो तभी कंस जैसे अन्याई राजा का राज पलटेगा। यशोदा माता के समझाने से सब ही गोपियां समझ गयीं कि यशोदा रानी की बात ठीक ही है हम सबको प्यार-पूर्वक एक दूसरे की बात समझ कर ही सुमत के साथ रहना चाहिये। और अपने बच्चों के कार्य में विघ्न-बाधा नहीं पहुँचानी चाहिये। बन्धुओ गोकुल ग्राम की दूध घी की बिक्री एकदम से रुक गई। साथ ही एक मां ने दूसरी बहन बेटियों को समझा-बुझा कर, और नौजवानों ने ग्राम ग्राम घूम-फिर कर कन्हैया की कही बातों को समझाया तो सब ही ग्रामों से घी-दूध की बिक्री रोक दी गई। मथुरा के बाजारों में

घी बच को एक बूंद का भी दर्शन दुर्लभ हो गया। और बड़े छोटे सभी एक-एक बूंद घी दूध को तरस गये। जब राजा कंस को इस भेद का पता पड़ा तो वह नन्द बाबा से नाराज हो अपने दूत बर्षाने भेजकर राधा के पिता वृषभान को मथुरा बुलवाकर कहा, चौधरी जी तुम आज से नन्द बाबा की प्रधानता का पद छीनकर तुम्हें ब्रज का मुख्यप्रधान बनाते हैं। कल से आप हमारे यहाँ घी दूध भेजने का कार्य करो। जिससे मथुरा वासियों की परेशानी दूर हो। राजा कंस की बातें सुनकर राधा के पिता बड़े ही प्रसन्न हुए और घी दूध बर्षाने से भिजवाने का वचन भर दिया और अपनी रक्षाहेतू कंस राजा के कुछ सिपाही साथ ले अपने बर्षाने ग्राम आ पहुँचे।

श्री गोगा महापुराण ५६वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे मित्रो ! अगले दिन से ही बर्षाने से घी दूध मक्खन की मटकियां मथुरा जाने लगीं, और महँगे दामों में बर्षाने का घी दूध मथुरा नगरी में बिकने लगा। मथुरा की जनता का मसला हल हो गया जब श्री कृष्ण को पता पड़ा कि मेरे बाबा की

प्रधानता छीनकर वृषभान को ब्रज का बड़ा प्रधान बना दिया गया है। तो सत्याग्रह के दीवानों की टोली बर्षाने भी जा पहुँची, और बर्षाने पहुँचकर नारे लगाने शुरू कर दिये कि कंस जालिम राजा है, मथुरा घी दूध भेजना उचित नहीं, नारेबाजी को सुनकर बर्षाने की जनता घरों से बाहर निकल आई, कृष्ण और उनके साथियों की बातें समझने लगीं, तभी राधा के पिता के आदमी और कंस के सिपाहियों ने आकर सत्याग्रहियों पर लाठियाँ बर्षायीं और सत्याग्रहियों के सिर फोड़ डाले। और काफी सत्याग्रही खून में नहा गये। ये ही वह बर्षाने की मशहूर होली है जिसको कोई जानता तक नहीं। प्यारे बन्धुओं जब यह खबर वृषभान नन्दनी राधा ने सुनी तो वह एकदम दौड़ती हुई यह कहती चली आई की दुष्ट कंस ने यह अच्छी चाल चली कि भाईयों से भाईयों के सर फुड़वा दिये, और कन्हैया के निकट आकर बोली कृष्ण जो होना था वह हो गया, अब तुम निश्चिन्त रहो, आज से घी दूध मथुरा कतई नहीं जायेगा, यह राधा आज से तुम्हारे सत्याग्रह में शामिल है। मैं नारियों से घर-घर जाकर कहूंगी घी दूध बेचना अन्याय है। और तुम लोग पुरुषों में प्रचार

करना। राधा ने जो वचन कृष्ण को दिया, उसे उसने पूरा किया और घर-घर प्रचार कर घी दूध की बिक्री बन्द करवा दी। ब्रजभूमि की सारी जनता उसी दिन से रुक्मणी कृष्ण की जय न बोल कर राधा कृष्ण की जय बोलती हैं। यही असली प्रेम राधा-कृष्ण का था जिसका रूप आज निर्लज्जता का स्वरूप बन गया है। प्यारे बन्धुओ भगवान कृष्ण का सबसे बड़ा दुश्मन शिशुपाल था। इसलिये कि कृष्ण विश्व सुन्दरी रुक्मणी को हर लाये थे और वह कुंवारा रह गया था। जब राजा युद्धिष्ठिर के यज्ञ में दोनों इकट्ठे हुए तो कृष्ण को सन्मान देने का विरोध, अनेक प्रकार की गालियां बक-बककर केवल शिशुपाल ने ही किया था, परन्तु उसने भी श्री कृष्ण को लम्पट व्यभिचारी नहीं कहा आप भी विचारें अगर कृष्ण अति-स्त्रीभोगी और कामी व्यभिचारी होते तो महाभारत में इस खूबी से पाण्डवों को जिता सकते थे. और गीता जैसी अनमोल पुस्तक सुना सकते थे। जिसे आज सुनकर सारा विश्व हैरान है। यह कार्य एक महायोगी और ब्रह्मचारी ही कर सकता है। भगवान श्रीकृष्ण में यह दोनों ही गुण थे इसीलिए घर-घर पूजनीय हैं। बाकी कृष्ण सुदामा या महाभारत पढ़कर भी आप समझ सकते हैं कि श्री कृष्ण कितने महान थे।

उन्होंने और राधा जी ने घर घर, ग्राम ग्राम प्रचार कर जगह जगह जाकर घी दूध की बिक्री ही बन्द करवा दी। और घी दूध मक्खन सब ही नौ-जवान सत्याग्रहियों को मुफ्त खाने को मिलने लगा जगह जगह अखाड़े खुल गये जहाँ कसरत करके ब्रज का सभी ग्वाल बाल दल और ब्रज की जनता डन्ड पेल पेलकर बड़ी बलवान बन गई। और कन्स के जितने भी सेनापति उनका विनाश करने को आये वह सभी कन्हैया और उनके बलवान साथियों द्वारा मारे गये। उसके पश्चात वह दिन भी आ पहुँचा जब कि श्रीकृष्ण ने मथुरा नगरी में पहुँचकर कन्स को मार कर अपने नाना उग्रसेन यानी कन्स के पिता को राजा बना दिया। ऐसे थे हमारे योगीराज महा बलवान ीकृष्ण बाकी उनके जीवन के कारनामे आपको महाभारत में पढ़ने को मिलेंगे। आप उनकी गीता और महाभारत अवश्य पढ़ें।

श्री गोगा महापुराण ५७वाँ भाग प्रारम्भ

इसी प्रकार हमारे महाराणा गोगा वीर भी कलि काल में दानवीर गऊ भक्त, न्यायकारी महादानी दीन दुखियों के सहायक हुए जो सभी देवताओं में

परम पूजनीय हैं मैं कहता हूं कि इन समान देवता न धरती पर कभी हुआ है और न आगे होगा, जो सब की मनचाही इच्छाओं को पूरा कर दे। इसी देवता को अपनी माता के गर्भ में बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यह सौभाग्य न राम भगवान को प्राप्त हुआ न कृष्ण को न दुर्गा माता को न काली कलकत्ते वाली को, फिर आप ही कहें इन समान पूजनीय और कौन सा देवता है। परन्तु इन महान कहलाने वाले पंडितों ने गलत-सलत प्रकार कर करके इनको इनकी कीर्ति पर धूल फेंकी है जैसे बेवकूफ सूरज पर धूल फेंकते हैं तो लौटकर इन्हीं के मुख पर गिरती है।

वही दशा इन दगाबाज पंडितों की संतानों की भी हुई है। कोई तो बैठा प्याऊ पर पानी पिला रहा है तो कोई बैठा भोजन भवन में रोटियां बना रहा है। कोई मंदिर में बैठा-बैठा ठगाई का कार्य कर रहा है तो कोई मरे गिरे का खाने में मगन है। और जो नेक पंडितों की संताने हैं। उन्होंने व्योपार करना प्रारम्भ कर दिया है। या नौकरी चाकरी करके अपने ग्रहस्थ धर्म का पालन-पोषण कर अपने जीवन को सुख-शान्ति के साथ बिता रहे हैं।

हमारे गोगा राणा और गोरख गुरु की कीर्ति में धब्बा लगाया था। इन धूर्तों की वह धूर्ता लाख छिपाये न छिप सकी, गुरु गोरखनाथ और जाहर वीर को जनता तो महान देवता समझ कर पूजती ही है उन धूर्त पंडितों की सन्तानें भी अपने दुःखों से दुखी होकर और गोगा मेड़ी पहुँचकर गोगावीर से मनचाही मुरादें लेकर लौटती हैं। इन्हीं के बड़े बूढ़े जब उनका सितारा बुलन्द था, घर बाहर में प्रचार किया था। कि गोरखनाथ धन्वेकाज साधू हुआ है और जाहर वीर मुसलमान हो गया था। जो कलमा पढ़कर पृथ्वी में समा गया, हमने तो कलमा पढ़कर धरती में समाता किसी बड़े से बड़े मुसलमान पीर पैगाम्बर को भी नहीं सुना, सब मरने के पश्चात कब्र में ही सुला दिये जाते रहे हैं। हमारे यहाँ क्या कम उपाय है। इन छिछोड़ी बातों को अब जनता भली प्रकार समझने लगी है।

—.——

श्री गोगा महापुराण ५८वाँ भाग प्रारम्भ

भाईयो गोगा राणा के पश्चात इनके पुत्र पौत्रों ने देश को काफी भलाई के कार्य किये। परन्तु उनके परपोत्रों के समय में अपार धन के स्वामी हो जाने के

कारण काम-कामनी का ऐसा चक्कर चला, कि सभी राजे-महाराजे वेश्या गामी होकर नाच-रंग में मस्त रहने लगने। और जिसकी सुन्दरसुता सुनी उसी भूप पर चढ़ाई कर, कहा मारी करके उस सुन्दरी को अपने यहां ले आये और उसे विवाह करके रात दिन मगन रहने लगे अय्यासी का जोर बढ़ता गया ऐसी दशा में भारत में यहां विदेशियों के हमले होने लगे।

प्यारे बंधुओं पैगम्बर मोहम्मद सहाब की मृत्यु के पश्चात उनके सगठन के नेताओं ने अरब के हिन्दुओं को जीतकर उन्हें राजी और नाराजी के संग जैसे भी हुआ पूरे अरब देश को मुसलमान बना डाला इसके पश्चात सन ७११ में इस्लामी हमलावर चोन सीमा में घुसकर अटलांटिक समुद्र तक जा फैला। उसके पश्चात सातवीं शताब्दी में भारत की उत्तरी सीमा में घुसने का प्रयास किया परन्तु वह भारत के वीरों से लड़ाई में विफल होकर उलटे भाग गये, फिर सन ७७३ में अरब के शाह अलहजाज के भतीजे, मोहम्मद बिन कासिम ने अरबों फौज लेकर मुल्तान और सिंध प्रान्त को जीत लिया देश की मदद करने के धास्ते कोई भी हिन्दू नरेश की निद्रा भंग न हुइ परन्तु वह जो सुल्तान नरेश की सुन्दर

कन्या को पकड़कर अपने साथ ले गया था उनकी देशभक्ति की कथा पढ़कर नैनों से नीर टपकने लगता है। जब मोहम्मद बिन कासिम ने अपने सरदारों के संग उन दोनों गिरफ्तार राज कुमारियों को अपने चाचा शहआल हजाज को सेवा में भेज दिया और जब वह दोनों सुन्दरियां शाह के सामने पेश की गई तो उनके सौन्दर्य को देख शाह की आँखें चौंधिया गई और उन दोनों राजकुमारियों पर फिदा होकर बोला नाजनिनो आपकी क्या खातिर की जावे, तो वह दोनों राजकुमारियां अपने नैनों से नीर जारी कर बोलीं हे मुस्लमानों के बादशाह जो अंधेर-गरदी आप के यहां है वह हमारे भारत देश में नहीं है हमारे यहां फतेह करने के पश्चार सेनापति लूटी हुई हरेक वस्तु अपने राजा के सामने पेश करता है। परन्तु आपके सेनापति मोहम्मद बिन कासिम ने हम दोनों बहनों से जबरन भोग बिलास कर हमें आपके पास भेजा है।

अब हम दोनों बहनो में से एक भी आपकी बेगम बनने लायक नहीं रही। अरब पति हजाज को दोनों राजकुमारियों की कथा सुनकर अपने भतीजे मुहम्मद बिन काशिम को हरकत पर बड़ा ही क्रोध आया

और उसके प्रमुख सेनापति को हुक्म दिया कि तुम अभी यहाँ से एकदम अपना कूँचकर के जैसे भी हो मोहम्मद बिन कासिम का शीश काटकर मेरे सामने लाकर हाजिर करो।

शाह का हुक्म सुनते ही प्रमुख सेना पति ने कूँच बोल दिया और आधे रास्ते पहुँचने पर मोहम्मद बिन काशिम से मुलाकात होने पर उसने अपने शाह के कहे अनुसार तलवार के एक ही बार में मोहम्मद बिन काशिम का सिर काट कर अपने शाह के सामने ला धरा तब शाह ने मुस्करा कर कहा हे नाजनीनो अब तो खुश हो जाओ तुम्हारे धर्म बिगाड़ने वाले दुश्मन का सिर तुम्हारे सामने पड़ा है अब इसमें ठोकर मारकर हमारे आगोश में आ जाओ मैं तुम दोनों हम को अपनी प्रमुख बेगमें बनाऊँगा। इतना सुन बहनों राजकुमारियों ने उठकर अपने पैरों से मोहम्मद बिन काशिम के सर को ठुकराया और अरब के शाह से बोली बिना वजह हमारे राज्य को नेश्त नाबूद कर बर्बाद करने का हमको बदला मिल गया और तुझसा बेवकूफ बादशाह हमारे देखने में नहीं आया, जो हमारे झूठ मूठ बहकाने में आकर तूने अपने सगे भतीजे का सिर कटवा लिया तभी

अरब के बादशाह ने हुक्म दिया कि मुझे बेवकूफ कहने वाली इन दोनों राजकुमारियों को जिन्दा ही दीवार में चिनवा दिया जाये शाह की आज्ञा का पालन तुरन्त हुआ और वह दोनों सुन्दरियाँ दीवार में जिन्दा चिनवा दी गई।

श्री गोगा महापुराण ५१वाँ भाग प्रारम्भ

भारत की नारियों ने ही अपना बलिदान देकर सदा देश का मान बढ़ाया है और यहाँ के वीरों ने बेवकूफी के साथ कन्चन कामनी के भोग विलास में लिप्त रहकर ही देश को बरबादकर अपने को मिटाया है। ऐसा कौन कट्टर इन्सान होगा जो इन धर्म की देवियों पर चार आँसू न बहायेगा। अरबों के जालिम नेता का अन्त करने वाली इन दोनों राजकुमारियों को महादेवी के पद से शोभित कर भारत की नारियाँ इन्हें अपने हृदय आसन पर स्थान देंगी। इसके पश्चात् अरब की विजय का कोई महत्व ही नहीं रहा, अरबों ने हिन्दुओं से ही दर्शन शास्त्र, ज्योतिष गणित चिकित्सा पद्धति और शासन की कला सीखी थी इसके पश्चात गजनी के तुर्क सुबुक्तगीन और

उसके पुत्र महमूद ने पंजाब पर हमला कर विजय प्राप्त की उस समय वहां राजा जयपाल का राज्य था उस अकेले का जब कोई बस न चला और कोई भी राजा उसकी मदद को न आया तो वह वीर अकेला ही लड़कर मारा गया और उसका सारा नगर जला कर और सब धन दौलत लूट लिया गया जयपाल को पराजित कर उसने सिन्ध प्रदेश पर भी एक दिन में अधिकार कर लिया, धीरे-धीरे महमूद ने अपने पिता के जीते प्रदेशों को भी हड़प लिया। भारत को अतोल सम्पति का वह स्वामी बन गया साथ ही तलवार के बल पर उसने इस्लाम मत का प्रचार किया और लाखों नर-नारियों को मुसलमान बनाया पर भारत के बेगैरत वीर नरेशों की निद्रा भग न हुई, सारे विश्व को भारत की दुर्बलता का पता चल गया और दुर्बल भारत को लूटने को सभी का मन ललचाने लगा।

दुश्मनों की चढ़ बनी जिसके कारण हजारों महा-वीरों का बलिदान होकर देश का भाग्य फूटता चला गया, और देश पर विदेशी लोग अपने जासूस भेज-भेजकर यहां का भेद जानकर भारत की धन दौलत लूट कर बलवान बनने लगे। आपस की फूट का जो

परिणाम होता है वह हमारे देश को भोगना ही पड़ा और हमें गुलाम भी बनना पड़ा। यह कौन नहीं जानता है।

यह कथा गोरख गुरु की कही हुई है जो एक दम बिल्कुल सच्ची है, और यकीन करने के काबिल है। ऐसा साफ-साफ पोंगापंथी लिख ही नहीं सकते हैं। प्यारे मित्रो आपसी फूट का नाम ही बेवकूफी है अपने भाईयों को लूटना या बरबाद करना अपने पैरों पे खुद कुल्हाड़ी मारने जैसा कार्य है। एक दूसरे से द्वेष करना बड़ी भारी न समझी है। यानि विनाश-काले विपरीत बुद्धि वाली कहावत है भारत में हमलावर विदेशी लुटेरे आते रहे और हमें मामूली मच्छर समझा। उनकी लूटपाट रोकने को कोई भी आगे नहीं आया सब लुटता रहा पर नाच तमाशे तबले शारंगी और परदारा के संग सुख भोगने में ही यह मगन थे। आगे पीछे की न किसी को सुध-बुध थी, न भले बुरे का विचार, उधर जब विदेशियों ने भारत को लूट-लूटकर अपार धन इकट्ठा कर लिया तो फिर फौजें इकट्ठी कर और यहाँ के राजाओं को भयभीत कर या धन मोह का लालच देकर बड़े-बड़े हमले करके बड़ी-बड़ी लूटपाट करनी आरम्भ कर दी। और यहां

के राजा लोग बैठे खुशियां मनाते रहे। और अपने सिंहासन पर बैठे-बैठे ही अपने मंत्रियों से कहते, बड़ा अच्छा हुआ, जो साले का नगर जला कर नष्ट कर दिया। पाजी अपने घमण्ड के कारण, किसी को कुछ समझता ही नहीं था। यह दशा गोगा राणा के आखरी कुटम्बियों की हो गई थी। और उनकी चंदेरी में चन्देलों का राज्य हो गया था। और थानेश्वर में लूटपाट कर लुटेरों ने खण्डर कर दिया था और वह अपार धन और हजारों सुन्दरियों का दासा बनाकर अपने साथ ले गये।

———

श्री गोगा महापुराण ६०वाँ भाग प्रारम्भ

इस गजनवी के दैत्य महमूद गजनवी ने सोलह बार भारत को अपने घोड़ों की टापों से बड़ी बुरी तरह रौंदा और लूटा भी तो क्या इसमें सारा दोष महमूद का ही है। यह अलहदा गामी भारत के बड़े-बड़े नृप संगठन का संतुलन बिगड़ जाने के कारण अ ने भाईयों को लूटते-पिटते देख कोई भी वीर इमदाद को न आया। बड़े बहादुर वीर कहलाने वाले भूप अपनी राज्यसभा में बैठे नाच रंग में ममस्त हुए तमाशा देखते रहे कोई लुट-पिट रहा है तो हमें क्या जो जैसा

करेगा वैसा भरेगा हम वृथा ही पराई आग में कूदें। और अपने वीरों को मरवावें और व्यर्थ की दुश्मनी गजनवी अमीर से मोल लें। जगत के लोग क्या कहेंगे कि यह तो वही कहावत हुई कि आ बैल मुझे मार। भाईयो इसमें महमूद का क्या दोष है इस चमन के रखवाले अगर जागते होते, तो एक आततायी इतनी दूर से आकर और दुर्गम राह का थका-मादा होकर के भी धन धान्य से परिपूर्ण शूरवीर क्षत्री राजाओं के होते हुए, सम्पन्न भारत देश को सफलता पूर्वक बार बार लूटकर अरबों खरबों की सम्पत्ति ले जा सकता था। उसने भारत का धन ही नहीं लूटा, उसने धन लूटने के पश्चात खुलो नर हत्यायें भी कीं, और हमारे धर्म स्थान कहलाने वाले, देवमंदिरों को लूटकर मूर्तियों को भी तोड़-फोड़कर मिट्टी में मिला दिया। लाखों नर-नारियों को गुलाम बनाकर और जंजीरों से बांध कर गजनी के बाजार में ले जाकर दो दो आने में बेच डाला। परन्तु भारत के करोड़ों शूरवीर आपसी फूट के कारण उस लुटेरे का कुछ भी न बिगाड़ पाये। आप कहते हो तीस वर्ष में इस दैत्य के सोलह आक्रमण भारत में सफल हुए हैं। फिर सत्रहवाँ भी क्यों न सफल होगा सत्रहवाँ हमला

उसका गुजरात के विशाल शिव मंदिर सोमनाथ पर होगा जहां का महाराजा भीमदेव है। परन्तु भारत की राजनैतिक दुर्बलताओं के कारण काफिरों का कत्ल करना और उनके देश को लूटकर भारत की सुन्दर लोडियों के लालच बस होकर गजनी के नौजवानों ने अपने सुलतान की राजी-राजी सब शर्तें स्वीकार करलीं। भारत देश का लूटा हुआ अपार धन उस दैत्य के पास था ही। और भारत के लालची लोगों को बसमें करने की कला और हीरे जवाहरात और सुन्दर स्त्रियों का लालच देकर इन्हें अपने पक्ष में करने में वह बहुत ही चतुर था। भारत के ब्राह्मण बनिये क्षत्री बेहयाई का बुरका ओढ़े महमूद की करतूतों का तमासा चुपचाप बैठे देखते रहे। घमण्डियों और खुदगर्जों का जो हाल गजनी के दैत्य ने किया, उसका तमासा सारे संसार ने भली प्रकार देखा।

श्री गोगा महापुराण ६१वाँ भाग प्रारम्भ

जब गोगा राणा के बंशजों में फूट पड़ गई और कतई एका न रहा और सभी चौहन नरेश अपने में मगन रहकर अलग-अलग बंशी बजाने में लग गये तो

दूसरे कमजोर नरेश भयभीत हो उठे, और उनकी फौजों में भी बेचैनी फैल गई, कि कब यह गजनी का दैत्य हमारे नगर को तेहस-नेहस करके और सम्पत्ति को लूट हमारे बाल-बच्चों को मार हमें भी कत्ल कर जावे। इस भय के कारण सारे भारत की जनता बेचैन हो उठी थी।

भाईयो अब जरा लूटे हुए सोमनाथ मंदिर की दशा का भी चित्र देखो सौराष्ट्र के समुद्र तट के निकट वेरावल एक छोटा सा बन्दरगाह है। और भूमि खूब उपजाऊ है। वहां का सौन्दर्य, लीलाधारी की लीलाओं की अनोखी कला का बड़ी खूबी से बखान कर रहा है। वहीं एक विख्यात दुर्ग बना हुआ है। इस दुर्ग के किले के चारों ओर गहरी खाईयां खुदी हुई हैं। और आस-पास विशाल भवन के खण्डर हुए पड़े हैं, कुछ कोण समुद्र में भी घुसे पड़े हैं। यहीं सोमनाथ के विशाल मंदिर की शान-शौकत और टूटे-फूटे मंदिर की कला कौशल का ज्ञान और उसकी महानता के संकेत दिखाई देते हैं ये वही स्थान है जहां कभी सोमनाथ का विशाल मंदिर बना हुआ था। आपसी फूट और आपा-धापी के कारण और अपने अल्ला की आज्ञा का प्रचार कर बेतादाद लूटेरों को संग लेकर

वह भारत में आ घुसा उसने तीस वर्ष तक भारत को अन्याइयों की भांति बड़ी बुरी तरह से मटियामेट किया, उसने सत्रह बार तलवार के बल पर भारत को अग्नि द्वारा भस्म किया। और नगरकोट के मंदिर ढाकर सात सौ मन सोना, आठ सौ मन गिन्नी, दो हजार मन चाँदी और सोने के बर्तन, और बीस मन हीरे-पन्ने लूटे, और थानेश्वर के दो लाख समृद्धशाली नागरिकों को कैद कर उन्हें गजनी के बाजार में लेजाकर दो-दो आने में बेच डाला और मथुरा की लूट में उसे बीसियों ठोस सोने की मूर्तियां हाथ लगीं। उन मूर्तियो के शरीर पर अरबों रुपयों के रतन जड़े हुये थे, और मथुरा नगरी को देखकर उसने विचार किया था यहाँ हजारों महल जो खड़े दिखाई देते हैं जिनमें अधिकतर संगमरमर के हैं यह बेइंताहा धन खर्च करके कई सौ वर्ष में बड़ी मेहनत से बने होंगे उस दैत्य गजनवी ने बड़ी बेदर्दी के साथ उन मंदिरों को खण्डर बना दिया। और अब उसकी क्रूरदृष्टि गुजरात के विशाल सोमनाथ मंदिर पर लगी हुई थी। परन्तु भारत को जनता और राजे महाराजे अब भी अपने राग-रंग में मस्त पड़े सन्ना रहे थे, दैत्य महमूद गजनवो के आक्रमणों से उनके जीवन पर कोई फर्क

नहीं पड़ा था और भारत की जनता तो इन पंडितों के आशीर्वाद को ही भगवान का वरदान समझती थी इसीलिये इन भाग्यहीनों को बेसुमार दुःखों का सामना करना पड़ा है।

श्री गोगा महापुराण ६१वाँ भाग प्रारम्भ

बन्धुओ ! सोमनाथ मंदिर के प्रमुख पुजारी का नाम, गंग सर्वज्ञ था, उनकी आज्ञा ईश्वर आज्ञा के समान ही समझी जाती थी। परन्तु जनता उस समय जैनियों के अलावा तान्त्रिकों और वामपंथियों के जाल में भी फँसी हुई थी। इन अघोर तांत्रिकों के नायक का नाम रुद्र भद्र था। जो त्रिपुरा देवी की उपासना का ढोंग रचकर और भैरवी चक्र चलाकर नित्य ही नई नवेली नारियों से सम्भोग करके अपनी वासना वृत्ति को शान्त करता था। उसका चालुक्य राज्य पर विशेष प्रभाव था, वहां की रानी को रुद्र-भद्र के आशीर्वाद से ही, पुत्र की प्राप्ति हुई थी। ऐसा राजा और वहाँ की जनता को भी विश्वास था। इसी कारण रुद्रभद्र के कहने से, उन्होंने अपनी विश्व सुन्दरी पुत्री चौला को, भैरवी की सेवा के लिए दासी बनाकर, रुद्रभद्र के निकट भेजा था।

चालुक्य वद्दा की ही आज्ञा से, विश्व सुन्दरी चौला को लेकर, उनका अंग रक्षक, सोमनाथ मंदिर के निकट जा पहुंचा। परन्तु रात्रि हो जाने के कारण वह रुद्रभद्र के पास न जाकर, मंदिर में बनी एक कोठरी में ही चौला को ठहरा कर आप भी विश्राम करने लगा। मारूकच्छ के राजा चालुक्य के निर्माल्य सुन्दरी चौला को देखकर, दो अश्वारोही सन्त, उसके निकट आ पहुँचे। और अपने धन के द्वारा उस विश्व सुन्दरी को खरीदने की चेष्टा करने लगे। परन्तु जब उस अंग रक्षक ने साफ इन्कार कर दिया, तो साधुओं ने तलवार निकाल ली। परन्तु युवक भी कुशल खिलाड़ी योद्धा था। उसने युद्ध में एक साधु को जख्मी कर दिया। अपने साथी को जख्मी देख दूसरा साधु आग बबूला हो उठा, और अपनी तलवार लेकर ललकारता हुआ युवक की तरफ दौड़ा। और एक वार में ही युवक को जख्मी कर दिया। परन्तु युवक जख्मी होने पर भी बराबर लड़ता रहा। उसी समय युवराज भीमदेव वहाँ एकाएक आकर उस साधु से लड़ने को तत्पर हो गये। परन्तु वह उजड्ड साधु युवराज से भी भिड़ गया। और इस लड़ने भिड़ने में इन दोनों वीरों के दो-दो हाथ होते, तभी

मंदिर के प्रधान रक्षक गंग सर्वज्ञ शान्त पाप, शान्त पाप, कहते हुए वहाँ आ पहुंचे।

उन्होंने पहले राजकुमार भीमदेव को युद्ध से रोका, फिर साधु को देख भली प्रकार पहचान कर उसे युद्ध करने से रोका। सन्त के भेष में यह कोई और नहीं गजनी का दैत्य महमूद ही था। तभी गंगसर्वज्ञ चौला की तरफ गये। और विचार पूर्वक उन्होंने उसे, भगवान सोमनाथ को अर्पित कर दिया। जब महमूद ने विश्व सुन्दरी चौला के अपूर्व सौन्दर्य को देखा तो उसकी आँखें चौंधिया गईं। और हर कीमत पर चौला को प्राप्त करने का उसने अपने दिल में दृढ़ संकल्प कर लिया। और वहाँ से चल पड़ा।

गंगसर्वज्ञ ने विश्व सुन्दरी चौला को नाचने के लिये तैयार करने को गंगा से कहा। गंगा भी बीस वर्ष पहले इसी तरह और इसी रूप में आई थी। और गंगसर्वज्ञ को प्रधान बने केवल दस ही वर्ष हुए थे उस समय वह नौजवान थे। यद्यपि इन दोनों के विवाह न होते हुए भी, यह पति पत्नी के रूप में यहाँ रहा करते थे। गंगादेवी देवदासी से, गंगसर्वज्ञ की दासी बन गई थी। गंगा ने सर्वज्ञ की आज्ञा पाकर, चौला को नृत्य के लिए तैयार किया। नख शिख से

शृङ्गार करके, चोला रतन मण्डप में लाई गई, सभी उत्सुक दर्शकों की दृष्टि एक साथ उस पर जम गई। तभी गंगसर्वज्ञ ने पुकारा चौला, चौला का दिल धड़क उठा और धड़कते हृदय से उसने गंगसर्वज्ञ की ओर देखा, तभी सर्वज्ञ ने देवता की तरफ हाथ से इशारा किया। तभी चौला ने उठकर देव को प्रणाम किया, और साष्टांग दन्डवत कर, गंगसर्वज्ञ को भी प्रणाम किया। इसके पश्चात वह नृत्य करने को तैयार हुई। वातावरण दूषित था सैंकड़ों नजरें उसी के मुखड़े पर जमी हुई थीं। सिर्फ गंगा सर्वज्ञ की नजरें धरती की ओर थीं। तबले पर थाप पड़ी, तब कोमल चरणों की हल्की ठोकर से सुनहरे घुंघरू बज उठे। छन्न-छना छन्न फिर तो नूपुर की झंकार से वह गोरे लाल चरण, उस सभा भवन में विस्तार पूर्वक आश्चर्य जनक ऊधम मचाने लगे। घुँघरुओं की झंकार लोगों के हृदय में अजीब धड़कन पैदा कर रही थी।

गंगा द्वारा पहनाई जरी की चोली, और कार चोबो के काम का लहंगा और हीरों पन्नों से दमकता सीना,-नीलम से ढकी पतली कमर तथा पैरों की पायल की गति बड़ी तेजी के साथ लोगों के दिलों में

हलचल मचाने लगी। इसके साथ ही संगलद्वीप के मुक्ताओं से सम्हारे कुन्चित केश, वायु में लहरा-२ कर नृत्य की शोभा को बढ़ाने लगे। विश्व सुन्दरी चोला के नृत्य को देख, दर्शक जन घर बाहर की सुध बुध भुला बैठे। उस सुकुमार किशोरी का अद्भुत नृत्य देख, बड़े बड़े कलाकार आश्चर्य करने लगे। सब दर्शकों को ऐसा आभाष हो रहा था कि शरद ऋतु की ऊषा नृत्य करती हुई आकाश से उतर सोमनाथ बाबा के दर्शनों को आई है। नाचते नाचते सुन्दरी चौला का सब ही ज्ञान लुप्त हो गया। उसे सुध ही न रही कि सब ही नरमुण्ड उसी की तरफ ताक रहे हैं। एक बार वह गंगसर्वज्ञ की ओर देख, फिर ज्योतिर्लिंग देवता की ओर मुखकर, अधीरता पूर्वक नृत्य करने लगी। पर्वत से गिरते झरने के समान उसके नृत्य की गति हो गई थी। मृदगवादक हाँफने लगे थे। चौला के चरणों की गति से, सब ही हार मान बैठे थे, धीरे धीरे नृत्य की गति मन्द हुई, और वह स्वर्ग सुन्दरी चौला, हजारों जनसमूह के सम्मुख, बेसुध हो पृथ्वी पर गिर पड़ी। जन-जन की नसों का रक्त जम गया दर्शक फिर उदास हो बैठे के बैठे रह गये गंगसर्वज्ञ ने गंगा को इशारा किया

तब गंगा बड़े यत्न के साथ अपने अंक में भर उसे मंदिर से कक्ष में ले गई । तब गंगसर्वज्ञ अपने आवास में चले गये । सभी के हृदय में कल्पना जागृत हो उठी, ऐसा नृत्य न पहले कभी देखा और अगाड़ी देखने को भी न मिलेगा यह अपूर्व देवदासी निकली ।

श्री गोगा महापुराण ६३वाँ भाग प्रारम्भ

नृत्य के पश्चात सब ही लोग तरह-२ की बातें करते हुए अपने घरों को चले गये । सिर्फ राजकुमार भीमदेव, गंग सर्वज्ञ के सनमुख उदास मुख आसन पर बैठे रहे । जब गंगसर्वज्ञ ने उनसे उनकी उदासी का कारण पूछा तो भीमदेव बोले, प्रभु यह सब ठीक नहीं हुआ ।

आपने उस मलेच्छ को अभय दान देकर चिरंजीवी रहने का आशीर्वाद भी दे दिया सर्वज्ञ मुस्करा कर बोले मैं कुछ समझा नहीं, कि मैंने क्या बुरा किया । भीमदेव बोले हाथ में आये शत्रु को छोड़ देना क्या अच्छा है । बर मैं तो किसी को शत्रु नहीं मानता । भीमदेव बोले भगवन यहाँ वेदान्ती भाषा से कुछ कार्य नहीं सधना, यह गजनी का दंदेत्य सोमनाथ मंदिर पर अक्रामण करे बगैर न माने । गंग

सर्वज्ञ बोले तो फिर भीमदेव ने कहा तो महाराज गुजरात के गौरव को भंग होने दिया जाय । गंग सर्वज्ञ बोले, अगर गजनी का यह महमूद सोम मंदिर पर आक्रमण करेगा यह तुम पहले से ही कैसे कहने लगे । उसके अभियान से गौरव घटेगा या बढ़ेगा यह तुम्हें क्या मालूम । भीमदेव सिर झुकाकर बोले, गुरु देव तीस वर्ष में इस दैत्य ने सोलह बार भारत को घोड़ों की टापों से रोंदा है । हर बार यहां की अपार सम्पदा लूटकर इसने यहाँ की जनता का आगजनी द्वारा बेदर्दी से कत्लेआम भी किया है । गंगसर्वज्ञ बोले तो इसमें सारा दोष महमूद का ही है । तुम्हारे भारत वासियों का कतई दोष नहीं है । जरा विचार करो कि एक आतताई, दूर दराज से, नदी नाले और दुर्गम पहाड़ों को पार करके रास्ते की धूल फांकता हुआ थका मादा, इतने शूरवीर राजाओं और क्षत्रियों के होते हुए भी जो धन जन से परिपूर्ण हैं । उन पर वह सफलतापूर्वक आक्रमण करता है, और धर्म स्थानों को लूटकर यहाँ से लाखों मनुष्यों को गुलाम बनाकर अपने साथ ले जाता है । परन्तु भारत के करोड़ों वीरों की सन्तान होते हुए, इस दुष्ट का प्रतिकार कोई क्यों नहीं करता । तुम्हारा यही हाल रहा तो

सत्रहवाँ आक्रमण भी उसका सफल होगा। वह तुम्हारी गिरावट के कारण को भली भाँति समझता है कि यह हिन्दुस्तानी अपने घर के कमजोर भाईयों से लड़ने में ही मर्द हैं। महमूद के हमलों के सामने तो यह दुम दबाकर भागते फिरते हैं। यह सब आपसी फूट और तुम्हारी बेवकूफी का ही परिणाम है। तुम्हारे भय का कारण है तुम्हारी कायरता और तुम्हारे मन में चोर भी है। क्योंकि जो वीर ब्रह्मचर्य जीवन को तज अपने ऐश आराम में ही मग्न रहकर कमजोर वर्ग को सताने में ही मग्न रहते हैं उन्हें अपमान सहना ही पड़ता है।

तुम महमूद का भय मानकर डरते हो इसीलिये पचासों राजाओं के होते हुए भी एक थका माँदा आतताई तुम सबके सिरों को अपनी लात से कुचलता हुआ अपार सम्पत्ति लूटकर साफ निकल जाता है। राजकुमार भीमदेव इसमें उसका दोष नहीं है। दोष अगर है तो हम भारत के लोगों का जो कामनी कंचन के कारण शराब के नशे में चूर अपना भला बुरा सोचने के काबिल भी नहीं रहे हैं। वह अपने धर्म के अनुसार तुम्हारे पाखंड का खण्डन तुम्हारे देव स्थानों को तोड़ फोड़कर करता है। राज्य करने का उसे

लोभ नहीं है न वह राजाओं के राज्य ही छीनता है। जिस तरह की आप लोग भक्ति करते हैं। वह कोई ठोस कार्य नहीं है। सिर्फ पीतल के ऊपर सोने का मुलम्मा मात्र है। वह भारत की इसी दुर्बलता की नशों से और वहां के बेईमान इन्सानों की आदत से भली प्रकार परिचित है। यह इस संसार का कायदा है कि आदमी छोटे से ही बड़ा बनता है। और बड़ा होने के पश्चात आराम तलब होकर पतन की ओर बढ़ता जाता है। और उन्नति करने वाले उन्नति करते जाते हैं। कभी भारत का सितारा बुलन्द था, अब दूसरों की भी बारी आनी है। बिगड़े हुए लोगों को सुधारना बड़ी मुश्किल का कार्य है। बिना ठोकरें खाये कभी किसी को अक्ल नहीं आती। भारत वालों को भी तब ही अक्ल आयेगी जब यहाँ के लोग दाने दाने को तरस कर मरने मिटने लगेंगे।

श्री गोगा महापुराण ६४वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ ! हिन्दू राजाओं ने सारे संसार में राज्य किया था। क्योंकि उन्होंने कमजोर बनने की नीतियाँ कभी अपनाई ही नहीं थीं। बलवान बनकर ही आतताई को भारी दण्ड देने की नीति पर बढ़

सदा चलते थे, बहु विवाह करके वह अपनी शक्ति को गंवाया नहीं करते थे। यह नीति महाराज शान्तनु के समय से बिगड़नी शुरू हो गई। और अब तक बिगड़ती ही चली आ रही है। आराम तलबी और अय्याशी के परिणाम हिन्दुओं को ही नहीं, मुसलमानों को भी भुगतने पड़े हैं। अरब के मोहम्मद साहब ने जो मत चलाया था उसे ही सब इस्लाम के नाम से जानते हैं। और मोहम्मद साहब को खुदा का बन्दा कहते हैं। मक्का के लोग मोहम्मद के शत्रु बन गये थे। इसीलिये मोहम्मद को भागकर मदीने जाना पड़ा था। इसी दिन से हिजरी संवत् ने जन्म लिया। इस घटना से, उनके जीवन में परिवर्तन आ गया। मदीने में उन्होंने अपने अनुयाइयों का संगठन शत्रुओं से बचाव के कारण ही नहीं किया था। उन्होंने एक पृथक समाज की रचना की थी। और अलग नियम कायम कर, ऐसी संस्थायें कायम कीं, कि बहुत थोड़े समय में सारा अरब इस्लाम के झण्डे के नीचे आ गया।

जब उनकी मृत्यु संवत् ६३२ में हुई, उस समय मुसलमान जाति एक सुसंगठित संस्था थी। मोहम्मद के उत्तराधिकारी खलीफा कहलाये। और खलीफाओं

के आधीन रह कर, मुसलमानों ने अनेक लड़ाइयाँ जीतीं। अरब के पश्चिम में और रूम के उत्तर में, पूरब में ईरान। और दस वर्ष के भीतर ही जहाँ सासनियों का राज्य था। इराक, सीरिया और मिस्त्र को फतह कर सबको अरब में मिला लिया गया। और मुसलमान इन जगहों में बसकर, इस्लाम मत का प्रचार करने लगे। ईरान वालों को विवश करके इस्लाम मत स्वीकार करवाया गया। बहुत से ईरानी लुक छिपकर, भारत भाग आये। जिन्हें अब पारसी कहते हैं। इस्लाम की विजय के साथ साथ ही मुसलमानों में फूट पड़ने लगी। तृतीय खलीफा की मृत्यु के पश्चात, अली को सीरिया का नेता बना दिया, उसे खलीफा नहीं कहा गया। उसने अपने को स्वतन्त्र समझ उमैदाद बन्श कायम किया। और दमिश्क को अपनी राजधानी बनाया। जिससे दोनों वर्गों में युद्ध हुआ, और अली तथा उसके बेटे मारे गये। और उमैदाद बन्श वाले वहाँ, निर्विघ्न राज्य करने लगे। सौ वर्ष के भीतर ही भीतर, अली के बन्शजों ने उमैदों को हरा कर, उनसे खिलकत छीन ली, और राजधानी वहाँ से हटाकर बगदाद में जा बनाई। इसके पश्चात खलीफाओं की शक्ति और

ऐश्वर्य हिन्दू राजाओं के समान ही हो गये थे। और बगदाद में अपने दरबार और महल में हिन्दू राजाओं की सारी शानोशौकत को उन्होंने अपना लिया था। प्राचीन ईरानी सभ्यता के सम्पर्क से, खलीफाओं के मस्तिष्क का भी विकास हुआ था।

उनके ज्ञान की ज्योति जाग्रत हो गई थी। वह विद्वानों की कदर करके उन्हें इनाम इकराम देकर प्रसन्न करने लगे। उन्होंने भारत के पंडितों को भी अपने यहाँ बुलवा कर, संस्कृत के काफी ग्रन्थों का अनुवाद, फारसी भाषा में करवाया था। और अपने मंत्रियों की सलाह से खलीफा हारू रशीद ने आयुर्वेदिक सीखने के लिये अपने विद्वानों को भारत भेजा। और हिन्दुस्तानी वैद्यों को अपने अस्पतालों में प्रधान पदपर नियुक्त किया था। इसी प्रकार अरब में गणित, ज्योतिष, दर्शन शास्त्र का प्रचार हुआ। परन्तु उन्नति करके खलीफा भी भोग विलास के शिकार बन गये। और आराम के साथ वैभवशाली जीवन बिताने लगे।

धन सम्पदा पाने के पश्चात घमंड स्वाभाविक ही हो जाता है। नौवीं शताब्दी तक वह इतने निर्बल हो गये थे कि उनके राज्य का तख्ता डगमगाने लगा

था। जनता में खलीफाओं का शासन नाम मात्र का ही रह गया था। परन्तु सभी प्रान्तों के गवर्नर अपने को स्वतन्त्र समझकर मनमानी करके अपने प्रदेशों को बढ़ाने के लिये युद्ध करने लगे। और खलीफाओं का फारस का राज्य अनेकों विजेताओं के वन्शजों में विभाजित हो गया।

फारस के सासानी राज्य भी इन्हीं के वन्शजों के थे। फारस वालों ने अपने पूर्वजों से राज काज के गुण, और शिष्टजनों जैसी सभ्यता सीख रक्खी थी। परन्तु अपनी सभ्यता और कुलीनता के कारण, उन्हें युद्ध करने के काबिल न रक्खा। अपने को कमजोर समझ उन्होंने मध्य एशिया के कठोर और बलवान, तुर्की योद्धाओं को अपनी सेना का सेनापति, और अपना अंग रक्षक बनाया। महमूद गजनवी भी इन्हीं तुर्कों का वंशज था। जो सासनी राजाओं के नौकर थे। मध्य एशिया की परिस्थिति, इन तुर्कों के अनुकूल थी। आठवीं शताब्दी के आस पास अरब और तुर्कों की शक्ति ने मिलकर, चीन को पराजित कर पीछे को धकेल दिया। मध्य एशिया और अफगानिस्तान के बौद्धों के इस्लाम मत स्वीकार कर लेने के पश्चात, धार्मिक और सांस्कृतिक आन्दोलन

भी उठ खड़ा हुआ। तुर्की योद्धाओं ने गजनी को अपना केन्द्र बनाकर काफी युद्धों में विजय प्राप्त की। अपनी स्वाभाविक वीरता के साथ-साथ फारस वालों जैसी राज्याभिलाषा ने भी घर कर लिया। महमूद का कुछ वर्णन पीछे लिखा जा चुका है। उसके वंशजों का डेढ़ सौ साल तक, लाहौर प्रान्त में अधिकार कायम रहा। और महमूद के बेटे मसूद के शासन काल मे, लाहौर के गवर्नर न्यालतगीन ने बनारस तक आक्रमण करके नगर को विध्वंस किया और काफी लूटमार की। वह सहस्त्रों मदिरों को गिराकर लाखो का धन लूटकर लाहौर लौट आया। लाहौर से गजनवियों के आक्रमण ढीले पड़ गये थे, फिर भी यदा कदा होते ही रहते थे।

इसी समय गज वंश की शाखा से सल्जुकी तुर्क औक्सस पार करके, नीचे उतर आये। और गजनी वालों से फारस का राज्य छीन लिया। उसी समय देहली के शासक राजा महिपाल तोमर ने हाँसी, थानेश्वर और कांगड़ा पर अधिकार कर, लाहौर पर भी, आक्रमण किया। तभी गजनवियों को एक और शक्ति का मुकाबला करना पड़ा जो काबुल के पारसी सीमा से उठ रही थी। अनेकों युद्ध करने के पश्चात

मोहम्मद गौरी ने गजनी पर अधिकार कर लिया। और लाहौर के अन्तिम राजा खुशरू व इसके बेटे को बन्दी बनाकर गोर भेज दिया। और सं: ११९२ में उन दोनों को मरवा डाला। इसी तरह दुश्मनों ने आ आकर काम कामनी के चक्कर में फंसे इन्सानों को मिटाकर, अपना अधिकार कर लिया।

श्री गोगा महापुराण ६५वाँ भाग प्रारम्भ

कार्तिक की अमावस्या को काल भैरव की मूर्ति को स्नान कराने के लिए अन्ध गुफा से निकाला गया। यह कोई साधारण कार्यवाही नहीं थी। इससे आस पास के ग्रामों में खलबली मच गई कार्तिक की अमावस्या को, हर वर्ष ही यह कार्य यहाँ होता था। और यह दिन महा काल रात्रि का माना जाता था। उसे तान्त्रिक यम द्रष्ट्रा अमावस कहकर, इसी दिन अर्धं रात्रि को काल भैरव को, समुद्र में स्नान कराया जाता था। और सर्वसाधारण जन को भैरव के दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होता था। लोगों को यह विश्वास था कि काल भैरव, जिस जन पर प्रसन्न हो जाते हैं। उसके सभी कष्ट मिट जाते हैं। और अपने कष्ट मिटाने के लिये रुद्रभद्र से मन्त्र बिना बोले

ही सौलकर जपना पड़ता है। जब तक काल भैरव को स्नान कराकर, अन्ध गुफा में बन्द न कर दिया जाय। मन्त्र जपते समय एक मिनट को भी होठ बन्द नहीं होने चाहियें। भैरव के नाराज होने पर मृत्यु तक होने का भय रहता है। सन्ध्या होने से पूर्व ही पुत्रवती नारियां अपने पतियों के साथ काल भैरव के दर्शन को बच्चों को घर में बन्दकर चल पड़ती थीं।

अंधेरी रात्रि के वक्त मूर्ति को गुफा से बाहर निकाला जाता था। मूर्ति बड़ी विशाल काले पत्थर पर खुदी हुई थी। उसकी आकृति बड़ी भयावनी थी। उसके पलक नीचे की ओर झुके हुए थे। और मोटे-मोटे होठों के बीच दो नुकीले दांत अपनी चमक अलग दिखा रहे थे। मूर्ति को जन्जीर से बांध रखा था। और पचासों बलिष्ट लोग, उसे पकड़े हुए थे। जनता को विश्वास दिलाया गया था। अगर इन्हें इस प्रकार बांधकर लोग न लावें और चारों तरफ से घेरे न रहें, तो मूर्ति मुक्त होकर लापता होकर लोगों का नाश कर देगी। मूर्ति के चारों ओर प्रसिद्ध तान्त्रिक, नंगी तलवारें लिये चल रहे थे। उनके होठ इस प्रकार हिलते थे जैसे मन्त्र जप रहे हों। इनके हाथों में एक एक छड़ी भी थी। जिन पर रंग बिरंगे

कपड़े लिपटे हुए थे। और कपड़ों में गांठें लगी हुई थीं। जिससे जनता समझे, कि इन गांठों में भूत प्रेत बंधे हुए हैं। जो लोगों के सिरों से, मन्त्रों द्वारा उतारे गये हैं।

यह दुष्ट प्रकृति के भूत प्रेत सुन्दर युवतियों पर, मोहित हो उनके सिरों पर भी सवार हो जाते हैं। और वह नवयुवतियां कभी हंसती और कभी रोकर अनाप सनाप बकती हैं। और बकते-बकते मूर्छित होकर गिर भी पड़ती हैं। आज के जमाने के डाक्टर इसे हिस्टीरिया का रोग बतलाते हैं। उस जमाने में, इसे भूत प्रेत बाधा ही समझा जाता था। और अब भी बहुत से लोग, डाक्टर को न बुलाकर ओझे और तान्त्रिकों को बुला भूत प्रेत उतरवाते हैं। वही भूत प्रेत इन गांठों में बंधे हुए हैं। जो आज काल भैरव के सम्मुख जिन्दे जला दिये जायेंगे। और युवा नारियों और मासूम बच्चों का, इन जालिमों से पीछा छूट जायेगा।

ये भूत प्रेत बड़े मायावी होते हैं। और तांत्रिक की जरा सी गफलत से यह छूटकर भाग जाते हैं। और किसी सुन्दरी के सिर के बालों में जा छिपते हैं जिसके कारण इन ओझा लोगों को दुबारा यत्न

करके, फिर इन्हीं गांठों में कसकर बांधना पड़ता है। इसीलिए इतनी सावधानी से, भूत प्रेत और जिन्नों को बांधा जाता है। इतने दिन आवृष्टी रहकर आज रुद्रभद्र ने दर्शन दिये हैं। जो अपने शरीर पर भस्म लपेटे, त्रिपुण्ड तिलक लगाये, जटा बखेरे, त्रिशूल हाथ में लिये, देवता के आगे-आगे खुली पालकी में चल रहे हैं। उनका अंग जड़ के समान लगता था। केवल होठहिल रहेथे। जिन्हें देखकर जनता भयभीत हो बड़ी श्रद्धा के साथ हाथ जोड़ नत मस्तक हो रही थी।

श्री गोगा महापुराण ६६वाँ भाग प्रारम्भ

इस प्रकार के अन्ध विश्वास और धूर्तों, पाखंडियों के पाखण्ड के कारण, हिन्दू महाराजे और देश की बहादुर जनता, बेफिक्र हो सोती रही और लुटेरे महमूद के जासूस भारत देश में घुसकर किस प्रकार इन धूर्त देशवासियों को फुसला और धन का लालच देकर य ां का पूरा भेद लेते रहे। इस पर जरा विचार कर अपनी भूलों को समझें। सरस्वती नदी के उत्तरी भाग पर, दधिस्थली नामक एक ग्राम था। इससे डेढ़ कोस की दूरी पर, एक प्राचीन शिवालय था कुछ समय से यहां एक सन्त टिके हुए

थे। जो बहुत वृद्ध लगते थे। उनका शरीर पतला दुबला था। सन्त ने मौनी साध रखी थी। और आस पास के चरवाहे वहां आकर, और दण्डवत कर श्रद्धा पूर्वक खाने पीने की वस्तुयें रखकर चले जाते थे। उनके संकेत से उत्तर देने के कारण वह आस पास के ग्राम वालों में, मौनी बाबा के नाम से, शीघ्र प्रसिद्ध हो गये। दिन में कोई न कोई, उनके पास आता जाता ही रहता था। परन्तु रात्रि को उन्हें अकेले ही निवास करना पड़ता था। अन्धेरी रात में जब जंगल सुनसान था, तभी दो घुड़ सवारों ने उस शिवालय में प्रवेश किया।

इतने में एक लुटेरा महमूद और दूसरा उसका साथी समद था। और दोनों ने ही साधू का बाना पहन रखा था। घोड़ों की हिनहिनाहट सुनकर, मौनी बाबा बाहर निकल आये। और घोड़ों को खूंटों से बांध, तीनों आनन्द पूर्वक एक साथ ही आ बैठे। और अरबी भाषा में बात चीत करने लगे। जिसका आशय इस प्रकार था। हजरत अब्बास जख्मी हो गया। फकीर बोला तुमने ऐसी नौबत ही क्यों आने दी सुलतान। नौबत तो आगे भी बढ़ती, पर सर्वज्ञ बीच में आ गया। तुमने सर्वज्ञ को देखा सुलतान, हां भली

प्रकार और भी कुछ देखा और अब गुजरात का राजा चामुन्ड राय न होकर भीमदेव है। पर अफ-सोस यही रहा कि हाथापाई अधूरी ही रही। तो क्या अब्बास उसी के हाथों जख्मी हुआ, नहीं एक दूसरे नौजवान द्वारा, अब यह फरमाइये लाहौर से कोई आया है। हां अली उस्मान का काशिद सन्देश लाया है कि तमाम फौज दर्रा पार कर चुकी है। और जलालाबाद में मसूऊदं तुम्हारे हुक्म के इन्तजार में है। और सुलतान की कोई खबर, शेख ने कहलवाया है कि यदि सुलताना की सवारी सिन्ध होकर गुजरात जायेगी, तो उसे भारी मुकाबला करना पड़ेगा।

इसके माने, माने यही कि राह में जो राजे हैं उनसे युद्ध होगा। तो क्या उन्हें राह पर नहीं लाया जा सकता है। शेख ने काफी कोशिश की परन्तु कामयाब नहीं हुआ। शेख पर फिर खबर भेज दो कि वह उन राजों को राह पर लाये, उसके लिए चाहे कितनी ही कीमत क्यों न चुकानी पड़े, ठीक है। लाहौर के वास्ते क्या हुक्म है। यही कि मसूद गजनी लौट जाय। और आप और शेख यहीं रहें। अब्बास के जख्म भर जायें तो वह भी गजनी चला जाय। और कुछ हुक्म, गुजरात के राजा पर भी नजर

रखनी होगी। और गंगसर्वज्ञ पर नहीं, और कुछ और उस नाजनीन पर भी वह कौन है, यह है सोम-नाथ मंदिर की सबसे बड़ी दौलत। अगर वह आप की आंखों से पल भर के लिये भी ओझल हुई तो अपने सिर पर धड़ नहीं समझना। उस नाजनीन का नाम चौला है। और वह सोमनाथ मंदिर की देव-दासी है। इतना कह महमूद उठ खड़ा हुआ, और बोला मैं गजनी जा रहा हूं, राह में बिखरे फौजी जवान और जासूस अपना कार्य सूझ बूझ के साथ करते रहें। क्या अभी तक हजरत अलबरूनी अनहलपट्टन से नहीं लौटे, रात को लौटे हैं, खबर अच्छी ही लाये हैं।

इस समय वह कहां हैं नदी के उस पार अपनी उसी झोंपड़ी में। ठीक हैं क्या उनके पास घोड़ा भी है। नहीं घोड़ा उन पर नहीं है। तो मैं उनके लिये अब्बास का घोड़ा लिये जा रहा हूं, अब्बास और घोड़ा खरीद लेगा। इतना कह सुल्तान अपने बहादुर घोड़े पर सवार हो नदी पार चल दिया। और अरबी भाषा में वार्तालाप कर और अलबरूनी से भेद ले खुश होकर गजनी को रवाना हो गया।

———

मनाना उचित समझा जिनके साथ उन्होंने भारत को बुरी तरह लूटा और कुचला था ।

उसने ईद की खुशी में अपने सभी सरदारों को बड़ी बड़ी नियामतें खिला पिला कर खूब ही खुश कर दिया। फिर ईद का दरबार करके, दूसरे दिन सुबह ही कूंच का नगाड़ा बजवा दिया । तभी नगर के लोग बाजार बन्द करके, कूंच का दृश्य और विजेता महमूद का अभियान देखने को दूर तक कतार बना खड़े हो गये थे । बहुत सी माताओं की आंखों से मोतियों के समान नीर टपकने लगा था कि उनके गरीब पुत्र वीर क्षत्रियों के देश भारत से बचकर घर आवेंगे भी या नहीं । और वह अबोध युवतियां अपने बच्चों को गोद में लिये, सिसक रही थीं । जिनके पति वीर भारत को लूटने के इरादे से खुद मौत के मुंह में आ रहे थे । कटक का विस्तार काफी लम्बा था । सात हजार तुर्क नंगी तलवारें चमकाते हुए काबुल के कीमती घोड़ों पर सवार थे । और बीस हजार ऊंटों पर सधे हुए चालीस हजार तीरन्दाज थे । मंजिल दर मंजिल तय करता हुआ यह कटक, डेरा इस्माइल खां की तलहटी में आ पहुंचा । यहां की दुर्गम पहाड़ियां बड़ी विकट थीं । जिसके शिखर बारह

मास बर्फ से ढके रहते थे । परन्तु महमूद के मस्तिष्क के कारण, उसकी सेना को कोई खास कष्ट नहीं देखना पड़ा । इसकी खास वजह यह थी कि अफगनी मास में खास बर्फ नहीं पड़ती है । बर्फ जमने से पहले ही, महमूद की सेना ने घाटी को पार कर लिया । उसकी सेना के सिपाही शीत गर्मी दोनों को ही सहने के आदि थे । पहियेदार वाहन इस घाटी को पार नहीं कर सकते थे, इसीलिए अमीर ने ऊँट, खच्चर और घोड़ों से ही काम लिया था । इसके अलावा रास्ते के खूंखार, दरिन्दे पठान दल बांध-बांध कर महमूद के साथ हो लिये । उसके कटक की दिनों दिन बढ़ोतरी होती चली गई । और उसका सारा दल अटक के मैदान में आ टिका ।

श्री गोगा महापुराण ६७वाँ भाग प्रारम्भ

सिन्धु भारतीय सीमा की महा नदी है । महमूद ने सिन्धु पर ही दो दिन विश्राम किया । तीसरे दिन सिन्धु पार करने के लिए, तैयारी की । कछुये और बेड़े उस महा नदी में छोड़ दिये गये । बोझा ढोने वाले ऊंट और भारवाही फौजें नदी पार करने लगीं । घोड़ों और मश्कों पर, नावों पर साहसी योद्धा तैर

तैर कर नदी पार करने लगे। सारे दिन नदी पार करने का क्रम चलता रहा। सन्ध्या के समय अपने दीवान और सेना नायकों के साथ सुल्तान नदी के तीर पर आया। दूसरे दिन दोपहर तक अमीर का सारा लश्कर, भारत की सीमा में आ पहुंचा। इस दैत्य का बिना विरोध के भारत में घुस आना और भारत के वीरों के कान पर जूं भी न रेंगना, कितनी आश्चर्य जनक बात है। सिन्धु के इस पार आकर महमूद की फौजें आराम करने लगीं।

समय अति सुहावना था, महमूद के सरदारों ने शिकार खेलने की आज्ञा मांगी तो उत्तर में लुटेरा महमूद बोला कि काफिरों का शिकार ही हमारा सच्चा शिकार है। सच्चे शिकार को छोड़ कर बेकसूर जानवरों का शिकार करना बड़ा भारी गुनाह है। बड़ो बहादुरो और खुशहाली हासिल करो। इतना कहने के पश्चात उस डाकू ने तुरन्त आगे बढ़ने का अपनी सेना को हुक्म दिया। उसी समय खूंटों पर हथौड़े बजने लगे देखते देखते महमूद का आधा नगर खाली हो गया। और अजगर के समान फुंकार मारती हुई उसकी सेना भारत में इस प्रकार दाखिल हुई जैसे कोई अपने शयन में घुस रहा

हो। अमीर की अवाई सुनकर मुल्तान के चौहान नरेश भारी धर्म संकट में फँस गये। उन्हें अलीविन उस्मान औलिया ने पहले ही सूचना भेज दी थी कि महमूद सुल्तान मुल्तान की राह खुदा का हुक्म बजाने जायेगा तुम उसे जाने देना। अगर तुमने आनाकानी की तो तुम पर और तुम्हारी औलाद पर कहर नाजिल होगा। महाराजा अजयपाल अपने को धर्म संकट में फँसा देख, उन्होंने गुप्त रूप से यात्रा करने की ठानी।

अपने हथियार और एक जानिसार नौकर को अपने साथ ले राजा ने अँधेरी रात में ही लाहौर की राह पर घोड़े छोड़ दिये जब वह औलिया को प्रणाम कर सामने पहुँचे, तो औलिया ने उनसे अधिक बात नहीं की। यह जैसा विद्वान था उससे अधिक दम्भी भी था। फिर इस फकीर को तो महमूद के गूढ़ आदेश भी थे। जब राजा ने विनम्रता पूर्वक अपनी कठिनाई फकीर को समझाई और नेक सलाह मांगी तो औलिया ने सिर्फ इतना ही कहा, खुदा का हुक्म तो हमने तुझे पहले ही भेज दिया था। अब तू जाने कि खुदा का हुक्म मानना चाहिए या कहर की आग में जलना चाहिये। अब अपने घर जा व्यर्थ सन्त को

तंग न कर। औलिया ने फिर एक दम मोहनी साध ली, और उनके भक्त शिष्यों ने, राजा को समझा बुझा कर उल्टा रवाना कर दिया। मुल्तान में वापिस आकर राजा ने राज्य सभा बुलाई, और शिष्ट नागरिकों को बुलाकर सबसे सलाह मिलाई, तो सबने एक मत हो यही कहा, युद्ध करना तो जान बूझकर आत्म घात करना है। इससे हमारे शहर मुल्तान का सर्वनाश हो जायेगा।

हमें तो इसी में भलाई नजर आती है कि, गजनी के सुल्तान की राह न रोकी जाये। औलिया ने ठीक ही सलाह दी है। वह सिर्फ रास्ता ही तो मांग रहा है। हम पर चढ़ाई तो नहीं कर रहा है। औलिया खुदा परस्त फकीर है। और हमारा हितैषी भी, उन की आज्ञा ईश्वर की आज्ञा ही समझनी चाहिये। परन्तु देश के दुश्मन इस प्रबल शत्रु को न रोकना भी अपने देश के साथ पूरी गद्दारी है। हम गोगा राणा के वन्शज हैं। जिनकी विजय का डंका विश्व भर में बज रहा है। उनके पश्चात सब छोटे-छोटे राजा खुद मुख्त्यार बन बैठे, महमूद को राह देना बड़ा भयंकर पाप है। इस समय हमारा देश आपसी फूट के कारण खण्ड-खण्ड हो रहा है। आपके कहने का मतलब तो

यही हुआ कि कमजोर की पत्नी सबकी भाभी। इतना विशाल वीर देश, लुटेरों के हाथ का खिलौना बन रहा है। यह प्यारा देश लुटेरों के हाथ लुट रहा है, यहाँ तो हम सभी जान दे रहे हैं। परन्तु सब वीर हाथ पर हाथ रखे क्यों बैठे हैं। किसी को किसी से कोई वास्ता नहीं है। अगर मैं लड़ता हूँ तो कोई भारतवासी मदद को आने वाला नहीं है। मुझे अपने सर्वनाश की भी चिन्ता नहीं है क्योंकि मैं गोगा राणा का वन्शज हूँ। जिन्होंने धर्म की बेल सदा ही हरी भरी रखी थी। परन्तु मैं जिस प्रान्त का राजा हूँ, उस प्रान्त की जनता को बचाना भी क्या मेरा कर्तव्य नहीं है। अन्त में अजयपाल राजा ने इसी में अपनी भलाई समझी कि महमूद को यहाँ से आने जाने दें फिर जो होगा देखा जायेगा।

श्री गोगा महापुराण ९८वाँ भाग प्रारम्भ

महमूद को गजनी से कूँच किये अभी महीना-भर भी नहीं हुआ था। कि सुल्तान ने मुल्तान में आकर अपने घोड़े की बाग रोकी। रास्ते के सारे संकट झेलते हुए नदी, नाले पार करके दुर्गम राहों

से गुजरता हुआ इतने कम समय में भारत के एक शक्ति सम्पन्न राज्य की सीमा में घुस आना खिलवाड़ नहीं था। मुल्तान सिन्धु तट का प्राचीन नगर है। इसका पुराना नाम मूलस्थान था। जब आर्यों ने भारत में राज्य किया, तब इसका नाम पंचसिन्धू रख राज्य की सीमा कायम की। मुल्तान में सूर्य का एक मशहूर मन्दिर है, यह कभी सारा का सारा सोने का बना हुआ था। परन्तु जब का जिकर हम लिख रहे हैं। उस समय भी उसमें अतोल स्वर्ण था। शायद महमूद लुटेरे को इसकी कोई जानकारी अभी तक नहीं मिली थी। राजा अजयपाल ने गजनी के सुल्तान को बिना शर्त जाने ही नहीं दिया। उस दैत्य को नजर भेंट में बहुमूल्य हीरे भी दिये। और महमूद को नमस्कार भी किया। इसे जिसने भी सुना उसने दाँतों तले उँगली दबाकर कहा बड़े ताज्जुब की बात है कि जिनके वीर बहादुर बाप-दादा चक्रवर्ती राजा थे उसी गोगा राणा का वन्शज होकर इस बहादुर राजा ने दुश्मन को किस प्रकार अपनी सीमा से गुजरने दिया। परन्तु इस चमत्कार के भीतर जो रहस्य था, उसे गजनी का सुल्तान ही सिर्फ जानता था। उसके पास लाहौर वाले औलिया ने राजा को

डराने व बहकाने की सारी खबर दूत द्वारा पहुँचा दी थी। कि मैंने मुल्तान नरेश को भली प्रकार डरा-धमका दिया है। मुल्तान को हरगिज न लूटा जाय।

राजा अजयपाल से दोस्तों के समान ही व्यवहार करके, आगे बढ़ना। महमूद जैसा बहादुर योद्धा था वैसा ही चालाक और दूरन्देशी भी था। मुल्तान नरेश अजयपाल को उसने एक प्रार्थना-पत्र भेजकर बुलाया, और एक दरबार जोर शोर से कर राजा को अपने बराबर बंठाकर भली प्रकार कुशल मंगल पूछा, वास्तव में महाराजा अजयपाल अपने इस कार्य से काफी लज्जित थे। उन्होंने चाहे जितनी होशियारी करके अपने प्रान्त को बचाया था। परन्तु उनका दिल उनसे बार-बार कहता था, अजयपाल तुमने बड़ा निन्दनिय कार्य किया है। तुम्हारे वंशजों को शेर समझ कर ही तुम्हारे बड़ों ने तुम्हें सिन्धू सीमा का रखवाला बड़ी सोच-समझ से बनाया था। सबसे ज्यादा भय राजा को घोघा राणा का था। जिनकी वीरता और बड़प्पन के सामने मुल्तान नरेश सदा झुकते रहे हैं। उन्हें महमूद लुटेरे की वार्ता छुरी के समान उनके हृदय को कचोटे जा रही थी।

उन्होंने पश्चाताप करके अपनी नजर भूमि की तरफ झुका रखी थी।

महमूद राजा के मन के भावों को ताड़कर, खुशामद भरे स्वर में बोला। जिस प्रकार मैं दुश्मनों के लिए सख्त हूं, उसी प्रकार मित्रों के लिये मुलायम भी हूँ। आप से मैं अति प्रसन्न हूँ। आज से आप मेरे पक्के दोस्त हुए। और इसी दोस्ती के सिलसिले में मैं आपको, पंजाब और सिन्ध के सभी इलाकों को सौंपता हूँ। सिन्ध पंजाब के इन इलाकों पर कब्जा हो जाना मुल्तान पति के लिए काफी प्रलोभन था। इससे उनका राज दुगना हो जाता था। परन्तु राजा ने अपनी नजर जमीन से न उठाई। तब महमूद ने गिड़गिड़ाकर कहा, महाराज मेरी नजर भेंट कबूल करके, पक्की दोस्ती कायम कीजिये। तब राजा ने अपना मुँह ऊपर उठाकर महमूद से कहा, यशस्वी सुल्तान यदि सचमुच आप मेरे ऊपर मेहरबान हैं, तो मुझे एक वचन दें, जिससे मैं सुल्तान की दया को स्वप्न में भी न भूल सकूँ।

महमूद ने कहा मेरे दोस्त जो चाहते हो गजनी के सुल्तान से हंसी खुशी मांग लो। तो सुल्तान मेरे इष्टदेव सूर्य के मन्दिर की रक्षा करें, और उसे खंडित

न करके मेरे मुल्तान की रक्षा करें। सुल्तान ने कहा आप निश्चिंत रहें, मुल्तान को लूटा नहीं जायेगा। आप नगर के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों को यहां भेज दीजिये। मैं उनसे थोड़ा-थोड़ा दंड लेकर ही यहां से चला जाऊँगा। राजा ने अपनी गर्दन झुकाकर कहा, परन्तु दूसरी प्रार्थना। महाराज आप भली प्रकार जानते हैं, मैं उस कुफ्र को बर्दाश्त नहीं कर सकता, जो बुत बनाकर पूजा जाता हो। जानता हूँ मेरे दोस्त सुल्तान पर मुल्तान सूर्यदेव के मन्दिर के कारण ही वैभवशाली है। मुल्तान की सारी शोभा और समृद्धि इसी से है। यहाँ दूर-दूर के लाखों यात्री दर्शनों को आते हैं इसी से यहाँ के दुकानदारों की रोटी-रोजी चलती है। नगर के ५० हजार व्यापारी सब बेरोजगार हो जावेंगे। मुल्तान नगर का सारा वैभव ही नष्ट हो जायेगा। इससे बहतर तो यह होगा, सुल्तान मेरा ही सर काट ले। और फिर नगर की लूट-पाट कराकर इसे आग लगाकर भस्म कर दें। इस वीर बहादुर राजा ने अपनी आँखों में आंसू भर कर, उत्तेजना से कांपते हुए ये शब्द कहे। महमूद ने तुरन्त खड़े होकर और राजा का हाथ पकड़ कर कहा, नहीं मेरे दोस्त ऐसा कैसे हो सकता है। महमूद

अपने मेहरवान को कभी नाराज नहीं करत करता। फिर तुम तो मेरे खास दोस्त हो। मैं आपकी बात माने लेता हूँ, परन्तु आपको भी मेरी एक बात मनानी पड़ेगी। सुनिये—लोह कोट और सपादलक्ष और झालोर के राजा आपके निकटतम सम्बन्धी हैं। और घोघाबापा भी आपके बुजुर्ग हैं। आप इन्हें समझा बुझाकर गुजरात जाने का मुझे मार्ग दिलावें। आप मेरा यकीन करें मैं इन नरेशों से भी ऐसी ही दोस्ती चाहता हूँ, जैसी मेरी आपकी हुई है। और मैं आप के हाथों उन नरेशों को आपके द्वारा ही नजर भेंट भी भेजना चाहता हूँ।

मुझे आशा है आपके समझाने से, यह दूरन्देशी नरेश भली प्रकार अपनी लाभ-हानि को पहचान कर, मेरा रास्ता छोड़ देंगे। आपकी इस परेशानी के बदले में मैं सारा पंजाब ही आपके सुपुर्द कर दूँगा। सिर्फ समझाना आपका काम है और मानना न मानना उनका काम है। निरूपाय राजा अजयपाल को, महमूद का कहा स्वीकार करना ही पड़ा। भय और प्रलोभनों के कारण राजा को झुकना पड़ा, महमूद ने राजा को राजी खुशी विदाई दी। क्योंकि उसे राजस्थान की मरुस्थली पार करनी थी। जिसमें

अनेकों भौतिक बाधायें थीं। इस मरूभूमि में सैकड़ों कोस जल का नामोनिशान न था और ना ही कहीं पेड़-पौधों की हरियाली नजर आती थी। सूर्य उदय के पश्चात् अन्धड़ तूफानों के जोर-शोर से रेत उड़-उड़ कर इन्सानों को अन्धा तक बना देता था। इस मरूस्थली के हर मुख पर गोगाराणा के वीर वन्शज चौहान राजाओं का राज्य था। घोघाबापा घोघागढ़ में सतर्क रहकर राज्य काज करते थे। घोघा बापा अजयपाल के सम्बन्धी थे। मुल्तान और मरूस्थली के बीच अजयपाल के भतीजे भीमपाल की चौकी थी। मरूस्थली के तीसरे छोर पर, झालोर के प्रसिद्ध राजा वाक्पती का राज्य था। वैसे महमूद का साहस कम न था, तो भी उसके लिये इन नरेशों की बाधाएं कम न थीं। उसने काफी समझा-बुझाकर अपने सेनापति सालार मसूऊद को बहुत से रत्नमणी देकर अपने लड़ाकू दस्ते को राजा अजयपाल के साथ रवाना कर दिया। समय की बलिहारी और आपसी फूट और आरामतलबी के कारण गोगा राणा का वंशज होते हुए भी राजा लुटेरे महमूद का दूत बनकर अपने देश से गद्दारी करने चल पड़ा। उसके पश्चात् महमूद ने, मुल्तान के प्रमुख नागरिकों को

अपने सामने हाजिर करने का हुक्म दिया। नगरी के सुप्रसिद्ध भद्र लोग डरते कांपते हुए, सुल्तान के सम्मुख ला हाजिर किए गए। जो संख्या में ३१ थे। गजनी के अमीर ने उनसे शांति स्वर में कहा, आप लोग सब मिलकर अगर हमें दो करोड़ रुपया दण्ड दें, तो हम यहां से चले जायेंगे। सुल्तान के सखुन सुन कर नागरिकों ने हाथ जोड़ कर कहा, गरीब परवर हमने आपका कोई नुकसान नहीं किया है, फिर इतना भारी जुर्माना हमारे गरीब नगर पर किस कसूर में किया जा रहा है। इतना भारी दण्ड मुल्तान के गरीब लोग भरने में असमर्थ हैं। अमीर ने उन प्रतिष्ठित लोगों पर जुल्म करना शुरू कर दिया। किसी की छाती पर पत्थर रखवाये तो किसी को धूप में खड़ा करवा दिया। और कहा राजा नगर छोड़कर चला गया है। और सुल्तान प्रतिष्ठित नागरिकों पर जुल्मकर रहा है। यह अफवाह उड़ते उड़ते सारी बस्ती में फैल गई। जनता चारों ओर से आ कर सूर्यदेव के पुजारी सोमदेव के पास पहुँची। सोमदेव सुल्तान के पास गये, पर सुल्तान ने उनके अनुरोध को भी ठुकरा दिया। तब सोमदेव ने मन्दिर की सारी सम्पदा सोना, हीरा, मोती वगैरा देकर बस्ती के प्रतिष्ठित नागरिकों को मुक्ति दिलाई।

श्री गोगा महापुराण ६१वाँ भाग प्रारम्भ

अनायाश ही इतनी अधिक धन-सम्पदा पाकर, महमूद फूला न समाया। अब उसने मरूभूमि की तरफ बढ़ने का इरादा किया। उसने तुरन्त परेड करने का हुक्म फौजों को दिया। और नये सिरे से सारे संगठन को सुधारा नये दलों के नये सेनापतियों को, वोटों द्वारा मरूभूमि पार करने की सामग्री जुटाई।

पांच सौ हाथियों पर खाद्य सामग्री भरी, और दो हजार ऊँटों पर पीने का पानी ले, उसने मरूस्थली की तरफ बाग मोड़ी। मरूस्थली के सिरे पर घोघागढ़ नाम का एक विख्यात किला था। पुराने लोगों का कहना है कि पहले इसका नाम गोगागढ़ था। इसे गोगा राणा ने ऊँची पहाड़ी पर बनवाया था। पीछे बिगड़कर इसका नाम घोघागढ़ हो गया। यह किला काफी महत्व रखता था। इस समय इस किले के गढ़पति चौहान कुल शिरोमणि वृद्ध घोघा राणा थे। उनकी नजर बहुत तेज ओर आवाज वृज घोष के समान थी। घोघा राणा, बड़े वीर और धर्मात्मा थे। अपने गुणों के कारण यह वृद्ध, सर्व साधारण तथा राज घरों में, घोघा बापा के प्रसिद्ध

नाम से पुकारे जाते थे। और मरूस्थली के महाराजा कहलाते थे।

घोघा बापा के परिवार में, पुत्र पौत्र परपौत्र और दौहित्र मिला कर सिर्फ अठासी वीर थे। और सबसे बड़े पुत्र का नाम, सज्जनसिंह चौहान था। आयु पैंसठ को पार कर रही थी। उनमें अपने पिता के तमाम गुण थे। ये भी वीर योद्धा और उज्जवल चरित्र के व्यक्ति थे। सज्जनसिंह के केवल एक ही पुत्र था। और उसकी आयु चौबीस वर्ष की थी। यह युवक अति सुन्दर सुकुमार, और साहसिक वीर था। इसलिये घोघा बापा को सबसे अधिक प्यारा था। और इस परिवार के इष्ट सोमनाथ भगवान थे। घोघा बापा के प्रधान मन्त्री का नाम नन्दीदत्त था। और यह बड़े विद्वान और चरित्रवान पुरुष थे। नन्दीदत्त ही घोघा बापा के मन्त्री पिरोहित, गुरु, मित्र सभी कुछ थे। घोघा बापा जब क्रोध करते तो कोई भी उनके निकट जाने का साहस नहीं कर सकता था।

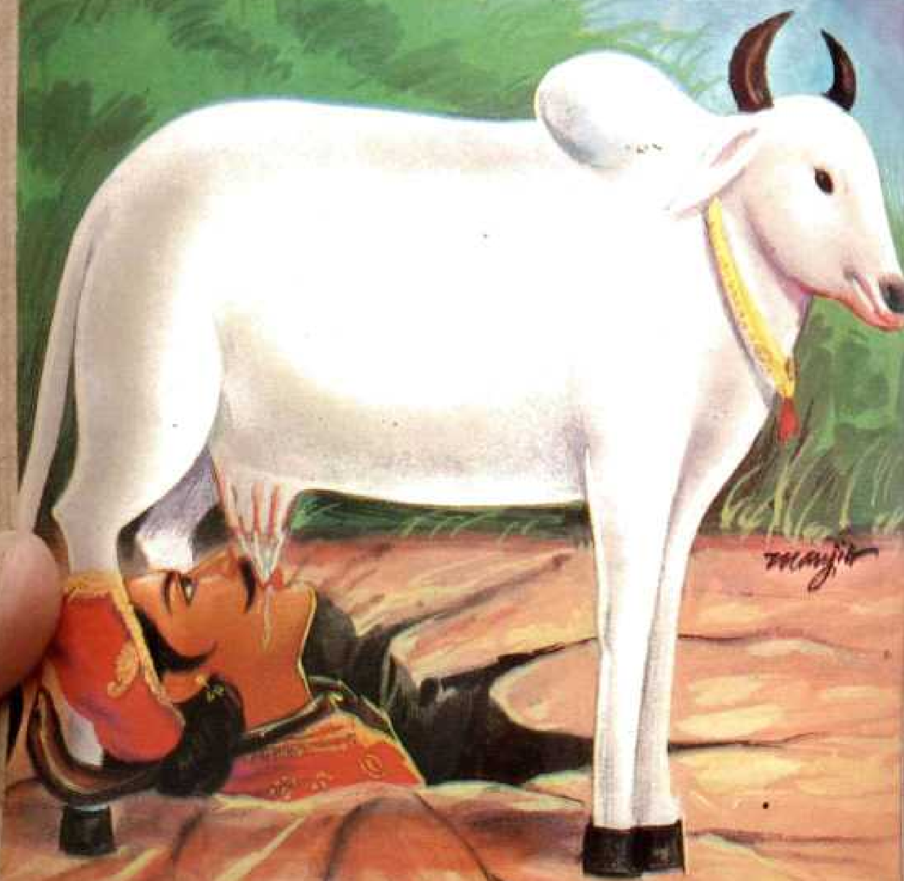
उस समय नन्दीदत्त ही उनके सम्मुख जाने का साहस किया करते थे। नन्दीदत्त ने ही सज्जन और सामन्त दोनों को विद्या और शस्त्र चलाने का ज्ञान

कराया था। घोघा बापा की फौज में कुल आठ सौ राजपूत और चार सौ दूसरे लोग थे और कुल सात सौ के लगभग नारियाँ थीं। और उनके बालक बच्चे भी थे। ये सभी राजा प्रजा के लोग मरूस्थली में, एक परिवार की तरह ही, घोघागढ़ में रहते थे। घोघा बापा अपनी प्रजाके राजा न होकर, उनके पिता के समान थे। सबके परिवार के दुख सुख का वह सदैव ध्यान रखते थे। महमूद का भारत में आना सुनकर घोघागढ़ में भी वीरता के साथ साथ चिन्ता का वातावरण बन गया था। नन्दीदत्त ने घोघा बापा से कहा, महाराज गजनी के सुल्तान ने अपने दूतों को भेजा है। घोघा बापा ने कुछ देर विचार करके कहा दूत भेजे हैं, तो उन्हें यहाँ बुलाओ।

आज्ञा मिलते ही, दोनों दूतों ने आकर नमस्कार किया। जिनमें एक हिन्दू नाई दूसरा तुर्क था। नाई ने हीरों से भरा थाल, घोघा बापा के कदमों में रख दिया। और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। घोघा बापा ने थाल पर निगाह डालकर, फिर उन दोनों पर निगाह डाली। घोघा बापा को अपनी ओर ताकते देख तुर्की भाषा में तुर्क बोला, आपकी वीरताई और बुजुर्गी की यह नजर है। गजनी के सुल्तान

को यह तुच्छ भेंट है। घोघा बापा की मूँछें फड़क उठीं, दोनों दूत तड़प उठे। नन्दीदत्त ने ही उन लोगों से पूछा तुम्हारा सुल्तान क्या चाहता है। आप मरु-स्थली के राजा हैं। महमूद इधर से गुजरने की इजा-जत चाहता है। यह शब्द तुर्क ने आँखें तरेर कर तुर्की भाषा में कहे। जिनका अर्थ हज्जाम ने हिन्दी में किया था। घोघा बापा ने हज्जाम से पूछा यह नौजवान कौन है। तो उत्तर मिला, यह सुल्तान महमूद का सिपहसालार है, और इसका नाम मसऊद है। घोघा बापा ने घूरकर उस दम्भी तुर्क को देखा जो बगल में तलवार दबाये तना खड़ा था। उसे देख घोघा बापा मुस्करा दिये।

तुम्हारा सुल्तान मुझसे गुजरात जाने का मार्ग माँगता है। नाई बोला जी महाराज, घोघा बापा हाथ में नंगी तलवार लेकर यकायक उठ बैठे तो मसऊद ने भी तलवार खींच ली, तभी घोघा बापा का पुत्र सामन्त उछल कर, मसऊद की गर्दन पर सवार हो गया। नन्दीदत्त ने तभी मसऊद से कहा, अपने सुल्तान से जाकर कहो, यही मेरा उत्तर है। और तुरन्त उन्होंने हीरे से भरे थाल को ठोकर मार कर वह वहाँ से चल दिये। राज सभा में वह चमकते



गाय का दूध पीते श्री गोगा जी

ही बिखर कर ठोकरों में पड़े थे। मसऊद के शरीर का रक्त उसके मुख पर आकर जम गया। तब नंदीदत्त ने कहा सामन्त तुम हट जाओ। और रास्ता छोड़ दो। मैं इसे गढ़ के बाहर सुरक्षित छोड़े आता हूं।

आगे आगे वृद्ध ब्राह्मण नन्दीदत्त, और पीछे पीछे मुख लटकाये और उतरा चेहरा लिये, थर-थर कांपता हुआ नाई गढ़ से बाहर निकलकर, मसऊद से बोला, जान बची और लाखों पाये, कुछ समय पश्चात घोघा बापा शान्त चित्त होकर दरबार में आ गये। उनका क्रोध भी शान्त हो चुका था। अभी भी सज्जनसिंह और सामन्त हाथ में नंगी तलवार लिये गढ़ से बाहर मसऊद की सांडनी को, अपने नेत्रों से ताक रहे थे। तभी घोघा बापा ने अपने पुत्र के कन्धे पर हाथ रख कहा, सज्जन जाने वालों को क्या देखता है। आने वालों को देखना। अरे बेटा इन गोगा राणा के वंशजों ने प्राणों के मोह और चमकदार पत्थरों के लालच में, अपना धर्म बेच डाला है, मुलतान और लोहकोट की चौकियाँ टूट गईं। परन्तु अब तक मैं जिन्दा हूं और मरुस्थली के मुख पर मुस्तैद हूं, गजनी के सैन्य की क्या मजाल जो

मेरी भूमि में कदम भी रख सके। परन्तु तू शाकोर पहुंचकर परमार को खबर कर दे। तुझे केवल जाना ही है, लौट कर आना नहीं है। अपनी तलवार को म्यान में मत रखना सीधे सोमनाथ पट्टन पहुंचना, और सर्वज्ञ की आज्ञा से वहीं दुश्मन से युद्ध करना। बेटा अभी तो मैं जिन्दा हूँ, अगर कोई अप्रिय घटना घट जाए तो इसी तलवार से महमूद का सिर काटना और रणक्षेत्र में मर मिटना।

श्री गोगा महापुराण ७०वाँ खण्ड प्रारम्भ

बड़े पुत्र को बिना किसी हिचकिचाहट के रवाना कर छोटे बेटे सामन्त से कहा, बेटा अब तुझे भी जाना होगा। और तेरे यहां से जाने से मेरे प्राण बड़े ही व्याकुल रहेंगे। पर मोह-ममता राजपूतों का धर्म नहीं है बेटा प्रथम कर्तव्य पीछे जीवन है। पुत्र जितनी जल्दी हो सके, तुम अनहिल्ल पट्टन पहुँच कर, चालुक्यराज महाराज चमुण्डराय को सचेत कर दो, कि गजनी का दैत्य आ पहुंचा है। और तू वहीं रह कर, गुर्जरेश्वर के आदेशानुसार भगवान सोमनाथ की रक्षा करना। यहां लौटने की कतई चिन्ता मत करना। इस बार घोघा बापा की आंखों में जल

छलछला आया, पर वह भीतर ही भीतर उसे पी गये। तभी सामन्त सिंह ने हाथ जोड़ कर कहा, पर बापू आप इतना सुन घोघाबापा अट्टहास करके हंस पड़े। और बोले तुझे ऐसे क्षणों में मेरी चिन्ता सता रही है। क्या तूने ही मुझे पाल-पोसकर नब्बे वर्ष का किया है। अरे बेटा तू नहीं जानता कि भगवान शिव ही इस जगत का पालन करने वाले हैं। और वह सदैव ही घोघा बापा के अनुकूल रहे हैं। इतना कह घोघा बापा फिर मुस्करा दिए। और छाती पर पत्थर धर कर बोले, दोनों भाई एक-एक सांडनी लेकर अलग-अलग राह के राहगीर बन जाओ। उन्होंने अपने दोनों होंठ भींचकर और उँगली का इशारा कर, प्राण प्यारे पुत्रों को, अपने से जुदा कर दिया। अपने प्यारे पिता घोघाबापा के चरणों में माथा टेक, दोनों भाई सांडनी पर सवार होकर, अपनी-अपनी राह पर तेजी से चल पड़े। तब घोघा बापा ने अपने मन्त्री नन्दीवत्त को, अपने निकट बुला-कर बड़े प्यार से कहा। गुरुदेव यहां मैं हूँ या आप हैं। अब आप इतने में ही समझ जाइये, गढ़ गजनी का दैत्य मेरा, और अन्तपुर आपका, परन्तु अभी काफी समय है। महमूद को यहाँ आते आते ही एक

पखवाड़ा तो लग ही सकता है। इस बीच हम खूब चौकन्ने रहेंगे परन्तु आपको एक काम करना परम-आवश्यक है। आप इसी क्षण सपादलक्ष पहुंच कर धर्मगजदेव को सावधान करना पड़ेगा। समय विपरीत है। कभी उसकी बुद्धि भी, अजयपाल और भीमपाल की तरह भ्रष्ट न हो जावे। इसलिए और किसी को न भेजकर, आपको इस धर्म कार्य के लिये भेज रहा हूँ। उन्हें इस प्रकार से समझाना, कि अब चौहानों का मुँह और काला न होने पाये। इस कार्य को खूबी के साथ निबटाकर, शीघ्र ही तुम्हें लौटना है। यह न भूलना कि अन्तःपुर आपका है। बाकी की योजना आपके लौट आने पर बनाई जायेगी। नन्दीदत्त कुछ समय खामोश खड़े सोचते रहे। इसके पश्चात् एक पुष्प राजा की पगड़ी पर धरकर वृद्ध राजा को आशीर्वाद दिया। और एक क्षण भी व्यर्थ न खोकर, सांडनी पर सवार हो वह चल दिये। वृद्ध घोघाबापा युवा की भांति कार्य में जुट गये। उन्होंने गढ़वी राघव अश्व पर सवार होकर, सारे गढ़ का निरीक्षण किया। जो स्थान मरम्मत लायक थे, उनकी मरम्मत कराई। और अनावश्यक द्वारों को, ईंट-पत्थरों से भरवा दिया। खाई की सफाई

करवाकर, पुल हटवा दिया। और गढ़ी के दरवाजे बन्द करवा दिये, सिर्फ नाली खुली रक्खी। गढ़ के लुहारों की भट्टियां सुलग उठीं, और ढेरों बरछी, भाले और तलवारें तैयार होने लगीं। और फौजी राजपूत युवक अपनी-अपनी ढाल तलवारें, मांझ-मांझ कर साफ करने लगे। और घोघा बापा पर संकट सुनकर, आस-पास के ग्रामों से हजारों लोग, आ आ कर जमा होने लगे।

कुए, बावड़ी, तालाब सब पाट दिये गये। और अपनी खड़ी फसलों में खुद आग लगादी। दसियों कोस तक, वहां अन्न, जल और घास का नामोनिशान न छोड़ा। गढ़ी के अन्दर जुझारू बाजों के साथ-साथ भजन कीर्तन भी होने लगे, और चौहान वंश की बधुएं, उपवास व्रत करके सोना, चांदी के साथ-साथ हजारों गऊओं का भी दान हंसी-खुशी करने लगीं। वृद्ध घोघा बापा नित्य सुबह-शाम, बुर्ज पर खड़े होकर, दूर दिशा से, गजनी के दैत्य की सेना का निरीक्षण किया करते थे। उनके साथ राजपूत सेनानायक और नगरी के युवा भी थे। आखिर वह दिन आ ही गया, जिसकी प्रतिक्षा थी। अजगर की तरह लहराती हुई, गजनी के दैत्य की, अपार सेना चली

आ रही थी, लुटेरे की सेना का कोई ओर-छोर नजर ही नहीं आता था। घोड़ों के खुरों से उड़ी हुई गर्द ने, आसमान ढक दिया। सिर्फ बिजली की भांति मलेच्छ सेना के अस्त्र-शस्त्र चमक रहे थे। महमूद की सेना को आगे आते हुए देख, घोघा बापा की आंखें आग उगलने लगीं।

उन्होंने चिंतित निगाहों से, सपादलक्ष दिशा की ओर बड़े गौर से देखा। कारण नन्दीदत्त अभी तक लौट कर नहीं आये थे। घोघा बापा ने अपने अन्तःपुर का नाजुक कार्य, नन्दीदत्त के सुपुर्द किया था। अतः उनको महमूद के आने से पहले ही यहाँ आ जाना चाहिये था। बापा विकल होकर, प्रतिक्षा करने लगे। देखते ही देखते, दैत्य की सेना गढ़ी के निकट आ पहुँची। और गढ़ी को चारों ओर से घेर लिया। जैसे नाग कुण्डली मारकर बैठ जाता है। घोघा गढ़ के कंगूरों पर, धनुषधारी निशाने बाज योद्धा जमे बैठे थे। अमीर की बेशुमार सेना निरूपाय थी। उसके हाथी, घोड़े, ऊँट जो आगे थे गढ़ी के परकोटे पर चढ़ ही नहीं सकते थे। कारण घोघागढ़ का अजय किला, दुर्गम पर्वत पर अपना सिर उठाये खड़ा था। दुश्मन का तिलक नामक नाई, घोड़े पर

सवार हाथ में सफेद ऊँचा झण्डा लिये हुए, अकेला ही किले की ओर बढ़ा।

उस समय सूर्य भगवान अस्ताचल की ओर, जाने की तैयारी में थे। शत्रु सेना के एक सवार को आगे बढ़ते देख, वीर गढ़वी ने धनुष पर बाण चढ़ा कर ललकार दी। और कहा पाजी वहीं खड़ा रह, और बोल क्या मरना चाहता है। वह बोला मैं गजनी के सुल्तान का दूत हूँ। आप द्वार खुलवा दें, मैं घोघा राणा से सुल्तान का सन्देश कहूँगा। वीर गढ़वी बोला द्वार तो इस समय खुलेगा नहीं तू यहीं खड़ा खड़ा अपना सन्देश सुना। तो दूत बोला हमारी ओर से राणा जी से आप निवेदन करें, कि आप नाहक का झगड़ा न बढ़ावें, आप हमें राह देकर सिर्फ यहाँ से निकल जाने दें। सुल्तान आपसे लड़ने के वास्ते अपनी फौजें लेकर नहीं आया है। इस पर वीर गढ़वी बोला तू करबद्ध प्रार्थना करने वाला है। कौन, और तेरी हैसियत क्या है। वह बोला मैं तिलक नाई सुल्तान की ओर से प्रार्थना करता हूँ। गढ़वी बोला तू नाई है, और नाई का कार्य सेवा करना है। राजाओं से बात करने का अधिकार तुझे किस बेवकूफ ने दिया तू भाग जा यहाँ से। लेकिन

मैं सुल्तान का दूत हूँ, और उसी की ओर से प्रार्थना कर रहा हूँ। इस पर गढ़वी वीर ने कहा, तो इसका उत्तर मेरा यह बाण और तेरा शीश है। इतना कह कर झण्डे पर तीर छोड़ा जो झण्डे को चीड़ फाड़ करता हुआ निकल गया। फिर वीर गढ़वी गरज कर बोला, मैंने तुझे इसलिए छोड़ दिया है कि तू दूत बन कर यहां आया है। दूत अवेध्य होता है। मरुस्थली के महाराज मलेच्छ को हरगिज राह नहीं देंगे। दूत बिना कुछ कहे सुने चुपचाप पीछे लौट गया। उसी समय दिन छिप कर रात हो गई, और महमूद की सेना में लाखों मशालें जल गईं।

श्री गोगा महापुराण ७१वाँ भाग प्रारम्भ

बड़ी दूर तक अमीर की छावनी छा रही थी। मीलों तक फौजें खड़ी थीं, महमूद बड़ा परेशान था। गढ़ पर चढ़ कर गढ़ को फतेह करना बड़ा ही कठिन कार्य था। घेरा डालना भी व्यर्थ था, घेरा डाल कर भी घोघा गढ़ विजय करना महीनों का कार्य था। और वह वहां अधिक रुकना नहीं चाहता था। क्योंकि आगे उसे खाना पानी, घास, दाना कुछ भी नहीं मिलना था। और वह अपने पास की सामग्री यहां

पड़े-पड़े निपटा देने से आगे सभी मुसलमान फौजों को बिना अन्न-पानी के बेमौत मरना पड़ता। अगले दिन सुबह-सुबह अमीर की फौजें, घेरा हटाकर मरुस्थली की ओर बढ़ने लगी।

तभी वीर गढ़वी ने लपककर घोघा राणा से जाकर कहा, महमूद मरुस्थली में घुस रहा है। घोघा बापा एकदम उठ खड़े हुए, और उन्होंने लपककर अपनी तलवार उठाली। क्रोध से कांपते हुए वह बोले, सत्तर वर्ष से मैं इस मरुस्थली का स्वामी हूँ। आज से पहले मेरी आज्ञा के बिना किसी परिन्दे को भी, पर मारने की यहां हिम्मत नहीं हुई। हमारा एका बिगड़ जाने और आपसी फूट के कारण ही यह महमूद लुटेरा गोगा राणा के वंशजों के हुक्म को ठुकरा कर मरुस्थली में होकर सही-सलामत सिर पर पैर रखकर निकल जाना चाहता है। मेरे जीते जी यह हरगिज नहीं जा सकता है। और वीर गढ़वी से बोले, जा बेटा अब साका रचने की तू ही तैयारी कर, पीछे-पीछे मैं भी आ रहा हूँ। इतना सुन वीर गढ़वी का मुख उतर गया। और घोघा बापा के मन की सारी इच्छायें समझते उसे देर न लगी। उसने हाथ जोड़ कर कहा बापू वैरी की संख्या

तो करोड़ों है, इतना सुनते ही घोघा राणा ने लाल लाल आँखें निकाल कर कहा मैं गोगा राणा का वंशज होकर क्या मैं कायरों की भांति उनकी कीर्ति में आग लगा दूं। दुश्मन की सेना लाखों करोड़ों है, तो क्या मैं अपने कर्तव्य को छोड़कर कायर कहलाऊँ। घोघा राणा की रक्त भरी लाल आंखें देखकर, वीर गढ़वी ने गिड़गिड़ा कर कहा, पिताजी मुझे क्षमा करें. आप की आज्ञा पर मर मिटना मेरा परम धर्म है। मैं घबराहट में श्रीकृष्ण भगवान् के उस गीता वाले उपदेश को भूल गया था, कि हिन्दू जाति अमर है। सिर्फ कपड़े बदलने के समान चोला बदलना पड़ता है। हां बेटा अब तेरी बुद्धि में बात बैठी है। क्या पाण्वों ने कौरवों की सेना को गिनकर लड़ाई लड़ी थी। नहीं पाण्डवों ने गीता के उपदेश पर चलकर ही अपना कर्तव्य पूरा किया था।

इसी प्रकार हमें भी अपना कर्तव्य पालन करके, अपने पुरखा गोगा राणा की कीर्ति में चार चांद लगाने हैं। इसके पश्चात वीर गढवी घोड़े पर सवार हो, रणभेरी बजाता हुआ अपनी फौजों को लेकर चल पड़ा। गढ़वी की सेना की छोटी सी टुकड़ी की जय-नाद से दुश्मन चौकन्ने हो गये। गढ़ी के भीतर भाग

दौड़ मच गई। घोघा राणा के सकल सम्बन्धी बेटे पोते नाती और मित्र राजपूत क्षत्री, महादेव मंदिर के आंगन में आ जुटे। घोड़ों और ऊँटों की हिनहिना-हट से, कानों के पर्दे फटने लगे। घोघा राणा भी अपने नित्य कर्म से निबट कर, उन्होंने भी जरी का जामा पहना। और अपने सिर पर केसरिया पगड़ी बांधी, मस्तक पर कुंकुम का तिलक लगाया। कमर में दुहरी तलवार बांधकर, उनकी खूनी आंखें, नन्दी-दत्त को ढूंढ रही थीं। अभी तक नन्दीदत्त सपादलक्ष से नहीं लौटे थे। घोघा बापा का मस्तक चिन्ता के कारण सुकड़ गया था। वे होठों ही होठों में बड़बड़ाये, गढ़ गजनी का महमूद मेरा, और अन्तःपुर कुल गुरु नन्दीदत्त का। परन्तु नन्दीदत्त यहां कहां हैं। अब अन्तःपुर किसे सौंपा जाये। जब घोघा राणा ने घबराहट भरी आंखों से चारों तरफ देखा, तो सामने से घबराये हुए नन्दीदत्त दौड़ कर आते हुए दिखाई दिये। उनके वस्त्र और मुख सब ही धूल से भरे हुए थे।

श्री गोगा महापुराण ७२वाँ भाग प्रारम्भ

वह सांडनी पर चढ़े चढ़े ही घोघा राणा बोले, महाराज यह सब क्या कहकर दोनों हाथों से अपना

मुँह ढाँप लिया, और साँडनी से उतरकर वह धरती में बैठ गये, और उनके नैनों से नीर बहने लगा। परन्तु राणा उन्हें देखते ही, हर्ष के साथ बड़े उल्लास से बोले, नन्दीदत्त जी ठीक समय पर आ गये, अब काम की बात सुनो क्योंकि समय बहुत ही कम है। परन्तु पहले धर्म गजदेव की वार्ता सुनाओ। नन्दीदत्त बोले, अन्नदाता महाराजा धर्मगजदेव पुष्कर के मैदान में, बैठे दुशमन का इन्तजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा है, अगर महमूद बापा की चौकी लाँघ कर यहाँ आ पहुँचा तो जिन्दा लौटने न पावेगा। घोघाराणा की खुशी का ठिकाना न रहा, तब उन्होंने नन्दीदत्त से कहा, आप हमारे कुल गुरू के साथ-साथ राज्य मन्त्री भी हो, मेरा अंतिम संस्कार आप अपने ही हाथों से करना। और अगर रणभूमि से सज्जन सिंह या सामन्त सिंह दोनों में से कोई भी बचकर आ जाये, तो उनका राज तिलक उसी भांति करना, जैसा आपके पिताजी ने मेरा सत्तर साल पहले किया था। इतना कह उस वीर वृद्ध ने अपनी आँखों से निकला हुआ नीर पोंछ डाला। नन्दी दत्त की धवल दाढ़ी आँसुओं से तर हो गई। उसी समय घोघा राणा ने सिंह बने हुए

चौहान कुल की ललनाओं को कुकुम अक्षत के थाल हाथों में लिये, झरोकों की खाई में खड़े पाया। तब वह उच्च-स्वर से बोले, तुम चलो पुत्रियो, हमें भी आज कैलाश गमन करना है। तुम सब पहले पहुँच कर हमारे आने पर, इसी अक्षत और कुकुम से हमारा स्वागत करना। इस शुभ कार्य में अब अधिक देरी नहीं करनी है। कुछ ही पलों की तो बात है। इतना सुनते ही सभी ललनायें मंगलगान गाने लगीं। नन्दीदत्त ने आगे बढ़कर कुकुम का तिलक राणा जी के भाल पर लगाया, और उच्चस्वर से कहा, नर शार्दूल चन्द्र दिवाकर, तेरा यश सदा अमर रहे। बाहर सेना ने जयनाद किया, और राणा जी ने अश्व पूजन कर, अश्वारोहण किया। तभी महलों से फूलों की वर्षा हुई, और सभी वीर मन्दिर के आँगन में आ-आकर जमा हो गए। राजा जी ने कहा—सेवक व्यापारी और बीमार पहले बस्ती से बाहर सुरक्षित जगहों में चले जायें, और जो भी जीवित रहना चाहे वह अपने स्त्री पुत्रों सहित यहाँ से मनमानी सामग्री लेकर सकुशल चला जाये।

काफी देर परीक्षा करने पर भी, कोई व्यक्ति बस्ती छोड़कर अपनी जान बचाने को राजी न हुआ।

राणा ने जब चारों ओर अपनी नजर दौड़ाई तो, सभी जनता की केशरी पागें सिरों पर बँधी हिलोरें ले रही थीं। तभी राणा ने राघव मल्ल गढ़वी को पुकार कर कहा, राघव द्वार खोल दें, वीर आज से यह गढ़ तेरा हुआ। राघव मल्ल ने तलवार को अपने दांतों में दबा कर कहा, नहीं अन्नदाता मैं तो इन्हीं चरणों में मरूंगा। गढ़ गुरुदेव को ही समर्पित कीजिये। फिर पिरोहित जी से बोले, नन्दीदत्त जी, गढ़ अन्तःपुर और हमारी कुल मर्यादा के रक्षक एक आप ही हो। नन्दीदत्त बिना उत्तर दिये ही, उस भीड़ भाड़ में घुस गये। और अपने युवा पुत्र को साथ लाकर राजा के सम्मुख करके बोले, महाराज मैंने आज तक आपकी सब ही आज्ञाओं का पालन किया है। मैं आपका कुल गुरु भी हूं, मुझे इसी बेला में गुरु दक्षिणा चाहिये। माँग लीजिए गुरुदेव मैं क्या आप की आज्ञा नहीं मानूंगा, ऐसा आपने क्यों विचारा।

नन्दीदत्त बोले तो अन्नदाता यह मेरा युवा पुत्र आपकी शरण है। आपने अपने कुल गुरु को सारे भार सौंप दिये हैं। और मुझे साथ चलने से रोक दिया है, मैं राज आज्ञा पालन करूंगा। परन्तु मेरा यह

पुत्र आपके साथ रक्त बहायेगा। यह शस्त्र चलाने में निपुण नहीं है। पर है तो युवा, शत्रु एकाएक इस वीर की हत्या न कर सकेगा। राणा जी बोले, नहीं नहीं नन्दीदत्त जी क्या आपको अपने वन्श की कतई भी चिन्ता नहीं है। परन्तु महाराज आप निश्चित रहें, वन्श चलाने को मेरा पौत्र मेरे पास है। उसे मैं अपनी छाती से लगाकर रखूंगा। उसकी रक्षा करने वाले भगवान सोमनाथ हैं। राणा जी ने घोड़े से उतर कर, नन्दीदत्त के युवा पुत्र को कंठ से लगाया। और अपनी तलवार, उसकी कमर में बांध दी। फिर उसे घोड़े पर बिठाकर, हाथ का सहारा देते हुए बोले चलो पुत्र जो सौभाग्य मेरे सज्जन और सामन्त को नहीं मिला। वह आज तुम्हें मिलेगा। महादेव की जय जयकार से चारों दिशायें गूंजने लगीं, और चीतकार करता हुआ किले का दरवाजा खुल गया।

तभी विषधर सर्प की तरह फुंकारती हुई, यह मर मिटने वाली छोटी सी टोली, घोघा गढ़ के सिंह द्वार से निकल कर युद्ध करने को आगे बढ़ी। अमीर ने देखा तो वह विमूढ़सा देखता ही रह गया। इस प्रकार अपनी इच्छा से मरने का अर्थ वह मलेच्छ क्या कभी समझ सकता था। परन्तु चतुर रण बांकुरों की तरह

वह छोटा कटक पैंतरा बदल कर घूम गया, महमूद यह कदापि नहीं चाहता था, कि राजपूत पीछे से आ करके उसकी सेना को तितर बितर कर दें। उस ने तुरंत ही रसद और पानी वाले ऊँट और अशरफियों से लदे हाथी, और सेना का एक मुख्य भाग मसऊद हिपहसालार की अध्यक्षता में शीघ्रतापूर्वक, मरूस्थली में प्रविष्ट कर दिया। सेना के दूसरे हिस्से को जिसमें ऊँट हाथी और तीरंदाज थे, अपने प्रमुख गुलाम समरू की कमान में, आहिस्ता आहिस्ता व्यवस्था कर मरूस्थली से आगे बढ़ने की आज्ञा दी। इसके पश्चात उसने चुने हुए, बारह हजार सरदारों को लेकर वह बाज की माफिक राजपूतों पर टूट पड़ा।

गिने-चुने राजपूत चौगने पांच गुने मलेच्छों को मार, आप भी धरासाई होने लगे। अकेले घोघाराणा के सिर पर सैकड़ों तलवारें छा गईं। परन्तु यह तेजस्वी वृद्ध वीर जिस प्रकार वीरता से तलवार चला रहा था। उसे देख गजनी का दैत्य भी हैरान हो गया। उसने बहुत कोशिश की कि वृद्ध राणा को जीवित ही पकड़ लिया जाय परन्तु यह किसी भांति सम्भव न हो सका। राणाजी की केशरिया पाग तलवारों की छाया में चमक-चमक कर उछल रही

थी। इसे युद्ध न कहकर साका ही कहना चाहिये। महमूद के दिल पर इस साके का काफी प्रभाव पड़ा, घोघा राणा के सन्मान में उसने अपनी तलवार भी म्यान से बाहर नहीं निकाली। देखते ही देखते आठ सौ राजपूत और तीन सौ अन्य वीर दुशमन के दस गुने जवान काट कर आप भी कट मरे। जिनमें घोघा राणा के, पुत्र पौत्र, और परिजन भी शामिल थे।

श्री गोगा महापुराण ७३वाँ भाग प्रारम्भ

उधर घोघागढ़ की नारियों में सभी वीर बालायें एकत्रित थीं, आज उनमेंरानी दासी और छोटे-बड़े का कतई भेद-भाव नहीं था। प्रत्येक युवती ने नखशिख से शृंगार कर रखा था और पूजा के थालों को हाथों में उठा रखा था। नारियल रोली और पुष्पों से, अपनी गोदियों को भर रखा था।

अपने कुल पिरोहित नन्दीदत्त के आदेश के इन्त-जार में थीं। तभी नन्दीदत्त ने आकर आवाज लगाई, चलो बेटियो, तुम्हारी भी बारी आ गई। मंगल गान करती और नारियल उछालती, फूल बखेरती हुई घोघागढ़ की सभी वीर बालायें पंक्ति बनाये मानिक

चौक में आकर चिता के चारों ओर खड़ी हो गईं। नन्दीदत्त की आँखों से मोतियों की माफिक टपाटप आँसू टपक रहे थे। उन्होंने भरे मन से सभी के मस्तक को कुमक चन्दन से अर्पित किया। और सभी कुल-बधुओं ने चिता का पूजन कर, सूर्य भगवान को अर्घ दिया। और अपने कुल देवता शिवजी को प्रणाम कर अपने-अपने पतियों के चिन्ह गोदियों में लिये हुए सभी सुन्दरियाँ चिता पर जा बैठीं। नन्दीदत्त का अंग-अंग कंपकंपी के कारण बुरी तरह कांप रहा था। और आंखें बेशुमार आंसुओं से भीगी हुई थीं। तब भी उन्होंने रोते रोते मन्त्र पढ़े, और कांपते हाथों से चिता में आग लगाई। चिता शीघ्र ही अग्नी वाहक घी सामग्री चन्दन के सहयोग से धांय-धांयकर जलने लगी।

कुछ अबोध बालायें वेदना को सहन न कर चिल्ला उठीं, उन बालाओं का दुःख देख-२ नन्दीदत्त भी चिता में कूदने लगे, तभी उन्हें ख्याल आया कि घोघा राणा और उनके साथियों के शव रणभूमि में पड़े हैं। और मुझे ही वहाँ पहुंचकर उनका दाह-संस्कार करना है। परन्तु वह वहीं चिता के निकट भूमि पर गिर पड़े, और वह मूर्छित हो गये।

तभी यवन सैनिक गढ़ में घुस आये, उन्हें किसी बाधा का सामना नहीं करना पड़ा। नन्दीदत्त मूर्छित पड़े कुछ-कुछ होश में आ रहे थे, और पड़े-पड़े ही दुश्मनों की लटपट सुन रहे थे। परन्तु उनमें उठने की शक्ति न थी। और वह फिर मूर्छित हो गये। और जब उनकी मूर्छा भंग हुई तो आठ पहर बीत चुके थे। किसी जीवित जन का वहाँ नाम-निशान भी न था। वह चलकर चिता पर पहुँचे, तो चिता बुझ चुकी थी। और अग्नी अभी गरम थी। फिर उन्होंने देखा कि मन्दिर ढा दिया गया है, और शिव, पार्वती की मूर्तियों को फोड़ डाला है। दुश्मन जलती चिताओं में महिलाओं को देख भयभीत हो वहां से भाग गये। उनके पल्ले कुछ भी न पड़ा, इसके पश्चात् जब नन्दीदत्त ने बुर्ज पर खड़े होकर देखा तो दुश्मन का दूर तक नामोनिशान भी न था। नन्दीदत्त दुर्ग से आहिस्ता-२ उतरकर, दुर्ग से नीचे आ गये। और रणभूमि में पहुंच गिद्ध और कौआ को भगाया, और बड़ी मुश्किल से घोघाराणा का शव लाशों के ढेर में से निकाला। और अपनी पीठ पर लाद उन्हें गंगाजल से स्नान कराकर पवित्र किया।

इधर-उधर से सामग्री एकत्रित कर उनका दाह-

संस्कार किया, सबका दाह-संस्कार करना असम्भव था। इसलिये, हिन्दू-मुस्लिम सभी लाशों को मरुस्थली के रेत में दबा दिया। और अपनी अंजुली में जल लेकर मन्त्र उच्चारण करके तर्पण किया। परन्तु अभी भी इस कर्मनिष्ठ ब्राह्मण का कर्तव्य पूरा नहीं हुआ था। ज्वर की जलन और भूख-प्यास के कारण उसका अंग-अंग बेचैन था। सोलह पहर में ये पंडित मरने-जलने वालों से अधिक यातना सह चुका था। तब भी उसने दुर्ग में आकर, गंगाजल से चिता को ठंडा किया। और अस्थी और राख को वहां से साफ कर मानिक चौक में गाड़ सबका श्राद्ध तर्पण और उनकी मुक्ति के लिये शान्ति पाठ किया।

उन्हें घोघाराणा के वह शब्द याद आ गये कि अनंतपुर आपका और महमूद मेरा, फिर आंखों में आंसू भरकर उन्होने दुर्ग का द्वार बन्द कर पुल तोड़ दिया। अब हम भारत के पतन का दिग्दर्शन कराने का कारण लिखते हैं जो हमें अब से बहुत पहले लिखना चाहिये था। प्रिय पाठक पढ़ें और समझें गोगाराणा के थानेश्वर से चले जाने के पश्चात् हिन्दू समाज में भारी परिवतन हो रहे थे। और उनके पुत्र राजाओं के पश्चात किस प्रकार देश की सभ्यता और विचारों

में परिवर्तन आया, हिन्दू समाज पूर्ण रूप से परिवर्तन के वशीभूत हो चुका था। और हिन्दुओं का दृष्टि-कोण बदल चुका था। और इसके परिणामों पर लोग कतई ध्यान नहीं देते थे, अब आपको भली प्रकार समझ लेना चाहिये कि वर्णन विचारधारा के इस काल में हिन्दू और राजपूत समाज का क्या सम्बन्ध है उसके लक्षण प्रत्यक्ष दिखाई देने लगे थे। और ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, अधिक स्पष्ट होते गये। सब ही राजपूत राजाओं का यह उद्देश्य हो गया कि मैं ही चक्रवर्ती नरेश कहलाऊं, चाहे इसके लिये उपाय करना आता हो या नहीं। इसी कारण से यह राजा लोग आपस में निरन्तर युद्ध करते रहते थे। इन्हें न देश की महिमा से मतलब था और न उच्च-आदर्शों द्वारा अपने कर्तव्य पालन का ज्ञान अपने भाइयों का बलिदान करके अपनी महिमा बढ़ाने के कारण ही यहां होता था दूसरा आदर्श जिसे यह परम-आवश्यक समझते थे, अनेक विधियों के संस्कार करने के पश्चात और तीर्थ यात्रा करके, मन्दिरों और पुजारियों को होड़ा-होड़ी अधिक दान देना रह गया था। इसीलिये यहां मन्दिरों में अपार धन जमा हो गया था। जिसने महमूद गजनवी जैसे लुटेरे के लोभ

को हरा-भरा कर दिया था। स्मृतियाँ जो उस समय से बनीं, उनके कर्तव्यों का भार हिन्दुओं पर ही थोपा गया था।

धर्म का उद्देश्य उच्च-विचारों और चरित्रवान होने का है पर इन्होंने तो मनुष्य मात्र की सेवा करने तक को भुला दिया था। और उसकी जगह अन्ध-विश्वासों ने पकड़ ली थी। समस्त हिन्दू राजे और जनता मतवाली होकर बड़े-बड़े मन्दिरों को बनवाकर और उसमें अपार सम्पदा होड़ा-होड़ी भरकर ही अपने कर्तव्य को पूरा समझने लगी थी। और मरने-जीने दोनों पर ही ब्राह्मणों को दान देने और भोजन कराने में ही अपने और अपनी परिवार की मुक्ति का साधन समझने लगी थी, राजा और सम्पन्न व्यक्तियों ने इन उद्देश्यों के वास्ते अपार धन देकर देश की सम्पदा का कितना भारी दुरुपयोग किया था, जिसकी वजह से देश में अनेक देवी-देवताओं की बढ़ोतरी होती चली गई। सबसे अधिक मन्दिर शिव विष्णू और दुर्गा के देश में बने उस काल के अनेकों शिला लेखों से पता चलता है, कि तीर्थ-यात्राओं और ब्रह्मभोजों के दान-दक्षिणा में धन और समय का कितना दुरुपयोग उस समय होता

था। ब्राह्मणों के बहकावे में आ कर राजपूत राजा उनका पूर्ण विश्वास करने लगे थे कि हमारा भारत परमात्मा का चुना हुआ देश है जो एकदम सुरक्षित है, भगवान हमारे मन्दिरों में विराजमान होकर हमें धन-सम्पदा देने की नित्य दया करते हैं। जनता के दिलों पर अपना सिक्का जमाने के लिये, अनेक ग्रंथों की रचना करके, हर मनुष्य की जाति अनुसार नियम बना दिये थे। जिससे कोई जरा भी इधर-उधर न हो। किन्तु ब्राह्मणों ने अपने लिये सारी ही सुविधायें रखी थीं। भारत के लोग उनके कहे को ब्रह्म वाक्य समझ उन्हें धर्म का ठेकेदार ही समझने लगे थे उन्होंने ऐसी रचनायें रचीं जिससे जातियों का परस्पर मेल और शादी, विवाह आदि सभी असम्भव हो गये।

श्री गोगा महापुराण ७४वाँ भाग प्रारम्भ

खाने पीने की अनेक वस्तुओं के साथ-साथ दूसरी बातों का भी निषेध किया गया था। जैसे शूद्र कह-लाने वाली जातियों को, धार्मिक ग्रन्थों का पढ़ना तथा पवित्र स्थान और मन्दिरों में जाना या कुएं से पानी भरना तक वर्जित किया गया था। इसके

अलावा और भी बन्धन लगाये गये थे और जब हमारे गोगा राणा और गोरख गुरु ने इन बन्धनों को देखा और समझा, तो बड़े ही ताज्जुब के साथ वह अपने दोनों हाथ मलकर पछताने लगे। इन दोनों गुरु चेलों ने जब इन ब्राह्मण कहलाने वालों की बातों का उल्लंघन कर, देश हितैषी अछूत उद्धारकों के साथ और भी जो धर्म के कार्य किये, पण्डितों ने उनका अधिक विरोध किया। उसे आप हूणों और शकों वाली कथा में पढ़ ही चुके हैं। गोगा राणा की पल्टन में रतना भंगी और भज्जू मोची जैसे अनेक अधिकारी थे। इनका जिक्र तक पण्डितों ने अपने किसी धर्म ग्रन्थ में नहीं किया है।

यह इन्हें झूठा बदनाम करने की कोशिश में तनिक भी नहीं चूके हैं। यह सब पहले ही आप पढ़ चुके हैं, इन पण्डितों ने ही अपनी ना समझी और घमण्ड के कारण ही हिन्दुओं के एक बड़े भाग को पतित जीवन जीने के लिये विवश कर दिया और इस समाज को टुकड़ों में बखेर निर्जीव बना डाला. और समुद्र पार देश विदेशों में जाने पर पाबन्दी लगा दी, कि विदेश की यात्रा करने से जाति भ्रष्ट हो जाओगे। और जाति वाले तुम्हारा हुक्का पानी बन्द कर देंगे।

जाति बन्धन इतने जटिल बना दिये गये थे कि अपनी गलती से या बेबसी के कारण भी जो एक बार जाति भ्रष्ट हो गया, वह किसी भी भाँति पवित्र नहीं किया जा सकता था। धर्म के नाम पर और भी कुरीतियाँ लोगों पर लगा दी गई थीं। जैसे सती होना, विधवा विवाह न करना, बाल विवाह को कुलीनता का अंग समझना, नारियों को पर्दे की प्रथा वगैरह जो समाज को पतन की ओर धकेलने के सभी लक्षण थे। इस का राजनीति पर बुरा प्रभाव पड़ा। और राजा लोग अपने आदर्शों को भुला अदूरदर्शी बन गये।

जिसकी वजह से ब्राह्मणों को अनेक अधिकार दे देकर, अन्य जातियों की स्वतन्त्रता के, अधिकार छीन मन्दिरों में अपार धन देकर मन माना व्यभिचार और अनाचार किया जाने लगा। दान में धन देने से अनुचित कार्य को भी उचित समझा जाने लगा। इसका जो परिणाम निकला उसे ध्यान देकर पढ़ें। अब हम शाही वन्श के, शासकों का हाल लिखते हैं कि जो कुशनों की संतान थे। और उनका राज्य हिन्दुकुश पर्वत के दक्षिण में, काबुल की घाटी और पंजाब के एक भाग पर था। सौ वर्षों से अधिक के संघर्ष के पश्चात, अरबों ने काबुल पर कब्जा कर

लिया । सन ८५०' में तुर्की शाही शासक को, उसके एक ब्राह्मण मन्त्री ने गद्दी से उतार कर ब्राह्मण शाही वन्श की नींव डाली ।

पहले इस शाही वन्श की काश्मीर से मित्रता थी, परन्तु अब वह जाती रही थी । शाही राज्य के उत्तर पूर्व में काश्मीर का राज्य था, जिसको उसके अंतिम शासक ने सन् ८८३ में छीन लिया । ऊपर ब्राह्मण शाही वन्श के विषय में वर्णन आ चुका है । जिसकी राजधानी सिन्धु नदी के तट पर थी । उसी समय पर खुराशान के शासको के एक तुर्की अफसर ने गजनी में एक स्वतन्त्र राज्य की नींव डाली, और अपने स्वामी के, प्रदेशों को हड़पकर शाही वन्श के साम्राज्य में वह घुसने लगा । जो काबुल के समीप जलालाबाद से लेकर कांगड़ा और सरहिन्द तक फैला हुआ था, तभी शाही वंश के शासक जैपाल और गजनी के राजा सुबुक्तगीन से भारी युद्ध हुआ जिसमें राजा जयपाल हार गया । और उसे अपने प्रदेश का बड़ा हिस्सा सौंपकर सन्धि करनी पड़ी । सन् ९९७ में सुबुक्तगीन मर गया । तब उसके शासन की बागडोर उसके बेटे महमूद ने संभाली । जिसने सीस्तन को जीतकर अपने राज्य को मजबूत किया । महमूद में

अन्दर वीर योद्धा और जनता का नेता बनने के सभी गुण विद्यमान थे । और राजाओं को जीतकर लूटमार करने की अभिलाषा कभी भी उसकी तृप्त होने वाली नहीं थी । भारतवर्ष के मंदिरों में बेतहासा दौलत जमा है ऐसा सुनकर, और उस पर कब्जा करने का भूत उसके सिर पर सवार हो गया ।

सन् एक हजार के आरम्भ में, उसने भारत पर धावा बोल दिया । महमूद गजनवी का खास उद्देश्य मध्य एशिया और उसके चारों तरफ विशाल राज्य कायम करके, अपनी राजधानी गजनी को, बढ़िया से बढ़िया कीमती वस्तुओं से सजाने की उसकी अभिलाषा दिनोंदिन, बलवती होती गई । जब उसे उसके जासूसों द्वारा पता चला कि भारत में बेतहासा धन सुरक्षित है, और उसे सरलता से प्राप्त किया जा सकता है । भारत के राजा अय्यास और ऐश परस्त बुजदिल हैं, और रात दिन आपस में ही लड़कर एक दूसरे की बहन बेटी को जबरदस्ती उठा ले जाते हें । और उस नवयुवती को अपनी दुल्हन बनाकर उसी के साथ रात दिन भोग विलास में लिप्त रहकर, मजे उड़ाते हैं । उन्हें दीन दुनिया से कोई गरज नहीं है । हर एक अवसर पर महमूद ने भारत पर सोलह

बार आक्रमण किया, और भूखे नंगे गुण्डों को धार्मिक उत्तेजना के साथ साथ भारत को लूटने का लालच और नाजनीनों को लौंडी बना कर लाने की इच्छाओं को अधिक बलवती कर दिया। मध्य एशिया के ठंड सहने वाले भूखे नंगे रहने के कारण जान पर खेल जाने वाले यह लोग थे। जो मंदिरों को तोड़ने फोड़ने और उनको नष्ट करने में सबसे आगे रहते थे, और ऐसे कार्यों से उन्हें रत्ती भर भी दुख नहीं होता था। परन्तु महमूद यह सब कार्य धन के लिए ही करता था।

धर्म और मजहब की दीवार उसकी एक राजनैतिक चाल थी। इसी चाल के कारण उसके धर्मान्ध सैनिकों के हृदय में उसके प्रति श्रद्धा बढ़ती रहती थी। उसे उसके साथी काफिरों को मार कर उनके मंदिरों को तोड़ने के कारण गाजी कहकर पुकारते थे। चौथाई शताब्दी तक वह दैत्य, उत्तर भारत के मंदिरों पर आक्रमण करता हुआ, कन्नौज और कालिंजर तक पहुँच गया। आखिर मे सन् १०२६ में उसने काठियावाड़ के सोमनाथ मंदिर पर आंख गड़ाई जिस का वर्णन पीछे किया जा चुका है। और कुछ आगे किया जायेगा।

श्री गोगा महापुराण ७५वाँ भाग प्रारम्भ

अब हम जब का वर्णन कर रहे हैं, जब चामुण्डराय अनहिल्ल पट्टन की गद्दी पर विराजमान थे। और सारे भारत में गुजरात का राजा बलवान और शौर्यवान प्रसिद्ध था। और गुजरात की राजधानी अनहिल्ल पट्टन एक धनी व्यापारिक नगर था। परंतु चामुण्डराय में, सोलंकियों की राजधानी की मर्यादा रखने की शक्ति नहीं थी। वह एक कम हिम्मत और कच्चे कानों का व्यक्ति था। और खुशामदी टट्टुओं और खवासों की जी हजूरी में घिरा रहता था यह लोग राजा से झूंठ सच बोल सदा अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते थे। राज्य में काफी अंधेरगर्दी थी। और प्रजा के दुख दर्द की कोई सुनने वाला नहीं था। राजा का मन राजकाज में न लगकर, नाच गानों और ऐश आराम में लगा रहता था। भाण्ड, वेश्याओं और लुच्चे लफंगे मंत्री लोग उसे सदा घेरे रहते थे।

खेल तमाशों से जो समय बचता था, उसे वह सुन्दर युवतियों के साथ शराब पीकर रनिवास में व्यतीत करता था। राजा ने वोंकण शाह नामक एक वणिक को मन्त्रीपद की पाग बंधवाई थी, जो एक

महा काइयाँ बनिया था। उसे राज्य को स्याह सफेद करने के अधिकार प्राप्त थे। वह सम्पूर्ण राज्य का भार अपने कंधे पर उठाये, मन चाही लूट पाट करके अपना उल्लू सीधा करता था। उसके आधीन कर्मचारी प्रजा को सता कर अपनी जेबें भरते थे। राजा को बाजीगर की भांति नाच नचाकर उसे हीरे मोतियों की जड़ाऊ पोशाक पहनाकर, बड़े छोटे कर्मचारी अज्ञानी राजा की सिधाई का लाभ उठाते थे। भूदेव ज्योतिषी और रम्माल राजा को खूब भरमाते थे। राजा खूब खर्चीला हो चुका था। वह सदा एक के स्थान पर दस खर्च करने के मूड़ में रहता था। लालची लोगों की नजर सदा राजा के खजाने पर लगी रहती थी। और राजा अफीम की पिनक में पागल की तरह ऐंठा रहता था। जिसके हाथों में गुजरात की प्रक्षा का भार था, उसकी दीन दशा और देश की दुर्दशा की रक्षा भला भगवान भी किस प्रकार करे। इस राजा के बड़े बेटे का नाम वल्लभ देव था। जो समझदार और वीर धीर युवक था। परन्तु जी हजूरियों द्वारा उसके खिलाफ नित्य राजा के कान भरे जाते थे।

राजा को समझाया गया था, कि युवराज वल्लभ

देव आपको मारकर राज्य लेने की खटपट में रहता है। इसीलिये राजा अपने पुत्र को सदैव अपने से दूर रखता था। और युवराज के दूर रहने से जी हजूरियों का मतलब सधता था। राजा के छोटे पुत्र का नाम दुर्लभ देव था। यह दुष्ट स्वभाव का ढोंगी अत्याचारी और निष्ठुर स्वभाव का था। वह जी हजूरियों से कुछ भी नहीं कहता था। इसलिये लुटेरे अधिकारी उसी का पक्ष लेकर उसकी बड़ाई किया करते थे। तीसरे भीमदेव थे जो प्रसिद्ध धनुरधारी और उत्साही योद्धा और विवेकी तरुण थे। युवराज और वल्लभदेव में काफी मेल जोल था। और यह दोनों चाचा, भतीजे इस अन्धेरगर्दी से असन्तुष्ट होकर एकान्त ग्राम में निवास करते थे। गुजरात की इस दशा को सुनकर ही महमूद बब्बर पठानों के दल को लेकर गुजरात को दलित करने के लिये चला आ रहा था।

यह खबर देने को घोघागढ़ का राजकुमार अपनी सांडनी लिये मंजिल दर मंजिल तय करता हुआ राजा चामुण्डाराय के दरबार में आ पहुँचा। राजा ने पूछा कौन है, तो महता ने कहा मेघराज यह सामन्त सिंह चौहान है। घोघाबापा का छोटा पुत्र, यह आठ दिन

से यहाँ आपके दर्शनों के लिये भटक रहा है। राजा के मुख पर वात्सल्य की प्रसन्नता छा गई, उन्होंने दोनों हाथ फैलाकर कहा, आ-आ पुत्र आहा घोघा-बापा को काफी दिन से देखा नहीं है। तू आठ दिन से भटक रहा है। हे हरामखोरो, दामोदर बोला महाराज विपत्ति सर पर है। महाराज सामन्त सिंह घोघाराणा का सन्देश लाये हैं। क्या सन्देश लाये हो पुत्र, सामन्त सिंह बोला महाराज गजनी का महमूद नगर गाँव जलाता नरनारियों को तलवार के घाट उतारता हुआ, गुजराज की तरफ बढ़ा चला आ रहा है। राजा बोला गुजरात की ओर, महता ने कहा महाराज पहले पूरी बात तो सुन लें। सामन्त ने कहा, मेघराज उसने मुल्तान वालों को डरा-धमका कर, अब घोघागढ़ में आ कर उसने राणा से राह मांगी है।

वह मरुस्थली पार करके, सपादलक्ष में आना चाहता है। तो क्या घोघाराणा उसे राह देंगे, सामन्त ने कहा, उन्होंने तो उसके हीरों से भरे थाल में लात मार कर कहा, यह लात ही घोघाराणा का उत्तर है। राजा सारी बातें सुन और समझ, बालक की भाँति रो पड़ा, फिर मुस्कराकर बोला ठीक ही



हुआ क्या मैं घोघाराणा की आदत जानता नहीं हूँ। परन्तु महाराज, मुल्तान के राजा अजयपाल और लोहकोट के भीमपाल ने लालच और भय के कारण दुश्मन को राह देदी है। बापा ने कहा है, जब तक मरुस्थली के मुख पर मेरी चौकी है, मरुस्थली में पंछी भी पर नहीं मार सकता है परन्तु फिर भी महाराज सावधान रहें, मुझे इसीलिये उन्होंने यहां भेजा है। तो ठीक ही किया। फिर बालुकाराय की ओर मुख करके कहा, बालुके बेटा इस गजनी के दैत्य को मार भगावे, बालुकाराय चुपचाप खड़ा राजा की तरफ टुकर-टुकर देखने लगा। इसी बीच राज्य में दुर्घटना घटी और राजा चामुण्डाराय की हत्या कर दी गई। जिसकी वजह से वीकमशाह और दुर्लभ देव पकड़े गये। अपराधियों को हिरासत में ले लिया गया और विमल देव शाह को महामन्त्री के पद पर विराजमान कर दिया गया।

श्री गोगा महापुराण ७६वाँ भाग प्रारम्भ

सांभर और अजमेर का मिला-जुला हिस्सा उन दिनों सपादलक्ष ही कहलाता था। सांभर तो गोगा-राणा के बाबा के जमाने से भी बहुत पहले की बसी

बस्ती थी और अजमेर की बस्ती नई ही बसी थी। और चौहान नरेशों ने इस स्थान को युद्ध उपयोगी समझ पहाड़ियों पर बसे अजमेर को ही अपनी प्रमुख राजधानी बनाया। उन दिनों चौहान नरेश धर्मगजदेव का अजमेर में भी शासन था धर्मगजदेव बड़े साहसी और वीर योद्धा थे। अजमेर अरावली पर्वत राजस्थान का मुख्य केन्द्र है। यह नगर पर्वत श्रेणियों से घिरा होने के कारण एकदम सुरक्षित है। जब धर्मगजदेव को पता चला कि राजस्थान की मरुस्थली पार करके गजनी के दैत्य को अजमेर अवश्य ही आना पड़ेगा। इसलिये राजा अपने को राजस्थान का रक्षक समझ सर्वंव चौकन्ना रहता था।

धर्मगजदेव को जब यह पता लगा कि महमूद बर्बर तुर्कों के दल के साथ मारवाड़ की स्थली को पार करके, अजमेर की तरफ चला आ रहा है। तो राजा ने बिना विलम्ब किये उसके सम्मुख लड़ने की तैयारियां शुरू कर दीं। महमूद से मुठभेड़ का राजा के वास्ते यह प :ला ही अवसर नहीं था। इससे पहले भी वह दो बार इस दैत्य से लड़ चुका था। राजा जैसा रणशूर था, उसी तरह राजनीति में भी वह होशियार था उसने अपना सभी कीमती सामान और

खजाना, बीटली के किले में बन्द करवा दिया। और काफी समय तक चलने वाली रसद उसने अजमेर के किले में जमा करली, और ग्राम-ग्राम ऐलान करवाकर उसने सभी जनता को सावधान कर दिया। जिन ग्रामों को नुकसान पहुंचने का खतरा था, उन्हें खाली करवा दिया। रास्ते के कुएँ, तालाबों और पुलों के मार्ग सभी तोड़ फोड़ कर पटवा दिये। और घाटियों को भी बन्द करवा दिया। बकाया फसलें जला दीं। और बहुत कम समय में सारा इन्तजाम करके अजमेर के बाहर आकर अपनी छावनी बनाकर, डेरे तम्बू गड़वा दिये।

राजा धर्मदेव के ऐलान पर तमाम ग्राम निवासी अपने हल बैल छोड़कर अपने धनुष-बाण के साथ-साथ बर्छी, भाले और अन्य हथियारों को लेकर आततायी मलेच्छ से लड़ने को मैदान में आ जुटे। और आस-पास के जमींदार, ठिकानेदार और राजा के सभी सम्बन्धी राजे महाराजे धर्मगज की सहायता को, अजमेर में आ बिराजे। चारों ओर से चौकी पहरे का प्रबन्ध कर राजा ने फौजों का निरीक्षण कर, उसके विभाग बनाये। इसके पश्चात् अपने अनुभवी दूतों से अमीर की अबाई की खोज-खबर लेने को

भेजा। और खुद सावधान रहकर उस दैत्य के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

महमूद मंजिल दर मंजिल तय करता हुआ, अजमेर की सीमा में आ घुसा। और उसने पुष्कर के नजदीक अपनी छावनी डाली। राजा धर्मगजदेव यह खबर सुनते ही पुष्कर की तरफ बढ़े और पुष्कर के पवित्र तीर्थ के जलाशय पर अपना अधिकार कर, सेना को युद्ध के लिये तैयार रहने का हुक्म दे, और छावनी छवाकर महमूद की गतिविधियों का निरीक्षण करने लगे। महमूद भी चौहान नरेश के पराक्रम से भली भाँति परिचित था। और वह युद्ध को टालने के वास्ते काफी इच्छुक भी था। उसने मैत्री सन्देश लेकर मुल्तान नरेश अजयपाल, तिलक नाई और सालार मसऊद को राजा के पास भेजा। साथ ही साथ बहुमूल्य भेंट भी भेजी। गजनी के दैत्य के दूतों का सत्कार करके धर्मदेव ने उनके आने का कारण पूछा। इस पर मसऊद ने सुल्तान का खरीता राजा की सेवा में पेश किया।

राजा ने धैर्य धर कर उनका पत्र पढ़ा, और पैनी दृष्टि अपने सामन्तों पर डाली फिर महमूद के दूतों पर दृष्टि जमाई, उनकी दृष्टि मुल्तान नरेश

पर जाकर जम गई। अजयपाल ने आगे बढ़ हाथ जोड़कर कहा, राजन राजनीति यह कहती है कि आपत्ति को निमंत्रण न देकर और आगा-पीछा सोच-कर, महमूद से मैत्री का व्यवहार कीजिये। महाराज ने हूं करके, अजयपाल चौहान की तरफ मुंह करके कहा आप हमारे सम्बन्धी हैं। और हमारा आपका एक ही खून भी है। परन्तु आप जो सन्देश लेकर यहां पधारे हैं, इसके वास्ते मैं शर्मिन्दा हूँ। महाराज आप सिंधनद के दिग्पाल हैं। सो आपने अपना कर्तव्य-पालन कर प्राण बचाने में ही अपना लाभ समझा। और क्षत्रियों के वास्ते एक नया प्रचलन स्थापित किया है। आपने अपनी युक्ति से मुल्तान को तो बचा लिया, पर इस दैत्य की दासता करके आपने दूतकार भी प्रारम्भ कर दिया। और उसे देवस्थान भंग करने के वास्ते आप पट्टन भेजना चाहते हो। क्या आप ही ने लोहपट्टन के राजा को महमूद को मार्ग देने के वास्ते राजी नहीं किया है। आपके कार्यों की कीर्ति मेरे कानों तक कभी की आ पहुंची है। और आपकी इस नीति का प्रायश्चित कर आपके बुजुर्ग घोघा राणा स्वर्ग सिधार चुके हैं। जिन्होंने आपको बचपन में गोदी में खिलाया था। आपने

गोगाराणा के वंशज होकर चौहानों के नाम को दाग लगाये हैं। जो दुश्मन के दूत बनकर मुझे समझाने आप यहां आये हैं। शायद सपादलक्ष के उपकार के विचार से ही आप मेरे निकट आये हों। परन्तु मैं दुर्भागी आपकी सीख से कोई लाभ नहीं उठा सकूंगा। अब आप सुल्तान के सेनापति को हमारी इच्छा समझा दें। जिससे वह सुल्तान को भली-भांति सब कुछ समझ सकें।

श्री गोगा महापुराण ७७वाँ भाग प्रारम्भ

महाराज अजयपाल जी अब आप यहां से जा सकते हैं। अपने सम्बन्धी से भुजा भेंट करने का वक्त बीत चुका है। अब आप अपना कीमती समय व्यर्थ न गंवावें। महाराज धर्मदेव के वचन सुनकर, राजा अजयपाल के मुख पर जर्दी छा गई, और नैन आप ही आप नीचे को झुक गये। दोनों दूसरे दूत भी निराश हो, अपना सा मुख लेकर तीनों ने ही वहां से कूंचकर दिया। महाराजा धर्मदेव ने एक पल भी व्यर्थ न गंवा कर, तुरन्त ही युद्ध समिति की बैठक बुलाकर, निर्णय किया, कि सपादलक्ष की कमान में कौन कौन वीर सम्मिलित हैं। तो सेनापति ने अपने

दोनों कर जोड़कर, निवेदन किया कि महाराज साँभर के ढुढियाराज, आमेर के दुर्लभदेव जी, वदनोर और देवगढ़ के ठाकुर सरदार सोजन, और माड़वाड़ पाली से इलाकेदार मन्डलेश्वर अपनी अपनी सेना लेकर यहां आ विराजे हैं। इस समय साठ हजार से भी अधिक सेना एकत्रित हो गई है। जिसमें तीस हजार घुड़सवार आठ हजार धनुरधर भील और एक हजार हाथी सवार, बाकी की पैदल सेना है। अजमेर से आगे गुजरात के मार्ग पर पहाड़ियां ही पहाड़ियां हैं। और ज्यों ज्यों आगे बढ़ना पड़ता है, त्यों त्यों विकट दुर्गम पथ आता जाता है। नान्दौल से आगे, भयंकर जंगल है। और उसके पश्चात काफी लम्बी घाटी से, गुजरकर फिर हरे भरे मैदान में आबू पर्वत का मनोहर दृश्य दिखाई देता है।

महाराज धर्मदेव ने आमेर नरेश की बड़ाई करते हुए कहा, हे मित्र मैं सबसे प्रथम सबसे कठिन कार्य आपको ही सौंपता हूं। गजनी के इस मलेच्छ को मैं भली भांति परखे हुए हूं। इसने भारत को सोलह बार पद दलित करके लूटा है। जहां तक मेरे बसकी बात है मैं इसे रोकने को भरपूर कोशिश करूंगा। परन्तु हमें आगे की योजना पर भी विचार करना

चाहिये। सो आप अपनी सेना और आठ हजार भीलों को लेकर, सीधे नांदनोल चले जाओ, वहां मेरा भतीजा अनहिल राज्य करता है। गुजरात के सोलंकियों का भी यह सम्बन्धी है। और आपकी हर प्रकार से वह सहायता करेगा। सो आप चतुराई से उस दैत्य की नजर बचा कर निकल जाओ। व्यर्थ शक्ति नष्ट करने से कोई लाभ नहीं है। फिर इस मलेच्छ को नन्दौल के वन में घेरकर घाटी में ले जाना। वहां के तीरन्दाज भील और राजपूत मिल कर इसे ठिकाने लगा देंगे। इतना कह महाराज ने, युवक दुर्लभदेव की कमर में अपनी सुनहरी तलवार बांध उसे बिदा कर दिया। यह कर्मठ महाराजा पूरी रात जागता रहा। उसने अपनी सेना को तीन भागों में बांटा, आठ हजार सवार और दस हजार पैदल सेना और चार सौ हाथी सांभर के नरेश ढूंढिराज की कमान में सौंप पुष्कर से पीछे हटाकर, महमूद की सेना के बांई ओर छिपा दिया।

इसके पश्चात पन्द्रह हजार पैदल और आठ हजार सवार, मन्त्री पुत्र सोढल की कमान में, अजमेर की देखभाल के लिए छोड़ दिए। और बची खुची सेना से, व्यूह रचना कर स्वयं दैत्य का मुकाबला करने को

हथियार बांध खड़े हो गए। व्यूह के सम्मुख घुड़सवार और पिछले भाग में गज सेना को खड़ा किया गया, सेना नायक सभी सरदार अपनी अपनी टोली के सम्मुख सज सज खड़े हो गये। भाट लोग बिरुदावली बखानने लगे। कूंच का नकारा बजा, और सेना ने मैदान की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया। महमूद ने दूतों द्वारा जब धर्मदेव राजा का उत्तर सुना तो, वह अति गम्भीरता से सोच विचार करने लगा। उसने तुरन्त युद्ध करने का निर्णय कर, सेनापतियों के साथ रातों रात सेना की व्यूह रचना की। महमूद मरुस्थली को पार करके यहां आया था। उसकी सारी सेना थकी हुई थी, परन्तु तुरन्त युद्ध करने के सिवा दूसरा और उपाय भी नहीं था।

रात्रि के पिछले पक्ष में खुद महमूद नटखट घोड़े पर सवार हो एक टीले पर अपने सरदारों सहित चढ़ कर, राजा की सेना का निरीक्षण करने लगा, उसने देखा कि मशालों की रोशनी में, राजपूतों की सेना युद्ध करने के लिये चली आ रही है। घोड़ों की धमक सुनकर, महमूद कांप गया। उसने तुरन्त ही तीर की माफिक अपने अश्व को दौड़ाकर थकी मांदी सेना को युद्ध के लिये तैयार होने का हुक्म दिया। बहाव

के जनून में पठान और तुर्कों के दल अल्ला हो अकबर की पुकार मचाते हुए, युद्ध करने के लिए युद्ध स्थली की ओर बढ़ चले।

श्री गोगा महापुराण ७८वाँ भाग प्रारम्भ

चौहान नरेश और गजनी के दैत्य का लश्कर, जब एक दूसरे के सम्मुख पहुँचा, तभी दोनों ओर से बाणों की वर्षा होने लगी। जबकि भली प्रकार सूर्य उदय भी नहीं हुआ था। बाण वर्षा प्रारम्भ होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना रुक गया। धर्मदेव ने अपनी चतुराई से ऊँचे टीलों पर सेना को दूर तक फैला रक्खा था। महमूद भी किसी तरह असावधान नहीं था। उसने अपने सैनिकों की टुकड़ियाँ वृक्ष और टीलों की आड़ में बिखेर रखी थीं। जिनकी आड़ लेकर उसके तीरन्दाज तीर चला रहे थे। कुछ अर्से में दोनों ओर के योद्धा घायल होकर, चीखने चिल्लाने लगे। राजपूत आगे बढ़कर, तलवार चलाने के मूड में थे। परन्तु महमूद की चतुराई के सम्मुख उनकी एक न चली। वह सारा दिन इसी प्रकार व्यर्थ गया। सन्ध्या समय अमीर ने युद्ध रोकने का संकेत किया, तब दोनों सेना नायक सेना सहित अपने अपने शिविरों

को लौट गये। परन्तु धर्मगज देव ने अपनी पीठ न खोलकर सेना का निरीक्षण किया और घायल योद्धाओं को अजमेर भिजवा दिया। फिर सेना का वर्गीकरण कर, अगले दिन की युद्ध योजना बनाई। और दूर २ के सेना नायकों को सन्देश देने के लिये साड़नियाँ रवाना कीं। अगले दिन सूर्य निकलने से पहले ही, राजपूत दुश्मन को सावधान होने का अवसर न देकर महमूद ने आक्रमण कर दिया। प्रथम तो राजपूतों में घबराहट फैली, पर फौरन ही सँभल कर अपनी-२ तलवारें लेकर दुश्मन पर पिल पड़े। देखते ही देखते अपने छोटे छोटे दल बनाकर, महमूद की सेना में घुस गये।

भयंकर मारकाट होने लगी। रुन्ड मुन्ड कट कट कर गिरने लगे, राजपूत तलवार और बर्छी के युद्ध में काफी पारंगत थे, उनकी नुकीली बर्छियाँ, मलेच्छों का सफाया करने लगीं और खमदार तलवारों के करारे घाव खा खा कर शत्रु चिल्लाने लगे। महमूद अपनी सेना की दुर्दशा देख, क्रोध से पागल हो गया। उसे मेरो के इस बर्छी युद्ध की कल्पना भी न थी। वह मतवाले मेहर युद्ध नियम की परवाह न करके काल दूत की तरह गजनी की सेना का संहार कर रहे थे।

सैनिकों के समान ही दुश्मन के घोड़ों को भी इन वीरों ने यम सदन पहुँचा दिया। अमीर ने पागल जंगली मेरों को जड़मूल से ही नष्ट करने की ठान ली। उसने अपने बिल्लोची घुड़सवारों को ललकारा वह खूँखार बिल्लोची चारों ओर से मेरों की टुकड़ियों को घेरकर बड़े बड़े भालों से उन्हें छेद-२ कर और अपने सधे हुए घोड़ों से उन्हें कुचलने लगे। जगली मेरो के पास घोड़े नहीं थे, इसलिये वह घबरा उठे। राजा धर्मदेव से मेरो की दशा देखी न गई, उन्होंने पराक्रमी चौहान घुड़सवारों को दुश्मन पर पेल दिया। यह बराबर का युद्ध था चौहान बिल्लोचियों से जूझ रहे थे। राजपूतों को अवसर मिल गया। यह हाथों हाथ का तलवारों का युद्ध दोपहर होते होते घातक होने लगा। सरदारों ने समझा कि इस युद्ध की समाप्ति पर मरे हुए सवारों और उनके लड़ने का मार्ग रुक गया। मार खाते-खाते महमूद की सेना के छक्के छूट गये। बिल्लोची पठान पीछे की तरफ हटने लगे। पठानों को पिटता और भयभीत होते देख, राजा धर्मगज देव ने अपने सुरक्षित अश्वारोहियों को ले धावा बोल दिया। इस नये धक्के को पठान सह न सके। और पीठ दिखाकर हथियार

फेंककर भागने लगे। महमूद ने नई विपत्ति को सम्मुख देख, भागते बिल्लोची-पठानों की तरफ अपना घोड़ा दौड़ाया। और अपना हरा झण्डा ऊँचा करके कहा कि तुम खुदा और इस्लाम के नाम पर मर मिटो। भाग कर भी कहाँ जाओगे, गजनी को बहुत पीछे छोड़ आये हो। बिल्लोची मरे मन से फिर तैयार हुए, इस बार फिर घमासान युद्ध हुआ। दोनों ओर की सेना थकान महसूस करने लगी। महमूद ने सूर्य अस्त से पहले ही युद्ध बन्द करने का संकेत किया, इस दिन भी बिना निर्णय हुए सेनायें अपने-२ शिवरों को लौट गईं। राजपूत सेना में भारी उत्साह था, और शाह की सेना में घबराहट, राजपूत सेना भी काफी मारी गई थी, परन्तु महमूद की सेना तो बेतहाशा मौत के घाट उतारी गई थी। अपनी इतनी भारी पराजय देख, शाह बौखला उठा। तीसरे दिन महमूद की इच्छा युद्ध बन्द करने की थी। मगर महाराज गजदेव क्यों मानने लगे थे। उन्होंने गजनी के दैत्य को सेना पर आक्रमण कर दिया, इसलिये महमूद को रण में खुद आना पड़ा। तब महाराज धर्मदेव ने सन्देश भेजा कि अगर महमूद चाहे तो उसे सुरक्षित लौटने दिया जा सकता है।

म्लेच्छ की सेना में भारी निराशा छाई हुई थी, उसने अपनी सेना के बीच में ही सुबह की नमाज पढ़नी पड़ी, नमाज के पश्चात् उसने भाषण देकर अपनी सेना से कहा, वीर पठानो अब से सोलह बार अपने घोड़ों की टाप से इन काफिरों के मुल्क को तुमने रौंदा है। और सदैव ही अपने सिरों पर फतेह का सेहरा बांध, मोहर-अशर्फियों को अपनी जीनों में कस और गुलामों को रस्सियों से बांध गजनी गये हो। तुम्हारी बीवियां उसी तरह तुम्हारे लौटने के ख्वाब देख रही होंगी। तो क्या तुम इस लड़ाई में हारकर, इस्लाम के नाम पर धब्बा लगाओगे। भागने की सभी राहें बन्द हैं। अपनी तलवार का जौहर दिखाकर तुम मर मिटो, खुदा तुम्हारे साथ है। जरा दिलेरी से युद्ध करने में फतेह तुम्हारी निश्चित है। महमूद की सेना ने फिर एक बार जोर-शोर से अल्ला हो अकबर का नारा लगाया, बब्बर पठान और तुर्क जोश में आ गये और जनून में भर कर अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो गये। देखते ही देखते घमासान युद्ध होने लगा। और तलवारें चलने लगीं। बर्छियां सीने के पार हो रही थीं। आकाश तीरों से भर गया था वह जौमुखी युद्ध था। दोनों तरफ के योद्धा एक

दूसरे का खून पीने को उतावले बने हुए थे।

म्लेच्छ महमूद घोड़ा कुदाते हुए, अपनी फौजों से कहता फिर रहा था। शाबाश बहादुरो विजय तुम्हारे हाथ है बहादुरो से लड़ाई लड़ो। सूर्य अस्त होने में अभी देर थी, दैत्य की सेना घबराने लगी। और राजा धर्मदेव का दबाव बराबर बढ़ता जा रहा था। महमूद अपने सैनिकों से कुछ कहना ही चाह रहा था कि इतने में ही बाण आकर उसकी दाईं भुजा में घुस गया। म्लेच्छ घोड़े से गिरकर बेहोश हो गया। तभी उसके सरदारों ने चारों ओर से आ कर महमूद को घेर लिया। एक सरदार ने तीर को खींच कर तुरन्त घाव पर पट्टी बांधी। चन्द मिनटों में ही महमूद होश में आ गया। और तुरन्त ही घोड़े पर सवार होकर सैनिकों का उत्साह बढ़ाने लगा। जब उसने अपने घोड़े का रुख पूरब से हटाकर पश्चिम की तरफ मोड़ा, तभी पूर्वी सैनिक भागने लगे। इसी भागा दौड़ी में उसके दो प्रधान सेनानायक मारे गये।

राजा धर्मगज देव ने यह मौका पा महमूद के सैनिकों को मार मार कर ढेर कर दिया। महमूद अपनी सेना को मरती खपती देख, तीर की तरह

दौड़ा। उसने उत्तर वाली टुकड़ी को ललकार कर कहा, तुम अपनी टुकड़ी को दक्षिण की तरफ को हटा ले जाओ, तभी दक्षिण वाली टुकड़ी ने आकर कहा, हुजूर सेना हिम्मत पस्त हो रही है। और काफी जान माल का नुकसान हुआ है। किसी भी तरह लड़ाई रुकवाइये। महमूद बोला लड़ाई रोकना बाबाजी का घर नहीं है। हमें तो शाम तक जैसे भी बने, करना मरना ही पड़ेगा। अमीर अभी तक पूरी बात कह भी नहीं पाया था कि एक ताककर फेंका हुआ पत्थर उसकी छाती में आकर लगा और इसी वक्त घोड़े की आंख में आकर एक तीर घुस गया। घोड़ा तड़फ कर अपने चारों पैरों से उछला और महमूद औंधे मुँह जमीन पर गिर पड़ा। उसके मुँह से रक्त बहने लगा। अफगान सरदार शाह को घेरकर खड़े हो गये, उनके चारों तरफ मार काट हो रही थी। सभी सरदार घबराये हुए थे। परन्तु महमूद कुछ ही समय पश्चात स्वयं ही उठ खड़ा हुआ। और बोला चिन्ता की कोई बात नहीं, दूसरा घोड़ा लाओ। घोड़ा आते ही वह तुरन्त घोड़े पर सवार हो गया।

श्री गोगा महापुराण ७१वाँ भाग प्रारम्भ

तीसरा पहर आने से पहले ही महमूद की सेना पीछे हटने लगी, राजपूतों ने अवसर पा और शत्रु सेना में घुस कर, हाथोंहाथ हार-जीत का निर्णय करने की ठान ली। गजनी के सरदार तत्क्षण युद्ध बन्द करने की सलाह शाह को दे रहे थे। परन्तु महमूद ने कहा, सूर्य डूबने का तो इन्तजार करना ही पड़ेगा। इससे पहले युद्ध बन्द होना नामुमकिन है। राजपूत सेना हरहर महादेव कहती हुई, मलेच्छों में घुस गई। और मुसलमानों की सेना-तितर-बितर हो गई। और वीरो ने ऐसे मौके पर तीरकमान छोड़ बर्छी, भालें और तलवारों से दुश्मन का सफाया करना शुरू कर दिया। तभी महमूद भाला हाथ में लेकर राजपूतों को धमकाता हुआ आगे बढ़ा। उसके साथ जूझकर मरने वाले खूँखार बिल्लोचियों की भारी पल्टन थी।

राजा धर्मगजदेव ने जब महमूद की हरकत को देखा, तो वह सिंह के समान अपना घोड़ा कुदाते हुए मलेच्छ के सम्मुख जा डटे। उनके साथ भी बहादुर चौहानों और मंडलीक राजाओं का भारी दल था। दोनों दलों में विकट संग्राम छिड़ गया, और महमूद

लुटेरा अधिक जख्मी हो गया। और राजा धर्मदेव भी जख्मी हो गये। इतने में ही सूर्य अस्त हो गया, पर युद्ध विराम नहीं हुआ। और दोनों तरफ के वीर कटकट कर धराशाही होने लगे। पश्चिम दिशा में लाली फैल गई, और उसके पश्चात् अन्धकार छा गया। पर मार-धाड़ चलती ही रही। पठान सरदार घिर गये। सेनानायकों ने काफी समझाया, पर महमूद ने उनके कहने पर ध्यान नहीं दिया। और पागल की समान युद्ध करता रहा। महाराज गजदेव ने समय का फायदा उठाया, उन्होंने सांभर पति को संकेत किया, और वह अपनी बीस हजार सेना ले बगल से महमूद की सेना पर पिल पड़े। इस नई बला को सम्मुख देख, महमूद हताश हो घोड़े पर ही मूछित होकर धरती पर गिर पड़ा। तभी उसके सरदार उसे हाथों हाथ उठाकर ले भागे, और सुलह के वास्ते उन्होंने सफेद झण्डा फहरा दिया। सफेद झण्डा देखकर युद्ध बन्द हो गया। और महमूद के सरदार सुलतान को उठाकर उसके शिविर में ले गये। बचे-खुचे सरदार और सैनिक गिरफ्तार कर लिये गये। महाराज धर्मदेव विजय पताका फहराते हुए अपने शिविर को लौट गये।

अगले दिन कपटी महमूद ने सन्धी दूतों को राजा धर्मदेव के दरबार में भेजा। राजा ने प्रेमपूर्वक दूतों का स्वागत किया। फिर अपने सरदारों से मशवरा करके यह निर्णय किया, अगर महमूद गजनी लौट जाय, तो हम उसे चले जाने में कोई रुकावट पैदा नहीं होने देंगे। और उसके कैदियों को भी मुक्त कर देंगे। हमारी गजनी के सुलतान से कोई जाति दुश्मनी नहीं है। युद्ध करने को उसी ने हमें मजबूर किया था। अमीर के दूतों ने अमीर की तरफ से गलती के लिये क्षमा मांगी, और गिड़गिड़ाकर कहा महमूद बहुत बुरी तरह घायल है और घूमने-फिरने क्या उठने-बैठने के भी काबिल नहीं है। आज ही हम गजनी को गमन कर देंगे। राजा धर्मगजदेव ने अफसोस प्रगट करते हुए, सन्धि प्रस्ताव मन्जूर कर लिया। अमीर के दूत राजा की तारीफ के पुल बांधते और शुक्रिया अदा करते हुए चल दिये। महमूद के लश्कर की तैयारी होने लगी। महमूद के चले जाने के पश्चात, राजा धर्मदेव ने थोड़ी सेना रोक कर बाकी को अजमेर रवाना कर दिया। विजयवाहिनी सेना बंड बजाती हुई अजमेर पहुंचकर जीत का जशन मनाने लगी। नगर की जनता ने

सैनिकों का स्वागत किया। और बड़ी खुशी के साथ अपने नगर को दीपावली के समान सजाया।

अर्धरात्रि बीत चुकी थी। अजमेर नगर खुशी के कारण अलमस्त था। ऐसे ही वक्त में दो व्यक्ति इस राग-रंग को छिपी नजरों से देख रहे थे। वह नगर में घूमते हुए, गली-कूचों में भी घुस जाते थे। उन्होंने नागरिकों जैसा अपना भेष बना रखा था। अजमेर के पूर्वी हिस्से में मियाँमदार की कब्र थी कब्र के नजदीक ही एक पुराना शिवालय भी था। और उसके आस-पास और भी कुछ मन्दिर थे। शिवालय का प्रवेश पूर्व की ओर था। और पश्चिम में पुजारियों के मकान थे उनके साथ उनके परिवार के लोग भी रहते थे। पुजारियों के मकान से थोड़ा दूर पर एक खानगाह बनी हुई थी। जिसमें मियाँमदार और उनके दौला-मौला शिष्य भी रहते थे। वह बेलोस फकीर प्रसिद्ध थे। और राजा धर्मगजदेव ने उनके खाने-पीने की व्यवस्था राज्य की तरफ से कर रखी थी। और वह तन्त्र-मन्त्र द्वारा ताबीज गण्डे देकर जनता का उपकार मुफ्त ही किया करते थे। और कहते थे फकीर के पास दुवा के अलावा कुछ भी नहीं है। पुराना मठ था और आया गया मुसाफिर वहाँ

आकर ठहर जाता था। मियाँमदार अक्सर पेड़ की छाया में चुपचाप बैठे अल्ला-अल्ला किया करते थे।

श्री गोगा महापुराण ८०वाँ भाग प्रारम्भ

यह दोनों व्यक्ति भी घूमते फिरते वहाँ जा पहुँचे, शाह साहब जिस समय अल्ला के ध्यान में मग्न थे। दोनों भक्तों ने हिन्दुओं की तरह उनके पैर छुए, और हाथ जोड़कर नमस्कार किया। परन्तु फकीर ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब वह दोनों वहाँ से उठकर, दूसरे व्यक्तियों के बीच में जा बैठे। बैठे हुए भक्तों के उठ जाने के पश्चात, साधू ने नजर उठा कर इन दोनों आगन्तुकों को देखा, और बड़बड़ाते हुए बोला, ऐ नादानो, अल्लाह को याद करो, और फिर उसका कमाल देखो। दोनों ने फिर पृथ्वी पर मस्तक नवाया, तभी एक आगन्तुक ने उन दोनों का कन्धा हिलाकर अपने पीछे आने का इशारा किया। तब वह दोनों मनुष्य उठकर उसके पीछे-पीछे चल पड़े। वह व्यक्ति मठके द्वार पर रुककर, उन दोनों को अन्दर जाने का इशारा किया। तब वह दोनों मनुष्य मठ में घुस गये। और वह व्यक्ति डटकर पहरे पर खड़ा हो गया। अन्दर एक युवक वहाँ बड़ी बेचैनी से

काफी समय तक सैनिक राग रागनी में मस्त रहे और फिर गहरी नींद में पड़कर सो गये। एक दो चौकीदार चौकस रह कर, अपना फर्ज अदा कर रहे थे। राजा धर्मदेव सुबह तड़के ही पुष्कर तीर्थ पर स्नान कर, भजन पूजन पर बैठे थे। पूजन करते ही उन्हें कुछ खटका सा महसूस हुआ। जैसे बहुत से मनुष्य उनकी तरफ आहिस्ते आहिस्ते आ रहे हों। अभी भली प्रकार प्रकाश भी नहीं हुआ था। राजा पूजन भजन छोड़ चारों तरफ नजर घुमाकर देखने लगे। तो बहुत सी स्याह काली मूर्तियां उन्हें अपनी तरफ आते दिखाई दीं, पल भर बाद ही उन्हें महसूस हो गया कि मेरे साथ विश्वासघात हुआ है। इसी समय चौकीदार अंगरक्षक ने गूँज भरी आवाज में राजा को सतर्क रहने की सूचना दी। और उसके पश्चात महमूद के सैनिकों ने राजा के अंग रक्षक सैनिकों को काट २ कर मौत के घाट उतार दिया और साथ ही छावनी को जलाकर भस्म कर दिया। महाराज उसी विवशता से सैनिकों को पुकारते हुए अपनी तलवार घुमाने लगे। और तुरन्त ही एक सवार सेना बुलाने के वास्ते अजमेर को रवाना कर दिया। अंगरक्षकों के हाथ जो भी हथियार लगा वह उसे ही

ले लेकर दुश्मन पर पिल पड़े। और कुछ जवान राजा की रक्षा के वास्ते आकर आस-पास खड़े हो गये। परन्तु बहुत कम तादाद होने के कारण बेचारों का शत्रु पर कोई बस न चला।

देखते ही देखते राजा पर दुश्मन की हजारों तलवारें तन गईं। राजपूत जान पर खेल कर राजा की रक्षा कर रहे थे। और राजा धर्मदेव नंगे बदन ही सिर्फ पीताम्बर पहने दोनों हाथों से तलवार घुमा शत्रु का सफाया कर रहे थे। परन्तु उनके शरीर से भी रक्त की धारा बह रही थी। उनका उत्साह देख दुश्मन भी दंग रह गये। तलवार से तलवार भिड़ रही थी, और बर्छियाँ आंतों को बाहर निकाल रही थीं। और राजा पल-पल अजमेर की सेना आने का इन्तजार कर रहा था। क्षण-क्षण पर यही सूचना मिल रही थी अभी तक सेना का कोई पता नहीं है। तभी जंगल में छिपे एक हजार बिल्लोची राजा पर टूट पड़े। महाराज ने समझ लिया अब मृत्यु निकट आ पहुँची है, महाराज बम्ब महादेव कहकर दोनों हाथों से तलवार घुमाने लगे। और देखते ही देखते बचे-खुचे सभी राजपूत मृत्यु के मुख में समा गये। और राजा की तलवार दुश्मन के एक तरवार से टकरा कर टूट गई।

काफी तीर लगने से उनका अंग छलनी हो चुका था। वह निराश होकर इधर-उधर देख रहे थे। तभी एक पठान ने अपनी कमान राजा के गले में डालकर, उन्हें अपनी ओर खींच लिया। दूसरे पठान ने अपनी तलवार से राजा धर्मदेव का सर धड़ से जुदा कर दिया। दुश्मनों ने अल्ला हो अकबर का नारा बुलन्द करके एक-एक छिपे सैनिक को मौत के घाट उतार दिया। उसी समय महाराजा की मृत्यु का समाचार अजमेर में पहुँच गया। राजा के स्वर्गगामी होने का समाचार सुनकर अजमेर में महाशोक मनाया गया और तुरंत ही सैनिकों ने पुष्कर में पहुँचकर महाराजा का शव लाशों के ढेर से निकालकर अजमेर के किले में पहुँचा दिया। राजा धर्मदेव के शव के किले में पहुँचते ही रानी सती होने के लिए तुरन्त तैयार हो गई, और उनके साथ में महल की तथा अन्य राजघरानों की सैकड़ों नारियाँ और प्यारी दासी बांदियां और रानी की सखी-सहेलियाँ रानी के संग चिता में भस्म होने का सभी ने निर्णय कर लिया। महारानी ने इंगुर का टीका अपने मस्तक पर लगाकर सुगंधित फूलों के हार अपने गले में पहने। और पचरंग चूंदरी ओढ़कर नखसिख से

शृङ्गार किया। अन्य नारियों ने भी अपने को खूब संवार सुधार कर रानी की तरह ही अपने शृंङ्गार किये।

आगे-आगे महारानी और पीछे-पीछे रानी की सभी सखियाँ चल पड़ीं। और उनके पीछे आँखों में आंसू भरे रोते, कलपते नगर निवासी और राजा के परिवार के लोग आ रहे थे। चौक के चबूतरे पर ही विशाल चन्दन चिता का आयोजन हुआ। और प्रथम महाराजा का शव चिता में रखा गया, तब रानी ने सूर्यदेव को नमस्कार कर और अर्घ देकर, चिता के पास पहुँच पति के शव को अपनी गोद में रख, ईश्वर के ध्यान में रानी मगन हो गई। तभी ढोल मंजीरे बजने लगे और सैकड़ों मुखों से जय सती माता कह रानी का जैकारा बोला गया। अन्य नारियां भी रानी के चौरफा बैठ कर आँख मीच कर शिव शिव रटने लगीं तभी पिरोहित कृपा शंकर ने रुदन करते हुए बालक बीसलदेव को अगाड़ी करके कहा, सती माता अजमेर और अपने बालक राजा को आशीर्वाद तो देती जाओ, रानी ने हाथ उठाकर कहा अजमेर और अजमेर पति महाराज की जय हो। तभी चिता में आग लगा दी गई, और कुल पिरोहित ने मन्त्र

बोलकर घी, कपूर, चन्दन चूरा डाल कर शंख ध्वनी की, और जनता ने घंटे-घड़ियाल बजाये। अग्नी सहायक पदार्थों से चिता धू-धू कर जलने लगी, सब जनता अधीर हो अपने राजा रानी की चिता पर नौ-नौ आंसू बहा रो रही थी। देखते-देखते पचासों देवियां अपनी प्राणप्यारी रानी के संग सती हो गई।

श्री गोगा महापुराण ८१वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ ! देखो आपने अपने इन भारत वासियों की बेगैरती न जाने यहां कितने विभीषण और जयचन्द नित्य पैदा होते हैं। और लालच बस होकर, अधबर में ही देश की नाव डुबो देते हैं। गजनी के दैत्य की सेना ने और सरदारों ने अगले दिन सूर्य उदय से पहले ही नगरी में घुस नग्न नृत्य दिखा कत्लेआम करना शुरूकर दिया। ऐसी दशा में अजमेर की जनता भाग खड़ी हुई। और जिधर को बचने की आशा दिखाई दी अपना सब कुछ यूं ही छोड़ उधर उधर को भाग ली। मसऊद लुटेरों की टुकड़ी लेकर महल लूटने को चल दिया, तभी महल के रखवालों ने महल में आग लगा दी। अग्नि चारों तरफ फैल कर धू धू जलने लगी। चन्दन की कड़ियों

की कड़कड़ाहट से गिरकर राज महल धराशाही हो गया। अमूल्य सभी सम्पत्ति जलकर स्वाहा हो गई। हीरे मोती लाल जवाहर सभी स्वाहा हो गये। माल और माल धनी दोनों की ही जलकर राख हो गई। खीजकर मसऊद सैनिकों को ले बस्ती में बढ़ गया। और जो धनी भाग न पाये थे उन बेचारों को मार पीट कर उनका धन छीन लिया, उस मलेच्छ ने बूढ़ा बच्चा, बीमार नगर के हर नर नारी को बड़ी बेरहमी के साथ लूटकर कत्ल कर दिया, किसी के भी प्राण न बचे।

अन्त में उसने नगरी में आग लगा दी, और खीजता हुआ मिया मदार के पास पहुंचा। फकीर अपनी धुन में अकेला बैठा था। आज उसके पास एक भी इन्सान नहीं आया था। मसऊद ने फकीर को सलाम कर कहा, गजनी का सुल्तान, हजरत से अपनी खैरियत की दुआ मांगता है। और सलामती भी चाहता है। फकीर बोला मेरे पास तो दुआ ही है सो मैं देता हूं, सलामती अल्ला ताला के हाथ में है। अजमेर लूट और आग को भेंट कर अमीर काफी भयभीत हो गया। उसकी भी इस युद्ध में कम हानि नहीं हुई थी। उसे सोमनाथ पहुचने की भी जल्दी

थी और विश्राम की भी आवश्यकता, उसे ढूंढीराव का भी भय था। कहीं वह पीछे से आकर आक्रमण न कर दे और मेरी हारी थकी सेना बेमौत मारी जाये। तभी उसने कूंच करने के लिए अपने बचे खुचे सरदारों की सभा जोड़ी और कूंच करने के लिए विचार विमर्श किया।

इसी अर्से में सोढल नामक युवक ने महमूद की सभा में आकर मलेच्छ को सिर झुकाकर सलाम किया, यह विश्वास घाती राजा के प्रधान मन्त्री का पुत्र था। महाराजा धर्मगजदेव इसे, पुत्र समान ही प्यार करते थे। इसे राजा ने विश्वासी वीर समझ कर दस हजार सवार और बीस हजार पैदल सेना को इसकी कमान में सौंप दिया था। इसने राजा के साथ धोखा करके, महमूद की मदद की। तब महमूद ने कहा अगर हमारी हार जीत में बदल जाएगी तो हम तुम्हें अजमेर नगर का राजा बनाकर सारा राजपाट तुम्हें सौंप देंगे। सलाम का जवाब न देकर गजनी के दैत्य ने पूछा, क्या तुम वही युवक हो जिसने अजमेर पति के सारे भेद हमें दिये थे। और हमारी हार को जीत में बदलवाया था।

सोढल बोला--हां सुल्तान मैं वही मनुष्य हूं।

सुल्तान बोला तुम में तो मनुष्यता रत्ती भर भी नहीं है। मगर मैंने तुम्हें वचन दिया था, इसलिए तुम्हें राजा बना रहा हूँ। परन्तु तुमने अपने मालिक राजा के साथ नमक हरामीपन का व्यवहार किया है। इसलिये तुम्हें राजा के पुत्र और सेनापति के सुपुर्द करना बहुत जरूरी है। और उन्हें तुम्हारी कार गुजारी से, भी आगाह करना मेरा फर्ज बनता है। सुल्तान मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों करते हो, महमूद बोला इसे तुम नहीं समझ सकते हो। यह बादशाहों और राजाओं की अपनी बात है। इतना कह गजनी के सुल्तान ने अपने सेना नायक से कहा, इसको मेरी नजरों के सामने से हटा कर दूर भगा दो। इतना सुनकर वह नमक हराम गद्दार, सोढल अपनी नीची नजर करके महमूद की सभा से चल दिया। और गजनी के सुल्तान ने तुरन्त ही अपनी फौजों को कूंच करने का हुक्म दिया। उसे भय था कि कोई नया बखेड़ा न खड़ा हो जाये। क्योंकि अजमेर के हत्याकाण्ड और धोखा देकर राजा को कत्ल करने से, अजमेर की ग्रामीण जनता भी, मुसलमानों को नीच धोखेबाज कह रही थी। इसीलिए तुरन्त अजमेर से महमूद की सेना चल पड़ी।

आमेर के युवक राजा दुर्लभ देव ने, राजा धर्मगजदेव के आदेशानुसार अपने वीर भीलों और राजपूतों की सेना ले, वह पुष्कर की ओर बढ़ा था। उसके साथ सोजत और देवगढ़ के ठाकुर भी थे। उसका विचार पुष्कर क्षेत्र में ही गजनी के सुल्तान से लोहा लेने का था। परन्तु राजा धर्मदेव के समझाने से, कि यह कोई खास युद्ध नहीं है, सिर्फ गजनी के सुल्तान की हमेराह रोकनी है। जिससे वह राजा दुर्लभदेव गुजरात की तरफ न जाकर उल्टा एर्ता लौट जाए। इसलिए अपने सरदारों सहित वह उल्टा लौट लिया। अभी यह वीर राजा देवगढ़ भी न पहुँच पाया था, उसे महाराजा धर्मगजदेव की मृत्यु और अजमेर के पतन का समाचार मिल। राजा धर्मगजदेव की दूरदर्शता कोई काम न आई। और वह धूर्त, धोकेबाज गजनी के सुल्तान की सुलाह के जाल में फंस गये।

यह जानते हुए भी कि वैरी की नीति ही थूककर चाटने यानि धोका देकर अपना उल्लू सीधा करने की है। राजा दुर्लभ देव ने तुरन्त ही अपने सैनिक राजपूत और घुड़सवारों के दो दल बना लिये। और उन्हें देवगढ़ और सोजत के सरदारों को सौंप

कर कहा, कि आप इन्हें अपनी सीमा के चौतरफा फैला दो। और तमाम ग्राम और बस्तियों को जलाकर जनता को पहाड़ों में पहुँचा दो। कुए खेत पोखर सभी पटवाकर रास्ते के पुल भी तुड़वाकर नष्ट करवा दो। मेरी बताई इस योजना को पूर्ण करके नन्दोल नगरी में आकर मुझसे मिलो, उपरोक्त सरदारों को अपनी योजना का कुल भार सौंप कर, और अपने भील और मीनाओं की पैदल सेना को लिये बड़ी फुरती से वह नन्दौल आ पहुंचा।

श्री गोगा महापुराण ८२वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ ! उस समय नान्दौल का राजा अनहिल्लराय, एक महाबलशाली और महान तेजस्वी वीर युवक था। उसके हौसले भी बहुत बढ़े चढ़े थे। वह अब भी गुजरात का एक सामन्त था। परन्तु उसने राजा चामुण्डराय की गलत नीतियों के कारण सालाना खिराज देना बन्द कर दिया था। और वह मन मुटावों के कारण अब राज्य से लड़ने की भी तैयारी कर रहा था। और गुजरात पहुंचकर महमूद से लड़ने की उसे बलवता इच्छा भी थी इसलिए उसने उसकी भी तैयारी की थी। मालव राज्य भोज की

भी, इस युवक पर कूर्य दृष्टि थी। इस महत्वाकांक्षी नरेश ने, सिन्धनद के मुहाने से समुद्रतट तक अपना राज्य कायम करना चाहता था। उसने अर्बुदेश्वर धुन्धूराव को भी अपने अनुकूल कर लिया था। अब अनहिल्लराव को एक बड़ी बाधा तथा उसे अपनी तरफ मिलाने के लिए, धुन्धूराव का बेटा बालाराव नन्दौल के युवराज का मित्र बनकर, उसे अपने अनुकूल करने की योजना में व्यस्त था।

नान्दौल में धड़ाधड़ नई सेना की भर्ती हो रही थी। घोड़े और हाथी भी खरीदे जा रहे थे। सिन्धु के बन्जारे घोड़ों और हाथियों को लाकर बेच रहे थे। ऐसे ही समय में दुर्लभराव ने नन्दौल पहुँचकर बस्ती के बाहर अपनी छावनी डाली। उसके पश्चात उसने राजा से जाकर भेंट की, राजा अपनी ही खटपटों के कारण इतना घिरा हुआ था, कि उसे इस वक्त महमूद के आने की वार्ता भली नहीं लगी। पर भली बुरी से क्या वास्ता, गजनी का दैत्य तो सावड़ तोड़ अपनी क्रूर सेना लिए, बढ़ा ही चला आ रहा था। राजा बड़े पशोपेश में पड़ गया और उस का मस्तक कोई निर्णय नहीं कर सका। उन दिनों नांदौल नगरी, समृद्धशाली बस्ती थी। जिसमें सात

आठ सौ लखपति और करोड़पति व्यापार करते थे यह मारवाड़, राजस्थान और गुजरात का बड़ा भारी व्यापारिक केन्द्र था। और धनियों के बड़े बड़े भवन नगरी की शोभा बढ़ा रहे थे। राजा के खजाने में भी करोड़ों अरबों रुपये का सोना भरा पड़ा था। और राजा को अपनी वीरता और बुद्धि पर भी बड़ा भारी अभिमान था। उसकी सारी उलझनों को दुर्लभराव ने वहां पहुंचकर सुलझा दिया था। दुर्लभराव की बातों से, अनहिल्लराव सहमत हो गया। और सोच समझकर अगली योजना बना ली। टोटागढ़, देवगढ़, बदनौर और सोजत के सरदार भी अपनी अपनी फौजें लेकर नन्दौल आ पहुंचे।

इन सभी को समझा-बुझाकर और गुप्त आदेश देकर दुर्लभ राव ने इनकी रवानगी करदी। यह सभी सरदार छोटी-छोटी टोलियां बनाकर जंगल में चौकन्ने रहकर दुश्मन की घात में छिपकर जा बैठे। भीलों और मीनाओं को भी धनुष-बाण देकर पहाड़ों की चोटियों पर छिपकर पठान और दुश्मन के आने पर उन्हें अपने तीरों द्वारा यमसदन पठाने का आदेश मिला। और सभी नगर निवासियों को दो दिन में नगर खाली कर देने का आदेश दिया गया। कि सब

नगर निवासी अपना धन माल लेकर आरबली पर्वत की घाटियों में जाकर अपने वक्त को काटें। कुछ ही घण्टों में सारी चहल-पहल जाती रही और सभी बाल युवा समृद्धशाली नान्दोल नगर खाली करने लगे। और वहां की जनता अपने तथा भाड़े के वाहनों पर संदूक पिटारे और पोटलियां लादे, पर्वत की तरफ को चल पड़ी। बेचारी गरीब मजदूर जनता अपने और अपने बाल-बच्चों के सिरों पर अपना सामान लादे, पैदल-पैदल ही पर्वत की ओर भागी चली जा रही थी। राजघराने की महिलायें और राज्य कोष सभी नगर से हटा दिये गये। दो दिन से पहले ही सारी बस्ती जन शून्य हो गई। और राज आज्ञा से कुए, पोखर ताल, बावड़ी भी पटवा दिये गये, और स्वयं मैदान में छावनी डाल कर राजा सेना सहित खुद आ बिराजा। दुर्लभराव ने अर्नाहिल्लराव को सलाह दे कहा, जब गजनी का सुल्तान यहां से निकल जाय, तब आप नगर में निश्चिन्त हो चले जाना। उसने राव से कोई भी सेना सहायता तक नहीं मांगी। और अपनी योजना पूरी करने को घोर घने जंगल में प्रवेश किया।

———

श्री गोगा महापुराण ८३वाँ भाग प्रारम्भ

नान्दोल नगर से निकलते ही थोड़े फासले पर घोर घना जंगल था। और जंगल के पश्चात् कोसों तक एक लम्बी घाटी चली गई थी। कहीं-कहीं यह घाटी इतनी तंग थी कि दोनों ओर के पर्वतों ने मिलकर रास्ता तंग कर रखा था। इसके पश्चात् हरा-भरा मैदान था, जहां एक छोटी पहाड़ी नदी बहती थी। वीर दुर्लभराव ने अपनी सूझ-बूझ से योजना अनुसार भली प्रकार से व्यवस्था करके फौजों को आदेश देने शुरू कर दिये। महमूद के अजमेर से अगाड़ी बढ़ने पर उसे साफ-सुथरा रास्ता मिल गया था। तो उसके मन से कुछ-कुछ बेचैनी दूर हुई। उसे अनहिल्ल पट्टन पहुँचने की जल्दी थी। पर वह और उसके सेनानायक, इस हरे-भरे प्रदेश को देख खुश हो गये। परन्तु उन्हें दूर तक वहां कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया था। उसने इस बात पर अधिक ध्यान न देकर अगाड़ी ही बढ़ना उचित समझा और आगे बढ़ने पर उसे राहघाट टूटे-फूटे, और खेत जले हुए नजर पड़े, तो उसकी सारी खुशियां हवा हो गईं। और नान्दोल पहुँचने पर उसने सारी बस्ती

को ही उजड़ा पाया। एक बिल्ली का बच्चा भी उसे वहां दिखाई नहीं दिया।

उसने सुन रखा था इस नगर का राजा अजमेर नरेश का मित्र है। महमूद ने गुस्से में भर कर अपने सेनानायकों को नगर जला देने का हुक्म दे दिया। हुक्म मिलते ही नगर फूंक कर धराशाई कर दिया गया। अब उसने अपराधी की तरह भयभीत हो कूंच कर देना ही मुनासिब समझा और वह अगाड़ी बढ़ता हुआ जंगली बन में बढ़ता ही चला गया। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ता था, उसे रास्ता नजर नहीं आता था। उसकी सेना सोच-विचार में पड़ वहीं रुक गई। क्योंकि रास्ता न मिलने की कठिनाई ने सेना को बेचैन कर दिया था, हालांकि अब दिन छिपने में अधिक देरी नहीं थी। उसने उसी बन में अपनी छावनी छववादी। परन्तु स्थान इतना अधिक छोटा था, कि इतनी बड़ी सेना की छावनी वहां पड़ना ही नामुमकिन थी। परन्तु लाचारी के आगे दूसरा कोई उपाय भी नहीं था। राह में इन्हें कोई मनुष्य दिखाई नहीं दिया था। और न नान्दोल नगर फूंकने पर कोई दिखाई दिया था। इसलिए इन सफर के थके हारों ने थोड़ा बहुत खा-पीकर आराम

करने की सोची। और कुछ ही अरसे में छावनी की रौनक, सन्नाटे में बदल गई। थकी हारी सेना मोठी नींद का आनन्द लेने लगी। तभी जंगल की चारों दिशाओं में उजाला-सा होता दिखाई दिया। यह प्रकाश कहां से और कैसे फैल रहा है, चौकसी करने वाले कुछ भी न समझ सके। परन्तु अर्धरा३ी पर्यन्त जंगल में अग्नी की लपटें उठने लगीं, तभी महमूद जाग उठा, और भली प्रकार वह सब कुछ समझ गया। और भय के कारण वह कांप उठा, उसका सारा लश्कर आग की लपटों में बुरी तरह घिर गया था। वहां बड़े-बड़े वृक्ष टूट-टूटकर गिरने लगे थे। धुएं ने सैनिकों की आंखों में घुस-घुसकर उन्हें अन्धे के समान बना दिया था।

तब गजनी के दैत्य ने अधीर होकर अपना माथा पीटकर कहा, हे अल्ला मुझ गुनहगार पर रहम कर। इधर महमूद बेचैन था, और उधर उसके सेनानायक और सेनायें जिधर को मुख उठा भाग लिये। सेना की सारी व्यवस्था ही बिगड़ गई थी। हाथी चिंघाड़ने लगे। और घोड़े उछलते हुए, इधर-उधर दौड़ने लगे। और घोड़ों के दौड़ने से सैकड़ों सैनिक कुचलकर मृत्यु के मुख में चले गये। उधर जलते हुए वृक्षों

ने सैनिकों के ऊपर गिर-गिर कर उन्हें भून डाला। जंगल आग का दरिया बना हुआ था। ऐसे में घुड़-सवारों तथा पैदलों का चलना, नामुमकिन था। परन्तु वहां रुकना और ठहरना बिन आई मौत मरना था। उनके ऊपर जलते हुए वृक्ष तड़ातड़ गिरकर जवानों को भून रहे थे। गजनी का सुलतान हताश हो पागलों जैसा हो गया था। कौन मरा और कौन जिन्दा है, उसे कुछ भी पता नहीं था। उसका हर एक सैनिक जल-भुनकर भी वहां से भाग निकलने की कोशिश में था। पहाड़ी हवा अपना अलग कमाल दिखाकर अग्नी को भड़का रही थी। इस अग्नी भरे समुद्र का कहीं ओर-छोर ही नजर नहीं आता था। महमूद घायल और थका हुआ अजमेर से चला था। अब मृत्यु के मुख में जाने के वास्ते वह अपने घोड़े से जमीन पर गिर पड़ा।

गजनो के दैत्य के गिरते ही उसके अंगरक्षकों ने अपनी जान पर खेलकर उसे हाथों हाथ उठा लिया। और उसे सभी विपताओं से बचाते हुए, वह भाग निकले। पांच घंटे के पश्चात बची-खुची फौजें, इस अग्नीदाह से पार हुईं सुलतान की तीन हिस्से सेना अग्नी द्वारा भस्म हो गई थी। सिर्फ एक हिस्सा बहा-

दुर जवान मुश्किल से बच पाये थे। डेरे तम्बू हाथी घोड़े जल-भुन कर अधमरे हो गये थे। और खाने-पीने का सभी सामान उस आग के दरिया में छोड़कर उन्हें भागना पड़ा था। आग के बन को पार कर बची-खुची सेना ने एक छोटे से मैदान में पेड़ों तले अपनी छावनी छाई।

छावनी क्या थी, खाना बदोशों के रेवड़ के समान सुल्तान के सैनिक पड़े हुए थे। बहुतों की दाढ़ियां झुलस कर आधी चौथाई ही रह गई थीं। और उनकी पोशाकों की दशा तो पागलों के, कपड़ों से गई बीती थी। खाने पीने का सामान कुछ भी पास में न था, और भूखे प्यासों को आगे बढ़ना सम्भव ही नहीं था। इसलिए गजनी के दैत्य, और उसकी सेना को हताश हो वहीं रुकना पड़ा। दूसरे दिन वहां से चलने में ही, कुशलता नजर आई। इसलिए मह-मूद ने अपनी भूखी नंगी सेना को ले कूंच कर दिया. उसने विचार किया कि रास्ते में जो भी ग्राम नगर दिखाई देगा, उसी को लूट पाट कर सेना के खाने पीने का इन्तजाम किया जायेगा। परन्तु थोड़ा आगे चलने पर ही उसे, और उसकी सेना को एक तंग घाटी में घुसना पड़ा। आधा रास्ता पार करने पर, उसे अपने नये संकट का पता लग गया।

उसने देखा कि पर्वत की ऊँची चोटी पर, धनुधारी घूम रहे हैं। दैत्य का बदन बुरी तरह कांप उठा। और महमूद के सिपहसालारों ने भी इस भयानक विपत्ति को भली प्रकार अनुभव किया, परंतु पीछे लौटना तो सम्भव ही नहीं था। क्योंकि घाटी के बाहर तक अभी उसकी सेना थी। जो घाटी में घुसने के इन्तजार में खड़ी थी। और उन तक खबर पहुंचाने का भी कोई उपाय नहीं था। मजबूरन प्राणों पर खेल कर, महमूद के सरदारों को आगे बढ़ना पड़ा। जो भी मलेच्छ आगे बढ़ा, उन पर हो दोनों ओर से तीरों की वर्षा होने लगी। और बड़े बड़े पत्थर लुढ़काकर बिल्लोचियों को घोड़ों सहित चकनाचूर कर दिया। इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिये महमूद ने जल्द से जल्द घाटी पार करने की ताकीद अपने सेना नायकों को की। दिन छिपने तक बड़ी मुश्किल से दुश्मन ने घाटी पार कर पाई। राजा दुर्लभराव की योजना ने अपने एक भी आदमी का घात कराये बिना ही मलेच्छ की सेना तहस नहस कर दी। अब उन मुर्दों के सामने उसने युद्ध करके, सैनिकों की सख्या घटाना उचित न समझा। गजनी का सुल्तान पिटे पिल्ले के समान अपना सा मुंह लेकर अपनी बची खुची सेना को लेकर वहां से चल पड़ा।

श्री गोगा महापुराण ८४वाँ भाग प्रारम्भ

सज्जनो ! घाटी से बाहर निकल कर महमूद ने नदी पारकर खुली जगह में, अपने फौजियों को ठहरा दिया। और खुदा का शुक्रिया अदा कर उसने नवाज पढ़ी, राजा दुर्लभदेव अपनी सफलता पर प्रसन्न होता हुआ कोट को लौट गया। मित्रो सिद्धपुर का किला, गुजरात के प्रसिद्ध किलों में अपनी शानो शौकत में अकेला किला था। यह किला राजा मूलदेव ने भारी धन खर्च करके बनवाया था। किले की कला कौशल और विशालता ऐसी थी कि ये गुजरात का दूसरा देव स्थान हो। सोमनाथ के पश्चात इसका ही स्थान था। राजा दुर्लभदेव चतुर चालाक और ढोंगी किस्म का इन्सान था। यह राजा साधू भेष में रहकर मंडलेश्वर के नाम से विख्यात हो गया था। यह गुजरात के राजा चामुण्डराय का पुत्र था। इसने अपने पिता की ढुलमुल नीति के कारण सालाना खिराज देना भी बन्द कर रक्खा था। यह अपने पिता चामुण्डराय और बड़े भाई बल्लभदेव को मार कर खुद राजा बनना चाहता था।

दुर्लभदेव और मन्त्री बीकणशाह भी इसके षड़-यन्त्र में शामिल थे। परन्तु दुर्लभदेव भीमदेव से

भयभीत रहता था। और अपने भाई बलदेव का उससे प्रेम दुर्लभदेव को फूटी आँख नहीं सुहाता था। दुर्लभदेव निरभिमान होने के कारण सभी व्यक्तियों की सुख दुख में सहायता करता था। इसलिए सभी जनता इस हरफनमौला राजा का मान करती थी। गजनी से महमूद के आने की खबर खूब बढ़ चढ़कर फैलने के कारण गुजरात की सारी जनता परेशान थी। जनता घबराकर अपना धन धान्य छिपा रही थी। कुछ लोग इधर उधर अपनी रिश्तेदारियों में भाग रहे थे, जहाँ महमूद के आने का कोई भय नहीं था। अजमेर और नान्दौल का पतन और घोघागढ़ की तबाही का चस्का लोगों के खून को पानी बना रहा था। परन्तु राजा दुर्लभदेव बड़ी सावधानी के साथ अपनी योजना बना रहा था। उसने विचार बनाया कि इस गजनी के दैत्य की सहायता करके देश को उजड़वा दिया जाये, और इसके चले जाने के पश्चात गुजरात को अपने अधिकार में करना, कौन बड़ी बात है।

इसलिए दुर्लभदेव ने अधिक सेना की भर्ती कर के, काफी अस्त्र शस्त्रों का भण्डार भी इकट्ठा कर लिया। और चुपचाप अपनी योजना की पूर्ति में वह

जुट गया। उसके बहुत से जासूस, देश के चारों तरफ फैलकर, यह प्रचार कर रहे थे कि गजनी का दैत्य, गुजरात पर चढ़ा चला आ रहा है, उसका मुकाबला करने के लिए, सब भाई सिद्धपुर में आकर जमा हो जाएँ। और खास स्थानों पर उसने खुद पहुँचकर राजपूत सरदारों को भी उसने उत्साहित किया, राजा का साधू भेष और प्रभावशाली मुख देखकर, हजारों की संख्या में गुजरात के वीर युवक, दुर्लभदेव के झण्डे के नीचे सिद्धपुर आकर इकट्ठे हो गये। दुर्लभदेव के पास अब बड़े राजाओं जैसा लश्कर हो गया था। इतना इन्तजाम हो जाने से जरा भी सन्देह नहीं रहा था कि महमूद का एक भी सरदार और एक भी घोड़ा दुर्लभदेव राजा के तीरों से बिंध कर परलोक पहुँच जाने से बच जायेगा। इस छली कपटी दुर्लभदेव ने आप ही महमूद की इमदाद करने का विचार न किया था।

उसने आबू और झालौर के नरेशों को भी कहला भेजा, आप गजनीके सुलतान का विरोध न करके अपने धन धान्य को बचा लें, और महमूद को गुजरात की तरफ आने दें सिद्धपुर में उसके घुसते ही मैं उसे घेरकर ऐसा मजा चखाऊँगा, कि कोई भी मलेच्छ

भारत पर कभी हमला तो क्या इधर को मुँह करके सोयेगा भी नहीं। अगर दुर्लभदेव इस योजना का सचमुच ही इस्तेमाल करता, तो भारत को गुलामी के दिन न देखने पड़ते। परन्तु यहाँ की खुदगर्जी और मतलब परस्ती ने ही देश का सत्यानाश कर दिया। और अपने पुरखा गोगा राणा के करे धरे पर भली प्रकार पानी फेर दिया और भारत को अपनी आबरू गँवानी पड़ी। राजा दुर्लभदेव की भाँति ही अवन्तीपति भोज और आबू का परमार राजा भी गुर्जरेश्वर की अधीनता का जुआ अपने कन्धे से उतार कर स्वतन्त्र होने के ख्वाब देख रहे थे। यदि ऐसे अवसर में महमूद गुर्जेश्वर नरेश और दुर्लभदेव का दमन क्यों न कर दे और उन्होंने दुर्लभदेव को कहला भेजा कि हम आपकी योजना का स्वागत करते हैं। और हम लोग, पीछे से आक्रमण करके सुल्तान की सहायता करेंगे।

उन्होंने गजनी के दैत्य से भी कहलवा भेजा था। अगर सुल्तान हमारे राज्य में उपद्रव न करें तो हम उसे आबू के रास्ते गुजरात में घुसने से न रोकेंगे। भारत के इन दूरदर्शी नरेशों ने अपने स्वार्थवश, राजपूतों का संगठन बिडा कर धर दिया। यह सब

राजपूत महावीर गोगाराणा के वंशज होकर इस युग में अपनी अपनी खिचड़ी अलग ही पका रहे थे, एक राजा लुट-पिट रहा है, तो दूसरा उसकी मदद को बिना अपने स्वार्थ के हरगिज नहीं आता था। यह मूर्ख राजपूत राजे-महाराजे इस मार-काट के युग में भी अपना बड़ा साम्राज्य स्थापित न कर सके। महमूद ने परमार राजा के आश्वासन का स्वागत करके उसे हीरे मोतियों की भेंट भी भेजी। और दोनों दोस्तों की दोस्ती का शुक्रिया अदा किया।

गुजरात के इन नये अनुभवों से महमूद का हौसला बुलन्द हो गया था। यहाँ उसे किसी नरेश से दोस्ती की भीख माँगनी नहीं पड़ रही थी। यहाँ के नरेश उल्टी उसी से दोस्ती की भीख माँग रहे थे। जबकि वह फटेहाल बड़ी बुरी हालत में चला आ रहा था। उसमें सोमनाथ के लूटने की हिम्मत थी ही नहीं उसे गजनी जिन्दा लौटने की भी आशा नहीं रही थी।

श्री गोगा महापुराण ८५वाँ भाग प्रारम्भ

बन्धुओ! घोघाराणा धर्मगजदेव के पतन के कारणों का समाचार छूटे हुए तीर की तरह गुजरात

प्रान्त के पाटन नगर में भी आ पहुँचा, कि अब गजनी का दैत्य गुजरात की ओर बढ़ा चला आ रहा है। और गुजरात की जनता किस्से, कहानियों की तरह ही बढ़ा-चढ़ाकर उस दैत्य की निर्दयता और क्रूरता का काफी भय लोगों को दिखा रही थी। कोई कहता कि उसकी राक्षसों जैसी सेना है तो कोई कहता भूत-प्रेतों जैसी है। कोई कहता उसके पास उड़ने वाले घोड़े हैं, तो कोई कहता उड़ने वाले हाथी भी हैं। जो मर-मर कर जी उठते हैं। और उसके पास कटे सिर को जोड़ने की दवाई भी है। जितने मुंह उतनी बात बनाई जा रही थी, पाटन में महमूद के भय का आतंक घर-घर छा रहा था। लोगों के चेहरों पर हवाईयां उड़ रही थीं। सेठ-साहूकार अपने धन-धान्य को धरती और तहखानों में छिपा रहे थे। जिससे जो भी जरूरी सामान लेकर भागते बना उसे वह लेकर भाग निकला। जिसका जिधरको मुख उठा, उधर ही को वह भाग लिया। भय के कारण किसी को किसी को सुध-बुध भी नहीं थी। कोई मामा के यहां भाग कर पहुँच रहा है तो कोई फूफा के घर ही जा पहुँचा है।

गजनी के दैत्य के अत्याचार को लोग काफी

बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे थे। भय के कारण जनता घबरा गई थी। और आपाधापी के कारण पाटन में में भारी भगदड़ मची हुई थी। इस वक्त पाटन में दो ही बहादुर वीर थे। जिन पर पाटन की रख-वाली का पूर्ण भार था। एक का नाम दामोदर मेहता और दूसरा मन्त्रिश्वर विमल देव। इन दोनों ने मिलकर विचार-विमर्श किया, और पाटन की परिस्थिति को भली प्रकार समझा। फिर आगे की योजना बनाई। महाराज बल्लभदेव और भीम-देव उस समय युद्ध सामग्री और सेना का संग्रह करने में नरायनपुर गये हुए थे। इधर दामोदर मेहता ने तुरन्त ही बस्ती और राज्यकोष की सुरक्षा का बन्दोबस्त किया। और नगर में जो भगदड़ मची हुई थी, उसे समझा-बुझाकर रुकवा दिया। फिर ढिंढोरा पिटवाकर ऐलान करवा दिया, कि कोई भी नगर निवासी भाग कर कहीं नहीं जायेगा। राज व्यवस्था कड़ी करदी गई और लोगों से कहा सब अपने-अपने कार-व्यवहार में लग जाओ। इसके पश्चात उज्जैन, श्रीमाल, भृगुकच्छ और कन्नौज के ब्राह्मण परिवारों तथा राजकोष के साथ-साथ राज-परिवारों को भी खम्भात और भरोच में भेज दिया

गया। फिर ग्रामीण जनता को बचाव वाले ग्रामों को रवाना कर दिया।

रास्तों और जल के स्थानों पर पहरे बिठा दिये गये। और खम्भात की खाड़ी से पानी के जहाजों को साधनयुक्त करके वक्त-बेवक्त के वास्ते तैयार रखा गया। ग्रामों की खाद्य सामग्री राज्य की जिम्मेदारी पर और धन्य धान के छकड़े भरवाकर वल्लभ देव महाराज के पास राधनपुर को रवाना कर दिया गया। इस कार्य के पश्चात् दामोदर मेहता ने नगर की रक्षा का भार संभाला, और विमल देव शाह ने महाराज का स्थान रिक्त कराने का बीड़ा उठाया। यह दोनों राज्य अधिकारी अपनी अपनी योजना सफल करने के वास्ते जी जान से जुटे हुए थे।

श्री [illegible] महापुराण ८९वाँ भाग प्रारम्भ

राव नवघन जूनागढ़ नरेश सूचना के बिना ही पाटन नगर में आ धमके। इनके साथ दो ढाई हजार के लगभग [illegible] घुड़सवार भी थे। उन्होंने शस्त्र लिये सरोवर के निकट शहर से बाहर अपने डेरे डाले। नवघनराव सरल हृदय, और निष्ठावान वीर बात

के धनी भी थे। गुजरात में उनकी काफी इज्जत और खूब धाक भी थी। जनता उनके भय से थर थर कांपती थी। राजकुमार भीमदेव इनके जामाता थे। नवघनराव की इकलौती पुत्री उदयवन्ती, भीमदेव के साथ ब्याही थी। रानी उदयवन्ती अभी नवयुवती ही थी, परन्तु दिमाग की बड़ी तेज तर्रार थी। रानी की चालढाल गर्वीली थी और अपने पिता पर उसे बड़ा भारी नाज था। पिता भी अपनी इकलौती पुत्री को प्राणों से अधिक मान देते थे। नवघनराव स्वभाव के कठोर योद्धा होते हुए भी, हृदय के शुद्ध थे। पाटन नरेश की लापरवाही और महमूद की चढ़ाई सुनकर बिना बुलाये ही राव अपना कर्तव्य पालने को, इस टेढ़े अवसर पर पाटन आये थे। नवघनराव का सेना सहित आना सुनकर सभी को भारी आश्चर्य हुआ, और राज्य पुरुष भयभीत हो चिन्ता करने लगे। परन्तु दामोदर मेहता राज्य की ओर से, राव का स्वागत सत्कार करने के लिये उनके डेरे पर जा पहुंचे और उन्हें फौरन पता पड़ गया कि राव साहब महमूद के विरोधी बन पाटन की रक्षा करने को आये हैं।

श्री गोगा महापुराण ८७वाँ भाग प्रारम्भ

बन्धुओ ! देखा आपने कि अपने वीर देश में, एक लुटेरे मलेच्छ के घुसने के कारण कितना भारी तहलका मचा हुआ है। अब आप जरा महाराजा चामुण्डराव की विचित्र ऐश परस्ती का अन्जाम देखें कि गुजरात के स्वामियों का कैसा हाल था। महाराजा चामुण्डराव ने अपने पुत्र विमल से पूछा, मैंने सुना है, पाटन की जनता नगर और अपना घरबार छोड़ कर भाग रही है। पुत्र बोला महाराज आपने सही सुना है। गजनी का दैत्य गुजरात की ओर बढ़ा चला आ रहा है महाराज। राजा बोला तो बलुकाराय क्या कर रहा है, उसे उस मलेच्छ को मार भगाना चाहिये था।

परन्तु महाराज यवन के पास तो अपार सेना है, पाटन में सेना नहीं के बराबर है। राजा चामुण्डराज बोले, तो तुम भी सेना इकट्ठी करो, इन्तजार किस बात का है। महाराज राजकोष में धन नहीं है, और बिना धन के सेना को भरती किस प्रकार हो सकती है। इस समय पाटन की जो सेना है, उस पर अस्त्र-शस्त्र भी नहीं हैं। महाराज बोले तो धन कहाँ चला गया

बिमल, बिमल ने उत्तर में कहा महाराज सारा धन तो आप ही ने धवलग्रह के सरोवर बनवाने में खर्च कर दिया था। राजा बोला, परन्तु मैं तो तुमसे यह पूछता हूं कि अब प्रजा की रक्षा किस प्रकार होगी। बिमल बोला मैं क्या बताऊँ महाराज यह सब तो आप की प्रजा भी भली प्रकार जानती है कि हमारा राजा ऐश परस्त है। वह हमारी रक्षा कतई नहीं कर सकता है। इसीलिये वह भाग रही है। प्रजा जानती है कि परम परमेश्वर राजाधिराज, गुजरात नरेश महाराजा चामुण्डाराय हमारी रक्षा करने में असमर्थ हैं, अगर यह बात न होती तो प्रजा काहे को भागती। बेटा बात तो बहुत खराब है अब क्या होना चाहिए।

बिमल बोला, महाराज होना जाना क्या है आप मौजमजे करो, प्रजा कहती है पहले पाटन पर तबाही आवेगी, पीछे सोमनाथ का विध्वंश होगा। महाराजा बोले नहीं नहीं रे बिमल, ऐसा हरगिज नहीं होना चाहिए। तुझे क्या खबर अनहिल्ल पट्टन पश्चिमी भारत का मुख है। और भगवान सोमनाथ, सोलंकियों के मुख देवता हैं। बिमल बोला तो महाराज इससे क्या होना जाना है। धन का दुरुपयोग और आपस की फूट, मतलब परस्ती जिस राजा के

राज में होती है, उसकी दुःखी जनता की आह क्या खाली जायगी, अब तो एक ही उपाय है। महाराज हाथ में. तलवार उठावें और चोवाराणा की तरह युद्ध करें, महाराज धर्मगजदेव जैसे कट मरें उसी तरह आप भी कट मरिये, जग में नाम अमर हो जायगा। पीछे पाटन का जो होगा, सो भुगता जायेगा, आपको चिन्ताओं से तत्काल मुक्ति मिल जायेगी। विमल की वार्ता सुनकर राजा चामुण्डराव के मुख पर जरदाई फैल गई, वह अभी मरना नहीं चाहता था। उसने भयभीत दृष्टि से मन्त्री के मुख की ओर देखकर कहा विमल बेटा जैसे भी हो पाटन की लाज बचाओ।

महाराज आप राजसिंहासन का त्यागकर, शुक्ल तीर्थ में जाकर शान्ती के साथ ओ३म् नमः शिवाय का जाप करें। महाराज बोले, अगर मैं राजसिंहासन नहीं त्यागूं तो, तो महाराज तलवार उठावें अगर मलेच्छ के हाथों आप बे मौत मरना नहीं चाहते हों। इतना सुनकर राजा की आंखों से नीर टपकने लगा, और वह भयभीत हो बोले, बेटा विमल अब क्या मेरा तलवार चलाने का समय है। विमल बोला तभी तो महाराज मैंने आपसे शुक्ल तीर्थ जाने की

प्रार्थना की है। उस रण स्थली की सुपणी नदी से मन्द पवन के सुहावने झोंके निकलते हैं, और गजनी का सुल्तान, उधर पहुंचेगा भी नहीं। राजा बहुत भयभीत हो उठ खड़ा हुआ। इसी महाराजा ने अपने जीवन के साठ वर्ष इसी गद्दी पर बैठकर ऐशो आराम किया था, और बहुत से छत्रपति नरेशों को जीतकर अखण्ड राज्य किया था। आज बुढ़ापे में उसे अपनी गद्दी का मोह छुड़ाये से भी नहीं छूटता। इसी दिन इस राजा की हत्या इसकी पत्नी दुर्लभदेवी, और पुत्र दुर्लभदेव और मन्त्री ने मिलकर लोभवश कर दी थी। इसे आप पीछे भली प्रकार पढ़ चुके हैं। महाराज भीमदेव की कोशिशों के फलस्वरूप, पाटन में बड़े बड़े महावीर नरेशों की सेनाओं के दल बादलों के समान आने लगे।

भृगु कच्छ के दद्दा चौलुक्यराय, कच्छ के कमा लखाणी, कीर्तीगढ़ के केशर मकवाणा वगैरह बड़े बड़े सामन्त अपना अपना सैन्य दल साथ लेकर पाटन के मैदान में आ जुटे। इसके अलावा द्वारका, बांसवाड़ा और आबू के छोटे बड़े सभी सरदार, योद्धा सैनिक तथा सोरठ गुजरात और कोंकण के रणधीर वगैरह अपने अपने हथियार लेकर, गजनी के दैत्य

से युद्ध करने के लिए विराजे । एक तरफ पाटन के लोग नगर छोड़कर भाग रहे थे और दूसरी तरफ यह महावीर योद्धा मरने मारने को पाटन में पधार रहे थे । और राजा की ओर से, महाराज भीमदेव के सेवक इन. वीरों की हुक्का पानी से खातिरदारी कर रहे थे । अब व्यर्थ वक्त न गँवाकर असली मुद्दे पर आना चाहिये, सब सामन्तों के आ जाने पर, दामोदर मेहता ने, राजगढ़ में दरबार होने की घोषणा कर दी । छोटे बड़े सभी सामन्तों और वीरों ने, इस सभा में भाग लिया । सभा के बीचोंबीच सर्वसम्मति द्वारा वल्लभदेव को गुजरात नरेश की पदवी से विभूषित किया गया । और उनकी वद्धावलि बखानी गई । राज के प्रमुख अधिकारियों को इनाम इकराम से सम्मानित किया गया, और महमूद के हमले की योजना पर विचार विमर्श कर, दरबार स्थगित कर दिया गया । फिर गुप्त मन्त्रणा शुरू हुई, जिसमें प्रमुख नरेश और सरदार शामिल हुए ।

दामोदर मेहता ने चारों तरफ अपनी दृष्टि घुमाकर कहा, आज हम लोगों के सामने कठिन कठिनाइयां हैं । हम लोग चारों तरफ से दुश्मनों से घिरे हुए हैं । हम लोगों का संगठन बिगड़ जाने के कारण

एक म्लेच्छ हमारे धर्म और देव स्थानों को नष्ट-भ्रष्ट करके लूटने को बढ़ा चला आ रहा है । हमारे पुरखों की सदा से एक ही निष्ठा रही है, कि धर्म पहले और राजसत्ता बाद में । अब हम लोगों को एक ही पथ, निर्धारित करना है, कि राजनीति घर शत्रुओं पर और तलवार धर्म शत्रुओं पर चलानी निश्चित की जाय । इसी नियम द्वारा हमारी विजय होना निश्चित है । इसलिये हमें काफी सतर्क रहना चाहिये । भाठमक देव बोले, तो प्रथम मालवा पर विचार करना उचित है । क्या विचार करना है, वहाँ आपने क्या कुछ देखा, मैंने सिर्फ एक ही बात वहाँ देखी है कि मालवा की सामर्थ्य तो अपार है, परन्तु वह शक्तिहीन है । महाराज पाटन मालवा के सामने नग्न है। इस समय यहां की महत्ता मूलराज देव तक ही सीमित समझो, परन्तु मालवा की परम्परा, मुंज उनके चाचा सिन्धुराज पिता, और मालव पति राजा भोज, इन सबकी मेहती निष्ठा है । मालवा में वीर भी हैं, और विद्वान भी और विशाल गज सेना भी है । और वीरांगनाओं और विद्या तीनों की आशक्ति है । इस त्रिपुटी के द्वारा ही मालवा का पतन निश्चित है ।

राव ने भौंहें सिकोड़ कर कहा, यह कैसी बात है। मैं कुछ समझा नहीं लो फिर समझो वहां के योद्धा चाणक वाली राजनीति को नहीं समझाते वहां वीरांगनाओं का ही प्रभुतत्व है। वीर और विद्वान दोनों ही उनके उपासक हैं, इसी से मैं कहता हूं कि मालवा राज्य का पतन निश्चित है। भीमदेव बोले और हमारे पाटन में आपको पाटन तो अभी स्वप्न ही देख रहा है। शायद सच्चा हो भी जाय। परन्तु उसके लिये भी तो सामर्थ की आवश्यकता है, पर तुम्हारा गौरव हीं पाटन को सामर्थ है। अब उसके प्रगट होने का वक्त आ गया है। भाष्मक देव ने प्रेम भरे स्वर से यह बात कही। और फिर मुस्कराकर भीमदेव की ओर देखकर कहा परन्तु तलवार धर्म शत्रु के लिये, और राजनीति घरू शत्रु के लिये होना जरूरी है, तब उन्होंने अपनी तलवार ऊँची करके कहा ? ठीक है. भाष्मक देव जी मग्न होकर बोले, मेहता आप मालवा से निश्चिन्त रहो, मालवा पाटन पर कुदृष्टि नहीं डालेगा। वह कैसे राव ने भाष्मक देव से आश्चर्य पूर्वक पूछा। यह इसलिये कि यह पंडित उसका पूरा बन्दोबस्त करके यहां लौटा है। यह तो आपने बहुत ही सुन्दर कार्य कर डाला,

परन्तु यह सब हुआ किस प्रकार। भाष्मक देव ने मुस्कराकर कहा मेहता जी मुझे कोई अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ा है।

मालवराव उस समय राजधानी में नहीं थे वह सेवपाट गए हुए थे। मैंने वहां एक नाटिका का आयोजन किया, उसमें मुझे मालवा के विद्वान पंडित और सेठ साहूकार भी आमन्त्रित करने पड़े। महाराज मुन्ज की विधवा पत्नी, कुसमावती भी वहां आ बिराजी। नाटिका में तैलप राज्य का अभिनय हुआ। जिसमें तैलप राव ने, मालवा राज मुन्ज का सिर काटने का प्रदर्शन किया. बस इतने से ही कार्य पूरा हो गया। महारानी ने क्रोध में भरकर कहा, खेल तुरन्त बन्द कर दिया जाय। और मालवे की गज सेना तुरन्त तैलप राज्य पर चढ़ाई करे। रानी के स्वभाव से मैं भली-भांति परिचित था। मैंने महारानी के अभिनन्दन के वास्ते जनता और पंडितों की व्यवस्था कर रखी थी। सो अभिनन्दन करने से महारानी अतिप्रसन्न हो गई। और मालवाराज ने भी अपनी अनुमति दे दी। मै उन्हें तैलप राज्य पर अभियान करते हुए छोड़ आया था। सोरठ राव प्रसन्न होकर मुस्करा दिये, और दामोदर मेहता की भी बेचैनी

दूर हो गई। तब वह बोले क्या गजनी के सुल्तान से वहीं निबटना होगा, नहीं उसे छेड़ने का अभी कोई काम नहीं है। मंत्री जी, परमार को सन्धी के कारण उसे वहां से निकल आने दें। गजनी का दैत्य इस समय बुरी दशा में है। दुर्लभ राज ने अरावली की घाटियों में उसे फंसा रखा है। हमें ऐसी ही सूचना मिली है।

इस पर महाराजा वल्लभदेव ने कहा पर यहां उसकी कब्र तो बनी नहीं, इसलिये हमें हिम्मत से काम लेना चाहिये ढील देना ठीक नहीं है। इसीलिये तो मैंने भी कहा, मन्त्री जी आबू में बैठकर परमार और महमूद दोनों पर ही दृष्टि रखें। क्या पता कि मलेच्छ के आने पर चन्द्रावती नगरी में ही निर्णायक युद्ध हो जावे, दामोदर मेहता ने कहा असम्भव कुछ भी नहीं है। भाठमक देव ने भी कहा ठीक है दामोदर मेतता के ठीक कहते ही विमल शाह का आबू जाना निश्चित हो गया।

श्री गोगा महापुराण ८८वाँ भाग प्रारम्भ

बन्धुओ अब दामोदर मेहता ने सन्तोष की सांस लेकर कहा कि पाटन की राजनीति मुझ पर छोड़

दीजिये, पाटन को कोई क्षति हो जाये तो मैं जुम्मेवार हूं, मेरे रहते एक मनुष्य को भी आंच नहीं आवेगी। मुझे सिर्फ भाठमक को दे दीजियेगा, चन्द्रशर्मा मेहता ने भी कहा, मैं भी आपके साथ चलूं। नहीं, तुम कुमार भीमदेव के साथ परछाईं की भांति रहो। और कुमार आप प्रभास पट्टन में सम्मिलित धर्म सैन्य का प्रतिनिधित्व करो। और उनकी रक्षा और नीति का संतुलन मेहता साहब तुम्हें करना है। परन्तु मैं क्या करूं मेहता जी वल्लभ देव ने पूछा? महाराज आप छिपे रूप से राधनपुर में रहिये, आपकी सुरक्षा की व्यवस्था मेरे जुम्मे रही। क्या पाटन के सम्बन्ध में भी विचार-विमर्श राधनपुर में ही होगा। चन्द्र शर्मा ने कहा कतई नहीं। परन्तु अपराधी और राजबंदियों की बात तो रह ही गई।

राजद्रोह और राजा की हत्या का अभियोग इन लोगों पर है। तो इसके लिये आप सुनो महारानी दुर्लभदेवी को बन्दी करके, दामोदर मेहता उन्हें किसी दूर स्थान में भेज दें। और अन्य अपराधियों को मृत्यु दण्ड की सजा सुनादी जाय।

कुमार दुर्लभदेव के सम्बन्ध में बाद में निर्णय किया जावेगा। इस पर चन्द्र शर्मा ने कहा, उन्हें

तब तक मेरी निगरानी में छोड़ दीजिये। क्या महमूद की राहबाट रोकने के लिये, सब पुलों को नष्ट करवा दिया जाये। क्या लुटेरे म्लेच्छ को रोकने का और कोई उपाय आपने सोचा है। यह सब आप पाटन की राजनैतिक व्यवस्था पर छोड़ दीजियेगा। इसकी व्यवस्था मैं करता रहूँगा। आप तो समूची सम्मिलित सेना लेकर कल सबेरे ही अपना कूँच कर दें। महमूद का जो भी विरोध हमें करना है, वह प्रभास क्षेत्र में ही किया जावेगा। और महाराज बल्लभ देव भी इसी वक्त चले जायें। और उनके साथ महामंत्री विमल देव भी समूची सुरक्षित सेना को भी साथ ले जाएँ, यह शब्द चन्द्र शर्मा ने बड़ी दृढ़ता के साथ कहे। और पाटन की रक्षा के लिये, ज्यादा से ज्यादा पचास सैनिक काफी हैं। और जनता का निकासन अब बन्द कर देना ही उचित है। यातायात के साधनों पर कुमार भीमदेव इसी क्षण अधिकार करलें तो ठीक रहेगा। पाटन से प्रभाव तक दूसरे मार्गों पर सैनिक निरीक्षण कायम कर देना चाहिये।

जगद्दत्त शर्मा की बात को सबने ही सही बताया। दामोदर महता ने कहा अब सब कुछ निर्णय

हो चुका है, अब सभा भंगकर देनी चाहिये। रात को ही सभा भंग कर दी गई। राजपूत योद्धाओं ने विश्राम को हराम समझ, कर सभी अपने अपने कार्य में जुट गये। सूर्य उदय होने से पहले ही कूँच नगाड़े बज उठे, और सभी वीर बहादुर योद्धा चल पड़े। दिन निकलते निकलते ही सारा नगर सूना हो गया और नगरी की सारी रौनक ही जाती रही। सिर्फ पाँच जवान दरबार गढ़ की ड्योढ़ियों में बैठे और दो चार बाहर भीतर आ जा रहे थे। दुकानों मकानों और मंदिरों के दरवाजे बन्द थे। पनघट, ताल, बावड़ी सभी सूने पड़े थे। और आज धूप की रोशनी फैलकर व्यर्थ ही जा रही थी। चन्द्र शर्मा ने नगर में डियोंडी पिटवा दी कि कोई भी मनुष्य बस्ती के बाहर नहीं जायेगा। फिर नगर के फाटक बन्द करा कर, और अपने आदेशों का निरीक्षण करने, घोड़े पर सवार होकर बस्ती की ओर घूम गये। उनके अकेले अश्व की टापों की आवाज उन्हीं के कानों तक पहुंच रही थी। दोपहर को माध्मक देव और चन्द्र-शर्मा, दोनों ब्राह्मण इकट्ठे बैठे। माध्मक देव बोले, यहाँ तक तो सब ठीक ठाक हो गया। परन्तु अब आप तुरन्त ही सिद्धपुर को रवाना हो जावें। और

दुर्लभदेव के सामने रोना धोना करके कहिये कि पाटन से सभी सेठ साहूकार, गरीब जनता और राजा तक भाग लिया है। और बाणबली भीमदेव भी, गजनी के सुल्तान से युद्ध करने के लिए अपनी सारी सेना लेकर सोमनाथ चले गये हैं। सारी धन सम्पत्ति राजा साथ ले गया है. पाटन इस समय जन शून्य है। और आप वीर योद्धा महा प्रतापी बलवान हर तरह से योग्य युवक हो, जैसे भी बने आप पाटन की रक्षा कीजिये।

जो चालीस पचास मनुष्य वहाँ हैं, उन्हें अभय कीजिये। आप धर्मात्मा राजा बन कर राजधर्म का पालन करें। और जनता के जान माल की रक्षा करना आप राजाओं का परमधर्म है। परन्तु उपाय ऐसा कीजिये, वह अपनी सेना लेकर पाटन हरगिज न आये। हमें उनकी सैन्य शक्ति को, बुरे वक्त के लिए सुरक्षित रखना है। क्या पता आबू में महमूद से युद्ध करना पड़ जाये, तो यही सेना हमारे काम आयेगी। इसके पश्चात आप ऐसा कीजिये, कि आप महमूद से मिलें और बातें बना उसका दिमाग ठण्डा करके, उसे पाटन की ओर ले आयें, और वह पाटन की हानि किये बगैर ही आगे को बढ़ जाये। और अगर वह

भाग्यवश देवस्थान से बच भी गया तो वापसी में हम उसे भली प्रकार सुलट लेंगे। अगर आप दुर्लभ देव के दूत बनकर गजनी के सुल्तान से मिल लें और उस दैत्य का स्वागत कर अपनी क्षति से बच जाएँ और वह सही सलामत प्रभास की ओर चला जाये तो बड़ा ही अच्छा है। परन्तु मित्र अब समय बहुत ही कम है, और कार्य अधिक। इसलिए आप तुरन्त सिद्धपुर की ओर कदम बढ़ावें। मुझे भी गुप्त राज्य कोष की व्यवस्था करके, और नागरिकों को साथ लेकर मलेच्छ के स्वागत की तैयारी करनी है। भीष्मक देव शर्मा सहमत हो तुरन्त सिद्धपुर की ओर अपने घोड़े पर सवार होकर चल दि ।

अब चन्द्र शर्मा ने नगर के नागरिकों को दरबार गढ़ में बुलाकर कहा, भाइयो इस समय हमारे सिर पर विपत्ति के बादल मन्डरा रहे हैं। अब आप लोगों को वह उपाय करना चाहिये कि साँप भी मर जाय और लाठी भी नहीं टूटे। राजा सेना और धन लेकर यहाँ से चला गया है। हमारे पास न अस्त्र शस्त्र हैं और न लड़ने को सेना है। ऐसी हालत में हम गजनी के दैत्य का मुक़ाबला किस प्रकार कर सकते हैं। इस लिये मेरी सम्मति यह है, कि हम लोग चलकर उस

मलेच्छ को खातिर खुशामद करके उससे कहें, कि सुल्तान पाटन पर आक्रमण न करें। हम आपका विरोध न करेंगे, आप अपने रास्ते सीधे सोमनाथ पट्टन जा सकते हो। कुछ वीर लोगों ने कहा यह तो सरासर कायरता है। इस पर चन्द्र शर्मा ने कहा, मित्रो जान बूझ कर बिन आई मौत मरना बुद्धिमानी नहीं है। आप क्योंकि बचाखुचा लुटवाकर, पाटननगर को मिट्टी का ढेर बनाना चाहते हो, अगर गजनी का दैत्य बाहर ही बाहर खिसक जाय, तो हमारा क्या हर्ज है। आगे बाण वलि भीमदेव उसका कचूमर निकालने को प्रभास में अपना धनुष बाण लिये बैठे ही हैं। नष्ट होने के लिए युद्ध करना एक किस्म का आत्म घात है। आखिर में चन्द्र शर्मा की युक्ति ने वीर नागरिकों को शान्त किया। और अपनी योजना के कार्य में गुप्त रूप से जुट गये।

मित्रो ! मन चाहा कार्य हो गया, युवक राजा दुर्लभदेव भाष्मक देव की चाल न समझ सका, ब्राह्मण देवता ने जनेऊ और नारियल राजकुमार के हाथ में देकर खुद दो जानू होकर बैठ गये। तभी राजकुमार ने वार्ता प्रारम्भ की गुरुदेव पाटन में, सब कुशलता है। पंडित नैनों में नीर भरकर बोला महा-

राज अब कुशल कहां, यशवी राजा मूलदेव का संचित पुण्य समाप्त हो गया है। पाटन आज मुर्दे के समान हो रहा है। गुर्जरेश्वर के सभी खुशामदी राजधानी छोड़कर भाग गये हैं, और बाण वलि भीमदेव भी अपनी जवानी के जोश में महमूद से लड़ने के लिये सेना लेकर प्रभास की ओर कभी के रवाना हो चुके हैं। नगर निवासी बेसहारा होकर जहां तहां भाग लिये हैं। पाटन को अब कुमार आपका ही एक आसरा है और राजकोष का क्या हुआ, भाष्मक देव ने कहा, राजकोष में एक पाई भी नहीं है महाराज, वह सब धवलगढ़ का सरोवर बनवाने और भंडेलों के नाच गानों में समाप्त हो गया था। और सेना का क्या हाल है।

राजकुमार जी अब पाटन में सेना कहां है। कुछ बिगड़े दिल बहादुर भीमदेव के साथ गए हुए हैं। बाकी के बहादुर खेतों में हल जोत रहे हैं। न उन लोगों पर हथियार हैं और न ही घोड़े हैं, और न ही उन्हें काफी दिनों से वेतन मिला है। बालुका राव और दामोदर महता भी क्या बाण बली के साथ ही प्रभास गये हैं। और आपको यहां किसने भेजा है। राजकुमार मुझे आपके पास भेजा है नगर

की जनता ने, जिनके घर बार सुरक्षित नहीं हैं। मैं उन्हें बड़ी मुश्किल से समझा बुझाकर रोक आया हूं, सभी की दृष्टि आपकी ओर लगी हुई है। इसमें मैं क्या कर सकता हूं। महाराज यह कार्य तो राजा महाराजाओं का है। भाष्मक देव बोले अब तो हमारे राजा महाराजा सब कुछ आप ही हैं। और वल्लभ देव का क्या हाल चाल है, उनका तो कुछ पता ही नहीं है वह तो साधू होकर काफी अर्से से गायब हैं। तो सीधे सीधे कहो, कि गुजरात का अब कोई वलि वारिश नहीं है। यह मैं गरीब ब्राह्मण कैसे कह सकता हूं महाराज, जब चालुक्य कुल कमल दिवाकर महा मण्डलेश्वर श्री दुर्लभदेव की अजय तलवार सलामत है। गुरु महाराज मुझे इस झंझट में न डालिये अगर मैं पाटन गया, तो सिद्धपुर की खैर नहीं है। आपका पाटन जाने या गजनी का सुल्तान, न मालूम आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं। भाष्मक देव बोले, मैं क्यों चाहता महाराज, मुझसे तो पाटन के नगर निवासियों ने कहलवाया है। क्या कहलवाया है कि अब तो हमें महाराज दुर्लभदेव का ही आसरा है। वही हमारी रक्षा करेंगे तो हम भी, धन धान्य से सब ही सेवायें करेंगे।

राजकुमार उनका कहना है कि हमारा धन धान्य तो, सब महाराज दुर्लभदेव का ही है। महाराज जब आप उन्हें सुरक्षित रखेंगे, तो क्या वह आप की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं। फिर इस लालची राजकुमार के कान के पास अपना मुख कर के कहा, गुप्त राजकोष कहाँ छिपा है उसे मैं जानता हूँ। दुर्लभदेव सोच-विचार कर बोले, तो इसका मतलब यह हुआ कि मैं अमीर के सम्मुख हथियार उठाऊँ। नहीं महाराज हमें क्या राजा धर्मगजदेव और घोघा राणा की तरह बिना मौत मरना है। हमें तो ऐसा उपाय करना है, कि सांप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। गजनी का सुल्तान न हमारे राज्य को लूटना चाहता है, और न ही यहां का राजा बनना चाहता है। वह तो सीधा सोमपट्टन जाना चाहता है। सो वह खुशी से मौत के मुंह में जाय, भीमदेव का बाण खाकर वह मर गया तो भी जै गंगा और बच आया तो सीधा गजनी की राह लेगा। इस समय उससे लड़ने में हमारा बल काफी घट जायेगा। और लौटते वक्त वह थका-हारा आपकी विशाल चतुरंगी सेना का मुकाबला नहीं कर सकेगा। इसके अलावा भीमदेव भी यह भारी संग्राम करके,

शीघ्र ही नहीं संभल सकेंगे। इसलिये महमूद का वापिस लोटना भी आपके वास्ते वरदान बन जायेगा। उस अवसर पर आप लाभ उठाना, दुर्लभ देव विचार करने लगे, इनसे मन की बात बतानी चाहिये या नहीं। दुर्लभदेव के मन की बात ताड़कर भाठमक शर्मा ने कहा, क्या गजनी के सुल्तान ने अभी तक आपको कोई सन्देश नहीं भेजा है। मैंने सुना है वह आबू की उलझन में उलझा पड़ा है। दुर्लभदेव ने कहा महमूद का सन्देश तो मुझे मिला है। परन्तु मैं उसकी उलझन में पड़ना नहीं चाहता हूँ। ठीक है अगर वह पाटन और सिद्धपुर से न उलझने का वचन देवे तो, इतना ही हम लोगों के लिये काफी है। तो देवता जी इस कार्य को सुचारू रूप से मेरे दूत बनकर आप हां कर आवें। परन्तु आप यह तो बताइये, उससे क्या कहना है मुझे। वाह गुरुदेव यह तो आप ही सही समझ सकते हैं।

आपको उससे किस प्रकार बातचीत करनी है। भाठमकदेव मुस्करा दिये उन्होंने कहा महाराज राज-नीति कहती है, मन में चाहे जैसी उथल-पुथल हो परन्तु मीठी ही वाणी बोलने में भलाई है। और शत्रु के सम्मुख तो उसके अनुकूल बोलना

चाहिये। गुरुदेव आप तो सुलझे हुए विद्वान् हैं, जैसा मौका देखो वैसी ही बातचीत करना। यह शब्द दुर्लभदेव ने कहे। मैं पाटन का निमंत्रण स्वीकार करता हूँ परन्तु आपका प्रधान पद स्वीकार करना होगा। यह नहीं होने का महाराज प्रधान मन्त्री पद के योग एक पुरुष को वह मैंने पाटन में ही रोक रखा है। कौन है वह दुर्लभदेव ने पूछा, तो उत्तर मिला, चन्द्र शर्मा, परन्तु वह तो दामोदर मेहता के गुटका आदमी है। कभी था महाराज परन्तु अब तो वह आप ही के अनुकूल है। मेरी सम्मति है आप भले ही अभी पाटन में न जायें, सिर्फ अपनी मंजूरी देदें, मैं नहीं चाहता लोग कहें कि आप भयभीत हो गजनी के सुल्तान को पाटन में ले आये हैं। अच्छी बात है अब आप महमूद से मिलिये, और साथ में मेरा पत्र और मुद्रा भी साथ लेते जाइये। भाठमकदेव, दुर्लभदेव का पत्र और मुद्रा लेकर, आबू पर्वत की तलहटी में, गजनी की छावनी में जा पहुंचे। महमूद ने बड़े प्यारे ढंग से ब्राह्मण का स्वागत किया। उसे गुजरात की भूमि से मन चाहे सहयोग मिल रहे थे सुल्तान बोला, मेरा दोस्त गुजरात का महाराज दुलभदेव मुझसे क्या चाहता है। जनाब दुर्लभदेव का कहना है कि

नामदार गजनी सुल्तान हमारे पक्के दोस्त सदा ही बने रहें । उनकी केवल ये ही इच्छा है । ये भी कोई कहने की बात है महाराज हम सदा ही गुजरात नरेश के पक्के दोस्त रहेंगे । तो मैं महाराज से कह दूँ कि सुल्तान सिद्धपुर और पाटन के शुभ चिन्तक हैं, उनका इरादा अपने दोस्त को नुकसान पहुँचाने का कतई नहीं है । आप जब उधर पधारेंगे तो महाराज की आज्ञा से सुल्तान का शाही स्वागत किया जायेगा । पाटन की जनता को अपनी रियाया समझकर, उसकी जान माल की सलामती का सुल्तान बचन दें । ऐसा ही होगा महाराज सुल्तान दोस्त के लिए दोस्त हैं और दुश्मन के लिये दुश्मन, आप चिन्तित न हों मेरी तरफ से आप निश्चिन्त रहें । बीच में जो कौल करार हुए हैं उनका राज जाहिर न होने पाये। जाहिर होने से बदनामी फैलने का भय है । इसके अलावा प्रभाष से वापिस लौटते समय सुल्तान खुले दरबार में, हमारे महाराज को गुजरात का राजा स्वीकार कर लेंगे ।

सुल्तान ने कहा हमें यह शर्त भी मन्जूर है। तब ठीक है जहांपनाह कम्बल ज्यों-ज्यों भीगता है, भारी होता चला जाता है तो क्या आपके महाराज की

यह अपनी बात है भाठमक देव बोले नहीं सुल्तान यह ब्राह्मण की बात है । महमूद ने मुस्कराकर कहा ठीक है. हम सब समझ गये । आप हमारे बुजुर्ग हैं, आपकी हम कद्र न करेंगे तो किसकी करेंगे, भाठमक देव को भारी भेंट देकर गजनी के सुल्तान ने बिदा किया । कृतकृत होकर भाठमक देव पाटन लौट आये । महमूद भाठमक देव का इशारा समझ गया था । तभी वह अपनी छावनी उखड़वाकर, गुजरात की श्यामल भूमि को उजाड़ता और रास्ते के ग्रामों को लूटता, और जलाता हुआ वह अनिहल्लापट्टन के दरवाजे पर जा खड़ा हुआ । सिद्धपुर और चन्द्रवती से वह कतराकर निकल आया था दुर्लभदेव ने उसके चले आने में कोई रोक-टोक नहीं की । और विमलशाह भी कान में रुई धर कर सो गये । दुर्लभदेव की तैयारियों को सुनकर गजनी का दैत्य आगे बढ़ने में हिचक रहा था । वह उसके आश्वासन मिलने पर भी बड़ा चौकन्ना होकर आगे को बढ़ा तो था । परन्तु पीछे भी बराबर मुड़-मुड़ कर देखता जाता था । जबकि भाठमक देव ने उसके दिल से भय का कांटा ही निकाल दिया था । दुर्लभदेव की दोस्ती और पाटन की मैत्री उसके लिये देवी वरदान ही बन गये थे अब

उसने एक क्षण भी व्यर्थ खोना ठीक नहीं समझा और वह ताबड़तोड़ पाटन की ओर चल पड़ा ।

श्री गोगा महापुराण ८१वाँ भाग प्रारम्भ

गुजरात के नरेशों ने गुजरात को राजधानी की कतई परवाह न करके, सोमनाथ के वास्ते उन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगा रखी थी । अनेकों क्षत्रपति राजा महाराजा उमराव और मण्लेश्वर, अपनी-अपनी सामर्थ अनुसार अपनी फौजें लेकर वहां पधारे थे। आस पास के छोटे-बड़े सरदार वीर बहादुर जागीरदार भी बड़े उत्साह से दुहरी तलवारें बांधकर, भगवान सोमनाथ पर अपना रक्त चढ़ाने आये थे। हजारों गूजर और वीरांगनाओं और कुल बन्धुओं ने अपना शृङ्गार बिगाड़ कर बेतहाशा स्वर्ण रतन इस धर्मयुद्ध की सहायता के वास्ते भेजे थे। और अपने पति-पुत्र और देवर जेठों को उत्साहित कर धर्म युद्ध करने के वास्ते भेजा था । नंग-धड़ंग रहने वाले कोली ठाकुर और गुजरात के बनों में रहने वाले भील युवक, एक लाख से भी अधिक भगवान सोमनाथ के लिये अपना रक्त बहाने को आये थे । यह बहुत ही

आश्चर्यजनक बात थी, कि भारतवासी अपने राजनैतिक जीवन से पिछड़े हुए थे हो, परन्तु धार्मिक जीवन में अब भी इनमें काफी उत्साह था । इसी कारण मलेच्छों की शक्ति ने बड़ी सरलता से भारत को लूट पाटकरके इसकी इज्जत धूलमें मिलादी थी। मलेच्छों के भय और आपस में प्रेम-भाव न रहने से आरामतलबी तथा अय्यासी के कारण, हिन्दू राजा तीन तेरह होकर बिखरते ही चले गये ।

बन्धुओ प्रभासक्षेत्र में हाथी घोड़ों की धमाचौकड़ी और शोर-गुल के कारण कानों के परदे फट रहे थे । भीड़-भाड़ और धूम-धड़ाके इतने बढ़ गये थे कि ठहरने की जगह और भोजन व्यवस्था तक बिगड़ चुकी थी तेलबाड़े के मार्ग से आने वाले सैनिक रसद से भरे हुए हजारों छकड़े ला रहे थे, अधिक से अधिक खाद्य-सामग्री और अस्त्र-शस्त्र जुटाये जा रहे थे। महाराज भीमदेव ने अनिहिल्लपट्टन खाली कराने के पश्चात्, यह सारी व्यवस्था की थी। उधर महाराज बल्लभदेव जब खम्भात पहुंचे तो उन्होंने आठ जहाज भरवाकर खाद्य सामग्री जलमार्ग द्वारा प्रभास क्षेत्र को भिजवाई थी। युवराज भीमदेव अपने कूटमन्त्री दामोदर मेहता के साथ, अठारह

हजार रणबांकुरे गूजर वीरों को लेकर, प्रभास क्षेत्र में पहले ही आ लिये थे। उनकी अवाई सुनकर, प्रभास की जनता अपनी-अपनी अटारियों पर चढ़ कर इस बाण बली भीमदेव का स्वागत कर रही थी, और नव युवतियाँ झरोकों से झांक झांककर इस वीर बहादुर युवराज पर फूलों की वर्षा कर रही थीं। निकट आने पर सबने देखा कि युवराज भीम देव का हाथी मन्त्रियों सेनापतियों और अनेक रक्षकों से घिरा हुआ है। उनकी श्यामल छवि और गठीले शरीर से वीर तत्व प्रगट हो रहा है एक बारगी ही विह्वल होकर जनता जयकारा लगाने लगी। कि युवराज बाणबलिय भीमदेव की जय हो। नगर के समृद्धशाली नागरिकों ने राजपथ ध्वजापताकाओं से सजाया और गंग सर्वज्ञ ने पुकार कर कहा, धर्म के दुश्मनों का संहारक आ लिया है, सब कोई उसका स्वागत सत्कार करे। सर्वज्ञ ने प्रभास के सेठ साहूकार और धर्मधिकारियों की सेना लेकर नगर द्वार पर ही बाणबलि भीमदेव का स्वागत किया। तभी प्रभास की धर्मधारी जनता वीर रस में इस प्रकार डूब गई जैसे साक्षात् सोमनाथ भगवान ही भीमदेव का रूप धरकर मलेच्छ के वध के वास्ते यहाँ पधारे हों।

उसी समय ज्योतिलिंग को एक सहस्त्र गंगा जल के घड़ों से स्नान कराया गया। एक सहस्त्र घी के दीप जलाये गये। एक सहस्त्र ही बैलपत्र भगवान को अर्पित किए गए। देव अर्चना के पश्चात, रत्न मण्डप में नृत्य का आयोजन हुआ और चौला को रत्न जड़ित जेवरों से सजाया गया। प्रथम दिन ही देवदासी चौला ने जब भीमदेव को देखा था, तभी से वह प्रेम दिवानी हो गई थी। भीमदेव की मूर्ति अपने हृदय में रख वह प्यार में कुलबुलाती रहती थी। और हर समय बाण बलि के दर्शनों को लालायित हो तड़पती रहती थी। जब बाण बलि के आने की धूम मची तो वह नारियों के जमघट में सबसे पीछे धड़कते हुए दिल से मंदिर की सजावट को तिरछी नजरों से निहारने लगी और अपने प्राण वल्लभ को जब से गजराज पर देखा था तब ही से उसके रक्त की एक एक बूँद नृत्य कर रही थी। और जब वह देवता के सम्मुख नृत्य करने आई तो, उसकी मुख मुद्रा ही अजीब थी। आज जो उसका शृङ्गार हुआ था। उस में वह शरदपूर्णिमा की चांदनी जैसी चमक रही थी। उसकी मुख मुद्रा की सजावट देख सभी सैनिक सरदार मन्त्र मुग्ध से बैठे हुए थे। युवराज

भीमदेव के वहाँ होने के कारण कोई ठण्डी आह भी नहीं भर सकता था। भीमदेव भी नृत्य का आनन्द देख मन्त्र मुग्ध हो गहरी निद्रा का आनन्द लेने लगे। उन्हें होश तब आया जब गंग सर्वज्ञ नृत्य बन्द करने को कह रहे थे। सर्वज्ञ का आदेश पाते ही चौला देव वन्दन करती हुई एक दम वहीं नत मस्तक हो गई। उसने मन ही मन देवता से प्रार्थना की हे महादेव बाबा मेरे हृदय देवता की रक्षा करना। इसी क्षण सर्वज्ञ ने आकर गम्भीरता से कहा, आज आप सब मिलकर सोमनाथ भगवान के अंतिम दर्शन कर लो, जब तक महमूद के आतंक का भय दूर न हो जाए, तब तक मंदिर के द्वार बन्द रहेंगे।

सिर्फ यह दास ही भगवान की पूजा किया करेगा। अभी से देवधाम के सब अधिकार मैं बाण बलि युवराज को सौंपता हूँ। आप लोग इस विपत्ति काल में, युवराज की आज्ञा का पालन करें। युवराज को मैं देवाधिष्ठ करता हूँ। आज से सोमनाथ प्रभु का वास बाण बलि के हृदय में रहेगा। अभी से भीम देव हमारी धर्म सेना के प्रमुख सेनापति हैं। सो आप इनके आदेश का पालन भगवान सोमनाथ की आज्ञा समझकर करें। सर्वज्ञ की घोषणा के उपलक्ष्य में

उपस्थित लोगों ने, जोर शोर से जयनाद किया, कि बाण बलि महाराज की जय हो। इस प्रकार से जनता का जयकारा सुनकर, भीमदेव ने भाषण दिया। हे सद्ग्रहस्थ भाई बहनो, सर्वज्ञ ने जो भार मुझे सौंपा है। उसे मैं प्राण रहते पूरा करना अपना धर्म समझूँगा, आज से प्रभाष पट्टन की व्यवस्था सैनिक नियमों की भाँति ही की जायेगी। मेरी मनोकामना है, कि जिस तरुण में मर मिटने की क्षमता हो, वही हथियार धारण कर प्रभाष दुर्ग की रक्षा का भार लेकर, समय समय पर दिए गए आदेशों का पालन करे। अब आप अपने अपने स्थान को जा सकते हैं। युवराज भीमदेव का भाषण सुनकर किसी ने भी जय घोष नहीं किया। और बड़ी गम्भीरता के साथ मंदिर का रत्न मण्डप देखती हुई जनता चुपचाप वहाँ से चली गई।

मंदिर के सभा मण्डप में, केवल दो ही व्यक्ति रह गए। एक युवराज भीमदेव, और दूसरे गंगसर्वज्ञ चौला सर्वज्ञ के पैर पकड़े बैठी हुई थी। कुछ क्षण पश्चात सर्वज्ञ आसन से उठ खड़े हुए, उन्होंने युवराज से मन्द स्वर में कहा, यहाँ आओ, इतना कह वह गर्भगृह में चले गए। उनके पीछे पीछे भीमदेव और

देवदासी चोला भी चल पड़ी । प्रथम तो गंगा ने उन का मार्ग छोड़ दिया, फिर वह भी गर्भ गृह में पहुंच गई । गंग सर्वज्ञ ज्योतिर्लिंग के नीचे ध्यानासन पर विराजमान होकर, उन्होंने युवराज को भी बैठने की आज्ञा दी । चोला और गंगा खड़ी रहीं और सर्वज्ञ ने आँखें बन्द करके समाधी लगा ली । समाधिस्थ हुए जब दो घड़ी बीत गई, उसके पश्चात सर्वज्ञ ने अपने नैन खोले । और मुस्कराकर मृदु स्वर में बोले, सिर्फ गर्भ गृह और देवता पर तेरा अधिकार नहीं रहेगा। यहां केवल मैं ही देवार्चन के लिए रहूँगा ।

भीमदेव ने कहा परन्तु गुरुदेव देव रक्षा भी करनी परम आवश्यक है । सर्वज्ञ ने कहा नहीं तुम केवल, देव स्थान की रक्षा करो युवराज । देवता तो खुद रक्षित हैं, तुम उनकी रक्षा क्या करोगे । युवराज बोले मेरा तात्पर्य ज्योति लिंग से है महाप्रभु, सर्वज्ञ ने कहा, पार्थिव लिंग से जब ज्योति अन्तर ध्यान हो गई, तब देवाधिष्ठान कहाँ रहा, देवस्थान तो खत्म हो चुका है । सो कब गुरुदेव, सर्वज्ञ बोले आज और अभी अभी वह अर्न्तध्यान हो गए हैं । अब तुम्हारे शरीर में देवता का वास हो गया है, अब तुम अपने को शिव समझ कर देव द्रोही मलेच्छ का संहार

करो । लिंग शरीर अचल है, वह यहीं रहेगा और मैं यहीं रहकर, अपना कर्तव्य पालन करूंगा । प्रधान सेनापति का शासन देव सेवक पर नहीं चला करता है । युवराज ने कहा, गुरुदेव अब यह शरीर देवता का हो गया है, अब यह युवराज भीमदेव का नहीं है इस मुख से जो वाक्य निकले हैं । वह देवादिदेव महादेव के हैं । आप उन्हें मानो या न मानो । पर मैं जानता हूँ देवता के पार्थिव शरीर की रक्षा के लिए मेरा क्या कर्त्तव्य है । गंग सर्वज्ञ कहने लगे तुम सेना-पति होकर इतना भी नहीं समझते, कि जीवित शरीर की अपेक्षा यह अधिक सम्मानिय होता है । फिर यह तो महा प्रभु का लिंग शरीर है । परन्तु इस मलेच्छ ने काफी देव स्थानों को खण्डित कर, उनकी मूर्त्तियों को भी अपमानित किया है । कुमार व्यर्थ की बहस करने से कुछ लाभ नहीं है, तुम्हारे सुपुर्द देवस्थान है । तुम उसकी ही रक्षा करो । मैं अपने देवता की प्राण रहते समय तक पूजा करूँगा । होगा वही जो देव की इच्छा होगी । इसके पश्चात सर्वज्ञ ने नेत्र बंद कर लिये और बहुत समय तक उसी मुद्रा में बैठे रहे । फिर उन्होंने आंखें खोल कर, भीमदेव से कहा, अब बोलो बेटा तुमने क्या-२ योजना बनाई है ।

युवराज बोले, राजधानी का जो सम्पूर्ण अस्त्र शस्त्र का भंडार था, वह यहां आ गया है। और महाराजा वल्लभ देव खम्भात में विराजमान हैं। वह अपनी शक्ति अनुसार सैनिकों को यहां भेजने के लिए भर्ती कर रहे ह। आठ भार वाहक और तीन जल जहाजों की व्यवस्था हमारे पास है। अब हमें अनावश्यक नर नारियों को खम्भात पहुँचाना है। सो उसकी व्यवस्था महता के सुपुर्द कर दी है। पहले धनिक व्यापारियों को उनके धन धान्य सहित रवाना किया जायेगा, वापसी में ये ही भार वाहक जरूरी सामग्री यहाँ ले आयेंगे। किन्तु मन्दिर की सम्पत्ति भी सुरक्षित होनी चाहिए। और महालय की नारियों को सुरक्षा होना परम आवश्यक है। सर्वज्ञ ने कहा ठीक है, इन्हें भी खम्भात ले जाना होगा बेटा। परन्तु गंगा इसकी व्यवस्था तुम करो गंगा एक खम्भे के सहारे खड़ी, सब बातों को ध्यानपूर्वक सुन रही थी। अब वह मधुर कण्ठ से बोली, गंगा का स्थान तो इन्हीं चरणों में है। इतना कहकर बड़ी फुर्ती से सर्वज्ञ के दोनों चरण पकड़कर अपनी गोदी में रख कर उन्हें अपने होठों से चूमने लगी।

गंगा का यह कौतुक देख वहां काफी देर सन्नाटा

रहा। फिर सर्वज्ञ ने गंगा के सिर पर हाथ रख कर कहा, गंगा यह तुम क्या कह रही हो, थोड़ा बुद्धि से काम लो। गंगा उदासी सी होकर बोली मैं बुद्धि से ही काम ले रही हूँ। जब आपका स्थान देव चरणों में है, तो गंगा का स्थान अपने सर्वज्ञ देवता के चरणों में है। मैं किंकरी आपकी सेविका हूँ। अब मेरी सद्गति का समय निकट है, तो मैं किस की लज्जा करूँ। गंगसर्वज्ञ के मुख से बोल न निकला, गंगा अपने नेत्रों से आंसू गिराती रही। गंगा की दशा देख युवराज के नेत्र भी सजल हो गये। तब सर्वज्ञ ने चारों तरफ नजर उठाकर देखा तो चौला भी खम्भे की आड़ में मुख छिपा सिसक-२ कर रो रही थी। चौला को रोते देख भीमदेव के नयन नीचे को झुक गये। तब गंगा ने आसन से उठकर, भीमदेव से कहा बेटा यहाँ आओ। और चौला तुम भी यहीं आओ, दोनों ज्योतिर्लिंग के निकट आ खड़े हुए। दोनों का दिल भीतर ही भीतर कांप रहा था। तब तक पूजा से निबट सर्वज्ञ भी वहां आ पहुँचे। और आते ही भीमदेव से बोले, आगे बढ़ो युवराज, और चौला तुम भी आओ। एकाएक चौला का हाथ भीमदेव के हाथों में थमाकर, मन्त्र पढ़ सर्वज्ञ ने कहा,

बेटा भीमदेव, आज से तुम देवाविष्ट तत्व हो, तुम्हारी सेवा के वास्ते यह देवदासी चौला मैं तुम्हारे अर्पण करता हूँ। यह आपके ही समान, उच्च-राजवंश की कन्या है। इसकी रक्षा और सम्मान करना, तुम्हें परम आवश्यक है। और बेटी चौला यह साक्षात शिवस्वरूप युवराज भीमदेव तेरी पूजा का पात्र है, सो श्रद्धापूर्वक इनकी सेवा करना। अब तुम दोनों देव कृपा से धर्मसूत्र में बंध गये हो। चौला सुन्दरी थर-थर कांपने लगी, और युवराज भीमदेव ने प्रसन्न हो गंग सर्वज्ञ के चरण पकड़ लिये।

श्री गोगा महापुराण १०वाँ भाग प्रारम्भ

युवराज भीमदेव ने मंदिर की रक्षा का भार जूनागढ़ नरेश को सौंप कर नगर का भार बालुका-राव के सुपुर्द किया। दामोदर मेहता को सूचना और गुप्तचर विभाग सौंप दिया। रसद और भोजन की व्यवस्था पथरी के ठाकुर को सौंपकर प्रभास की जल रक्षा कामा लखानी के सुपुर्द कर दी। और सम्पूर्ण सेना का भार, वाण वलि ने खुद संभाला। बालुका राय ने नगर में सैनिक व्यवस्था कायम कर के कहा नगर के सेठ साहूकार और व्यापारी, अपना

अपना धन धान्य लेकर, अपने परिवारों सहित, खंभात जाने को जहाजों की तरफ कूँच करें साथ ही ब्राह्मणों के परिवारों को भी रवाना कर दिया। यह कार्य एक दिन और एक रात में समाप्त हो गया। आठ पहर और चौंसठ घड़ी में सभी सूने घरों में सैनिकों ने अपने अड्डे जमा लिये। कदम कदम पर मोर्चेबन्दी हो गई। हाट बाट में हथियार बनने शुरू हो गये।

वीर बहादुर योद्धा अपनी-२ तलवारों की धार शानों द्वारा तेज कराने लगे। और बेसब्री के साथ लुटेरे महमूद के आने की बाट देखने लगे। सारी व्यवस्था ठीक हो जाने पर, सारी सेना को एक जगह इकट्ठा कर, प्रधान सेनापति ने सैनिकों से परेड कराई। जिनमें काठियावाड़ के बारह हजार बलवान योद्धा अपने गठीले घोड़ों पर सवार थे। सात हजार विकट पहाड़ियों के नंगे रहने वाले भील भाले और तीर कमान लिए हुए, परेड के मैदान में खड़े हुए थे। तीन हजार कोली ठाकुरों का जत्था गण्डासों और फरसों से सजा हुआ था। दस हजार राजपूत और सभी मारवाड़ और सिन्ध से आए हुए थे, अठारह हजार गुर्जर सेना वाण वलि की कमान में थी, इस

तरह प्रभाव में केवल पचास सहस्त्र दल जमा हुआ था। और युवराज भीमदेव का खास दुश्मन, दिल्ली नरेश अपनी नौ लाख सेना लिये हुए, अपने सम्बन्धी राजा परमाल के वीर योद्धा आल्हा ऊदल और मलखान को यमलोक पहुँचाने के लिए मोहबे और सिरसे को घेरे पड़ा था। उसे लुटेरे मलेच्छ से सोमनाथ मंदिर के बचाने की [illegible] चिन्ता नहीं थी यह हाल था इन रणधीरों का, गैर चाहे देश का सब कुछ लूटकर ले जाये परन्तु देश सुख शान्ती से बैठने नहीं पाये। इसी आपाधापी और खुदगर्जी के कारण ही इन मलेच्छों के हौसले बढ़ते ही चले गये।

अब आप इधर भी ध्यान देकर देखें कि प्रभाव के वीर और प्रधान सेनापति बाण बलि भीमदेव अपने सफेद घोड़े पर सुनहरी साज कसवा कर ठाट बाट के साथ छत्र और चँवर धारण कर सेना में उपस्थित हुए, उनका चन्चल घोड़ा बड़ी शान से उछल रहा था। और प्रधान सेनापति [illegible] मुख पर वीरता का तेज झलक रहा था। अपने सम्मुख खड़े दल को देख उन्होंने तलवार म्यान से खींचकर कहा जय ज्योतिर्लिंग सोमनाथ की। हजारों कण्ठों से स्वर गूंजा जय ज्योति लिंग सोमनाथ की। इस कार्य से

फारिग होकर हँसी खुशी वह अपने स्थान पर जा पहुंचे और आनन्द विभोर होकर, और प्रेम के रंग में रंग कर उन्होंने चौला का चुम्बन लिया और चौला को सुबकते देखकर कहा प्राण वल्लभे अब रोने का क्या कारण है। चौला का मुख खुला और सुबकती हुई बोली, मैं कहीं नहीं जाऊँगी, मुझे अपने चरणों से आप जुदा न करें।

भीमदेव बोले, परन्तु तुम्हें भेज ही कौन रहा है। इस पर चौला ने कहा, सर्वज्ञ स्वामी की आज्ञा है कि अब खम्भात में जाकर रहो। आप उन्हें रोकिये उन्हें समझाइये, रोते-२ चौला की घिग्घी बंध गई। युवराज बोले, तो तुम गंगा से क्यों नहीं कहतीं वह सर्वज्ञ से निवेदन कर देगी। परन्तु सर्वज्ञ तो समाधिस्थ हैं। इसलिये गंगा का निवेदन करना असम्भव है। आपकी आज्ञा क्या मेरी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकती है। सेनापति ने मुझे खम्भात ले जाने के लिए अपने कारिन्दे भेजे हैं। उन्हें आप मना कर दें, चौला कहीं नहीं जाने की। वह मेरे पास ही रहेगी। भीमदेव विचार में पड़ गए और चौला सुबकती रही। वह उठकर कमरे से बाहर गए, द्वार पर गंगा खड़ी हुई थी।

गंगा को देख युवराज ने मुस्करा कर कहा, जरा जाकर तो देखो चौला क्यों रो रही है। वह अकस्मात जाना नहीं चाहती, आप सर्वज्ञ से निवेदन कर दें। गंगा बोली सर्वज्ञ समाधिस्थ हैं और उन्हें अपनी आज्ञा बदलना सम्भव दिखाई नहीं पड़ता। परन्तु महाराज आप अपनी मर्यादा को न छोड़िये। यहाँ प्रभु की सुरक्षा का कार्य सब कार्यों से मुख्य है। जरा विचार तो कीजिये, भीमदेव आपका इस समय क्या कर्तव्य है। इतनी सुन चौला को बालुकाराय और दामोदर महता यान में चढ़ाकर चल दिये, और भीमदेव तख्त पर गिरकर तड़फने लगे और कहने लगे चौला मेरी है मैं उसका परन्तु उसका सुरक्षित होना भी जरूरी है। उनकी आंखों में सन्त भेषी युद्ध का जो चौला के कारण हुआ था दृश्य भली प्रकार आ गया अभी अंधेरा था। और आकाश में तारे दिखाई दे रहे थे दिन निकलने में भी देर थी। तभी शोभना को परिचित सी ध्वनि सुनाई पड़ी।

उसने जब खिड़की खोलकर देखा, तो दीवार से सटे एक मनुष्य की छाया दिखाई दी। उसने दबे पैर सीढ़ियों से उतर कर देखा तो अपने प्रेमी को पहचानकर और उसके गले में अपना हाथ डालकर कहा,

आज इतने दिनों बाद यहाँ आकर दर्शन दिये हैं। शोभना तुम यकीन करो मैं बहुत दूर चला गया था। मैं कहाँ चला गया था यह अभी मत पूछना, वह बड़े ही भेद की बात है। शोभना बोली बताओ न क्या भेद की बात है मुझसे भी छिपाओगे। मैं अमीर के पास गया था, अमीर ने मुझे प्यार से पुचकार कर कहा, बरखुदार आज से तुम मेरे एक होनहार सिपहसालार हो। अच्छा तो तुम सिपहसालार बन गये। शोभना की आँखों से प्रेम की जलधारा बहने लगी। और सुनो गजनी के सुलतान ने मुझे एक टुकड़ी फौज का सरदार भी बना दिया है। अब देखना मेरी तलवार के जौहर तो देख क्या तुम धर्म के विरुद्ध तलवार उठाओगे। मेरी प्यारी शोभना जिस धर्म ने तुम रमणीरत्न को, विधवा बताकर दुर्भाग्य के जाल से बांध रखा था, और मेरे तुम्हारे प्रेम को अपनी लातों द्वारा दलित किया था। और तुम्हारे पिता मेरे वेद मन्त्र पढ़ने पर तलवार लेकर दौड़े थे। तब तुम पर और मुझ पर किसने दया की थी। सभी ने एक मुँह हो कहा था। मारो साले शूद्र को, हरामी वेद-मन्त्र बोलता है। और तुम मेरी प्रेमिका होकर और बदनाम सहकर भी, अभी तक उसी धर्म की दुहाई दे

रही हो। असली धर्म जो इस भारत-वर्ष का था वह तो गोरख गुरु और गोगाराणा के रूपोस होने के पश्चात ही समाप्त हो गया, तभी तो इस देश को विदेशी लुटेरों को लूटने की हिम्मत हुई।

यह मूर्ख राजपूत बनिये और ब्राह्मण अपने पैर अपने ही हाथों से काटकर, जुदा करने पर उतारु हैं। परन्तु देव यह हमारे पुरखों का चलाया हुआ धर्म है। परन्तु अब हमारे बेटे, पोतों का धर्म ऐसा होगा, जहां कोई छोटा-बड़ा नहीं कहलायेगा सब एक साथ बैठ कर एक ही थाली में खायेंगे। वहां तुम रानी और मैं राजा कहलाऊँगा, इसमें तुम्हें क्या कुछ ऐतराज है। मुझे क्यों ऐतराज होने लगा, आप जैसा मुनासिब समझो करो, मैं तो तुम्हारी प्रेम-दिवानी हूँ। इस समय तो मैं तुम्हारे पास एक खास काम से आया हूं, बोलो करोगी या नहीं। वह काम भी मेरा नहीं, गजनी के सुलतान का है। शोभना बोली—मुझसे महमूद का ऐसा क्या काम है सुनूं तो सही। क्या महालय की सभी स्त्रियां खम्भात जा रही हैं। तुम भी और चौला भी, शोभना बोली हां। तो अब सुनो, जैसे भी बने तुम सदा चौला की रखवाली करना। एक क्षण भी उसे अपनी आँखों से ओझल

मत होने देना। इस पर शोभना ने भयभीत होकर पूछा परन्तु क्यों? सोमनाथ जलाने के पश्चात उसकी जरूरत पड़ेगी मुझे सुलतान ने यही काम करने को तुम्हारे पास भेजा है।

शोभना का प्रेमीदेव गजनी के सुलतान का आदेश अपनी प्रेमिका को देकर तुरन्त दिन निकलते ही मकानों में छिपता हुआ चोरों की माफिक रूपोस हो गया। उस समय शोभना की आँखों से सुख-दुःख दोनों के कारण जलधारा बह रही थी। कृष्ण स्वामी के कहने से शोभना को चौला की सहेली बनकर और उसी के साथ रहने में कतई कठनाई नहीं हुई। बालुका राय ने भी कृष्णस्वामी का अनुरोध स्वीकार कर लिया। शोभना जैसी चतुर सहेली पाकर चौला भी प्रसन्न थी। खम्भात पहुँचते-पहुँचते ही वह दो सगी बहनों के सम्मान हिल-मिल गईं। बाणबलि भीमदेव का संकेत पाकर खम्भात में सभी सुखों के साधन जुटा दिए गये। और चौला वहां भी महारानी के समान रहने लगी। शोभना परछाई की भांति चौला के साथ रहकर अपने मिलनसार स्वभाव से शीघ्र ही उसका मन मोह लिया।

श्री गोगा महापुराण ११वाँ भाग प्रारम्भ

गजनी का सुलतान नलबाबनी होता हुआ प्रभास क्षेत्र में ताबड़तोड़ चला आ रहा है। इसकी सूचना जब बाणबलि भीमदेव को मिली तो तत्काल ही युद्ध समिति की सभा बुलाई गई। इस बैठक में भीमदेव चालुक्य सेनानायक बालुकाराय, कामा लखानी सामन्तसिंह सज्जनसिंह आदि सभी प्रमुख भट्ट और सेनानायक वगैराह मौजूद थे। विचार यह करना था कि महमूद को यहीं आने दिया जाय या रास्ते में ही अटका देना चाहिये। अगर उसे रास्ते में ही रोका जाता है तो यहाँ के दुर्ग का महत्व घट जायेगा और बल बिखर जायेगा। इतना सुन सर्वसमिति ने यही निर्णय दिया कि उस मलेच्छ को आगे आने दिया जाय और उसके लौटने के मार्ग बन्द कर दिये जायें। इस पर भीमदेव ने कहा हमें इस पर भी विचार करना है कि गजनी के सैन्य का बल कितना है और संगठन कैसा है, और सेना कितनी है। मैंने सुना है उसके पास चालिस हजार कट्टर घुड़सवार हैं और पाँच हजार सांढनियां और दो हजार हाथी हैं और बारह हजार तीरन्दाज हैं। भीमदेव बोले पहले तीरंदाजों को ही लो हमारे पास सात हजार तीरंदाज

हैं इसके अलावा दुर्ग है खाई और गढ़ हैं और रसद के अलावा लड़ने के सभी साधन हैं। प्रथम धनुधर को मैं अधिकार में लेता हूँ। बालुका राय बोले बाणबलि जी इस अधिकार को आप मेरे लिये सौंप दें। आप तो इस धर्मसेन के लीडर हैं, आपको युद्ध में आने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपके प्रताप से अगर मैं एक ही बाण से उसका काम तमाम न कर दूँ तो बालका नाम नहीं। भीमदेव ने कहा तब ठीक है। तुम अपने धनुष को देखो, अब मैं तीन मोर्चे स्थापित करता हूँ। प्रथम मोर्चे का मुख्य जो रण है, उसका रक्षक कौन होगा। इतना सुनते ही जूनागढ़ नरेश ने अपनी तलवार घुमाकर कहा, इस लोहे के रहते, मलेच्छ महालय पर हमला न कर सकेगा। ठीक है तो आप दो हजार घुड़सवार अपने साथ लेकर मुख्य तोरण की रक्षा करो।

अब दूसरा मोर्चा जूनागढ़ द्वार का है, उसे कौन वीर संभालेगा, तभी हाथ उठा और मेघ गर्जना जैसी आवाज आई मैं वृद्धकामा लखानी सागर तट पर तो मेरा सदा ही अधिकार रहा है। परन्तु तट पर तो इस समय केवल तीन ही नौकाएँ हैं। और छः भार वाहक और तीन शस्त्रों से सजे हुए जहाज,

शत्रु के पास जलयुद्ध का कुछ भी साधन नहीं है। यह सब आपके सुपुर्द किये। पाँच हजार बर्छे और तलवार के धनी योद्धा और बालुका राय के तीर-अन्दाज भी आपकी रक्षा करेंगे। अब रहा नगर द्वार उसके लिये केवल पाँच सौ अश्वारोही मुझे चाहिये बाणबलि भीमदेव ने कहा तब मकवाना ने मुस्करा कर कहा, पाँच सौ नहीं दो हजार घुड़सवार और पाँच हजार पैदल सेना और संग में दामोदर महतामी, अब सज्जनसिंह चौहान बोले, और मुझे क्या कार्य सौंपा जायेगा। तभी भीमदेव बोले, सज्जनसिंहजी मैं आपको सबसे कठिन कार्य सौंपता हूँ. अगर दुर्भाग्य से यह गजनी का दैत्य हमें दलित करके गजनी को वापिस लौटे तो आप मरुस्थली के रास्ते पर उसकी समाधी बना देना, यह आपका कार्य है। घोघाबापा का तर्पण इस दैत्य की समाधी बनने के पश्चात ही पूरा होगा। हे वीरवर अब तो तुम्हीं मरुस्थली के स्वामी और रक्षक हो। सज्जनसिंह बोले ऐसा ही होगा महाराज आपकी आज्ञा सिर-माथे। परन्तु इस कार्य के लिए तुम्हें कितने सैनिक चाहियें। सज्जनसिंह आँखों में आँसू भरकर बोले कुछ भी नहीं महाराज, बस नीम के नीचे मेरी साड़नी

बंधी है सेनापति जी। बस वह और मैं इस दैत्य के लिये काफी हैं। सज्जनसिंह की बातें सुनकर सब आश्चर्य के साथ उनका मुँह ताकने लगे।

सज्जनसिंह ने कहा आप लोग आश्चर्य क्यों करते हो, मेरी साँड़नी नहीं यह मरुस्थली का जहाज है। बिना कुछ खाये पिये ही इसने पाँच बार मरु समुद्र पार किया है। यह चालिस दिन भूखी प्यासी रहकर भी, धावा करने में पग पीछे नहीं हटाती है। परन्तु महमूद मरुस्थली की तरफ को, नहीं लौटे तब। तब क्या आबू के रास्ते से अगर वह गया तो, विमलशाह तीस हजार गुर्जर सेना सहित उसकी राह रोकने को तैयार बैठे हैं। दोनों जगह में से कहीं न कहीं, इस दैत्य की कबर बन ही जाएगी। अव्वल तो सारे क्रियाकर्म इसके यहीं हो जाने हैं। और अगर महमूद का दुर्भाग्य उसे मरु भूमि की तरफ ले गया, तो एक भी मलेच्छ जीता न बचेगा। भीमदेव बोले, तुम्हें तो मैंने सबसे कठिन काम सौंप दिया, परन्तु सामन्तसिंह को मैं यहाँ न रहने दूँगा। वह तुरन्त ही घोघागढ़ चला जावे।

सामन्त ने कहा परन्तु मेरा क्या अपराध है सेनापति जी! बाण बलि आँखों में आँसू टरकाए

बोले, सामन्तसिंह जी तुम्हें घोघा राणा के वंश को भी तो चलाना है। सज्जनसिंह भी अधीर हो बोले भैया महाराजा की बात मान लो। सामन्त ने रोते रोते कहा, तो क्या मैं धर्म युद्ध से विमुख होकर चला जाऊँ, मेरा क्षत्री धर्म मुझे धिक्कार रहा है। मैं नहीं जाऊँगा महाराज, आप शौक से मुझे अनुशासन भंग करने की सजा दीजिये। दामोदर मेहता ने कहा सामन्तसिंह के लिये मेरी समझ में एक महत्वपूर्ण कार्य आया है। और वह यह कि इन्हें खम्भात का रक्षा का भार सौंप दीजिये। इससे खम्भात का सामूहिक महत्व अधिक बढ़ जायेगा।

भीमसिंह बोले ठीक है, सामन्तसिंह तुम्हें खम्भात सौंपा जाता है। वहीं गुर्जर नरेश श्री वल्लभदेव भी हैं। और सुश्री चौला साहिबा पाटन के हजारों नर-नारी और बालवृद्ध सभी हैं। और गुजरात की प्रतिष्ठा और सम्पत्ति सभी खम्भात में हैं। इन सब की रक्षा का भार मैं तुम वीर बहादुर को सौंप रहा हूँ। सामन्त ने सिर झुकाकर बे मन से कहा, जैसी महाराज की मर्जी। इसके पश्चात सभा भंग हुई, और बीस हजार सुरक्षित सैना की कमान बाण बलि के आधीन हुई। गजनी का दैत्य तेलवाड़े तक आ

पहुंचा था। और उस म्लेच्छ ने तेलवाड़े को नष्ट-भ्रष्टकर दिया था। यह बात बिजली की तरह प्रभास में भी फैल गई। लुटे-पिटे बचे हुए लोग राज-मार्ग पर रोते कल्पते आ जुटे। लुटे हुए वृद्ध और जख्मी हुए युवक, रोती-कल्पती अबलायें आंसू बहा-२ कर अपनी कहानी सैनिकों को रो-रोकर कर सुनाई।

सैनिकों और जनता ने उन्हें धीरज बन्धाया, और उनके भोजन और विश्राम की व्यवस्था की। और नगर पालिका ने उन्हें तुरन्त ही खम्भात भेजने की व्यवस्था की। उन्होंने यह भी समझ लिया अब युद्ध में अधिक विलंब नहीं है। तत्काल ही दुर्ग के सभी द्वार बन्द कर दिये गये। खाइयां समुद्र के जल से भरवीं गईं, और बुर्जों पर धनुषधारी कमान लेकर आ बैठे। नगर से बाहर जाना निषेध कर दिया गया प्रधान सेनापति युद्ध मोर्चों की देखभाली कर रहे थे। तभी दामोदर मेहता ने साहस किया, वह अश्व पर सवार हो और हथियार उठा चुपचाप नगर के बाहर निकल गये। नगर के पश्चिम कोण पर जो महाकाल भैरव का मंदिर था वह वहां जा पहुंचे। काफी देर तक मन्दिर के चारों तरफ घूमकर वह निरीक्षण करते रहे।

फिर वह हिरणय नदी के अघोर वन में आ निकले, इस समय दो पहर दिन चढ़ गया था। नदी के किनारे की बालू चांदी के समान चमक रही थी। उसी के पास श्मशान घाट था। परन्तु इस वक्त वहां सन्नाटा था। उन्होंने इधर-उधर देखा तो उन्हें कुछ हिलता सा दिखाई दिया ध्यान से देखने पर उन्हें एक घुड़सवार नजर आया। फिर उन्होंने देखा कि उसने अपना घोड़ा हिरणया नदी में बढ़ा दिया है। और वह इसी तरफ को आ रहा है। ज्यों-ज्यों सवार निकट आता जाता था, उसकी आकृति स्पष्ट होती जाती थी। उसकी पगड़ी हरे रंग की थी और नंगी तलवार धूप के कारण चमचमा रही थी। और निकट आने पर उन्हें साफ दिखाई दिया कि वह कोई मलेच्छ सरदार है। और उसकी लाल दाढ़ी हवा में हिलोरे ले रही है। जब वह काफी करीब आ गया तो उसका अश्व उछल उछलकर छलांगें मारने लगा। अब दामोदर मेहता को अपने अकेलेपन का अहसास हुआ। मेहता जैसे नीतिज्ञ थे वैसे ही बहादुर भी थे। उन्होंने विपत्ति को निकट आया समझ वह वृक्षों के झुरमुट की तरफ तेजी से चल दिये। तभी मलेच्छ ने उन्हें देख लिया। तभी वह अपना अश्व दौड़ाता

और तलवार घुमाता हुआ उन पर एकदम झपटा। महता ने अपने अश्व को दो वृक्षों की आड़ में कर रक्खा था। दुश्मन के वार को रोकने के वास्ते वह चौकस हो गये, उन्होंने अपने घोड़े को थकाना उचित नहीं समझा। शत्रु अब निकट ही आ गया था तब तुर्क ने अपना घोड़ा दाहिनी ओर को घुमाया और बड़ी फुर्ती से महता की बगली देकर वह पिछाड़ी जा पहुँचा। और एक बार ही उन पर टूट पड़ा। परन्तु महता भी सावधान थे उन्होंने अतिशीघ्र अपने अश्व को तिरछा घुमाकर तलवार हाथ में उठाली। दुश्मन को वार करने का मौका नहीं मिला, तब वह एकदम पीछे की तरफ घूमकर अपनी तलवार ले बड़ी फुर्ती से झपटा। महता चौकन्ने थे, उन्होंने घोड़े को ऐड लगा कर दुश्मन पर पेल दिया। फिर उसकी कमर में हाथ डालकर उसे घोड़े पर से धकेल दिया। और बड़ी फुर्ती से उसकी गर्दन में अपने धनुष की डोरी फंसा दी। गर्दन में डोरी फस जाने के कारण दुश्मन के हौंसले पस्त हो गये। तब दामोदर महता ने दो-तीन झटके और मारकर वह मलेच्छ की छाती पर सवार हो गये। और अपनी तलवार उसके कंठ पर रखकर कहा, अब तू मरकर दोजख की आग में

जलना। परन्तु दुश्मन ने कतई भी भयभीत न होकर कहा, शाबास बहादुर तुम सैनिक तो हो नहीं, परन्तु बड़े बहादुर हो, मरने से पहले मैं तुम से मित्रता करना चहाता हूँ। महता बोले, तुम समझ रहे हो, दोस्ती के चक्कर में फँसकर मैं तुम्हें जिन्दा छोड़ दूँगा। अगर तुम बहादुरी के सिलसिले में मुझे एक बार अपना दोस्त कबूल करलो, तो मैं तुम्हारे हाथ से मरना भी अपनी खुशनसीबी समझूँगा। मरने से पहले मैं तुम्हें कुछ तोफा भी भेंट करना चाहता हूँ। महता बोले वह क्या, येही अपनी सुनहरी तलवार जिसको तुमने फतह किया है। तुम मेरे बहादुर दोस्त हो, और एक बहादुर दुश्मन भी। मैं तुम्हारी बहादुरी की कद्र करके तुमसे दोस्ती मांग रहा हूँ। महता बोले तब तो मुझे अपने दोस्त की जान भी बखसनी पड़ेगी।

श्री गोगा महापुराण ६२वाँ भाग प्रारम्भ

अब दोस्त अपना हाथ आगे करो, तुर्क ने तलवार मेहता के हाथ में पकड़ा कर कहा मित्र इसे नाचोज न समझना, अब तुम जो करना चाहो खुशी से करो, खुदा हाफिज है। और वह निढाल हो

आँखें बन्द करके लेट गया। तभी महता उसकी छाती से उतर आये, और उसकी गर्दन से धनुष की डोरी भी निकाल ली। और उससे कहा मित्र तुम आजाद हो। अच्छा तो अब अपने दोस्त को आजाद करने की कोई कीमत न लोगे। नहीं दोस्त, दोस्ती बेचने खरीदने की चीज नहीं है। ठीक है मेरे दोस्त इसके माने यह हुए, कि तुमने मेरी दोस्ती कबूल कर ली। मैं भी अपने खुदा और रसूल की कसम खाता हूं, कि मैं तुम्हारी दोस्ती को दुनिया की सबसे बड़ी न्यामत समझूँगा। तो मैं भी सोमनाथ प्रभु की कसम खाकर कहता हूँ, जब तक आपका मित्र भाव स्वच्छ रखेगा मैं दिल से सदा तुम्हारा दोस्त बना रहूँगा। तो मित्र तुम मेरा कितना विश्वास कर सकते हो। जहाँ तक एक सच्चे मित्र का करना चाहिये। तो आप मेरे साथ चलो, मैं तुम्हारी मुलाकात गजनी के सुलतान से कराऊंगा। और उनके सामने हम अपनी दोस्ती की सनद पेश करेंगे। मैं सुलतान का एक उमराव हूँ, और तुम्हें उनसे मिलाना बेहद जरूरी है। महता ने तुर्क के चेहरे पर दृष्टि गड़ाकर, उसके हृदय की गति पहचाननी चाही। तो उसका चेहरा आनन्द विभोर होकर आनन्द वर्षा कर रहा था।

महता बोले दोस्त मुझे तुम्हारी बात मन्जूर है। दोनों बहादुर घोड़ों की लगाम पकड़ कर सवार हो गये, और पीछे मुड़कर चल पड़े। दामोदर महता जान बूझकर, खतरे की ओर बढ़ रहे थे ऐसा साहस करना हर मनुष्य का कार्य नहीं है। कुछ दूर चलने के पश्चात तुर्क ने पूछा, दोस्त तुम्हारा नाम क्या है। मैं महाराज बाण बलि का एक सेवक हूँ, और लोग मुझे दामोदर महता कहते हैं। अगर गुजरात नरेश के पास ऐसे ही बहादुर सेवक हैं, तो मैं उनके भाग्य की सराहना करता हूँ। मित्र आपने मेरा नाम तो पूछ लिया, क्या तुम भी अपना नाम बताने की दया करोगे। क्यों नहीं दोस्त थोड़ा सब्र से काम लो, इस समय तो हम दोनों दोस्त, दोस्त ही हैं। अगर नाम बताने में कोई भेद है तो आप जानो, परन्तु मैंने दोस्ती की कसम पर, कितना भारी खतरा मोल लिया है। परन्तु रसूल और खुदा की कसम खाकर जो तुम्हारा दोस्त बना है, उसकी मौजूदगी में कोई तुम्हारा बाल भी बांका नहीं कर सकता है। तब तुम क्या मुझे सुल्तान के निकट ले जाओगे, हाँ दोस्त मेरा इरादा यही है।

कुछ दूर चलने के पश्चात, जंगल के बीच

छावनी दीखने लगी। मीलों तक छावनी का फैलाव था। हाथी, घोड़े सैनिक प्यादे, नौकर चाकर, सब अपने २ काम में जुटे हुए थे। छावनी में पहुंचकर तुर्क ने, कुछ शब्द तुर्की भाषा में कहे, उसके पश्चात दोनों छावनी पहुंचे और वहाँ की व्यवस्था और सत्ता देखते हुए, महता उस तुर्क के साथ चलते चले गये। इसी समय यह दोनों एक लाल रंग के, खेमे के निकट जा खड़े हुए। उस मूल्वान खेमे पर खड़े पचास से अधिक तीरन्दाज पहरा दे रहे थे। उन्होंने बड़े ढंग से तुर्क सरदार को सलाम किया। तुर्क ने तुरन्त घोड़े से उतर कर कहा, मित्र अभी मैं सुल्तान से निवेदन कर के तुम्हें अन्दर बुलवा लूँगा। इतना कहकर वह अन्दर चला गया और दो गुलामों ने आकर, दोनों घोड़ों को थाम लिया। और सैनिक घूर-२ कर महता को देखने लगे। परन्तु महता को ज्यादा देर उनका घूरना न देखना पड़ा।

एक मुसलमान सरदार ने आकर उन्हें सलाम किया और बड़े आदर से सुल्तान के खेमे में चलने के लिए अपने दोनों हाथ बांधकर अर्ज की, महता थोड़े भयभीत होते हुए, बेधड़क अमीर के खेमे में घुस गये और खेमे की सजावट देखकर आश्चर्य चकित हो

गये। वहाँ बड़े बड़े कीमती कालीन बिछ रहे थे। और खेमे के मध्य भाग में गजनी का सुल्तान खड़ा मुस्करा रहा था। उसने मुस्करा कर कहा, दोस्त खुश आमदन, यानी मेरे पास मसनद पर बैठकर मुझे ममनून करो, और बैठने के पश्चात मुझे बताओ, कि गजनी का सुल्तान किस तरह अपने दोस्त को खुश करे। दामोदर महता ने दरबारी कायदे से, सुल्तान को सलाम किया। और हाथ जोड़कर कहा, आली-जहाँ यह कमतरीन आपको पहचानता नहीं था। फिर भी मैं कुछ २ समझ गया था, कि मुझे हजूर की दोस्ती का रुतबा मिला है।

हम दोनों एक ही सिद्धान्त के मनुष्य होते हुए भी, अपनी भूलों के कारण जुदा जुदा हो गये हैं। कभी सारी दुनिया में हिन्दू ही हिन्दू राज्य था। परन्तु हमारे सिद्धान्त जुदा होते हुए भी आप दामोदर महता को जब भी इच्छा हो एक दोस्त की भाँति इस्तेमाल कर सकते हैं। महमूद ने कहा दोस्त मेरा जी चाहता है, मैं तुम्हें निहाल कर दूँ, परन्तु तुम वह बशर हो जिसे मैं बादशाह होकर भी मज-बूर नहीं कर सकता। तब भी सुल्तान नाजुक मौकों पर दामोदर महता को अपने नजदीक ही पाओगे।

मेरे दोस्त मुझे तुम पर कामिल यकीन है। लेकिन मैं कहता हूँ मेरे दोस्त, तुम मुझसे कुछ माँग कर दोस्त की दोस्ती को सर्फ़राज़ कर दो। क्या इस जंग के लिए भी गजनी के सुल्तान से कुछ कहना चाहते हो तो कह डालो।

आलीजहाँ मैं महा सेनापति भीमदेव का संदेश वाहक नहीं हूँ। अच्छा तो अब तुम जाओ, परन्तु ध्यान रखना मेरे दोस्त, गजनी के सुल्तान की जान तुम्हारी अमानत है। फिर अमीर उठकर महता से गले मिला, और खेमे के बाहर तक पहुँचाने बाहर तक आया और सुल्तान के सरदारों ने उसे सलामी देकर, अपने अनुचरों द्वारा उन्हें छावनी से बाहर छुड़वा दिया। पोह मास की पूर्णिमा को, ज्यों ही सूर्य उदय हुआ, मन्दिर के शिखर से रक्षकों ने शंख फूँका, पल भर में ही भैरी नाद द्वारा चारों दिशाएँ गूँज उठीं। और प्रभाव गरज उठा। बाण बलि हड़बड़ा कर, उठ खड़े हुए। सैनिकों ने घबराए हुए आकर कहा, अन्नदाता आक्रमण हुआ है। तो मेरे वस्त्र और शस्त्र जल्दी से लाओ, और भीमदेव सज धज कर कोट के ऊपर चढ़ गये।

वहाँ गंग सर्वज्ञ, जूनागढ़ नरेश, लाखा कमानी,

केशर मकवाणा और दामोदर महता आदि सामन्त सचिव सभी वहाँ उपस्थित थे। सैनिक कगूरों पर चढ़, निरीक्षण कर रहे थे। धनुधर धनुष पर बाण चढ़ाये, आज्ञा के इन्तजार में खड़े थे। दूर नदी के तट पर, धूल के बादल उड़ रहे थे। और उनमें से काली काली मूर्तियाँ, निकलती दिखाई दे रही थीं। पहले दस पाँच फिर सैकड़ों हजारों, वह सब गजनी के सुल्तान के अश्वारोही थे। उसी वक्त बालुकाराय ने बुर्ज में प्रवेश किया, और बाण बलि के हाथ में, धनुष बाण देकर कहा, इस प्रथम बाण द्वारा इस धर्म नगरी में शत्रु का स्वागत कीजिये, अभी ठहरो बालुके भीमदेव ने उड़ती हुई धूल को देखकर कहा। तभी एक धुरन्धर योद्धा काले अश्व का सवार, सैना के बाहर आया।

उसके साथ और भी चुने हुए सवार थे। उन की तारकशी की पोशाकें, सूर्य की किरणों से चम-बना रही थीं। जो योद्धा सबसे आगे था, उसकी पगड़ी के मुख पर पन्ने का तुर्रा बँधा हुआ था। और दाढ़ी लाल रंग की थी। वह पलभर खड़ा महालय की धुजा का निरीक्षण करता रहा फिर उसने अपने साथी से धनुष ले और तीर चढ़ाकर छोड़

दिया। जो एक खाई में जा गिरा। बालुका ने कहा अब आपकी बारी है महाराज, भीमदेव बोले क्या यही गजनी का सुल्तान है। तभी मेहता ने आगे आकर कहा वही है महाराज, बाणबली ने बारह टंक की अनि बाण में लगाकर और कान तक खींचकर निशाना बांधकर बाण छोड़ दिया। बाण उसकी पगड़ी को तुर्रे सहित उड़ाकर दूर जा गिरा। सैनिक गर्जना कर उठे, जय जय हर हर महादेव। तभी वह लाल दाढ़ी वाला घोड़े को घुमाकर, तीर की तरह पीछे को भागा और अपनी पगड़ी उठाकर अब वह सेना के मध्य भाग में आकर खड़ा हो गया।

उसके संकेत करते ही, तीरों की बौछार मन्दिर पर होने लगी। और साथ ही अल्ला हो अकबर की आवाज कानों के पर्दे फाड़ने लगी। परन्तु उनके उत्तर में इधर से कोई उत्तर नहीं दिया गया। तो तुर्क सवार आगे बढ़कर खाई तक आ पहुँचे, और काफी सवारों ने अपने घोड़े पानी में डाल दिये। तभी बालुकाराय ने संकेत किया और मन्दिर की बुर्जों से तीरों की वर्षा होनी शुरू हो गई। इस अनोखी बाण वर्षा से, तुर्क सवार मुंह मोड़कर भाग पड़े, बहुत से खाई में गिरकर गोते खाने लगे।

और कुछ सैनिक खाई से बाहर निकलकर, मन्दिर पर चढ़ने की कोशिश करने लगे। तभी राव के काच्छी योद्धाओं ने तलवार घुमा-घमाकर मारामार करनी शुरू करदी। देखते ही देखते भारी मार-काट होने लगी। ज्यों-ज्यों सूर्य का तेज बढ़ता गया, युद्ध भयानक होता गया। घायलों की चीख पुकार से कयामत बरपा होने लगी, मुर्दों का ढेर लग गया। महमूद ने युद्ध बन्द करने का सकेत किया और गजनी के योधा अपने मुर्दों को छोड़ भाग निकले।

श्री गोगा महापुराण १३वाँ भाग प्रारम्भ

पहले दिन की हार से विफल मनोरथ हो महमूद लौट गया। और राजपूत सैनिकों में हर्ष उल्लास की उमंगें और जीत की खुशी में काफी उत्साह था। बाण बलि इन्हें शाबाशी देते हुए दूसरे दिन के युद्ध की व्यवस्था करने लगे। वह जत्थेदारों को आदेश देते हुए, सारे मोर्चों पर घूम घूमकर आहत हुए सैनिकों को ढूंढने लगे। उन्होंने देखा कि हमारा एक भी सैनिक, आहत नहीं हुआ है। और एक ही बाण से सुल्तान की पगड़ी उड़ जाने के कारण हंस हंसकर सभी सिपाही बाण बलि के निशाने की तारीफ कर

रहे हैं। काफी रात बीतने पर वह अपने कक्ष को तरफ गये, तो उन्हें सूचना मिली कि सर्वज्ञ अभी तक समाधिस्थ हैं। तब सभी सेना नायक बाण बलि को नमस्कार कर विदा हुए।

तभी गंगा ने आकर भीमदेव को प्रसाद दिया। और बोली देवता तथा सर्वज्ञ के कल भी दर्शन नहीं होंगे। धीरे धीरे सभी सैनिक और अधिकारी सो गये, केवल दामोदर महता की आँखों में नींद नहीं थी। उन्होंने चुपचाप सारे मोर्चों का निरीक्षण कर, सुल्तान की छावनी पर नजर डाली। तो हजारों मशालें उन्हें जलती हुई दिखाई दीं। दामोदर महता द्वारका द्वार पर आकर खड़े हो गये। और मोर्चों का निरीक्षण कर पीछे को मुंह घुमा कर कहा, आनन्द यहाँ किस की चौकी है। क्या दद्दा सोलंकी की, पर दद्दा हैं कहाँ दिखाई नहीं दे रहे हैं। वह ऊपर बुर्ज पर बैठे तो हैं। किन्तु तुम्हारा कहना है वह युवक इसी घाट पर नित्य आता है। तो क्या दद्दा ने उसे एक बार भी नहीं देखा है। मैंने दद्दा से पूछा था कि आपका चौकी पहरा ठीक है, तो दद्दा ने मुस्करा कर कहा कि जब तक मेरे हाथ में हाथयार हैं, तुम्हें कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

अरे आनन्द ये योद्धा लोग तलवार के भरोसे
ही मर मिटते हैं, बुद्धि से काम लेना तो यह जानते
ही नहीं। लेकिन वह आज भी यहां आयेगा। आनन्द
ने कहा हां वह दो पहर रात बीते आता है, जिसमें
अब विलम्ब नहीं है। वह कृष्णा स्वामी की लड़की
से भी प्रेम करता है। और सिद्धेश्वर से मुलाकात
करता है। यह सिद्धेश्वर कौन है। सुल्तान और
रुद्र भद्र का मध्य दूत है, और मैंने इन लोगों की
छिपकर वार्ता भी सुनी है। जिससे मुझे ऐसा भान
हुआ कि कोई गहरी चाल चली जा रही है। इस
बात से तो यही मतलब निकलता है, कि रुद्रभद्र जो
सहस्त्राग्नि तप का जो ढोंग रच रहा है, उसका कोई
अच्छा उद्देश्य नहीं है। सन्देह तो मुझे भी यही है,
बाकी आज आप स्वयं जांच कर देख लें। वह तरुण
तो है, पर बुद्धिमान नहीं है। परन्तु साहसी है। इस
लिए मैं द्वारका द्वार की चाभी साथ लाया हूं, परन्तु
उसे दूंगा नहीं, क्योंकि चाबी नकली है। अब आप
इस वृक्ष की आड़ में छिप जाएं, और उसके आने
की युक्ति को देखें कि वह यहां का चौकी पहरा व्यर्थ
करके किस कौशल से यहां आता है। जब वह यहीं
का खेला खाया है, और सब राह बाट जानता है,

तो वद्दा को आंखों में धूल झोंकना उसके लिए कौन
बड़ी बात है। तब तो वद्दा को सावधान कर देना
चाहिये। तब तो हाथ में आया शिकार बिलकुल
निकल जाएगा इसलिये किसी से कुछ भी कहना
ठीक नहीं है।

देखो वह छायामूर्ति सी क्या है। ये वही है आप
वृक्ष की ओट में छिप जायें, आनन्द और तुम अवसर
पाकर पानी में बैठना और उसका पीछा कर मुझे
सब जानकारी देना। देवसेन पलभर में ही आंखों से
ओझल हो गया, और दामोदर मेहता वृक्ष की आड़
में छिप गये। आनन्द भी छिपता हुआ तट की ओर
बढ़ा, जहां एक पुराना बटवृक्ष था। उसकी जटायें
जल तक फैली हुई थीं। वृक्ष की एक जटा को पकड़
कर और कमर तक जल में पहुंच, आनन्द ने एक
शब्द का संकेत किया। शब्द सुनकर एक आदमी
का सर बाहर निकला, तभी आनन्द ने कहा, निर्भय
हो मित्र मेरे निकट चले आओ। उस मनुष्य ने आगे
बढ़कर कहा, मैं द्रिम ले आया हूं यह लो सोने से भरी
एक भारी थैली उसने आनन्द को पकड़ा दी। स्वर्ण
की भारी थैली लेकर, आनन्द ने कहा ठीक है, मित्र
मैं तुम्हारी चीज भी ले आया हूं। उसने अपनी फेंट

से निकालकर एक बड़ी चाबी उसे दिखलाई, युवक ने प्रसन्न होकर कहा, लाओ मित्र इधर दो, इसका इनाम भी तुम्हें कल लेता आऊंगा। आनन्द ने चाबी को अपनी फेंट में धरकर कहा, अभी नहीं दोस्त जो काम किया जाय, आगा-पीछा देख, होशियारी से करना चाहिए। अभी चाबी दे देने से मुझे पकड़े जाने का काफी भय है। अब प्रात:काल मुझसे चाबी मांगी जायेगी, और देने पर विपत्ति का पहाड़ मेरे सिर पर टूट कर गिरेगा, और चौकी-पहरा कड़ा हो जाएगा। फिर सारे करे-धरे पर पानी फिर जायेगा। परन्तु मित्र मैंने एक युक्ती सोची है। क्यों न इसी तरह की दूसरी चाबी बनवाकर कल तुम्हारे सुपुर्द करदूं, नई चाबी से तुम अपना कार्य पूरा करना किसी को मुझ पर सन्देह भी नहीं होगा।

मित्र यह तो ठीक है, पर नित्य प्रति आने में खतरा भी है। परन्तु मैं तुम्हारी एक पुरुष से मुलाकात कराना चाहता हूं, क्या वह भी काम का आदमी है। जल से बाहर आओ, तभी कुछ पता पड़ेगा। वह क्या-क्या तुम्हारी सहायता कर सकता है। क्या उस पर मैं विश्वास कर सकता हूं? अगर तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है तो लो अपने प्रिय,

नाराज नहीं हो मित्र इतना करकर दोनों व्यक्ति उस वटवृक्ष की शाखाओं के सहारे, तट पर पहुंचे। और पेट के बल सरकते हुए, दामोदर मेहता के निकट आ लिये। दामोदर मेहता ने कहा क्या यह वही युवक है। तो इसे मेरे पास भेजो। तभी वह युवक मेहता से सटकर खड़ा हो गया। मेहता ने अपनी छाती के नीचे से तलवार निकालकर कहा, इसे भली-भांति पहचान कर बताओ, यह किसकी तलवार है। अगर पहचान गये हो तो, उससे जाकर कहो, कि जिसके पास तुम्हारी तलवार है, उसके साथ छल छिद्र का व्यवहार करना तुम्हें शोभा नहीं देता, इतना कहकर दामोदर मेहता फुर्ती से एक अंधेरी गली में घुस गये। युवक देखता का देखता ही खड़ा रह गया।

श्री गोगा महापुराण १४वाँ भाग प्रारम्भ

अगले दिन सूर्य उदय से पहले ही गजनी की सेना के नगाड़े बज उठे। नगाड़ों की आवाज सुनकर राजपूत सैनिक और सरदार भी सज-धजकर अपने-अपने मोर्चों पर जा डटे।

मुकट धारी नरेश अपनी अपनी टुकड़ियां लेकर,

अपने २ मोर्चों पर जा जमे। देव मन्दिर बन्द होने की वजह से, सबने देव द्वार की ही वन्दना की। गुजराती सेना ने रणसिंघे फूंके और बाण वलि ने झटपट तैयार हो, ब्राह्मणों को स्वर्ण दान दिया। और आशीर्वाद पाकर तलवार बांध, अपने अश्व पर सवार हो मोर्चों का निरीक्षण करने के लिए चल पड़े। महमूद भी अपनी सेना के चुने हुए तुर्क सवारों की टुकड़ियों का मोर्चा बना कर, वाण वर्षा करता हुआ खाई की तरफ बढ़ा। धीरे धीरे राजपूतों की सेना का जोर मध्य द्वार पर आकर जमा हो गया। महमूद की सेना को देख राजपूत नरेशों ने अपने २ सेनापतियों को आदेश दे, वाण वर्षा करवाने लगे। खाई के आमने सामने डटे शूरवीर काफी दूर तक तीरों की बौछार कर रहे थे। महमूद के सैनिक साधनहीन होनेके कारण, अपने वाणों को व्यर्थही गंवा रहे थे। ऊपर कोट से जो वाण वर्षा हो रही थी, वह अमीर की आगे बढ़ने वाली सेना को, अपने तीरों का निशाना बना रही थी। गजनी के सुल्तान ने अपूर्व साहस करके अपने हाथियों को खाई की तरफ धकेल दिया।

हाथियों के पीछे अल्ला हो अकबर का नारा

देते हुए हजारों मलेच्छ पानी की खाई में कूद पड़े। और बालुका राय ने प्रबल पराक्रम करके शत्रु सेना को मौत के घाट उतार दिया। पर मलेच्छ के सैनिकों का तांता टूट ही नहीं रहा था वह भी दबा दब अपनी सेना को खाई की तरफ धकेल रहा था। उसके बब्बर योद्धा हाथियों की आड़ लेकर खाई पार कर रहे थे। उन पर न तीरों की बौछार पहुंच रही थी, और न उन पर तलवारों के ही वार हो रहे थे। भीम देव ने इस विपत्ति को देख, कामा लखानी को संकेत किया, कि अपने कच्छवों के द्वारा सुल्तान की गज सेना का संहार करो। अपने सेनापति की आज्ञा पाकर कच्छवों ने छोटी छोटी बर्छी व तलवार लेकर वह पानी में घुस गये। और जल में चारों ओर फैलकर हाथियों की सूंड़ों और पैरों में करारे घाव करने लगे। अपने कार्य में यह कछवाये काफी चतुर थे। थोड़ी देर में ही खाई का जल लाल रंग का हो गया, हाथी सूंड़, और पैरों में घाव खा कर, अपनी सेना को कुचलते हुए पीछे की तरफ को भागे।

महमूद इस भगदड़ का कुछ भी कारण समझ नहीं सका। उसने भागती हुई सेना को रोकने के

लिए काफी कोशिश की, परन्तु वह तो हाथियों के भय से भाग रही थी। इसलिये भगदड़ बढ़ती ही चली गई। महमूद ने परेशान होकर अपना घोड़ा खाई में डाल दिया। अपने आका को खाई में कूदते देख, दस हजार बिल्लोची सरदार भी खाई में घुस गये। और अपनी छातियों की दीवार बनाकर, आगे को बढ़ने लगे। उनकी सुरक्षा करने के लिए दो हजार बढ़ई सरदार, अपने औजारों को लेकर, आगे बढ़े। उन्होंने तख्तों और रस्सियों की मदद से हाथियों के ऊपर पुल बना दिया। और खाई की तरफ खूंटे गाड़ कर पुल को रस्सियों से बांध कर पक्का काम कर दिया। अब महमूद के दस हजार सैनिकों ने पुल को आगे की तरफ फैलाना शुरू कर दिया। बालुकाराय ने मलेच्छों की यह हरकत देख अपनी सारी गज सेना को मुख्य द्वार पर फैला दिया। और वह अपने तीन हजार चुने हुए सोरठी सवार ले पानी में घुस गये। खाई में भारी मारधाड़ होने लगी। हाथी, घोड़ों और सैनिकों की लाशें जल में तैर कर समुद्र में गिरने लगीं, तभी लाशों को पैरों से रौंदती हुई सुल्तान की सेना पुल को फैलाती हुई आगे को बढ़ी। खाई के अन्दर बर्छियां चल रही थीं।

ऊपर से बाण वर्षा हो रही थी।

बाणबलि ने दुश्मनों की सारी विधि देख, बाणों की जगह पत्थरों का मेह बर्षाने का आदेश दिया। उधर मुख्य द्वार को भी पत्थरों से भर देने की आज्ञा दी। मकानों और दुकानों से बड़े-बड़े पत्थर उखाड़-कर वह मुख्यद्वार को पाटने लगे। परन्तु मलेच्छों की गति में कतई बाधा नहीं पड़ी। वह अपने बिल्लोचियों को लिये हुए अगाड़ी बढ़ते ही रहे। और पुल की खाई के पार तक पहुंच गये। बाणबलि ने इस विपत्ति को समझा, और वह कोट से उतर कर गज-सेना में घुस गये। और चुपचाप मस्त हाथियों की आड़ ले, वह बिना किसी बाधा के, खाई के मध्यभाग में पहुंच गये। इधर सुल्तान के सैनिक तलवारों की छाया में, पुल को जंजीरों से बंधवाने लगे। इसी समय भीमदेव के मस्त हाथियों ने बीच धार में घुस-कर, पुल में जोर से टक्कर मारी। जब पुल हिल गया, तो महावतों ने बड़े वेग से हाथियों को हूल दिया। मस्त हाथी चिंघाड़ते हुए, पुल में टक्कर मारने लगे। महमूद घबराकर अपनी बिल्लोची सेना ले, उधर ही को झपटा।

तभी बालुकाराय ने अपने काच्छी योद्धाओं को

बाणबलि की रक्षा को, चारों ओर फैला दिया। इधर सुल्तान के सैनिक मुख्य द्वार पर पुल को जंजीरों को बांधने में व्यर्थ ही मृत्यु के मुख में जा रहे थे। हजारों बिल्लोची सैनिक, मुर्दों को रौंदते हुए जल में से निकल कर भाग रहे थे। उधर जल में सुल्तान जो तोड़कर, भीमदेव के हाथियों से भिड़ रहा था। बालुकाराय के काच्छी योद्धा भी बेढब तलवार चला रहे थे। खाई के इस पार बब्बर पठान और तुर्क पुल के सहारे बढ़े चले आ रहे थे। यह दोनों पक्षों की हार-जीत के विकट क्षण थे। इसी समय महावतों ने मस्त हाथियों को हूल दिया। तलवारों और भालों की मार से वह बौखला उठे। इन भारी टक्करों को पुल न झेल सका, आखिर वह टूटकर बिखर ही गया। दुश्मन के सैनिक और सवार जल में गोते खा खाकर मरने लगे।

राजपूतों ने जयघोष किया। हर हर महादेव। भागते हुए मलेच्छों को चारों ओर से घेर कर वह मार लगाई कि वहां मुरदों का टीला बन गया। और खाईयां मलेच्छों के खून से खूब भर गई। बड़ी मुश्किल से महमूद ने खाई से पार होकर अपने प्राण बचाये। और उसकी सारी सेना छिन्न-भिन्न हो

गई। और बहुत-सी काट डाली गई। बहुत से काफी जल में डूब मरे इधर राजपूतों ने पुल में आग लगा दी। और गजनी का दैत्य इस द्वार से एक कोष पीछे को अपनी छावनी हटाकर ले गया। इस आधे दिन के युद्ध में, राजपूतों की भी काफी हानि हुई। परन्तु सुल्तान की सेना और गज सेना का तो पूर्णरूप से सत्यानाश ही हो गया था। अब उसके पास सौ से भी कम हाथी बचे थे। उन सबकी भी सूंड़े कटी हुई थीं। और पैरों में गहरे घाव हो गये थे। गजनी का सुल्तान इस हार से निराश हो, अपना सिर पकड़ और मुंह ढांप कर धरती में बैठ गया। और अधीर होकर कहने लगा, या अल्लाह ऐसा दिन तो आपने कभी इस जिन्दगी मे नहीं दिखाया था।

श्री गोगा महापुराण १५वाँ भाग प्रारम्भ

अपने अल्ला को याद कर, हारा हुआ मलेच्छ, सारे युद्ध क्षेत्र पर अपनी क्रूर दृष्टि जमाये सैन्य संचालन कर रहा था। इधर राजपूतों के मोर्चे, जर्जर हो रहे थे, पर सबसे भयानक बात महा सेना-पति का मूर्छित हो जाना था, कुटिल धूर्त, महमूद,

छल बल द्वारा जैसे भी बने विजयी होना उसका उद्देश्य था। उसे अपनी बुद्धि द्वारा यह भली प्रकार भाप गया था, कि अब युद्ध का अन्त होने ही वाला है। और उसने बहुत सोच विचार कर के अपनी योजना कायम की। फतह मोहम्मद और सिद्धेश्वर उसके साथ थे। उसने फतह मोहम्मद की तरफ भेद भरी दृष्टि दौड़ा कर अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहा, ऐ नेक इन्सान अब तेरी मुराद पूरी होने का वक्त आ गया है। क्या तू इस युद्ध की फतह को जोखिम उठाकर, अपने सिर कामयाबी का सेहरा बाँधने को तैयार है।

फतह मोहम्मद ने आगे बढ़कर सुल्तान के प्रस्ताव को सुनकर कहा, हे आलीजहाँ मेरे खून की एक एक बूँद, आपके हुक्म पर बहने में जरा भी आना कानी नहीं करेगी, मैं मरने जीने को एक तुनके के समान समझता हूँ। हुजूर हुक्म तो देकर देखें, इतना कह कर उसने अपनी तलवार सूँत ली। तो अब मेरा हुक्म है, तू दो सौ मर मिटने वाले जवानों को छाँट ले। यह रुद्रभद्र गुसाईं, तुझे राह बतायेगा, अब से कुछ पलों के भीतर ही उस बुलन्द दरवाजे पर, तू गजनी के सुल्तान को सलाम करना। मैं खुदा का बन्दा, महमूद इतना ही जानता हूँ, कि यह बुलन्द दरवाजा, तेरे कार्य कलापों के कारण फतह दरवाजा कहलाये करेगा। और ले यह वह तलवार है, जिसने सोलह बार भारत को फतह किया है। वह या रु पैगम्बर परवर दिगार सत्रहवीं बार, फतह का सेहरा तेरे सिर पर बँधना चाहता है। जा अपनी राह के रोड़ों को रौंद कर, अपनी राह बना।

मैंने तलवार के साथ साथ सभी हकूकों का तुझे नेता बना दिया है। राज की किसी बात से तू अंजान नहीं है। युवक ने खुश होकर और तलवार हाथ में उठाकर, दो सौ चुने हुए सरदारों को अपने पीछे २ आने का संकेत किया। और सिद्धेश्वर के घोड़े की लगाम, अपने घोड़े की लगाम से बांध, तलवार की नोंक को उसके सीने से छुआ कर कहा गुसाईं आगे आगे चल। सिद्धेश्वर इस दासी पुत्र की दम्भता से चिढ़कर, घृणा की नजर से उसकी ओर देख, सुल्तान से कुछ कहना चाहा। परन्तु महमूद ने मुख फेरकर सेना नायक मसऊद से कहा मसऊद अब हमारी बारी है। इतना कह महमूद ने अपना घोड़ा पानी में छोड़ दिया। उसके साथ ही तीस हजार योद्धा पानी में पैर गये। अल्ला हो अकबर के नारे से महालय

कम्पित हो गया । महालय के सभी मोर्चों पर झूमते हुए, राजपूतों के हाथ क्षर भर के लिये रुक गये । शत्रुदल नया बल पाकर आगे को बढ़ा, और फतेह मोहम्मद, दो सौ वीरों की टुकड़ी लेकर और लश्कर के पीछे से निकलकर, द्रुतगति से पाप मोचन की ओर बढ़ा । और कुछी क्षणों पश्चात, वह सुरंग द्वार पर आकर अपने घोड़े से उतर पड़ा । अब फतेह मोहम्मद ने सिद्धेश्वर की पीठ में तलवार की नोंक छुआकर कहा, आओ गुसाईं इधर मन्दिर में नगाड़े बज रहे थे, उधर घायल और थके हुए भीमदेव अपने कक्ष के द्वार पर पहुंचे । उन्होंने देखा गंग सर्वज्ञ शान्त मुद्रा में वहीं खड़े हैं । भीमदेव ने सर्वज्ञ को प्रणाम किया, तब सर्वज्ञ ने आशीर्वाद दे कहा, हे धर्म रक्षक तेरी सदा कीर्ति बढ़े ।

श्री गोगा महापुराण १६वाँ भाग प्रारम्भ

प्यारे बन्धुओ, जरा विचार करो, कि गजनी का दैत्य तो इतनी दूर दराज से मुसीबतें झेलता हुआ, सोमनाथ महालय पर हमला करके उसे लूटने का हौंसला उसका पिट-छित कर भी कम न हुआ,

इस समय उसकी हालत भारत के वीरों ने मुर्दे से भी गई बीती बना दी थी, परन्तु आगे बढ़कर उसे मार भगाने की हिम्मत यह अभागे देशवासी करने में कतरा जाते थे । इसीलिये यह सब अपनी चौकियों पर ही डटे रहे, आगे बढ़कर, गजनी के दैत्य को मार भगाने में उन्हें यह भय था, कि अगर मारे गये तो, हम सारे धन्यधान और ऐश आराम से वंचित रह जायेंगे । धर्मरक्षक महासेना पति ने भी बाणबलि होकर, दुश्मन को मार भगाने का हौंसला इसीलिये नहीं किया कि अगर युद्ध में मारे गये, तो सारा ऐश आराम और सत्ता यहीं धरी रह जायेगी और चौला सुन्दरी के संग विलास करने के सौभाग्य से भी हम वंचित रह जायेंगे । देवदासी चौला सुन्दरी को चाहने वाले वह सभी लोग थे, जिन्होंने उसका नृत्य देखा था । परन्तु मुख्य तीन ही उस पर जी-जान से फिदा थे । एक तो गजनी का सुल्तान दूसरा रुद्रभद्र और तीसरे बाणबली महाराज भीम-देव, यह दशा भारत के सभी नरेशों की हो चुकी थी ।

यह भारत के नरेश परस्पर कलह, ईर्षा और अभिमान के नशे में चूर रहते थे । अपने बड़प्पन के

आगे यह दूसरे को खाता-पीता नहीं देखना चाहते थे। आलस्य और अविचार इनमें अधिक भर गया था यह अफीम खाते, मद्य पान करके रासरंग में मस्त रहते थे। इनकी प्रजा में एकता का नामनिशान भी नहीं था। अनेक पंथ और अनेक विचारों ने, इनका मनोविज्ञान बिगाड़ रखा था। छूतछात के भूत ने इन्हें बुरी तरह से ग्रस लिया था। धर्म के नाम पर अधर्म करना, इनका नित्य का धन्धा था। ब्रह्मचर्य जीवन को भूल यह परनारियों के संग भोग विलास करके ही, यह अपने को तीसमारखाँ समझते थे। इन राजा-महाराजाओं की वही दशा हो गई थी, कि मारते के अगाड़ी और भागते के पिछाड़ी। गोगाराणा के जमाने वाली, इस भारत की एकता अब छिन्न-भिन्न हो गई थी। देश को एक सूत्र में बांधने वाला वीर, उस काल में कोई था ही नहीं। अपनी अपनी डफली और अपना-अपना राग वाली कहावत ही देश को दुःखी कर रही थी। हमारे विद्यार्थियों के दिलों को एक ही भावना कुरेदती है कि हमारे पुरखा इतने शूरवीर होते हुए भी, सदियों गुलामी के दुःखों को भोगने को क्यों हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। मित्रो हमारे इन वीरों ने ब्राह्मणों के बहकावे में आकर

अपने निर्बल भाईयों के संग अत्याचार करके, उन्हें मुसलमान होने को बाध्य किया और नारी जाति पर अत्याचार करके अपनी मान मर्यादा कौड़ियों के भाव बेच खाई।

यही लालची भारतवासी अपनी इज्जत कौड़ियों के मोल बेचने को अब भी तत्पर थे, इन तीन चार दिन की हार पश्चात भी महमूद को भारतीय रिश्वतखोरों की कमी नहीं थी इन्हीं भारतवासियों ने, एक हिन्दू योद्धा को मुसलमान बनने को मजबूर करके उसका नाम फतेह मोहम्मद धरवाया था, जो अब महमूद का सिपहसालार बना हुआ था येही वीर सिद्धेश्वर के पिछाड़ी हाथ बाँधकर सुरंग के रास्ते धकेलता हुआ लेजा रहा था, तब सिद्धेश्वर ने कहा, क्या तेरे हुक्म से, परन्तु फतेह मोहम्मद ने कोई तर्क नहीं किया, झटपट रस्सी उसकी कमर में डाल और पीछे की तरफ फसाकर उसके हाथ बांध दिये। और सैनिक से कहा, यह सख्स चलने में जरा भी आनाकानी करे, तो इसका सिर धड़ से जुदा कर देना। इसके पश्चात् उसने मशाल जलवाई, और सिद्धेश्वर को धकेलता हुआ वह सुरंग में धंस गया। उसके पीछे दो सौ सैनिकों की बब्बर सेना थी। सिद्धेश्वर को

बबहुबासों की तरह धकेलते हुए, सैनिक सुरंग में ले आ रहे थे। अपनों से विश्वासघात करने के कारण उसका मन उसे धिक्कार रहा था। उधर डंका बजते ही मसऊद सेनानायक की सेना अल्ला हो अकबर का नारा देती हुई बरसाती नदी के समान बढ़ी चली आ रही थी। विपत्तियों से न घबराने वाले तुर्क योद्धा, तेज चाल से चले आ रहे थे। उनके पीछे साहसी सुलतान मेहमूद था।

सिंह द्वार पर, जूनागढ़ नरेश की चौकी थी। सोरठी योद्धा गरज उठे, महालय द्वार के पास शत्रु पहुँचने लगे, और तीरों द्वारा बिंध बिंधकर धराशाही होने लगे। मुर्दों से खाई पट गई। पर अपने मुर्दों को पैरों से रौंदते हुए सैनिक बढ़े ही चले आ रहे थे। तभी सिंह द्वार पर पहुंचकर दुश्मनों ने आग लगा दी। आग लगने से कोट में भारी भय व्याप गया और इसी क्षण अन्तरायण से, अल्लाह हो अकबर की सदा सुनाई पड़ी। राजपूत राजे आश्चर्य चकित हो भीतर की ओर देखने लगे, और जो कुछ उन्होंने देखा उससे भयभीत होकर वह चिल्ला उठे, न मालूम कौन सी धरती फोड़कर शत्रु महालय में घुस आये हैं। और न जाने किस विधि से, संकटेश्वर

की बावड़ी का जल सूक गया। तभी एक के बाद एक का सिर चमकने लगा। न मालूम दैत्य पाताल फोड़ कर, यहाँ आ रहे हैं। सबसे आगे रस्सी से जकड़ा हुआ सिद्धेश्वर दिखाई दिया। जिसके पीछे से फतेह मोहम्मद ने तलवार का एक हाथ मारा, और उसका सिर एक ही बार में कटकर अलग जा गिरा। बात करनी तो दूर रही, उसे साँस लेने का भी अवसर नहीं मिला। उसकी तड़फती लाश को वहीं छोड़कर सारे दैत्य काल भैरव चौक तक पहुच गये। युद्ध का शोर चारों दिशाओं में सुनाई दे रहा था। परन्तु यहाँ उसका किसी को भय नहीं था। सामने ही रुद्रभद्र, अपने चेले चाँटों के साथ धून्न-ताप रहे थे। दूर तक धूनियाँ ही धूनियाँ दहक रही थीं। और बड़े २ लक्कड़ दहककर आसमान में धुआं फैला रहे थे। दैत्याकार रुद्रभद्र का काला कलूटा शरीर वहां आसीन था। फतह मोहम्मद बाज की तरह इन पाखंडियों पर झपटा। देखते ही देखते उस के सैनिक उन तपस्वियों को गाजर मूली की तरह काट काटकर धूनियों में फंकने लगे।

श्री गोगा महापुराण १७वाँ भाग प्रारम्भ

साधुओं में भगदड़ मच गई। और काले मुँह वाले अघोरी और वामाचारी जन, जिधर को जिस का सींग समाया भाग लिये। तभी फतह मोहम्मद ने सैनिकों को ललकार कर कहा, ध्यान से सुनो इन शैतानों में से एक भी जिन्दा बचकर भागने न पाये। तभी कद्दावर तुर्क तलवारें लेकर पिल पड़े। और सभी साधुओं के टुकड़े टुकड़े कर डाले, ढोंगी रुद्रभद्र की सारी सिद्धियां हवा में उड़ गई, और गिड़गिड़ाकर कांपता हुआ बोला, मुझे सुल्तान के पास ले चलो, गजनी का सुल्तान मेरा दोस्त है। और मुझे देखते ही वह तुमसे प्रसन्न होगा, मेरे उसके कौल करार काफी पहले ही हो लिये हैं। तो ले सुल्तान की दी हुई इस तलवार का पानी पी। इतना कह तलवार का एक भरपूर हाथ मारा और रुद्रभद्र का काला लहू, सिर कटते ही पृथ्वी पर बहने लगा।

इसके पश्चात फतह मोहम्मद ने तलवार घुमाते हुए कहा, दोस्तो अब सुल्तान का इस्तकबाल करने के लिये फतह द्वार की ओर चलो। समझ लो हमारा एक एक पल कितना कीमती है। इतना सुनकर सब

अल्लाह हो अकबर चिल्लाते हुए, सिंह द्वार की ओर बढ़ चले, और अन्त द्वार की गली कूँचों को पार करता हुआ सारा लश्कर, तेजी से बढ़ रहा था, और राह में जो भी हिन्दू दिखाई दिया उसी के दो टुकड़े कर डाले। और वह कसाई मनुष्य मंदिर के परकोटे पर जा पहुँचा, जहाँ कभी किसी मलेच्छ ने घुसने की हिम्मत नहीं की थी। यहीं से एक बार देवदर्शन करने के अपराध में, उसे धक्के देकर इसे दूर भगा दिया गया था। इसीलिये वह अपना आपा भूलकर आखरी देवदर्शन करने के लिये वह ज्योति लिंग की ओर बढ़ा। उसने सोचा एक बार उस पत्थर के देवता को देखूँ तो सही जो केवल ब्राह्मणों की ही सुनते हैं। द्वारका द्वार को पार कर, तुर्कों के दल कोट में घुस आये थे। जरा भी भयभीत न होकर सुल्तान के सैनिक सीढ़ी द्वारा कोट पर चढ़ रहे थे। और दूसरे चढ़ने वालों की सहायता कर रहे थे।

चौमुखा युद्ध हो रहा था। लाशों से जल थल दोनों ही पट गये थे। सिंह द्वार पर जूनागढ़ नरेश अपने काठियावाड़ी सैनिकों को लिये, अडिग दीवार बनाये, मलेच्छों की लोथों का पहाड़ बना रहे थे। इधर बिल्लोचियों के दस्ते, घुसे चले आ रहे थे।

द्वार की भारी दुर्दशा हो चुकी थी, अब वह किसी भी वक्त गिर सकता था। इधर तुर्क योद्धा मच्छरों के समान घुसे चले आ रहे थे। और वृद्ध नवधन राव को शत्रुओं ने स्वर्ग लोक पहुंचा दिया। गुर्जर योद्धा दोनों हाथों से तलवार चलाने लगे, गदा और मुगदर से हाथों हाथ निर्णय हो रहा था। गजनी का सुल्तान फतेह दरवाजे पर तलवार लिये खड़ा था। राव ने महमूद को देख सोचा क्यों न दो-दो हाथ इसी दैत्य से कर लिए जायें। उन्होंने अपनी तलवार सभाल, वह सुल्तान को ललकारते हुए कोट से कूद पड़े। काठी सैनिक बापू-बापू कहकर दौड़ पड़े, जब तक काठी योद्धा संभले फतेह मोहम्मद ने दरवाजा खोल उनके ऊपर छलांग लगाई। तभी दुश्मन अल्लाह हो अकबर कहते हुए, मन्दिर में घुस आये और सैकड़ों सैनिक उन पर टूट पड़े। और राव के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। राजपूत योद्धा रोने-चिल्लाने लगे, अब तो तलवार चलाने की व्यवस्था भी नहीं रही। तभी चारों ओर से पुकार आई, अन्तर कोट-२ बचे-खुचे सैनिक अन्तर कोट की तरफ दौड़े, सारा रास्ता लाशों से पटा पड़ा था। और वातावरण अशान्त हो गया था, शांति का नामो-

निशान भी न था। फतेह मोहम्मद ने गजनी के सुल्तान का, स्वागत कर उसे सलाम किया। और आगे २ अपनी धारदार तलवार से रास्ता बनाता हुआ वह चल पड़ा। और महमूद अपने अरबी घोड़े पर चढ़ा हुआ तुर्क योद्धाओं का भारी दल लिये हुए महालय के पोर में घुसा। चारों तरफ से अल्लाह हो अकबर का नारा देते हुए वहां शत्रु घूम रहे थे। परन्तु इस स्थान पर उन्हें जीवित पुरुष कोई नहीं मिला।

जब इन दैत्यों के घोड़ों की धूल उड़ती हुई दिखाई दी, तो दामोदर मेहता जान गये, कि शत्रु कुछ ही क्षणों में यहां आजायेंगे। दामोदर मेहता एक पैड़ी नीचे को उतरे ही थे, तो पीछे से किसी ने उन्हें छुआ। पलटकर जब उन्होंने देखा, तो गंग सर्वज्ञ शांत मुद्रा में वहां खड़े थे सर्वज्ञ ने गम्भीर मुद्रा में मेहता से कहा आ पुत्र। गंग सर्वज्ञ की आंखों में आंसू देख-कर मेहता उनके पीछे-पीछे हो लिये, तभी सर्वज्ञ ने ज्योतिलिंग के ठीक पीछे एक गुप्त द्वार खोला, और अन्धेरी सुरंग में चलकर एक कक्ष में पहुँचे। जहां भीमदेव और चौलुक्य राव के शरीर भूमि में पड़े थे। और बालुका राव, शोक सन्तप्त में, उदास मुख

चुपचाप खड़े थे। तलवार उनके हाथ में थी और उनके घाव का रक्त सूख चुका था। गंगा भी वहां उतरे मुख खड़ी थी।

सर्वज्ञ ने कहा पुत्र, चौलुक्य तो स्वर्गवासी हुए, परन्तु बाणबली अभी मूर्छित हैं। गुजरात के राजा की रक्षा का भार मैं तुम्हें सौंपता हूं, भीमदेव का जीवत रहना बहुत कारणों से जरूरी है। इस समय एक-एक क्षण मूल्यवान है। इतना कहकर मूर्छित भीमदेव को सर्वज्ञ अपने कन्धे पर लादकर, उस अंधेरी गुफा की ओर बढ़ चले। दामोदर मेहता और बालुकाराय, नंगी तलवारें लिये, उनके पीछे-पीछे चलने लगे। थोड़ी दूर चलने से उजाला दिखाई देने लगा। और वह वहां जा पहुंचे, जहां सामने ही समुद्र बह रहा था। महाराजा भीमदेव का शरीर उन्होंने नाव पर चढ़ाकर कहा, पुत्र। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं तुम सदैव सुखी रहो। इतना कहकर सर्वज्ञ तेजी के साथ उस अंधेरी गुफा में घुस गये। दोनों राज्य पुरुष उन्हें प्रणाम भी न कर सके। सर्वज्ञ अपने मीले नेत्र किये हुए अपने देवता ज्योतिलिंग के पास जा पहुंचे। और भीमदेव की नौका खम्भात की तरफ रवाना हुई।

श्री गोगा महापुराण १८वाँ भाग प्रारम्भ

तीन चार दिन के युद्ध के पश्चात भी महमूद का भेदिया, मन्दिर में घुस आया। गंग सर्वज्ञ, शान्त मुद्रा में वहीं खड़े अपने देवता ज्योतिलिंग की पूजा अर्चना में अकेले ही मंदिर में रह रहे थे। मन्दिर का गुप्त भेद मालूम करने के पश्चात, महमूद गुप्त मार्ग द्वारा मन्दिर में, मय अपनी फौज के घुस आया। उसी के साथ, गुर्ज हाथ में लिये हुए, फतह मोहम्मद भी था। और भारत के भेदिये सन्त अलबरूनी ने भी अपने हाथ में तलवार लिए हुए महमूद के साथ ही, मन्दिर में प्रवेश किया। महमूद ने मन्दिर में घुस आने के पश्चात, नितान्त शान्त वातावरण में, गंग सर्वज्ञ को स्वर्ण का थाल हाथ में लिये, देवाधिदेव सोमनाथ प्रभु की आरती करते देखा। कुछ पल महमूद भाव विभोर हो चुपचाप खड़ा रहा। कुछ ही क्षण पश्चात वह गंग सर्वज्ञ से, सतेज वाणी में बोला, और यहां कौन कौन हैं। सर्वज्ञ ने शान्त स्वर से उत्तर दिया, मैं और मेरा देवता, फिर बिना उत्तर दिये ही बोले, महमूद क्षण भर अभी ठहर जा। इतना कहकर वह अपनी पूजा समाप्त करने लगे।

महमूद और उसके दोनों साथी भी सर्वज्ञ की

पूजा अर्चना खड़े खड़े देखते रहे। सर्वज्ञ ने शीघ्र ही भूमि पर गिरकर, अपने देवता को दण्डवत की। फिर वह ज्योतिर्लिंग के ध्यान में मग्न हो, उन्होंने शान्त मुद्रा में महमूद से कहा, अब तुम अपना कार्य करो। इतना कहकर उन्होंने अपने नेत्र बन्द कर लिये, और शीघ्र ही उनका शरीर समाविस्थ हो गया। महमूद ने फतह मोहम्मद को इशारा किया, तभी फतह मोहम्मद ने अपना गुर्ज उठाकर कहा, ऐ बुजुर्गवार पीछे हटो और हमें कुफ्र तोड़ने दो। पर गंग सर्वज्ञ ज्योतिर्लिंग से और सटकर बैठ गये। और महमूद से बोले पहले सेवक उसके पश्चात स्वामी इतना कहकर उन्होंने अपना मस्तक ज्योतिर्लिंग पर रख दिया। सुल्तान ने गुर्ज उठाकर वार किया और सर्वज्ञ का सिर धड़ से अलग हो गया।

फिर तीन बार करके ज्योतिर्लिंग के तीन टुकड़े कर डाले जिसमें अरबों रुपयों के, हीरे, मोती, व जवाहरात और छिपा हुआ सोना निकला इसके पश्चात सुल्तान की सेना मंदिर में घुस गई और जिस के जो भी जर जवाहारात हाथ लगे, उन्हें सेनापतियों ने अपने कब्जे में कर लिया। और देव पट्टन में सैनिकों ने भारी लूट मार कर खूब खून खराबा

किया। इसके पश्चात, महमूद को भीमदेव का ध्यान आया, और वह उनकी खोज करने लगा। तभी फतह मोहम्मद ने अन्दाजा लगाकर कहा, अगर भीमदेव जिन्दा बच गया है तो वह किसी न किसी तरह खम्भात पहुँच गया होगा। क्योंकि चौला सुन्दरी खम्भात में है। और मेरी शोभना उसकी निगरानी करती है। उसे यह पता नहीं था कि शोभना एक स्वच्छ हृदय की नारी है और हर कीमत पर वह सुल्तान से चौला की रक्षा करेगी। शोभना को भी चौला से प्रेम हो गया था, और उसने महमूद से चौला की रक्षा करने की अपने मन में ठान ली थी।

उधर भीमदेव के घाव खम्भात के वैद्यराज ने इलाज और चौला सुन्दरी की सेवा के कारण ठीक हो गये। तब इन्होंने हाथ जोड़कर वैद्यराज से कहा महाराज अब तो मैं चलने-फिरने योग्य हो गया हूँ, वैद्यराज ने मुस्कराकर कहा, महाराज आप अपने पुण्य प्रताप से और प्रभु कृपा से ठीक तो हो गये हैं, परन्तु आप अभी आराम करें। देवता जी मैं आराम कैसे करूं, मेरे सामने गुजरात की प्रतिष्ठा का भारी प्रश्न है। वैद्यराज बोले महाराज, गुजरात के राजा के प्राणों का मूल्य बहुत अधिक है। वैद्यराज के चले

जाने के पश्चात दामोदर मेहता ने कहा महाराज
हमसे जैसे भी बनेगा हम आपके प्राणों की
रक्षा करेंगे। परन्तु मेरी एक योजना है महाराज,
इस गजनी के दैत्य के लौटने के केवल दो ही मार्ग
हैं। एक आबू होकर दूसरा कच्छ के मैदान में होकर
आबू में महाराज विमल देव इस दैत्य के इंतजार
में साठ हजार सेना लिये बैठे हैं। और महाराजा
वल्लभ देव भी अपनी सब सेना और साधन लेकर
उनसे जा मिले हैं।

अनहिल्लराय भी सैन्य सहित आबू की तरफ
चल पड़े हैं। इन दोनों महावीरों की सेना चालीस
हजार से भी अधिक है। परन्तु एक बाधा भी है,
वह यह कि कुमार दुर्लभदेव ने महमूद से गुप्त सन्धी
करली है। वह गुजराधीश बनने के वास्ते तैयार
बैठे हैं। उनके पास भी पचास हजार सज्जित सेना
है। और वह निश्चय ही सुल्तान का साथ देंगे।
भीमदेव बोले, क्या उनके सेनानायक भी देशद्रोही
और गद्दार हैं। नहीं महाराज सो तो मुझे पूरी
पूरी आशा है, कि वह सब हमारा ही साथ देंगे।
तब क्यों न दुर्लभदेव को अभी-अभी बना लिया
जाय। अवश्य महाराज वह [illegible]

योजना है, कि पाटनमें पहुँचकर महमूद उनका अभि-
षेक करेगा। यह मुझे भली-भांति ज्ञात है। परन्तु
हम ऐसा उपाय करेंगे, कि सिद्धपुर से पाटन जाते
समय दुर्लभदेव के संग अधिक सेना न हो। क्योंकि
मैंने सेना नायकों को सब कुछ समझा दिया है।

अमीर शीघ्र ही पाटन से कूँच कर देगा। कारण
उसका सारा बल समाप्त हो चुका है। और उसके
सैनिक अशान्त हैं। वह हमारी आबू की तैयारी से
भी परिचित है। वह दुर्लभदेव को राजा बना, लूट
का माल लेकर सीधा गजनी का रास्ता पकड़ेगा।
उस समय बेखबर दुर्लभदेव को कैद करना कठिन न
होगा। सुल्तान सीधा मरुस्थली की तरफ होकर
जायेगा। तो सज्जन सिंह चौहान रणथम्बी माता के
चौराहे पर चौकी धरे बैठे हुए गजनी के दैत्य का
इन्तजार कर रहे हैं। अब हमें यहां का भरोसा नहीं
है, गजनी का सुलतान आपकी गन्ध सूंघता हुआ,
किसी भी पल अकस्मात में आ सकता है। इसलिये
आप चौला और बालुकाराय को लेकर आबू को
अभी कूँच करदो। मैं सेठी ब्राह्मणों और साधों को
कच्छ को रवाना किये देता हूँ। धन-सम्पत्ति और
साज सामग्री को बचाने का अब कतई वक्त नहीं है।

जाते के पश्चात दामोदर मेहता ने कहा महाराज हमसे जैसे भी बनेगा हम आपके प्राणों की रक्षा करेंगे। परन्तु मेरी एक योजना है महाराज, इस गजनी के दैत्य के लौटने के केवल दो ही मार्ग हैं। एक आबू होकर दूसरा कच्छ के मैदान में होकर आबू में महाराज विमल देव इस दैत्य के इंतजार में साठ हजार सेना लिये बैठे हैं। और महाराजा वल्लभ देव भी अपनी सब सेना और साधन लेकर उनसे जा मिले हैं।

अनहिल्लराय भी सैन्य सहित आबू की तरफ चल पड़े हैं। इन दोनों महावीरों की सेना चालीस हजार से भी अधिक है। परन्तु एक बाधा भी है, वह यह कि कुमार दुर्लभदेव ने महमूद से गुप्त सन्धी करली है। वह गुर्जराधीश बनने के वास्ते तैयार बैठे हैं। उनके पास भी पचास हजार सज्जित सेना है। और वह निश्चय ही सुल्तान का साथ देंगे। भीमदेव बोले, क्या उनके सेनानायक भी देशद्रोही और गद्दार हैं। नहीं महाराज सो तो मुझे पूरी पूरी आशा है, कि वह सब हमारा ही साथ देंगे। तब क्यों न दुर्लभदेव को [illegible] बना लिया [illegible] [illegible] परन्तु महाराज वह [illegible]

योजना है, कि पाटनामें पहुँचकर महमूद उनका अभिषेक करेगा। यह मुझे भली-भाँति ज्ञात है। परन्तु हम ऐसा उपाय करेंगे, कि सिद्धपुर से पाटन जाते समय दुर्लभदेव के संग अधिक सेना न हो। क्योंकि मैंने सेना नायकों को सब कुछ समझा दिया है।

अमीर शीघ्र ही पाटन से कूँच कर देगा। कारण उसका सारा बल समाप्त हो चुका है। और उसके सैनिक अशान्त हैं। वह हमारी आबू की तैयारी से भी परिचित है। वह दुर्लभदेव को राजा बना, लूट का माल लेकर सीधा गजनी का रास्ता पकड़ेगा। उस समय बेखबर दुर्लभदेव को कैद करना कठिन न होगा। सुल्तान सीधा मरुस्थली की तरफ होकर जायेगा। तो सज्जन सिंह चौहान रणथम्बी माता के चौराहे पर चौकी धरे बैठे हुए गजनी के दैत्य का इन्तजार कर रहे हैं। अब हमें यहाँ का भरोसा नहीं है, गजनी का सुलतान आपकी गन्ध सूंघता हुआ, किसी भी पल अकस्मात में आ सकता है। इसलिये आप चौला और बालुकाराय को लेकर आबू को अभी कूँच करदो। मैं सेठी ब्राह्मणों और आर्यों को [illegible] को रवाना किये देता हूँ। धन-सम्पत्ति और सब सामग्री को बचाने का अब कतई वक्त नहीं है।

अगर हमें कोई परेशानी पड़ी तो हम इसे तुरन्त जलाकर भस्म कर देंगे। भीमदेव बोले मैं आपकी कसम खाकर कहता हूं मैं कहीं नहीं जाऊंगा।

आप चौला को पहुंचाने का प्रबन्ध करो। इतना सुनकर चौला रानी जो पास ही के कक्ष में बैठी हुई थी, लाज, शर्म सब त्याग कर दौड़ी हुई आ पहुंची और महाराज के कदमों से लिपट कर उसने कहा, चाहे कुछ भी क्यों न हो आपके जीते जी मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जाने की। प्रिय इस समय वक्त खराब है, तुम जिद मत करो। चौला बोली स्वामी मैं नाचने में जैसी निपुण हूं, उसी तरह तलवार चलाने में भी। इस क्षत्राणी की तलवार का पानी पीकर दुश्मन जरा देखे तो सही। महाराज मेरी आपसे विनती है, इसी वक्त किला मुझे प्रदान कर दिया जाए। इतना कह चौला सुन्दरी ने महाराज की तलवार उठाली। और बालुकाराय से बोली, सेनापती जी, इसी वक्त इन्हें किले से बाहर निकाल कर आबू की राह पकड़ो, यहां मुझे एक योद्धा की भी जरूरत नहीं है। सभी सैनिकों को महाराज की सेवा के लिये आप ले जायें। तभी एक सैनिक ने आ कर कहा, कि शत्रु किले की ओर बढ़े चले आ रहे हैं।

अल्ला हो अकबर के नारे लगाते हुए। चौला ने घबराकर कहा, व्यर्थ समय न गंवाकर गुजरात के स्वामी की रक्षा कीजिये, वह रहा गुप्त रास्ता, और आपने क्या अपनी दुर्गाधिष्ठात्री की आज्ञा नहीं सुनी तभी बालुकाराय ने रोते हुए, मूर्छित राजा का शरीर कन्धे पर उठा लिया, और गुप्त रास्ते से प्रवेश करते हुए कहा, मैं आपको भगवान शंकर की रक्षा में छोड़े जा रहा हूं। इतना कह सुरंग के अन्धेरे में वह विलीन हो गये।

जितने भी वहां सैनिक थे, सभी को भूगर्भ में उतार दिया और गुप्त मार्ग को बन्द कर दिया। फिर शोभना से बोली अब हम तुम दोनों बहनें यहां हैं। शोभना बोली तो क्या आज्ञा है महारानी जी, अब हम दोनों बहनें एक-एक तलवार लेकर और द्वार बन्द करके यहां बैठ प्रभू का नाम जप, इस भूमि की रक्षा करें। गुजरात के अधपति सुरक्षित हो गये, हम पर जो बीतेगी भुगतेंगे। इसके कुछ ही क्षणों के पश्चात, सोलह हाथ ऊंची दीवार फलांगकर और खून से रंगी तलवार हाथ में लेकर फतेह मोहम्मद आंगन में आ कूदा। और कूदते ही उसे शोभना ने पहचान लिया। और खौलता को भीतर भेज और द्वार

बन्द करके वहीं अड़कर खड़ी हो गई । फतेह मोहम्मद भीतर में आ गया, शोभना बोली तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रही थी देवा । महमूद ने तुम्हे सेनापति बनाया अवश्य है, परन्तु देवा वह हमारे देश धर्म और जाती का शत्रु है । परन्तु वह हमारा मित्र है । अब चोला को मेरे हवाले करो, जिसकी देखभाल का कार्य मैं तुम्हें सौंप गया था । इस समय वह यहीं है मैं भली-भांति उसे देख चुका हूँ । शीघ्रता करो मैं उसे सुलतान की भेंट करके भारी इनाम लूँगा । देवा तुम मेरी खुशी का कोई काम नहीं कर सकते, देवा ने कहा मैं अपनी प्रेमिका के लिये अपना दाहिना हाथ भी काट कर दे सकता हूँ ।

तुम मुझसे क्या करवाना चाहती हो, इतना सुन शोभना ने कहा मेरे अच्छे देवा, मुझे तुम गजनी के दैत्य का सिर काटकर ला दो । दो कदम पीछे को हटकर, फतह मोहम्मद बोला यह क्या कहती हो शोभना । देव मेरे कहने से तुम इतना सा काम नहीं कर सकते । जो यमदूत के समान सत्रह बार भारत को लूटकर आग की भेंट कर चुका है । और वह इस समय तुम्हारे चुंगल में है । तुम्हारी शोभना की तुमसे यही आरजू है, कि अभी दुश्मन का शीश काट

लाओ । तो क्या मैं उसके साथ धोखा करूँ, कभी नहीं । क्या अपनी शोभना के लिये भी नहीं, नहीं भगवान के लिये भी नहीं । जल्दी करो शोभना चोला को लेकर चलो सुल्तान हमारी प्रतिक्षा में होगा । अगर तुम नहीं चल रही हो तो चोला को ही मेरे हवाले करो । परन्तु याद रखना तुमने शोभना की बात नहीं मानी है । व्यर्थ का शोर गुल मत करो, चुपचाप मेरे पीछे २ चली आओ । अन्दर कौन कौन है, शोभना फतह मोहम्मद के पीछे २ चलकर अपनी तलवार उठा ली पल भर में ही उसने कार्य निश्चित कर लिया ।

उसने एक छोटे द्वार में घुस कर कहा, जूता बाहर उतार दो, और बिना बोले अन्दर चलो । फतह मोहम्मद ने जूता उतार द्वार में प्रवेश किया, शोभना ने द्वार बन्द कर दिया, और आप अन्धेरे में अलोप हो गई । फतह मोहम्मद ने शोभना को पुकारा और कहा शोभना तुमने क्या मेरे साथ धोखा किया है । जो लाकर मुझे यहां कैद कर दिया । उसका सिर इधर उधर मुड़ते ही दीवार से टकरा रहा था । तभी एक छोटा सा सुराख खोल शोभना ने कहा, हाँ देवा मैंने दगा की है । क्योंकि औरत के पास इसके

अलावा दूसरा उपाय भी और क्या है । प्यार तूने भी किया और मैंने भी, अन्धे प्यार में हमने यह भी न सोचा मैं ब्राह्मणी होकर किस जाति वाले के प्यार में फँस रही हूं । बस देखा बड़ी जाति वाले और छोटी जाति वाले में यही अन्तर है, मैंने तेरे प्यार की खातिर अपना धर्म ईमान और अपनी मनुष्यता को ठुकरा कर तेरे प्यार का रूप देख लिया । देखा तुम मनुष्य नहीं राक्षस हो ।

फतह मोहम्मद ने अधीर होकर कहा शोभना जैसे मेरा प्यार अन्धा था, वैसे ही गुस्सा भी अन्धा है । इतना कह उसने उस सुराख में से बाहर निकल जाने के लिये अपना सिर ताकत से सुराख में घुसा दिया, जब पूरा सिर सुराख में घुस गया, तभी शोभना ने तलवार घुमाकर फतह मोहम्मद की गर्दन पर वार किया, और उस दैत्य का सिर धड़ से अलग हो गया। तभी शोभना ने भयभीत हो तलवार के दो तीन हाथ और मारे पर उसका प्यारा पहले ही वार में परलोक पहुँच चुका था, अब वह अपनी खूनी तलवार लिए हुए दौड़कर चोला रानी के चरणों में गिरकर बोली, अच्छे करो महारानी महल पर अमीर का कब्जा हो चुका है ।

श्री गोगा महापुराण ११वाँ भाग प्रारम्भ

महाराज बीमारी की हालत में थे इसलिये अभी दूर नहीं गये होंगे । मैं तब तक सुल्तान को अटकाये रहूँगी । तुम मुझे महादेव बाबा के सहारे छोड़कर शीघ्रता से चली जाओ । दोनों सखियों ने सलाह कर चोला रानी को उसी गुप्त मार्ग द्वारा रवाना कर दिया । और खुद चोला के गहने कपड़े पहनकर और रानी के समान सजकर चौक में चौकी पर जा बैठी, उसी क्षण फाटक तोड़कर, सैनिक कक्ष में घुस आये । शोभना ने कड़क कर कहा, खबरदार जो एक कदम भी अन्दर रक्खा, जो तुम्हारा सेना नायक हो, उसे अन्दर भेजो । तभी एक प्रौढ़ सेना नायक आगे आया और शोभना रानी सजी धजी चौकी पर जमी रही । और घूरकर नायक से कहा मूर्ख, शस्त्र बाहर रख कर मेरे सम्मुख आ । नायक ने समझा यह वही रानी है जिसकी सुल्तान ने माँग की है ।

वह अपने हथियार खोल भयभीत होता हुआ शोभना के सम्मुख आ खड़ा हुआ । शोभना बोली तुम्हें तुम्हारे सुल्तान का क्या हुक्म है । खालो क्यों उस नाजनी को देखने के इच्छुक हैं, जो इस महल में रहती है । शोभना ने कहा तुम अपने सुल्तान को

हमारा हुक्म पहुँचा दो, वह चार घड़ी बाद यहाँ तशरीफ लावें। और इस महल पर तुम सिर्फ पचास जवानों का पहरा रक्खो। और बाकी जवान बीस गज पीछे रहें, ड्योढी पर सिर्फ तुम्हारा पहरा रहेगा। इतना कहकर वह चौकी पर बैठ गई। और शोभना का संदेश पाकर सुल्तान की बांछें खिल गईं। वह अपने को बड़ा भाग्यशाली समझने लगा। जीवन में वह पहली बार ही वह समझा प्रेम ऐसी वस्तु है, जो किसी कीमत पर खरीदी नहीं जा सकती। इसके आगे बड़े से बड़े विजेता को भी झुकना पड़ता है। फिर उसने फौरन हुक्म दिया कि लूटपाट बन्दकर दी जाये।

वह यह कल्पना भी नहीं कर सका कि चौला के स्थान पर शोभना उसे उल्लू बना रही है। कुछ ही अर्से के पश्चात, सुल्तान ने महल पर पहुँचकर ताली बजाई। अन्दर से शोभना ने मीठी वाणी में उत्तर दिया, अगर यशस्वी गजनी के सुलतान पधारे हैं तो आप अन्दर आ सकते हैं। इस समय इस रानी के पास, कोई दास दासी नहीं है, सिर्फ यहाँ मैं ही अकेली हूँ। मेरी समझ में ही नहीं आ रहा है, कि मैं किस प्रकार आपका स्वागत करूं। मधुर कण्ठ की कोयल

जैसी मधुर आवाज सुनकर, सुलतान खिल उठा। उसने कहा मेरे मनकी मलिका, मुझे एक बार तुम्हारे दर्शनों की झलक मिल चुकी है यह खुदा का बन्दा आप का गुलाम महमूद सलाम करता हुआ आपके सामने हाजिर है। शोभना बोली मैंने तो सुना था गजनी का सुलतान राजाओं का राजा है। तो गुलाम महमूद यहाँ क्यों आया है।

मेरे मन की मलिका जो महमूद बादशाहों का भी बादशाह है, वही अपनी महारानी का गुलाम है। और यह भी जानकर कि मैं एक तुच्छ देवदासी हूँ। इसी के वास्ते क्या गजनी का सुल्तान खूनी तलवार लिये हुए यहाँ आ पहुँचा है। सुल्तान बोला मुझे खुद अफसोस है मलिका, मैं अभी से इस तलवार को तुम्हारे कदमों पर कुर्बान करता हूँ। इतना कह जाली के भीतर वह बैठी बात कर रही थी उसके कदमों के पास रख दी। शोभना बोली यह गजनी के सुल्तान की बरकत और दबदबा है। आपको उचित नहीं है कि इस बरकती कीमती तलवार को, एक अदना औरत के कदमों में धरने की बेवकूफी करें। महमूद बोला महारानी साहिबा आज महमूद अपनी बेवकूफी पर भी बेहद खुश है मलिका साहिबा, तो

इसके माने यह हुए कि गजनी के सुल्तान को भी भारत की हवा लग गई है। यहाँ के ज्यादातर लोग औरतों के गुलाम ही हुआ करते हैं।

गजनी सुल्तान को ऐसा नहीं होना चाहिये। महमूद बेतहाशा खिलखिलाकर हँस कर बोला, क्या महमूद के दिल नहीं है। शोभना बोली शायद दिल हो, परन्तु दिल प्यार धारदार तलवार पर चलने को कब कहता है। सुल्तान बोला इसीलिये अपनी धारदार तलवार आपके कदमों में धर दी है। वह भी इसीलिये कि यह महमूद खुदा का बन्दा तुम्हारे कदमों पर कुर्बान है क्यों क्या आप खुदाको प्यार नहीं करते, औरत का प्यार न धमकी से मिलता है, और न कीमत देकर खरीदने से और नहीं मिन्नत करने से, वह अर्पित किया जाता है, जिस प्रकार हिन्दू अपने देवता को फूल अर्पित करते हैं। इस समय तो अमीर ने अपनी तलवार अर्पित करके, मेरे मन को मोहा है। आपने गजनी के सुलतान को ठीक से समझा है मलिलका, खुदा का लाख-लाख शुक्र है। सुलतान मैं तो एक तुच्छ देवदासी और अबला नारी हूँ। परन्तु गजनी के सुलतान का, मैं कायर होना कतई पसन्द नहीं करती। इसलिये मेरा आपसे अनु-

रोध है, कि प्यार बियार की बातें अभी आप जाने दें। प्राप्त तो आपने मुझे कर ही लिया है, फिर बन्दी बना लीजिये और हुजूर की जब इच्छा हो मेरे साथ मनमानी कीजिये। शोभना की बातें सुन भर्राये हुए गले से सुलतान बोला, हे नाजनीन तूने महमूद की तरह प्यार का घाव नहीं खाया। है इसी से इस प्रकार का वार्तालाप करती है।

उसने तुरन्त ड्योढ़ी से, सेना नायक को बुलाकर हुक्म दिया, कि इस नाजनीन के साथ मल्लिका जैसा व्यवहार किया जावे, और तुम यह अच्छी तरह समझ लो, कि गजनी का सुलतान इसके हुक्म का बन्दा है। फिर घूमकर वह बोला मल्लिका साहिबा, आपकी सेवा में एक औरत रहती थी, वह कहाँ गई। शोभना ने कहा हुजूर के आने से पेस्तर आपका एक तरुण सेनापति, उसे लेकर भाग गया। इतना सुन महमूद वहाँ से चल दिया। और चौला रानी बड़ी बिपत उठाती हुई अपने स्वामी भीम देव के पास जा पहुँची। सुलतान की तलवार शोभना के कदमों में ही पड़ी रही। फतेह मोहम्मद का अपनी प्रेयसी को लेकर भाग जाना सुलतान की समझ में कतई नहीं आया। ऐसे समय में जब उसे मुझसे भारी

इनाम मिलने की आशा थी।

बहुत-सी कल्पनायें कर महमूद ने जासूस छोड़े, परन्तु फ़तेह मोहम्मद का सुराग न मिलना था और ना ही मिला। सुलतान अब अपना समय नष्ट न कर, अपने लश्कर को लेकर उसने पाटन को कूँच किया। क्योंकि अपना लूटा हुआ सभी खजाना, वह सेनापती मसूद और उस्ताद अलवरूनी की देख-रेख में पाटन भेज चुका था। उसके सैनिकों की जीने, जर जवाहरात से डट कर भर चुकी थी। अब उनका मन युद्ध से उकताकर अपने घर पहुँच कर मौज-मजे करने को कह रहा था। इसलिये सुलतान ने देर करनी ठीक नहीं समझी। उसने शोभना के समझाने का यही नतीजा निकाला कि किसी औरत को जोर-जबरदस्ती से काबू में करना अलग बात है, और उसका प्यार पाना अलग बात, शोभना के साथ सुलतान ने, जिस शालीनता से वार्तालाप किया था। उससे उसे प्यार पाने की पूर्ण आशा हो गई थी। शोभना की सवारी उसके सबसे उत्तम हाथी पर थी। हाथी पर सोने की अम्बारी खूब सजी-धजी थी। महमूद ने कैदियों के काफले को अगाड़ी कर, पाटन को कूँच किया। और दो दिन की मंजिल

करके पाटन के दरबार में वह बेखटके दाखिल हो गया और सेना के वास्ते सुलतान ने मैदान में छावनी छवा दी और उसके सरदार खाली मकानों में कब्जा करके अपना समय काटने लगे।

कुछ दिन गजनी का सुल्तान, पाटन में अपना दरबार लगाकर अपने सेनापतियों से सलाह मशवरा करता रहा। वर्षा ऋतु आई, और अषाढ़ श्रावण में एक बूंद भी पानी नहीं वर्षा अकाल के संकट से, जनता के मुख पर मुर्दनी छा गई। अनाज महँगा हो गया, गरीब जनता भूखी मरने लगी। सेठों ने सदाव्रत खोले, परन्तु अगले ही माह, अकाल मुँह फाड़कर, मनुष्यों को निगलने लगा। इस संकट के समय की विद्रोह भावना अपने सैनिकों में देख, महमूद ने शीघ्र ही गजनी लौटने का विचार किया। उसने अपने दरबार खास में, एक आम सभा की घोषणा की, और नगर के महाजनों और प्रधान पुरुषों को बुला कर, उनके सम्मुख यह प्रस्ताव रखा, कि हम गुजरात का राजा किस व्यक्ति को बनायें।

हम महाराजा चमुन्डराय के किसी वन्शज को ही, राज्य सौंपना चाहते हैं। जो हमें ठीक समय पर सालाना खिराज गजनी भेजता रहे। यह खबर दुर्लभ

देव ने जब सुनी, तो अपना सन्तों का ढोंगी बाना बदल कर, राजसी पोशाक पहन, पाटन आकर सुलतान की सेवा में नजर भेंट पेश करके हाथ जोड़ सिर नवा कर खड़ा हो गया। उसकी आधीनी देख महमूद ने सन्तुष्ट होकर, उसकी कमर में तलवार बांधी, और बड़े आदर से अपने पास बैठाकर सब शर्तें तय कीं। अगले ही दिन, अनहिल्ल पट्टन में दुर्लभदेव का राज्यभिषेक बड़ी धूमधाम से मनाया गया, चन्डशर्मा महा मन्त्री पद पर शोभित हुए। परन्तु दुखी प्रजा इस उत्सव में अकाल के कारण शामिल नहीं हुई। ब्राह्मणों द्वारा यज्ञ, हवन और पूजा पाठ की रीति सम्पन्न करके, और दान दक्षिणा ले वह अपने २ घरों को सिधारे। महमूद ने मन चाहा नजराना लेकर, सारा धन अपने हाथियों पर लाद लश्कर को आगे बढ़ा कर पाटन से कूँच बोल दिया।

आगे बढ़ने पर गजनी के सुलतान ने सुना कि, पाटन से नलकोट तक और आबू से झालौर तक राजपूत बहादुरों की एक लाख से भी अधिक तलवार, उसकी भली प्रकार खातिरदारी करने को, उतावली सी खड़ी महमूद के आने की राह देख रही हैं। इतनी खबर सुनते ही, सुलतान का चेहरा पीला

पड़ गया। इतनी भारी सेना से मुकाबला करना नामुमकीन है, जबकि हमारे सभी सरदार लड़ने का इरादा छोड़ चुके हैं। इसीलिए उसने भयभीत हो लड़ाई से बचने के लिये, सिन्ध की राह पकड़ना ही उचित समझा। और उसने कच्छकोट की तरफ अपने घोड़े की बाग मोड़कर और लाव लश्कर को साथ लेकर वह धीरे धीरे सिन्ध में घुसा अभी सुलतान कन्थ कोट भी नहीं पहुँच पाया था। तभी उसे सूचना मिली।

भील माल से अमरकोट तक राजपूतों की सेना खड़ी है। और अजमेर का चोहान राजा, बीसल देव अपने चाचा ढुन्ढी राव के साथ. साठ हजार सेना लिए हुए पीलू के मैदान में, अपने पिता धर्मगजदेव का तर्पण करने के लिए, उसे महमूद के रक्त की बड़ी आवश्यकता है। इन सभी सन्देशों को सुनकर, महमूद अपनी दाढ़ी के बाल नोंचते हुए उसका सिर चकराने लगा। आज उसे सोमनाथ के विजेता फतह मोहम्मद की याद आ रही थी। उसने समझ लिया था मेरी इतनी मेहनत की कमाई हुई दौलत अब गजनी जाने नहीं पाएगी। इसी समय उसे एक और भयानक खबर मिली, कि गुजरात का राजा भीमदेव उसकी

पीठ में छुरा मारने को भीनामाल से, आगे तक बढ़ आया है। अब तो उसके सम्मुख एक ही रास्ता रह गया था कि वह कच्छ के मैदान में घुसने की जोखिम उठावे इस समय उसके पास न अधिक ऊंट थे, और न पीने का पानी, और न कोई ऐसा पथ प्रदर्शक था जिसका विश्वास किया जा सके।

आज तो अपने बन्दे महमूद को उसका खुदा भी राह नहीं बता रहा था। उसका एक भी सेनापती लड़ाई के वास्ते इच्छुक नहीं था। मजबूरन वह अपने धन्यधान्य से निराश हो, वह मरूभूमि की ओर मुड़ा, कच्छ के महारण में घुसने के सिवा उसे और कहीं अपना निस्तार नहीं दिखाई दिया। अपनी बाग मोड़ते समय उसने चौला रूपी शोभना से कहा महारानी साहिबा, यह अभागा खुदा का बन्दा महमूद अपनी परेशानी के कारण तुम्हें आजाद करता है। आपका जहां जी करे, आप हंसी-खुशी जा सकती हैं। इस पर शोभना ने कहा सुल्तान इसका नाम रिहाई नहीं आपकी बेबसी है। सुल्तान जब खुशहाल होकर गजनी पहुंचे, तब मुझे रिहाई देना उचित समझें तो ठीक भी होगा। और जब की बात अब देखी जायेगी, इस समय तो मैं सुल्तान को विपत्ति में

छोड़कर जाना, धर्म नहीं समझती हूं। महमूद तुमने जैसा किया है वैसा ही तुम्हारे आगे आता जा रहा है। तुमने भगवान के भक्तों को मारा है, जिन्होंने तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ा था। कंकर पत्थरों के लालची होकर सुलतान तुम मन्दिरों को लूट कर गरीबों के घरों को जला देते हो। अगर तुम्हारा खुदा, तुम्हारी इन हरकतों से खुश है, तो वह खुदा नहीं शैतान है। महमूद अपने गुस्से को दबाता हुआ अपनी मलका की बातें सुनकर मन ही मन, महारानी के साहस और उसकी वीरताई की कद्र करता रहा है। फिर वह आंखों में आंसू भरकर कहती है ऐ गजनी के सुलतान, तुम किस प्रकार जिन्दे आदमी को कत्ल करके उसका बसा बसाया घर, आग लगाकर वीरान कर डालते हो। क्या सुलतान उनमें तुम्हारी जैसी जान नहीं होती है। उन्हें कितना दुःख होता होगा जिन्हें तुम बिना खता कत्ल कर देते हो। इतना कहकर शोभना की आंखों से टप टप आंसू झरने लगे। और बोली सुलतान जैसे तुम खुदा के बन्दे हो, उसी प्रकार की होनहार बन गई। सुलतान ताकतवर की तलवार कमजोरों की रक्षा के वास्ते होती है। उन्हें लूटने-खसोटने और मारने के वास्ते

नहीं तुमने खुदा का बन्दा होकर जो गंग पंडित को मारा है क्या वह खुदा के बन्दे नहीं थे, अब तुम्हें अपनी करनी का फल भोगना ही पड़ेगा।

शोभना की वार्ता सुनकर, सुल्तान ने अपने दोनों हाथ उठा कर खुदा की बन्दगी कर अपने गुनाहों की माफी मांगी। और शोभना से प्रसन्न होकर कहा, मलिका तुमने मुझ गुनहगार की आँखें खोल दीं। अब हमें शीघ्र गजनी चलना चाहिए, आगे होगा वही जो मन्जूरे खुदा होगा। महमूद चारों तरफ से अपने को बचाता हुआ, मरुस्थली की भूमि पर अपनी सेना लेकर आ पहुँचा, और मैदान में अपनी छावनी डाल कर, अपने दूतों को किसी आदमी को तलाश करने के लिए भेजा, जो मार्ग जानता हो और हमें राह दिखावे। महमूद के सेना नायक आदमी की तलाश करते वहीं आ पहुँचे जहां घोघा राणा का होनहार पुत्र वीर सज्जनसिंह रणथम्बी माता के चौराहे पर अपनी चौकी डाले गजनी के दैत्य का इन्तजार कर रहे थे और मन ही मन सोच रहे थे अगर अभाग्य वश सुल्तान इधर को आ निकला तो उसका निस्तार नहीं है। महीनों से वह गजनी के दैत्य के इन्तजार में भूखा-प्यासा यहाँ बैठ कर तपस्या कर रहा था।

तभी उसने सुना गजनी का दैत्य यहाँ आ पहुँचा है। तो वह खुशी से फूल उठा और उसने अपना खांडा को थपथपाया। अति खुशी के कारण उसके रक्त में सुर्खी दौड़ पड़ी। बस अब भगवान शंकर मेरी सहायता करें, और सोमनाथ प्रभु अपना तीसरा नेत्र खोलकर दुष्ट को भस्म कर दें। तभी उसने दूर से देखा, सांप की तरह कुण्डली मार कर दैत्य की सेना मैदान में पड़ी है।

तभी सैनिकों ने आकर टेकरी को घेर लिया और दैत्य के समान सभी तुर्क और पठान सैनिक पानी पर पिल पड़े। और सारा ही पानी उन्होंने ऊंटों में भर लिया तभी उनकी दृष्टि सज्जनसिंह पर पड़ी, जो मैले कपड़े, बढ़ी हुई दाढ़ी, दुर्बल काया और उलझे हुए बालों ने उनकी शान बढ़ा रक्खी थी। वह सज्जनसिंह को पकड़ कर सेना नायक के सामने ले गये। सेना नायक ने रोब से पूछा, तू कौन है रे सज्जनसिंह ने उत्तर दिया, मैं मरुमारिया भुमिया हूं। क्या तू रण मार्ग से वाकिफ है, और रण का मार्ग जानता है। और हमें राह दिखा सकता है। उसने कहा बिलकुल नहीं क्योंकि वहां रणथम्बी माता की आन है। माता को लांघ कर कोई आगे नहीं जाता।

नायक ने कहा तू उजड़ गया है, सज्जनसिंह बोले हाँ गया तो हूँ। तो हमें तू मार्ग दिखा तुझे सोना मिलेगा। उसने कहा मैं नहीं दिखाऊँगा, सज्जनसिंह ने मूर्ख भुमिये का बड़ी होशियारी से अभिनय किया, नायक ने उसे पहरे में रख कर कहा तू हमें राह दिखा सकता है, सज्जनसिंह ने कहा कतई नहीं।

सेना नायक ने उसे ले आकर सुल्तान के सम्मुख पेश किया। महमूद ने कहा क्यों वे राह दिखाने से इन्कार करता है। इसलिये कि यहाँ माता की आन है, माता को लाँघकर कोई नहीं निकल सकता है। सुल्तान ने कहा, बकवास बन्द कर, तुझे सोना मिलेगा। इतना सुन सज्जनसिंह ने कहा कितना, महमूद बोला बहुत सारा। इतना कहकर उसने मोहर अशर्फियों से भरी एक थैली सज्जनसिंह के सामने फेंक दी। मोहरों को उठाकर सज्जनसिंह ने खुश होकर और थैली को चूमकर दुबारा अभिनय किया। जैसे वह लालच में आकर सुल्तान को गजनी की राह दिखाने को राजी होही गया हो। महमूद ने पूछा अब तू यह बतला कितने दिन का रास्ता है। सज्जनसिंह ने कहा कम से कम आठ दस दिन का [illegible] नहीं होगा।

जिन्दा कैसे रहूँगा, इतना कहकर सज्जनसिंह मुस्करा दिया, फिर उसे कड़े पहरे में रक्खा गया। पर उस की खातिर तवाजह वहाँ खूब हुई। दो घड़ी विश्राम करने के पश्चात और एक पहर रात गुजर जाने के बाद रण थम्बी माता का उल्लंघन करके महाल्य के रण में प्रवेश किया।

श्री गोगा महापुराण १००वाँ भाग प्रारम्भ

अब कच्छ के महारन के वर्णन की तरफ ध्यान दें, जिसमें फंसकर मनुष्य का जीवित निकलना नामुमकिन है। महमूद भी अपनी चतुरंगी सेना लिये हुए इसी रन से गुजर कर, सज्जनसिंह के पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी भयंकरता का वर्णन करते हुए लेखक की भी रूह कांप रही है यह कच्छ का महारन तीन सौ कोष के घेरे में फैला हुआ है। जिसके चारों तरफ रेत ही रेत है। और रेत के ऊँचे नीचे पर्वत तेज हवाओं के साथ मुड़कर, वह नये-नये संकट उत्पन्न करते हैं। यहाँ पर कहीं रेत के ऊँचे-नीचे टीले हैं। तो कहीं जलती हुई चट्टानें हैं। रेती काफी तपने के कारण लाल रंग की हो जाती है। और पानी मिलने की तो दूर-दूर तक आशा ही नहीं है।

आदमी एक बार घुस गया तो दुबारा लौटकर वापिस नहीं आ सकता है। जो एक बार घुस गया वह घुसा ही रह जाता है। समझलो निकलकर आने का कोई मार्ग है ही नहीं। सूर्य के प्रचण्ड ताप से तपती हुई रेतीली चट्टानें, जब प्रबल पवन के वेग से उड़ती हैं, तो प्रलय के समान दृश्य उपस्थित हो जाता है। उन झंझावतों में मनुष्य की तो बात ही क्या कही जाय, हाथी, घोड़े, पशु-पक्षी जो भी उसकी चपेट में फंस जाता है, वह वहीं का वहीं ही समा जाता है। वहां पर इस कदर बालू उड़ती रहती है, कि दिन में भी अंधेरे जैसी रात्री हो जाती है। अधिक रेत उड़ने के कारण घनघोर अन्धकार वहां फैला रहता है।

ऊपर की तपती हुई बालू, जीवित प्राणियों की चलचल समाधी बना देने को विवश कर देती है। इस रन में घुसना सांप के मुंह में घुसने से भी अधिक भयंकर बात है। इसी भयंकर रन में सज्जनसिंह महमूद को बहकाकर सेना सहित काफी आगे ले जाता है। महमूद और उसके संगी-साथियों को, जीवित समाधी बनाने के वास्ते। यहां पर आपको रणचण्डी माता के कण्ठ रन की विकरालता और सर्वकालिक का परिचय छिपा गया है सबके आगे

सज्जनसिंह चौहान अपनी भूखी-प्यासी सांडिनी पर सवार होकर तारों भरी रात में, सितारों को देखता परखता बढ़ा चला जा रहा है। उसके पीछे गजनी के सुलतान के सब ही तीरन्दाज और पदाधिकारी भारवाहक खच्चर, घोड़े, हाथी, ऊँट और ऐसे कीमती ऊँट पर जालीदार जरदोजी की काठी पर शोभना गुलाम अब्बास की कमान में पांच सौ घुड़सवारों से घिरी हुई बैठी है, उसके पश्चात अपने अरबी काले घोड़े पर गजनी का सुलतान महमूद अपने खिल्लोची सरदारों और धन धान्य से लदे ऊँटों के साथ, सबसे पीछे कोतवाल और कोतवाल के साथ हाथी, घोड़े, ऊँट और पानी रसद थी जब रात बीत कर दिन निकला, तब सबने विश्राम कर और नित्य कर्म से फारिग हो खा-पीकर तैयार हुए और गजनी के सुलतान का हुक्म मिलते ही फिर सब आगे बढ़े, इसी तरह दूसरा, तीसरा और चौथा दिन भी सफर करते हुए बीत गया, सुलतान की सेना रन में घुसती ही चली गई क्योंकि उन्हें गजनी पहुचने की जल्दी थी। परन्तु अब उन्हें सूर्य का असह्य उताप बुरी तरह झुलसने लगा था। अति गर्मी के कारण घोड़े सब बेदम हो गये, पैदल सैनिक लड़खड़ाने लगे, अति

प्यास लगने पर भी उन्हें पानी थोड़ा-थोड़ा ही मिल रहा था।

घोड़े गिर कर दम तोड़ने लगे, ऊँटनिया और ऊँट बलबलाने लगे, तभी आकाश में अन्धर छा गया। ऊँट, हाथी परेशान होकर इधर-उधर दौड़ने लगे। पर सज्जन सिंह की सांडनी अगाड़ी ही बढ़ती चली जा रही थी। बालू के गरम टीले इधर-उधर उड़ने लगे। हाथी, घोड़े, ऊँट और खच्चर सभी उसमें दबने लगे, अन्तर्गत आंधी के बवण्डर मनुष्य और घोड़े को घुमा-घुमाकर फेंकने लगे। हवा धीरे-२ अधिक गर्म हो गई। सैनिकों ने कपड़े उतार-उतार कर फेंकने शुरू कर दिये। हवा अति गर्म होने लगी, रेत के बड़े-बड़े स्तम्भ बनकर आकाश तक उड़ने लगे। सारी सेना त्राहि-त्राहि करने लगी। प्रबल वायु के थपेडों से हाथी, घोड़े, ऊँट और मनुष्य आकाश में उड़-उड़ कर अन्धे होने लगे। जरा-सी देर में सारी सेना और सरदार हाथी, घोड़े, ऊँट सभी धराशाही हो गये।

अपनी सब ही सेना को धराशाही हुए देखकर महमूद ने अपनी तलवार ऊँची करके और खूब जोर से चीखकर कहा हम सबको यहाँ लाकर बेमौत

मारने वाला शैतान तू कौन है। सुलतान मैं सोमनाथ बाबा का एक गण हूँ, और गोगाराणा के वन्सज घोघाबापा का पुत्र। देखा तैंने सोमनाथ बाबा का तीसरा नेत्र, इतना सुन अमीर की तलवार उठी की उठी ही रह गई। और गरम हवा की आंधी जैसे बवंडर ने उसकी आंखो में घुसकर उसे अन्धा कर दिया। और वह अपने घोड़े सहित गरमागरम बालू पर गिरकर, सदा के लिये सो गया। उसी के पास सज्जनसिंह भी अपना शरीर छोड़े, अन्धे होकर गिर पड़े, कोई भी प्राणी वहाँ जीवित न हो बचा सबकी समाधि उसी रणथम्बी माता के मैदान में बिना बननाये ही बन गई। गेहूँ के साथ घुन भी पिस गया। किसी को पता ही नहीं चला कि किसी का क्या हुआ गजनी की मस्तूरातें अपने-अपने पतियों और भाई-भतीजों के आने के इन्तजार में बड़ी ही बेचैन रहने लगी। और पास-पड़ोस ने उनके आंसू पोंछ-पोंछकर उनके घर आ-आकर उन्हें नित्य धीरज बधाया करती करती थी। जैसी करनी वैसी भरनी की कहावत यहां सोलह आने पाव रत्ती ठीक उतरी जैसा हिन्दुओं ने बोकर काटा वैसा ही मुसलमानों ने बोकर-काटा।

इसके पश्चात जब गजनी वालों को, भारत को
लूटने गए हुए अपने सम्बन्धियों का कई साल तक
कोई पता न चला, तो वह सब निराश हो भारत-
वासियों को गालियाँ बक बक कर खामोश हो बैठे।
उधर महमूद के जानिसारों और मुन्तजिमों ने काफी
इन्तजार करने के पश्चात, महमूद के लूटे हुए गुप्त
खजाने को खाली करना शुरूकर दिया। और अधिक
लूटमार की हुई मुफ्त की दौलत मिल जाने के कारण
वह सभी अधिकारी, और उनके बाल बच्चे सभी
शराब पी पीकर तरह तरह की ऐयबारी करके,
नित्य ही आपस में झगड़ा फिसाद करने लगे।

आहिस्ता-आहिस्ता गजनी के फिसाद का कारण,
गोर के शासक मोहम्मद गौरी को भी पता पड़ गया
कि गजनी के सुल्तान को भारत गये कई साल हो
गये, वह वहाँ से अब तक वापिस नहीं लौटा है। और
न ही कोई सैनिक सरदार ही वापिस लौटा है। इसी
कारण उसकी लूटी हुई अपार सम्पत्ति उसके अधि-
कारी लूट लूटकर अपना घर भर रहे हैं, और इसी
कारणवश आपस में लड़ाई झगड़ा कर बिना मौत
ही मर रहे हैं। गजनी का इन्तजाम शासक के न
होने के कारण, एक दम बिगड़ गया है। इस प्रकार

सोच विचार कर और अपने सरदारों से मशवरा
कर, गोर का सुल्तान मोहम्मद गौरी अपनी सेना ले
कर गजनी में आ धमका। और अपनी चतुराई से,
बिना लड़ाई झगड़े के, सिर्फ तलवार का ही भय
दिखाकर, वहाँ का बादशाह बन बैठा, और अपना
दखल जमाकर राज्य काज करने लगा। इसका आगे
का हाल जानने के लिए, पृथ्वीराज चौहान नामक
पुस्तक पढ़नी चाहिये।

॥ इति श्री गोगा महा पुराण सौवाँ भाग समाप्त ॥



❀ श्री गोरख चालीसा ❀

दोहा–गणपति गिरजा पुत्र को सुमरूं बारम्बार।
हाथ जोड़ विनती करूं शारद नाम आधार॥

॥ चौपाई ॥

जय जय गोरक्ष नाथ अविनाशी ।
कृपा करो गुरु देव प्रकाशी ॥
जय जय जय गोरक्ष गुण ज्ञानी ।
इच्छा रूप योगी वरदानी ॥
अलख निरंजन तुम्हरो नामा ।
सदा करो भक्तन हित कामा ॥
नाम तुम्हारा जो कोई गावे ।
जन्म जन्म के दुःख नशावे ॥
जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे ।
भूत पिशाच निकट नहीं आवे ॥
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे ।
रूप तुम्हारा लख्या न जावे ॥
निराकार तुम हो निर्वाणी ।
महिमा तुम्हरी वेद न जानी ॥

घट घट के तुम अन्तर्यामी ।
सिद्ध चौरासी करें प्रणामी ॥
भस्म अङ्ग गल नाद विराजे ।
जटा शीश अति सुन्दर साजे ॥
तुम बिन देव और नहीं दूजा ।
देव मुनि जन करते पूजा ॥
चिदानन्द सन्तन हितकारी ।
मंगल करण अमंगल हारी ॥
पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी ।
गोरख नाथ सकल प्रकाशी ॥
गोरख गोरख जो कोई ध्यावे ।
ब्रह्म रूप के दर्शन पावे ॥
शंकर रूप धर डमरू बाजे ।
कानन कुण्डल सुन्दर साजे ॥
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा ।
असुर मार भक्तन रखवारा ॥
अति विशाल है रूप तुम्हारा ।
सुर नर मुनि जन पावें न पारा ॥

दीन बन्धु दीनन हितकारी ।
हरो पाप हम शरण तुम्हारी ।।
योग युक्ति में हो प्रकाशा ।
सदा करो सन्तन तन वासा ।।
प्रातःकाल लें नाम तुम्हारा ।
सिद्धि बढ़ै अरु योग प्रचारा ।।
हठ हठ हठ गोरक्ष हठीले ।
मार मार वैरी के कीले ।।
चल चल चल गोरक्ष विकराला ।
दुश्मन मार करो बेहाला ।।
जय जय जय गोरख अविनाशी ।
अपने जन की हरो चौरासी ।।
अचल अगम है गोरख योगी ।
सिद्धि देवो हरो रस भोगी ।।
काटो मार्ग यम को तुम आई
तुम बिन मेरा कौन सहाई ।।
अजर अमर है तुम्हरी देहा ।
सनकादिक सब जोरहिं नेहा ।।

कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा ।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा ।।
योगी लखें तुम्हारी माया ।
पार ब्रह्म से ध्यान लगाया ।।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे ।
अष्टसिधी नव निधि घर पावे ।।
शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा ।
पापी दुष्ट अधम को तारा ।।
अगम अगोचर निर्भय नाथा ।
सदा रहो सन्तन के साथा ।।
शंकर रूप अवतार तुम्हारा ।
गोपीचन्द, भरतरी को तारा ।।
सुन लीजो प्रभु अरज हमारी ।
कृपासिन्धु योगी ब्रह्मचारी ।।
पूर्ण आस दास की कीजे ।
सेवक जान ज्ञान को दीजे ।।
पतित पावन अधम अधारा ।
तिनके हेतु तुम लेत अवतारा ।।

अलख निरंजन नाम तुम्हारा ।
अगम पन्थ जिन योग प्रचारा ।।
जय जय जय गोरख भगवाना ।
सदा करो भक्तन कल्याना ।।
जय जय जय गोरख अविनासी ।
सेवा करें सिद्ध चौरासी ।।
जो पढ़ही गोरख चालीसा ।
होय सिद्ध साक्षी जगदीशा ।।
हाथ जोड़कर ध्यान लगावे ।
और श्रद्धा से रोट चढ़ावे ।।
बारह पाठ पढ़े नित जोई ।
मनोकामना पूर्ण होई ।।

।। दोहा ।।

सुने सुनावे प्रेम वश, पूजे अपने हाथ ।
मन इच्छा सब कामना, पूरें गोरख नाथ ।।
अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार ।
कानन कुण्डल सिर जटा, अंग विभूति अपार ।।
सिद्ध पुरुष योगेश्वरौ, दो मुझको उपदेश ।
हर समय सेवा करूं, सुबह शाम आदेश ।।

।। गुरु गोरख नाथ की आरती ।।

जय गोरक्ष देवा जय गोरक्ष देवा ।
करें कृपा मम ऊपर नित्य करूं सेवा ।।१।।
शीश जटा अति सुन्दर भाल चन्द्र सोहे ।
कानन कुण्डल झलकत निरखत मन मोहे ।।२।।
गलविच सेली नाद सुशोभित तन भस्मी धारी ।
आदि पुरुष योगीश्वर सन्तन हितकारी ।।३।।
नाथ निरंजन आप ही घट घट के वासी ।
करत कृपा निज जन पर मेटत जम फांसी ।।४।।
ऋद्धि सिद्धि चरणों में लोटत माया है दासी ।
आप अलख अवधूता उत्तराखण्ड वासी ।।५।।
अगम अगोचर अकथ अरूपी सबसे हो न्यारे ।
योगी जन के आप ही सदा हो रखवारे ।।६।।
ब्रह्मा विष्णु तुम्हारा निशदिन गुण गावे ।
नारद शारद सुर मिल चरनन चितलावे ।।७।।
चारों युग में आप बिराजत योगी तन धारी ।
सतयुग द्वापर त्रेता कलयुग भय टारी ।।८।।
गुरुगोरखनाथ की आरती निशदिन जो गावे ।
विनवत बाल त्रिलोकी मुक्ता फल पावे ।।९।।

मुद्रक--यादव प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली-६

न्यू स्कूटर मोटरसाईकिल गाइड

इस पुस्तक में मोटर साईकिल व स्कूटर सम्बन्धी तमाम जानकारी दी गई है। जिसकी सहायता से प्रत्येक व्यक्ति मोटरसाईकिल व स्कूटर की सम्पूर्ण ओवरहालिंग, मेगनीट-क्लच, वायरिंग जुड़ीकेशन गियर, चैन, ब्रेक, पिस्टन, डायनमो हार्न, कारबोरेटर बैट्री आदि के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अनेकों चित्रों से सुशोभित इस पुस्तक का मूल्य केवल २० रुपये। डाक खर्च माफ।

न्यू इलैक्ट्रिक वायरिंग

इन्जीनियरों, इलैक्ट्रिशियनों, विद्यार्थियों तथा उन सभी मनुष्यों के लिए, जो कि बिजली के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है इसमें सभी प्रकार की हाउस वायरिंग, ओवर वायरिंग, पावर वायरिंग, अंडरग्राउण्ड वायरिंग, फ्लोरिस्ट ट्यूब की वायरिंग, रेफ्रीजरेटर का काम, सर्किट व मोटर वायरिंग आदि की पूरी-पूरी जानकारी की गई है। मूल्य २०.०० डाक खर्च माफ

न्यू घड़ी साजी

इस पुस्तक में घड़ी साजी के आवश्यक औजारों का वर्णन घड़ियों की किस्में, घड़ियां खोलने के तरीके और उनकी मरम्मत का काम मय चित्रों के समझाया गया है। जिसकी सहायता से क्लाक, टाइमपीस, हाथ घड़ी आदि की मरम्मत और सफाई की जानकारी करके कोई भी व्यक्ति सफल घड़ीसाज बनकर सौ रुपये रोज कमा सकता है। मूल्य २०.०० रु०

मेरठ पुस्तक भंडार, ४२३५, पतली गली, नई सड़क, दिल्ली-६

न्यू स्कूटर मोटरसाईकिल गाइड

इस पुस्तक में मोटर साईकिल व स्कूटर सम्बन्धी तमाम जानकारी दी गई है। जिसकी सहायता से प्रत्येक व्यक्ति मोटरसाईकिल व स्कूटर की सम्पूर्ण ओवरहालिंग, मेगनीट-क्लच, वायरिंग लुब्रीकेशन गियर, चैन, ब्रेक, पिस्टन, डायनमो हार्न, कारबोरेटर बैट्री आदि के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकता है। अनेकों चित्रों से सुशोभित इस पुस्तक का मूल्य केवल २० रुपये। डाक खर्च माफ।

न्यू इलैक्ट्रिक वायरिंग

इन्जीनियरों, इलैक्ट्रिशियनों, विद्यार्थियों तथा उन सभी मनुष्यों के लिए, जो कि बिजली के बारे में ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है इसमें सभी प्रकार की हाउस वायरिंग, ओवर वायरिंग, पावर वायरिंग, अंडरग्राउण्ड वायरिंग, फ्लोरिस्ट ट्यूब की वायरिंग, रेफ्रीजरेटर का काम, सर्किट व मोटर वायरिंग आदि की पूरी-पूरी जानकारी दी गई है। मूल्य २०.०० डाक खर्च माफ

न्यू घड़ी साजी

इस पुस्तक में घड़ी साजी के आवश्यक औजारों का वर्णन घड़ियों की किस्में, घड़ियां खोलने के तरीके और उनकी मरम्मत का काम मय चित्रों के समझाया गया है। जिसकी सहायता से क्लाक, टाइमपीस, हाथ घड़ी आदि की मरम्मत और सफाई की जानकारी करके कोई भी व्यक्ति सफल घड़ीसाज बनकर सौ रुपये रोज कमा सकता है। मूल्य २०.०० रु०

जीवन की दौड़ में औरों से पीछे क्यों।
आखिर हीन भावना से ग्रस्त क्यों॥

६० दिन में अंग्रेजी का सम्पूर्ण कोर्स

फर्राटे के साथ अंग्रेजी बोलना सीखें
विद्यार्थी हो या व्यापारी अथवा कर्मचारी
बिना अंग्रेजी के होती है बड़ी लाचारी

यदि अंग्रेजी जानता होता तो व्यापार में मजा आ जाता। यदि अंग्रेजी का ज्ञान होता तो चपरासीगीरी क्यों करता? यार बगैर अंग्रेजी बोले तो कोई भी लड़की! वो बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलता है तभी तो लड़कियां उस पर जान छिड़कती हैं। वह फर्राटे से अंग्रेजी बोलता है तभी तो बॉस उसके रौब में रहता है? टीचर्स से अंग्रेजी में बात करता है इसीलिए वह क्लास का हीरो है इन्टरव्यू में जबान अटक गई इसलिए नौकरी ही न मिल सकी। चिट्ठी अंग्रेजी में थी इसलिए जवाब नहीं दे सका।

इन विभिन्न परिस्थितियों में अपने आपको हीन समझना स्वाभाविक है। आप अंग्रेजी पढ़-लिखकर भी अंग्रेजी बोलने में अटकते हैं, जीवन के सफर में पिछड़ जाते हैं, उत्सवों-पार्टियों में अकेलापन महसूस करते हैं, मित्रों और रिश्तेदारों में आपका कोई रौब नहीं है। आपकी इस जटिल समस्या का समाधान है। १५ वर्षों की खोज से तैयार किया गया ६० दिन का कोर्स। इसकी सहायता से आप अंग्रेजी का व्याकरण पढ़ते पढ़ते ही सीख जायेंगे, शुद्ध अंग्रेजी में धारा-प्रवाह के साथ बातचीत करने लगेंगे और अंग्रेजी पढ़ने-लिखने में किसी से पीछे न रहेंगे। मूल्य २०) डाक खर्च सहित।

हमारे नये प्रकाशन